Also Available as
e-Book
www.ebooks.upkar.in

उपकार

मध्य प्रदेश सम्पूर्ण अध्ययन

नवीन आँकड़ों एवं तथ्यों सहित



डॉ. शादाब अहमद सिद्दीकी

अनुक्रमणिका

भाग–1

1. मध्य प्रदेश का सामान्य परिचय 3–14
2. मध्य प्रदेश के प्राकृतिक संसाधन 15–66
   – खनिज सम्पदा 15
   – वन सम्पदा एवं वन्य जीवन 23
   – कृषि तथा पशुधन 35
   – जल संसाधन 54
3. मानव संसाधन 67–80
4. ऊर्जा संसाधन 81–87
5. उद्योग 88–105
6. पर्यावरण एवं उसका संरक्षण 106–113
7. पंचवर्षीय योजनाएँ 114–134
   – मध्य प्रदेश में पंचवर्षीय योजनाएँ 114
   – नगरीय एवं ग्रामीण विकास के विभिन्न कार्यक्रम 122
   – आर्थिक नियोजन एवं मूल्यांकन 133
8. मध्य प्रदेश का प्रशासनिक ढाँचा 135–157
9. पंचायती राज व नगरीय प्रशासन 158–169
10. मध्य प्रदेश में खेलकूद 170–176

भाग–2

11. संस्कृति 177–178
12. मध्य प्रदेश के प्राचीन साहित्यकार 179–185
13. मध्य प्रदेश के मध्यकालीन साहित्यकार 186–192
14. मध्य प्रदेश के आधुनिक साहित्यकार 193–206
15. मध्य प्रदेश के लोक साहित्यकार 207–212
16. मध्य प्रदेश में संगीत 213–220
17. मध्य प्रदेश के लोक गायन/लोक संगीत एवं लोक नृत्य 221–232

18. मध्य प्रदेश में चित्रकला एवं प्रमुख चित्रकार..... 233–240
19. मध्य प्रदेश में लोक चित्रकला एवं शिल्पकला..... 241–248
20. मध्य प्रदेश में रंगकर्म एव प्रमुख रंगकर्मी..... 249–258
21. मध्य प्रदेश में लोक नाट्य 259–266
22. मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ..... 267–294
23. जनजातियों की सांस्कृतिक विशेषताएँ..... 295–297
24. मध्य प्रदेश में त्यौहार एवं मेले..... 298–301
25. साहित्य, संगीत तथा कला क्षेत्र मे स्थापित विभिन्न संस्थाएँ..... 302–308
26. मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय सम्मान..... 309–317
27. मध्य प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक समारोह..... 318–319
28. मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल..... 320–327
29. मध्य प्रदेश का संक्षिप्त इतिहास..... 328–382
30. मध्य प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम..... 383–406
31. मध्य प्रदेश में संचार..... 407–409
32. मध्य प्रदेश में महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम..... 410–420
33. मध्य प्रदेश का बजट..... 421–422
34. सामयिकी..... 423–424

- मध्य प्रदेश पी.एस.सी. की प्रारम्भिक परीक्षा तथा साक्षात्कार में गत वर्षों में पूछे गये प्रश्न..... 1–16
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न..... 1–20

17

मध्य प्रदेश के लोक गायन/लोक संगीत एवं लोक नृत्य

मध्य प्रदेश के लोक गायन/लोक संगीत

भरथरी

भरथरी के शृगार, नीति और वैराग्य शतक हमारी परम्परा की अद्वितीय उपलब्धि है राजा भरथरी तथा लोकगीतों में वर्णित भरथरी के कथानकों मे बहुत अधिक समानता है भरथरी एक लोकगाथा है. सारगी या इकतारा के साथ भरथरी गाते हुए योगियों को अक्सर देखा जाता है भरथरी के शतक और उनकी कथा ने लोक मे पहुँचकर एक नई ऊर्जा और जीवतता प्राप्त की है लोक जीवन के विकट यथार्थ और सहज मानवीयता ने जिस भरथरी को जन्म दिया वह अनेक अर्थों में परम्परा और लोकशक्ति की अपनी प्रयोगशीलता और क्षमता का विलक्षण प्रमाण है छत्तीसगढ मे भरथरी की सागीतिक और काव्यात्मक प्रतिष्ठा है राग और विराग का विकट द्वद्व है एक के बाद एक तर्क देते हुए दोनो लगातार एक-दूसरे को निहत्था और बेबाक करते हैं छत्तीसगढ़ मे भरथरी के परम्परागत लोकशैली है नाथ एव पथी प्रभाव के कारण इसकी विशिष्ट पहचान है लोक की काव्यात्मक ऊर्जा ने उसे नये प्राण दिए हैं सूरजबाई खाण्डे भरथरी की शीर्ष गायिका हैं इनकी भरथरी गायन की नितान्त निजी शैली है

पण्डवानी

'पण्डवानी' पाण्डवो की कथा है महान् सस्कृत क्लासिक, महाभारत की कथा का छत्तीसगढी लोकरूप है छत्तीसगढ मे महाभारत की लोकनियोजन पण्डवानी के रूप में उपलब्ध है, पण्डवानी के नाम से लोक जन की वाणी में नागर जन के महाभारत का निवास है यहाँ मिथको का घाटाटोप है ये मिथक अपने अद्भुत किन्तु जटिल सरचना में लोक में खुलते हैं और अपनी दीप्ति से एक नया अनुभव सम्प्रेषित करते है भारतीय आख्यान की परम्परा का सर्वश्रेष्ठ जब छत्तीसगढी पण्डवानी के रूप मे लेता है तो वह हमारे बीच का लगता है, किन्तु केवल कथा वाचन मात्र नहीं है इसमें पण्डवानी गायक हाथ चेहरे और आँखो की सवेदनशील चाक्षुष भगिमाओं के रूप में अभिनय द्वारा अद्वितीय नाटकीयता का सृजन करता है इसमें कथा है, सगीत है, अभिनय है कथा, नाट्य और सगीत की इस लोक त्रिवेणी में लोक नाट्य, लोक सगीत की शास्त्रीय कथा की अद्भुत लोक प्रस्तुति समन्वित होती है, लेकिन इसके पीछे जो परम्परा सक्रिय दिखाई देती है वह कथा गायन की व्यास परम्परा की भाँति कथा गायन की लोक परम्परा ही है महाभारत स्वय मे भावो की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति की महागाथा है अत पण्डवानी में अध्यात्म, धर्म, उपदेश, शौर्य, साहस, शृगार आदि सभी भाव समाहित है यह आश्चर्य की बात है कि पण्डवानी की कथागायन की परम्परा मध्य प्रदेश में गोण्ड आदिवासियो की परधान शाखा में तथा छत्तीसगढ के देवार लोगों में भी मिलती है इनसे होती हुई यह परम्परा एक विशेष कलात्मक परिष्कार को उपलब्ध करती छत्तीसगढी पण्डवानी में विकसित हुई है

पण्डवानी मे किस्सागोई और गायकी तथा अभिनय और सगीत की चमत्कारिक समग्रता है मात्र इकतारा के साथ शारीरिक गतिशीलता मच पर महाभारत की कथा के पूरे आन्तरिक तनाव को उपस्थित कर देती है पण्डवानी गायकी के बीच टेक गतिविधियो को एकत्र करने और उसे मूर्त करने के लिए होती है पण्डवानी के सशक्त हस्ताक्षर हैं श्री झाडूराम देवागन व श्रीमती तीजनबाई

बांस गीत

बास गीत में लोकगाथा गाई जाती है इसमें गायक रागी और वादक प्रमुख होते हैं गायक कथाश को गाता है रागी हुकारी भरता है और वादक बास बजाता है बास अपनी बनावट एव ध्वनि मे विशिष्ट वाद्य है इसके कारण ही इसे बास-गीत कहा जाता है यह वाद्य कथा के प्रारम्भ से अत तक लगातार बजाया जाता है अपनी खुरदरी किन्तु रभाती आवाज से यह सगीत के आरोह-अवरोह का सिर्फ वहन ही नहीं करता, एक परिवेश भी निर्मित करता है

छत्तीसगढ में बास-गीत का प्रचलन राउत जाति के लोगों में अधिक है बास गीत में श्रम और करुणा एक ही

धरती पर मूर्त होती है केजूराम यादव का लोक और संगीत से सीधा और गहरा रिश्ता है गीत के साथ साथ गौ सेवा इनका मुख्य कर्म है यह बाँस गीत के मुख्य कलाकार है

गोटुल पाटा

अनेक आदिवासी क्षेत्रों में मृत्यु गीत गाने की परम्परा है मृत्यु के अवसर पर मुरिया आदिवासियों मे 'गोटुल पाटा' के रूप में इसकी अभिव्यक्ति होती है लोक जीवन के विस्तार में जाने से ज्ञात होता है कि लोक विश्वासों के आधार के रूप में ऐसे बहुत से लोक चरित्र नायक है जिन्होंने अपने असाधारण व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा लोक जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान बनाया ऐसा प्रतीत होता है कि एक लम्बे समय में लोगों के किसी ऐतिहासिक नायक ने अपनी श्रद्धा और विश्वास के अनुरूप अनेक काल्पनिक और लोक स्वीकृति आदर्शों और विचारों को एकमेक कर दिया इतिहास और कल्पना के संयोग से अद्वितीय आख्यान तैयार हुए इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि यह प्रक्रिया आदिवासी समूहों में भी सक्रिय हुई

बस्तर के मुरिया आदिवासियों मे आख्यानपरक गीति काव्य के रूप में 'गोटुल पाटा' कला रूप पाया जाता है इसे बुजुर्ग लोग गाते है मुख्यत राजा 'जोलोंग साय' की कथा के साथ प्रकृति के अनेक जटिल रहस्यों के बारे में भी समाधान प्राप्त होते हैं यह नहानी के अवसर पर गायी जाने वाली कथा है कथा के साथ चलने वाले अवान्तर प्रकृति प्रश्नों को अनुषग के रूप में ही लेना चाहिये इसमें जीवन के गहरे अनुभव, जिज्ञासा और उनके समाधान के रूप में उपलब्ध होते हैं, मुख्य कथा के साथ इनका गहरा सम्बन्ध है इनकी 'प्रकृति किसी चरित्र नायक के साथ आख्यान मे आने वाले 'क्षेपक' जैसी नहीं है, बल्कि समानान्तर सर्जन जैसी है इसे जीवन चक्र के समाहार के रूप में लेना उचित प्रतीत होता है

ढोला मारू

ढोला मारू की कथा राजस्थान की महत्वपूर्ण लोक गाथा है जो ब्रज, मालवा निमाड, छत्तीसगढ़ और बुन्देलखण्ड में थोड़े बहुत अन्तर से विभिन्न लोक शैलियों में गाई जाती है लोक कथा गायन की सुदीर्घ परम्परा में जिस प्रेमगाथा ने सर्वाधिक प्रसार पाया, ढोला मारू की प्रेम गाथा उनमें सर्वोपरि है मध्य प्रदेश के विभिन्न अचलों में इसका प्रसार अलग-अलग शैलियों में हुआ, किन्तु वे सभी गायन शैलियाँ हैं

श्री जगन्नाथ कुम्हार ने पुरानी परम्परागत शैली के सारे लक्षणों को सुरक्षित रखा है और गायन शैली को अपनी प्रतिभा के सस्पर्श से एक नयी ताजगी दी है इस अर्थ मे उनका कार्य बहुत दुर्लभ है

निमाड़ी लोकगीत

निमाड के जीवन का कोई भी अवसर ऐसा नहीं मिलता, जब कोई-न-कोई गीत न गाया जाता हो जन्म विवाह और मृत्यु आदि सोलहों सस्कारो के अवसरों पर अलग-अलग लोकधुनों मे लोकगीत गाये जाते है सस्कार गीत प्राय घर की महिलाएँ ही गाती है पर्व त्योहार अनुष्ठान गीतों की प्रकृति स्त्री और पुरुषपरक दोनों हुई है लोकगीतों की गायन शैली प्राय अलग-अलग होती है निमाड़ी लोग गायन का माधुर्य विवाह गणगोर सन्त सिंगाजी भजन, कलगी तुर्रा आदि परम्परागत विधाओं म मिलता है

कलगी-तुर्रा

कलगी-तुर्रा प्रतिस्पर्धात्मक लोक गायन शैली है यह एक प्राचीन लोकगायिकी है इस गायन शैली का प्रसार एक समय कर्नाटक से लगाकर उत्तर प्रदेश तक था निमाड, मालवा, बुन्देलखण्ड और मण्डला मे कलगी-तुर्रा गायन मडलियाँ अभी भी मौजूद हैं

चग की थाप पर रात-रात भर कलगी-तुर्रा गाया जाता है इसके दो अखाडे होते हैं, एक कलगी अखाडा दूसरा तुर्रा अखाडा अखाडे के गुरु को उस्ताद कहते है अनु कविता के साथ महाभारत की कथाओ, पौराणिक आख्यानों से लेकर वर्तमान प्रसगों को सवाल-जवाब के शानदार माध्यम से पारंपरिक गायकी में पिरोया जाता है कलगी तुर्रा का आध्यात्मिक पक्ष भी है कलगी दल शक्ति और तुर्रा दल शिव को बड़ा बताने की कोशिश करता है

कलगी-तुर्रा की उत्पत्ति सम्बन्धी एक पुरानी कथा प्रचलित है चदेरी के राजा शिशुपाल की राजसभा में दो प्रमुख ख्याल गायक तुकनगिर और शाहअली फकीर थे दोनों ही अपनी-अपनी ख्याल गायिकी में पारगत थे एक बार राज-दरबार में दोनों का मुकाबला हुआ दोनों ने एक दूसरे से बढ़-चढकर जवाब दिये राजा के लिए यह निर्णय करना मुश्किल था कि दोनों मे कौन श्रेष्ठ है राजा ने दोनों को पुरस्कृत किया. तुकनगिर को अपनी पगडी का हीरा जडित तुर्रा और शाह अली फकीर को माणक मोती से जडित कलगी भेट की तब से तुकनगिर के ख्याल गायकी का नाम तुर्रा और शाह अली फकीर की गायकी कलगी के नाम से अभिहित हुई गोगावा के श्री सुरेशसिंह सुमन और कसरावद के श्री मनसाराम इस समय तुर्रा और कलगी के सबसे बडे गुरु अर्थात् उस्तादो में से हैं

संत-सिंगाजी भजन

सत सिंगाजी 15वी शती के निर्गुणी सत-कवियों में सबसे अग्रणी है अपनी आध्यात्मिक साधना और शुचिता के

कारण सत सिगाजी के पद समूचे निमाड और मालवा के हिस्से में इतने लोकप्रिय हुए कि निमाड मे सिगाजी के पद गायन की एक अलग शैली बन गई सत सिगाजी ने निमाडी में कई सौ आध्यात्मिक पदो की रचना की कहते है मृदग और झाझ के साथ उच्च स्वर मे भजन गाने की शैली का विकास स्वय सत सिगाजी ने किया था तब से लगाकर आज तक निमाड के गाँव-गाँव में सत सिगाजी के भजन गाये जाते हैं सत सिगाजी ने पहली बार खेती और गृहस्थ सम्बन्धी प्रतीको को अपने काव्य मे स्थान दिया और यही उनके पदो की प्रमुख विशेषता बन गई सत सिगाजी के छाप लगाकर आज हजारो लोग पद गायक मण्डलियाँ गा रही हैं उनमे नागझिरी के श्री दगडू गप्पल और हरसूद की सुश्री जीवन्ता खेडे की आज की सत सिगाजी भजन गायन शैली की श्रेष्ठ मण्डलियाँ कही जा सकती है

निरगुणिया गायन शैली

निमाडी लोक में निर्गुणी और सगुणी सन्त कवियों की छाप लगाकर पदों की रचना व गाने की सुदीर्घ और समृद्ध परम्परा रही है इसमें कबीर, मीरा, रैदास ब्रह्मानद, दादू सूर आदि कवियो की छाप वाले भजन लोक मे सबसे अधिक प्रचलित हैं अनेक अनाम लोक कवियों ने परम्परा से चली आ रही चिंता धारा अथवा पथ को सर्वोपरि माना और अपनी रचनाओं में आचलिक विशेषताओं घटनाओ लोक-प्रतीको को कल्पनाशील तरीके से समाहित कर कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया कि वे कबीर, सूर, मीरा आदि की ही रचना लगे उन्होंने अपना व्यक्तित्व और कृतित्व सभी कुछ अपने प्रेरणा-साध्य को समर्पित कर दिया निर्गुण धारा के प्रवर्तक कवि शिरोमणी सत कबीर की विचारधारा का बाद के अनेक कवियों पर इतना जबर्दस्त प्रभाव पड़ा कि वे अपना नाम छोडकर कबीर की छाप लगाकर पद गाने लगे इसके कारण कबीर की विचार शृखला समस्त उत्तर प्रदेश में फैल गई और आचलिक बोलियों में भी कबीर की निर्गुण विचारधारा का समावेश हो गया इसके कारण निरगुणिया गायन की आचलिक शैलियो का भी विकास हुआ अलग-अलग अचल में अपने-अपने ढग से लोग कबीर के लोकपद गाने लगे निरगुणिया गायन शैली का मुख्य आधार वाद्य इकतारा और खडताल रहे हैं एकतारे पर भजन गाते हुए कई साधु अथवा भिक्षुक गाँव-शहर की गलियों में मिल जाते हैं ये प्राय निरगुणिया भजन ही गाते हैं निमाड में निरगुणिया भजन गायक इकतारे के साथ झाझ-मृदग लगाकर भी गाते हैं निरगुणिया गायन को नारदीय भजन भी कहा जाता है

मसाण्या अथवा कायाखोज के गीत

निमाड मे मृत्युगीतों को मसाण्या अथवा कायाखोज के गीत कहते हैं किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर आत्मा की अमरता और शरीर की नश्वरता सम्बन्धी पारम्परिक गीत गाये जाते हैं इनके गान की शैली सत सिगाजी भजन से थोडी भिन्न है मसाण्या गीतों को भी झाझ मृदग और इकतारे के साथ समूह मे गाया जाता है मसाण्या गीत पुरुषपरक है मसाण्या गीतो मे आत्मा को दुल्हन की उपमा दी गई है और शरीर को दुल्हा कहा गया है मसाण्या गीत प्राय मृत्यु के अवसर पर ही गाये जाते हैं अन्य समय मे गाना प्रतिबधित होता है

फाग गायन (निमाड़ी)

होली के अवसर पर फाग गीत गाये जाते है जो प्राय कृष्ण और राधा पर केन्द्रित होते हैं दो या तीन ढफ बजाते हुए ऊँचे स्वर मे सामूहिक रूप से पुरुष वर्ग फाग गायन करता है जिसमें हँसी-मजाक ठिठौली, छेडछाड के गीत प्रमुख होते है स्त्रीपरक फाग गायन अलग होता है

गरबा-गरबी-गवलन गायन शैली

गरबा गीत–निमाड में गरबा स्त्रीपरक अनुष्ठानिक लोक गायन है नवरात्रि में गरब की स्थापना के साथ महिलाएँ ताली की थाप पर गरबा गीत गाती है जिसकी गायन शैली सर्वथा अलग होती है इसके साथ नृत्य प्रवृत्ति भी है गरबी मूलत देवी गीत है

गरबी गीत–गरबी प्राय. पुरुषपरक लोकगायन है इसे झाझ मृदग के साथ गाया बजाया जाता है गरबी गीत निमाडी लोक नाट्य गायन का एक मुख्य अग है गरबी भक्ति शृगार और हास्यपरक होती है गरबी की गायन शैली द्रुत में होती है, जो नृत्य और बैठकी गायकी दोनों में चलती है

गवलन-गवलन मूलत कृष्णलीला गीत है इसके गायन की पद्धति गरबी से भिन्न होती है गवलन गीतो का मुख्य उपयोग रासलीला में किया जाता है गवलन गीत पुरुषपरक है, जो झाझ मृदग और ढोलक पर गाये जाते हैं

नाथपंथी गायन–निमाड में नाथ जोगियों में सर्वथा अलग प्रकार के लोक गायन की पद्धति है नाथ जोगी भगवा वस्त्र पहने हाथ में रेकडी अथवा रुँ-रुँ बाजा बजाते गाते गाँव शहर में दिखाई देते है. नाथ जोगी प्राय गोरख, कबीर अथवा भरथरी गाथा गाते हुए मिल जाते हैं निमाड की नाथ जोगी महिलाएँ प्राय सुबह-सुबह परभाती गाती हुई मिलती हैं और घर-घर से नेग लेती हैं

मालवी लोकगीत

मालवा में पुसवन, जन्म, मुडन, जनेऊ, सगाई-विवाह के अवसर पर पारम्परिक लोकगीत गाने की प्रथा है पर्व-त्यौहार, ऋतु, अनुष्ठान सम्बन्धी गीतों के गाने की परम्परा भी समूचे मालवाचल में मिलती है मालवी लोक गायन में एक प्रकार से बोली की मिठास के साथ वहाँ की प्रकृति,

धरती और संस्कृति की समृद्धि और सौन्दर्य के पगे मूल स्वर सहज रूप से सुनाई देते हैं

भरथरी गायन

मालवा में नाथ सम्प्रदाय के लोग चिकारा पर भरथरी कथा गायन करते हैं चिकारा नारियल की नट्टी, बाँस और घोड़ों के बालों से निर्मित एक प्राचीन और पारम्परिक वाद्य है चिकारा बालों से बने धनुष से बजाया जाता है, जिसमें से रुँ-रुँ की मधुर ध्वनि निरन्तर निकलती है भरथरी, गोपीचंद कथा, गोरखवाणी, कबीर, मीरा आदि के भजन गाते हुए नाथपंथी लोग भोर में मालवा के गाँवों में आज भी मिल सकते हैं कुछ नाथपंथी अखाड़ों में सितार-तबले की संगत में बैठकर भरथरी गोपी चंद भजनादि गाने की परम्परा है

निरगुणी भजन गायन

मालवा की निर्गुणी लोक पदगायन परम्परा बहुत पुरानी है निरगुणिया भजनों में कबीर के अध्यात्म की छाप होती है जिसमें नश्वर शरीर और अमर आत्मा तथा परमात्मा सम्बन्धी तत्वों की सरल ग्रामीण प्रतीकों में विवेचना होती है निरगुणिया भजनों में इकतारा और मँजीरे के स्वरों के साथ मालवा की लोक धुनों और मालवी बोली का माधुर्य देखा जा सकता है. निरगुणिया भजन गाने वाले कई दल मालवा में मौजूद है, उनमें श्री प्रहलाद सिंह टीपाणया का दल सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है, जिन्होंने कबीर के मालवी लोक पद गान में अपने स्वर और गायकी की देश में सर्वथा अलग पहचान बनाई है

संजा गीत

संजा गीत मूलत मालवा की किशोरियों की पारम्परिक गायन पद्धति है, इसमें किसी प्रकार का सह वाद्य नहीं होता पितृपक्ष में किशोरियाँ संजा पर्व मनाती हैं, गोबर और फूल पत्तियों से संजा की सुन्दर आकृतियाँ बनाई जाती है, शाम को उनकी पूजा आरती करती हैं तथा संजा गीत गाती हैं किशोरियों के मधुर कंठों से जब संजा गीतों के स्वर फूटते हैं तब ऐसा लगता है जैसे बाल्यावस्था की कोमल पवित्र भावनाओं का लोक संगीत शाम के झुटपुटे में हर आँगन में साकार हो रहा हो सोहलवें दिन सर्वपितृ अमावस्या को किशोरियाँ अपनी सहेली संजा को ससम्मान गीत गाते हुए विदा कर देती है संजा एक गीति पर्व है

हीड़ गायन

श्रावण के महीने में मालवा में हीड़ गायन की प्रथा है इधर बाग-बगीचों में झूले पड़ते हैं, उधर गाँवों में हीड़ गायन की प्रतिस्पर्धा शुरू होती है हीड़ गायन मूलत अहीरों के अवदानपरक लोक आख्यान है जिसमें कृषि संस्कृति की आन्तरिक परतों का सूक्ष्म वर्णन मिलता है ग्यारस माता की कथा का गायन भी इसी अवसर पर किया जाता है गोवर्धन पूजा के समय भी हीड़ गायन किया जाता है हीड़ गायन ऊँचे स्वर में होता है, जिसमें आलाप भी लिये जाते हैं

पर्व-त्यौहार सम्बन्धी गायन

होली पर फाग, दिवाली पर दिवारी, जन्माष्टमी पर कृष्णलीला गीत, नवरात्रि में देवी गीत गाने की परम्परा समूचे मालवा में है

बरसाती बारता

बरसाती बारता ऋतु कथा गीत है बरसाती बारता के कथन और गायन बरसात के समय में किया जाता है इसलिए इसका नाम बरसाती बारता पड़ा मालवा के गाँवों में घरों में बैठकर बरसाती बारता रात-रात भर कही और गाई जाती है. बरसाती बारता की शैली चम्पू काव्य की तरह होती है, जिसमें मालवी गद्य और पद्य दोनों का चरम उत्कर्ष देखा जा सकता है. ऋतु गीतों में मालवा में बारह मासा गीत भी प्राय. बरसात में गाये जाते हैं

बुन्देली लोकगीत

शौर्य और शृंगार की धरती बुन्देलखण्ड की कला-संस्कृति सबसे अलग है. यहाँ के लोकगीतों में शौर्य और उत्कृष्ट शृंगार के भाव गुम्फित होते हैं यहाँ के लोक गायन के तारत्व के दो मुख्य स्वर हैं, एक षडज और दूसरा मध्यम पुरुषपरक और बाल सुलभ लोक गायन का स्वर प्राय: षडज यानि 'सा' होता है और वन्य संस्कार गीतों में महिलाएं मध्यम यानि 'म' स्वर से गाती हैं लोक गीतों के विषय पारिवारिक पृष्ठभूमि लिये हुए होते हैं, जिनमें लोक जीवन की सामाजिकता का सम्पुट होता है लोक गीतों में लोक धुनों की माधुरी का वैविध्य बुन्देली लोकगीतों की खास पहचान है जितने भी तरह के लोक राग देश में प्रचलित हैं. वे सब बुन्देली लोक गीतों की परम्परा से प्रयुक्त हुए हैं

आल्हा गायन

आल्हा गान वीर रस प्रधान काव्य है आल्हा की रचना लोक कवि जगनिक ने लगभग एक हजार वर्ष पहले की थी आल्हा खण्ड की मूल भाषा बुन्देली थी इस कारण जगनिक द्वारा लिखी आल्हा ऊदल की बावन लड़ाइयाँ लोक कण्ठों में सहज रूप से विराजमान हो गईं. जगनिक द्वारा लिखित आल्हा गाथा का प्रामाणिक रूप आज तक नहीं मिल पाया है, लेकिन आल्हा का लोक प्रचलित रूप बुन्देलखण्ड के गाँव के अलैत आज भी गाते हैं फिर भी आल्हा की मूल कथा में अन्तर नहीं आया है, उसमें लोक गाथा की गेयता और आल्हा और ऊदल के जीवन की घटनाओं में कोई खास फेरबदल आज तक नहीं हुआ है

आल्हा प्राय वर्षा ऋतु में गाया जाता है इसमें वाद्य के रूप में मात्र ढोलक और नगडिया का प्रयोग किया जाता है ढोलक बजाने वाला ही जोश मे आल्हा गायन करता है कही-कही आल्हा गायन खडे होकर भी किया जाता है बुन्देलखण्ड में कई गायक ऐसे हैं, जिन्हे आल्हा ऊदल की बावन लडाइयाँ कठस्थ है आल्हा छन्द के कारण इसका नामकरण आल्हा खण्ड पडा आल्हा खण्ड ससार की सबसे लम्बी गाथाओ मे से एक है

भोलागीत अथवा बम्बुलिया

बम्बुलिया बुन्देलखण्ड की वाचिक परम्परा के मधुर गीत है जिन्हें लमटेरा गीत भी कहा जाता है बम्बुलिया गीत प्राय स्त्री-पुरुष समूह द्वारा बिना वाद्य के श्रावण मास में शिवरात्रि, वसन्त पचमी, मकर सक्रान्ति के अवसर पर गाया जाता है बम्बुलिया गीतो की राग लम्बी होती है स्त्री-पुरुष अलग-अलग आमने सामने बैठकर समवत स्वरो में गीत गाते हैं गीत प्राय. प्रश्नोत्तर शैली में होते है, उनका दोहराव भी होता है भोला गीत शिव और शक्ति से सम्बन्धित होते हैं नर्मदा स्नान जाते समय महिलाएँ समूह में भोला गीत गाती हुई निकलती है

फाग गायन

फाग गायन होली के अवसर पर होता है फागुन माह के लगते ही समूचे बुन्देलखण्ड में ठाकुर फाग, ईसुरी फाग, राई फाग शुरू हो जाते हैं, जो होली जलने के बाद रगपचमी तक चलती है स्त्री-पुरुष एक-दूसरे पर रग गुलाल लगाकर गीत गाकर नृत्य करते हुए ठाकुर फाग खेलते हैं ठाकुर फाग में मृदग टिमकी और मँजीरा बजाया जाता है ठाकुर फाग में स्त्रियाँ जिराई का खेल खेलती हैं स्त्रियाँ लकडी अथवा सोटियो से गीत गाते हुए पुरुषों पर वार करती हैं और पुरुष चतुराई से वार से बचते हैं जिराई का आकार अग्रेजी के 'एच' अक्षर के समान होता है ईसुरी अथवा चौकडियाँ फाग बैठकर गायी जाती है राई फाग राई नृत्य के साथ गाई जाती है

बेरायटा गायन

बेरायटा मूलत कथा गायन शैली है, जिसमें मुख्य रूप से महाभारत कथाओं के साथ अनेक ऐतिहासिक चरित, लोक नायकों की कथाएँ गाई जाती है बेरायटा गायन केन्द्रीय रूप से एक व्यक्ति गाता है और सहयोगी गायक मुखिया का साथ देते हैं और कथा को आगे बढाने के लिए हुँकारा देते हैं, बीच-बीच मे कुछ सवाद भी बोलते है बेरायटा गायन में लोककथाओं का भी गायन किया जाता है बेरायटा गायन में कलात्मकता के साथ-साथ प्रसगानुकूल हाथ और चहरे के हाव-भाव गायन शैली को प्रभावशाली बनाने में सक्षम होते हैं

देवारी गायन

देवारी गायन दोहों पर केन्द्रित होता है अहीर, गवली, बरेदी घोसी आदि जातियों मे देवारी गायन और नृत्य करने की परम्परा है दीपावली के अवसर पर ग्वाल बाल सिर पर मोरपख धारण कर घर-घर देवारी माँगते हैं नेग पाते हैं और ऊँचे स्वर में दोहा गाकर ढोलक नगडिया, बाँसुरी की समवेत धुन पर तेजी से नृत्य करते हैं देवारी के दोहों के विषय कृष्ण-राधा, प्रेम प्रसग, भक्ति तथा वीर रस से पूर्ण होते है

जगदवे का पुवारा

पुवारा मूलत भजन शैली मे है देवी की स्तुति से सम्बन्धित एक लम्बा आख्यान जिसे भक्त कहते हैं, चैत्र और क्वार मास में गाते है इस अवसर पर जँवारा गीत भी गाये जाते हैं देवी गीतों को लद के नाम से भी जाना जाता है देव गीतो की लोक धुनें मधुर होती हैं

बघेली लोक गीत

बघेली लोकगीत की गायन शैली मध्य प्रदेश के अन्य अचलों से थोडी भिन्न है क्योंकि बघेली बोली अवधी से प्रभावित है बघेली लोक गीतों का मूल स्वर तीव्र माध्यम है इनमें बघेलखण्ड की जातियो और जनजातियों की आन्तरिक ऊर्जा का उत्कर्ष देखा जा सकता है बघेली लोकगीतों में लोक की व्यापकता, सरलता भाव प्रवणता और सुबोधता सहज रूप से देखी जा सकती है बघेली लोकगीतों में जहाँ पारम्परिक कल्पना का वैभव प्रसारित है वही बघेलखण्ड की सस्कृति की झाँकी भी प्रतिबिम्बित होती है लोकगीतों में जितनी लोकरागों की विविधता और विषयों की विभिन्नता मिलती है उतनी किसी अन्य लोक विधा में नहीं दिखाई देती

बसदेवा गायन

बसदेवा बघेलखण्ड की एक पारम्परिक गायन जाति है जिन्हें हर वाले कहा जाता है बसदेवा मूलत गाथा गायक है श्रवण कुमार की कथा गायन करने के कारण इन्हें सरमन गायक भी कहा जाता है बसदेवा परम्परा से कई तरह की कथा और गाथाएँ गाते है बसदेवा सिर पर कृष्ण की मूर्ति और पीला वस्त्र धारण कर हाथ में चुटकी पैंजन और सारगी लिए गाते हैं बसदेवा गायक कई कई यजमान के लिए गाँव-गाँव निकल पडते है बसदेवा मुख्यत दो गायक होते है मुख्य गायक गाथा की पक्ति उठाता है दूसरा पक्ति समाप्ति तक उसे उसी राग में तेजी से दुहराता है और अन्त में हर गगे की टेक हर पक्ति के बाद लगाता है बसदेवा जाति रामायण कथा के साथ कर्ण कथा, मोरध्वज गोपचद, भरथरी, भोले बाबा आदि लोक नायकों की चरित्र कथा गाते हैं

बिरहा गायन

बघेलखण्ड मे बिरहा गायन परम्परा सभी जातियो में पाई जाती है बिरहा की गायन शैली सर्वथा मौलिक और माधुर्यपूर्ण है बिरहा प्राय: खेत, सुनसान राहों में सवाल जवाब के रूप में गाया जाता है कहीं-कहीं बिरहा बिना वाद्यों और स-वाद्य गाए जाते है कानों मे उँगली लगाकर ऊँची टेर के साथ बिरहा गाया जाता है गायक गाते समय भौंहों को नचाता है, तब ऐसा लगता है, जैसे कोई प्रश्न पूछ रहा हो उतरती रात में बिरहा की तानें आकर्षक और कर्णप्रिय लगती है बिरहा शृगार परक विरह गीत है

बिदेसिया गायन

बिदेसिया गायन समूचे बघेलखण्ड मे मिलता है गडरिया, तेली, कोटवार जाति के लोग बिदेसिया गायन मे परम्परा से विशेष दक्षता रखते हैं बिदेसिया की राग लम्बी और गम्भीर होती है बिदेसिया का गायन प्राय जगल अथवा सुनसान जगह में किया जाता है बिदेसिया बिछोह और मिलन की अभिलाषा के गीत है जिनमें लोकनायक, नायिका के मन की आतुरता का सहज चित्रण होता है जिसमें आलंब भी होता है उतरती गहरी सुनसान रात में बिदेसिया गीतों की तानें सुनने वालों को बैचेन कर देती है

बघेलखण्डी फाग गायन

बघेलखण्ड में फाग गायन की परम्परा सबसे भिन्न और मौलिक है यहाँ नगाडों पर फाग गायन किया जाता है फाग गायनों मे पुरुषो की मुख्य भागीदारी होती है सामूहिक स्वरों में फाग गीतों की पंक्तियों का गायन नगाडों की विलम्बित ताल पर शुरू होता है और धीरे-धीरे तीव्रता की ओर बढता है नगाडो की टकार और समूह कण्ठों का ऊँचा स्वर फाग गायन में एक जोशिला वातावरण निर्मित करने में सफल होता है और गायक तथा वृन्द फाग गायन के साथ झूमने लगता है बघेलखण्ड में फाग गायन की कई लोक मण्डलियाँ हैं

मध्य प्रदेश के प्रमुख लोकनृत्य

राई (बुन्देलखण्डी)

बुन्देलखण्ड अचल की अपनी जातीय परम्परा मूलत शौर्य और शृगारपरक है यह अकारण नहीं है कि बुन्देलखण्ड के प्रख्यात लोकनृत्य राई में एक ओर तीव्र शारीरिक चपलता, वेग, अग, मुद्राएँ और सम्मोहन के लयात्मक विन्यास है, वहीं दूसरी ओर नृत्य के लास्य का समावेश और लोक कविता के रूप मे उद्याम शृगार परक अर्थों की नियोजना है उसमें ऊर्जा शक्ति और लालित्य एकमेक है

लोकनृत्यों की समृद्ध शैलियों में 'राई' ने उद्दाम आवेग, जीवन्तता तीव्रगति और लोक सगीत के अद्भुत सयोग के कारण एक ऐसी निजता स्थापित कर ली है कि वीरता और शृगार की अतियों में जीने वाले बुन्देली आदमी के आनन्द की लीला का साक्षात् रूप बन गया है राई यों नृत्य के केन्द्र मे है नर्तकी, जिसे बुन्देलखण्ड में 'बेडनी' कहते हैं जिसे गति देने का कार्य करता है मृदग वादक दोनों के बीच नृत्य के दौरान ही 'स्वाग गीत के रूप में एक अद्भुत सवाल-जवाब शैली की लोक कविता होती रहती है मर्यादाओं के वृत्त तोडती यह उद्दाम कविता 'स्वाग' कही जाती है बेजोड लोक सगीत, तीव्रगति नृत्य और तात्कालिक कविता के तालमेल ने 'राई नृत्य को एक ऐसी सम्पूर्णता प्रदान कर दी है, जिसका सामान्यत लोक नृत्यों में भी सयोग दुर्लभ ही है

विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि राई के विकास काल मे स्वाग का आयोजन होता है अथवा सामाजिक विद्रुपताओं पर चोट की जाती है यह गैर बराबरी के प्रति एक प्रकार का कलात्मक प्रतिकार है, कटु किन्तु मार्मिक सहज किन्तु अर्थपूर्ण ऐसा लगता है कि बुन्देली अचल के स्वभाव के अनुकूल एक स्वाभाविक, स्वयं स्फूर्त नृत्य की आयोजना 'राई' के रूप में की गई हो इसे बुन्देलखण्ड में मचीय नृत्य की स्थिति मात्र मे सीमित नहीं किया गया है बल्कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो में बच्चे के जन्म के समय और विवाह के अवसर पर 'राई' नृत्य का आयोजन प्रतिष्ठा मूलक माना जाता है अनेक बार किसी अभीप्सित कार्य की पूर्ति होने या मनौती पूरी होने पर भी राई के आयोजन किए जाते हैं जिससे साबित होता है कि राई एक जीवन्त कलात्मक हिस्सेदारी की तरह ही है जीवन का अटूट हिस्सा जिसमें आनन्द की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति मनुष्य की जीवनी शक्ति जैसा प्रकट होता है यह ऋतु या अनुष्ठान से बंधा हुआ नहीं है इसके लिए किसी शुभ अवसर के साथ ही केवल मनोरंजन के उद्देश्य से किसी भी ऋतु में किया जाता है श्री प्रकाश यादव बुन्देलखण्ड व श्री रामसहाय पाण्डे शीर्ष लोक नर्तक के रूप में प्रतिष्ठित है आपने देश के प्रमुख शहरों में राई नृत्य के प्रदर्शन किये हैं

राई नृत्य (बघेलखण्डी)

बुन्देलखण्ड की तरह बघेलखण्ड में भी राई नृत्य का प्रचलन है दोनो की राई मे बेहद फर्क है बुन्देलखण्ड में बेडनी और मृदग राई की जान होती है बघेलखण्ड में राई ढोलक और नगडियाँ पर गाई बजाई जाती है पुरुष ही स्त्री वेश धारण कर नाचते हैं

राई विशेषकर अहीर नाचते हैं कहीं-कहीं ब्राह्मण जाति की स्त्रियों मे भी प्रचलन है पुत्र जन्म पर प्राय उच्च महाजनों के यहाँ भी यह नृत्य होता है स्त्रियाँ हाथों और और कमर की विशेष मुद्राओ मे नाचती हैं राई लोक शृगारपरक होते हैं, परन्तु बुन्देलखण्ड की तरह यौवन और शृगार का उद्दाम आवेग और तीव्रगति यहाँ नहीं होती है

राई नृत्य मे स्त्रियो की वेशभूषा और गहने परम्परागत ही होते हैं पुरुष धोती, बाना, साफा और पैरो मे घुँघरू पहनते है

मटकी नृत्य

मालवा मे मटकी नाच का अपना अलग परम्परागत स्वरूप है विभिन्न अवसरों पर मालवा के गाँव की महिलाएँ मटकी नाच करती है ढोल या ढोलक को एक खास लय जो मटकी के नाम से जानी जाती है, उसकी थाप पर महिलाएँ नृत्य करती हैं प्रारम्भ मे एक ही महिला नाचती है, इसे झेला कहते हैं, महिलाएँ अपनी परम्परागत मालवी वेषभूषा में चेहरे पर घूँघट डाले नृत्य करती है नाचने वाली पहले गीत की कडी उठाती है, फिर आसपास की महिलाएँ समूह में इस कडी को दोहराती हैं नृत्य मे हाथ और पैरों का सचालन दर्शनीय होता है नृत्य के केन्द्र में ढोल होता है ढोल पर मटकी नृत्य की मुख्य ताल है ढोल किमची और डण्डे से बजाया जाता है मटकी नाच को कहीं-कहीं आडा-खडा और रजवाडी नाच भी कहते हैं

गणगौर

गणगौर निमाडी जनजीवन का गीति काव्य है चैत्र सुदी तृतीया तक पूरे नौ दिनों तक चलने वाले इस गणगौर उत्सव का ऐसा एक भी कार्य नहीं, जो बिना गीत के हो गणगौर के रथ सजाये जाते हैं रथ दौडाये जाते हैं इसी अवसर पर गणगौर नृत्य भी किया जाता है झालरियाँ दिये जाते है महिला और पुरुष रनुबाई और धणियेर सूर्यदेव के रथों को सिर पर रखकर नाचते है ढोल और थाली वाद्य गणगौर के केन्द्र होते है गणगौर निमाड के साथ राजस्थान, गुजरात, मालवा में भी उतना ही लोकप्रिय है

घसिया नृत्य

घसिया नृत्य सरगुजा जिले के ग्रामीण इलाके का अत्यन्त प्रसिद्ध नृत्य है सरगुजा जिले के सुदूर ग्रामीण अचल मे रहने वाले विशेषकर घासी जाति का यह परम्परागत नृत्य एव जीविका का साधन है इसमे लोहाटी, शहनाई, टिमकी एव डफ्ला आदि वाद्य यत्रो का उपयोग किया जाता है ग्रामीण लोग शादी-विवाह एव तीज त्यौहारों पर इन्हे किराये पर ले जाते है सरगुजा की जनजातियो के लिय इस वाद्य का उतना ही महत्व है जितना कि शहरो में बैण्ड पार्टी का इस नृत्य मे बडे वाद्यों के दोनो सिरे पर हिरण या बारह सिगा के सींग होते है, जिस पर स्थानीय लोहारों द्वारा बनाये गये लम्बे पतले तलवार की तरह के फाल होते हैं नृत्य के समय दो वादक या वादको का दल अपने नृत्य कौशल के साथ ही नृत्य प्रतिस्पर्धा मे विपक्षी के वाद्य को फोडने की कोशिश मे रहता है

यह नृत्य लास्य और युद्धकला का अद्भुत सम्मिश्रण है मूलत यह नृत्य विवाह के अलावा स्थानीय पर्व-त्यौहारों के अवसर पर किया जाता है घसिया नृत्य में दो या उससे अधिक स्त्री वेष में पुरुष नर्तक होते हैं, जो लोकाचलों मे प्रचलित दोहे का गायन करते हैं और गीत के बोल पर नृत्य किया जाता है

पंथी नृत्य

छत्तीसगढ मे निवास करने वाली सतनामी जाति का परम्परागत नृत्य पथी है माघ महीने की पूर्णिमा को गुरु घासीदास के जन्म दिन पर सतनामी लोग जैतखाम की स्थापना करके उसका पूजन करते है और फिर उसी के चारो तरफ गोल घेरा बनाकर गीत गाते है, नाचते हैं पथी नृत्य का प्रारम्भ देवताओं की स्तुति से होता है उनके गीतों में गुरु घासीदास का चरित्र ही प्रमुख होता है, इसमे मनुष्य के जीवन की गौरव गाथा के साथ उसकी क्षणभगुरता प्रकट होती है गहरे आध्यात्मिक रग में रगे उनके गीत निर्गुण भक्ति की ऊँचाइयो का स्पर्श करते हैं सतनामी लोग गुरु घासीदास के पथ के हैं इसलिए पथ नाच नाचते हैं इस नृत्य के प्रमुख वाद्य मृदग और झाँझ है नृत्य का आरम्भ तो विलम्बित गति से ही होता है पर लय प्रतिपल द्रुत होती है और समापन नृत्य की चरम द्रुतगति पर ही होता है नर्तकों की ताँबे की रग की देह से उभरती आँगिक चेष्टाएँ अलौकिक भाव का सृजन करती है ऐसे कम ही लोक नृत्य है जिनकी मुद्राएँ नृत्य के ही दौरान भरपूर शारीरिक श्रम की माँग करती है और वह भी इन क्षणों मे जब जीवन की क्षणभगुरता का गीत गाया जा रहा हो

गरबा नृत्य

गरबा नवरात्रि मे देवीपूजा नृत्य है गरबा मूलत स्त्रीपरक नृत्य है गरबा नृत्य की सरचनाएँ रास नृत्य से प्रभावित हैं गोल घेरे मे ढोल की थाप पर सजधज कर स्त्रियाँ तालियाँ या डण्डो के माध्यम से गीत गाती हुई उत्फुल्ल नृत्य करती हैं गरबा नृत्य एक पाली, दो पाली, और तीन पाली तक किया जाता है नृत्य की शुरूआत धीमे-धीमे होती है और धीरे-धीरे ढोल की लय बढती है और नृत्य की गति चरम सीमा तक पहुँच जाती है गरबा गौरी पार्वती के लास्य नृत्य से मिलता-जुलता नृत्य है

गौर नृत्य

बस्तर मे मडिया जनजाति जात्रा नाम से वार्षिक पर्व मनाती है जात्रा के दौरान गाँव के युवक-युवतियाँ रातभर नृत्य करते हैं इस नृत्य के समय मडिया युवक गौर नामक जगली पशु का सींग कौडियो से सजाकर अपने सिर पर धारण करते हैं, इस कारण इस नृत्य को गौर-नृत्य कहा जाता है यह नृत्य वर्षाकाल की अच्छी फसल, सुख और सम्पन्नता को केन्द्र में रखकर किया जाता है इस नृत्य काल के दौरान पूरा गाँव आमोद-प्रमोद मे निमग्न रहता है युवक वर्ग विशेष रूप से इस नृत्य मे हिस्सा लेता है यह

अत्यन्त आकर्षक तथा कलात्मक आदिवासी नृत्य है आदिवासी जीवन और सस्कृति के प्रख्यात अध्येता श्री वेरियर एल्विन ने एक स्थान पर लिखा है कि मडियाओं का गौर नृत्य अपनी सरचना, कोमलता और कलात्मक सौष्ठव मे सम्भवत हमारे देश के सभी आदिवासी नृत्यो मे सर्वश्रेष्ठ है

भड़म नृत्य

भरियाओं के परम्परागत नृत्यो में भड़म, सैला और अहिराई प्रमुख हैं भडम नृत्य के कई नाम प्रचलित है, इसे गुन्नू साही, भड़नी, भड़नई, भरनोट या भंगम नृत्य भी कहते है विवाह के अवसर पर किया जाने वाला यह नृत्य भरियाओ का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य है भड़म समूह नृत्य है

सैरा नृत्य

बुन्देलखण्ड के ग्रामवासी सावन माह मे मेघों से सिचित हरी-भरी धरती के आँगन में सामूहिक रूप से सेहरा नृत्य करते हैं घुटनों तक धोती, कमीज पहिने, हाथों में लाल रग की तौलिया लिये कमर के फेरे मे डेढ-डेढ फुट के दो-दो डण्डे लिए वृत्ताकार झूमते हुए नाचते और कजरी गीत गाते हैं

विशषत यह सेहरा नृत्य कजली तीज को उत्सव के रूप में नाचा जाता है जिसमें हाथों द्वारा तौलियों की झूम आपस में डण्डो के टकराने की मोहक तालबद्ध ध्वनि दखने और सुनने वालों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है ढालक की थाप, मजीरों की सुरमयी झकार, नृत्य की लोच-लचक, गीतो की लय मनोहरी होती है

कजली तीज के दिन माहुल या पलाश के दोनो मे हरियात अकुराते गेहूँ के दाने, प्रत्येक के हरे-भरे जीवन की कामनाओं के प्रतीक खुशहाली स्वरूप होते है यह गेहूँ के अकुराय हरे दाने कजलियों के रूप में स्नेह-मिलन की भावना लकर मुसकराते है और एक-दूसरे को बन्धुत्व की भावना स गले मिलाते है

सैला नृत्य

सेला सरगुजा जिले का सुप्रसिद्ध नृत्य है सैला नृत्य शरद् की चाँदनी रातों में किया जाता है हाथों में लगभग सवा हाथ क डण्डे क कारण इसका नाम सैला पड़ा आदिदेव को प्रसन्न करने के लिए सैला नृत्य का प्रचलन है कहते हैं कि सरगुजा की रानी से अप्रसन्न होकर आदिदव बधेसुर अमरकटक चले गये थे, वहाँ के बाँसो को काटकर इस नृत्य का चलन हुआ करमा सैला गोड जनजाति का लोकप्रिय नृत्य है इसमें सिर्फ पुरुष नर्तक भाग लत हैं सरगुजा के पण्डो, रजवार, कँवर और गोंड जनजातियों का यह प्रमुख नृत्य है नृत्य के समय पुरुषो द्वारा पगडी के ऊपर मोर के पख बाँधे जाते हैं और उनके हाथ मे लकडी के छोटे छोट डण्डे होते हैं मादर बाँसुरी और झाल के सम्मिलित ताल पर डण्डे के आपस म टकराते हुए लगभग चक्राकार नृत्य गति होती है पहले सैला नर्तक अपने गाँव से पन्द्रह बीस दिनो के लिए निकल जाते थे और प्रत्येक गाँव मे अपना प्रदर्शन करते थे आज के समय में दूसरे गाँव में सैला नर्तकों के जाने की परम्परा लगभग समाप्त हो गई है, बावजूद इसके सैला नृत्य की गरिमा और उसकी परम्परा यथावत् है

बायर नृत्य

बायर नृत्य सरगुजा जिले मे निवास करने वाली कँवर और गोंड जनजाति के अलावा रजवार और अन्य जातियों द्वारा भी किया जाता है मूलत यह आदिवासी नृत्य है जिसे सरगुजा जिले के अन्य लोगों ने भी अपना लिया है बायर नृत्य अन्न के उत्पादन और उसके उत्सव से सम्बन्धित है जिसमें पुरुष और महिलाएँ हिस्सा लेती है बायर नृत्य अत्यन्त तीव्र गति कलात्मक नृत्य है

करमा नृत्य

करमा नृत्य कर्म का प्रतीक है यह विजयदशमी से लगाकर वर्षा के प्रारम्भ तक चलता है, इसलिये ऋतु के साथ इसका सम्बन्ध है, किन्तु खेतीहर सस्कृति और कर्म की महिमा का गान होने के कारण इसे जीवन चक्र के अन्तर्गत ही मानना चाहिए आदिवासी जगत् मे कर्म की अभिव्यक्ति उनकी वाचिक और कला परम्परा मे कई आयामो मे देखी जाती है नृत्य और गीत कर्म की महत्ता की अभिव्यक्ति के प्रमुख पारम्परिक समर्थ साधन है आदिवासी ससार और लोक मे श्रम और कर्म के प्रति एकाग्र निष्ठा का सचार सर्वकालिक मिलता है करमा करम राजा और करम रानी को प्रसन्न करने के लिये किया जाता है, इसमे प्राय आठ पुरुष और आठ स्त्रियाँ नृत्य करती है युवक-युवतियाँ गोलार्द्ध बनाकर आमने सामने खडे हो जाते है एक दल गीत उठाता है, दूसरा दल दुहराता है मादर बजता है नृत्य में गोंड युवक-युवती आगे पीछे चलने में एक-दूसरे के अगूठे को छूने की कोशिश करते हैं देश के लगभग सभी आदिवासी समुदायों में करमा नृत्य किया जाता है

आदिवासी और लोक जीवन में जीवन की कर्ममूलक गतिविधि और सौन्दर्य बोध इतने परस्पर और घुले मिले है कि कई बार जीवन की गतिविधि और कला के बीच पार्थक्य की रेखाए लुप्त-सी होने लगती हैं आदिवासी लोगों के कठोर वन्य जीवन और ग्राम्यान्चलों की कृषि सस्कृति श्रम पर आधारित है इसमें 'कर्म' की प्रधानता है वह जीवन की धुरी है

करमा नृत्य गीत 'कर्म देवता' को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है 'करमा' नृत्य गीत का क्षेत्र बहुत विस्तृत है सुदूर छत्तीसगढ के लोक जीवन के साथ ही यह मण्डला के आसपास के क्षेत्र के गोण्ड और बैगा

आदिवासियो का प्रमुख नृत्य है गीत, लय, ताल पद सचालन आदि मे थोडा-थोडा अन्तर है, किन्तु कर्म की प्रधानता का जीवन में स्वीकार, यही इस नृत्य के पीछे का सबसे महत्वपूर्ण विचार है यह नृत्य जीवन की व्यापक गतिविधि के बीच विकसित होता है, शायद यही कारण है कि करमा गीतों में बहुत विविधता है वे किसी एक भाव या स्थिति के गीत नहीं है उनमें दैनिक जीवन की गतिविधि और स्थितियो के वर्णन के साथ प्रेम का गहरा और सूक्ष्म भाव भी परिपक्व हो सकता है करमा वास्तव मे ऐसा नृत्य-गीत प्रकार है जो जीवन चक्र की ही कलात्मक अभिव्यक्ति है इसमे पुरुष और स्त्रियाँ दोनो भाग लेते है बैगा आदिवासियों के करमा को 'बैगानी करमा' कहा जाता है ताल और लय के अन्तर से यह चार प्रकार का है–

1 करमा खरी 2 करमा खाय 3. करमा झुलनी 4 करमा लहकी

दशहरा और ददरिया

बैगा आदिवासियों मे यद्यपि दशहरे का त्यौहार नहीं मनाते, किन्तु विजयादशमी के दिन से प्रारम्भ होने के कारण नृत्य का नाम दशहरा नृत्य पडा इस नृत्य को बैगा आदिवासियों का आदि नृत्य कह सकते हैं, दशहरा नृत्य अन्य नृत्यों का द्वार है दशहरा नृत्य जैसे बैगा आदिवासियों के सामाजिक व्यवहार की कलात्मक सम्पूर्ति है वहीं ददरिया नृत्य गीत प्रेम की अभिव्यक्ति है

आदिवासी और लोक जीवन मे प्रेम की अभिव्यक्ति, चेष्टा और भाव के साथ अनेक कला रूप और परम्पराए परस्पर सम्बन्धित हैं ददरिया गीत की स्वीकृति छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और साहित्य में 'प्रेम कविता' के रूप मे हुई है इसमें युवक-युवतियों के परस्पर आकर्षण, प्रेम और सौंदर्य का अत्यन्त कोमल भाव ससार अभिव्यक्त होता है बैगा आदिवासियों में इसके साथ नृत्य की योजना भी विद्यमान है दशहरे के अवसर पर एक गाँव के युवक नर्तक दूसरे गाँव जाते हैं, जहाँ युवतियाँ दल का स्वागत ददरिया नृत्य और गीत से करती हैं, यह एक ऐसा अवसर होता है जब बैगा युवतियाँ अपनी पसन्द के युवक का चुनाव कर सकती हैं परिचय घनिष्ठता और प्रेम की अभिव्यक्ति के अवसर की एक सुन्दर और अकृत्रिम योजना ही इस नृत्य-गीत के पीछे सक्रिय मालूम पडती है इसमे सामाजिक परम्परा क निर्वाह और प्रेम की अभिव्यक्ति का असाधारण मेल है यह दशहरे के अवसर पर बैगाओं में शुरू होता है इसलिये ऋतु चक्र के साथ सम्बन्ध तो है ही किन्तु प्रेम की अभिव्यक्ति और जीवन साथी के चुनाव का अवसर प्रस्तुत करने की सहज सामाजिक परम्परा के निर्वाह के कारण इस जीवन चक्र के अन्तर्गत मानना उचित होगा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि बैगा लोगो मे सामाजिक व्यवहार और सामाजिक व्यवहार की परम्परा के साथ नृत्य-गीत जुडा है जैसे नृत्य-गीत में ही उसकी अभिव्यक्ति होती है कला और अविछिन्नता का यह अद्‌भुत उदाहरण है

बधाई नृत्य

बुन्देलखण्ड अचल में जन्म, विवाह और तीज-त्यौहारों पर बधाई नाची जाती है मनौती पूरी हो जाने पर देवी-देवताओं के द्वार पर भी बधाई नाच होता है इस नाच मे स्त्रियाँ और पुरुष दोनों ही उमग से भरकर नाचते है बूढी स्त्रियाँ कुटुम्ब मे नाती-पोतों के जन्म पर अपने वश की वृद्धि के हर्ष से भरकर घर के आँगन मे बधाई नाचने लगती है नेग-न्यौछावर बाँटती है मच पर जब बधाई नृत्य समूह के रूप मे प्रस्तुत होता है तो इसमे गीत भी गाये जाते हैं बधाई के नर्तक चेहरे के उल्लास, पद सचालन, देह की लचक और रगारग वेशभूषा से दर्शकों का मनमोह लेते हैं इस नृत्य में ढपला, टिमकी, रमतूला और बाँसुरी आदि वाद्य प्रयुक्त होते हैं

दुल-दुल घोड़ी

दुल-दुल घोडी राजस्थान का मूल नृत्य है वहीं इसे कच्छी घोड़ी नृत्य कहते हैं राजस्थान मे कच्छी घोडी नाचने वाली कई जातियों का पैतृक धन्धा आज भी है पर्व त्यौहार, विवाह आदि खुशी के अवसरो पर घोडी का स्वाग लेकर घर-घर नाचने का कार्य करते हैं मध्य प्रदेश में दुल-दुल घोडी का स्वाग राजस्थान से आया है

इस नृत्य में बाँस, लकडी, रगबिरगे कागज, पन्नी कपडे से एक घोडी तैयार की जाती है इसे नाचने वाले व्यक्ति का शृगार दूल्हे जैसा होता है जो इसके बीच की खाली जगह में खडे होकर तथा लगाम पकडकर घोडी को नचाता है घोडी के साथ स्त्री के वेश मे एक नर्तक विदूषक होता है जो मुख्यत लगुरिया तथा अन्य गीत गाकर नाचते हैं और हसाते हैं दुल-दुल घोडी नृत्य के साथ प्रमुख रूप से ढोल, नगड़िया, झींका तथा मसक वाद्य होते हैं

भीली नृत्य

झाबुआ और धार की सर्वाधिक रगप्रिय जनजाति भील' का मगोरिया जातिगत नृत्य है फागुन के मदमस्त मौसम में होली से पूर्व भगौरिया हाटों का आयोजन होता है भगौरिया हाट केवल हाट न होकर युवक-युवतियों के मिलन-मेले हैं यहीं से युवक-युवती एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं, आकर्षित होते हैं और जीवन सूत्र मे बँधने के लिए भाग जाते हैं इसलिये इन हाटो का नाम भगौरिया पडा

मादल की थाप पर युवक-युवतियाँ ताडी के सुरुर में आदिम किलकारियो के मध्य मस्ती से नाचते हैं, गाते हैं भीली नृत्य में विविध पदचाप समूहन, पाली चक्री पाली तथा पिरामिड नृत्य सचालन आकर्षण का केन्द्र होते हैं रग-बिरगी वेशभूषा में सजी-धजी युवतियों का शृगार और युवको का हाथ में तीर-कमान लिए नाचना ठेठ पारम्परिक व अलौकिक सरचनाए हैं

परधौनी

आदिवासियों के कुछ नृत्य इस प्रकार के हैं जो एक विशेष अवसर और अनुष्ठान से निबद्ध हैं उस अवसर विशेष के अलावा वह नृत्य प्राय नहीं किया जाता है जैसे बैगा आदिवासियों में 'परधौनी नृत्य' विवाह के अवसर पर बारात की अगवानी के समय किया जाता है इसी अवसर पर लडके वालों की ओर से आँगन में हाथी बनाकर नचाया जाता है इसमें एक अवसर विशेष को समारोहित करने की चेष्टा है जिसमे आनन्द और उल्लास की अभिव्यक्ति मुख्य हैं, लालित्य की चेष्टा गौण, महत्वपूर्ण बात कलात्मक परिष्कार नहीं केवल उल्लास की अभिव्यक्ति है किन्तु इससे यह समझना भ्रम होगा कि इसमे कला होती ही नहीं हाथी बनाकर आँगन में नचाने का अनुष्ठान भी यह सकेत करता है कि इसमें प्रसन्नता की अभिव्यक्ति ही मुख्य ध्येय हैं अवसर और अनुष्ठान निबद्ध होने के उपरान्त भी इसे जीवन चक्र के एक अटूट हिस्से के रूप मे ही लेना चाहिए

गैंडी नृत्य

बस्तर मे निवास करने वाली मुरिया आदिवासी जाति मे 'घोटुल' की प्रथा है घोटुल मुरिया आदिवासियों के सामाजिक सगठन का नाम है इसमे युवाओ के लिए सामाजिक व्यवहार, परम्परा और कला में प्रशिक्षण के साथ ही प्रेम की अभिव्यक्ति के अकृत्रिम खुले अवसर प्राप्त हैं घोटुल के सदस्य घोटुल में और घोटुल के बाहर नृत्य करने जाते हैं मुरिया युवक लकडी की गैंडी पर अत्यन्त तीव्र गति का नृत्य करते हैं जिसे 'डिटोग' कहा जाता है इस नृत्य के साथ गीत नहीं गाया जाता, केवल नृत्य किया जाता है इस नृत्य मे स्त्रियाँ हिस्सा नहीं लेतीं, केवल पुरुष सदस्य शामिल होते हैं इस नृत्य मे अत्यन्त कुशलता के साथ गैंडी पर अपने शारीरिक सन्तुलन को बरकरार रखते हुए नृत्य की योजना करना पडती है मुरिया आदिवासी इसमे अत्यन्त दक्ष हैं इस नृत्य में शारीरिक कौशल और दर्शनीय सन्तुलन का प्रदर्शन ही विशेष बात है इसे जीवन चक्र के अन्तर्गत ही मानना चाहिए

सरहुल नृत्य

उराँव जनजाति रायगढ जिले के जशपुर तहसील तथा सरगुजा में निवास करती हैं उराँव जनजाति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और पारम्परिक नृत्य है 'सरहुल' यह जनजाति साल (सरई) वृक्ष में अपने ग्राम देवता का निवास मानती है, इसलिये वर्ष में एक बार चैत्र मास में पूर्णिमा को साल वृक्ष की पूजा करते हैं और साल वृक्ष के आसपास नृत्य करते हैं

केहरा नृत्य

केहरा स्त्री और पुरुष दोनो अलग-अलग शैली में नाचते हैं इसकी मुख्य ताल केहरवा ताल है और इसके साथ बाँसुरी की जब मधुर धुन छिड जाती है तब पुरुष नर्तकों के हाथ और पैरो की नृत्य गति असाधारण हो उठती है महिलाओं के हाथों और पैरो की मुद्राओं का सचालन और गतिमय हो जाता है नृत्य के पहले पुरुष केहरा गाते है नृत्य के सम पर पहुँचने पर मुख्य नृतक कोई दोहा कहता है और दोहे की अन्तिम कडी के साथ हाथों के झटकों के साथ पूरी गति से नृत्य प्रारम्भ होता है नृत्य और सगीत का सामजस्य लोगों मे इतना जोश भर देता है कि कितने ही लोग बरबस नाचने लगते हैं नाचने के पहले स्त्रियाँ भी केहरा गाती है स्त्रियाँ नाचते-नाचते फुरहरी लेती है फुरहरी केहरा की एक खास मुद्रा है फुरहरी में स्त्रियाँ हाथों में हाथ देकर चकरी लेती हैं केहरा नाच की एक खास मुद्रा है फुरहरी जो हर जाति मे है बारी जाति का केहरा नाच विशेष लोकप्रिय है

दादर नृत्य

दादर बघेलखण्ड का प्रसिद्ध नृत्य है दादर गीत अधिकाशत पुरुषो के द्वारा खुशी के अवसर पर गाये जाते है और कहीं-कहीं पुरुष नारी वेश मे नाचते है, दादर के लिए कोल, कोटवार, कहार, विशेष रूप से प्रसिद्ध है ये जातियाँ दादर लेकर निकलती हैं दादर के मुख्य वाद्य नगडिया ढोल, ढोलक, ढप और शहनाई है कभी-कभी महिलाएँ नाचती हैं और पुरुष वाद्य बजाते हुए गाते है महिलाएँ घूँघट मे नाचती है पैरों में घुँघरू बाँधती हैं हाथ पैरों और कमर की मुद्राओं से दादर नृत्य परम्परा का निर्वाह करती है

जातीय गीतों के साथ दादर नृत्य मे अपनी निजी विशेषताएँ होती है इन जातीय विशेषताओ के कारण कोई कालहाई दादर, बरिहाई दादर आदि नाम से दादर की प्रतिष्ठा पूरे बघेलखण्ड में है

दादर नृत्य में बजने वाले बाजों की लय, ताल और घुँघरुओं की घनघनाहट दूर-दूर बसे लोगों को नृत्य तक खींच लाती है विवाह मे घराती और बराती दोनों की ओर से गाजे बाजे के साथ दादर नृत्य किया जाता है

कलसा नृत्य

बारात की अगवानी मे सिर पर कलश रखकर नाचने की परम्परा अहीरों, गुडता गडरियो मे समान रूप से प्रचलित है द्वार पर स्वागत की रस्म होने के पश्चात् नृत्य शुरू होता है नगडिया, ढोल शहनाई की समवेत लोक धुन पर कलसा नृत्य चलता है नर्तक का कोई खास वेश नही होता, बल्कि परम्परागत धोती, बडी, साफा पहनकर यह नृत्य किया जाता है नर्तक पैरों में घुँघरू बाँधता है गुजरात के मवाई नृत्य की तरह कलसा नृत्य मे सिर पर सात घडे रखकर नाचने की परम्परा प्राचीन है सिर पर सात घडो के साथ शरीर का सतुलन नृत्य को बडी सहजता से लय ताल के सतुलन के साथ साधता चलता है पुरुष नर्तक के साथ कभी-कभी महिला भी नाचती है

केमाली नृत्य

केमाली नृत्य को साजन-सजनई नृत्य भी कहते है केमाली मे स्त्री-पुरुष दोनों हिस्सा लेते है केमाली विवाह के अवसर पर किया जाता है केमाली के गीत जवाब की शैली में होते है साजन-सजनई गीत बडे कर्णप्रिय और श्रवणप्रिय होते है साजन-सजनई लम्बे गीत होते है गीत में गायों की ताल दोहरी, तिहरी होती जाती है इस गीत के गायन के उतार-चढाव में असाधारण तेजी और आकर्षण बढ जाता है केमाली गीत और नृत्य रात-रात भर चलते है

फेफारिया नृत्य

फेफारिया पारम्परिक समूह नाच है स्त्री और पुरुष जोडी बनाकर गोल घेरे मे नाचते है फेफारिया वाद्य के कारण इस नाच का नाम फेफारिया नाच पडा फेफारिया एक प्रकार की फुगी है जिसकी आवाज शहनाई से मिलती-जुलती है फेफारिया की स्वर लहरी के साथ ढॉक और ढोल की अनुगूँज पर स्त्री और पुरुष नर्तक हाथ-पैरों और कमर की विभिन्न मुद्राओ के साथ नृत्य को क्रमश गति देते चलते है नृत्य चरम पर पहुँचकर थम जाता है फेफरिया नाच विवाह के अवसर पर किया जाता है

माडल्या नृत्य

माडल्या नाच ढोल पर किया जाता है माडल्या एक पारम्परिक समूह नृत्य है पुरुष ढोल बजाता है काँसे की थाली का तीव्र स्वर नृत्य को अधिक उत्तेजक बनाता है माडल्या नाच केवल महिलापरक है महिलाएँ ढोल की थाप पर गति बदलती हैं हाथ और पैरों की विभिन्न मुद्राओ को प्रदर्शित करती हैं ज्यों-ज्यों ढोल की गति बढती जाती है, नृत्य चलता है विवाह या पर्व त्यौहार पर माडल्या नाच खुले आँगन में किया जाता है

आड़ा-खड़ा नृत्य

निमाड में जन्म, मुडन सस्कार और विवाह के अवसर पर कई नृत्य किए जाते हैं इन नृत्यो को आडा या खडा कहा जाता है महिलाए घूँघट डाले झुककर हाथ और घुटनों को नृत्य गतियों के अनुरूप लय के साथ कमर पर ले जाती है ढोल और थाली इस नृत्य के मुख्य वाद्य हैं खडा नाच में गीत भी गाये जाते है, जो सवाल-जवाब के रूप में होते हैं इस नृत्य मे दो या चार महिलाएँ हिस्सा लेती है

डडा नृत्य

चैत्र वैशाख की रातो मे विशेषकर गणगौर पर्व पर निमाड के किसान डडा नाच करते है इसमें 20 से 25 तक पुरुष नर्तक होते है नर्तकों के दोनो हाथो मे एक डडा होता है जो लगभग एक या सवा मीटर का होता है डडा लेकर नाचने के कारण इसका नाम डडा नाच पडा डडा नाच के प्रमुख वाद्य ढोल और थाली हैं नाच मदगति से शुरू होकर तीव्रतम गति पर जाकर समाप्त होता है नर्तक ढोल की लय के साथ एकान्तर स्थिति पलटकर हाथ के डडे को लडाते है

ढोल की तीव्रता के साथ नृत्य की गति बढती है नर्तक गोल घेरे में घूमते जाते हैं गति के साथ कभी बैठकर, कभी लेटकर डडे लडाये जाते हैं बीच-बीच में छल्ला या दोहे गाने का भी रिवाज है

आड़ा-खड़ा रजवाड़ी नृत्य

आडा-खडा रजवाडी नृत्य की परम्परा किसी भी अवसर विशेष पर समूचे मालवा में देखी जा सकती है, परन्तु विवाह में तो मण्डप के नीचे आडा-खडा और रजवाडी नृत्य अवश्य किया जाता है ढोल की पारम्परिक कहेरवा-दादरा आदि चालों पर आड़ा-खडा रजवाडी नाच किया जाता है ढोल डडे और कीमडी से बजाया जाता है आडा-खडा रजवाडी महिला परक नृत्य है आडा झुककर केहरवा ताल पर किया जाता है खडा खडे-खडे किया जाता है और रजवाडी साडी के पल्लू को पकडकर किया जाता है

ढिमरयाई नृत्य

ढिमरयाई लोक नृत्य बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अचल में अधिक प्रचलित है ढीमर जाति के लोग इस नृत्य को करते हैं इसलिए इसे ढिमरयाई नृत्य कहते हैं शादी ब्याह एव नवदुर्गा आदि अवसरों पर यह नृत्य किया जाता है नृत्य करते समय प्रमुख नर्तक शृगार और भक्ति के गीत गाता है मुख्य नर्तक 'कत्थक' की तरह पदचालन करते हुए गीतों को हावभाव द्वारा समझाने की चेष्टा करता है इस नृत्य की विशेषता पदचालन की है दौडना, पर्जो के बल चलना, मृदग की थाप पर कलात्मक ढग से ठुमकना, पदाघात करना आदि समय पर द्रुतगति से घूमते हुए सात-आठ चक्कर लगाना इसके प्रमुख भाव है इस नृत्य मे केंकड़िया मृदग, ढोलक, टिमकी आदि वाद्य बजाये जाते है

कानड़ा नृत्य

बुन्देलखण्ड में कानडा या कनडयाई नृत्य मूल रूप से धोबी समाज के लोग ही करते है यह पारिवारिक नृत्य है इसमे पहले सरस्वती और गजानन भगवान की कथा गाई जाती है, साथ ही गायन से पूर्व गुरु वन्दना भी की जाती है मुख्यत यह नृत्य शुभ अवसरो पर जन्म, विवाह आदि पर किया जाता है कुछ समय पूर्व तक इस नृत्य के बिना धोबी समाज में कोई भी विवाह नही हो पाते थे यह नृत्य विवाह में अनिवार्य था, विवाह के अवसर पर ये नर्तक विवाह घर से निकट के तालाब या कुओं के घाट मे पानी

लेने जाते थे उस समय यह नृत्य पूरे समय चलता रहता था इसे कानड़ा नृत्य कहते हैं नृत्य मे जो गीत गाये जाते है वे मुख्यत भक्ति के गीत होते है जिसमें राम कृष्ण तथा शिव की लीलाओं के वर्णन होते हैं

इस नृत्य में मुख्य वाद्य सारगी, लोटा, ढोलक और तारें होती हैं कभी-कभी ढोलक की जगह मृदग का भी प्रयोग होता है साथ ही सारगी तथा ढपली और तारें बजाने वाले कलाकारों के नृत्य मे पद सचालन विशेष रूप से प्रभावित करता है

बरेदी नृत्य

बुन्देलखण्ड के बरेदी लोक नृत्य का सम्बन्ध हमारे देश की कृषक चरवाहा सस्कृति के साथ है प्राचीन वाडमय के अध्येताओं ने यह सिद्ध किया कि बहुत पहले इस देश में 'आभीर' नामक एक अत्यन्त शक्तिशाली जाति का प्रवेश हुआ था जो अपने साथ पुराने अपभ्रश का रूप और आख्यानपरक विशद् लोक कथाए लेकर आए थे कालान्तर मे जातियो और सस्कृतियो के आपसी सम्बन्ध के कारण वह पृथक् पहचान समाप्त हो गई, किन्तु आभीरों की भाषा और सस्कृति का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा इन्होंने अपने स्वभाव, वैशिष्ट्य और रुचि के अनुकूल भारत के महानायक श्री कृष्ण के जीवन और लीला चरित से स्वय को जोड लिया आज भी उत्तर भारत के अनेक अचलों मे दीपावली के समय यादव लोग नृत्य करते हैं साथ ही गोपाल कृष्ण की लीलाओं विशेषकर किशोर लीलाओं के गीत गाते है बुन्देलखण्ड में बरेदी नृत्य गीत दीपावली से पन्द्रह दिन यानी पूर्णिमा तक चलते हैं विशेष किन्तु अत्यन्त आकर्षक नृत्य पोषाक के साथ आठ-दस युवक और किशोर नर्तक अत्यन्त तीव्रगति के साथ नृत्य करते हैं एक व्यक्ति नृत्य के पहले गीत गाता है प्राय दो पक्तियो की लोक कविता जिसे बुन्देली में 'दिवारी' कहा जाता है यह शृगारिक, नीतिपरक, विशेष रूप से धार्मिक हो सकती है दीपावली के अवसर पर की जाने वाली गोवर्धन पूजा से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है

हुलकी नृत्य

हुलकी पाटा, घोटुल का सामूहिक मनोरंजक गीत है इसे अन्य सभी अवसरों पर भी किया जाता है इसके गीत नृत्य के मुख्य आकर्षण होते है; हुलकी पाटा में लडकियाँ और लडके दोनों भाग लेते है हुलकी पाटा के गीत मुरिया ससार के सभी कोणों का स्पर्श थोड़ा-बहुत अवश्य करते है हुलकी पाटा मुरिया कल्पनाओं का व्यावहारिक गीत है इसमें यह गाया जाता है कि राजा-रानी कैसे रहते हैं? य रानी लोग कैसे जुआ खेलती थीं? राजाओं के बीच लड़ाइयाँ किन बातो पर और किस तरह से हुआ करती थीं? रानियों को छुपने पर उन्हें कैसे ढूँढा जाता था? ढूँढन के लिए कौन-कौन लोग निकलते थे? अन्य गीतों को गाते जाते समय लडके-लडकियो की शारीरिक सरचना को मापदण्ड बनाकर गाया जाता है कि छोटी लडकी किस काम के लिए उपयुक्त है? एक भाटा तोड़ने के लिए छोटी लडकी ठीक है ऊँचा लड़का किस काम के लिए ठीक है? सेमी तोडने के लिए ठीक है सेमर फूल जैसी लडकी किसके घर में जन्म ली है? राजा के घर में जन्म ली है इस तरह से हुलकी पाटा कई विभिन्न धरातलों का स्पर्श करते हुए यथासम्भव तर्कसगत उत्तर देता है इसे जब भी इच्छा होती है—नाचा गाया जा सकता है

मांदरी नृत्य

मांदरी नृत्य मे मादरी करताल पर नृत्य किया जाता है इसमें गीत नही गाया जाता है पुरुष नर्तक इसमें हिस्सा लेते है दूसरे प्रकार की मादरी नृत्य मे चिटकुल के साथ युवतियाँ भी हिस्सा लेती हैं यह घोटुल का नियमित नृत्य होता है इसमें कोई एक व्यक्ति पूरे नृत्य का नेतृत्व करता है, जो नृत्य में शामिल होता है यह व्यक्ति मादरी को अलग-अलग थापों का सयोजन करता है, जिसमें कम-से कम एक चक्कर मादरी नृत्य अवश्य किया जाता है मादरी नृत्य में शामिल प्रत्येक व्यक्ति कम-से-कम एक थाप के सयोजन को प्रस्तुत करता है जिस पर पूरा समूह नृत्य करता है. थापों के सयोजन पर ही चिटकुल बजाई जाती है इसी सयोजन पर पदताल भी शामिल रहते हैं एक कदम आगे एक कदम पीछे दो कदम आगे दो कदम पीछे बाए-दाए पूरा समूह एक घेरे में नृत्य करता है कभी कभी एक ही थाप पर पूरा समूह इतना आगे आ जाता है कि बीच में जगह नहीं के बराबर रह जाती है और उसी सयोजनो के दूसरे भाग पर इतना पीछे पूरा समूह चला जाता है कि बीच में बेहिसाब जगह होती है इसी तरह से बाये दायें का सयोजन हुआ करता है मादरी नृत्य काफी आकर्षक, इन सयोजनो के कारण हो जाता है यह नृत्य लगातार कई घण्टों तक चलता रह सकता है मादरी नृत्य लगभग प्रत्येक रीति-रिवाजों, पर्व-उत्सवों पर किया जाता है

18

मध्य प्रदेश में चित्रकला एवं प्रमुख चित्रकार

मध्य प्रदेश में चित्रकला

बीसवी सदी के पहले दशक मे, जब तत्कालीन ब्रिटिश शासको ने कोलकाता, चेन्नई और मुम्बई मे आर्ट स्कूल स्थापित किए, तब इन स्कूलों के जरिये पाश्चात्य एकेडेमिक पद्धति से चित्र शिक्षा का प्रसार शुरू हुआ था आजादी से पहले इस सक्रमण दौर मे, जहाँ पुनरुत्थानवादी कलाकार भारतीय अभिप्रायो और अभिकल्पों को अपनी कलाकृतियो का माध्यम बना रहे थे, वहीं ब्रिटिश आर्ट स्कूलों में प्रशिक्षित कलाकार शास्त्रीय तकनीक और शैली को अपनी कलाकृतियों के जरिये लोकप्रिय बना रहे थे

सस्कृति काल के दौरान कला जगत् के इन आन्दोलनों में मध्य प्रदेश के कलाकारों की भी उल्लेखनीय हिस्सेदारी रही थी इनमें सर्वश्री दत्तात्रय दामोदर देवलालीकर, उत्तम सिह तोमर, डी जी गोडबोले और आर के फडके प्रमुख है

आजादी के बाद कला के आयामो की अवधारणा में जबर्दस्त तब्दीली आई कला अब देश और काल की सीमाएँ लाँघकर स्थानीयता से मुक्त होने का प्रयास करने लगी मध्य प्रदेश में इन्दौर ग्वालियर, भोपाल, जबलपुर और उज्जैन आदि प्रमुख नगरों मे स्थापित शासकीय और अशासकीय कला महाविद्यालयों तथा कला सस्थाओ ने विभिन्न कलात्मक गतिविधियों का सचालन किया सर्वश्री नारायण श्रीधर बेन्द्रे मकबूल फिदा हुसैन और रजा आदि कलाकारों ने देश के शीर्ष स्थानीय कलाकारों में अपना स्थान बनाया है यहाँ मध्य प्रदेश के प्रमुख नगरों मे चित्रकला के सक्षिप्त इतिहास पर प्रकाश डाला जा रहा है

इन्दौर

इन्दौर के सबसे वरिष्ठ चित्रकार स्व नाना भुजग थे इन्दौर का चित्रकला इतिहास बनाने मे श्री डी डी देवलालीकर की अहम् भूमिका रही श्री देवलालीकर उन प्रमुख कलाकारो मे है, जिन्होने पाश्चात्य शास्त्रीय पद्धति से अपनी कृतियो में पौराणिक और आध्यात्मिक विषयों को आकार दिये इन्दौर मे कला शिक्षा के मूल स्रोत श्री रामचन्द्र राव और श्री प्रतापराव (जाधव परिवार) है रामचन्द्र राव श्रेष्ठ चित्रकार थे गुरु देवलालीकर ने इन्हीं से प्रेरणा प्राप्त की थी, महाराजा तुकोजीराव होल्कर (तृतीय) ने भी चित्रकला मे काफी दिलचस्पी ली और राज सरक्षण प्रदान किया 1923 तक इदौर के विभिन्न महाविद्यालयों में चित्रकला का अध्यापन आरम्भ हो चुका था 1924 मे महाराजा होल्कर ने चित्रकला के लिए छात्रवृत्ति स्वीकृत की इसी राजकीय छात्रवृत्ति पर देवलालीकर जी को मुम्बई भेजा गया 1926 में नगर में जब अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा योजना लागू हुई तो चित्रकला को भी प्राथमिक शिक्षा में सम्मिलित किया गया इसी वर्ष मुम्बई के सर जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से प्रशिक्षण प्राप्त कर देवलालीकरजी इन्दौर लौट आए और उनके निर्देशन मे चित्रकला प्रशिक्षण कक्षा आरम्भ की गयी 1929 मे चित्रकला की तृतीय वर्ष की कक्षा प्रारम्भ हुई और 1930 में चतुर्थ वर्ष की 1933 मे इदौर के चित्रकला विद्यालय में डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू हुआ इस विद्यालय के प्रारम्भिक दौर में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में सर्वश्री नारायण श्रीधर बेन्द्रे, मकबूल फिदा हुसैन, रामकृष्ण अनत खोत, सोलेगाँवकर, डी जे जोशी, विष्णु चिचालकर (गुरुजी), श्री गावडे और श्री बृजलाल सोनी आदि शामिल थे

इस विद्यालय ने धीरे-धीरे अपना नाम अन्तर्राष्ट्रीय कला वीथिकाओ मे भी दर्ज कराया 1934 में मुम्बई आर्टस् सोसायटी ने श्री नारायण श्रीधर बेन्द्रे और श्री सोलेगाँवकर के 4 चित्र बर्लिंगटन हाउस की वीथिका में आयोजित लन्दन ओरिएंटल आर्टस् प्रदर्शनी में भेजे श्री बेन्द्रे ने देश की आधुनिक कला के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया उनके काम मे रगो की ताजगी और स्पेस का सूझबूझ भरा सयोजन हमेशा मौजूद रहता है रगों व रूपकारो के प्रति अतरग सवेदनशीलता उनके काम को अमूर्तन की सीमा तक ले जाती है

श्री मकबूल फिदा हुसैन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रकार हैं उनके रूपाकारों मे भारतीय अभिप्राय और लोक कला के स्वर ज्यादातर मुखर होते है श्री डी जे जोशी के

सैरों में अक्सर अभिव्यजनावादी शैली के मार्फत मालवा और निमाड की लोक सस्कृति रूपायित हुई है डी जे कुशल मूर्तिकार भी हैं इधर श्री विष्णु चिचालकर (गुरुजी) ने कोलाज पद्धति के जरिये अपनी एक अलग भाषा गढी है लकड़ी प्लाइवुड आदि के माध्यम से रचा गया गुरुजी का काम एक अजीब रहस्यात्मकता का सृजन करता है इसके पूर्व गुरुजी का काम शबीहों पर केन्द्रित रहा था और इस विद्या में उन्होंने काफी प्रतिष्ठा भी पाई

श्री सासवडकर भी यहाँ के वरिष्ठ शिल्पकर्मी रहे इन्दौर के अन्य कलाकारों में, जो अमूर्त रूपाकारों, सवेदनशील रगो और बिम्बों के प्रयोगों के मार्फत समसामयिक कला के नक्शे पर उभर रहे हैं, उनमें सर्वश्री जी.के पडित, बसत आगाशे, एम म्हात्रे, सुहास निम्बालकर, चन्द्रेश सक्सेना और एल एन भावसार प्रमुख हैं मुम्बई के सर जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् में प्रशिक्षित श्री श्रेणिक जैन के चित्रों मे राजपूत कला के रगों और रूपाकारों का जमाव है, जो आधुनिक मुहावरो और बिम्बो के साथ उजागर होता है

पचास के दशक मे यहाँ सर्वश्री विष्णु चिचालकर, रामजी वर्मा, वाकणकर आदि ने फ्रायडे ग्रुप ऑफ आर्टिस्ट्स बनाया इसके बाद श्री वसत चिचवडकर ने 'स्पेक्ट्रम' नामक संस्था बनायी थी, लेकिन इनके बाद ऐसा कोई सिलसिला अस्तित्व में नहीं आया

ग्वालियर

ग्वालियर ने प्रदेश की समसामयिक कला को काफी कुछ दिया है. सर्वश्री प्रभात नियोगी, एल एस राजपूत, रुद्र हाजी, एम एस भांड, उमेशकुमार, मदन भटनागर, सतोष जडिया, अनिलकुमार और राबिन डेविड आदि कलाकारों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा और कौशल से प्रदेश के कला जगत् में ग्वालियर की हिस्सेदारी रची है वयोवृद्ध श्री भाड ने ग्वालियर के जन मानस में कला के प्रचार और प्रसार के लिए काफी काम किया प्रदेश के कलाकारो मे श्री राजपूत का विशिष्ट स्थान है इदौर आर्ट स्कूल में प्रशिक्षित श्री राजपूत के आधुनिक कला की अमूमन सभी प्रचलित शैलियों और माध्यमों का उपयोग अपने काम में किया है उनके काम में सूक्ष्म आकार सयोजन और रगों का चयन अमूर्तता के प्रति तीव्र आग्रह को उजागर करता है शासकीय कला महाविद्यालय, ग्वालियर में उनके नेतृत्व मे काफी प्रगति की

श्री रुद्र हाजी ने शाति निकेतन में कला की शिक्षा प्राप्त की राज्य के शिल्पकारों मे अग्रण्य श्री हाजी ने स्थापत्य रूपाकारो में कई बेहतर मूर्तियाँ गढी है श्री प्रभात नियोगी ने आकृतिमूलक कृतियो मे आधुनिक स्वरो को बखूबी समाहित किया श्री मदन भटनागर ने शिल्पी गुरु रामकिंकर बैज के निर्देशन मे शाति निकेतन मे शिल्प शिक्षा प्राप्त की. उन्होंने टेराकोटा, प्लास्टर, धातु लकडी और पत्थर आदि पर तरह-तरह के प्रयोग किए है श्री भटनागर के अलावा श्री विश्वामित्र वासवानी, श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा और श्री देवेन्द्र जैन ने भी ग्वालियर के कला महाविद्यालय मे अध्यापन के जरिये अपनी अगली पीढी को आधुनिक बनाया है उमेश कुमार, विजय मोहिते, अब्दुल हमीद, जे जे साल्वी और यूसुफ ने भी प्रदेश के कला जगत् में अपना स्थान बनाया है

जबलपुर

इदौर और ग्वालियर की तुलना मे जबलपुर की कलात्मक गतिविधियाँ काफी बाद मे प्रारम्भ हुई 1961 में जबलपुर में शासकीय कला निकेतन में कला विभाग की स्थापना के बाद ही जबलपुर, शिल्प शिक्षा का केन्द्र बना 1961 के पूर्व डॉ लक्ष्मीप्रसाद सिहोरे, श्री रुद्रकुमार और श्री अमृतलाल बेगड तथा श्री के आर पराण्डेकर जबलपुर मे कला चेतना जगाने का काम करते रहे डॉ लक्ष्मीप्रसाद सिहोरे देश के शीर्ष स्थानीय कला समीक्षकों में से हैं

श्री व्योहार राममनोहर सिन्हा शासकीय कला निकेतन मे ललित एव व्यावहारिक कला विभाग के पहले निर्देशक बने श्री सिन्हा ने शान्ति निकेतन मे आचार्य नन्दलाल बसु और चीन में श्री चीपाई सिह के निर्देशन मे शिक्षा प्राप्त की उनके चित्रों में पूर्वी कला के प्रतीकधर्मी रूपाकारों और पश्चिम की अमूर्त अभिव्यजनावादी शैलियो का समन्वय दिखाई पडता है

श्री हरि भटनागर कोलाज के जरिये अनेक प्रयोग करते हैं रेत, ककर, चूडियाँ और शीशे वगैरह चिपकाकर टेक्सचर और बनावट के विविधवर्णी विस्तार के द्वारा असरदार वातावरण रचने में श्री भटनागर माहिर हैं श्री अमृतलाल बेगड का मुख्य विषय नर्मदा है श्री विष्णु चौरसिया के सैरों में तरल रगो की ताजगी है इसी तरह श्री हरि श्रीवास्तव वैयक्तिक शैली के मूर्तिकार हैं

श्री रमेश पटेरिया देश के ख्याति मूर्तिकार है श्री सुरेश श्रीवास्तव, श्री उमेश मिश्रा श्री कामता सागर और श्री दिलीप राजपूत के चित्रो में आकार सयोजन का सामजस्य और प्रतीको के मौलिक प्रयोग प्रकट होते हैं लकडी मे उत्कीर्ण श्री मनोहर गोधने के अमूर्त और आकृतिमूलक मूर्ति शिल्प, श्री सुधेन्दु चन्दा के सुस्पष्ट ग्राफिक्स और लक्ष्मीनारायण पचौरी तथा श्री विजय ठाकुर की कृतियाँ भी उल्लेखनीय हैं उभरते हुए श्री अल्विन ग्रेगरी और श्री किशन सागर भी काफी आश्वस्त करते हैं

भोपाल

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल अब सास्कृतिक और कलात्मक गतिविधियो के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप मे विकसित हो रही है मध्य प्रदेश में कला परिषद् और एक रिट्ज आर्ट सोसायटी भी है फरवरी 1982 में प्रधानमंत्री

द्वारा उद्घाटित भारत भवन के एक हिस्से मे ललित कलाओं का एक सग्रहालय रूपकर भी बनाया गया है

यद्यपि भोपाल के अधिकाश कलाकार राज्य के अन्य नगरों से आये है, फिर भी भोपाल को एक कलामय और सुरुचिपूर्ण वातावरण देने में सर्वश्री लक्ष्मण भाड, सुशील पाल, बी राधाकृष्णन, बलवत सिह कुशवाह, सच्चिदा नागदेव, सुरेश चौधरी तथा रमेश जैन आदि के नाम उल्लेखनीय है श्री भाड बहुमुखी कलाकार हैं सीमित रगों मे काफी वजनदार सकेत उनकी विश्लेषणात्मक धनवादी रूपाकृतियो की विशेषता है श्री पाल के काम मे सैरो की प्रमुखता रही है श्री नागदेव ने मिनिएचर मे पुनर्खोज का महत्वपूर्ण काम किया है उन्होंने काफी दिनो तक उज्जैन मे भी काम किया

उज्जैन

उज्जैन मे प्रागैतिहासिक काल के बाद भी कलाओ पर काफी काम हुआ साठ के दशक मे श्री विष्णु श्रीधर वाकणकर ने कला भवन की स्थापना की श्री वाकणकर पुराविद् होने के अलावा एक अच्छे चित्रकार भी हैं उनका काम मुख्यत सैरो पर केन्द्रित रहा है श्री वाकणकर के अलावा भी उज्जैन ने प्रदेश को अनेक रचनाधर्मी कलाकार दिए इनमे सर्वश्री विष्णु भटनागर, रामचंद्र भावसार, बदशेखर काले, रमेश सानवानी, प्रमोद गणपत्ये राधाकिशन वाढिया रहीम गुट्टीवाला, अब्दुल जलील कुरैशी और श्रीमती शिवकुमारी जोशी प्रमुख है 1974 में श्री काले ने आर्टीजोबेन 'युवा कलाकार' नामक सस्था भी बनायी उन्होंने रचना सामग्री मे कई नए प्रयोग किए

इन नगरो के अलावा राज्य के अन्य नगरों में भी कलात्मक गतिविधियाँ चल रही हैं धार मे कला मदिर एक स्कूल है यहाँ स्व शिल्पकार फडके का स्टुडियो है इस तरह राज्य मे आजादी के बाद, जो कलात्मक वातावरण तैयार हुआ उसमें नए-नए मुहावरो, परिभाषाओ और साहसिक प्रयोगो के द्वारा सारे क्षितिज को बदलने की सार्थक कोशिश झलकती है

मध्य प्रदेश में चित्रकला की आधुनिक प्रवृत्तियाँ

मध्य प्रदेश में आधुनिक चित्रकला के प्रमुख प्रवर्तको में श्रीधर नारायण बेन्द्रे, सैयद हैदर रजा, मकबूल फिदा हुसैन विष्णु चिचालकर, सुरेश चौधरी, श्रेणिक जैन, अखिलेश, रमेश पटेरिया, जगदीश स्वामीनाथन् और राजाराम के साथ-साथ कई चित्रकारों ने परम्परा चित्रकारी और अकादमीवाद चित्रकारी से हटकर लोक साहित्य लोककला और पाश्चात्य चित्रकला का अनुसरण करते हुए जिन आधुनिक प्रवृत्तियों का अनुसरण किया उन्हे ही हम मध्य प्रदेश में आधुनिक चित्रकला की प्रवृत्तियाँ कह सकते है इन चित्रकारो के चित्रो की अग्र प्रवृत्तियाँ थीं-

1. चित्रों मे कल्पना के स्थान पर यथार्थता को स्थान दिया जा रहा है
2. चित्रकला यूरोप के साथ-साथ अन्य पाश्चात्य देशो के सम्पर्क करने के कारण सारभौमिकरण और नवीनतम् तकनीक को समावेशित किए हुए है
3. लोक साहित्य, लोक चित्रकारी और आम जनमानस की समस्याएँ चित्रकारी का मूल आयाम है
4. चित्रों में स्वच्छन्दता, धनवाद रचनावाद, अभिव्यजन-वाद के साथ-साथ सूक्ष्मवाद का समावेश किया जा रहा है
5. मध्य प्रदेश के चित्रकार जिनमें मूलत. बेन्द्रे, हुसैन प्रमुख है, ने मुम्बई और दिल्ली की कला को विशिष्ट महत्व प्रदान किया है
6. चित्रो मे आधुनिक रगो का प्रयोग जिसमें नीले, पीले, नारगी रग प्रमुख है वहीं दूसरी ओर चित्रों में जल रग जैसी ताजगी नूतन प्रवृत्ति का एक अन्य आयाम है
7. चित्रों का प्रभाववादी होना, बनावट के स्थान पर भाव प्रदर्शन और प्रगतिशीलता मध्य प्रदेश के चित्रकारों की चित्रकारिता का नूतन आयाम है
8. चित्रकला जन्मजात न होकर एक शिक्षण-प्रशिक्षण गतिविधि है, जिसमें शासकीय और निजी दोनों प्रयास सराहनीय है
9. चित्रकारी का वाणिज्यिकरण हो रहा है, जिसमें वे ही चित्र बनाये जाते हैं जिन्हें जनमानस पसद करता है
10. प्रकृति चित्रो के साथ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की समस्याओं पर चित्र बनाये जाते हैं कार्टून चित्र, व्यग्य चित्र, तेल चित्र अपनी नवीन विशिष्टता लिए हुए है
11. कम्प्यूटर का प्रयोग और अपनी कल्पना को कम्प्यूटर पर उतारना आधुनिक चित्रकला की आधुनिकतम प्रवृत्ति है
12. कुछ नवीन चित्रकार काष्ठ कला और चित्रकला को समन्वित करने मे लगे हुए हैं
13. प्राचीन और मध्ययुगीन कला पर शोध और अनुसधान नवीन चित्रकला की एक अन्य प्रवृत्ति है

मध्य प्रदेश के प्रमुख चित्रकार

सैयद हैदर रज़ा

सैयद हैदर रजा का जन्म मध्य प्रदेश के नरसिहपुर जिले के बावरिया नामक स्थान पर सन् 1922 में हुआ था रजा के पिता सैयद मोहम्मद रजा वन विभाग मे अधिकारी थे अत स्वाभाविक तौर पर रजा ने बचपन से ही प्रकृति को बडी नजदीक से देखा, जिसका प्रभाव आज भी उनके चित्रो मे स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है

रजा ने सन् 1939 में दमोह (मध्य प्रदेश) से मेट्रिकुलेशन किया तथा आगे की पढाई के लिए नागपुर के कला विद्यालय मे प्रवेश लिया जहाँ इस विद्यालय के प्राचार्य श्री बाबूराव आठवले का आपको विशेष सानिध्य मिला कुछ समय तक आपने एक्सप्रेस आर्ट्स स्टूडियों मे एक डिजाइनर के रूप मे कार्य किया रजा ने चित्रकला की प्रारम्भिक शिक्षा मुम्बई के सर जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से प्राप्त की उन्होंने स्वाध्यायी छात्र के रूप में मोहन आर्ट क्लब से परीक्षा दी सन् 1947 मे अध्ययनरत् रजा ने मुम्बई मे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप की स्थापना की सन् 1948 में जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से आप कला के डिप्लोमाधारी हुए इसी वर्ष बॉम्बे आर्ट सोसायटी द्वारा उन्हें स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ इस दौरान आपने भारत के कई राज्यों का भ्रमण किया और वहाँ की प्रकृति व सस्कृति को अपनी कला मे स्थान दिया. सन् 1950 में फ्रास गवर्नमेन्ट की छात्रवृत्ति मिलने पर रजा ने फ्रास में पेरिस के "एकोल नासनाल सुपीरियर दे बो आर्थ" में सन् 1953 तक चित्राध्ययन किया अब तक रजा ने फ्रांस में ही रहने का मन बना लिया था सन् 1956 में फ्रास के 'प्रोदिला क्रिटिक' पुरस्कार से रजा को सम्मानित किया गया वे ऐसे पहले गैर-फ्रासीसी कलाकार थे जिन्होंने यह पुरस्कार प्राप्त किया था सन् 1959 मे उनका विवाह फ्रासीसी कलाकार जॉनी मौजीला से हुआ

प्रारम्भ मे रजा की चित्रकारी कश्मीर की प्रकृति उकेरती थी बाद में राजस्थान व केरल जैसे भारतीय राज्यो के साथ ही पाश्चात्य चित्रकला का प्रभाव आपके केनवास पर स्पष्ट देखा जा सकता हैं रजा का मानना हैं कि उन्होंने पेरिस जाकर अपने आतरिक कलाकार को पहचाना और कलाकृति में निहित शक्ति को जाना रजा ने चित्रकला को श्वास लेने वाली सजीव वस्तु माना है जो उनके सवेदनशील अनुभूतिपरक स्वभाव का परिचायक है उन्होंने रगों के प्रतीक स्वभाव को अधिक महत्व दिया है

रजा ने देश-विदेश के कई बडे शहरों में व्यक्तिगत व सामूहिक प्रदर्शनियों में भागीदारी की है उनकी कुछ प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ इस प्रकार हैं सेलोन दि माई 1951, वेनिस बैनाल 1956, पेरिस बैनाल 1957, ब्रुगेस बैनाल 1958, साओपालो बैनाल 1958, मोरक्को बैनाल 1963, मेण्टन बैनाल 1964, 1966 और 1972, त्रैवार्षिकी, नई दिल्ली 1968 और 1982 मध्य प्रदेश शासन भी रजा को अपनी चित्रकला प्रदर्शनी हेतु आमत्रित कर चुका है उनके चित्रों में 'समर' नामक चित्र पेरिस कला सग्रहालय में 'विलेज' नामक चित्र ग्रेनोवल चित्र सग्रहालय फ्रास में तथा रूपकर नामक चित्र ललित कला सग्रहालय भोपाल में सग्रहित है उनके कुछ प्रमुख चित्रों में अटल शून्य की अनन्तता बिन्दु, अनसुनी आवाज (अनआयडिल साउण्ड) माँ, राजस्थान, सफेद फूल, फर्टिलिटी नाग, अकुरण, स्पदन इत्यादि है कई मर्तबा उनके चित्रों पर कोई सूक्ति अथवा मत्रोल्लेख भी मिलता है, जैसे उनके एक चित्र पर उल्लेखित हैं, "माँ, लौटकर जब आऊँगा, क्या लाऊँगा अनायास ही हृदय को छू जाता है

रजा कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के बर्कले परिसर के कला विभाग में अतिथि व्याख्याता रहे हैं सन् 1981 में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया एव सन् 1983 में ललित कला अकादमी ने उन्हें अपना फेलो चुना मध्य प्रदेश शासन द्वारा सन् 1996 में उन्हें कालिदास सम्मान से सम्मानित किया गया यद्यपि आज रजा की साधनास्थली पेरिस है, परन्तु उनके भारत के लगातार दौरे उनकी कमी का अहसास नहीं होने देते

मकबूल फिदा हुसैन

मकबूल फिदा हुसैन का जन्म महाराष्ट्र के पण्ढरपुर में सन् 1915 मे हुआ था. आपकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर मध्य प्रदेश में हुई. हुसैन ने 32 वर्ष की उम्र मे अपना चित्रकार के रूप मे जीवन प्रारम्भ किया. हिन्दुस्तान के प्रमुख चित्रकार होने के साथ-साथ आप एक कवि फिल्मकार, म्युरलिस्ट और बुक डिजाइनर भी है 1937 तक मुम्बई मे रहकर सिनेमा होर्डिंग्स बनाने का कार्य किया बाद में फर्नीचर और खिलौने डिजाइन करना शुरू किया आप प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के सस्थापक सदस्य भी रहे हुसैन की पहली एकल प्रदर्शनी 1947 में मुम्बई मे प्रदर्शित हुई उसके बाद से देश-विदेश में कई एकल प्रदर्शनियाँ लगाई गईं जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार है सेलोदिमा पेरिस 1951, वेनिस बैनाल 1953 और 1955 साओपालो बैनाल, ब्राजील 1959, 1971, टोकियो बैनाल 1959, टेट गैलरी लन्दन 1982 आदि बर्लिन फिल्म फेस्टिवल 1967 मे आपकी फिल्म 'थ्रू द आइल्स ऑ ए पेण्टर' को गोल्डन बियर पुरस्कार दिया गया आपके ऊपर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें देश-विदेश से प्रकाशित हुई हैं वर्ष 1966 मे भारत सरकार ने आपको 'पद्मश्री' तथा वर्ष 1973 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया है

आप दिल्ली और मुम्बई दोनों जगह रहते हुए स्वतन्त्र चित्रकार के रूप में कार्यरत् हैं हिन्दू देवी-देवताओं के विवादास्पद चित्र बनाने और अभिनेत्री माधुरी दीक्षित को लेकर फिल्म 'गजगामिनी' बनाने से आप काफी चर्चा में रहे

जगदीश स्वामीनाथन

जे स्वामीनाथन का जन्म 21 जून, 1928 मे शिमला मे हुआ आपके पिता का नाम श्री एन वी जगदीश अय्यर तथा पत्नि का नाम श्रीमती भवानी था आपने अपनी प्राथमिक स्कूल शिक्षा के पश्चात् 1943 में मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया पत्रकारिता के लिए शिक्षा बीच में छोड कुछ समय दिल्ली पोलिटेक्निक में चित्रकला की शिक्षा ली बाद मे अकादमी ऑफ फाइन आर्टस् वारसा, पोलैण्ड स्कॉलरशिप पर गये आप दिल्ली राज समिति के सदस्य

रहे साथ ही कांग्रेस समाजवादी दल तथा कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भी रहे स्वामीनाथन साप्ताहिक पत्र 'मजदूर आवाज' के सह सम्पादक भी रहे

स्वामीनाथन ने कई एकल प्रदर्शनियों के साथ-साथ प्रमुख समूह प्रदर्शनियो में शिरकत की 1965 में टोकियो बैनाल 1968 में इण्डियन इण्टरनेशनल बैनाल आदि मे भाग लिया कुछ दिनों तक काण्ट्रा पत्रिका का सम्पादन किया स्वामीनाथन जवाहरलाल नेहरू फैलोशिप से सम्मानित भी किए गए आपने साओपालो बैनाल 1969 के जूरी सदस्य के रूप मे भाग लिया आपने चतुर्थ भारतीय त्रैवार्षिकी के सदस्य के रूप में भी कार्य किया स्वामीनाथन ने आदिवासी रूपकर कला में स्कल्पचर एव स्टोन कर्विंग पर विशेष कार्य किया है आप 1982 से 1990 तक रूपकर, भारत भवन भोपाल के निदेशक रहे आपको मध्य प्रदेश शासन द्वारा 1994 मे कालिदास सम्मान से सम्मानित किया गया आपकी 1994 में असामयिक मृत्यु हुई

नारायण श्रीधर बेन्द्रे

नारायण श्रीधर बेन्द्रे का जन्म 21 अगस्त, 1910 को हुआ आपने आगरा से स्नातक पास की तत्पश्चात् कला की प्रारम्भिक शिक्षा हेतु इन्दौर लौटे जहाँ डी डी देवलालीकर का सानिध्य प्राप्त हुआ उन्होने इन्दौर कला शिक्षण सस्थान मे शिक्षा ग्रहण की 1934 मे उन्होंने जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से डिप्लोमा प्राप्त किया शिक्षा समाप्ति के बाद बेन्द्रे ने स्वतत्र रूप से कला सृजन प्रारम्भ किया आपने कश्मीर सरकार के 'विजिटर्स ब्यूरो मे कलाकार पत्रकार' के रूप में 1936 से 1939 तक कार्य किया अतिथि कलाकार के रूप में वे शान्ति निकेतन में भी रहे

बेन्द्रे ने स्वतत्र चित्राकन के साथ विद्यार्थियों को भी प्रशिक्षित किया उन्होने फिल्मो मे कला निर्देशन भी किया उन्हे कई सस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया गया जिनमे बाम्बे आर्ट सोसायटी द्वारा स्वर्ण पदक, आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया द्वारा ट्रॉफी आदि महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं उन्होंने अमरीका इगलैण्ड, फ्रास, हॉलैण्ड आदि देशो मे जाकर कला अध्ययन किया और वहाँ प्रचलित नवीन कला पद्धतियो का सीखा न्यूयॉर्क में उन्होने अरमिन लेनडेक से विधिवत् कला तकनीक सीखी उनके चित्रों की कई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ भी आयोजित हुई

सन् 1946 में श्री बेन्द्रे आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया के प्रेसीडेंट चुने गए और बम्बई सरकार के कला सलाहकार समिति के सदस्य नियुक्त हुए श्री बेन्द्रे एम एस विश्वविद्यालय बडौदा मे अध्यापक पद पर भी पदस्थ रहे भारत सरकार द्वारा चीन भेजे गए सास्कृतिक दल मे भी आपकी उपस्थिति उल्लेखनीय है

बेन्द्रे के केनवास पर नारी को महत्वपूर्ण स्थान मिला है उनके प्रवाहमय चित्रों में ग्रामीण भारतीय नारी को कार्य करते, शृगार करते, लकडी का गट्ठर उठाते या बच्चे को कन्धे पर लादे हुए देखा जा सकता है बेन्द्रे की नारियाँ आधुनिक पद्धति से चित्रित की गयी हैं किन्तु उनकी मुद्रा भाव, भगिमाएँ और शालीनता पर सम्पूर्ण भारतीयता की छाप है उनके गाय और बछडे वाले चित्र में मातृत्व प्रेम की मार्मिक अभिव्यक्ति है उन्होंने मनुष्य तथा पशु-पक्षियो को भी अपनी कला का केन्द्र बनाया है उनके चित्र नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट, नई दिल्ली, अन्य सग्रहालयो एव व्यक्तिगत सग्रहों में देखने को मिलते है भोपाल स्थित भारत भवन मे सन् 1992 में "चतुर्थ भारत भवन समकालीन कला द्वैवार्षिकी" पर लगाई गई चित्र प्रदर्शनी प्रो एन एस बेन्द्रे को समर्पित की गयी थी

रमेश पटेरिया

रमेश पटेरिया का जन्म 4 जुलाई 1937 को जबलपुर मे हुआ आपके पिता का नाम श्री नारायण प्रसाद था प्रारम्भिक शिक्षा जबलपुर से प्राप्त कर आपने बी ए ललित कला में उत्तीर्ण कर चित्रकला मे प्रमाण-पत्र प्राप्त किया श्री पटेरिया की पहली एकल प्रदर्शनी रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट्स, लन्दन में प्रदर्शित की गई थी आपकी कई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी भागीदारी रही ललित कला अकादमी, चण्डीगढ मे आपके कई चित्र सगृहीत हैं

राजाराम

राजाराम का जन्म 22 जनवरी 1943 में इन्दौर में हुआ आपने कला की प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर से ही प्राप्त की तत्पश्चात् जी डी आर्ट बम्बई से चित्रकला मे डिप्लोमा प्राप्त किया तत्पश्चात् बडौदा से फाइन आर्ट में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की राजाराम सन् 1967-72 तक वनस्पति विद्यापीठ तथा 1972-77 तक शासकीय महाविद्यालय ग्वालियर मे व्याख्याता पद पर रहे वे भोपाल स्थित शासकीय हमीदिया महाविद्यालय मे चित्रकला विभाग में प्राध्यापक भी रहे आपने माउण्ट स्पेन्स की पदयात्रा व यूरोप के कई देशों की यात्रा की सन् 1977 मे ग्रीस सरकार द्वारा उन्हे शोध छात्रवृति मिली इटली सरकार ने भी उन्हें विशेष अध्ययन अनुदान दिया था आपको दिल्ली, मध्य प्रदेश राजस्थान आदि जगहों पर राष्ट्रीय प्रदर्शनियो में पुरस्कृत भी किया गया है

डॉ. मंजुषा गांगुली

डॉ गागुली का जन्म 5 नवम्बर 1953 को ग्वालियर मे हुआ आपने एम ए . पी एच-डी . नेशनल डिप्लोमा इन फाइन एण्ड अलाईड आर्टस् मे उपाधियाँ अर्जित कीं आपको कोलाज चित्रण में विशेषज्ञता हासिल थी भोपाल कलकत्ता पुणे सहित देश के महानगरों में अब तक 28 से अधिक एकल प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा चुका है आपने कई सामूहिक प्रदर्शनियो मे भी हिस्सेदारी की है

डॉ. मजूषा की कलाकृतियाँ मध्य प्रदेश कला परिषद् रूपकर में भी प्रदर्शित की जा चुकी है आपके चित्रों का सग्रह कई निजी सग्राहको मे उपलब्ध है आपको देश की कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है जिनमें अखिल भारतीय कालिदास पुरस्कार, अखिल भारतीय युवा महोत्सव मे स्वर्ण पदक, मध्य प्रदेश राज्य का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार रजा पुरस्कार, अमृता शेरगिल फैलोशिप विशेष रूप से उल्लेखनीय है

अफ़ज़ल

अफजल का जन्म 1 अगस्त, 1936 को मध्य प्रदेश के देवास जिले मे हुआ आपने एम ए ड्राइग व पेण्टिग में किया तथा फाइन व अप्लाइड आर्टस् मे डिप्लोमा प्राप्त किया आपने मध्य प्रदेश कला परिषद्, ललित कला अकादमी की राष्ट्रीय प्रदर्शनी 1972, 73, 74 व 76 मे हिस्सेदारी की, बाम्बे आर्ट सोसायटी में 1968 व 78 मे आयोजित प्रदर्शनी में भी आपकी कला सराही गई इसके अतिरिक्त आपने देश के कई छोटे-बडे शहरों में प्रदर्शनियों के माध्यम से अपनी कलाकृतियो को आम जन तक पहुँचाया आप कई प्रदर्शनियों मे सम्मानित भी किए गए जिनमें मध्य प्रदेश कला परिषद् द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय प्रदर्शनी, आन्ध्र प्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ, बाम्बे आर्ट सोसायटी द्वारा आयोजित प्रदर्शनी तथा अखिल भारतीय कालिदास चित्र प्रदर्शनी उज्जैन उल्लेखनीय है आपको मध्य प्रदेश शासन द्वारा अमृता शेरगिल फैलोशिप के लिए भी चुना गया था

विष्णु चिंचालकर

श्री विष्णु चिचालकर का जन्म 1917 में देवास के पास एक गाँव मे हुआ था उन्होंने इन्दौर स्कूल ऑफ आर्टस् से पेंटिग एव ड्राइग की शिक्षा प्राप्त की जिसमे आपको अपने समय के सिद्धहस्त चित्रकार श्री देवलालीकर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ. इस शिक्षा में आपके सहपाठी थे विश्व प्रसिद्ध चित्रकारद्वय श्री एम एफ हुसैन एव एन.एस बेन्द्रे बाद में श्री चिचालकर ने कुछ समय इन्दौर फाइन आर्ट कॉलेज में भी पढाया श्री विष्णु चिचालकर ने मुख्यत प्रसिद्धि लैण्ड स्केप पोट्रेट में पाई, तत्पश्चात् आपने इसमें कुछ नवीन प्रयोग भी किए बाद मे आपने कुछ समय इलस्ट्रेट वीकली क सम्पादक माइकल बाकन के साथ काम किया आप मध्य प्रदेश के लोकप्रिय दैनिक समाचार-पत्र 'नई दुनिया' से भी सम्बद्ध रहे तत्पश्चात् आपकी प्रसिद्धि कला प्रेमियों के मध्य बेहद शिद्दत से व्याप्त हो गई सन् 1960 में आपके द्वारा बनाया गया कलाकारो के ग्रुप 'फ्राइडे ग्रुप ने राष्ट्रीय प्रसिद्धि पाई सन् 1960 में ही अपने बनाये एक उत्कृष्ट पोट्रेट पर आपको AIFACS के अन्तर्राष्ट्रीय बेनियल मे प्रथम पुरस्कार मिला आपको रायल सोसाइटी ऑफ कलकत्ता द्वारा फैलोशिप दी गई श्री चिचालकर मध्य प्रदश सरकार द्वारा शिखर सम्मान से सम्मानित भी किये गये है

देवयानी कृष्ण

देवयानी कृष्ण का जन्म मध्य प्रदेश के इन्दौर शहर में हुआ था कला उन्हे उनके परिवार से विरासत मे मिली इन्दौर के प्रसिद्ध कलाकार डी डी देवलालीकर से उन्होने प्रारम्भिक कला का ज्ञानार्जन किया और फिर बम्बई के जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से सन् 1940 ई मे पेन्टिग मे डिप्लोमा प्राप्त किया इन्दौर के राजसी होल्कर परिवार से इनके पारिवारिक सम्बन्ध थे. कोलकाता में आर्टस् स्कूल के कारण यह इन दिनो भारत का मुख्य कला केन्द्र था साथ ही यह अग्रेजों का व्यापारिक केन्द्र होने के कारण भारत के कुछ प्रमुख शहरो मे से एक था देवयानी कोलकाता के संग्रहालयो एव कला प्रदर्शनों के विशेष प्रयोजन से कोलकाता आई जहाँ उनकी भेंट कँवल कृष्ण से हुई कवल कृष्ण की ही तरह देवयानी को भी प्रकृति से विशेष लगाव था सन् 1941 ई मे कवल कृष्ण और देवयानी का परिणय हुआ एव सन् 1942 ई में कवल कृष्ण और देवयानी की सयुक्त चित्र प्रदर्शनी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे लगाई गई देवयानी ने अपने पति की तरह तिब्बत के अनेक विशेष स्थानो के दृश्य चित्र और जनजीवन के चित्र बनाये जिनमें सामान्य व्यक्तियों के चित्रों के साथ-साथ त्यौहारो आदि के चित्र थे सन् 1946 ई में अन्तर्राष्ट्रीय चित्र प्रदर्शनी मे उन्हे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ उन्होने सिक्किम में रहकर वहाँ की पारम्परिक कला एव तिब्बती मुखौटो का अध्ययन किया उन्होंने अपने पति के साथ एव एकल चित्र प्रदर्शनियाँ लगाई जिनमे नॉर्वे स्टॉकहोम, चेकोस्लाविया, रोमानिया, हगरी, स्वीडन डेनमार्क, नीदरलैण्ड, जर्मनी, इटली, मियमी के साथ-साथ भारत में भी अनेक बटिक शैली की भी प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं देवयानी कृष्ण को भी अपने पति की ही तरह राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एव सम्मान प्राप्त हुआ

देवयानी खिलौने भी बनाती थी अत उनके कुछ चित्रों पर खिलौनों का प्रभाव दिखाई पडता है उनके मृग चित्र में काष्ठ कला का स्पष्ट प्रभाव झलकता है जल रग द्वारा काष्ठ निर्मित खिलौनो को चित्रित किया उनके चित्रों मे तिब्बती मुखौटा नृत्य का प्रदर्शन आकर्षक रगो और ओजपूर्ण नृत्य मुद्राओ में चित्रित है देवयानी ने यथार्थवादी चित्रण के अतिरिक्त प्रतीकात्मक चित्राकन भी किया उन्होने मृग मूर्तियाँ और सिरामिक आभूषण भी बनाये

अखिलेश

अखिलेश का जन्म 28 अगस्त, 1956 को इन्दौर मे हुआ उन्होने सन् 1977 में फाइन आर्ट कॉलेज, इन्दौर से पेन्टिग मे डिप्लोमा प्राप्त किया आपने जनजातीय कला के दुर्लभ सग्रह हेतु हिमाचल प्रदेश उत्तर प्रदेश राजस्थान और मध्य प्रदेश की यात्राएँ की साथ ही जापान, रूस अमरीका और फ्रास मे 'कन्टमपरेरी इडियन आर्ट पर आधारित आपकी कई प्रदर्शनियाँ भी लगाई जा चुकी है

तथा इसी विषय पर आप 'टावसन यूनिवर्सिटी, बाल्टीमोर यू एस ए' में व्याख्यान हेतु आमन्त्रित किए जा चुके है अखिलेश को लगभग चौबीस एकल प्रदर्शनियो का श्रेय जाता है जिसमें उनकी प्रतिभा खुलकर सामने आई है आप 'वेमेलियर्स ट्राइनल कमेटी, फ्रास' के सदस्य भी रहे है आपने मार्क चेगल की आत्मकथा का अनुवाद हिन्दी में किया है अखिलेश कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दलो से सम्बद्ध है जो कला के क्षेत्र मे रचनात्मक एव सृजनात्मक गतिविधियाँ चला रहे हैं सम्प्रति आप भारत भवन में अपनी सेवाए दे रहे हैं

बसंत आगाशे

बसन्त आगाशे का जन्म 8 मई 1931 को हुआ आपने सर जे जे स्कूल ऑफ आर्टस्, मुम्बई से चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया आगाशे की लगभग 75 एकल प्रदर्शनियाँ लगाई जा चुकी हैं जिनमे प्रमुख जहाँगीर आर्ट गैलरी इन्दौर 1974, 77, 83, ताज आर्ट गेलेरी मुम्बई 1972 76 79, 81, अकादमी ऑफ फाइन आर्टस्, कोलकाता 1973 80, नई दिल्ली कला शिविर प्रिंट मेकिंग केन्द्र भारत भवन 1983 उल्लेखनीय है आपको वर्ष 1962-63 मे कालिदास अकादमी पुरस्कार दिया गया तथा 1960 1962 में कला परिषद् पुरस्कार से पुरस्कृत किए गए

सुरेश चौधरी

सुरेश चौधरी का जन्म 1943 में हुआ आपने जी डी आर्टस कॉलज से चित्रकला मे एम ए किया तथा फाइन आर्ट्स एण्ड क्राइड आर्टस् इन्दौर से डिप्लोमा प्राप्त किया वे ललित कला अकादमी, भोपाल द्वारा 1976-77 में आयोजित चित्रकारा ग्राफिक एव सिरेमिक कलाकारों के सयुक्त शिविर म शामिल हुए आपकी भोपाल, दिल्ली, कोलकाता एव बड़ौदा में कई एकल प्रदर्शनियाँ लगाई जा चुकी है आपकी दुर्लभ कृतियाँ देश-विदेश के अनक सार्वजनिक एव निजी सग्रहालयों में दखी जा सकती हैं सुरेश चौधरी लगातार 3 वर्षों तक अखिल भारतीय पोस्टर प्रतियोगिता में पुरस्कृत किय जा चुक हैं आपको वर्ष 1978-79 मे अमृता शेरगील फलोशिप भी मिली है

एम. के. जमींदार

एम क जमींदार का जन्म 17 फरवरी 1925 को इन्दौर में हुआ आपने बम्बई के जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से जी डी तथा ड्राइग व पेन्टिग मे एम ए किया आपकी कई एकल प्रदर्शनियाँ लगाई गई तथा कई अखिल भारतीय प्रदर्शनियो मे भी आपकी उपस्थिति उल्लेखनीय रही श्री जमींदार मध्य प्रदेश कला प्रदर्शनी तथा कालिदास अकादमी सहित कई अखिल भारतीय प्रदर्शनियो मे पुरस्कृत भी किए जा चुके है

श्रेणिक जैन

श्रेणिक जैन का जन्म 1933 मे बडनगर में हुआ आपने जे जे स्कूल ऑफ आर्टस्, बम्बई से फाइन आर्टस् में डिप्लोमा किया आपने श्री डी डी देवलालीकर और श्री डी जे जोशी के मार्गदर्शन मे अध्ययन किया आपने श्री जे एम अहिवासी के मार्गदर्शन मे भारत शासन के अन्तर्गत सास्कृतिक शोधार्थी के रूप मे काम किया आपने शासकीय कला निकेतन, जबलपुर में अध्यापक के रूप मे अपनी सेवाए दी है श्रेणिक जैन 1979–1993 तक गवर्मेंट इन्स्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट इन्दौर के प्रिन्सिपल रहे मुम्बई नासिक हैदराबाद जबलपुर रायपुर इन्दौर और भोपाल आदि में आपकी एकल प्रदर्शनियों ने भारी सफलता अर्जित की है जबकि सामूहिक प्रदर्शनी के रूप में श्री डी जे जोशी के साथ वर्ष 1960 मे बम्बई मे लगाई गई प्रदर्शनी विशेष रूप से उल्लेखनीय है आपको अकादमी ऑफ फाइन आर्टस् अमृतसर की ओर से वर्ष 1958-59 में रजत पदक प्रदान किया तथा आप मध्य प्रदेश के श्रेष्ठ पुरस्कार रजत मजूषा से भी सम्मानित किये जा चुके हैं साथ ही मध्य प्रदेश शासन द्वारा दिया जाने वाला शिखर सम्मान भी आपको प्रदान किया गया है इसके अतिरिक्त आपकी उपलब्धियो मे एकेडमी ऑफ फाइन आर्टस् कोलकाता से स्वर्ण पदक तथा कालिदास अकादमी उज्जैन द्वारा प्रदत्त सम्मान प्रमुख हैं

रॉबिन डेविड

रॉबिन डेविड का जन्म 3 अक्टूबर 1950 को नई दिल्ली में हुआ आपने 1977 मे स्कल्पचर मे डिप्लोमा किया डेविड ने शासकीय कला सस्थान ग्वालियर से भी डिप्लोमा प्राप्त किया अखिल भारतीय कला प्रदर्शनियो मे आपकी कलाकृतियों का प्रदर्शन तथा मूर्तियो की एकल प्रदर्शनियों में आपकी उपस्थिति उल्लेखनीय रही है मध्य प्रदेश कला वीथिका एव अन्य प्रमुख कला सग्रह मे डेविड की कलाकृतियों का श्रेष्ठ सकलन उपलब्ध है आपको 1986 मे फर्स्ट भारत भवन ऑफ कन्टम्परेरी इण्डियन आर्ट के लिए चुना गया था मध्य प्रदेश शासन द्वारा डेविड को मध्य प्रदेश कला परिषद् का मनोनीत सदस्य भी नियुक्त किया गया है आप भारत भवन की रूपकर शाखा मे भी अपनी सेवाएँ दे चुके है

जी. के. पण्डित

जी के पण्डित का जन्म 5 अक्टूबर 1926 को इन्दौर मे हुआ आपने 1952 मे कला मे स्नातक कर 1954 में जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से डिप्लोमा प्राप्त किया पडित की कई एकल प्रदर्शनियाँ प्रदर्शित की गई है जिनमे प्रमुख नुमाइशे इस प्रकार है इन्दौर 1964 66 72, 85 आर्टिस्ट सेन्टर बम्बई 65 69 अकादमी ऑफ फाइन आर्टस् कोलकाता 69 72 77 जहाँगीर आर्ट गैलरी बम्बई 71 72, ताज आर्ट गैलरी 75 राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी 65-70,

इसके अतिरिक्त अकादमी ऑफ फाइन आर्टस् कोलकाता, कला औद्योगिक प्रदर्शनी त्रिवेन्द्रम, कालिदास प्रदर्शनी उज्जैन, ऑल इडिया फाइन आर्टस् एवं क्राफ्टस् सोसायटी नई दिल्ली एव माडव चित्राकन शिविर मे आपकी शिरकत महत्वपूर्ण रही. श्री पडित की कलाकृतियाँ देश-विदेश के अनेक सार्वजनिक सग्रहालयों में सकलित है

अमृतलाल बेगड़

अमृतलाल बेगड का जन्म 3 अक्टूबर, 1928 को हुआ आपने 1952 मे विश्वभारती वि वि. शाति निकेतन से ललित कला में डिप्लोमा किया आपकी एकल प्रदर्शनियो में 1980 मे भोपाल, 1984 मे इन्दौर तथा 1985 में कोलकाता मे लगाई गयीं नुमाइशे प्रमुख हैं 1983 मे रूपंकर भवन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय शिविर आपकी कृतियों का प्रदर्शन भी किया गया था श्री बेगड़ को 1981 में मध्य प्रदेश कला प्रदर्शन पुरस्कार मिल चुका है

मदन भटनागर

मदन भटनागर का जन्म वर्ष 1931 मे मुरार जिला ग्वालियर मे हुआ था मदनजी ने विश्वभारती वि वि शाति निकेतन से डिप्लोमा प्राप्त किया इनकी पहली एकल प्रदर्शनी 1966 में दिल्ली मे आयोजित आइफेक्स में हुई अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अखिल भारतीय कालिदास मूर्तिकला प्रदर्शनी 59-62, ललित कला अकादमी, नेशनल मार्डन आर्ट गैलरी, जयपुर हाउस व देश-विदेश के निजी सग्रहों मे आपकी कलाकृतियाँ सग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही हैं मदन भटनागर को कालिदास अकादमी सम्मान, ललित कला अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार '1971' तथा 45वाँ आइफेक्स समीक्षा पुरस्कार मिल चुका है

यूसुफ

यूसुफ का जन्म 20 जुलाई, 1952 मे ग्वालियर मे हुआ आपने अखिल भारतीय मूर्तिकला एव उडीसा ललित-कला अकादमी के कलाकार शिविर में भाग लिया आपकी कई कृतियाँ राष्ट्रीय वीथिका, ललित कला अकादमी, मध्य प्रदेश कला परिषद् उडीसा, ललित कला अकादमी और देश विदेश के सार्वजनिक सग्रहालयों मे सगृहीत हैं यूसुफ महाकौशल कला परिषद्, कालिदास प्रदर्शनी, मध्य प्रदेश कला परिषद् एव मध्य प्रदेश युवक कल्याण विभाग द्वारा नवाज़े गये हैं

सचिदा नागदेव

सचिदा नागदेव का जन्म 1940 में उज्जैन मे हुआ आपने जे जे स्कूल ऑफ आर्टस् से 'इण्डोलॉजी' मे मास्टर उपाधि प्राप्त की साथ ही विक्रम वि वि. उज्जैन से चित्रकला में एम ए किया. सचिदा नागदेव को लगभग 36 प्रदर्शनियों का श्रेय जाता है जहाँ उन्होंने एकल प्रदर्शन किए. इसके अतिरिक्त वे कई राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी भाग ले चुके हैं जिनमें प्रमुख रूप से 'तृतीय ट्राइनेल इण्डिया, नई दिल्ली', 'कन्टम्परेरी इण्डियन आर्ट, भारत भवन, भोपाल, ओसाका ट्राइनेल, जापान इत्यादि हैं आपके द्वारा बनाये गये चित्र राष्ट्रीय सग्रहालय दिल्ली सहित बिडला अकादमी, कोलकाता, त्रिवेन्द्रम एव जयपुर के संग्रहालयों मे सकलित हैं श्री नागदेव को अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, ग्वालियर (1959) एव 1961 मे इन्दौर मे पुरस्कृत किया गया था 1966 मे उज्जैन मे आयोजित कालिदास प्रदर्शनी और 1975 मे भोपाल मे आयोजित रामचरितमानस प्रदर्शनी मे आपको मेरिट पुरस्कार प्रदान किया गया था 1976 में आपको अमृता शेरगिल फैलोशिप भी मिल चुकी है जर्मनी, हॉलैण्ड फ्रास, स्विट्जरलैण्ड, इटली, आस्ट्रिया, जापान इत्यादि देशों में यात्रा कर चुके श्री नागदेव भारत भवन, भोपाल की रूपकर शाखा की सलाहकार समिति में सदस्य भी रह चुके हैं, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आपको शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया है

ध्यातव्य बिन्दु

- फडके कला केन्द्र और स्टूडियो धार में स्थित है

19

मध्य प्रदेश में लोक चित्रकला एवं शिल्पकला

मध्य प्रदेश में लोक चित्रकला

लोक कला

व्यापक रूप में, अनुभूति की अभिव्यक्ति को ही कला कहते हैं इसका जन्म मानव जीवन के साथ ही माना जाता है जिस प्रकार आदिकाल से अब तक मानव जीवन का इतिहास क्रमबद्ध नहीं मिलता उसी प्रकार कला का भी इतिहास क्रमबद्ध नहीं है, परन्तु यह निश्चित है कि मानव की सहचरी के रूप में कला सदा ही उसके साथ रही है प्रसिद्ध इतिहासकार एम सी वर्किट ने मोस्ट प्रोमिटिव आर्ट मे लिखा है कि किसी देश अथवा जाति की सभ्यता के विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए कला की सहायता बहुत आवश्यक है. इसी के माध्यम से रहन-सहन का ढग आदि जाना जा सकता है मोहनजोदडो और हडप्पा की खुदाई मे जो कुछ कलावशेष मिले हैं उन्हीं के आधार पर उस सस्कृति का अनुमान लगाया जा सका है यद्यपि समय का निर्धारण तय नहीं हो सका है फिर भी स्त्रियों के गहने आदि से, बर्तनों से तथा अन्य निर्मित वस्तुओं से उन सस्कृति के उच्चस्तरीय जीवन का आभास होता है

लोक कला का अभ्युदय साहित्य के साथ ही माना गया है वैदिक युग मे दो प्रकार की भाषा मानी गई है मुख्य सस्कृत जो शिक्षिकी थी लोक मे अपभ्रश तथा प्राकृत भाषा बोली जाती थी सस्कृत में साहित्य रचना के साथ-साथ वहाँ की लोक भाषा भी प्रगति करती गई तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सस्कृत साहित्य पर उसका प्रभाव रहा लोक कला में अनुसधान का कार्य जब से प्रारम्भ हुआ है तभी से लोक कला तथा लोक साहित्य के भण्डार का पता चला है लोक कला का विकास विभिन्न रूपो मे हमारे सामने आया है उसका एक रूप दैविक सकेतो तथा परम्परागत विश्वासो पर आधारित है तथा दूसरा रूप सामाजिक रीति-रिवाजों पर आधारित है लोक कला का पहला रूप प्रतीकात्मक है, क्योकि उसमे विभिन्न शक्तियो तथा देवी-देवताओं आदि का प्रतीकात्मक चित्रण होता है रीति-रिवाजों में प्रतीक नहीं बनते, बल्कि स्पष्ट रूप से सरलता पूर्ण कुछ चित्रण होता है

कला की उन्नति में लोक कला का भी बहुत महत्व रहा है कला का विकास तो राजाश्रयों मे पेशेवर कलाकारों द्वारा हुआ है, परन्तु लोक कला का विकास घरों के आगनों मे, ग्रामों में, अशिक्षित जातियों मे, बिना कोई प्रसिद्धि के शान्त व अबोध रूप से धार्मिक तथा सास्कृतिक व पारिवारिक परम्पराओं के साथ बिना बौद्धिक पुट के होता जा रहा है लोक कला को किसी आश्रय, प्रलोभन या प्रोत्साहन की आवश्यकता नही होती वह तो स्वच्छदता तथा मौलिकता के साथ सदा प्रगति करती है, क्योंकि उसका सम्बन्ध तो प्राणिमात्र से है

मध्य प्रदेश देश का दूसरा सबसे बडा प्रान्त है जहाँ विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग निवास करते हैं यहाँ के लोक जीवन में विभिन्न अवसरों पर चित्रकारी के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं जिनमे से प्रमुख रूप इस प्रकार है

रंगोली–विभिन्न प्रदेशो में विभिन्न नामो से पहचानी जाने वाली रगोली त्योहार और शुभ अवसरों पर प्रदेश के हिन्दू जनमानस में विविध रगों से बनायी जाती है जिसमें फूल, बेलबूटा, स्वासर्तक के चित्र होते है

माण्डना–मूलत राजस्थान का माण्डना मध्य प्रदेश में खड़ियाँ तथा लाल, भूरे और हरे रग से चित्रित किया जाता है इसमे तलवार घोडे गणेश आदि की आकृतियाँ होती है

साँझी–पितृपक्ष में गोबर से घर के द्वार पर अविवाहित बालिका द्वारा विभिन्न प्रकार के चित्र बनाकर उन्हें सजाया जाता है

लील-गुदवाने–शरीर पर देवी देवता के चित्र, स्वय का नाम गुदवाने की परम्परा सदियों पुरानी है

मध्य प्रदेश में जनजातीय चित्रकला

निमाड़ी लोकचित्र परम्परा

विन्ध्य और सतपुडा के मध्य फैली निमाड की धरती आदिकाल से मानव सस्कृति के विकास की कथा कहती है, नर्मदा जहाँ की जीवन रेखा है यहाँ की धरती का इतिहास प्राचीन अनूप जनपद और पौराणिक नगरी माहिष्मती के

इर्द-गिर्द घूमता है. निमाड़ अचल की कला परम्परा का मूलाधार वहाँ के जीवन में रची बसी प्रकृति, धरती और संस्कृति है. निमाडी लोकचित्र निमाड़ की जातीय स्मृति और संस्कृति के अनुभव का सार है निमाड मे लोकचित्रों की लम्बी परम्परा है. पूरे वर्ष कोई न कोई पर्व तिथि त्यौहारो से सम्बन्धित भूमि और भित्ति चित्र अलकरणो का अंकन, पूजा प्रतिष्ठान चर्चा अथवा उनसे सम्बन्धित कथा वार्ता, गीत गाथा आदि जारी रहते हैं.

हरियाली अमावस्या को जिरोती, नागपंचमी को नाग भित्तिचित्र, कुंवार मास में सांजाफूली, नवरात्रि मे नरवत, दशहरे के दिन दशहरे का भूमि चित्रण, दीवाली, पर हाते (थापा), मांडणे, दिवाली पडवा पर गोबर के गोरधन, दीवाली दूज पर भाई दूज का भित्तिचित्र, दीवाली पर ही व्यापारियो द्वारा शुभ मुहुर्त मे गणपति ओर सरस्वती का हल्दी कुकुम से रेखांकन देव प्रबोधिनी ग्यारस पर जुवार के राड़ो की खोपडी पूजन, विवाह में कुल देवी का भित्तिचित्र, दरवाजो पर सातीपाना, दूल्हा-दुल्हन के मस्तक पर कंकेली भरना, पुत्र जन्म पर पगल्या का शुभ संदेश रेखांकन, गणगौर पर्व पर गणगौर की मूर्तियाँ (रथ) सातिया, चौक, कलस माडणा आदि शरीर पर विभिन्न गुदनाकृतियों का उकेरना निमाड की लोकचित्र परम्परा है निमाड के पारम्परिक लोक चित्रो से कही न कहीं प्रागैतिहासिक चित्रकला से सम्बन्ध रहा है, इसलिए निमाडी लोकचित्रो की रगरेखाएँ और आकृतियाँ उस काल के गुहा चित्रों से बहुत कुछ मिलती है निमाडी लोक चित्र निमाडी लोक जीवन के मिथकीय अभिव्यक्ति हैं.

मालवी लोकचित्र परम्परा

मालवा मध्य प्रदेश का अत्यन्त सम्पन्न अंचल है, इस कारण मालवा की लोकचित्र परम्परा भी समृद्ध है. विन्ध्य के पठार के ठण्डे जलवायु और उर्वरा शस्य श्यामल भूमि के कारण मालवी लोकजन के सुख-सम्पदा की अभिव्यक्ति उसकी हर लोक विधा में सहज रूप से समाहित है मालवा की लोकव्यापी सहिष्णु सस्कृति का केन्द्रीय भाव जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई देता है. मालवी लोक जीवन के माधुर्य और सौन्दर्य की कलात्मक अभिव्यक्ति मालवी लोक चित्रो में जितनी सशक्त मिलती है, उतनी और कही नहीं दिखाई देती मालवी लोकचित्रों के पारिवारिक बिम्ब और प्रतीक अनेक सस्कारो को रूपायित करते हैं. मालवी लोकचित्रों की रगरेखाएँ आकृतियाँ आदि मालवी लोक जीवन की आदिम ऊर्जा और विकास को व्याख्याति करती हैं

मालवा में दो तरह की लोकचित्र परम्परा है एक पर्व-त्यौहारो विशेष अवसरो पर पारम्परिक रूप से बनाई जाने वाली लोकचित्र कला दूसरी व्यावसायिक रूप से विकसित लोक चित्र कला पारम्परिक लोकचित्र कला का आधार व्रत, अनुष्ठान पाठपूजा है और व्यावसायिक चित्रकला का आधार–सामाजिक सौन्दर्य बोध है मालवा की पारम्परिक चित्र कला मे हरियाली अमावस्या पर दिवासा, नागपंचमी को नाग चित्र, श्रावणी पर सरवण चित्र, जन्माष्टमी पर कृष्ण जन्म के भित्तिचित्र श्राद्ध पक्ष मे सजा, नवरात्रि मे नरवत, दशहरा पर्व पर दशहरे का भूमिचित्र, दीपावली पर गेरू खडिया के माडणे, देवप्रबोधिनी एकादशी पर चौक शीतला सप्तमी पर हल्दी कुकुम के हाते, जन्मोत्सव पर पगल्या साती भरना, विवाह में गाय माता का मिथकीय चित्र, पिठौरा, पिठोरी गगापूजन का भित्तिचित्र, आदि विभिन्न अलंकरण है व्यावसायिक चित्रकर्म मालवा में सगाई विवाह पर्व-त्यौहारो पर चितेरे जाति के लोग करते हैं. इस चित्र कर्म को चित्रावण कहते हैं पौराणिक मिथकीय चरित्रों के अलावा सामाजिक सम्बन्धो के बहुत से चित्र चितेरे उकेरते जाते हैं . द्वार सज्जा और मागलिक रूपाकरो के अकन मे मालवा के चितेरो का कोई सानी नहीं है मालवी समाज मे चितेरो का आज भी बडा सम्मान और प्रतिष्ठा है कुछ श्रेष्ठ चितेरो के कारण मालवा की यह जानी पहचानी चित्रावण लोक चित्र शैली के रूप मे प्रतिष्ठित हो गई है.

डॉ. श्याम परमार ने मालवी लोकचित्रों की व्याख्या ठीक की है समृद्ध परिवार के चित्र लिपे–पुते आँगन की शोभा, ऊँची अटारी का सौन्दर्य हरे मूँग और भात का भोजन मोतियों से माँग का भरा जाना, चदन किवाड और सोने की थालियो का बजना गीतो में सहज ही चित्रित नहीं हुए है बल्कि उसके मूल में भौगोलिक साधनों का प्रभाव रहा है

बुन्देली लोकचित्र परम्परा

बुन्देली लोकचित्र परम्परा के सौन्दर्य और माधुर्य का कुछ रग अलग है बुदेलखड की धरती पर प्राय हर युग मे युद्ध लडे गये हैं, इसलिए बुन्देली लोकजनो मे स्वाभाविक रूप से शौर्य और शृगार के उद्दाम भाव पाये जाते हैं यहाँ अवदान बलिदान और स्वाभिमान की उदात्त परम्परा मौजूद है बुन्देली संस्कृति और कला मे भी इन तत्वो का सहज समावेश देखा जा सकता है बुन्देली लोकचित्र परम्परा मे पर्व-त्यौहारो और व्रतों से सम्बन्धित भित्तिचित्रो अथवा भूमि अलंकारो की बहुलता सबसे अधिक है विशेषकर भूमि अलंकरण मे चौक पूजने का रिवाज प्रत्येक अवसर पर है कोई दिन अथवा तिथि ऐसी नही होती है जब घर आँगन मे चौक न पूजते हों बुन्देलखण्ड मे चावल के आटे से देहरी द्वार और आँगन में एपन बनाने की प्रथा है

बुन्देलखण्ड मे नाग पचैया, नवेला अष्टमी शीतला सप्तमी के हाथे, हलछठ, गूंगा नवमी, हरतालिका राधा अष्टमी साझी, जिरतिया अथवा महालक्ष्मी, मुलिया, करवा चौथ, अहोई अष्टमी सुआटा भाई दूज, दीवाली पर सुरैती चित्र, देव प्रबोधिनी एकादशी, मकर संक्रान्ति आदि पर्व त्यौहारो पर उससे सम्बन्धित चित्र अथवा मूर्तियों बनाई जाती हैं जो लोक चित्र कला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं जिनमें बुन्देली संस्कृति के दर्शन होते हैं

बुन्देली लोकचित्रों मे प्रयुक्त जातीय स्मृति के प्रतीको बिम्बो और अभिप्रायो की गहनता के कारण वहाँ की लोक चित्र परम्परा के अर्थ और आशय और भी गूढ तथा अलग हैं अवसर, अनुष्ठान, पर्व-त्यौहार और ऋतु सम्बन्धी पदार्थो का अकन बुन्देली लोक जीवन की पारम्परिकता और परस्पर सम्बन्धो का प्रतीक है बुन्देली रगरेखाओ का माधुर्य और सौन्दर्य परम्परा से चली आ रही मान्यताओ अवधाराणाओ और आस्थाओ को समर्पित है इसके कारण

बुन्देली लोकजन अपने परम्परागत संदर्भों को निरन्तर बनाये रखने मे सक्षम हुए हैं. लोकचित्रो में किसी भी पदार्थ का यथावत् चित्रण नही किया जाता, बल्कि उनके अनगढ रूप में उसके मूल सन्देश और उद्देश्य तक पहुँचने की कोशिश की जाती है बुन्देली लोकचित्रों मे क्या, संसार के सभी लोकचित्रों मे इसी कोशिश की यथासम्भव तलाश ही होती है, इस तलाश में लोकचित्रों की भिन्नता और स्थानीयता बढती जाती है, लेकिन मूल तत्व तो मानवीय सवेदना का एक ही रहता है

बघेली लोकचित्र परम्परा

बघेलखण्ड सस्कृति सम्पन्न प्रदेश है. जहाँ प्रकृति का अपूर्व सौन्दर्य बिखरा है. यहाँ अमरकटक और कैमोर पर्वत हैं यहाँ से नर्मदा, सोन और तमस नदी का उद्भव है यहाँ पर्वत मालाओ के साथ घने जगलो की श्रृखला है यहाँ कोल, बैगा, गोड जनजातियो की बहुलता लोक समुदायों का आत्मीय तादात्म्य है विभिन्न जातियो और जनजातियो के भिन्न-भिन्न सस्कारो रीति-रिवाजो और परम्पराओ से बघेलखड की संस्कृति विविधवर्णी हो गई है इस कारण आदिकाल से यहाँ की धरती पर विभिन्न आदिवासी और लोक विधाओं के उद्भव का अवसर मिला है मैकल प्रदेश के नाम से विख्यात पौराणिक काल मे भी बघेलखड की अपनी पहचान स्थापित हो गई थी लम्बी सास्कृतिक विरासत के कारण यहाँ की कला और वाचिक परम्परा मे हर समय के अभिप्राय देखे जा सकते हैं विशेषकर रूपकर कलाओं में इस बात को लक्षित किया जा सकता है.

बघेली लोकचित्र परम्परा बघेली लोक जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है. वर्ष भर आने वाले व्रत तिथि त्यौहारों पर बघेलखण्ड मे परम्परा से भित्तिचित्र और भूमि अलकरण बनाये जाते हैं कलाकार घर की महिलाएँ होती हैं जो पारम्परिक रूप से चित्रकर्म मे दक्ष होती हैं जिनकी स्मृति में उस चित्र के विभिन्न रूपाकार रंग रेखाएँ तथा मिथकथाएँ होती हैं, उन्हीं को महिलाएँ हर बार दीवारों पर बनाती और मिटाती हैं इस प्रक्रिया मे न केवल चित्र परम्परा का नयी पीढी के सम्मुख दोहराव होता है बल्कि चित्र, रग रेखा, अनुष्ठान, मिथक का अनुरक्षण भी होता है

सम्पूर्ण बघेलखण्ड मे नागपचमी पर नाग रेखाचित्र जन्माष्टमी को कृष्ण चरित का चित्रण, अहोई अष्टमी को अहाई का चित्र सझा, दीपावली पर लक्ष्मी गणेश के साथ भूमि अलकरण चौक विवाह मे कोहबर भित्तिचित्र मगरोहन, जूमर कोंडर सुआ–सतौली सिधौरा बरापन, छिटई-छिटवा तेल–बाती का चित्र, पुरइन के फूलपाती, धिनौची चित्र आदि बनाय जाते है बघेली लोकचित्रों मे जितने प्राचीन लोकप्रतीक और आदिम अभिप्राय प्रचलित हैं, उतने किसी अन्य अचल मे नहीं दिखाई देते आदि मानव ने जिन प्रतीकों को आरम्भ मे जिन रग और रेखाओं का प्रयोग किया था वे ही रग और रेखाएँ बघेली लोकचित्र परम्परा मे आज भी देखी जा सकती हैं बघेली लोकचित्रो मे जीवन की सभी बाते लोक प्रतीको के माध्यम से कही जाती हैं इसलिए बघेली लोकचित्रो का स्वरूप प्रागैतिहासिककालीन कला के समकक्ष है

बघेलखड के पारम्परिक चित्रो की सामाजिक और सास्कृतिक दृष्टि से अपनी अलग पहचान है जिनकी अपनी अलग मान्यताएँ, अवधारणाएँ और आस्थाएँ हैं लोकचित्रो को मागलिकता से जोडकर आदि मानव ने अपने मन की बात को समय की हर धडकन के साथ जोड दी है जिसकी निरन्तरता मनुष्य के साथ सदैव बनी रहेगी

लोक चित्रकारी का महत्व

लोक चित्रकारी से भी चित्रकारों को बडी प्रेरणा मिली है लोक कला पर आधारित नये प्रयोग आज के कलाकारों को अपूर्व सफलता की ओर ले जा रहे हैं लोक कला स्वत. ही अपने सहज और निर्मल रूप मे हमारे जीवन का एक अग बन गयी है इस आत्मीयता तथा निकटता के कारण लोक कला का प्रभाव स्वत ही हमारे मन पटल पर अपना चिरस्थायी स्थान बना लेता है यदि सारे भारत की लोक कला को ध्यान से देखते हैं तो उसमे हमे अनेकता मे एकता के दर्शन होते हैं क्योंकि भारतीय सस्कृति की आत्मा व भावात्मक एकता को सजोये अतीत की महानतम् परम्पराओ को अक्षुण्य रूप से बनाये हुए हैं इनमे सदा से मानव कल्याण का भाव छिपा है सार्वभौमिक सुख समृद्धि तथा उन्नति लोक कला का आधार है

विवाह आदि शुभ अवसरो में लोक कला का विशिष्ट स्थान है दरवाजों पर अलकृत घडों का रखना उसमें पत्ते, फूल व नारियल का रखना, वन्दनवार बाँधना, नव विवाहित कन्या के कपोलों पर 'पत्र रचना' करना आदि मे लोक कला की आनन्ददयी तथा मगलकारी भावना का दर्शन होता है धर्मानुप्राणित होने के कारण लोक कला में आध्यात्मिक शक्ति का समावेश है जिसके कारण समाज में इसे आदर भाव श्रद्धा तथा उपासना की दृष्टि से देखा जाता है

कुछ शताब्दियो पूर्व यवनो के आक्रमण तथा फिर अग्रेजी राज्य के कारण हमारी लोक कला को बहुत आघात पहुँचा यवनों ने तो हमारी धार्मिकता को ही समाप्त कर देने का निश्चय किया था उन्होने मदिरो तथा धार्मिक प्रतिष्ठानो को जिनमे हमारी बहुमूल्य लोक कला व सस्कृति भरी हुई थी नष्ट किया अग्रेजो ने भी भारत के लोक जीवन को दूषित करने का प्रयास किया, परन्तु फिर भी किसी-न-किसी रूप मे यह बनी रही स्वतत्रता प्राप्ति के बाद फिर से एक चेतना भारत में फैली अपनी दबी हुई महान् लोक कला का पुनरुत्थान करने के लिए लोक गीतो को आकाशवाणी द्वारा जनसामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया जाने लगा स्वतत्रता तथा गणराज्य दिवस पर हर प्रान्त मे लोक नृत्य मण्डलियाँ बुलाई जाने लगीं लोक कला पर आधारित चित्रकला व अन्य कलाओ को प्रोत्साहन दिया जाने लगा तथा आधुनिक युग मे जिस प्रकार हर वस्तु का आधुनिकीकरण हो रहा है लोक कला अपने परम्परागत रूप मे और भी परिष्कृत तथा परिमार्जित होकर पनप रही है जहाँ-जहाँ भी विशिष्ट नेता या विदेशी अतिथि जाते हैं उसी स्थान के

लोक नृत्यों से उनका स्वागत होता है लोक कलाकार को पुरस्कार दिए जाते हैं हर क्षेत्र में लोक कला का महत्व बढ़ता जा रहा है वेषभूषा मे आज हम देखते हैं कि बडे-बड़े पोलके लोक जीवन में प्रचलित अगियो का रूप लेते जा रहे है धोतियाँ आदिवासियो की तरह नाभि से नीची बाँधने की प्रथा होती जा रही है तथा छोटी आधी धोती हजार वर्ष पुरानी खजुराहो के चित्रो में दर्शित लोक वेषभूषा की ही नकल है यह सब लोक कला की समाज मे पुनरावृत्ति तथा जागृति का द्योतक है

मध्य प्रदेश में शिल्पकला

मध्य प्रदेश के मिट्टी शिल्प

मिट्टी में विविध आकार ग्रहण करने की असाधारण क्षमता है, इसकी पहचान मनुष्य ने बहुत पहले अपनी आरम्भिक अवस्था में ही कर ली थी मिट्टी और मनुष्य का रिश्ता बहुत पुराना है. पृथ्वी की अनेक उत्पत्ति कथाओ से यह स्पष्ट होता है कि आदि मानव का प्रादुर्भाव धरती बन जाने के बाद अनुकूल परिस्थितियो मे हुआ तब से मिट्टी और मनुष्य के सम्बन्ध गहरे होते चले गये.

जनजातियो की दृष्टि से मध्य प्रदेश भारत का एक प्रमुख राज्य है. मध्य प्रदेश मे मुरिया, माडिया, भतरा, गोंड, बैगा, उराँव, कोरकू, सहरिया, कोल कमार आदि युगो से अपनी आदिम ऊर्जा और पारम्परिक कला संस्कृति के लिये जी रहे हैं. आदिम समूहों मे प्रारम्भ से ही मिट्टी के विभिन्न उपकरणो और मूर्तियो का चलन देखा गया है भारत मे मिट्टी शिल्प की परम्परा बहुत पुरानी है. यूरोप, मिस्र जापान, बेबीलोन आदि मे कुम्भ और कुम्भकारो की उत्पत्ति सम्बन्धी मिथकथाएँ बदले हुए रूपो मे प्राय एक जैसी मिलती हैं, लेकिन यह निश्चित है कि पृथ्वी पर मनुष्य की अवधारणा के साथ ही कुम्हारो के मिटटी के काम करने वाला समुदाय अस्तित्व मे आ गया था संस्कृति और सभ्यता के विकास मे कुम्हारो द्वारा बनाये गये मृदभाडो मृण्मूर्तियो, खपरैलों और ईंटो का महत्वपूर्ण स्थान रहा है मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण मिट्टी शिल्प क्षेत्रवार निम्नलिखित है–

धार-झाबुआ का मिट्टी शिल्प

धार-झाबुआ अचल मे भेट चढाये जाने वाले मिट्टी शिल्प पोले और ठोस दोनो प्रकार के बनाये जाते हैं झाबुआ के पोले मिट्टी शिल्प प्रदेश और देश में विशेष लोकप्रिय हैं. पशु-पक्षियो के मध्य भाग बडे बेलनाकार ढोलक के आकार के होते है, जिनमें आर-पार आसानी से देखा जा सकता है. एक इंच से लगाकर एक डेढ फिट तक आकार वाले हाथी-घोडे और ढाबा धार-झाबुआ के भील-भिलाले आदिवासी बापदेव या खम्भ देव को चढाते हैं धार झाबुआ के मिट्टी शिल्पों पर अलकरण बहुत कम होता है जहाँ तक हो घोडे सादे और लाल रग के बनाये जाते हैं झाबुआ मे अश्व की मूर्तियाँ अधिक बनती हैं यहाँ के भील-भिलाले देवी देवताओं को अश्व अधिक मात्रा में चढाते हैं हाथ से बने घोडों पर लाल रग के ऊपर चूने की बिन्दियाँ रखी जाती हैं कहीं-कहीं चूने से पूरा सफेद कर दिया जाता है कट्टीवाडा के सर्वश्री मोहनभाई, शातिलाल रगपुरा शिवाभाई रणछोड भाई इस समय झाबुआ के मिटटी शिल्प के श्रेष्ठ कलाकारों मे से हैं झाबुआ के कुम्हार जिस मिटटी का प्रयोग करते है, वह काली और भुरभुरी है इसलिए इस मिट्टी से बनाये गये शिल्प बस्तर के मिटटी शिल्पों की अपेक्षा कच्चे और रुखे होते हैं, लेकिन आकार प्रकार और आकर्षण मौलिक होता है धार-झाबुआ में विभिन्न त्यौहारों पर मिट्टी के छोटे खिलौने, दीपलक्ष्मी, गवलन आदि बनाये जाते है, झाबुआ-अलीराजपुर मे मिट्टी की शिल्प बहुत पुरानी परम्परा है बाबादेव या बापदेव तथा काष्ठ स्तम्भों पर भेंट की गई बरसो पुरानी खंडित, और चमकहीन अवस्था में अनुष्ठानिक मूर्तियाँ किसी भी गाँव के नजदीक पेडो के नीचे देखी जा सकती है

रीवा-शहडोल का मिट्टी शिल्प

पर्व-त्यौहारों पर मिट्टी से विभिन्न खिलौनों का निर्माण रीवा और शहडोल में किया जाता है दीवारों पर मिटटी की उभरी रेखाओ से पशु-पक्षी, पेड-पौधों तथा विभिन्न अलंकरण बनाने का रिवाज यहाँ सबसे अधिक देखा गया है दीवार पर मुख्य द्वार के आसपास देवी देवताओं की आदमकद मूर्तियाँ बनाने की प्रथा रीवा अचल की प्रमुख विशेषता है गणेश, हनुमान शिव, काली आदि की मूर्तियाँ मिट्टी थोपकर बनाई जाती हैं शरीर के विभिन्न अग दीवार से लगभग आठ-दस इंच उभरे हुए बनाये जाते है मिटटी घास बाँस के मिश्रण से सिंह, बाघ, बैल, नदी आदि मूर्तियाँ यहाँ बनाई जाती हैं पारम्परिक कुम्हार शिल्पकार विभिन्न आकार-प्रकार के ठोस खिलौने और कलात्मक कलश बनाते हैं आदिवासी अचल मे मिटटी के कलात्मक दीपक और कवेलू विशेष लोकप्रिय हैं

बैतूल-मण्डला का मिट्टी शिल्प

बैतूल कोरकू गोंड प्रधान क्षेत्र है मडला मे गोंड और बैगा जनजाति के लोग निवास करते हैं बैतूल के कुम्हार पर्व-त्यौहारो पर विभिन्न प्रकार के ठोस और पोले मृण्शिल्प बनात हैं इनमें अश्वारोही, ऊँट, हाथी, घोडे, हिरण, बैल आदि प्रमुख हैं इनके आकार-प्रकार अन्य अचलो से सर्वथा भिन्न है मडला के कुम्हार हौदवाला, हाथी, सवारी वाले घोडे बकरी हिरण ऊँट आदि की बडी-बडी और छोटी-छोटी मूर्तियां बनाने मे पारगत होते हैं बैतूल-मण्डला अंचल मे खपरेल मूर्तियाँ और विभिन्न प्रकार के मिट्टी के मुखौटे बनाने की प्रथा है

परम्परा और अनुष्ठान के मुताबिक प्रदेश के जन जातीय अचलो के कुम्हार मृण्मूर्तियो का निर्माण युगों से करते आये हैं इसलिए हर अंचल के शिल्पो के रूपकार सदियों से एक निश्चित शैली में ढल गये हैं. इसीलिए पृथक अचल के मिट्टी शिल्पो के रूप और रचना प्रक्रिया मे रूढिगत समानता देखी जा सकती है, लेकिन एक गाँव से दूसरे गाँव के एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के द्वारा बनाये गये मिट्टी शिल्पो मे मौलिक अन्तर मिलना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, बल्कि यह कहना अत्युक्ति नही है कि शिल्पों के यही छोटे-छोटे किन्तु असामान्य महत्वपूर्ण अन्तर शिल्पकार और शिल्प की निजी और व्यक्तिगत पहचान निश्चित करते हैं सामान्य से दिखने वाले मिट्टी शिल्प भले ही एकदम आकर्षित न करते हों, लेकिन इनके पीछे अनुष्ठान और परम्परा की सक्रिय ऊर्जा काम करती है. इन मिट्टी शिल्पो के सामान्य अलंकरण विहीन आकारों मे लोक कला के विविध ललित आयामो और मिथकीय प्रकारणाओं के अखण्डित प्रमाण भी देखे जा सकते हैं

मध्य प्रदेश का जनजातीय काष्ठ शिल्प

जनजाति सस्कृति में शिल्पो की परम्परा महज आवश्यकता पर निर्भर नही होती, बल्कि शिल्प उनके जीवन-दर्शन का एक अनिवार्य अग भी है इसलिए कोई भी शिल्प या उपकरण आदिवासी जीवन के बाहर की वस्तु नहीं रह जाती जनजाति कलाकार शिल्प का बाहरी रूप नहीं देखता वह उसका आन्तरिक रूप देखता है परम्परा से उसे यह सब देखने की तीसरी आँख मिली होती है इसी कारण जनजाति शिल्प अनगढ दिखायी देते हैं, जो बाहर आदमी को बहुत कम आकर्षित करते हैं, परन्तु आदिवासी कलाकार इसकी चिन्ता कम करता है, इस आदिम प्रवृत्ति के कारण आदि शिल्पो के रूप और आकार युगों से पारम्परिक शैली में आबद्ध रहे हैं यही प्रवृत्ति शिल्पों की जातीय पहचान कायम करने में समर्थ होती है

मध्य प्रदेश की आदिवासी अचलो मण्डला बैतूल होशंगाबाद धार और झाबुआ मे काष्ठ शिल्प की प्राचीन एव समृद्ध परम्परा दिखायी देती है इन अचलों मे कई आदिवासी परिवारो मे काष्ठकर्म परम्परा से किया जाता है कई परिवार के लोग परम्परागत रूप से काष्ठ-कर्म में दक्ष होते है और पैतृक रूप से सिद्धहस्त होते हैं एक पीढी दूसरी पीढी का यह कार्य सौंपती चलती है, इससे परम्परा से इस काष्ठ शिल्पी कला की उन गहन बारिकियों को भी ग्रहण कर लेता है जो उसके दादा परदादा से चली आती है इन आदिवासी समूह मे ऐसे काष्ठ शिल्पी मिलते हैं जिन्हें अपने पारम्परागत शिल्प गढने में महारत हासिल होती है आदिवासी मे अर्जित कला ज्ञान का चरण ऐसे शिल्पकारो मे देखा जा सकता है मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण काष्ठ शिल्पो का उल्लेख है—

मण्डला का काष्ठ शिल्प

मण्डला गोण्ड बहुल अचल है गोण्ड के साथ बैगा [illegible] के लोग प्राय घने जगल मे निवास करना पसद करते हैं इसलिए गोण्ड और बैगाओं का जीवन पेड-पौधों और उससे प्राप्त लकडियों पर निर्भर होता है जंगल में सहज उपलब्ध लकडी के साथ गोण्ड और बैगाओं का आदिम रिश्ता है, इसलिए उन्होंने अपने जीवन मे लकड़ी का भरपूर उपयोग करना सीख लिया है गोण्ड, बैगा अन्य आदिवासियो की तरह मकान बनाने, घर मे काम आने वाले दैनन्दिन वस्तुओ के निर्माण करने, कलात्मक चौखट, दरवाजे, खूटियाँ, चौकी, वाद्य, औजार आदि बनाने में लकडी का उपयोग करते है बैगाओ में लकडी के मुखौटो का चलन है

बैतूल-होशंगाबाद का काष्ठ शिल्प

बैतूल और होशगाबाद में गोण्ड, कोरकू और भारिया जनजाति समूह रहते हैं. बैतूल, होशगाबाद की जनजातियो मे काष्ठ शिल्प की अपनी मौलिक परम्परा है जिनमें गोण्डो और कोरकुओ के लकडी के पारम्परिक दरवाजे, कोरकुओं का मण्डो यानी लकडी के मृतक स्मृति फलक और भारियाओ का विवाह स्तम्भ या कलात्मक मगरोहन हैं.

धार-झाबुआ निमाड़ के काष्ठ शिल्प

धार, झाबुआ और निमाड मे प्रमुख रूप से भील जनजाति का निवास है. भीलो में लकडी के गातला या गाथा यानी मृतक स्मृति जोडे-स्तम्भ बनाने की परम्परा आम है बडे ढोल, माँदल, ढॉक ढफ आदि वाद्य भी लकडी से बनाये जाते हैं भीलो मे कलात्मक दिवाण्या यानी दीवार में दीपक रखने का लकडी का स्टेण्ड आटा पीसने की घट्टी का थाला लकडी से अत्यन्त कलात्मक ओर वैज्ञानिक तरीके से बनाया जाता है भीलो के घरो के दरवाजे, पाट और दासे कुम्बी लकडी के होते हैं जिन पर सुन्दर नक्काशी के साथ पशु-पक्षियो की आकृतियां उकेरी जाती है. अनाज नापने के माप चौकी और कँगन भी लकडी से बनाए जाते है

प्रदेश मे कोई भी आदिवासी अंचल ऐसा नहीं है जहाँ लकडी का कलात्मक उपयोग परम्परा से न किया जाता हो लकडी की दैनिक उपयोग की वस्तुओ के आकार-प्रकार और अलकरण को देखकर हमें जनजातीय सौन्दर्य बोध की गहराई का सहज अन्दाज लग जाता है जनजातियों मे लकडी की विभिन्न कलात्मक सामग्रियो के निर्माण की परम्परा आदिम युग से चली आ रही है

मध्य प्रदेश का धातु शिल्प

मध्य प्रदेश के विभिन्न अँचलो मे धातु शिल्प की सुदीर्घ परम्परा है प्रदेश के लगभग सभी आदिवासी और लोकाचलों के कलाकार पारम्परिक रूप से धातु की ढलाई का कार्य करते हैं ये सदियो से सौन्दर्यपरक, आनुष्ठानिक और उपयोगी कलाकृतियाँ आचलिक आवश्यकता और सौन्दर्य चेतना के अनुसार सहज रूप से बनाते रहे है

टीकमगढ के स्वर्णकार और बैतूल के भरेवा कलाकारों ने आज तक अपनी परम्परा को अक्षुण्य रखा है. इन क्षेत्रों मे ढलाई की मूल प्रक्रिया समान है थोडी बहुत भिन्नता परिवेश और सहज उपलब्ध परिवेशगत सामग्रियो के कारण है सभी शिल्पो से सम्बद्ध औजारो और भट्टियो में भी समानता है कहीं पर मोम, मोम और राल या सिर्फ राल का उपयोग किया जाता है इन तीनो का गुण धर्म एक ही है, लेकिन इनके प्रयोग से प्रदेश के अलग अलग क्षेत्रों के रूपाकारो और उनके अलकरणो की स्पष्ट और निजी पहचान बनती है

टीकमगढ की धातु कला की तकनीक का इतिहास अत्यन्त प्राचीन और पारम्परिक है आजकल विशेषकर मूर्तियो का काम टीकमगढ के क्षेत्र मे होता है इस विधि से इन क्षेत्रों मे पहले बर्तन और आभूषण का निर्माण किया जाता था मूर्तिकला के लिए यह काम अपवाद स्वरूप ही कभी-कभी किये जाते होगे. भरेवा का अर्थ है भरने वाला वे लोग जो साँचे में पिघली हुई धातु भरकर शिल्पाकृति तैयार करते हैं, उन्हे भरेवा कहा जाता है धातु भरने की क्रिया से भरेवा नाम का प्रचलन आरम्भ हुआ जो आज जातिगत सज्ञा के रूप मे स्थापित हो चुका है. भरेवा को कुछ क्षेत्रो मे भारिया के नाम से भी जाना जाता है भारिया सम्बोधन भरेवा का पर्यायवाची शब्द है, इसका मारिया जनजाति से कोई सम्बन्ध नहीं है

छत्तीसगढ के बस्तर, सरगुजा और रायगढ मे विभिन्न प्रकार के दीपको के अलावा, मछली, मुर्गी, घोडा कछुआ, पेड, देवी-देवता, लक्ष्मी की मूर्ति, राक्षस, भूत-प्रेत एव प्रेम और प्रजनन के विभिन्न रूपाकारो को रूपायित किया गया. ठीक इसी तरह टीकमगढ और बैतूल के धातु कलाकारो ने अपनी परम्परा में स्थानीय दैवीय और सौन्दर्योपयोगी रूपाकारो को जोडकर उसका विस्तार किया. हाथी, घोडा, रथ, लाला हरदौल की मूर्तियाँ, छत्र, सरौते, पान एव आभूषण के डिब्बे आदि ऐसे ही रूपाकार हैं

लोक चित्रकार

आदिवासी चित्र परम्परा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनकी स्मृति और मिथकीय बिम्बो का प्रयोग है आदिवासियो के मस्तिष्क मे जाने कितने जन्म के अनुभवो का सचयन होता है जिसे जातीय स्मृति की सज्ञा से अभिहित किया जाता है, यही जातीय स्मृतियाँ इन आदिवासियो के चित्रों में अपनी परम्परा के अनुसार अलग-अलग रूपा मे हर समय उतरकर आती हैं ये स्मृतियाँ मिथकों के बिम्ब ग्रहण करती है और विभिन्न रूपाकारो को सृजन के स्तर तक पहुँचाती हैं

मध्य प्रदेश के गोंडवाना अचल के गोंड, बैगा, परधान, कारकू भरिया आदि जनजातियो के पास अपनी पारम्परिक कला के आदिम अभिप्राय अलकरण और रेखाओ के हजारों रूप-रग मौजूद हैं जो अपनी परम्परा अनुष्ठान और समकालीन सौन्दर्य के दायरे मे हर समय पुनसृजन और पुनाविष्कृत होत हैं

कहा जाता है कि आदिवासियों के मस्तिष्क पटल पर पिछले कितने ही जन्मों की कला सचित होती है इस कला को भले ही वे किसी पुस्तक मे लिपिबद्ध करके न रखते हो, लेकिन अपने जीवन को उत्सव के रूप मे लेने वाले ये आदिवासी चित्रकारी कर आनदित होत हैं मध्य प्रदेश एक आदिवासी बाहुल्य प्रदेश है जहाँ गोंड बैगा भरिया भील आदि जनजातियाँ निवास करती हैं इन आदिवासी जनजातियो द्वारा बनाई जाने वाली चित्रकारी तथा इनके चित्रकारो का वर्णन इस प्रकार है–

गोंड चित्रकला

मण्डला, सरगुजा और बस्तर म गोंड जनजाति के आदिवासी जनमानस द्वारा घर के द्वार और दीवार को चित्रकारी और अलकृत करन की प्रथा सदियों से है मण्डला के गोंड और परधान जनजाति में अपने घरों की दीवारो में अलकृत करने की आदि परम्परा देखन को मिलती है पीढियों से प्राप्त इस कलानुभव को नई पीढी अपने समय के अनुसार अर्जित करती आई है गोंड चित्रकला में जो आदिम कला वैभव और विस्तार छिपा है उसका भरपूर प्रयोग आधुनिक गोंडी चित्रकार अपनी कल्पनाशीलता के साथ भरपूर करते हैं

गोंड परधान चित्रकारों में प्रकृति और जीव-जन्तुओं के आकार अपनी पारम्परिक सीमाओं में अद्‌भुत कल्पनाशीलता और रगों के प्रयोग के साथ व्यापक विस्तार में खिलते है जनजातीय प्रदर्शनी मे गोंडवाना अचल के गोंड परधान, बैगा, कोरकू, भारिया जनजाति के पारम्परिक चित्रकारो द्वारा बनाये गये चित्रो को सम्मिलित किया गया है

श्री नर्मदा गोंड-मण्डला अचल में बनाये जाने वाले परम्परागत चित्रों के एक श्रेष्ठ कलाकार हैं आपने कुछ ही वर्षों मे गोंड चित्रकला के क्षेत्र मे स्वय को अत्यन्त प्रतिभाशाली चित्रकार के रूप मे स्थापित किया है वे रगों का सधा हुआ और अत्यन्त कल्पनाशील प्रयोग करते हैं इनके चित्रों की प्रमुख विशेषता रगों का आदिम विस्तार और गतिमान प्रवाह तथा रेखाओ में स्वाभाविक लयकारिता के साथ जटिलता का अकन है जगल और पशु-पक्षियों की आकृति मे एक प्रकार के सरल मूर्त अकन के साथ साथ अत्यन्त जटिल अमूर्त प्रयोग भी एक साथ उपस्थित करना श्री नर्मदा प्रसाद की विशेषता है

श्री आनन्द सिह श्याम और उनकी पत्नी श्रीमती कलावती गोंड चित्रकला के श्रेष्ठ पारम्परिक चित्रकार हैं श्री आनद सिह श्याम गोंडी अलकरण परम्परा के रूपाकारो को अपने चित्रों का विषय बनाते हैं सरल रेखाओ से विभिन्न पशु-पक्षी, पेड-पौधो जीव-जन्तु मनुष्य की आकृति उकेर कर उन्हे गहरे रगों की आडी-खडी रेखाओं से घेर देना श्री आनन्द सिह श्याम के चित्रों की प्रमुख विशेषता है

प्रतिरोधी रगो के प्रभाव से श्री आनन्द और कलावती के चित्रों में एक जादुई चाक्षुष आकर्षण पैदा हो जाता है

श्री सुमेरसिह गौंडी चित्रकला के सर्वथा पृथक् पहचान रखने वाले चित्रकार है इनके चित्र जनजातीय पारम्परिक चित्रों की निर्मिति में मूल ऊर्जा को तो पकडते है, लेकिन वे भारतीय माइथोलॉजी के देवीय चरित्रों और कथा नायकों को भी चित्रित करते हैं जनजातीय देवी-देवताओ के साथ हिन्दू देवी-देवताओ को रूपायित करने में श्री सुमेरसिह ने अपनी ही शैली विकसित कर ली है छोटी-छोटी चौखानेनुमा रेखाओं मे प्रतिरोधी रगों में चुम्बकीय आकर्षण भर देना श्री सुमेरसिह की खासियत है और यही इनके चित्रो की पहचान भी बन गई है

श्री जनगण सिह श्याम गोडी चित्रकला के पहले कलाकार है जिन्होने अपनी पारम्परिक चित्रकला के आदिम रूपाकारो और रगो का कागज और केनवास पर कल्पनाशील प्रयोग किया है 12 जून, 1968 को जन्मे श्री जनगण सिह श्याम के बनाये चित्रो की देश-विदेश में एकल और सामूहिक प्रदर्शनियाँ हुई हैं सन् 85 में मध्य प्रदेश शासन, सस्कृति विभाग ने आपको शिखर सम्मान से विभूषित किया है

श्री शिवलाल, गोदीबाई और रथियाबाई कोरकू, जनजाति के पारंपरिक कलाकार हैं ये सभी चित्रकार अपनी गुदनी चित्र परम्परा के चित्र बनाते हैं, जिनमें जीवन के रगों के साथ पर्व-त्यौहारो की उमगों का भी गहरा रिश्ता प्रदर्शित होता है

गोंड बैगा, गुदना-गोंड और रथियाबाई कोरकू जनजाति के पारम्परिक कलाकार हैं ये सभी चित्रकार अपनी गुदनी चित्र परम्परा के चित्र बनाते हैं, जिनमें जीवन के रगो के साथ पर्व-त्यौहारों की उमगों का भी गहरा रिश्ता प्रदर्शित होता है

गोंड, बैगा, गुदना-गोंड और बैगा जनजाति में पूरे शरीर पर गुदना धारण करने की परम्परा है शरीर के विभिन्न अवयवों पर अलग-अलग प्रकार के गुदने आत्मिक सौंदर्य को प्रकट करते हैं लालपुर मण्डल की श्रीमती शांतिबाई बादी गोंड और बैगा जनजाति की पारम्परिक गुदनाकार है

बैगा चित्रकला

मण्डला के घने जगलों में बैगा जनजाति का निवास है आदिम बैगा, समूह प्रदेश की प्रीमिटिव्ह जनजातियों में से एक है बैगाओ में अपने घरों की सजावट करने की बहुत पुरानी परम्परा है अलकरण में ये अपने आसपास के पेड-पौधे देवी-देवता, पशु-पक्षी, नदी-पहाड और पराशक्तियों आदि के स्मृति चित्र बनाते हैं

श्री बेलगूर मंडावी

30 वर्षीय श्री बेलगूर मडावी का जन्म गढबेंगाल, नारायणपुर बस्तर में हुआ बस्तर की मुरिया जनजाति के श्रेष्ठ कलाकारों मे एक है श्री बेलगूर ने बस्तर की इस कला को अपनी कल्पनाशीलता से नया रग और बोध दिया भारत भवन, भोपाल के उदघाटन के अवसर पर श्री बेलगूर ने अनेक कला मर्मज्ञों से सराहना प्राप्त की मध्य प्रदेश शासन सस्कृति विभाग की चक्रधर फलोशिप के अन्तर्गत बस्तर कला चित्रों की रचना की मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् भारत भवन व व्यक्तिगत सग्रहो में चित्र और काष्ठ कलाओं का सग्रह मिलता है बाद मे ये शिखर सम्मान से भी विभूषित हुए है

पिथौरा भित्तिचित्र

पिथौरा भित्ति चित्र झाबुआ का अनुष्ठानिक चित्रकर्म है इसके लिखने वाले कलाकार लिखिन्दरा कहलाते हैं जो परम्परागत श्रेष्ठ कलाकार होता है लिखिन्दरा के परिवार में पीढी दर पीढी पिथौरा बनाने की कला चलती है पिथौरा में घोडों का चित्राकन मुख्य रूप से होता है काजलरानी की कथा इसके पूरे चित्र में चित्रित होती है राजस्थान और गुजरात में रहने वाले भीलों में भी पिथौरा बनाने की परम्परा है

पैंतालीस वर्षीय श्री पेमा फत्या भील आदिवासियों में बनाए जाने वाले परम्परागत भित्ति चित्र पिथौरा के श्रेष्ठ कलाकारों में से एक है पिथौरा बनाने का कार्य वशानुगत परम्परा से सीखा अलीराजपुर में स्थापित भीली सग्रहालय अलीराजपुर, झाबुआ, भारत भवन, भोपाल, अहमदाबाद तथा बाग में आपके बनाए चित्र सगृहीत हैं आपको मध्य प्रदेश शासन के सस्कृति विभाग द्वारा वर्ष 1987 के लिए शिखर सम्मान से विभूषित किया गया है

कुक्षी का छीपा शिल्प

कुक्षी के कपडे पर हाथ से बनाए जाने वाले छीपा शिल्प विख्यात है इन छापों में हाथ से विभिन्न छापों को उकेरा जाता है इनम भील आदिवासियों के विभिन्न प्रतीकों का समावेश रहता है आज भी अधिकाश भील आदिवासियों द्वारा इन्हीं वस्त्रों का उपयोग किया जाता है पिछले वर्षों में इस छापा शिल्प कला ने कुक्षी में एक व्यावसायिक उद्योग का रूप लिया है श्री ईस्माइल सुलेमानजी कुक्षी के छापा शिल्पों के एक श्रेष्ठ कलाकार है इन्होने इस कार्य के सिलसिले में विदेश यात्रा की है और राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित किए गए हैं

प्रदेश के शिखर सम्मान से विभूषित तीन चित्रकार श्री पेमा फत्या श्री जनगणसिह श्याम और श्रीमती भूरीबाई है इसके अलावा श्रेष्ठ चित्रकार श्री बेलगूर श्री नर्मदाप्रसाद श्रीमती सहोदीबाई, श्री आनन्दसिह श्याम श्री सुमेरसिह श्री शकर, श्री पडितराम श्री शिवलाल श्रीमती गोदोबाई और श्रीमती लाडोबाई भी हैं साथ ही श्री मोहनराम श्री चमनराम श्रीमती शातिबाई श्रीमती रुदियाबाई बाबूलाल श्री मोतीराम श्री सावनसिह श्री बब्बूसिह डुडवा और श्री पवन डुडवा भी श्रेष्ठ चित्रकार है

गोंड तथा भीली चित्रकला

विभिन्न आदिवासी शिल्प विधाओ के रायपुर के प्रख्यात चित्रकार श्री नर्मदा सोनसाय हैं श्री नर्मदा गोंड आदिवासी क्षेत्र में बनाए जाने वाले परम्परागत चित्रों के एक श्रेष्ठ कलाकार हैं आपने चार-पाँच वर्षों में तेजी से आदिवासी चित्रकला के क्षेत्र मे स्वय को अत्यन्त प्रतिभाशाली चित्रकार के रूप मे स्थापित किया है वे रगों का सधा हुआ अत्यन्त कल्पनाशील प्रयोग करते हैं इनके रंगों की प्रमुख विशेषता, रगो का आदिम विस्तार और गतिमान प्रवाह तथा रेखाओ में स्वाभाविक लय के साथ जटिलता का अकन है जगल और पशु-पक्षियों की आकृति में एक प्रकार के सरल मूर्त अकन के साथ-साथ अत्यन्त जटिल अमूर्त प्रयोग भी एक साथ उपस्थित करना श्री नर्मदा की विशेषता है

भीली चित्रकला के अत्यन्त महत्वपूर्ण युवा चित्रकार श्री टेरू ताहेड़ यद्यपि पिथौरा जैसी अनुष्ठानिक चित्र परम्परा के कलाकार नहीं हैं, लेकिन वे भीली मिथक लोक से सम्बन्धित चित्रों के अलावा पशु-पक्षियो, जगलो और वृक्षों का अत्यन्त सुन्दर एव सहज चित्राकन करते है रगो की गहरी सवेदना और आकृतियो की रेखाओं में आदि अनगढता का असाधारण सयोग उनके चित्रो को आदिवासी जीवन की सहजता का गहन सौन्दर्य बोध प्रदान करते है

गुड़िया और लाख शिल्प

ग्वालियर की परम्परागत गुडिया शिल्पकला की श्रेष्ठ कलाकार श्रीमती बत्तोबाई तथा लाख की कलात्मक चूड़ियां बनाने वाले उज्जैन के श्री राजेन्द्र लखारा है

20

मध्य प्रदेश में रंगकर्म एवं प्रमुख रंगकर्मी

मध्य प्रदेश में रंगकर्म

[illegible] मध्य प्रदेश के नहीं मालवा के नाट्यकर्म के [illegible] इस राज्य की रगों में बसे [illegible] है कि हिन्दी का पहला नाटक भी मध्य प्रदेश में ही लिखा गया था 1770 के आसपास ऐसे समय देवकीनंदन श्रीवास्तव पर अक्षरशः अनंद रघुनन्दन लिखा अवधपुर में इस हिन्दी का पहला नाटक माना जाता है। मुक्तकण बृजरत्नदास तथा डॉ. सत्येन्द्र गुप्त का भी कहना है। राज्य में विवाह के अवसरों पर भी नाटक होते रहे हैं। इससे अनुमान लिया जा सकता है कि यह प्रदेश किसी नाट्यकला की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध और समर्थ रहा होगा।

आजादी के बाद के प्रारम्भिक वर्षों में राज्य में हिन्दी नाटक के विकास के लिए सक्रियता [illegible] आया। दशक के बाद रंगकर्म के नई जागरूकता आई और हिन्दी नाटक उपलब्ध करने वाली रंग संस्थाओं का गठन होना शुरू हुआ। मराठी और बंगला भाषा में नाटक करने वाली नाट्य संस्थाएँ राज्य में पुरानी हैं जो अपनी नाट्य परम्परा से बराबर जुड़ी रहीं और जोड़ती रहीं। इसी कड़ी में इधर 1961 में राज्य शासन द्वारा भारत भवन भोपाल की स्थापना के बाद इसके निदेशक रंगकर्मी नाटक विशेषज्ञ नई दिल्ली के भूतपूर्व निदेशक श्री कारंथ ने कलाकार चयन करके नियुक्त किए और राज्य के विभिन्न नगरों में रंगकर्म से जुड़े हुए नाटक देखे और उनके परिदृश्यों का आकलन नाटकों पर यहाँ किया जा रहा है।

भोपाल

भोपाल राज्य का एक महत्वपूर्ण और पुराना रंगकेंद्र है। यह पिछले एक सौ से भी अधिक वर्षों से सक्रिय है। यहाँ भोपाल में महाराष्ट्र की तरह ही अनेक [illegible] पर [illegible] ललित हुआ करते थे इसके बाद तरानगे के [illegible] पर अलग-अलग नाटक होने लगे इन नाटकों का [illegible] पर आधारित होते थे और अक्सर [illegible] उनमें पौराणिक [illegible] 1930 के आसपास के [illegible] बाद भोपाल में रंग संस्थाओं द्वारा नाटक खेले जाने लगे। ऐसे नाटक नाटककार नाटक सुदामा अंधेर आदि रंगकर्मियों ने खेले हुए और सोसायटी जैसे नाटक मंचित किए। महाराष्ट्र से आए कई दिलीपकर आनंद सेन और संगीत-कलाकारों जैसे प्रकाश रंग सज्जियों के चमक-दमक से और स्क्रीनेट प्रथाओं से प्रभावित होकर महाराज नाटकमंडली में टाकुन होत फैक्टर कम्पनी और भोपाल की नाट्य गतिविधियाँ यहाँ केन्द्रित हुईं।

1890 में मराठी खाड़ी रंगों संस्था गंधर्वोत्तेजक संगीत नाटक मंडली की स्थापना हुई मराठी नाटकों को प्रस्तुतियों में मराठी पेशेवर कलाकार स्त्री अभिनय संगीत मंडली और महाराष्ट्र मंडल जैसे नाटक दल में रहते हुए [illegible] संगीत से सजे हुए नाटकों के मंचन के साथ-साथ हिन्दी के [illegible] 1934 में श्री अब्दुल रहीम ने आर्टिस्ट कम्बाइन की स्थापना की राज्य में नए ढंग के निर्माण और महिला पात्रों की भूमिका महिलाओं द्वारा ही निभाने जाने की परम्परा का श्रेय श्री रहीम को है। तकिन उनका यह मराठी दल ही संगीत रहा 12 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र होने पर उनका दल भोपाल से बाद उनकी कर्मी श्रीमती इंदिरा वर्मा मंगल और उनके पुत्र मेक मंगल ने आर्टिस्ट कम्बाइन को जीवित रखा 1950 से इस रंग समूह ने मराठी के साथ-साथ हिन्दी और संस्कृत नाटकों की प्रस्तुति प्रारम्भ की।

सम्प्रति यह देश के स्वतन्त्र शौकिया रंगकर्मियों के संस्था है जिसके पास अपना थियेटर अपने कलाकार हैं और मंच की अधिकृत संस्था है। यहाँ सम्प्रति श्रीनिवास कालकर राम अवतियर गोपालराव मुजुमदार मंगल चितलकर जैसे वरिष्ठ रंगकर्मी इसी संस्था के सदस्य हैं।

इस संस्था के दूसरे महत्वपूर्ण रंग संस्था है जो पिछले बीस वर्षों से संगीत नाटक और सूत्र के

लिए कार्य कर रही है दरअसल 'कला मंदिर, प्रेमचंद कश्यप' 'सोज' के प्रयासों का नतीजा है 'कला मन्दिर' को 'दिल्ली तेरी बात निराली' से काफी ख्याति मिली फिलहाल कमल वशिष्ठ और अनंत सबनीस कला मंदिर के तत्वावधान में खासे सक्रिय हैं

'रंगश्री' 'लिटिल बैले ट्रूप' राज्य की अपने ढंग की अकेली संस्था है 20 जनवरी, 1952 को मुम्बई में यह संस्था अस्तित्व में आई 1965 में इसके संस्थापक स्वर्गीय शान्तिवर्धन राज्य सरकार के आग्रह पर इसे ग्वालियर ले आए इस दल ने कठपुतली रामायण, पंचतंत्र, मेघदूत, क्षुधित, पाषाण, डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, भैरव, छाऊ रामायण और ब्रजरास आदि अनेक बैले प्रस्तुत किए इस संस्था के लिए प्रभात गांगुली और श्रीमती गुलवर्धन का योगदान उल्लेखनीय है

भोपाल

भोपाल में रंगकर्म की परम्परा पुरानी नहीं है 1947 में पहली बार भोपाल के नवाब ने पारसी थियेटर शैली में एक नाटक बड़े पैमाने पर तैयार करवाया था इस नाटक में काम करने के लिए इंदौर, ग्वालियर, लखनऊ, दिल्ली और हैदराबाद आदि स्थानों से कलाकारों को आमंत्रित किया गया था. मध्य प्रदेश के गठन के बाद राजधानी भोपाल में राज्य के विभिन्न नगरों से नौकरी पेशा लोग आकर बसे इन नगरों की अपनी नाट्य परम्पराएँ भी बाबू लोगों के साथ-साथ बस गईं, महाराष्ट्र समाज और बंगाली एसोसिएशन की स्थापना से इनके नाट्य उत्साह को दिशा मिली

ग्वालियर के श्रीनिवास खोचर ने भोपाल आकर कला केन्द्र को जन्म दिया नागपुर के कृ शि मेहता और विनायक चास्कर ने 'लोक कला केन्द्र' की स्थापना की इन दोनों नाट्य दलों ने हिन्दी नाटकों की लगातार प्रस्तुतियाँ की, लेकिन यह अल्पजीवी संस्था साबित हुई 1960 के बाद भोपाल में 'नाट्य सुधा', 'कल्पतरु' और 'रंगायन' जैसी महत्वपूर्ण रंगमण्डलियाँ अस्तित्व में आईं, जो हिन्दी और मराठी नाटकों के लिए समान रूप से काम करती रहीं 'नाट्य सुधा' की स्थापना 1967 में श्री वेलणकर ने की थी भोपाल में सबसे पहले इसी संस्था ने नाटक पर तीन सेमिनार आयोजित किये थे रंगकर्म के प्रति इस संस्था के गम्भीर नजरिये से प्रभावित होकर कई रंगकर्मियों ने इसे सहयोग भी दिया, लेकिन यह 1973-74 तक ही जारी रह सकी दिवंगत नाट्यकार डॉ शंकर शेष भी 'नाट्य सुधा' के अध्यक्ष रहे

'कल्पतरु' ने भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स की उद्योग नगरी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया, लेकिन यह 'नाट्यसुधा' से पहले ही बिखर गई हालांकि 'नाट्यसुधा' और 'कल्पतरु' ने भोपाल रंगमंच के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया 'रंगायन' भाऊ खिरवडकर के निर्देशन में आज भी सक्रिय है हिन्दी और मराठी की नियमित नाट्य प्रस्तुतियों से इस संस्था का अपना एक दर्शक वर्ग बन गया है इसके अतिरिक्त शरद जोशी के 'सांस्कृतिक मंच' द्वारा अखिल भारतीय ख्याति की रंग मण्डलियों को नाट्य प्रस्तुतियों के लिए आमंत्रित किया जा चुका है ऐसी प्रस्तुतियों में आधे-अधूरे, कंजूस, गोदों के इंतजार में और अंधेर नगरी उल्लेखनीय है 'सूत्रधार' ने इसी दिशा में स्थानीय और बाहर की रंग मण्डलियों को भोपाल में नाट्य प्रस्तुतियों के लिए सहयोग करते हुए सांस्कृतिक मंच की ही भूमिका निभाई 'अनाम थियेटर' ने पुराने भोपाल में रंग चेतना विकसित करने का काम किया है

1973 में मध्य प्रदेश कला परिषद् ने रंग निर्देशक बाबू कोडी व्यंकटरमन कारंत के निर्देशन में रंग शिविर का आयोजन किया इस वर्कशॉप में दो नाटक तैयार किए गए 'रसगंधर्व' तथा एक और द्रोणाचार्य इस वर्कशॉप की सफलता से उत्साहित होकर यहाँ के रंगकर्मियों ने 1974 में एक नाट्य दल गठित कर लिया 'रंग शिविर' प्रत्यंक 'समांतर' और 'दर्पण' आदि रंग संस्थाएँ भी इसके बाद अस्तित्व में आईं 'इप्टा' 'इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन' की इकाई भी यहाँ काम कर रही है विभिन्न रंग समूहों के रंगकर्मियों को एक मंच पर इकट्ठा करने के उद्देश्य से 'हम सब' का गठन हुआ, लेकिन यह प्रयास असफल रहा

इन्दौर

रंग चेतना की दृष्टि से इन्दौर राज्य का महत्वपूर्ण केन्द्र है मराठी रंगमंच से यह नगर सीधा जुड़ा है नन्दलालपुरा के नाट्यगृह को यदि ध्वस्त होने से बचा लिया गया होता तो वह राज्य का सबसे पुराना नाट्यगृह होता 1936 में महत्वाकांक्षी 'बालोद्धार मण्डल' और मराठी साहित्य सभा' ने इन्दौर में रंग सक्रियता को संगठित रूप देने का काम किया इन्हीं संस्थाओं के सदस्यों ने 1955 में 'नाट्य भारती' की स्थापना की इसी मण्डली के जरिए राहुल बारपूते, बाबा डिके, पं कुमार गंधर्व और विष्णु चिंचालकर ने इन्दौर के रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की 'नाट्य भारती' अब तक करीब एक हजार नाट्य प्रयोग कर चुकी है बाबा डिके के निर्देशन में कारकून, खाई, मंगू, धूमकेतु 'अनुवाद' तथा नूरजहाँ, नाटक काफी लोकप्रिय हुआ कारकून और खाई के सौ से भी अधिक मंचन हुए

पु ल देशपाण्डे के प्रसिद्ध नाटक 'तुज आहे तुज पाशी' का अनुवाद 'कस्तूरी मृग' के नाम से राहुल बारपूते ने किया और इस नाटक ने मंच पर खासी लोकप्रियता अर्जित की इसी संस्था की शाखा 'लिटिल थियेटर' ने नए और प्रयोगशील नाटक प्रस्तुत किये यहाँ 'यवनिका और 'इप्टा' नाट्य दलों ने भी रंगकर्म को अरसे तक जारी रखा जी आर सालुखे नरहरि पटेल, कुजबाला सहगल आदि प्रमुख रंगकर्मी थे

मराठी और हिन्दी नाटक प्रस्तुत करने वाली रग मडली, 'आराधना' 1971 मे अस्तित्व में आई राजन देशमुख के निर्देशन मे लुई जीं पिरादलो के आलेख सिक्स कैरेक्टर्स इन सर्च ऑफ एन ऑथर' के मराठी अनुवाद-नाटक कराचा शोधात सहा पात्र से सस्था की पहचान बनी इसके बाद सैनिक नवाचा माणुस गणपत वाणी और देशा शपथ खर सागिन से 'आराधना' को काफी ख्याति मिली 1977 मे 'आयिरत' नाट्य दल गठित हुआ और 'आराधना' के कई रगकर्मी इसमे शामिल हुए 'अविरत के लिए राजन देशमुख ने यू मस्ट डाय, कुर्बानी आदि हिन्दी मराठी नाटकों और एकाकियो के मचन किये और लोकप्रियता अर्जित की आराधना के 1977 के बाद गणपत वाणी और लोककथा 78 के उल्लेखनीय मचन किए

1976 के आसपास इन्दौर में नए और प्रयोगधर्मी हिन्दी नाटक करने वाले रग समूह उभरे 'इन्दौर थियेटर' सरोजकुमार के प्रयासो का नतीजा था इस सस्था ने इन्दौर मे सम्भवत पहली बार नुक्कड नाटक खेले और कविता मचन किए रायपुर के युवा निर्देशक अशोक कुमार मिश्र के निर्देशन मे 'इन्दौर थियेटर' ने छतरियाँ, सिहासन खाली है और अन्धेर नगरी के अलावा सरोजकुमार की किताबो के मचन भी किए इसी समय 'प्रयोग' सतीश मेहता के निर्देशन मे अन्धो का हाथी और जुलूस जैसे प्रायोगिक नाटको के जरिए आकार ले रहा था अशोक मिश्र के राष्ट्रीय विद्यालय मे चले जाने की वजह से 'इन्दौर थियेटर' का सिलसिला प्रयोग से जुड गया 'प्रयोग' ने दुलारी बाई बकरी और आला अफसर आदि नाटकों की भी प्रस्तुतियाँ की इनके अलावा 'अहिल्या नाट्य मण्डल', अरक और कला निकेतन आदि मण्डलियाँ भी नाटक के लिए काम कर रही है

जबलपुर

जबलपुर मे नाटक की परम्पराओ का अभाव रहा प्रारभिक दौर में यहाँ पारसी थियेट्रिकल कम्पनियाँ आया करती थी लेकिन उस दौर में भी स्थानीय स्तर पर रग सस्थाओं के गठन आदि के व्यवस्थित प्रयास नहीं हुए उल्लेखनीय है कि राज्य मे एकमात्र घूमने वाला रगमच जबलपुर में है और स्वर्गीय सेठ गोविन्ददास के जन्म दिन 16 अक्टूबर को जबलपुर नाट्य दिवस के रूप मे मनाता है

जबलपुर मे 'मित्र सघ', 'मिलन', 'चयनिका' और युवा सगम आदि नाट्य मडलियो के छुटपुट प्रयास सामने आते रहे युवा सगम द्वारा प्रस्तुत डॉ शकर शेष के फदी नाटक ने काफी लोकप्रियता अर्जित की विवेचना ने प्रतिबद्ध और गम्भीर नाटको का बीडा उठाया लेकिन सुसगठित रग आदोलन जबलपुर में शक्ल नहीं पा सका है

सागर

सागर मे मध्य प्रदेश कला परिषद् द्वारा आयोजित रगशिविर से यहाँ के रगकर्मियों में कुछ सुगबुगाहट हुई है सागर विश्वविद्यालय परिसर में भी प्रयोग नामक नाट्य दल हिन्दी नाटक प्रस्तुत करता है

उज्जैन

उज्जैन राज्य का प्रमुख सास्कृतिक शहर है 1976 मे यहाँ मध्य प्रदेश नाटक लोक कला अकादमी की स्थापना हुई नाट्य प्रस्तुतियों के अतिरिक्त अकादमी प्लोमा इन ड्रामेट्र्जी के एकवर्षीय पाठ्यक्रम का सचालन भी करती है यह मध्य प्रदेश मे सभवत अपने ढग का पहला और अकेला प्रशिक्षण पाठ्यक्रम है इस पाठ्यक्रम के अतर्गत अब तक करीब 45 रगकर्मी प्रशिक्षित किए जा चुके है अकादमी के सहयोग से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा यहाँ माच मेला भी आयोजित किया गया था अकादमी अब तक 55 नाटक प्रस्तुत कर चुकी है

यहाँ कालिदास अकादमी 1979 से काम कर रही है डॉ कृष्णकान्त चतुर्वेदी इसके वर्तमान निदेशक है नाट्य समारोह के आयोजन के अलावा अकादमी द्वारा दूत वाक्यम्, स्वप्न वासवदत्ता, बालचरितम् और कर्णभारम् आदि नाटक मचित कर चुकी है इसके अलावा रगदीप 1978 से रगमच पर सक्रिय है स्व धीरेन्द्र परमार इसके निर्देशक रह चुके हैं रगदीप ने मुद्रा राक्षस, सुनो जनमेजय और जू स्टोरी आदि नाटक प्रस्तुत किये यहाँ प्रकाश थियेटर्स भी पिछले कुछ वर्षों से कार्यरत् है प्रकाश बाँठिया इस मण्डली के प्रमुख हैं इस मडली ने भावसार बा की कविताओं का मचन किया 'नाट्य वदना' पिछले आठ-दस वर्षों से कार्यरत् है यह रग मडली पूरी तरह मराठी नाटकों के लिए समर्पित है इनके अलावा कलारजन और स्वर रजनी आदि नाट्य दल उज्जैन मे रगकर्म कर रहे है साथ ही कालिदास समारोह का स्वरूप भी अब काफी बदल गया है राज्य के अन्य छोटे-बडे नगरो में भी रगकर्म को गम्भीरता से लिया जाने लगा है

मध्य प्रदेश में रंगकर्म की स्थिति : आधुनिक प्रवृत्तियाँ एवं विश्लेषण

हिन्दी रगकर्म की उपलब्धियों की जब भी बात की जाती है तो वह महानगरो या प्रमुख शहरों की जानी-मानी रगसस्थाओ और निर्देशको पर केन्द्रित हो जाती है आज का युग विज्ञापन और सूचना का युग है अत विस्तृत प्रचार-प्रसार वाले अखबारो, पत्र पत्रिकाओं और दूरदर्शन पर 'कवरेज पाने वाले रगकर्म को ही पूरे भारत का कुल रग परिदृश्य मानकर उस पर टिप्पणियाँ की जाती है आज जब हम आजादी के बाद के हिन्दी रगकर्म पर समग्रता के साथ सोचते है तो पाते है कि हिन्दी रगकर्म के अन्तर्गत हिदी भाषा की बोलियो के लोकनाट्यों को और छोटे शहरों, कस्बो और गाँवों की छोटी-बडी रगमण्डलियो के द्वारा किए गए रगप्रयासो को शामिल न करें तो हमारा

विवेचन सिर्फ साधन सम्पन्न रगकर्म को रेखांकित करने तक सीमित रह जायेगा और ऐसा करना उन तमाम रगकर्मियों के साथ अन्याय होगा जो अपने-अपने क्षेत्र में अपने सीमित साधनों, समझ, क्षमता और समय के साथ उतनी ही ईमानदारी के साथ रगकर्म कर रहे हैं जितनी ईमानदारी से स्थापित रगकर्मी आशय यह है कि आज के वैश्विकीकरण के जमाने मे हमें हिन्दी रगकर्म के बारे मे जानकारी का आदान-प्रदान पूरे देश में ऐसे साधनों के मार्फत करना होगा जिससे हिन्दी रग परिदृश्य का विवेचन करते समय एक समग्र तस्वीर सामने हो

बहरहाल, पूरे देश में न सही, हम सिर्फ मध्य प्रदेश की बात करें तो आजादी के बाद का विकास हमारे सामने स्पष्ट हो सकता है मध्य प्रदेश के विभिन्न अचलों मे मालवा, निमाड़, बघेलखण्ड, बुदेलखण्ड, महाकौशल, आदि आते हैं जिनमें हिदी की ही विभिन्न बोलियाँ बोली जाती है इन बोलियों मे अनेक लोकनाट्य प्रचलित हैं आजादी के पहले और बाद मे भी इन पारम्परिक लोकनाट्यो का प्रचलन समयानुकूल परिवर्तन की धारा से जुड़ते हुए बदस्तूर जारी रहा अनेक गाँवों में अनेक छोटी-बड़ी नाटक मण्डलियाँ रही, जिनमें व्यावसायिक कम और शौकिया ही ज्यादा थी दिनभर अपनी रोजी रोटी जुटाकर शाम को ही नाट्यकर्म मे ये लोक कलाकार सलग्न हो पाते थे भोजनादि से निवृत्त होकर इनके प्रदर्शन होते थे जिसे हजारों की सख्या में दर्शक बैठकर रात-रात भर देखा करते थे, बिना किसी लिखित नाट्य-लेख एव विशेष रगसामग्री के नाट्य प्रदर्शन के बावजूद ये अपना खासा दर्शक वर्ग जुटा लेते थे कमोबेश आज भी यही स्थिति है दूरदर्शन, वीडियो और लोक तत्वों के फैशनपरक बाजारू उपयोग के कारण जरूर कुछ विचलन आया है, परन्तु इनका पारम्परिक रूप और प्रदर्शन का तरीका आज भी लोकप्रिय ही है

मध्य प्रदेश मे दूसरी ओर शहरी रगकर्म में प्रेक्षागारी नाटक और अस्सी के दशक में नुक्कड नाटक का प्रवेश होता है रगकर्म की ये शैलियाँ पारम्परिक लोकनाट्यों से पर्याप्त अन्तर रखती हैं शहरी रगमण्डलियों में व्यावसायिक की अपेक्षा शौकिया रगसस्थायें ही अधिक रही जो भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर, जबलपुर उज्जैन जैसे शहरों के अलावा रीवा, सतना, खरगौन, रतलाम आदि छोटे-बडे, कस्बों शहरो में सक्रिय रहीं यह सच है कि देश के महानगरों की प्रशिक्षित एव व्यावसायिक या शौकिया रगमण्डलियों जैसा गम्भीर और तकनीकी दृष्टि से परिपक्व रगकर्म यहाँ नहीं हो पाया फिर भी प्रदेश की रगमचीय गतिविधियो में इनके योगदान एव रगकर्म को जिदा रखकर लगातार कलाकारों को जोड रखना भी कम महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता दिल्ली म 'हिन्दुस्तानी थियेटर' के बाद छत्तीसगढी लोक कलाकारों के दल के साथ हबीब तनवीर ने 'नया थियेटर बनाया और प्रदेश मे लोक शैलियों के गम्भीर प्रयोग की शुरूआत की तथा इसके साथ ही व्यावसायिक और परिपक्व रंगकर्म की परम्परा का सूत्रपात किया दुर्ग जिले के रामचन्द्र देशमुख ने छत्तीगढ़ी कलाकारों और लोक शैलियों को उनके पारम्परिक रूप में लेकर 'चन्दैनी गोंदा और 'कारी' जैसे नाटकों की प्रस्तुति की जिसको बहुत प्रसिद्धि मिली बंसी कौल ने 'रगविदूषक' की स्थापना कर व्यावसायिक रगकर्म की दिशा में एक नया अध्याय जोडा जबलपुर में सामाजिक राजनैतिक कार्यों के लिये आरम्भ की गई 'विवेचना' में अलखनन्दन ने रगकर्म की नींव डाली परन्तु भारत भवन की स्थापना के बाद ही पूरे कलात्मक वैभव और दक्षता के साथ मध्य प्रदेश में रगकर्म का आरम्भ हुआ इससे इनकार नहीं किया जा सकता मध्य प्रदेश शासन के एक उपक्रम के रूप मे भारत भवन में रंगकर्म के सम्पूर्ण विकास के लिये 'रगमण्डल' स्थापित किया गया जिसने स्थापना से ही. ब व कारथ जैसे गम्भीर, परिपक्व समर्पित एव प्रयोगधर्मी निर्देशक ने सँभाला इस शासकीय रगमण्डल के कार्यरत् होने से लाभ यह हुआ कि रगकर्म के विभिन्न अगों का गहन प्रशिक्षण प्राप्त कर पूर्णकालिक रगकर्म करने वाले रगकर्मी प्रदेश मे दिखने लगे अन्यथा पूर्णकालिक व्यवसाय के रूप मे रगकर्म को स्वीकार करने वाले रगकर्मी प्रदेश के लिए नई बात थी भारत भवन में देश-विदेश के ख्यातिलब्ध निर्देशको एव तकनीकि विशेषज्ञों के आने में रगमण्डल के प्रशिक्षणार्थियो एव रगकर्मियो को वैविध्यपूर्ण अनुभव प्राप्त हुए और रगकर्म मे एक निखार आया

इसी दौर में प्रदेश के विभिन्न स्थानो पर धीरे-धीरे अनेक रगसस्थाओ का जन्म हुआ और वे अपने-अपने तरीके के स्थानीय कलाकारो को लेकर रंगकर्म करने लगीं भोपाल में ही रगमण्डल, रंगविदूषक, नया थियेटर, नटबुन्देले रगसमूह लिटिल बैले ट्रूप, दोस्त, प्रयोग, कारवा, कबीला टोली, एकरग, सृजन, रगायन, दर्पण समातर, पल्लव त्रिकर्षि, सूत्रधार, लोककला अकादमी आदि के अन्तर्गत वर्षभर नाट्य सम्बन्धी गतिविधियाँ होती रहती हैं इन्दौर में अरक और प्रयोग, ग्वालियर में नाट्यायन, आर्टिस्ट कम्बाइन, कलामदिर, जबलपुर में विवेचना इप्टा, रचना रायपुर में इप्टा, कौतुक अवतिका, स्टेट बैंक नाट्य मच भिलाई में इप्टा, कठपुतली, नाट्य-चक्र, बिलासपुर मे इप्टा अग्रज, नाट्य निकेतन स्काईलार्क, रायगढ में इप्टा, सृजन, कोरबा मे प्रयास इप्टा एव पा उज्जैन में अभिनव रगमण्डल एव कालिदास अकादमी, सागर में अन्वेषण थियेटर ग्रुप, रतलाम मे जन नाट्य मच, खण्डवा मे यवनिका, दमोह में राष्ट्रीय युवा नाट्य मच एव इप्टा, खरगौन में रगसवाद सतना मे क ख ग इप्टा, बालाघाट में यूनिक थियेटर एव कला निकेतन नाट्य मच के अलावा इप्टा की इकाइयों मे रीवा पन्ना, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर बचेली, छिन्दवाडा, मनेन्द्रगढ, जमनीपाली सारगगढ डोगरगढ आदि स्थानो पर कहीं वर्षभर तो कहीं सामयिक रूप मे रगकर्म होता रहा सन् 1982 में मध्य प्रदेश इप्टा के रायगढ मे हुए

प्रथम राज्य सम्मेलन के साथ पूरे प्रदेश मे इसकी लगभग तीस इकाइयाँ बनी जो जनचेतना फैलाने के उद्देश्य और प्रतिबद्धता के साथ रगकर्म की ओर उन्मुख हुई सीमित साधनो के बावजूद इन इकाइयो ने मचीय नाटको के अलावा तात्कालिक सामाजिक आर्थिक राजनैतिक समस्याओं पर केन्द्रित छोटे-छोटे नुक्कड नाटको की एक नई विधा और शैली को विकसित किया पूरे प्रदेश मे नुक्कड नाटकों की धूम मच गई न केवल इप्टा की विभिन्न इकाइयों ने वरन् अन्य रगसस्थाओ ने भी नुक्कड नाटक की प्रस्तुतियाँ कर एक नया नाट्यानुभव प्राप्त किया कि दर्शको के नजदीक और उनके बीच रहकर प्राय सिर्फ कलाकार की शारीरिक गतिविधियो और वाणी के प्रयोग से कैसे नाट्य प्रस्तुति की जाए इसके अन्तर्गत किसी भी गली, नुक्कड, चौराहे आँगन, बगीचे जैसे सार्वजनिक स्थान पर रगकर्म होने लगा कम से-कम रगसामग्री और वेशभूषा के यह रगकर्म बड़ी तेजी से दर्शकों में लोकप्रिय भी हुआ प्रारम्भ मे जन नाट्य मच, दिल्ली के सयुक्त लेखन वाले अनेक नाट्यालेख ही उपलब्ध रहे, परन्तु धीरे-धीरे इनके अलावा कुछ नाट्य लेखकों, राजनैतिककर्मियो, रगकर्मियो एव रग-सस्थाओ ने भी सयुक्त प्रयास से नाट्यालेख तैयार किये क ख ग इप्टा सतना इसका उदाहरण है कुछ निर्देशकों ने भी कहानियों, कविताओ के नाट्य रूपातरण किये जिनमे अरुणा पाडे, तपन बैनर्जी के नाम प्रमुख हैं इप्टा की विभिन्न इकाइयो ने समय-समय पर अपनी स्मारिकाए और बुलेटिन का प्रकाशन कर अपनी तमाम गतिविधियो एव रगकर्म सम्बन्धी वैचारिक व्यावहारिक लेख प्रकाशित किए इसके अलावा अनेक लघु पत्रिकाओं, स्थापित पत्रिकाओ और दिल्ली से नेमीचद जैन द्वारा प्रकाशित रग पत्रिका 'नटरग' मे मध्य प्रदेश की इन रगसस्थाओं की गतिविधियाँ दर्ज होती रही

आठवे दशक से ही प्रदेश के रगकर्मियो और गम्भीरता से रगकर्म करने वाली रगसस्थाओं को भी कलाकारों के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक नाट्य प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस होने लगी जिसके तहत् प्रदेश मे अनेक स्थानो पर नाट्य प्रशिक्षण कार्यशालाए आयोजित की जाने लगी कही विभिन्न रगसस्थाओं या शासकीय प्रतिष्ठानों के मार्फत और कही सयुक्त प्रयासो से ये अल्पकालीन नाट्य प्रशिक्षण कार्यशालाए आयोजित की गईं ब व कारथ, हबीब तनवीर बसी कौल अलखनदन, अरुण पाण्डे, आलोक चटर्जी, राजकमल नायक, मिर्जा मसूद, विभष उपाध्याय आदि ने अनेक स्थानो पर कार्यशालाओ का निर्देशन कर आधारभूत प्रशिक्षण प्रदान किया तथा कार्यशाला के दौरान नाटक भी तैयार किए इसके अलावा विभिन्न रग सस्थाएँ अपने ही रगकर्मियों के लिये नाट्य प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित करती है जिससे प्रशिक्षण के दौरान तैयार किए गए नाटको के अन्य स्थानों पर भी मचन किए जाते है अब तो प्रदेश के बाहर के भी नए पुराने निर्देशको को बुलाकर विवेचना इप्टा, जबलपुर रायगढ़ इप्टा अन्वेषण थियेटर ग्रुप सागर अभिनव रगमण्डल उज्जैन आदि रगसस्थाएँ अपने रगकर्मियो के प्रदर्शन स्तर और समझ को बढाने के लिये विभिन्न आधारभूत तकनीकी सैद्धातिक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर रही है

पिछले दशक से प्रदेश मे बच्चो के रगकर्म पर भी अनेक रगसस्थाएँ ध्यान दे रही है बच्चो मे रगकर्म की असीम सम्भावनाओ को देखते हुये शालाओ महाविद्यालयों के सास्कृतिक कार्यक्रमो के गिरते स्तर एव उन पर पडने वाले फिल्मी प्रभाव को देखते हुये अनेक रगसस्थाओ ने बाल नाट्य प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया, बाल नाट्योत्सव भी आयोजित किये या सिर्फ नाटक ही तैयार करवाये इनमें सर्वप्रमुख है होशगाबाद की सस्था 'एकलव्य जो बच्चो मे स्वस्थ कला सस्कार विकसित करने के लिये समर्पित है और लगातार बाल नाट्यो और कार्यशालाओ पर काम करती है इसके अलावा रगविदूषक, भोपाल विवेचना इप्टा, जबलपुर रायगढ़ इप्टा, कोरबा इप्टा अम्बिकापुर इप्टा, भिलाई इप्टा कठपुतली, भिलाई टोली भोपाल, नटबुदेले, भोपाल ने भी बच्चो की कार्यशालाएँ आयोजित की जिन्हे बसी कौल हबीब तनवीर, अरुण पाडे कमलेश श्रीवास्तव ज्योति दीवान विभष उपाध्याय राजकमल नायक अलखनदन रेखा वर्मा विभा मिश्रा अजना पुरी सजय उपाध्याय सुमनकुमार आदि ने बखूबी सचालित किया इनमे रगविदूषक भोपाल द्वारा विकलाग बच्चो के लिए और रायगढ़ इप्टा द्वारा अनाथ बच्चों के लिए आयोजित शिविर उल्लेखनीय है

नवे दशक मे दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों की भरमार और वीडियो के तेजी से पैर फैलाने के कारण रगकर्म के क्षेत्र मे हडकम्प मचा यह हडकम्प दो प्रकार का था पहला, प्रतिभावान रगकर्मियो का दूरदर्शन की ओर भागना, खासकर भोपाल दूरदर्शन के आरम्भ होने के बाद प्रदेश की रगप्रतिभाओ मे वहाँ जाने की प्रतियोगिता चली, जिससे कई रगसस्थाएँ टूटने लगी वही दूसरी ओर घर बैठे मनोरजन के इन नये साधनो की उपलब्धि के कारण नाटक के दर्शको का प्रेक्षागार मे आना कम होने लगा नुक्कड नाटको मे नारेबाजी सपाटबयानी, राजनैतिक विषयों की एकरसता के कारण और अनेक शासकीय प्रचार प्रसार के कार्यक्रमो मे नुक्कड नाटक की शैली का उपयोग किये जाने के कारण उनका प्रभाव कम हो गया साथ ही नये और प्रासगिक नाट्य लेखो की कमी ने भी पूरे प्रदेश मे नुक्कड नाटक आदोलन को शिथिल कर दिया रगमडल के भव्य सेट्स और पूरे तामझाम के साथ किये जाने वाले मचनो के कारण मचीय नाटको मे कलात्मक और प्रयोगधर्मिता का आगह बढने लगा देश की विभिन्न रगसस्थाओ द्वारा प्रदेश के कई स्थानो पर नाट्य प्रदर्शनो के कारण एक नई रगचेतना पनपने लगी मीडिया के ग्लैमर के बढते प्रभाव के कारण रगकर्म को बेहतर बनाने

के लिये, नई दिशा देने के लिये विभिन्न शैलियों का और भी तेजी से विकास होने लगा बसी कौल ने जीवन में हास्य के महत्व को रेखाकित करने एव उसे फूहड हास्य से अलग करते हुए विदूषक शैली को अपनाकर अनेक गम्भीर प्रयोग किये हबीब तनवीर ने छत्तीगढ लोक शैली की सहजता, सरलता के साथ पैनी समझ को लेकर रगकर्म मे एक नये आयाम की रचना की. अलखनदन ने अनेक शैलियों को समयानुसार एव आवश्यकतानुसार अपनाकर परिपक्व रगकर्म के प्रति प्रदेश के छोटे-बडे कस्बों शहरों में जागरूकता पैदा की अरुणा पाडे, आलोक चटर्जी, सतीश मेहता, अशोक बुलानी, जयन्त देशमुख, राजकमल नायक, मिर्जा मसूद, विभष उपाध्याय आदि ने विभिन्न रगसस्थाओं में अपने निर्देशन के माध्यम से स्थानीय रगकर्मियों को प्रशिक्षित किया अपनी ही रंगसस्था में निर्देशन करने एव लगातार रंगसस्था को सक्रिय रखने में अनेक निर्देशकों के नाम उल्लेखनीय है रायपुर इप्टा के मिन्हाज असद, रायगढ इप्टा के अजय आठले, बिलासपुर इप्टा के अजय आठले, बिलासपुर इप्टा के मधुकर गोरख, भिलाई इप्टा के राजेश श्रीवास्तव, मणिमय मुखर्जी, पकज मिश्रा, विवेचना इप्टा जबलपुर के नवीन चौबे, वसत काशीकर, नरोत्तम बेन, स्टेट बैंक नाट्य मच रायपुर के प्रदीप पोद्दार, कौतुक रायपुर के कुजबिहारी शर्मा, रगसमूह भोपाल के अशोक बुलानी, टोली भोपाल की विभा मिश्रा कारवा भोपाल के नजीर कुरैशी, आवामी अभिनय मच, रायगढ के उमाशकर चौबे रीवा इप्टा के आशीष त्रिपाठी, रगविदूषक भोपाल के फरीद बज्मी, राजकुमार रायकवार, बिलासपुर के बद्रीसिह कटारिया आदि जैसे रग निर्देशको की सूची बहुत लम्बी है, जिन्होंने प्रदेश की विभिन्न स्थानों में स्थानीय रगकर्मियो को सगठित कर सस्था बनाये रखने से लेकर नाट्य मचन तक की जिम्मेदारी निभायी है और निभा रहे हैं

मध्य प्रदेश मे अनेक स्थानो पर रगकर्म पर केन्द्रित और रगकर्म को उभारने वाले अनेक आयोजन भी शासकीय और अशासकीय स्तर पर सम्पन्न होते हैं इन आयोजनों के माध्यम से प्रत्येक स्थान पर दर्शक वर्ग तैयार होता है, साथ ही रगकर्म के क्षेत्र में सम्पन्न होने वाले तमाम प्रकार के प्रयोग प्रस्तुत किये जाते है नाट्य दलो को भी अनेक स्थलों पर जाकर नाट्य प्रदर्शन का नया अनुभव प्राप्त होता है मध्य प्रदेश मे प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले रगकर्म सम्बन्धी कार्यक्रम एव आयोजक सस्थाएँ इस प्रकार है–मध्य प्रदेश कला परिषद् भोपाल विभिन्न राज्य स्तरीय एव राष्ट्रीय नाट्य समारोह आयोजित करती है, जिसमे चुनी हुई रगसस्थाओं के चुने हुये नाटको के अनेक स्थानों पर शृखलाबद्ध प्रदर्शन होते हैं मध्य प्रदेश शासन ने कुछ वर्षों तक प्रदेश के चुने हुये शहरो में 'उत्सव आयोजित किये थे, जिनमें शास्त्रीय नृत्य, सगीत एव कवि सम्मेलन के अलावा नाटक भी होते थे मध्य प्रदेश आदिवासी लोककला परिषद् विभिन्न अचलों के लोक नाट्यो पर केन्द्रित कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर करती है भिलाई स्टील प्लाट कि एसईसीएल बिलासपुर भी छत्तीसगढी लोकोत्सवा के आयोजन करती है जिसमे क्षेत्र की अनक ग्रामीण एव शहरी मण्डलियों के प्रदर्शन सम्पन्न होते हैं विवचना इप्ट जबलपुर और रायगढ इप्टा पिछले पाँच वर्षों से पाँच स छ दिवसीय राष्ट्रीय नाट्योत्सव आयोजित करती है इसके अलावा कोरबा इप्टा, बिलासपुर इप्टा, रायपुर इप्टा भी पिछले दो तीन वर्षों से नाट्योत्सव आयोजित करती है सरगुजा मे जिला प्रशासन की मदद से सरगुजा लोकोत्सव जिला प्रशासन की मदद से ही रायगढ मे चक्रधर ललित कला केन्द्र द्वारा नौ दिवसीय चक्रधर समारोह आयोजित करता है जिसमे चार-पाँच वर्षों से नाटक भी होते हैं भिलाई स्टील प्लाट द्वारा बहुभाषीय नाट्योत्सव महाराष्ट्र मडल रायपुर एवं प्रसिद्ध नाटककार शकर शेष की स्मृति मे बिलासपुर में नाट्य प्रतियोगिताए, कालिदास अकादमी उज्जैन द्वारा कालिदास के नाटकों पर केन्द्रित कालिदास समारोह, स्टेट बैंक नाट्य मच द्वारा अतर बैंक नाट्य प्रतियोगिताएँ सम्पन्न होती हैं नुक्कड़ नाटक एव लघु नाटक प्रतियोगिता भी बाराद्वार, बिलासपुर और अन्य स्थानों पर समय-समय पर आयोजित होती है. इन समारोहों के अलावा अनेक रग-सस्थाये स्वय या परस्पर सहयोग करते हुए विभिन्न स्थानों पर नाट्य प्रदर्शन करती हैं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली ने भी अपनी विद्यालयीन कार्यशालाओं और विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदेश में नई नाट्य चेतना लायी है. रायगढ मे जर्मन नाटककार बर्टोल्ट ब्रेख्त की जन्मशताब्दी के अवसर पर आयोजित ग्रीष्मकालीन कार्यशाला मे रा ना वि के विस्तार कार्यक्रम के अतर्गत सजय उपाध्याय को बतौर निर्देशक एव गौतम मजूमदार को बतौर कला निर्देशक भेजा गया था इसी प्रकार हाल ही मे भोपाल मे पूरे प्रदेश के रगकर्मियों के लिये पैंतालीस दिनों की कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें देश भर के नाट्य विशेषज्ञों ने आकर प्रशिक्षण दिया

विभिन्न शहरो कस्बों मे जो रगकर्म सीमित सकुचित स्तर पर हो रहा था, पिछले कुछ वर्षों में उसमे विस्तार आ रहा है रगसस्थाओ में आपसी आदान-प्रदान और इटरेक्शन, परस्पर नाट्य प्रदर्शन करवाना आदि गतिविधियों से प्रदेश का रगकर्म एकजुटता की ओर बढ रहा है मीडिया के तेज विकास के समकक्ष रगकर्म मे भी विकास की असीम सभावनाए पैदा हो गई है मचीय नाटकों और नुक्कड नाटको में लोकशैलियों और कलात्मकता का प्रवेश नए-नए विषयों पर प्रयोगो का प्रवेश इसकी सूचना दे रहा है वसी कौल जैसे वरिष्ठ रगनिर्देशक पूरे प्रदेश की रगसस्थाओं और रगकर्म की नेटवर्किंग करने की योजना बना रहे हैं ताकि सभी स्थानों की रगसस्थाओं और रगकर्मियों को समान अवसर मिल सके एक्सपोजर मिल सकें विभिन्न रगसस्थाएँ व्यावसायिक स्तर प्राप्त करने के लिये शासकीय अनुदान प्राप्त कर अपने रगमण्डल बनाएं

की ओर ध्यान दे रही है रगविदूषक भोपाल, नया थियेटर भोपाल अभिनव रगमण्डल उज्जैन विवेचना इप्टा जबलपुर इस दिशा मे सफलता हासिल कर चुके हैं रगकर्म को अपने व्यवसाय के रूप में चुनकर पूरी प्रतिबद्धता, समर्पण और गम्भीरता से काम करने की दिशा मे यह निश्चित ही सकारात्मक कदम है जनचेतना जाग्रत करने के लिये प्रचारात्मक और सपाट नाटक खेलने की बजाए मानवीय सवेदना को झकझोरने वाले कलात्मक नाटक वर्तमान युग की आवश्यकता बन रहे हैं

आज आवश्यकता है शासकीय प्रतिष्ठानों और अशासकीय रगसस्थाओं में आपसी सम्पर्क और सहयोग की, उदार और समर्पित रगकर्म के माध्यम से भारतीय सस्कृति के पारम्परिक और युगानुरूप आये परिवर्तनों को रेखाकित करने की, जिसके लिये पारम्परिक लोककलाओ को सुरक्षित, संरक्षित एव विकसित करने के लिये लोक-नाट्य अकादमी बनाई जा सकती है पिछडे इलाकों में नाट्य प्रशिक्षण सस्थान भी स्थापित किये जा सकते हैं प्रादेशिक सस्थाओं को इटरनेट से जोड़कर देश और विश्व थियेटर से जोडा जा सकता है प्रदेश से रंगकर्म पर केन्द्रित रगसवाद जैसी पत्रिकाएं प्रकाशित हों ताकि सूचनाओं का विनिमय भी पूरे प्रदेश में हो सके

समय-समय पर रंगकर्म से सम्बद्ध सामयिक और आधारभूत विषयों पर सगोष्ठियाँ, रगकर्म के लिये आवश्यक विभिन्न विशिष्टताओं पर सैद्धातिक और व्यावहारिक कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती है, जिससे रगकर्म में कलात्मक परिपूर्णता भी आयेगी नये नाट्य लेखो के प्रकाशन के लिये मध्य प्रदेश शासन की ओर से लेखको को प्रोत्साहन दिया जा सकता है ताकि तेजी से नये नाट्य लेख प्रदेश की सभी रगसस्थाओं को प्राप्त हो सके क्योकि जानी हो ये रहा है कि प्राय वर्ष भर सक्रिय रहने वाली रगसस्थाएँ अपने लेखकों से, सयुक्त लेखन से, अनुवाद या नाट्य रूपातर से नये नाट्य लेख तैयार कर उन पर नाटक खेलती हैं, परन्तु किसी स्क्रिप्ट बैंक के अभाव में ये नाट्य लेख अन्य रगसस्थाओं को प्राप्त नहीं हो पाते फलत उनका समुचित प्रचार-प्रसार और आदान-प्रदान नहीं हो पाता प्रदेश में भी आज अनेक नाट्य लेखक बहुत शानदार नाट्य लेख तैयार कर रहे हैं इनमें ना ग बोडस, राजेश जोशी, अरुण पाडे, सतीश दवे, अलखनदन, राजकमल नायक, अख्तर अली, घनश्याम सेंदरे आदि हैं

निष्कर्षत भारतीय रगमच पर पाश्चात्य रगमच के प्रभाव और भारतीय रगमच की विविध समस्याओ, मूल प्रवृत्तियो और मध्य प्रदेश के विविध शहरों में रगकर्म और रगमच को लेकर की जाने वाली गतिविधियों के अध्ययन के पश्चात मध्य प्रदेश मे रगकर्म और रगमच की प्रमुख प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है वे इस प्रकार हैं–

1. आधुनिक भारतीय रगमच की भाति ही मध्य प्रदेश का रगमच भी आग्ल रगमच को अपना आदर्श बनाये हुए है, जिसमें रगमच और प्रदेश की प्राचीन नाट्यकला आग्ल रगमच से प्रभावित है
2. प्रदेश के रगमच पर महिलाओ ने खुलकर भाग लेना प्रारम्भ कर दिया है
3. मध्य प्रदेश का रगमच न केवल मनोरजन और अभिनय का आयाम लिए हुए, अपितु विभिन्न विद्यालय एव महाविद्यालयों में अव्यावसायिक रगमच के साथ-साथ व्यवसायिक रगमचों का उदय भी मध्य प्रदेश के रगकर्म आन्दोलन की नवीन प्रवृत्ति है
4. मध्य प्रदेश के रगमच की नवीन प्रवृत्तियों में न केवल भारतीय नाटकों का मचन किया जाता है, अपितु शेक्सपीयर के साथ-साथ आग्ल नाटकों का मचन भी नूतन प्रवृत्ति है
5. मध्य प्रदेश के रगमच आन्दोलन की प्रमुख प्रवृत्तियों में एक प्रवृत्ति नाटकों के मचन में यथार्थता के स्थान पर अतिशयता और भावुकता है
6. प्रदेश के रगकर्मी और रगमच सस्कृत, पारसी और आग्ल रगमच के साथ-साथ स्पेनिश, फ्रेंच इत्यादि रगमचो के प्रभाव से भी प्रभावित है
7. मध्य प्रदेश का रगमच भारतीय रगमच और अन्य देशों के रगमच से अति प्रभावित होने के कारण अपनी स्वाभाविक गति से विकास नहीं कर सका.
8. विशेषत. मध्य प्रदेश का हिन्दी भाषी होना अन्य प्रदेशो यथा महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात, केरल और पश्चिमी बगाल के लिए रगमचीय दृष्टि से अभिशाप बना हुआ है
9. चलचित्रों अर्थात् भारतीय सिनेमा ने भारतीय रगमच की तरह मध्य प्रदेश के रगमच को भी क्षतिग्रस्त किया है क्योंकि इन चलचित्रों में नदियाँ, समुद, चाँद-सूरज के साथ-साथ कई लौकिक दृश्य बताये जाते है, जिससे दर्शक अधिक प्रभावित होते हैं मध्य प्रदेश का रगकर्म आन्दोलन रग दीपन रग सज्जा प्रकाश व्यवस्था आदि दृष्टि से पाश्चात्य रग मच से पूर्णतया प्रभावित है, जिसमे विद्युत् सज्जा के साथ-साथ लाउडस्पीकर का उपयोग भी किया जाता है
10. पाश्चात्य और भारतीय रगमच की भाति ही मध्य प्रदेश के रगकर्मियों द्वारा रगमच पर यथार्थता, स्वाभाविकता पूर्ण दृश्य जिनमें हत्या, श्मशान घाट आदि का दृश्य दिखाये जाने लगे
11. विगत कुछ दिनो से पक्षियों के कलरव आधी रात के दृश्यो के साथ-साथ शेर और हाथी के आवाज के दृश्य भी प्रदेश के रगमच की नूतन प्रशस्तियाँ हैं

12. ए पे रिकॉर्ड के साथ-साथ नवीन रगीन बिजली बल्बों के साथ कैमरे का प्रयोग प्रदेश के रगमच की प्रमुख प्रवृत्ति है
13. मध्य प्रदेश के रगमच के 'कविता मचन एक नवीन आयाम है
14. मध्य प्रदेश के रगकर्मी जनमानस और समाज की विशिष्ट समस्याओं जिनमे जनसख्या वृद्धि, दहेज, अस्पृश्यता के साथ-साथ सडक के गड्ढे और साफ-सफाई व्यवस्था को लेकर नुक्कड नाटको का गलियों, सडको और चौराहो पर मचन कर रहे हैं, जो न केवल लोकप्रिय हो रहे हैं बल्कि व्यवस्था को सुधारने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं
15. विद्यालयो मे बालकों द्वारा बाल रग मच प्रदेश के शासकीय और अशासकीय विद्यालयो की नूतन प्रवृत्ति है
16. भारतीय सिनेमा, टेलीविजन के साथ-साथ वीडियो सस्कृति ने देश और प्रदेश दोनो ही स्थान पर भारतीय रगमच आन्दोलन को धक्का पहुँचाया है वस्तुत शहरी और ग्रामीण जीवन मे रगमच आन्दोलन के प्रति उत्साह का अभाव एक प्रमुख प्रवृत्ति कही जा सकती है
17. प्रदेश में हिन्दी के साथ-साथ मराठी रगमच भी कार्यरत् है, लेकिन दोनो ही रगमंच के विकास की गति धीमी है
18. प्रदेश के रगकर्मी रगमच से इतर टी वी कलाकार और सिनेमा की ओर उन्मुख हुए है फलस्वरूप प्रदेश मे रगमच आदोलन आज अपनी यथास्थिति बनाये हुए है

मध्य प्रदेश के प्रमुख रंगकर्मी

हबीब तनवीर–हबीब तनवीर का जन्म 1 सितम्बर, 1923 को रायपुर 'छत्तीसगढ' में हुआ आपके पिता का नाम श्री हाफिज मुहम्मद हयात खान था. तनवीर ने नागपुर विश्वविद्यालय से बी ए की डिग्री प्राप्त की थियेटर ट्रेनिंग, रायल अकादमी ऑफ ड्रेमेटिक आर्टस् लन्दन, ब्रिस्ट ओल्ड विक थियेटर, स्कूल ब्रिस्टल, ब्रिटिश ड्रामा लीग लन्दन से आपने अभिनय का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया 1945 में आप आकाशवाणी बम्बई के प्रोड्यूसर रहे 1946 मे सहायक सम्पादक फिल्म इण्डिया बम्बई तथा 1946 से 1953 तक अभिनय, गीत-सवाद लेखन, विज्ञापन लघुवृत्त चित्र निर्माण में व्यस्त रहे 1948 से 1953 तक आपने इप्टा, बम्बई के सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य किया श्री हबीब तनवीर ने 1954 में दिल्ली मे हिन्दुस्तानी थियेटर की स्थापना की साथ ही 1959 मे आप नया थियेटर, दिल्ली के सस्थापक रहे 1964 में प्रोड्यूसर दूरदर्शन केन्द दिल्ली रहे तत्पश्चात् 1964 से 1970 तक पत्रकारिता और समीक्षा कार्य में सलग्न रहे आपको नाट्य के लिये 1969 में सगीत नाटक अकाडमी का पुरस्कार प्रदत्त किया गया तथा 1975 मे शिखर सम्मान से सम्मानित किए गए आपने 1972 से 1978 तक राज्य सभा में मनोनीत सदस्य के रूप मे प्रतिनिधित्व भी किया है

श्री हबीब तनवीर को 1979 से 1981 तक जवाहर लाल नेहरू फेलोशिप भी मिल चुकी है 1982 में आपको अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव में फ्रिज फर्स्ट एवार्ड एडिनबरा दिया गया था तथा 1982 मे ही भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से विभूषित किया गया वर्ष 1983 मे आपको इदिरा कला सगीत विश्वविद्यालय द्वारा डी लिट की मानद उपाधि से नवाजा गया 1981 से 1984 तक आप प सुदरलाल शर्मा पीठ, रविशकर विश्वविद्यालय रायपुर के अतिथि व्याख्याता रहे वर्ष 1990 में श्री हबीब तनवीर को कालिदास सम्मान से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 1993 मे रवीन्द्र भारती यूनिवर्सिटी, कोलकाता द्वारा डी लिट् की मानद उपाधि प्रदान की गई श्री हबीब तनवीर ने तीस से अधिक लोकप्रिय नाटकों का निर्देशन किया है जिनमें आगरा बाजार, चरनदास चोर, कामदेव का सपना वसत ऋतु का सपना, बहादुर कलारिन, देख रहे हैं नैन, शाजापुर की शांतिबाई, लाला सोहरत राय, मुद्राराक्षस आदि शामिल है

ब. व. कारन्त–श्री बावकोडी व्यकटरमन कारन्त का जन्म 1924 मे मची गाँव जिला दक्षिण कनारा, कर्नाटक मे हुआ आपके पिता का नाम श्री बी नारायण अय्यप्पा तथा पत्नी का नाम श्रीमती प्रेमा था आपने नाट्य कला मे एम ए किया एव सगीत मे वे डिप्लोमाधारी थे बचपन से ही कर्नाटक के सबसे पुराने रग सस्थान गुब्बी नाट्य कम्पनी के लगभग पचास नाट्य-प्रदर्शनों में आपकी शिरकत महत्वपूर्ण रही आपने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से रगकर्म मे डिप्लोमा प्राप्त किया श्री कारन्त को प ओकारनाथ ठाकुर के निर्देशन में सगीत का विशेष प्रशिक्षण मिला वे लगभग दो सौ नाटकों का कन्नड हिन्दी, पजाबी और गुजराती में निर्देशन कर चुके हैं साथ ही सस्कृत और कन्नड से हिन्दी में नाट्यानुवाद भी आपके द्वारा किया गया

श्री कारन्त ने जर्मनी, हगरी, यूगोस्लाविया, बुल्गारिया पौलेण्ड, चैक गणराज्य, स्लोवानिया, अमरीका तथा सोवियत सघ और इगलैण्ड की सास्कृतिक यात्राएँ की हैं आपको गिरीश कर्नाड के साथ वशवृक्ष पुरस्कार भी मिला है कला व सगीत निर्देशन के लिए आपकी फिल्म काडू को राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुना गया था फिल्म में श्रेष्ठ सगीत निर्देशन के लिए भी आप पुरस्कृत किये गये, जबकि श्रेष्ठ निर्देशन के लिए फिल्म चोमनदुडी को राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था आपको चैक गणराज्य (स्लोवानिया) फिल्म समारोह मे क्रिटिक अवार्ड भी प्रदान किया गया आप भारत सरकार द्वारा पद्मश्री उपाधि से सम्मानित किये

वर्ष 1977 से 1981 तक आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली के निदेशक तथा भारत भवन के न्यासी सदस्य और रगमडल के निदेशक रहे श्रीकारत मैसूर स्थित 'रगायन' के सस्थापक निदेशक भी थे 1 सितम्बर, 2002 को बगलौर में श्री कारन्त का निधन हो गया मध्य प्रदेश मे रगकर्म के उन्नयन में कर्नाटक के इस रगकर्मी के योगदान को यहाँ के नाटककार कभी भुला नहीं पाएँगे

प्रभात भट्टाचार्य—श्री प्रभात भट्टाचार्य का जन्म 6 दिसम्बर, 1932 को इलाहाबाद में हुआ श्री प्रभात कुमार भट्टाचार्य जाने-माने रगकर्मी और प्रयोगधर्मी नाटककार हैं युवावस्था से ही आपको रगजगत् के क्षेत्र के जाने-माने रगकर्मियों के साथ काम करने का अवसर मिला आपने समय-समय पर सस्कृत, हिन्दी सहित कई विदेशी भाषाओं के नाटकों का निर्देशन किया है 'काठमहल' आपका पहला निर्देशित नाटक था नाट्य विश्लेषण की आपकी दो कृतियाँ प्रकाशनाधीन हैं गाधी दर्शन पर एक शोध ग्रथ का लेखन भी आपने किया है आप कालिदास अकादमी के निदेशक रहे है तथा मध्य प्रदेश नाटक लोक कला अकादमी, उज्जैन के सस्थापक व निदेशक है

अलखनन्दन—अलखनन्दन का जन्म 1948 में हुआ आपने हिन्दी साहित्य में एम ए किया तथा 1973 से रगकर्म से जुडे 50 से अधिक नाटकों का निर्देशन करने वाले श्री अलखनन्दन मध्य प्रदश के अनेक शहरों में रग शिविरों का सचालन तथा निर्देशन कर चुके हैं अलखनन्दन नाटक कार, अभिनेता नाट्य सगठक और कवि के रूप में ख्यातनाम रह महानिर्वाण, गोडाला देखत हन 'सेम्युअल बेकेट' के नाटक प्रवेटिग फॉर गोडो' की छत्तीसगढी बोली मे प्रस्तुति मगध 'श्रीकात वर्मा की कविताओं पर आधारित' चन्दा बेडनी 'बुन्देली , अधेरे में 'मुक्तिबोध' की लम्बी कविता अधेरे में' पर आधारित, आगरा बाजार, भये प्रकट कृपाला दीन दयाला, आधे-अधूरे, बाँझ घाटी, दौरा लाट साहब का सत्याग्रह मोटेराम का, जगर-मगर अन्धेर नगर, बकरी रसगन्धर्व, जज आदि नाटकों का निर्देशन आपके द्वारा किया गया है

विभा मिश्र—1958 में लखनऊ मे जन्मी विभा मिश्र लगभग डढ दशक से रगमच में सक्रिय हैं उन्होंने 1982 में राष्ट्रीय नाटय विद्यालय दिल्ली से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है और पिछले 9 वर्षों से वे भरत भवन के रगमण्डल में वरिष्ठ अभिनेत्री की हैसियत से काम कर रही हैं अभिनय और नाटय निर्देशन के अलावा उन्होने बाल रगमच के लिए भी काम किया है और देश के अनेक नगरों में बच्चों के साथ नाटक प्रस्तुत किये हैं उन्होने 'बकरा' कैम्प आधे-अधूरे', 'खामोश अदालत जारी है' 'यरमा', और किंग्जीस कदर का कुनबाद्ध आदि अनेक नाटकों के साथ-साथ सआदत हसन मण्टो, भगवती चरण वर्मा, प्रेमचन्द और अज्ञेय की कहानियों की रग प्रस्तुतियों का निर्देशन किया है भारत और भारत से बाहर के ख्यातनाम निर्देशकों के निर्देशन में विभा मिश्र ने 40 से अधिक नाटकों में अभिनय किया है वे 'कहानी का रगमच, सम्भावनाएँ और सीमाएँ' विषय पर शोध कार्य कर रही हैं

बाबा डिके—बाबा डिके का जन्म 7 जून, 1919 को नीमच में हुआ उन्होंने इन्दौर और बम्बई में शिक्षा प्राप्त कर 1942 के भारत छोडो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया सिर्फ ग्यारह वर्ष की आयु में ही रगकर्म से जुडे बाबा डिके का 'अकाण्ड ताण्डव' से नाट्य लेखन प्रारम्भ हुआ आपने लगभग 75 नाटकों के 2000 से अधिक प्रदर्शन किये हैं बाबा डिके द्वारा 1955 मे नाट्य भारती सस्था की स्थापना भी की गई इस सस्था के अन्तर्गत लिटिल थियेटर का गठन भी किया गया यहाँ से लगभग सौ प्रशिक्षणार्थी रगकर्म का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं

बंसी कौल—बसी कौल का जन्म 23 अगस्त, 1949 को हुआ उन्होंने 1973 में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से स्नातक किया आपको स्टेज क्राफ्ट में विशेषज्ञता हासिल है बसी कौल नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा मे एक्सटेन्शन प्रोग्राम के प्रोफेसर रहे हैं श्री राम सेन्टर फॉर आर्ट एण्ड कल्चर, नई दिल्ली में आपने कला निदेशक के रूप में काम किया है आप सगीत, नाटक अकादमी नई दिल्ली की प्रबध परिषद् और नेशनल स्कूल, ड्रामा की कार्यकारिणी के सदस्य भी रह चुके हैं साठ से अधिक नाटकों का निर्देशन करने वाले श्री कौल नाटकों की प्रस्तुतियों और मच सज्जा का विन्यास भी स्वय करते हैं तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, पजाब और नई दिल्ली और उत्तर प्रदेश में आपके द्वारा बच्चों के रग शिविर तथा उत्तर प्रदेश में लोक नृत्य और लोक नाट्य पर शिविर भी आयोजित किये गये हैं श्री कौल ने अनेक प्रदर्शनियों में व्यावसायिक मण्डपो की चित्र सज्जा की है 1969-70 में अनेक आधुनिक चित्रों की एकल प्रदर्शनियाँ आपके द्वारा लगाई गई हैं कन्नड की पुरस्कृत फिल्म 'चोमन दुडी' के कला निर्देशक श्री बसी कौल ही थे आप बच्चों की फिल्मों और अन्य वृत्तचित्रों में श्री व व कारत के साथ सहायक निर्देशक के रूप में काम कर चुके हैं

आलोक चटर्जी—आलोक चटर्जी का जन्म 1961 में मध्य प्रदेश में हुआ आपने रगकर्म मे स्नातक उपाधि प्राप्त की है स्वय रगकर्मी होने के साथ-साथ आपने रग निर्देशन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है आलोक चटर्जी ने एक दर्जन से अधिक नाटकों का निर्देशन किया है जिनमें 'इडीपस , 'सगीना मेहतो , 'रामलीला', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'सैयाँ भये कोतवाल', एण्टीगनी', 'जुलूस, 'आमदनी की जगह , 'बगिया बाछाराम की', 'चोर के घर मोर', आदि नाटक शामिल हैं आलोक चटर्जी को देश और विदेश के अनेक प्रख्यात रगकर्मियों द्वारा निर्देशित नाटको मे अभिनेता की हैसियत से कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ और उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार भी प्राप्त

हुआ है वे लगभग चार वर्ष भारत भवन के रगमण्डल के वरिष्ठ अभिनेता रह चुके हैं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा श्री आलोक चटर्जी को अभिनय और रंगकर्म मे उल्लेखनीय योगदान के फलस्वरूप स्वर्ण पदक प्रदान किया गया है.

सत्यदेव दुबे–सत्यदेव दुबे का जन्म 12 मार्च, 1936 को बिलासपुर 'छत्तीसगढ' में हुआ. आपने थियेटर यूनिट ऑफ ड्रामेटिक आर्टस्, बम्बई से रग शिक्षण प्राप्त किया है उन्होंने लगभग चालीस वर्षों की अवधि में हिन्दी, अग्रेजी, मराठी और गुजराती भाषाओ में लगभग 80 नाटको को निर्देशित किया और उनकी अनेक प्रस्तुतियाँ देश के विभिन्न कला मचों पर प्रदर्शित की गई है

उनकी पहली बडी रगमचीय प्रस्तुति 'अधायुग' '1962' हिन्दी रगमच की एक असाधारणा घटना और महत्वपूर्ण मंचीय उपलब्धि है उन्होने दो एकाकियो '1960' और चार नाटकों 'सम्भोग से सन्यास तक, 1976, अप्रत्याशित, 1977, आडा चौताल, 1982, इशाअल्लाह, 1975 की रचना की है तथा सात विदेशी नाटकों के अनुवाद भी किए हैं उनके द्वारा निर्देशित नाटको में अन्धायुग, हयवदन, आधे अधूरे, सखाराम वाइन्डर, एव इन्द्रजीत, प्रतिबिम्ब विरासत आदि ने समकालीन रग-जगत् में कलात्मक श्रेष्ठता के प्रतिमान बनाए हैं. उन्होंने श्याम बेनेगल और गोविन्द निहलानी द्वारा निर्देशित 'अकुर', 'निशान्त', 'भूमिका', 'जुनून', 'कलयुग', 'आक्रोश' और 'मण्डी' फिल्मों मे पटकथा और संवाद लेखन का कार्य किया है

कमल वशिष्ठ–कमल वशिष्ठ का जन्म 27 सितम्बर, 1938 को हुआ आप लगभग 25 वर्षों से नाट्य मचन से सम्बद्ध हैं श्री वशिष्ठ ने लगभग 60 नाटकों की मच सज्जा, ध्वनि प्रकाश व्यवस्था, वेशभूषा एव कोर्डियोग्राफी का कार्यभार सँभाला है उन्होंने 29 नाटको का निर्देशन किया है तथा 2 मराठी नाटकों का हिन्दी अनुवाद भी किया है आपके चर्चित प्रदर्शनो मे पगला घोडा, दुलारी बाई, बकरी, सखाराम वाइण्डर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं

नरहरि पटेल–नरहरि पटल का जन्म 2 जनवरी 1934 को रतलाम जिले के सैलाना मे हुआ श्री नरहरि पटेल इन्दौर के 'जन नाट्य सघ' और 'यवनिका' के माध्यम से विगत 40 वर्षों से लोक मच पर जन गायक के रूप में उपस्थित हो रहे हैं आपने अपने सम्पूर्ण जीवन को वक्ता, कवि, गायक और रगकर्म को समर्पित कर रखा है

विभु कुमार–विभु कुमार का जन्म 13 मार्च, 1942 को सागर मे हुआ. आपने रग लेखन एव निर्देशन के क्षेत्र में सक्रिय योगदान दिया है इनके प्रमुख मचन मे 'तालो में बद प्रजातन्त्र', 'मिखमगे मुखौटे', 'हत्या एक आकार की' 'अभिमन्यु सडक पर' और 'बाकी इतिहास आदि है

शरद शर्मा–शरद शर्मा का जन्म 17 जनवरी, 1956 को विदिशा में हुआ आपने बी ए, एल एल बी तक शिक्षा प्राप्त की. 1977 से रगकर्म से सक्रिय रूप से जुड़े शरद शर्मा अभी तक 40 से अधिक नाटकों में अभिनय 50 नाटको मे नेपथ्य कार्य और सगीत, चित्रकला साहित्य एव रगमच के 125 से अधिक कार्यक्रमों का सयोजन कर चुके है आपने मुख्य रूप से कर्ण, दुर्योधन, रावण, अग्निमित्र ग्लॉड और बिकाशा राय की भूमिकाएँ निभायी हैं आपके द्वारा निर्देशित नाटकों में डेढ इच ऊपर देशद्रोही, अप्रासगिक, थैंक्यू मि ग्लॉड, कोर्ट मार्शल, कन्हैया समझ गया, बच्चों का सपना आदि प्रमुख हैं

शरद शर्मा ने अपनी कर्मस्थली उज्जैन में जनवरी 1982 में अभिनव रगमण्डल का गठन किया आपके नेतृत्व में करीब 60 नाटकों के 800 से अधिक प्रदर्शन कर चुकी इस सस्था ने 21 नाट्य समारोह का आयोजन भी किया है रंगकर्म में योगदान के लिए वर्ष 1993 में हिन्दुस्तानी आन्दोलन द्वारा आपको सम्मानित किया गया आपका सम्मान करने वाली अन्य प्रमुख सस्थाएँ इस प्रकार हैं– राजस्थान सगीत नाटक अकादमी द्वारा सम्मानित सस्कृति परिषद्, हरदा द्वारा स्वर्ण पदक, रग प्रसग फेस्टीवल में दक्षिण मध्य सास्कृतिक केन्द्र, नागपुर द्वारा सम्मानित लियो क्लब, उज्जैन द्वारा टॉपटेन पर्सनॉलिटीज में सम्मानित सम्प्रति आप अभिनव रगमण्डल के अध्यक्ष है और प्रदेश में रगकर्म के उन्नयन हेतु कर्मशील हैं

महाराष्ट्र के स्वांग से अधिक मिलता है प्रभाव कहीं से भी ग्रहण किया हो कोरकुओ ने, परन्तु इस समय खम्ब स्वांग उनका अपना मौलिक रंगकर्म बन गया है खम्ब स्वांग एकमात्र पारम्परिक शुद्ध मनोरंजन का साधन है. मनोरंजन पर चोट भी करता है खम्ब स्वांग ने यह तासीर अपने आसपास के लोक नाट्यो से ग्रहण की है, इसमें कोई शक नहीं है

खम्ब स्वांग का सीधा अर्थ है खम्बे के आसपास किया जाने वाला प्रहसन खम्ब यानी मेघनाथ खम्ब प्रत्येक कोरकू गाव के बीच मे एक मेघनाथ खम्ब होता है जहाँ मेघनाथ खम्ब नहीं होता वहा अस्थाई खम्ब गाडकर मेघनाथ की स्थापना की जाती है क्वार माह मे नवरात्रि से दीपावली के बाद देव प्रबोधिनी को इस खम्ब के आसपास कोरकू प्रति रात्रि मे नए-नए स्वांग खेलते हैं कहते हैं, एक बार रावण पुत्र मेघनाथ ने कोरकुओं को बचाया था तब से मेघनाथ की स्मृति-पूजा का चलन हुआ

खम्ब स्वांग अनुष्ठान से शुरू होते हैं और अनुष्ठान पर समाप्त होते हैं बीच मे हास्य, व्यंग्य और नाटकीय व्यापार होता है गाँव के चौक के बीचो-बीच एक खम्ब गाडकर उस पर रस्सियों के सहारे कपड़े या चन्दोवा बाँधकर तैयार कर लिया जाता है यह कार्य दोपहर मे होता है गाँव की मडलियो के अलावा बाहर की स्वांग मडलियाँ भी हिस्सा लेती हैं बाहर की मडलियो का खर्च पूरा गाँव उठाता है

रात्रि लगभग साढे नौ बजे खेल शुरू होता है दर्शक खम्बे के चारों ओर बैठते है स्वांग मंडली का प्रवेश होता है सर्वप्रथम गणपति-वन्दना की जाती है इसी बीच दो युवक हाथ का स्वांग लेकर खम्ब मे प्रवेश करते हैं यही गणपति हैं पूजा होती है

खम्ब स्वांग के मुख्य वाद्य झाझ और मृदंग होते हैं गणपति पूजा के बाद गायक और वादक खम्बे के चक्कर लगाते हुए गवलन गाते है स्त्री-वेशधारी पुरुष नर्तक विभिन्न मुद्राओ के साथ नाचता है दो-चार नृत्य-गीतों के बाद मूल स्वांग का प्रवेश होता है

कोरकुओ के स्वांग लोक कथाओं पर आधारित होते है खम्ब स्वांग के केन्द्र मे विदूषक होता है विदूषक विचित्र वेशभूषा, अटपटे हाव-भावों और उक्तियों से दर्शको को लोट पोट कर देता है, साथ ही चुटीली बातो से तिलमिला भी देता है

एक आदमी पूर्व पत्नी की अनुमति के बिना सन्तान-प्राप्ति के लिये विवाह कर लेता है दोनों पत्नियाँ एक ही घर मे रहती हैं सुबह होते ही दोनो पत्नियाँ मुँह-हाथ धोने के लिये अलग-अलग लोटे मे पानी देती हैं अलग-अलग थाली परोसकर भोजन करने के लिए मजबूर करती हैं ऐसी कई दोहरी मारों का पति को दिन मे सामना करना पड़ता है आखिर मे एक दिन पति घर छोड़कर भाग जाता है "दो पाटन के बीच सबूत बचा ना कोई" वाली कहावत नाट्य में सजीव ढग से पिरोई जाती है कि दर्शकों को यह एहसास हो जाता है कि दो स्त्रियो से आदमी का जीवन नर्क बन जाता है इस तरह जीवन के कई छोटे-छोटे प्रसगों को लेकर स्वांग का ताना-बाना बुनने मे कोरकू कलाकारो का कोई सानी नहीं है

खम्ब स्वांग मे देहाती प्रतीको को लेकर आदिवासी कोरकू अपने बीच की मानवीय कमजोरियों को स्वांग के माध्यम से उजागर करने मे आदिम ऊर्जा का सार्थक प्रयास करते हैं खम्ब स्वांग के पात्र सजीव और ठेठ धरती के किसी-न-किसी तबके के होते हैं इसलिये दर्शक से उनका तादात्म्य सहज रूप से हो जाता है उलटा कपड़ा पहनकर कोई भी आदमी विदूषक हो जाता है कमीज के नीचे कपड़े या तकिया ठूसकर सेठ की भूमिका में कोई भी कलाकार दर्शको को यथार्थ का बोध करा देता है काजल खड़िया-मिट्टी, चन्दन, मुरदार सिंगी घिसकर चेहरे पर कोई भी मेकअप किया जा सकता है सन के लटों के बाल और मूँछें लगाकर वृद्धत्व प्राप्त किया जा सकता है यह उनकी ग्रामीण और आदिम कल्पनाशीलता पर निर्भर करता है कि खुले मंच पर कहाँ किस प्रकार का कास्ट्यूम प्रस्तुत लाना है. मशाल, पैट्रोमेक्स या बिजली से कोरकुओं को कोई एतराज नहीं होता, जहाँ जिस प्रकार का साधन उपलब्ध हो उसका बखूबी उपयोग करना स्वांग के कर्ता-धर्ता अच्छी तरह से जानते हैं, उन्हें मूल चिन्ता अपनी प्रस्तुति की होती है

खम्ब स्वांग रात-भर चलते है समाप्ति पर नारियल और गुड़ का प्रसाद दर्शकों को वितरित किया जाता है दूसरी शाम तक स्वांग का खेल विश्राम ले लेता है

बुन्देली लोक नाट्य-स्वांग

बुन्देलखण्ड जनपद में प्रचलित लोक नाट्यों में स्वांग सर्वाधिक प्रचलित एव जनप्रिय रूप है, जो प्राय अचल के हर गाँव-कस्बे में समूह नृत्य के रूप में फसल कटने के समय अथवा शादी-ब्याह और जन्मोत्सवो पर प्रदर्शित होता है यूँ तो स्वांग लोक नाट्य का उल्लेख 9वी शताब्दी से प्राप्त होने लगता है, क्योंकि नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के सिद्ध कवि कण्हपा के काव्य में एक स्थान पर स्वांग का उल्लेख प्राप्त होता है इससे सिद्ध होता है नाट्य रूप नौटकी आदि नाट्य रूपों से अधिक प्राचीन हैं

लोक नाट्य गेय और अभिनय दोनो हैं स्वांग शब्द नकल या विशिष्ट प्रदर्शन के रूप मे जन समाज में प्रचलित है मध्ययुगीन समाज में तो राई और स्वांग दोनों को विशेष महत्व मिला है राई तो शृंगारिक गीतों से सजती है पर स्वांग सदैव युग सापेक्ष होता है लोक जीवन को सरस रखने के उद्देश्य से हास्य का आयोजन स्वांग के माध्यम से होता है स्वांगिये विशिष्ट प्रतिभा के व्यक्ति होते

नाट मे काम करने वाले सभी रगकर्मी पुरुष होते हैं सूत्रधार के माध्यम से नाट की शुरूआत होती है नाट की वेशभूषा अत्यत भाव्य एवं कीमती होती है साटिन मखमल या रेशे के चमकदार रंगीन वस्त्रों पर काच के रग-बिरगे मोतियो एवं रगीन रेशमी धागो के कसीदे से सभी परिधान तैयार किये जाते है गणेश, जामवत हनुमान, ताड़का, नरसिह, बाली, सुग्रीव आदि पात्रो हेतु मुखौटे प्रयोग में लाये जाते है

बस्तर में नाट की वर्तमान स्थिति एक पूर्ण विकसित नाट्य विधा के रूप मे है

अखाड़ा

बुन्देलखण्ड मे व्यायाम, शारीरिक करतब, शौर्य प्रदर्शन और देहशक्तिमूलक कार्य व्यापार अखाड़ो से सम्बद्ध हैं, बाद में इसमें शस्त्र कौशल की परम्परा भी जुड गयी है विजयादशमी पर शस्त्र पूजा एक स्वीकृत परम्परा है यह युद्ध-कौशल और शस्त्र-पूजन की क्षत्रिय परम्परा है, लेकिन अखाडों के रूप में सस्थाबद्ध होकर इस गतिविधि का वर्ण से कोई सम्बन्ध नहीं है लोक नृत्यो, नाट्यों आदि में जो अनेक कलारूप हैं उनमे बहुतेरे कलारूपों को देखकर यह स्पष्ट समझ में आता है कि उनमें जो देह-क्रियाएँ चपलता, गति और कौशल है उसके मूल मे शारीरिक कौशल की कला सक्रिय है कलारूप उन्होंने बहुत बाद में प्राप्त किया है जैसे वे अपनी प्रथम आदिम स्थिति मे मूलत शारीरिक गतिविधि रहे होगे इस स्वाभाविक मानव इच्छा को कुशलता के साथ कला का रूप दिया गया है इसी प्रकार युद्ध कौशल के लिये शस्त्र सचालन की योग्यता प्राप्त करना आवश्यक होता था, आज यद्यपि युद्ध का स्वरूप बदल गया है किन्तु परम्परागत शस्त्र सचालन की यह परम्परा एक लोक परम्परा के रूप में अखाडो से सम्बद्ध होकर अभी तक अबाधित रूप से सक्रिय है बुन्देलखण्ड मे शारीरिक करतब व्यायाम और शस्त्र सचालन की यह परम्परा अखाडों के रूप में सगठित है इसे देश प्रेम, शौर्य-वीरता के प्रेरक रूप मे लेना उचित है, इसे जीवन-चक्र के अन्तर्गत ही मानना चाहिये

माच

भारत की लोकधर्मी नाट्य परम्परा मे 'माच' एक महत्वपूर्ण रगरूप है मालवा का यह मुक्ताकाशी लोकमच लगभग दो सौ वर्षों से लोकानुरजन का सशक्त माध्यम रहा है छत्तीसगढ का नाचा और बुदेलखण्ड के राई-स्वाग के प्रदर्शन भी मध्य प्रदेश के लोक जीवन में आकर्षण के केन्द्र बिन्दु है, किन्तु ये मूलत लोकनृत्य प्रवृत्तियाँ हैं मच एव कथाभिनय के तत्व इनमें आनुषगिक है और ये प्रस्तुतियाँ अधिक से-अधिक हास्य-व्यग से परिपूर्ण लघु प्रहसन लगती हैं, इस परिप्रेक्ष्य में सम्पूर्ण नाटक के रूप में मालवा का माच ही मध्य प्रदेश का शीर्ष प्रतिनिधि लोकनाट्य है माच की उत्सभूमि उज्जयिनी 'उज्जैन' और मूल प्रसार क्षेत्र मालवा है लगभग दो सौ वर्ष पूर्व मालवी लोकजीवन मे मनोरजन की विभिन्न प्रवृत्तियाँ यथा कृष्ण चरित्र पर आधारित डाराडारी के खेलकूद का खूब प्रचलन था वर्षभर गम्मतो के आयोजन भी हुआ करते थे इन विविध लोकानुरजन प्रवृत्तियों से गीत-नृत्य, कथाभिनय सवाद और मच निर्माण आदि तत्वो को ग्रहण कर उज्जैन के प्रतिभा सम्पन्न गुरुओ ने लोक कलाकारों को जुटाकर रगमडलियाँ बनायीं और एक नये रग आदोलन की शुरूआत की माच सस्कृत के तत्सम शब्द मंच का तद्भव रूप ही नहीं बल्कि उस लोकमचीय रग प्रदर्शनी शैली के लिए एक रूढ शब्द बन गया जो अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध मे और उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध मे उज्जैन मे पनपी यह रग आंदोलन प्रतिस्पर्धी वातावरण में विकसित हुआ और बहुत शीघ्र उज्जैन के अतिरिक्त इदौर, धार, रतलाम, मदसौर शाजापुर और देवास जिलो को मुख्य रूप से अपनी प्रदर्शन गतिविधियो का केन्द्र बना लिया उज्जैन शहर मे पनपी इस लोकरग शैली ने ग्रामीण जनमानस को भी उतनी ही गहराई से प्रभावित किया जितना शहरी जनजीवन को 'माच' की परम्परा में प्रमुख गुरुओं मे गुरु गोपाल जी (सवत् 1830-1899), गुरु बालमुकन्द जी (सवत् 1865-1932) गुरु रामकिशन जी (सवत् 1890-1946), गुरु भैरवलाल जी (सवत 1899-1960), गुरु राधा किशन जी (सवत् 1907-1960), गुरु उस्ताद कालूराम जी (सवत् 1914-1984), गुरु फकीरचन्द जी (सवत् 1912-1960) आदि हैं नये माचकारों में प्रतिभा सम्पन्न और लोकप्रिय माचकार श्री सिद्धेश्वर सेन थे जिनका हाल ही में निधन हो गया

माच के रग स्वरूप पर विचार करते हुए सबसे पहले हमारा ध्यान मंच की ओर जाता है माच प्रदर्शन की निर्धारित तिथि से एक पखवाडा पूर्व माच का खम्ब गाडते हैं माच के गुरु अथवा मुखिया के हाथो खम्ब की पूजा-विधि सम्पन्न होती है, तदुपरात लकडी के मजबूत खम्बों पर चौडे तख्तो को ठोककर दस-बारह फीट ऊँचा पूर्व दिशोन्मुखी मच बनाया जाता है मच के चारो कोनो पर बल्लियाँ गाड़कर छत के रूप मे चदोबा (एक सफेद चादर) तानकर लगा देते हैं तीनो तरफ से मच खुला रहता है पृष्ठ भाग मे कहीं-कहीं एक पर्दा टाग दिया जाता है अन्यथा रगस्थली के पृष्ठ भाग मे "बारह घाट का पाट होता है" जिस पर मडली के विश्वासपात्र कार्यकर्ता मच की सुरक्षा और सहायता के लिये बैठते हैं इसके बाद 'टेक का पाट' होता है जिस पर नये-पुराने कलाकार टेक झेलने के लिए बैठते हैं मच पर कलाकार जब अपना बोल (गीति-कथन) प्रस्तुत करता है तो उपस्थित साथी कलाकार उसे दोहराते हैं इस पद्धति को 'टेक झेलना' कहते है इससे बोल प्रभावी बनते हैं मच के सामने तीन-चार बल्लियाँ लगायी जाती हैं जिन पर पुराने जमाने में मशाल बाधकर प्रकाश व्यवस्था की जाती थी त्रिशूलाकार मशालो

को प्रज्ज्वलित रखने का कार्य नाई द्वारा किया जाता था. इसके बाद मे गैस बत्तियों का प्रयोग शुरू हुआ आजकल बिजली की रग-बिरगी बत्तियाँ या मरकरी ट्यूब लगाकर आधुनिक प्रकाश व्यवस्था की जाती है. जहाँ बिजली नहीं है वहाँ ग्रामीण अचलो मे आज भी गैस बत्तियाँ अथवा मशाल क्रम मे लायी जाती हैं मच के एक कोने में सामान्यत बाएँ कोने मे साजिन्दे अर्थात् ढोलक, सारगी और हारमोनियम डटक बैठते है 'ढोलक' माच का महत्वपूर्ण वाद्य है गायक, कलाकारों के 'बोल' और नर्तक तथा टेक झेलने वालो की समूहिक स्वर-सगीत ढोलक की गत पर चलते हैं. जिस तरह नौटकी मे 'नगाड़ा' और कथकली मे 'चेण्डा' की आवाज खनगी पैदा करती है, उसी तरह माच मे ढोलक के 'थाप' और 'गत' रग प्रदर्शन में प्राण फूँक देती है माच मे ढोलक पर ठेका, थाप कहरवा, चाचर, दून, अद्दा जैसे खूब चलते हैं अन्य वाद्यों में सारगी, हारमोनियम जैसे प्रयोग में लाए जाते हैं कुछ मडलिया शहनाई और इलेक्ट्रोन का प्रयोग भी करने लगी हैं, किन्तु माच मूलत ढोलक-सारगी का खेल है

माच की शुरूआत रात्रि के प्रथम प्रहर से होती है शुरुआत के रूप में पहले भिश्ती का स्वाग भर एक कलाकार छिड़काव करने का अभिनय करता है, इसके बाद फर्रासन आकर जाजम बिछाने का अभिनय करती है मच पर उपस्थित शरमार खाँ नामक पात्र से ये सवाद करते हैं जैसा कि नाम से ध्वनित है शेरमार खाँ माच के खेलो में केवल दर्शक की भूमिका ही नहीं निभाता, बल्कि खेल के मुख्य पात्र के सहयोगी के रूप मे आद्योपात मंच पर रहकर कथानक को आगे बढाता है पात्रों के कथन को और अधिक स्पष्ट करने के लिए उनके सवादों को कभी-कभी स्वय भी दोहराता है

मालवा में प्रचलित 'हाजरात' नामक तात्रिक विद्या का माच की गणगट' 'सरचना' पर सीधा प्रभाव दिखाई देता है भिश्ती और फर्रासन' वाले स्वाग प्रसगाभिनय के उपरात सभी कलाकार सजधज कर मंच पर आते है कुछ माच म स्त्री-पात्रों का अभिनय पुरुष करते हैं अत. उनकी वशभूषा और अलकरण पर विशेष ध्यान दिया जाता है

खेल का मुख्य पात्र अपने बोल गीति कथन से स्वय का परिचय देता है और कथासूत्र प्रारम्भ करता है कथानक माच मडली वाले मुख्य खेल के बारे में गोपनीयता के बनाए रखते है पात्रो के बीच होने वाले सवाद 'बोल' कहलाते है दोहा छद में रचित ये बोल माच की विभिन्न रागो और धुनों में निबद्ध होत हैं ये रगत छद और रागनी दोनो ही दृष्टि से अपनी अनूठी विशेषताए रखती हैं जैसे रगत छोटी रगत बडी, रगत दोहरी, रगत रागनी, रगत राग की, रगत झेला की रगत मारवाडी, रगत रसूर आदि माच के बोल कलाकारों को कठस्थ होते हैं यद्यपि खेलो की हस्तलिखित पोथिया मौजूद रहती हैं, तथापि उसकी आवश्यकता नही पडती माच मे साधारणीकरण की अद्‌भुत शक्ति है जब कलाकार नर्तन करते हुए कोई जानकार बोल 'गीत कथन' कहता है तब प्रेक्षक समुदाय एक साथ कह उठता है कई की है' अर्थात् कितनी बढिया बात कही है यद्यपि माच मे धार्मिक, पौराणिक और सामाजिक कथानको पर आधारित अनेक खेल लिखे गए, परन्तु माच की श्रृगारपरक प्रवृत्ति के कारण प्रेमाख्यानो पर आधारित खेल ही जनता मे सर्वाधिक लोकप्रिय हुए उदाहरण के लिए ढोला-मारूँ, सुदबुद-सालगा, हीर-राझा, निहालदे-सुलतान, नागजी-दूदजी और नल-दमयती आदि भरथरी पिंगला, राजा गोपीचन्द, सत्य हरिशचन्द्र, वीर तेजाजी आदि खेलों में भी भक्ति और शौर्य के साथ श्रृगारिक भावना विद्यमान है प्रारम्भिक दौर की उद्‌दाम श्रृगारिकता के कारण माच पर अश्लीलता का आरोप भी लगता रहा है, किन्तु कलाकार में सयत श्रृगार के कारण माच के खेल पुरुष वर्ग के अलावा महिलाओं में भी कुछ हद तक लोकप्रिय बन सके है

माच प्रभावी जनमच है. जहा ये पारम्परिक लकीरों मे बँधकर चलता है वहाँ नई जमीन भी तलाशता रहा है कृतित्व और प्रदर्शन के क्षेत्र में अनेक प्रयोगधर्मी पहल इस बात का प्रमाण है उस्ताद कालूराम जी ने लहरगुसाई जी नामक महिला कलाकार को श्री सिद्धेवर सेन ने मालवी लोकगीत गायिका श्रीमती पुखराज पाडे को और डॉ शिवकुमार मधुर ने हिन्दी-मराठी रगमच की प्रसिद्ध कलाकार श्रीमती सुमन धर्माधिकारी को स्त्री-पात्र की भूमिका निभाने के लिए माच मे प्रवेश दिलाया यह अलग बात है कि ये प्रयोग उतने कामयाब नहीं हुए

माच की रग प्रस्तुतियों मे पहली तीन दशको में कई परिवर्तन हुए हैं आकाशवाणी और दूरदर्शन जैसे जनसचार के आधुनिक माध्यमों द्वारा माच का प्रचार-प्रसार बढा है सारी रात्रि चलने वाले खेलों की अवधि सिमटने लगी है डेढ-दो घटो में माच के खेल प्रस्तुत करने के प्रयास किए गए हैं

खम्ब स्वांग

आदिम समूहों में कोरकुओ का महत्वपूर्ण स्थान है वैसे आदिम समूहो में नाट्य परम्परा बहुत कम देखने को मिलती है फिर भी कोरकुओं मे समूची रग चेतना तीन पारम्परिक स्वागों में मिलती है पहला झेरी, दूसरा पारडी और तीसरा खम्ब स्वाग झेरी और पारडी रग की दृष्टि से उतने सार्थक नही हैं जितना खम्ब स्वाग झेरी झडा तोडने से सम्बन्धित कौतुक है और पारडी शिकारी स्वाग है खम्ब स्वाग सगीत अभिनय और मचीय दृष्टि से कोरकुओं का सम्पूर्ण नाट्य है खम्ब स्वाग को देखने से यह बहुत स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाता है कि खम्ब स्वाग कोरकुओ का आदिम स्वाग नही हो सकता ऐसा लगता है स्वाग कोरकुओं ने कहीं से लिया है खम्ब स्वाग निमाड की गम्मतो और

21

मध्य प्रदेश में लोक नाट्य

लोक नाट्य

नाचा

नाचा छत्तीसगढी बोली का प्रमुख लोकनाट्य है प्रहसन और व्यग्य नाचा का प्रमुख स्वर है इसके द्वारा किसी भी घटना या बात को तुरन्त प्रस्तुत किया जा सकता है, यहाँ तक कि नाचा प्रदर्शन के दौरान भी लोकमानस जिस बात को स्वीकार नहीं कर पाता, उसका मखौल नाचा द्वारा करता है सामाजिक राजनैतिक आर्थिक सभी स्तरों पर नाचा में जोकर की अह भूमिका होती है नाचा के कलाकार अपने पैर और हाथों का अधिक इस्तेमाल करते हैं और यह अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त पक्ष है सामाजिक कुरीतियों, विषमताओं राजनीतिक विद्रुपताओं, ढोंग और आडम्बरों पर सीधे चोट नाचा द्वारा की जाती है

नाचा के अन्तर्गत गम्मत का विशेष महत्व होता है इन हास्य-व्यग्य का पुट निश्चित रूप से पाया जाता है प्रहसनात्मक शैली में रचित इन गम्मतों में हजारों लोगों को पूरे आसमान के नीचे रातभर आनन्द देने की शक्ति होती है इसमें स्त्री का अभिनय आज भी पुरुष ही करते हैं मच सज्जा आडम्बरहीन होता है सामान्य वेशभूषा से ही काम चला जाता है चेहरे की सजावट खडिया, गेरु अथवा हल्दी जैसी वस्तुओं से हो जाती है अधिकाश बडे गाँवों में नाचा मडलियाँ पाई जाती है इसके कलाकार कुछ तो कृषिया होते है किन्तु कुछ ऐसे भी हैं जिन्होने इसे मनोरंजनोपार्जन का साधन बना लिया है विवाह, मुडई, गणेश-उत्सव तथा अन्य खुशी के किसी भी अवसर पर 'नाचा' की बुकिंग की दीवानगी है, उसे देखकर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता

जीवन के किसी भी मार्मिक प्रसग को इसका आधार बनाया जाता है गीत और चुटीले सवादों के सहारे कथा आगे बढती है ग्रामीण वाद्यों और मोहरी, डफडा, डमरु जैसे मजीरा के सामूहिक स्वर इस तरह के लोकनाट्यों को जीवन्त बना देते हैं

छत्तीसगढ का यह लोक नाट्य आधुनिक नाटकों से कोसों दूर है किन्तु उनकी आडम्बरहीनता इतनी प्यारी है कि इन्हें नकार पाना मुश्किल है, समय के साथ-साथ इनकी भाषा बदल रही है नई सामाजिकता के प्रभाव से ये अछूते नहीं है

भतरा नाट

बस्तर की जनजाति में नाट्य का एक पूर्व विकसित एव सशक्त स्वरूप पाया जाता है बस्तर में इसे भतरा नाट के नाम से ही जाना जाता है भतरा नाट बस्तर में उडीसा से आया है इसलिये कुछ लोग इसे उडिया नाट भी कहते हैं

नाट, नाट्य के ही सक्षिप्त अपभ्रश से बना हुआ शब्द है नाट की परम्परा बहुत कुछ सस्कृत एव उडिया की परम्परा के सम्मिश्रण से विकसित हुई परम्परा है, भतरा नाट में प्रमुख नाट गुरु होता है नाट का प्रथम प्रदर्शन नाट के लोग अपने ही गाव में नाट गुरु की देखरेख में ही करते हैं भतरा नाट की बोली भतरी होती है

बस्तर के भतरा नाट में वे सभी तत्व विद्यमान है, जो भारतवर्ष की परम्परागत एव प्रतिष्ठित अन्य नाट्य शैलियों में पाये जाते हैं

नाट की कथावस्तु के उद्गम पौराणिक प्रसग ही हैं अभिमन्यु, जरासध वध, कीचक वध, हिरण्यकश्यप वध, दुर्योधन वध रावण वध, लक्ष्मीपुराण नाट मेघनाथ शक्ति रुक्मणी हरण, लकादहन एव कस वध नामक नाट बस्तर के भतरा नाट मे सर्वाधिक प्रचलित है भतरा नाट मे भारतीय लोक जीवन के ठेठ स्वभाव से उपजे हास्य एव व्यग्य से दर्शकों का मनोरजन तो होता ही है पर किसी-न-किसी स्तर पर प्रहार किए बिना भी नहीं रहता

नाट का मचन खुले मैदान मे आयोजित किया जाता है मच चारों ओर से खुला होता है, जिसके चारो किनारो पर लकडी के खम्भे गाडकर उसके ऊपर मडप चदोवा तान दिया जाता है नाट्य के साथ मे मृदग हारमोनियम, नगाडा, मजीरा कभी-कभी प्रसगानुकूल मोहरी का भी प्रयोग किया जाता है अधिकाश नाट युद्ध प्रधान होते है

है उनमें कलाओं की अभिरुचि होती है इसीलिये वे दर्शकों को वाक्पटुता, पारस्परिक वार्तालाप, विनोद-कौशल और अभिनय से ऐसी संवेदना जागृत करते हैं जो सामाजिक विरूपता को दूर करने के साथ एक जीवन दृष्टि विकसित करने में भी सहायक होती है यह कहा जा सकता है कि स्वाग हमारे सास्कृतिक जीवन की ऐसी कसौटी है जिनमें समयानुसार परिष्कार, परिवर्तन और नवीनता का आग्रह होता है यहीं स्वाग के अर्थ की व्याप्ति का आभास मिलता है बुन्देली स्वाग को विभिन्न त्यौहारो, अवसरों और उत्सवों में प्रस्तुत किया जाता है इनके अनेक नाम हैं–होली के स्वाग, स्त्रियों के स्वाग, नवरात्रि के स्वाग, दिवारी के स्वाग, त्यौहारों के स्वाग, बहुरूपियों के स्वाग, बच्चो के स्वाग, विवाहोत्सवो में स्त्रियों के स्वांग 'बाबा' की धूम होती है बुन्देलखण्ड मे लड़के-लडकियाँ अपने खेलों में जिन स्वांगों का अभिनय करते हैं वे सामूहिक न होकर व्यक्तिगत होते हैं

स्वांगों के मूल में कोई कथा, घटना, प्रसग, लोकगीत, लोक समस्या, पहेलियाँ, बुझौबल, जादू-टोना आदि सभी होते हैं क्योंकि स्वाग सर्वाधिक आकर्षक होता है इसलिये इसे राई में भाग लेने वाली दो सौबतों के लोगों को नर्तकी को, मृदग टिमकी बजाने वाले को औत देने (आराम देने) के लिये अनिवार्य तौर पर आयोजित किया जाता है, इससे कौतूहल की वृत्ति जाग्रत होती है और हास्य द्वारा 'मोनोटोनी' एकरसता को तोड़ा जाता है

स्वाग की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमे जिन विषयों को उठाया जाता है वे सामाजिक, सास्कृतिक विसगतियों से सम्बन्धित होते हैं स्वाग का विषय ज्ञात से ज्ञात की ओर उन्मुख होता है नाटक के समान इसमें सती-सज्जा या वेषभूषा की अपेक्षाएँ नहीं होती गाँव में उपलब्ध सामग्री से सभी प्रकार की वेशभूषा का काम चलाया जाता है मेकअप का सामान कोयला, गेरू, चूना, राख, रोली या गुलाल, फूल-पत्ती आदि होती है

प्रतीक स्वाग की रीढ है जितने अच्छे प्रतीक स्वागिये चुनेंगे उतने ही अधिक प्रभावशाली होंगे स्वाग के विषय विसगतिपूर्ण धर्मनेता पाखण्डी, कजूस, सेठ, रूढियो, असामाजिक प्रवृत्तियो अधविश्वास-असस्कारी मानव आदि होते हैं. स्वाग की कुप्रथाओं और असामान्य व्यक्तियो को पूरी समग्रता के साथ पेश किया जाता है

स्वाग का रचयिता एक व्यक्ति नहीं होता. कुछ व्यक्ति मिलकर स्वाग तय करते हैं ऐसा करते समय विदेशी पात्र भर स्वाग में चुन लिए जाते हैं. धतूरा खान एक ऐसा ही पात्र है स्वागियों का मुख्य उद्देश्य हास्य होता है, जिसे प्रस्तुत करने मे भाषा विरूपता आनी स्वाभाविक है अपने अतिवादी रूप में सवादों की भाषा अश्लील भी हो जाती है स्वाग के सप्रेष्य की ओर लोगों का ध्यान अधिक होता है न कि उसके भद्देपन पर स्वाग का एक निश्चित समय माना गया है राई के प्रथम चरण के बाद का स्वाग शृगारिक या उपदेशपरक हो सकता है पर अन्तिम चरण के पहले उपालम्भ या मान का स्वाग होना चाहिए एक राई में अधिक-से-अधिक चार या पाच स्वाग खेले जाते हैं स्वाग के अभिनय के उपरान्त फलागम' की स्थिति में सभी पात्र यह गीत गाते है जो स्वाग के आधार पर बनाया गया होता है अथवा जिसके आधार पर स्वाग बना होता है

बुन्देलखण्ड के प्रमुख स्वागो के नाम इस प्रकार है लालरिया सुनार दाकज धतूराखान सूरा लुवाचनो पडित ठाकुर, भूरी भैंस, विधवा मरघट के मसान वस्तुत लोक की मनोरजनीवृत्ति की अभिव्यक्ति इन स्वागों मे होती है

निमाड़ी गम्मत

गम्मत निमाड़ का पारम्परिक लोकनाट्य है यह लोकनाट्य का पर्यायवाची शब्द है गम्मत कहने मात्र से नाट्य की प्रतीति होती है निमाड मे इसे इसी अर्थ मे ग्रहण करते हैं निमाड़ मे गम्मत प्राय तीन अवसर विशेष पर की जाती है, पहले दशहरे पूर्व की नवरात्रि पर दूसरे होली पर, तीसरे गणगौर पर्व पर नवरात्रि के नव दिन गम्मत स्वाग के सबसे बडे दिन कहे जा सकते हैं इस समय निमाड का कोई ऐसा गाँव नहीं होता, जहाँ गम्मत न की जाती हो गम्मत लोकजनों के मनोरजन का सार्थक साधन ही नहीं, बल्कि सबके समक्ष अपने मन की बात कहने का सबसे बडा जीवन माध्यम भी है गम्मत का पारम्परिक आधार लोक समाज है गम्मत गाँव के ही लोग मिल-जुलकर करते हैं आठ-दस उत्साही लोक गम्मत के लिए पर्याप्त होते हैं गम्मत के पारम्परिक रग स्थलगाव के चौपाल, चौराहा, नुक्कड या हतई होते हैं गम्मत के लिए 15-20 फीट लम्बी-चौडी समतल जगह पर्याप्त होती है बीच में एक खम्बा गाडकर आसपास के घरों के छज्जों से सफेद कपडे का चन्दोवा या चादनी तान दी जाती है, गम्मत के मच पर पहले चारों ओर मशालें जलाई जाती थीं, बाद मे गैस बत्ती जलाकर प्रकाश व्यवस्था हुई आजकल बिजली के बल्ब और मरकरी ट्यूब का उपयोग किया जाता है गम्मत का रग स्थल चारों ओर से खुला होता है दर्शक, श्रोता चारो और बैठते हैं पारम्परिक दर्शक श्रोताओ को गम्मत देखने जाने के लिए किसी प्रकार का औपचारिक बुलावा या आमत्रण नहीं दिया जाता गम्मत में दूर-दूर के दर्शक श्रोता स्वाभाविक रूप से जुडते हैं

निमाड के मेकअप को "सिगरना" कहते हैं सिगरना रूप धारणा के अर्थ में भी प्रचलित है सिगरने के लिए कलाकार सारी देशज चीजो का उपयोग करते हैं जिन्हें गाव के बाहर लेने जाने की आवश्यकता नही होती चेहरे के अच्छादन के लिए मुर्दारसिगी या सिगदराज को घिसकर लगाया जाता है आँखों में काजल आजा जाता है होंठ रगने के लिए हिगुल या लाल स्याही लगायी जाती है निमाडी लोकनाट्यों में पारम्परिक रूप सिगार प्रतीकात्मक

ही होता है गम्मत नाट्यों में रगभूषा अत्यन्त सरल होती है स्त्री-पात्र की वेशभूषा पारम्परिक होती है निमाड की पारम्परिक वेशभूषा में कलीदार घाघरा, लुगडा और काचली साडी, पोलका पेटीकोट का चलन हो गया है पुरुष धोती, कुर्ता, पगडी टोपी दुपट्टा पहनते हैं कोट-पेन्ट, पाजामा टाई, जूते मोजे घडी आदि का उपयोग भी किया जाता है

गम्मत करने वाले कुछ चुने हुए पात्र होते हैं इसमे नचैया (चायजया) विदूषक (कुडगर्या) बनकर पारम्परिक रूप से निश्चित होते हैं गम्मत में स्त्री पात्रों की भूमिका प्राय युवा पुरुष ही निभाते हैं गम्मत में किये जाने वाले स्वाग के पात्र प्रसग के अनुसार बदलते रहते हैं गणपति और सरस्वती के स्वरूप अवश्य लाये जाते है

नचैया की वेशभूषा नारी पात्र को सम्पूर्ण रूप से प्रकट करने वाली होती है और विदूषक की वेशभूषा ऊटपटाग और हास्यकारक होती है गम्मत का कुडगरया अपनी बेढगी वेशभूषा और हास्याभिनय की एक शैली विकसित कर लेता है जिसके लिए वह अपने अचल में विशेष लोकप्रिय होता है गम्मत में परम्परा से उपलब्ध दैनिक सामग्री का उपयोग कल्पनाशील तरीके से किया जाता है लोक नाट्यो में रग उपकरण स्वय कलाकार बना लेते है घर की टूटी-फूटी वस्तुए, नये-पुराने वस्त्र पचा चौकी, कुर्सी, स्टूल, रस्सी, खटिया, लकडी के मुखौटे आदि का उपयोग प्रसग के अनुसार प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है टावेल को बल देकर गणपति की सूँड बनायी जा सकती है

गम्मत मे पारम्परिक वाद्य झाझ, मृदग ढोलक के साथ हारमोनियम, तबले का प्रयोग किया जाता है गम्मत का पारम्परिक गीत-सगीत विभिन्न अवसरों के लोक सगीत से बहुत कुछ अलग होता है गम्मत के गीत-नृत्य के अभिनय पर आधारित होते हैं वाद्यों की लय ताल द्रुत होती है और गाने का स्वर उच्च और तीव्र होता है सारे गीत चलत में गाये जाते हैं गीतों की लोक धुने मधुर, लोकप्रिय और पारम्परिक होती है

गम्मत मौखिक होते हैं कथा वस्तु पारम्परिक होती है गीत और कथोपकथन पहले से ही कठस्थ होते हैं कलाकार अपनी प्रत्युत्पन्नमति स कई लोक प्रहसन सवाद और अभिनय तत्काल जोड देत हैं एक-एक कलाकार को हजारों गीत और सवाद याद होते हैं गम्मत के मौखिक पार्ट किसी एक व्यक्ति की रचना नही होते, वे सामूहिक रूप से रचे जाते हैं विचार करते-करते गम्मत का कोई विषय तय हो जाता है, फिर उसके गीत, सवाद, वार्तालाप आदि निश्चित हो जाते हैं

गम्मत के आरम्भ में कुछ पारम्परिक विधि-विधान निभाए जाते हैं खेल शुरू होने से पूर्व पूजा पाठ जरूरी है गणपति और सरस्वति का स्वाग लाया जाता है, उनकी स्तुति और प्रतिष्ठा की जाती है पूर्व रग में खडे साज का सगीत और नृत्य किया जाता है खम्भ के चारों ओर घूमकर गणपति और सरस्वती की वदना की जाती है स्वाग गम्मत का अनिवार्य अग है स्वाग एक नाट्य परिपाटी है स्वाग दो प्रकार के होते हैं यथास्वरूप स्वाग तथा हास्य स्वाग स्वरूप स्वाग में देवी-देवताओं के स्वरूप या झाकी लगाई जाती है और हास्य स्वाग मे छोटे-छोटे लोक प्रहसन होते है

स्वाग गम्मत की बोली निमाडी होती है बीच-बीच में पात्र हिन्दी व अग्रेजी के शब्दों का पयोग करते है स्वाग गम्मत में निमाडी बोली का ठेठ रूप देखा जा सकता है निमाडी के शब्दों, कहावतों, मुहावरों और बोली की शक्ति का जितना अच्छा प्रयोग गम्मत में पाया जाता है, उतना किसी दूसरी विधा में नहीं दिखाई देता नाट्य गीतों में प्रयुक्त रूपक और उपमाएँ दैनन्दिन वस्तुओं के गुणों के आधार पर दी जाती है

भवाई

मध्य प्रदेश के झाबुआ के आसपास के क्षेत्र में लोक नाट्य का एक रूप जो मुख्यत गुजरात में प्रचलित है भवाई के नाम से जाना जाता है यह लोक नाटक सस्कृत नाटकों की भाँति अकबद्ध नही होते हैं और न ही इनमे व्यवस्थित कथा का तारतम्य रहता है भवाई की विशेषता उसके दैनिक जीवन से सम्बन्धित घटनाओ का अभिनय, वेशभूषा तथा धार्मिक कथाओं के विश्वास पर आधारित है सस्कृत नाटको का विदूषक गुजराती भाषा मे 'रगलो' कहलाता है भवाई नाटको की सफलता इसी रगलो पर अवलम्बित होती है भारतीय लोक नृत्यो के विद्वान् देवीलाल सागर ने भवाई को मालवा तथा राजस्थान की उत्पत्ति बताया है

भवाई साधारण स्तर का लोक नाट्य है अभिनय आरम्भ होने के पूर्व गणपति तथा अम्बा की स्तुति होती है तत्पश्चात् हास्यास्पद कथा प्रस्तुत की जाती है इसमें मच की आवश्यकता नही पडती है और कथानक का अभाव रहता है इसमें अनेक पुरुष मिलकर गीत गाते हैं ऐसे लोक नाटको मे प्राय अश्लीलता का भी समावेश होता है प्रहसन के रूप मे यह अभिनय को प्रस्तुत करते हैं

नौटंकी

नौटकी बुदेलखण्ड का एक लोकप्रिय लोक नाट्य है श्री रामनारायण अग्रवाल ने लिखा है कि जब यह विधा चौबोला प्रधान गायकी के माध्यम से एक विशेष नाट्य रूप में उभरी तो उसे सगीतक के स्थान पर सागीत कहा गया सगीत स्वाग गीत इन दो शब्दो का सधि-रूप है, जिसका अर्थ होता है गेय लोक नाटक, जिसे पाश्चात्य जगत् आपेरा के नाम से पहचानता है वही सागीत परम्परा आज विभिन्न क्षेत्रो में विभिन्न नाम रूपों से जानी जाती है भगत, स्वाग, रहस, नौटकी आदि इसी सागीत परम्परा के विभिन्न नाम और रूप है

एक जनश्रुति के अनुसार पजाब के मल्ल नामक, जाट रावत नाम के राजपूत और रगा नाम के एक जुलाहे ने मिलकर ग्यारहवीं शताब्दी मे तीन व्यक्तियो की एक मंडली बनाई थी, जो गाँव-गाँव जाकर लोगों को ढोलक पर विभिन्न गाथाए गाकर सुनाती थीं बाद में यही गाथा-गायन की परम्परा मचीय रूप लेकर सगीत बन गई

नौटकी प्राचीन लोकनाट्य शैली है इसके अभिनेता मनोरजनार्थ भ्रमण करते थे इस शैली के लिए ध्रुव, मोरध्वज, गोपीचद, पूरनभक्त आदि नाटकीय चरित्रो की रचना हुई नरोत्तमदास के 'सुदामा चरित्र' को देखने से ऐसा लगता है कि यह नाटक लौकिक रुचि तथा लोक रगमच के विधान को ध्यान मे रखकर लिखा गया है, क्योंकि इसमे नाटकीयता है, अभिनय चातुर्य है और साहित्यिकता का अनुपम संयोग है सबसे बडी विशेषता तो यह है कि पूर्ण रस निष्पत्ति करता है.

लोक नाट्य की यह प्राचीन शैली शनै-शनै विकारग्रस्त होने लगी जब सस्कृति नाट्य साहित्य का भाण भडैती मे बदल गया तब नौटकी का विकारग्रस्त होना आश्चर्य की बात नहीं है इन्दर सभा इस नौटकी का पिछला रूप है, जिसे वाजिद अली शाह के रुझान के अनुसार बनाया गया था, जहाँ नौटंकी मे ध्रुव, प्रहलाद मोरध्वज, पूरन भगत जैसे आदर्श चरित्र लिए जाते थे, वहाँ अब गुलबदन, नीलमपुरी, हुस्नबाबू आदि लिए जाने लगे आधुनिककाल में इसके सुधार की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है और धार्मिक लीलाओं का प्रचार किया जा रहा है

आधुनिककाल में नौटकी के साहित्यिक रूप का उद्धार भारतेन्दु द्वारा किया गया नीलदेवी नाटिका मे नौटकी का साहित्यिक रूप मुखरित हुआ है इस परम्परा मे प्रताप नारायण मिश्र के प्रयत्न को नहीं भुलाया जा सकता उन्होंने सगीत शाकुन्तला की रचना की और नौटकी में साहित्यिक रूप की वृद्धि की

नौटकी के कथानको पर विचार किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि इसका क्षेत्र धार्मिक, पौराणिक एव प्रेमलीला पूर्ण आख्यानों तक ही सीमित रहा बाद में इस प्रवृत्ति का विकास हुआ धार्मिक कथानकों में ध्रुव, प्रहलाद, भर्तृहरि, हरिचन्द्र आदि लौकिक एव ऐतिहासिक गाथाओं में अमर सिंह, सम्राट् अशोक आदि शृगारिक प्रेमकथाओं की शीरी फरहाद, लैला-मजनूँ, सोहनी-महिवाल, जवानी का नशा आदि साहसिक कथानकों मे सुलताना डाकू, बहराम डाकू और सामाजिक कथानकों में गरीब किसान, बेटी का सौदा, किसान कन्या आदि अधिक प्रसिद्ध हैं

कथानक के आरम्भ के पूर्व मगलाचरण होता है सूत्रधार आता है फिर कथा आरम्भ हो जाती है पात्रों में विभिन्नता नही मिलती सभी पात्र किसी भी वेश मे आकर अपना अभिनय प्रदर्शित करते हैं स्त्रियो का अभिनय सुन्दर लडके करते थे, लेकिन अब लडकों का चलन बद-सा हो गया है नौटकी में अब स्त्रियाँ नृत्य तथा अभिनय करती हैं

नौटकी मे एक प्रमुख पात्र होता है, जिसे सूत्रधार कहते हैं इसे रंगा भी कहते हैं यह मगलाचरण समाप्त होते ही मच पर आकर कथानक को बतलाता है और समय-समय पर आकर दो कथा सूत्रों को जोडकर उसे प्रवाहमय करने का प्रयास करता है प्रत्येक नौटकी में एक विदूषक अवश्य होता है जो ऊट-पटाग, मोंडी चेष्टाएँ करके दर्शकों को हँसाता है इनकी चेष्टाएँ अशिष्ट और सवाद अश्लील भी होते हैं.

अभिनय के साथ-साथ सगीत-योजना नौटकी की आत्मा है. वाद्यों मे नगाडे का प्रयोग होता है, कभी-कभी स्थानीय सगीत-शैली को भर अपना लिया जाता है, जो दर्शकों के ध्यान को आकर्षित रखने में सहायक सिद्ध होता है

कठपुतली

हमारे देश में कठपुतलियों की बहुत ही प्राचीन परम्परा रही है मानवी अभिनेता ने रगमच सँभाला, उससे पूर्व ही कठपुतलियाँ रगमच पर अपना प्रभुत्व जमा चुकी थीं भारत, मिस्र, यूनान, रोम तथा चीन मे सभी धार्मिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तित्व एव अनेक कृतित्व कठपुतली के माध्यम से ही अभिनीत होते थे

भारतवर्ष मे पुतली का इतिहास भारतीय नाट्यों से भी प्राचीन है. कठपुतलियाँ कठिन-से-कठिन मानवीय स्थितियो को प्रस्तुत करने मे समर्थ होती हैं

हमारे देश में मुख्य रूप से कठपुतलियो की चार प्रकार की शैलियाँ विद्यमान हैं—

(1) दास्तान पुतली, (2) धाड़ पुतली, (3) सूत्र सचालित पुतली, (4) छाया पुतली.

कठपुतलियों के विभिन्न कलाकार दल अपनी शैली में भारतीय ऐतिहासिक आख्यानों को कलात्मक ढग से गाँव-गाँव में प्रस्तुत करते हैं जिन्हें वे कठपुतली का खेल कहते हैं

मनसुखा

मनसुखा एक लोक प्रहसन है यह रास का बघेली रूपातर है इसमें दो मच और दो पर्दों का प्रयोग होता है साथ में मेकअप का स्थान भी होता है मनसुखा उर्फ विदूसक महोदय और गोपियों मे नोकझोक चलती है. छेडछाड भी मसखरों को गाँवो में मनसुख लाल भी कहते हैं

हिंगोला

हिंगोला एक मच रहित सीधा और सरल नाट्य रूप है दो दलों में गीतों की झार 'नोकझोंक' मचती है माटर

टिमकी सहित तरुणी गायन वादन करते है जीता दल पराजित दल के पाँवो से तरह-तरह के काम लेता है और हास्य का आविर्भाव होता है शत्रुहारणी में भी हिगाल देवी का समावेश किया जाता है कुवारी द्वारा हिगाला का पाट किया जाना चाहिए. ऐसी मान्यता है मजे की बात यह है कि गीत गाते समय केवल नट-नटी ही नही दर्शक भी भाग लेते हैं फलत भावो का सहचरीकरण होता है

जिंदवा

जिदवा का अनुष्ठान 'बसी के दिन' विवाह के अवसर पर होता है यह मूलत महिला नाट्य है जो मनचले पुरुष इस वर्जित नाट्य को देखने का चोरी छिपे प्रयास करते है उनकी मरम्मत कर दी जाती है मूसर, झाडू, बेलन लेकर अभिनय करते हैं कभी-कभी भैस में चढी देवी का अभिनय स्त्रियों द्वारा किया जाता है. ताना-बाना सूत पुराना में कोरी मर्दाना की हाँक अथवा चडी हूँ पाडिया का गध गीत मुक्त छद शैली मे होता है अथवा चूडी वाला गीत यूँ गूँजता है—दुनउ ओठलन के बीच झुलनिया के मोती लहर के आदि एक महिला ज्योतिषी बनकर सबका भविष्य बताती है जिदवा मे श्लील अथवा अश्लील की सीमा रेखाएँ नहीं रहती है जिदवा को बहलोल भी कहते है

लकड़बघा

लकडबघा आदिवासी युवक-युवतियों का लोक-नाट्य है जो खुले मच पर अभिनीत होता है यह विवाह के बाद खेला जाता है लडकी को लकडबघा उठा ले जाता है लडकी करुण वन्दन करती है निरुपाय लडकी लकडबघों को प्रेम करने लगती है बाद में साहचर्य जन्य प्रेम होता है युवकजन लकडबघों को तीर से आहत करते है उसकी दर्द भरी चीखों का सुनकर वह उसकी सेवा करती है इस अहेरी और वन्य नाट्य में पशु और मनुष्य के हार्दिक योग का अभिनय मार्मिकता से किया जाता है

रास

राधा कृष्ण और गोपियों के नाना प्रसगों को लेकर कृष्ण लीला बघेलखण्ड के गाँवों मे की जाती है रास कृष्ण लीला का ही अग है बघली में इसका अभिनय पारसी कम्पनियों के प्रभाव से आक्रात दिखता है कालीदह प्रसग, गेदलीला, वेघलीला या नर्तकी प्रसग यहाँ देखने को मिलते है समैया और छाहुर अब लुप्तप्राय लोकनाट्य है

नौटंकी (बघेली)

नौटकी का बघेली सस्करण उत्तर प्रदेश मे प्रचलित नौटकी से मिलता-जुलता है इदल और बैरग राजा की कथा अथवा मनिहारिन के प्रसग को लेकर नौटकियाँ चलती है नौटकी मे कई पर्दों का प्रयोग किया जाता है बघेली नौटकियां में दाम्पत्य-जीवन के हास्य उत्पादक को भी जोडा जाता है

चंदैनी

लोरिक चदा की प्रेमगाथा का प्रसार प्राय सारे भारतीय लोकाचलों में गाथा अथवा नाट्यरूपों में उपलब्ध होता है. छत्तीसगढ में इस गाथा को मूल रूप में यादव जाति के लोग गाते है इसके साथ ही चदैनी लोकनाट्य तथा सगीतिक लोक गायक विधाओं के रूप में भी प्रचलित है नाट्य गायन की लोक शैली के रूप में तो एक विशिष्ट छत्तीसगढी शैली, खड़े साज के नाचा के रूप में चदैनी की एक विशिष्ट पहचान बन गई है

छाहुर

छाहुर बघेलखण्ड का एक पारम्परिक लोक नाट्य है यह मूलत कृषक जातियों का लोक नाट्य है दीपावली से गोप अष्टमी तक अहीर, तेली और कुम्हार जाति के लोग छाहुर नाट्य का आयोजन करते हैं. छाहुर लोक नाट्य का नामकरण उसके एक पात्र छाहुर से हुआ है जो किसान सस्कृति का परिचायक है इस नाट्य का सम्बन्ध सम्पूर्ण अहीर सस्कृति से है इसलिये इसमें एक प्रकार के जातीय स्वाभिमान और गौरव की उपस्थिति सदैव रहती है छाहुर बघेलखण्ड का प्रतिनिधि लोक नाट्य है

छाहुर नृत्य में किसी प्रकार की तैयारी नहीं होती है चार छह लोग मिलकर छाहुर नाट्य करने में सक्षम होते हैं छाहुर का सम्पूर्ण कार्य व्यापार मौखिक होता है मच की भी जरूरत नहीं होती गाँव के चौराहे अथवा चौपाल पर या घर के ऑगन में छाहुर नाट्य किया जा सकता है छाहुर के कलाकार परम्परानुसार तैयार होते हैं प्राय नाट्य में रुचि रखने वाला कोई भी बघेली व्यक्ति छाहुर नाट्य में शामिल हो सकता है छाहुर में पुरुष ही स्त्री की भूमिका निभाते हैं पुरुष स्त्री का शृगार बघेली परम्परा के अनुरूप करते है अन्य पात्र विषय और प्रसग के अनुसार निश्चित होते है छाहुर के विषय बघेलखण्ड के सघर्षशील मनुष्य के अभिज्ञान के आसपास के होते हैं इस लोक नाट्य की बोली बघेली होती है, परन्तु आवश्यकतानुसार पात्र हिन्दी अथवा अग्रेजी के शब्दों का उपयोग करते है जरूरत पडने पर अपने सवाद गीत गाकर भी प्रस्तुत करते है बघेली छाहुर मे शौर्य शृगार प्रेम और वात्सल्य आदि मनोभाव नाटकीयता के बीच एकदम सहज और स्वाभाविक होते है बघेलखण्ड के सामन्ती व्यवस्था के आतक और सघर्ष की जीवन्त प्रस्तुति छाहुर लोक नाट्य का वैशिष्ट्य है इसका सगीत पारम्परिक है सार रूप मे छाहुर नाट्य बघेली जनता की भावनाओं को प्रदर्शित करने वाला एक महत्वपूर्ण लोक मच है

22

मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ

जनजाति–अर्थ व परिभाषा

जनजाति मानवीय समाज का वह वर्ग है जो आज के इस सभ्य समाज मे भी मानव के आदिकाल को चित्रित करता है जनजाति समुदाय का मानव इस आधुनिक समाज मे अपने पिछडेपन के कारण आदिमानव के रूप में जाना जाता है अत्यधिक प्रगतिशील समाज के सापेक्ष समाजार्थिक रूप से स्थिर इस समाज को अपनी विशेषताओ के अनुरूप एकाकार एव प्राक्औद्योगिक भी कहा जाता है

जनजाति एक निश्चित भू-भाग में निवास करते है एक विशेष प्रकार की भाषा बोलते है आदिकालीन धर्म प्रथा और परम्परा को मानते है तथा आदिकालीन आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत निवास करते है

इम्पीरियल गजटियर के अनुसार "जनजाति कई परिवारों या परिवार समूह का ऐसा समुदाय है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जो एक सामान्य बोली बोलता है, जो एक सामान्य भू-भाग पर रहने का दावा करता है और जो सामान्यतः अन्तर्विवाह नही करता, चाहे प्रारम्भ मे करता रहा हो।"

अनुसूचित जनजाति

अनुसूचित जनजाति भारतीय सविधान के अन्तर्गत प्रयुक्त की गई एक सवैधानिक शब्दावली है आदिम जनजातियों का अनुसूचित करने का पहला प्रयास 1931 की जनगणना में किया गया था 1935 के भारत शासन अधिनियम में 'पिछडी जनजातियों' के रूप में इनका सन्दर्भ मिलता है 1936 में ब्रिटिश भारतीय सरकार द्वारा तत्कालीन प्रान्तों असम, बिहार, ओडिशा, तमिलनाडु, तत्कालीन मध्यप्रान्त और बरार की कुछ जनजातियों को 'पिछडी जनजातियों' की श्रेणी में रखा गया था डॉ घुरिये ने इनके लिए 'अनुसूचित जनजाति' नाम प्रस्तावित किया था भारतीय सविधान के अनुच्छेद 342 के अन्तर्गत परिभाषित कर लिया गया है

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर जनजातियों की विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1. एक निश्चित भू भाग में निवास करते है
2. इनके परिवारों अथवा परिवारों के समूहों का एक सामान्य नाम होता है
3. प्रत्येक जनजाति का एक सामान्य नाम होता है
4. सामान्यतया एक जनजाति एक अन्तर्विवाह समूह होता है
5. प्रत्येक जनजाति का एक सामाजिक सगठन होता है
6. प्रत्येक जनजाति का एक राजनैतिक सगठन भी होता है
7. प्रत्येक जनजाति की एक सामान्य सस्कृति होती है
8. एक जनजाति की सामान्य आदि आर्थिक क्रियाएँ होती है, जो प्राय वस्तु विनिमय पर आधारित होती हैं

मध्य प्रदेश जनजातियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य है यहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसख्या 1,53,16,784 है जो प्रदेश की कुल जनसख्या का 21·1 प्रतिशत है राज्य मे जनजातियों की जनसख्या का सर्वाधिक प्रतिशत अलीराजपुर जिले मे है जहाँ कि 87 प्रतिशत जनसख्या जनजातीय है, जबकि सबसे कम जनजातीय प्रतिशत भिण्ड जिले मे है जो जिले की कुल जनसख्या का केवल 0·4 प्रतिशत है जनगणना 2011 के अनुसार अनुसूचित जनजाति साक्षरता 63,13,661 है जिसमे ग्रामीण की साक्षरता दर 57,23,449 एव शहरी साक्षरता 5,90,212 प्रतिशत है कुल अनुसूचित जनजाति साक्षरता मे ग्रामीण साक्षरता 40 प्रतिशत है, जबकि शहरी साक्षरता 57·20 प्रतिशत है मध्य प्रदेश मे अनुसूचित जनजातियों की संख्या 46 है यहाँ मुख्य रूप से गोंड, भील, बैगा, सहरिया, भारिया कोरकू, बजारा, अगरिया, कोल, पनिका, पारधी इत्यादि जनजातियाँ निवास करती है

गोंड जनजाति

गोंड मध्य प्रदेश की एक प्रमुख जनजाति है (43,57,918 व्यक्ति, 2001 की जनगणना के अनुसार) यह जनसख्या की दृष्टि से भारत की सबसे बडी जनजाति में से एक है यह जनजाति मध्य प्रदेश के सभी जिलों मे फैली हुई है लेकिन नर्मदा के दोनो ओर विन्ध्य और सतपुडा के पहाडी क्षेत्रों मे इसका अधिक सकेन्द्रण है

उत्पत्ति–गोंडों की उत्पत्ति के विषय मे विद्वानो में मतैक्य नही है प्रसिद्ध नृतत्वशास्त्री श्री हिस्लोप के अनुसार

'गोंड' शब्द की उत्पत्ति तेलुगू भाषा के 'कोंड' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है पर्वत. अर्थात् यह जनजाति पर्वतों पर निवास करती थी इसलिए गोंड कहलाई. गोंडी भाषा की कुछ लोक कथाओं में 'गोंडो' की उत्पत्ति 'बोरादेव' अर्थात् महादेव से हुई, बताई गई है ऐसी जनश्रुति है कि यह आदिवासी अशुद्ध थे अत महादेव ने इन्हें एक गुफा में बद कर दिया तत्पश्चात् 'लिगदेव' ने इन्हें स्वतत्र कराकर जगल पहुँचाया और कई गोत्रों में विभाजित कर दिया एक अन्य विद्वान् जनरल कनिघम का मानना है कि गोंड भाषा में यह लोग 'कोइतार' कहे जाते हैं जिसका हिन्दी मे अर्थ 'पुरुष' से लगाया जाता है

शारीरिक बनावट—इस जनजाति में स्त्रियों का कद पुरुषों की अपेक्षा छोटा होता है इनकी त्वचा का रग काला, केश काले, तथा खडे होने वाले, नासिका भारी व बड़ी, गोलाकार सिर, छोटे होठ, सुगठित शरीर तथा मुँह चौड़ा आदि है इनके चेहरे पर बाल कम होते हैं, अत पुरुष दाड़ी मूँछ नहीं रखते हैं स्त्री तथा पुरुष दोनो का ही सुगठित शरीर होता है जिससे यह अत्यधिक परिश्रमी होते हैं इनकी स्त्रियाँ भी आर्थिक इकाई के रूप में काम करती हैं तथा शिकार को छोडकर शेष सभी काम पुरुषों के साथ कधे-से-कधा मिलाकर करती हैं

सामाजिक स्तरण/उपजातियाँ—गोड जनजाति की कई उपजातियाँ भी हैं इन उपजातियों से गोंड समाज के भीतर ही कई वर्ग बन गए हैं गोंड जनजाति का यह वर्गीकरण व्यवसाय पर आधारित हुआ प्रतीत होता है परिणामत सामाजिक स्तरण स्पष्ट देखा जा सकता है यह उपजातियाँ इस प्रकार हैं—

1.	अगरिया	लोहे का काम करने वाला वर्ग
2.	प्रधान	मन्दिरों में पूजा पाठ तथा पुजारी का काम करने वाले गोंड
3.	कोइलामुतिस	नाचने-गाने वाले गोंड
4.	ओझा	पडिताई तथा तात्रिक क्रिया करने वाले
5	सोलाहस	यह बढईगिरी का काम करने वाले लोग होत हैं

व्यवसाय पर आधारित उपर्युक्त वर्गीकरण के अलावा निवास स्थान के आधार पर गोडो में दो वर्ग स्पष्ट प्रतीत होते हैं, जाकि इस प्रकार है—

1. **राज गोंड**—यह लोग भू-स्वामी होते हैं, यहाँ तक कि कुछ राज गोंड परिवार जमीदार भी होते हैं मध्य प्रदेश के सागर, होशगाबाद, दमोह आदि जिलों में राजगोंड परिवार निवास करते हैं

2. **धुर गोंड**—यह गोंडों का साधारण वर्ग है तथा कहा जाता है कि यह लोग गोंड तथा राजपूतों के मिश्रण से उत्पन्न हुए हैं अधिकाश धुरगोंड का निवास छत्तीसगढ के अन्तर्गत आता है अत मध्य प्रदेश में धुर गोंड की सख्या काफी कम हो गई है

वेशभूषा एवं आभूषण—गोंड जनजाति के लोग वस्त्र का बहुत कम प्रयोग करते हैं कुछ प्रौढ गोंड बडी पहन हैं स्त्रियाँ चोली नहीं पहनती है तथा छाती का भाग खुल रहता है स्त्रियाँ आभूषण प्रिय होती हैं और शरीर पर अनेक आभूषण पहनती हैं, कभी-कभी मोर के पख व जानवरों के सीग भी लगाती हैं

गोंड पुरुष घुटने तक की धोती, बडी कधे पर पिछौना तथा सिर पर मुरैठा बाँधते हैं पुरुषों मे भी आभूषणों के प्रति आकर्षण देखा गया है यह कलई में चाँदी का चूडा गले मे मोहर तथा कान में बूदा पहनते हैं स्त्रियाँ छह से आठ गजी साडी घुटने तक काछ लगाकर पहनती है

परिवार—गोंड जनजाति में परिवार पितृसत्तात्मक अथवा पितृवशीय होते हैं इनमे विवाह के पश्चात् पत्नी अपने पति के घर आकर रहती है वंशनाम पिता के वश के आधार पर चलता है अर्थात् बच्चे अपने पिता के कुल या वश के नाम को ग्रहण करते है

विवाह—गोंड जनजाति में विवाह की कई प्रथाएं प्रचलित हैं, किन्तु यह लोग सहमति विवाह को सबसे उचित मानते है इसके अलावा पलायन विवाह जिसको यह लोग अपनी भाषा मे 'लामझना' कहते हैं, भी पाया जाता है इस जनजाति में वधू मूल्य का प्रचलन अत्यधिक है वधू मूल्य को यह अपनी भाषा मे दूध बन्ध कहते हैं जो परिवार वधू मूल्य देने की स्थिति में नहीं होते हैं वे कन्या के पिता के यहाँ नौकर के रूप मे कुछ समय तक काम करते हैं इस तरह उसके द्वारा किए गए श्रम अथवा सेवा को ही वधू मूल्य मान लिया जाता है और कन्या का विवाह उस लडके के साथ कर दिया जाता है श्रम अथवा सेवा के रूप वधू मूल्य चुकाने वाला यह व्यक्ति 'लामानई' कहलाता है इस जनजाति में अन्तर्विवाह और बहिर्विवाह के नियमों का भी कठोरता से पालन किया जाता है अन्तर्विवाह के अन्तर्गत मारिया और मुरिया एव राज गोंड और धुर गोंड आपस में विवाह नहीं करते हैं इसी प्रकार बहिर्विवाह नियमों के अनुसार एक टोटम समूह के सदस्यों मे आपस में कोई वैवाहिक सम्बन्ध नहीं होते हैं गोंड जनजाति में विवाह विच्छेद तथा पुनर्विवाह की प्रथा भी होती है यद्यपि एकल विवाह प्रथा प्रचलित है किन्तु धनी एव सम्पन्न गोंड दो या अधिक पत्नियाँ भी कर लेते हैं

गोंड जनजाति में भाई का लडका और बहन की लडकी अथवा भाई की लडकी और बहन का लडका में विवाह का प्रचलन है, जिसे यह लोग 'दूध लौटावा कहते है

आर्थिक जीवन—गोंड जनजाति के जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन कृषि तथा मजदूरी है यह जनजाति प्रमुख रूप से 'बारी' नामक खेती करती है सरसों साग सब्जी व तम्बाकू के साथ-साथ 'कोडन और 'कुटकी' नामक धान की खेती भी मुख्य रूप से की जाती है इस जनजाति की

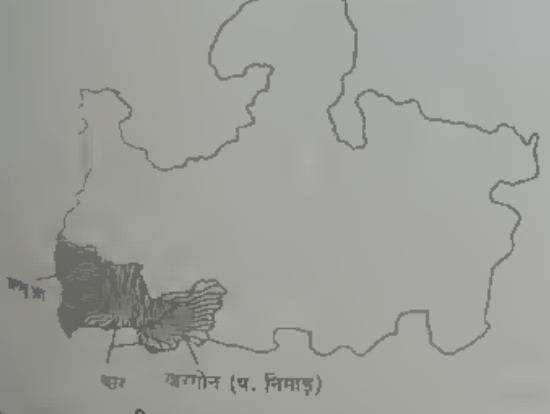
स्त्रियाँ जगल से फल-मूल, कदमूल, शाक-सब्जी तथा जडी-बूटियाँ एकत्रित कर 'हाट' करती हैं कुछ गोड सूत कातने बेंत का काम, मिट्टी के बर्तन और धातु का काम भी करते है

धर्म और जादू—गोड जनजाति के लोग पूर्वजो की आत्माओ में विश्वास रखते हैं इस प्रकार यह 'आत्मावाद' के मानने वाले हैं इनका मुख्य देवता 'बारादेव' है ये लोग अपने कृषि-औजारों तथा अन्य हथियारो की भी पूजा करते हैं गोंड जनजाति में धर्म के अलावा जादू मे भी विश्वास किया जाता है यह अपनी परेशानियों, चिताओ और बीमारियों आदि को जादू के माध्यम से दूर करने का प्रयास करते हैं इस तरह की तात्रिक प्रक्रियाओं को करने के लिए एक विशेष व्यक्ति होता है जिसे यह लोग 'ओझा' कहते है

अन्य विशेषताएँ—गोड जनजाति की भाषा प्रमुख रूप से गोंडी कहलाती है यह भाषा द्रविड भाषा से प्रभावित है कुछ द्रविडियन प्रजाति के माने जाते हैं इस जनजाति में मृत्यु के पश्चात् दफनाने की प्रथा थी, किन्तु हिन्दू सभ्यता के सम्पर्क में आने के बाद गोड अब मृतक का अग्निदाह करते हैं इनकी मनोरजन की एक प्रमुख संस्था 'घोटुल' है जो इनकी सास्कृतिक गतिविधियो का भी एक प्रमुख केन्द्र है यह एक युवा सगठन है जिसके सदस्य अविवाहित युवक-युवतियाँ होते हैं गोंडों के पर्व त्यौहारो मे मेघनाद, बिदरी बकपथी, हरदिली, नवाखानी, जवारा, मड़ई तथा भगता प्रमुख हैं राज्य के विभाजन के बाद गोंड की दो प्रमुख उपजातियाँ मारिया तथा मुरिया अब छत्तीसगढ की सास्कृतिक धरोहर हो गई है गोंड जनजाति के प्रमुख नृत्य मेला करमा भाडौनी, बिरहा, कहरवा, सजनी, सुआ तथा दैवानी है

भील जनजाति

भील जनजाति जनसख्या की दृष्टि से भारत की तीसरी तथा मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है



भील भौगोलिक वितरण

ये जनजाति मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र धार, झाबुआ और पश्चिमी निमाड जिलो में निवास करती है यह प्रदेश का सबसे बडा जनजाति परिक्षेत्र है भील जनजाति मध्य प्रदेश के अतिरिक्त राजस्थान, महाराष्ट्र तथा गुजरात में भी पाई जाती है

उत्पत्ति—भील प्रदेश की प्राचीनतम जनजातियों में से एक है इसका उल्लेख महाभारत, रामायण, पुराणों जैस प्राचीन ग्रथों में मिलता है भील जनजाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई धारणाएँ प्रचलित हैं एक ओर जहाँ भील शब्द की उत्पत्ति सस्कृत भाषा के 'मिल्ल' शब्द से मानी जाती है वहीं दूसरी ओर यह कहा जाता है कि इस शब्द की उत्पत्ति द्रविड भाषा के शब्द 'बील' से हुई है जिसका अर्थ है 'धनुष' चूँकि यह जनजाति धनुर्विद्या में निपुण है तथा धनुर्धारी है इसीलिए इसे भील कहा गया है

पौराणिक ग्रथों मे भी भीलों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अलग-अलग बातें बताई गई है 'कथासरित सागर' में गुन्धपा ने 'भील' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया एक अन्य धारणा के अनुसार भीलो की उत्पत्ति 'मनुस्वयभुविना' की जघा से हुई मानी जाती है ऐसा कहा जाता है कि वैदिक काल की अनार्य जातियों, जिन्हें निषाद' भी कहा जाता है, में एक जाति भील भी शामिल है एक अन्य धारणा के अनुसार भीलों की एक उपजाति 'भिलाला' राजपूतों की सन्तानें हैं तथा इनकी उत्पत्ति प्रवासीय राजपूतों तथा भील युवतियों के परिणामस्वरूप हुई है, जबकि भील स्वय को शिव के वशज मानते हैं तथा इनमे मान्यता है कि भगवान शिव ने इस क्षेत्र की किसी भील युवती से विवाह किया तथा इन्हीं के वशज भील हैं

शारीरिक बनावट—भील जनजाति के लोगों का कद नाटा होता है सामान्यतया इनकी ऊँचाई 4 से 5 फुट के मध्य होती है शरीर का रग काला, गहरे काले तथा घुँघराले केश, चपटी नाक, चौडा चेहरा, बडे नथुने, गठा बदन आदि इस जनजाति की शारीरिक विशेषताए हैं, भील प्रोटो आस्ट्रेलॉयड प्रजाति के अन्तर्गत आते हैं

निवास—भीलो का निवास स्थायी नहीं होता है यह भ्रमण करते रहते है ये लोग पहाडी स्थानों पर बाँस, मिट्टी, खपरैल तथा पत्थरों से झोपडी बनाकर रहते हैं प्रदेश मे झाबुआ की पहाडियों पर भीलों के घर बने हुए हैं जो एक-दूसरे से लगभग एक-दो किलोमीटर की दूरियों पर स्थित हैं इनके घर आकार में बडे और खुले-खुले होते हैं भील अपने निवास स्थल को 'फाल्या' कहते हैं

वेशभूषा व आभूषण—भीलों में कपडे काफी कम पहने जाते हैं पुरुष लगोटी तथा सिर पर साफा बाँधते है, जबकि स्त्रियाँ 'अगरखा' नामक वस्त्र पहनती हैं स्त्री तथा पुरुष दोनों ही आभूषण प्रिय होते हैं स्त्रियाँ लाल रंग का लहँगा तथा ओढनी अत्यधिक पसद करती है शरीर पर गुदना गुदाना, पैरों मे गिल्ट, लोहे चाँदी या चाँदी मिश्रित मिश्र धातु के आभूषण धारण करती है पुरुष कानो मे चाँदी की बालियाँ लटकन, हाथ मे कडे और सिर पर चाकदार पगडी और हाथ और पाँव में लोहे या गिल्ट के कडे पहनते

हैं इन लोगों के बाल लम्बे होते है तथा इन्हें विभिन्न प्रकारों से सजाते हैं भील युवक एवं युवतियों के पास से एक छोटा दर्पण और कघी मिलना सामान्य बात है.

भोजन–भील जनजाति का प्रिय खाद्य पदार्थ 'राबडी' हैं इसके अतिरिक्त मक्का, ज्वार, जौ, साँवा, लावा, कूरा, उड़द की उबली दाल तथा मास भक्षण भी इनमें प्रचलित है. इन्हें मदिरापान से विशेष लगाव होता है ग्रीष्मऋतु में ताड़ी की अधिकता होने से यह 'ताडी' का सेवन करते हैं इसके अलावा मकई, जौ, महुआ आदि की कच्ची शराब बनाकर यह स्वय भी पीते हैं तथा देवी-देवताओं को भी चढ़ाते हैं

उपजातियाँ एवं सामाजिक स्तरण–मध्य प्रदेश के भीलों की पाँच उपजातियाँ है यथा भील, भिलाला, पटालिया, रथियास और बैगास बैगास मुख्यत मण्डला क्षेत्र में रहते हैं इस जनजाति में व्यावसायिक आधार पर भी कई वर्ग होते हैं यह वर्ग इस प्रकार हैं–

1. **भादवी या बदवो या भगत**–इस जाति का व्यक्ति जनजाति का सबसे पवित्र व्यक्ति माना जाता है

2. **पुँजारों**–इस जाति के व्यक्ति को औषधियों तथा रोगो के उपचार मे विशेष ज्ञान होता है

3. **कोटवार**–इस जाति का व्यक्ति भीलों के गाँव का प्रशासन करता है

उपर्युक्त जातियो के अलावा ढोली, बलाई भाट और धोबी निम्न श्रेणी मे गिने जाते हैं जनजाति का यह निचला वर्ग भीलो की सेवा करता है

परिवार–भील जनजाति में परिवार पितृसत्तात्मक या पितृवशीय होता है अर्थात् विवाह के पश्चात् लड़की अपने पति के घर आकर रहती है और इनसे होने वाली सतानो का कुल या वश पिता के कुल से पहचाना जाता है भीलो मे संयुक्त परिवार होता है तथा परिवार का मुखिया सबसे बुजुर्ग पुरुष अथवा परिवार का पिता होता है इस जनजाति मे पिता की मृत्यु के पश्चात् सम्पत्ति का आधा भाग सबसे छोटे पुत्र को तथा शेष सम्पत्ति का बँटवारा अन्य बडे भाइयों में किया जाता है

विवाह–भीलों में विवाह की कोई निश्चित आयु सीमा नही होती है यह लोग एकल विवाही होते हैं, लेकिन कही-कहीं बहुल विवाह भी देखने को मिलता है अर्थात् इसे बुरी नजरों से नहीं देखा जाता है भील युवक एव युवतियाँ अपने पसन्द से जीवन साथी का चुनाव करने के लिए स्वतन्त्र होती है इनमें गधर्व विवाह एव अपहरण विवाह अत्यधिक प्रचलित है इनका प्रणय पर्व 'भगोरिया' है जो कि झाबुआ में आयोजित किया जाता है यहाँ लडका, लड़की को पसद कर उसका नाटकीय ढग से अपहरण कर लेता है तत्पश्चात् परिवारीजनों की उपस्थिति मे उन्हें परिणय सूत्र मे बाँध दिया जाता है इसके अतिरिक्त सेवा विवाह और शक्ति विवाह का प्रचलन भी है भील जनजाति मे वधू मूल्य की प्रथा पाई जाती है इस जनजाति में तलाक अथवा विवाह विच्छेद भी किया जा सकता है इनके अवसर पर विवाह का एक दिलचस्प प्रकार गत्र गाधेडो जो के एक लोक नृत्य के रूप में अभिव्यक्त होता है. इसी जनजाति में प्रचलित प्रथा है ये पाल बहिर्विवाही है

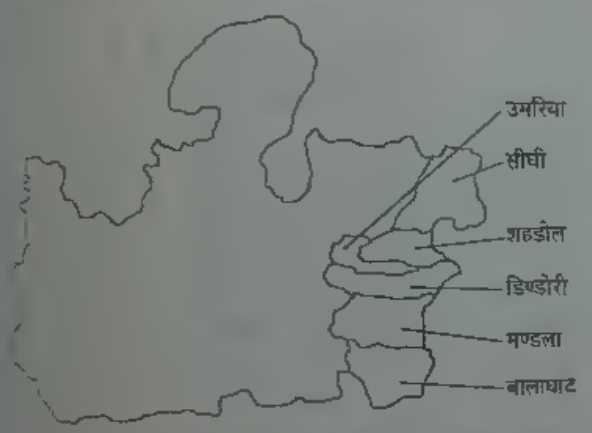
आर्थिक जीवन–भील एक निर्धन जनजाति है इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है इसके अतिरिक्त खेतो मे मजदूरी पशुपालन, जगली वस्तुओं का क्रय तथा शहरों में भवन निर्माण में दिहाड़ी मजदूरी पर काम कर अपनी जीवन नैया चलाते हैं भीलों में आर्थिक विपन्नता का एक प्रमुख कारण आय से अधिक व्यय करना है भील वधू मूल्य रूपी प्रथा से बँधी शराब के अथाह सागर में डूबती जा रही जनजाति है, ऊपर से साहूकारों और महाजनों द्वारा दिए गए ऋण का बढ़ता ब्याज इस समन्दर में बवण्डर का काम करता है जिसके कुचक्र से यह लोग कभी बाहर नहीं निकल पाते भीलों की आपराधिक प्रवृत्ति का भी एक प्रमुख कारण यह है कि सामान्य आय से अपनी देनदारियाँ पूरी नहीं कर पाते फलत धन अर्जन की लालसा में गैर वैधानिक तथा अनैतिक कामों मे भी सलिप्त हो जाते है

धर्म–भील जनजाति 'आत्मावाद' में विश्वास रखती है यह आत्माओं, प्रेतों तथा अलौकिक शक्तियों में विश्वास रखते है भील जनजाति में जादू पर भी विश्वास किया जाता है यह कई जादुई क्रियाओं से अपने देवी देवताओं को प्रसन्न करने का प्रयास करते है यह पशु बलि भी चढ़ाते है भीलो पर हिन्दू सस्कृति का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है यह महादेव राम गणेश, हनुमान इत्यादि की पूजा करते हैं तथा दीपावली दशहरा, होली जैसे पर्व बडे हर्षोल्लास से मनाते हैं

अन्य विशेषताएँ–भील जनजाति में सामाजिक सगठन के चार रूप प्रमुख रूप से पाए जाते हैं यह है–अटक ओदख, गोट तथा कुल इन सगठनों का आधार पूर्वज और उसक रक्त सम्बन्धी होते हैं भील जनजाति की नृत्य को 'भिल्ली कहा जाता है भील जनजाति में घूमर नृत्य तथा गौरी नृत्य जैसे लोक नृत्य प्रचलित है जो इनके मनोरजन का साधन बनते हैं भील लोग स्वभाव से 'गुस्सैल होते हैं क्रोध में यह कोई उचित अनुचित में अन्तर नही करते प्रदेश मे कई मामले ऐसे प्रकाश में आए है जब छोटी-छोटी बातों पर भीलों ने प्रशासन को सशस्त्र चुनौती दी है पिछले कुछ दशकों से ईसाई मिशनरीज के सम्पर्क के आने के बाद भीलों के सामाजिक परिदृश्य में बदलाव देखा जा रहा है स्वर्गीय मामा बालेश्वर दयाल ने झाबुआ के आदिवासियों के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था जिसके सुफल इस क्षेत्र में स्पष्ट देखे जा सकते है

बैगा जनजाति

बैगा मध्य प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में निवास करने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति है यह मण्डला, बालाघाट, शहडोल तथा सीधी में पाई जाती है. बैगा मूलत दक्षिण भारतीय जनजाति है यद्यपि बैगा को द्रविड प्रजाति की आदिम प्रजाति कहा जाता है, किन्तु यह भूमिया जनजाति की एक उपशाखा है कालान्तर में बैगाओं की अपनी एक स्वतत्र पहचान है यहाँ तक की इसकी छ उपजातियाँ हैं, जोकि इस प्रकार हैं–1. बिझवार 2. नरोतिया 3. भरोतिया 4. नाना 6. नाहर 6. काढमैना, किन्तु मानव-शास्त्रीय आधार पर सिर्फ नरोतिया और भरोतिया को ही महत्व दिया जाता है बैगाओं में बिझवार वे लोग हैं जिनकी स्वय की जमीन है बैगाओं के इन जमीदारों को राजवशी सम्मान दिया जाता है मण्डला जिले में विशेषकर बैगाचक नामक स्थान पर बैगाओं की सर्वाधिक संख्या है यहाँ बैगाओं का एक समूह पुरोहित का कार्य भी करता है



बैगा : भौगोलिक वितरण

मध्य प्रदेश के पाँच जिलों मण्डला, डिण्डोरी, शहडोल, उमरिया और बालाघाट में निवास करने वाली इस विशेष पिछड़ी जनजाति के विकास के लिए राज्य सरकार ने प्राथमिकताएँ तय की है इसके अनुसार खाद्य सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, अधोसरचना विकास और रोजगारमूलक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है उक्त पाँच जिलों के 1143 ग्रामों में रहने वाले बैगा सदस्यों को शासकीय सेवाओं में भी योग्यतानुसार लेने के प्रयास किए जा रहे हैं हाल ही में प्रदेश सरकार ने इन्हे तृतीय और चतुर्थ श्रेणी पदों पर नियुक्त करने के लिए निर्धारित भर्ती प्रक्रिया से मुक्त रखने का निर्णय लिया है

बैगाओं का रग काला व त्वचा शुष्क और रूखी होती है इनके केश लम्बे होते है, जिन्हे यह चोटी की तरह बाँध लेते है इनका कद अन्य जनजातियों की अपेक्षा कुछ लम्बा होता नाक चपटी होती है इनके आवास का आकार 8–13 फुट चौड़ा तथा 20–30 फुट तक लम्बा होता है घर की दीवारें बाँस तथा मिट्टी की बनाई जाती हैं तथा छत पर घास-पूस बिछाया जाता है

बैगा अत्यल्प वस्त्र धारण करते हैं पुरुष कमर के भाग में हतोप्स (कमीज) तथा निचले भाग में पटका लगोटी पहनते हैं विशेष अवसरों पर इन्हें जैकट तथा फेंटा 'साफा' पहने भी देखा जाता है पुरुष हाथ में कडे पहनते हैं वहीं स्त्रियों का भी आभूषणों के प्रति अत्यधिक आकर्षण होता है वस्त्र विन्यास में यह शरीर पर केवल एक साडी धारण करती है इनकी पत्नियाँ धोती पहनती हैं तथा उसी में अपने बच्चों को बाँध लेती हैं इनके बच्चे प्राय नग्न ही रहते हैं

बैगा जनजाति अपने भोजन में मोटे अनाज कदमूल फल तथा मास खाते हैं किन्तु इनमें गौमास खाना वर्जित है इनके सुबह का भोजन 'बासी' होता है अर्थात् पिछले दिन के बचे खाने को ही यह अगली सुबह खाते हैं दोपहर में 'पेज' नामक खाद्य पदार्थ विशेष है मोटे आटे में नमक डालकर एक घोल तैयार किया जाता है जिसे 'पेज' कहते हैं शाम का मुख्य भोजन 'बियारी' है, यह चावल व सब्जी का मिश्रण है इस प्रकार बैगाओं का सुबह, दोपहर और शाम का भोजन क्रमश बासी, पेज व बियारी कहा जाता है इनके यहाँ आतिथ्य सत्कार में 'पेज' प्रस्तुत किया जाता है

बैगाओं की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि अथवा झूम खेती है जिसे यह 'बेवार' या 'पोंडू' कहते हैं किन्तु कृषि से यह इतना भी नहीं कर पाते कि अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें इनकी मान्यता है कि धरती इनकी माता है अत उसकी छाती पर हल चलाना पाप है इस तरह यह हल के बिना ही कृषि करते हैं, किन्तु 'कुल्हाडी' का प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है कृषि के अतिरिक्त यह जगली कदमूल फल का सग्रहण तथा अखेट भी करते है मत्स्य आखेट इनके मनोरजन का साधन होता है

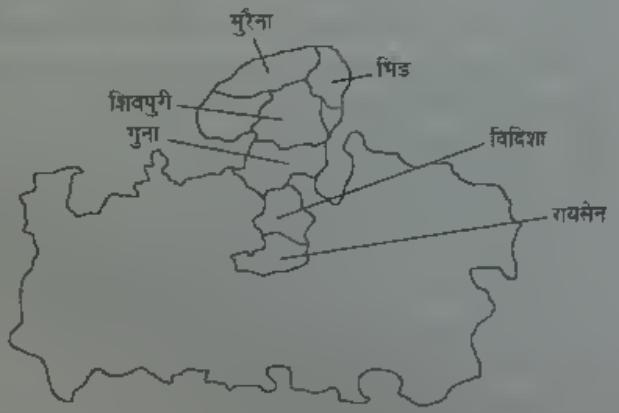
बैगा जनजाति के परिवार पितृसत्तात्मक अथवा पितृ-वशीय होते हैं इनमें सयुक्त परिवार पाए जाते हैं इनका समाज पुरुष प्रधान है तथा पुरुषों द्वारा बनाए गए नियम विनिमय ही अन्तिम तथा अधिमान्य होते है बैगा जनजाति मे पचायत व्यवस्था भी होती है जिसमें पाँच प्रकार के पच होते है, जोकि इस प्रकार हैं–1. मुकदम 2. दिवान 3. समरथ 4. कोटवार 5. दवार मुकदम गाँव का मुखिया होता है बैगाओ मे समगोत्रीय विवाह वर्जित है विवाह का प्रस्ताव लडकी वालों की तरफ आता है इनमें विधवा विवाह तथा वधू मूल्य का प्रचलन तो है किन्तु बाल-विवाह नही किए जाते हैं बैगा जनजाति में विवाह की छ प्रथाएँ प्रचलित हैं–1. मगनी विवाह या चढ विवाह 2. उठवा विवाह 3. चोर विवाह 4. पैठूल विवाह 5. लम सेना 6. उधरिया

यह जनजाति धर्म तथा जादू में विश्वास रखती है 'साज वृक्ष' इनका पवित्र वृक्ष तथा इस पर रहने वाले 'बूढा देव' इनके प्रमुख देव है इन्हें मुर्गे, नारियल तथा मदिरा चढाई जाती है गाँव की भूमि के देवता 'ठाकुर देव' है

इनके अतिरिक्त बीमारियों से सुरक्षा के लिए दुल्हा देव तथा सर्प की भी पूजा की जाती है बैगाओं का जादू-टोने में भी अधविश्वास देखा जाता है इनके शमशान गाँव से बाहर होते हैं तथा जादू-टोने की गतिविधियाँ भी गाँव से बाहर ही की जाती हैं कतिपय विशेष अवसरों पर यह सुअर की बलि भी चढाते है. बैगाओं की मान्यता है कि शेर इनका छोटा भाई है जिसे यह तन्त्र-मन्त्र विद्या से वश में करने का यत्न करते हैं. यह अपनी बीमारियों का इलाज किसी डॉक्टर हकीम से नहीं बल्कि झाड फूँक करने वाले 'ओझा' से कराते हैं बैगाओं के प्रमुख नृत्य करमा, सैला, परधोनी तथा फाग हैं अत्यधिक सादा जीवन जीने वाले बैगा शिक्षा की दृष्टि से आज भी बहुत पिछडे हुए हैं

सहरिया जनजाति

सहरिया मध्य प्रदेश की विशेष पिछडी जनजातियों में से एक है. यह प्रदेश के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र विशेषकर गुना, ग्वालियर. यह लोग शिवपुरी, भिण्ड, मुरैना, विदिशा, रायसेन और बुन्देलखण्ड में निवास करते है सहरियाओं का सर्वाधिक घनत्व ग्वालियर समाग में है



सहरिया : भौगोलिक वितरण

सहरिया कोलरियन परिवार की जनजाति है पारसी भाषा में 'सहर' का अर्थ जगल होता है, चूँकि यह लोग जंगलो में निवास करते हैं, अत इन्हे सहरिया कहा जाता है एक अन्य धारणा के अनुसार सहरिया शब्द की उत्पत्ति सह + हरिया से हुई है जिसका अर्थ 'शेर के साथ' माना जाता है वस्तुत इस जनजाति का निवास स्थल जगल ही रहा है इसलिए इसकी उत्पत्ति के लिए लगाए जा रहे कयास अथवा प्रचलित धारणाएँ भी इसे किसी-न-किसी तरह जगल से सम्बद्ध करती हैं

सहरिया जनजाति के लोगों का कद मध्यम ऊँचा तथा रग साँवला होता है मद्यपान की अधिकता ने इन्हें शारीरिक रूप से दुर्बल व कमजोर बना दिया है इनके पहनावे पर राजस्थानी वेशभूषा का प्रभाव स्पष्ट देखा जाता है सहरिया पुरुष धोती, रंगीन कमीज और साफा पहनते हैं जबकि स्त्रियाँ लहँगा, घाघरा, लुगड़ा, पेट्या, सलूका पहनती है स्त्री एव पुरुष दोनों ही आभूषण प्रिय होते है स्त्रियाँ अक शरीर पर गुदना करवाती है ऐसी मान्यता है कि यह मृ पश्चात् भी शरीर के साथ रहता है सहरिया लोग शारीरि स्वच्छता पर अधिक ध्यान नहीं देते है

सहरिया समतल मैदानों पर समूह में रहते है इनकी बसाहट एक विशेष प्रकार की होती है जिसे 'सहराना' कह जाता है 'सहराना' के अन्तर्गत कई लोगों के मकान समू के रूप में एक-दूसरे से चिपके हुए बनाए जाते है इन सभी मकानों पर एक लम्बी छत बनाई जाती है इन मकानों के मध्य में 'बगला' नामक स्थान होता है जो एक प्रकार की धर्मशाला अथवा सामुदायिक भवन होता है सहरियाओं के प्रत्येक परिवार में एक मुखिया होता है जिसे 'सहराना' का मुखिया पटेल कहलाता है पटेल वशानुगत होता है. समाज और पटेल द्वारा आदेशित नियमों तथ परम्पराओं का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने वाले को प्रधान कहा जाता है सहरियाओं में पारिवारिक इकाई कुटुम्ब कहलाती है इनके परिवार पितृसत्तात्मक अथवा पितृवंशीय होते हैं

सहरिया जनजाति की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि, कृषि मजदूरी, वनोपज सग्रह है न्यूनतम आवश्यकता के साथ जीवनयापन करने वाली यह जनजाति पशुपालन कन्दमूल, फल एकत्रित कर तथा मत्स्य आखेट कर थोडे बहुत ससाधन जुटा पाती है सरसों का तेल परम्परागत शिल्प तथा छुट्टी मजदूरी भी इनके आर्थिक स्रोत है इनका एक प्रमुख परम्परागत कार्य जड़ी-बूटियों का सग्रहण है यह लोग जडी-बूटियों की पहचान करने में निपुण होते है तथा शहरो व गाँवों के हाट बाजारों में इनको बेच कर कुछ मुद्रा कमा लेते हैं वैसे तो सहरिया लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, किन्तु ऋणग्रस्तता के चलते यह कई स्थानों पर अघोषित बन्धुआ मजदूरी मे लगे हुए हैं

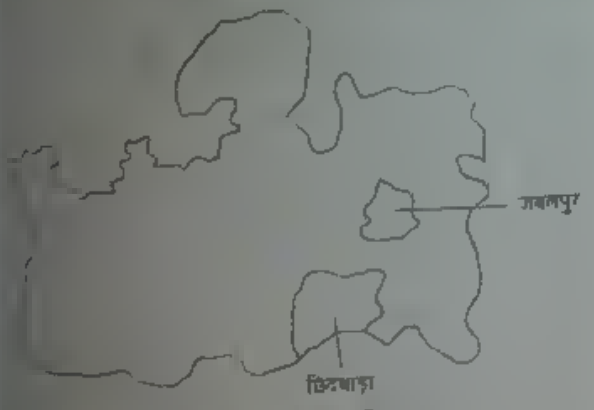
सहरिया जनजाति का धर्म में अटूट विश्वास होता है यह जनजाति हिन्दू धर्म से अत्यधिक प्रभावित है तथा इनमें हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना व्यापक रूप से की जाती है हिन्दू पर्व व त्यौहार दशहरा, दीपावली होली रक्षा बधन, नवरात्री, तथा मकर सक्राति इत्यादि सहरिया लोगों द्वारा मनाए जाने वाले प्रमुख त्यौहार हैं यह जनजाति जादू भूत-प्रेत आत्मा तथा 'टोना-टोटका' में भी विश्वास रखती है

सहरियाओं की अपनी कला और सस्कृति के लिए विशिष्ट पहचान है इनके गीत, कथाएँ, पहेलियों और कहावतें इनकी लोक सस्कृति की परिचायक हैं कथात्मक पहेलियों के साथ-साथ गोठलीला, रामजन्म जानकी विवाह पाडवों की कथा, लगुरिया फागर सिया, गारी, रामायणी रागिनी, बाजनागीत ख्याल चकिया, गीत कन्हैया राया सगडावत-बगडावत की लोक कथाएँ आदि बच्चे बूढो के मुँह से सुनी जा सकती है

सहरिया लोग आलस्य प्रवृत्ति के होते है तथा उस समय तक कार्य नहीं करते जब तक कि स्थिति अत्यधिक गम्भीर न हो जाए ये प्राय स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह होते है इस जनजाति के लिए इण्डियन काउन्सिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की शाखा आर एम आर सी के तत्कालीन निदेशक डॉ रविशकर तिवारी ने कहा था कि सहरिया लोगों में क्षय रोग साधारण जनता की तुलना में कई गुना अधिक विद्यमान है यह इस भ्रॉति को तोडता है कि जन-जातियों में क्षयरोग कम पाया जाता है

भारिया जनजाति

भारिया द्रविडियन अर्थात् कोलोरियन परिवार की जनजाति है मूलत गॉड जनजाति की यह शाखा 'भूमिया' नाम से भी जानी जाती है भारिया गोंडों को अपना अग्रज अथवा बडा भाई मानते है भारिया शब्द का वास्तविक अर्थ ज्ञात नहीं है ऐसी जनश्रुति है कि अज्ञातवास में जब कौरवों के गुप्तचर पाडवों को ढूँढ रहे थे तब अर्जुन ने अभिमत्रित भर्रधास के शस्त्र देकर इन्हें गुप्तचरों से लडने को भेज दिया उन्होंने विजय प्राप्त की और तब से इन्हें भारिया नाम मिला ऐसा कहा जाता है कि यह जनजाति भार ढोने का काम करती थी इसीलिए इसे 'भारिया' कहा गया राजा कर्णदेव को भारिया अपना पूर्वज मानते हैं



भारिया : भौगोलिक वितरण

भारिया जनजाति मध्य प्रदेश के छिन्दवाडा तथा जबलपुर जिलों में निवास करती है भारिया प्रदेश की विशेष पिछडी जनजाति में शामिल है भारिया लोग मूलत सतपुडा और बाघगढ के निवासी हैं यद्यपि सबसे अधिक भारिया लोग जबलपुर में पाए जाते है तथापि छिन्दवाडा का पातालकोट नामक स्थान भारियाओं का प्रसिद्ध निवास स्थल है पातालकोट मध्य प्रदेश का एक निचला क्षेत्र है जो चारों ओर से पहाडियों से घिरा हुआ है यहाँ की जनसख्या का 90 प्रतिशत भारिया जन हैं पातालकोट के भारिया आज भी आधुनिक सभ्यता से पूरी तरह अपरिचित है यहाँ तक कि 1981 की जनगणना में पातालकोट के भारिया को 'जगलियों के भी जगली' कहा गया था

भारिया लोगों का रंग काला, मध्यम कद, छरहरा बदन, आँखें छोटी व काली, नाक चौडी, दाँत बारीक तथा होंठ पतले होते है वस्त्र विन्यास में पुरुष धोती-कुर्ता बडी पहनते है और सिर पर पगडी 'पगिया' बाँधते हैं स्त्रियाँ हरे, लाल रंग की सेदरी साडी पहनती है यह हल्की धातु के आभूषण धारण करते हैं भारिया जिस स्थान पर रहते हैं उसे 'ढाना' कहा जाता है एक ढाना दो से लेकर पच्चीस घरों तक का समूह हो सकता है इनके घर की दीवारें मिट्टी, बाँस और लकडी की बनी होती हैं, छत पर घास, फूँस और चारा बिछा दिया जाता है इनके मकान दो पक्तियो में 'शृखलाबद्ध' होते है

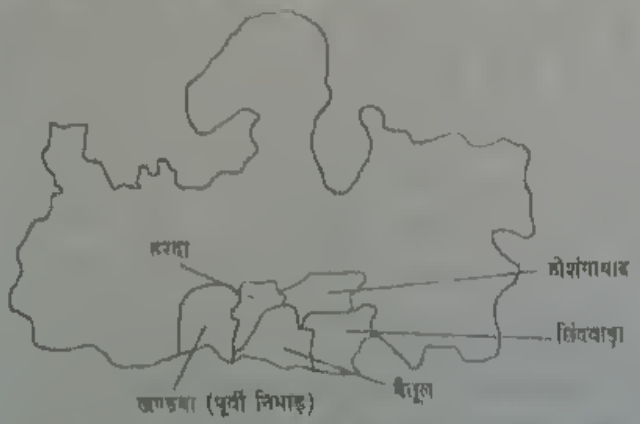
भारिया जनजाति मे समगोत्रीय विवाह वर्जित है मामा-बुआ के लडके-लड़कियो में विवाह को प्राथमिकता दी जाती है भारियों में विवाह के चार प्रकार पाए जाते हैं– 1. मँगनी विवाह 2. लमसेना 3. राजी बाजी विवाह 4. विधवा विवाह भारियाओं मे चूडी प्रथा भी पाई जाती है भारियों का मुख्य भोजन पेज' है वर्षा ऋतु में यह महुआ और आम की बीजी की रोटी खाते हैं यह मासभक्षी होते हैं इनकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है भारियाओं मे 'दहिया खेती' का प्रचलन है, किन्तु अब स्थायी खेती भी की जा रही है कृषि के अतिरिक्त आखेट मजदूरी तथा वनोपज सगृहीत कर अपना जीवनयापन चलाते हैं टोकरियाँ बुनना तथा जडी-बूटियों का सग्रहण भी इनका पेशा है भारिया लोग कुशल शिल्पी भी होते हैं यह बाँस तथा लकडी की सामग्री से कई कलात्मक वस्तुएँ निर्मित करते हैं

भारिया जनजाति का सामाजिक सगठन प्रजातात्रिक है, किन्तु कही-कही इनमें परम्परावाद के लक्षण अथवा अवशेष दिखाई पडते हैं समाज का मुखिया पटेल कहलाता है तथा अन्य प्रमुख सदस्य भुमला पडिहार और कोटयार होते हैं भारिया जन धर्म में आस्थावान हैं इन पर हिन्दू धर्म का प्रभाव अत्यधिक है इनके देवताओं में बूढा देव, दूल्हा देव बरुआ, और नागदेव प्रमुख है बडा देव बघेश्वर, मुठवा, भीमसेन देवता आदि इनके जातीय देव है यह दिवाली होली के अतिरिक्त बिदरी पूजा, नवाखानी तथा जवारा, त्यौहार मनाते है कला-सस्कृति की दृष्टि से यह जनजाति सम्पन्न है यह अपना मनोरजन लोककथा, सगीत तथा नृत्य से करते हैं इनक प्रमुख नृत्य-भाडम, सैतम करमा, सैला इत्यादि है

कोरकू जनजाति

कोरकू मध्य प्रदेश की एक प्रमुख जनजाति है यह जनजाति प्रदेश के होशगाबाद बैतूल, छिन्दवाडा, हरदा तथा पूर्वी निमाड जिलों मे निवास करती है कोरकू का शाब्दिक अर्थ मनुष्य का समूह है कोरकू मुण्डा या कोलोरियन जनजाति की प्रशाखा है इन्हें राजपूत वर्ग का माना जाता है

शारीरिक बनावट—कोरकू शारीरिक रूप से सुगठित होते है इनका रग काला, आँखें काली, चपटी नासिका, नथूने फूले हुए, चेहरा गोल तथा होठ मोटे होते है यद्यपि इनकी नासिका चौडी होती है, किन्तु यह नीग्रो प्रजाति से कुछ हटकर है इनके गाल ऊपर की ओर उठे होते है



कोरकू : भौगोलिक वितरण

वेशभूषा एवं आभूषण आर्थिक रूप से पिछड़ी जन जाति के होने के कारण कोरकूओं का पहनावा अत्यधिक साधारण है पुरुष कुर्ता, सूती बण्डी और घुटनो तक सफेद धोती पहनते है यह सिर पर अगोछा या पगडी पहनते है श्रद्धास्वरूप यह गले में चाँदी या ताँबे का छोटा तावीज भी पहनते है पिछडेपन के कारण इनके बच्चे सामान्यतया नग्न रहते है कोरकू स्त्रियाँ विभिन्न रगों के लुगड़े पहनती है कोरकू स्त्रियाँ आभूषण प्रिय भी होती है यह चाँदी, काँसे व पीतल से बने गहने और लाल, नीले, पीले, हरे रग की मोतियों से बनी मूँगा मालाएँ और पोत मालाएँ पहनती है

सामाजिक स्तरण/उपजातियाँ--कोरकू जनजाति की चार उपजातियाँ है 1. पोथरिया 2. रुमा 3. दुलारया 4. बोवई या बोन्डई ऐसे कोरकू जो भू-स्वामी होते है, राज कोरकू कहे जाते है सामान्य कोरकू पोथरिया कहलाते है

अर्थव्यवस्था—कोरकू मुख्यत स्थानान्तरित कृषि करते है इसके अतिरिक्त शिकार, मछली पकडना, पशुपालन, तेदूपत्ते तथा अन्य वनोपज के सग्रहण से अपना जीवन-यापन चलाते है यह जगलों में ठेकेदारो के पास मजदूरी का काम भी करते है कृषि तथा अन्य व्यवसायों मे उन्नत तकनीक का प्रयोग न कर पाने के कारण इनका आर्थिक जीवन स्तर ज्यों-का-त्यों बना हुआ है

विवाह—इस जनजाति मे सभगोत्रीय विवाह नही किए जाते है इनमें वधू मूल्य का प्रचलन अवश्य है, किन्तु यह राशि पचायत को दे दी जाती है कोरकूओं मे कई प्रकार के विवाह प्रचलित है, जिनमे प्रमुख इस प्रकार है -लमझना विवाह (घर दामाद प्रथा), चिथोडा विवाह, राजी बाजी विवाह, विधवा-विवाह, हठ विवाह अन्तर्विवाह आदि

भोजन—कोरकू मुख्यत बाजरा, कुटकी, सावा, कोडो, मक्का ज्वार गेहूँ, तुअर, तिवडा, तिल्ली पसद करते है कोरकू साग सब्जियों में अगाडी, चने का पाला, गिलकी लोरिया, कद्दू, ककडी तथा लौकी खाते है, जबकि पहाड़ी क्षेत्रो मे रहने वाले कोरकू भाजी पाला पसद करते है इसके अतिरिक्त कन्दमूल, फल तथा मास भी इनका प्रिय भोजन है

अन्य विशेषताएँ—कोरकू एक सीधी सादी जनजाति है जिसे आसानी से ठगा जा सकता है यह शिक्षा की दृष्टि से भी पिछडी हुई है यह जनजाति हिन्दुओं से अत्यधिक प्रभावित है और इनके पूजनीय देवता महादेव और चन्द्रमा है, जबकि इनके गाँवों के देवता डोगर देवता मुरवा देव है इसके अलावा यह शिव उपासक भी होते है यह सामान्यत वे सभी पर्व त्यौहार मनाते है जो हिन्दुओं के है इस जनजाति मे पचायत प्रथा होती है तथा पचायत का प्रधान परम्परागत होता है पाडियार और भोमका इनके अति सम्मानित व्यक्ति होते है यह धर्म के साथ साथ जादू में भी विश्वास करते है और अपनी कई समस्याओं का समाधान जादुई क्रियाओं में ढूँढते है इस जनजाति की एक दिलचस्प बात यह है कि आर्थिक, सामाजिक रूप से पिछडी होने के बावजूद शासन द्वारा क्रियान्वित विकास कार्यों मे रुचि प्रकट करने वाली यह प्रमुख जनजाति है तथा इसने विभिन्न योजनाओ और क्षेत्रीय बैंकों द्वारा दिए गए ऋणो का सही उपयोग किया है

बंजारा जनजाति

बजारा भारत की एक प्राचीन यायावर जनजाति है यह एक घुमन्तू जनजाति है, किन्तु प्रदेश के कुछ क्षेत्रो जैसे -निमाड, मालवा तथा मण्डला आदि मे यह स्थाई रूप से रहने वाली है बजारे मूलत राजस्थान के माने जाते है यह स्वयं को राजपूतों का वशज मानते है प्रारम्भ में बजारे व्यापारिक कार्य किया करते थे जिसे 'बालद' कहते है यह राजपूत राजाओं की शान में गीत व नृत्य भी किया करते थे

बजारा लोगों के गाँव की बसावट को 'टाडा' कहा जाता है यह गाँव से थोडी दूर अपना डेरा लगाते है इनके मकान पक्तिबद्ध होते है किसी टाडे का प्रधान अथवा सरदार, नायक कहलाता है जिसका आदेश सभी के लिए बाध्यकारी होता है नायक टाडे का सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है जिसके पास समाज के अधिकार सचित होते है बजारा जनजाति में पटेल सरपच का पद भी 'नायक' ही सँभालता है

बजारे सिख धर्म से सर्वाधिक प्रभावित होते है यह गुरुनानक देव और गुरु ग्रथ साहब के अनुयायी है इसके अतिरिक्त यह बाबा रामदेव, राम, कृष्ण, दुर्गा, शिव आदि देवी देवताओं की भी पूजा करते है इनके त्यौहार सामान्यत हिन्दू धर्म से लिए गए है जैसे होली, दशहरा, दीपावली आदि बजारो का एक प्रमुख त्यौहार गणगौर है जिसे यह सावन के महीने में मनाते है

बजारो की वेशभूषा व रहन-सहन पर राजस्थानी संस्कृति का प्रभाव परिलक्षित होता है बजारा महिलाएँ अत्यधिक शृगार प्रिय होती है बजारा जनजाति ही कघी की आविष्कारक है अत सहज ही हम सौन्दर्य के प्रति इनके लगाव को समझ सकते हैं स्त्रियाँ शारीरिक रूप से सुन्दर व सुडौल होती हैं इनके चेहरे का आकर्षण एक अन्य विशेषता है रग-बिरगे वस्त्र इन्हें अत्यन्त प्रिय होते हैं पुरुष भी गठीले बदन तथा मध्यम कद के होते है.

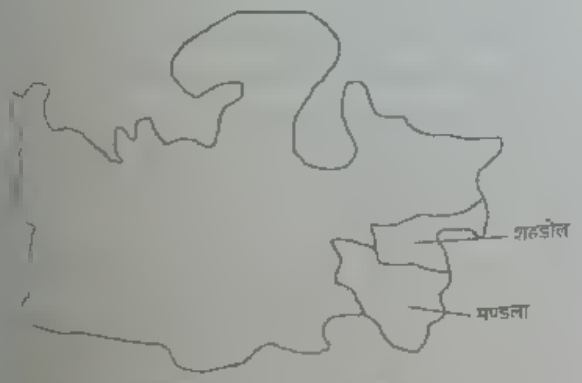
बजारा स्त्रियाँ सर पर लम्बी चैन से बदी चाँदी की टोपली पहनती है साथ ही लम्बी राखडी भी लगाती हैं इनके पूरे हाथों में हाथीदाँत की चूडियाँ होती है तथा पाँव में पीतल की पगडी व झाँझर पहनती है. विवाहित स्त्रियाँ सुहाग चिह्न के रूप मे सिर पर लकड़ी का चुण्डा पहनती हैं शरीर पर गुदना गुदवाना भी इनका प्रमुख आभूषण होता है बजारा स्त्रियाँ कसीदाकारी मे भी निपुण होती हैं

बजारा जनजाति का प्रमुख व्यवसाय पशुचारण है चूँकि यह जनजाति घुमन्तू है अत नए स्थानों पर मजदूरी जैसे कार्यों में भी सलग्न है इस जनजाति में लाखा बजारे की कथा काफी प्रचलित है जिसके पास लाख पशु थे यह जनजाति लाखा बजारे पर गर्व करती है अत इसके द्वारा पशु व्यवसाय को अपनाने का यह भी एक कारण हो सकता है

बजारा एक सस्कृति सम्पन्न जनजाति है प्रारम्भ से ही इसका झुकाव संगीत व नृत्य की ओर रहा है इनके प्रमुख पारम्परिक नृत्यो में तलवार नृत्य तथा डण्डा बेली नृत्य है

अगरिया जनजाति

अगरिया मध्य प्रदेश के मण्डला तथा शहडोल में पाए जाते हैं यह विशेष उद्यम वाली गोधे की उपजनजाति है



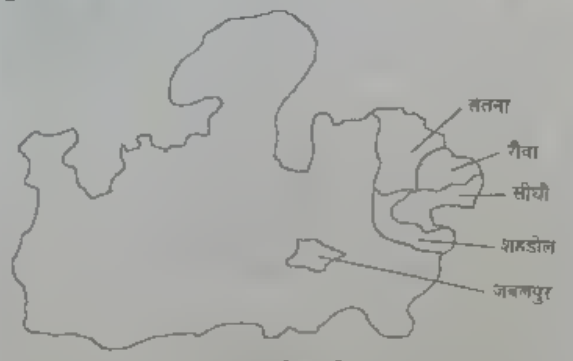
अगरिया : भौगोलिक वितरण

अगरियाओं का परम्परागत व्यवसाय लोहा गलाना है जिस प्रकार प्राचीन काल में असुर जनजाति कोलो के क्षेत्र में लुहार का कार्य सम्पन्न करते थे, ठीक उसी तरह अगरिया गोंडों के क्षेत्र के आदिवासी हैं लुहार हैं ऐसा माना जाता है कि आर्यों के आने से पूर्व ही लोहा गलाने के काम पर बइगा और अगरियों का एकाधिकार था अगरिया लोगो ने लौह अयस्क का अपनी स्थानीय भाषा में समूहन कर दिया है मडला जिले के लौह अयस्क को छावरिया, भावरिया, भाविया, पोडी, चरकी और जाक वर्गों में बाँटा है इस जनजाति के लोग लौह धातु से खेती के औजार, कुल्हाडियाँ और हसिया बनाने मे कुशल होते है

अगरिया जनजाति के प्रमुख देवता 'लोहासूर' हैं जिनका निवास धधकती हुई भट्टियों मे माना जाता है अगरिया लोग अपने देवता को काली मुर्गी की भेंट चढाते हैं मार्ग शीर्ष महीने दशहरे के दिन तथा फाल्गुन मास में लोहा गलाने में प्रयुक्त यत्रों की पूजा की जाती है इनका प्रिय भोजन सूअर का मास है, जबकि उड़द की दाल को यह पवित्र मानते है इसके अतिरिक्त मोटे अनाज और सभी प्रकार का मास भक्षण भी इनके द्वारा किया जाता है इनमें गुदने गुदवाने की प्रथा प्रचलित है विवाह मे वधू शुल्क लिया जाता है, यह किसी भी सोमवार, मगलवार या शुक्रवार को सम्पन्न हो सकता है विवाह मे उडद की दाल का प्रयोग शुभ समझा जाता है इनमे विधवा विवाह की प्रथा पाई जाती है

कोल जनजाति

कोल मध्य प्रदेश के विध्य कैमूर श्रेणियों के मूल निवासी है तथा रीवा को अपनी रियासत बताते हैं यह रीवा, सीधी, सतना, शहडोल और जबलपुर में पाए जाते हैं कोल जनजाति का पूर्व मूल निवास रीवा के बरदीराजा क्षेत्र के 'कुराली' को माना जाता है यह जनजाति मुण्डारी अथवा कोल वर्ग की प्रमुख जनजाति है—यह आस्ट्रिक परिवार की जनजाति है जिसे मेक्समूलर ने कोल या 'कोलारियन' कहा है कोल अत्यन्त प्राचीन जनजाति है जिसका पौराणिक ग्रन्थों में भी उल्लेख मिलता है ऋग्वेद की कोल्हति जनजाति सम्भवत आज की 'कोल' जनजाति ही है इसके अतिरिक्त मत्स्य पुराण, अग्निपुराण, विष्णु पुराण, हरिवश पुराण, महाभारत तथा रामायण में भी कोल जनजाति का



कोल : भौगोलिक वितरण

उल्लेख मिलता है मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कोल शबरी को अपनी 'माँ' मानते हैं उल्लेखनीय है कि रामायण में कोल-भीली का उल्लेख किया गया है

कोल की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानो में मतैक्यता का अभाव है कतिपय विद्वानों का मानना है कि कोल शब्द का प्रादुर्भाव 'कोला' से हुआ है दूसरी धारणा यह तर्क देती है कि इस शब्द की व्युत्पत्ति मुण्डारी के 'हो', 'होर' अथवा 'होरो' से हुई है जिसका अर्थ है 'मानव' जो कालान्तर में 'कोरो', 'कोलो या कोल से पहचाना गया.

कोल लोगों का पूर्वज चन्द्रवंश का गान्धार पुत्र कोल' है. ऐसी किवदती है कि चन्द्रवंश के पचम नरेश ययाति ने राज्य को अपने पाँच पुत्रो में बाँट दिया था. उनमें से एक के वशज तुरवसु दक्षिण में बस गए उनकी दसवीं पीढी में पाँच पुत्र हुए जिनके नाम पर गान्धार, केरल, चोल, पाण्ड्य और कोल यह पाँच देश अस्तित्व में आए, यह 'कोल' राजा ही कोलों के पूर्वज है

कोल जनजाति के दो मुख्य उपवर्ग हैं–1. रौतिया, 2. रौतले इनके अतिरिक्त भडतिया, दशोरा, मडनहा, कगवारिया, काठोतिहा, मवासी, थाकुरिया रैवरिया और विन्ज अन्य प्रमुख उपवर्ग है यह जनजाति धर्म मे अटूट विश्वास रखती है तथा उसकी धार्मिक क्रियाओं पर हिन्दू सभ्यता व सस्कृति की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है यह लोग सूर्य, चन्द्र, इद्र, पवन तथा गगा-यमुना आदि नदियो तथा हिन्दू देवी-देवताओ की पूजा करते हैं इसके अलावा ठाकुर देव, ठकुराइन दाई, ज्वालामुखी, शारदा माता, बघोसर, भैरव बाबा, बैरागी बाबा, घमसान देव, अहीरा बाबा, सन्नासी देव प्रमुख देवी-देवता हैं इनमें जन्म से विवाह तक के सस्कार हिन्दू रीति-रिवाजो के अनुसार ही सम्पन्न होते है मृत्युपरान्त यह दो प्रकार से अन्तिम सस्कार करते हैं, जैसे–किसी बीमारी से मरे व्यक्ति का दाह, जबकि सामान्य रूप में मरने पर दफनाया जाता है इनके प्रमुख त्यौहार होली, नवदुर्गा, रामनवमी, तीज और दशहरा है यह सगीत व नृत्य प्रिय होते हैं तथा अनेक वाद्ययत्रों के जानकार होते हैं इस जनजाति का दहका नृत्य अपनी नृत्य-मुद्राओ और हस्त चालन के लिए प्रसिद्ध है

कोल प्राय कच्चे मकानों में रहते हैं अन्य जनजातियों की अपेक्षा यह अधिक वस्त्र पहनते हैं यह आग प्रज्ज्वलित करने हेतु पत्थर की रगड अथवा सेमल की रुई का प्रयोग करते हैं यह लोग माँसाहारी होते है, किन्तु गाय और शेर का मास नही खाते कोलों मे बहुविवाह प्रथा भी देखी जाती है इनमें विधुर किसी विधवा अथवा तलाकशुदा स्त्री से शादी करता है इस जनजाति में वधू मूल्य की प्रथा प्रचलित नही है शायद इसीलिए बहुपत्नी विवाह मे बढोत्तरी हो रही है इनमें पर्दा प्रथा नही होती है, किन्तु पितृ प्रथा पाई जाती है

कोल लोगों के आर्थिक जीवन का आधार मुख्यत कृषि मजदूरी है यह मेहनती लोग होते हैं औद्योगीकरण के बाद यह बडी सख्या में शहरों की ओर पलायन कर उद्योगो में मजदूरी कर रहे हैं कुछ कोल पशुपालन के माध्यम से भी अपनी आजीविका चलाते हैं मदिरापान के कम प्रचलन तथा शिक्षा की ओर बढती रुचि ने इनके जीवन स्तर मे आंशिक सुधार किया है

पारधी जनजाति

पारधी मध्य प्रदेश के कई हिस्सों में पाई जाने वाली जनजाति है पारधी मराठी शब्द 'पारध' का तद्भव रूप है जिसका अर्थ होता है आखेट मोटेतौर पर पारधी जनजाति के साथ बहेलियों को भी शामिल कर लिया जाता है अनुसूचित जनजातियो की शासकीय सूची में भी पारधी जनजाति के अन्तर्गत बहेलियों को सम्मिलित किया गया है

पारधी आखेट मे जाल का प्रयोग करते हैं उनका धार्मिक विश्वास है कि महादेव ने उन्हें वन पशुओं को जाल पकड़ने की कला सिखाकर बन्दूक से पशुओं के शिकार के पाप से बचा लिया है, किन्तु अपवाद स्वरूप इनकी उपजाति 'भील पारधियों' में बन्दूक से शिकार करने मे कोई प्रतिबन्ध नहीं है भील पारधी मुख्यत भोपाल, रायसेन और सीहोर जिलों में निवास करते हैं

उपजातियाँ–पारधियों में अनेक उपजातियाँ पाई जाती है, जो निम्नलिखित हैं–

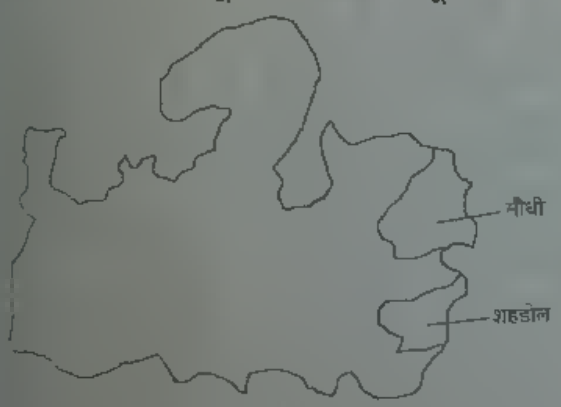
1. **भील पारधी**–ऐसे पारधी जो पशु-पक्षियो का शिकार बन्दूक से भी करते हैं भील पारधी कहलाते हैं
2. **चीता पारधी**–चीतों को पालने व प्रशिक्षित करने वाले पारधी चीता पारधी कहे जाते थे, किन्तु यह लगभग सौ वर्ष पुरानी बात हो गई है ऐसा कहा जाता है कि अकबर व अन्य मुगल बादशाहों के यहाँ चीता पारधी नियमित सेवक हुआ करते थे
3. **फांस पारधी**–ऐसे पारधी शिकार को जाल में फँसा कर पकडते हैं अत इन्हें फास पारधी कहा जाता है
4. **गोसाई पारधी**–गोसाई पारधी गैरिक वस्त्र धारण करते हैं तथा भगवा वस्त्रधारी साधुओ जैसे दिखाई देते है ये हिरणो का शिकार करते है
5. **शीशी का तेल वाले पारधी**–पुराने समाज में मगर का तेल निकालने वाले पारधी शीशी का तेल वाले पारधी कहे जाते हैं
6. **लंगोटी पारधी**–यह वस्त्रो मे केवल लगोटी पहनते हैं इसलिए इन्हें लगोटी पारधी कहा जाता है
7. **बंदर वाला पारधी**–यह बन्दर नचाने वाले पारधी होते हैं
8. **टाकनकार और टाकिया पारधी**–यह सामान्य शिकारी ओर हाँका लगाने वाले पारधी होते हैं

सभी पारधी देवी के आराधक है लगोटी पारधी चाँदी की देवी प्रतिमा रखते हैं यही कारण है कि लगोटी पारधियो की महिलाएँ कमर से नीचे चाँदी के आभूषण धारण नही करती और न ही घुटनो के नीचे धोती इनकी मान्यता है कि ऐसा करने से देवी की बराबरी का भाव आ जाता है

पारधियों के साथ गिने जाने वाले बहेलियों का भी एक उपवर्ग है जो कारगर कहलाता है यह केवल काले रग के हिरणों का ही शिकार करते हैं इनके सभी गौत्र राजपूतों से मिलते हैं, जैसे–सीदिया, सोलंकी, चौहान और राठी आदि

पनिका जनजाति

पनिका अथवा परिका जनजाति मध्य प्रदेश के सीधी तथा शहडोल जिलों मे पाई जाती है यह जनजाति द्रविड प्रजाति की सदस्य है पनिका लोगों की मान्यता है कि कबीर का जन्म जल में हुआ था तथा उनका पालन-पोषण एक परिका (पनिका) जनजाति की महिला द्वारा किया गया था यही कारण है कि अधिकाश पनिका कबीर पंथी होते है तथा स्वय को 'कबीरहा' कहते हैं 'कबीरहा' के अतिरिक्त एक अन्य वर्ग शक्ति (साकत) पनिका का है कबीरहा, मास मदिरा का सेवन नहीं करते हैं तथा कबीर की ही तरह निर्गुण विचारधारा के उपासक होते हैं, जबकि शक्ति पनिका देवी-देवताओ की पूजा करने वाला समूह है



पनिका : भौगोलिक वितरण

ऐसा माना जाता है कि पनिका जाति ने पृथ्वी पर सबसे पहले कपडा बुना आज भी पनिका जाति के सदस्य बुनकर हैं और 'बुनाई' से अपनी आजीविका चला रहे है

मध्य प्रदेश में पनिका जाति को कही अनुसूचित जनजाति और कहीं पिछडा वर्ग मे रखा गया है मध्य प्रदेश के नौ जिलों छतरपुर, दतिया, पन्ना, रीवा, सतना शहडोल, उमरिया सीधी व टीकमगढ में पनिका जाति को अनुसूचित जनजाति के रूप में माना गया है जबकि शेष मध्य प्रदेश में पनिका को पिछडा वर्ग मे रखा गया है

पनिका जनजाति कई गोत्रों में बँटी हुई है जिन्हे 'कुर' कहा जाता है कुर से आशय 'कुली' से है कई कुर मिलकर एक कुरहा' बनता है एक कुरहा में शामिल कुर के लोग आपस में विवाह नहीं करते है इस जनजाति में अंतरागोत्रीय विवाह प्रचलित है वधु मूल्य प्रथा भी इस समाज मे पाई जाती है लमसेना और घुसपैठिया विवाह के साथ-साथ पुनर्विवाह और देवर-भाभी के विवाह की परम्परा भी देखी जा सकती है पनिका समाज में सामान्यत शवों को दफनाया जाता है, परन्तु शक्ति पनिका शवों को जलाते हैं और अस्थि विसर्जन करते हैं

मध्य प्रदेश में पनिका जनजाति शासन की विकास योजनाओ से पूरी तरह लाभान्वित नहीं हो सकी है, इसका मुख्य कारण इस जनजाति को लेकर सरकार की दोहरी नीति है जिसके तहत् पनिका कुछ जिलों मे अनुसूचित जनजाति के रूप में और कुछ जिलों में पिछडा वर्ग के रूप मे दर्ज है इस व्यवस्था से एक ओर जहाँ एक ही जनजाति मे विषमता बढ़ी है वही वर्गीय भेद की समस्या भी बढने लगी है

पनिका लोगो का आर्थिक जीवन मुख्यत कृषि व्यवसाय पर आधारित है निर्माण कार्य तथा ठेकेदारों के अधीन मजदूरी करना, बाँस के बर्तन बनाना इत्यादि भी अल्प अर्थ स्रोत हैं यह कुशल आखेटक भी होते हैं जिसके लिए तीर-धनुष, हँसिया तथा कुल्हाडी आदि का उपयोग करते हैं, पनिका स्त्रियाँ शृंगार प्रिय होती है तथा बहुरगी वस्त्र धारण करती हैं पनिका जनजाति की एक पंचायत होती है जो गाँव के सभी विवादों व समस्याओं के निपटान के लिए उत्तरदायी है पनिका लोगो की अपनी एक विशिष्ट सस्कृति है, जबकि इनके धर्म पर हिन्दू धर्म का व्यापक प्रभाव है हिन्दू देवी-देवताओं के साथ-साथ यह सूर्य, इन्द्र, हनुमान, दूल्हादेव, बूढीमाता, मरहीमाता, हुल्की भाई आदि की पूजा करते हैं

अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के लिए चलाई जा रही योजनाएँ

आश्रम–प्रदेश के वनाचल और दूरस्थ क्षेत्रों में जहाँ शैक्षणिक सुविधा उपलब्ध नही है, आवासीय विद्यालय के रूप मे आश्रम शाला की व्यवस्था अनुसूचित जनजाति के लोगो के लिए की जाती है छात्रावासो के समान ही इनमें निवासरत् विद्यार्थियों को नि शुल्क आवास, भोजन, विद्युत् सुविधा उपलब्ध है आश्रम में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक छात्र/छात्रा को शिष्यवृत्ति प्राप्त करने की पात्रता है बालक को ₹ 350 प्रतिमाह और बालिका को 360 प्रतिमाह की दर से 10 माह के लिए शिष्यवृत्ति की पात्रता है

उत्कृष्ट शिक्षा संस्थान (छात्रावास) योजना–प्रदेश शासन द्वारा मेधावी छात्र/छात्राओ को उत्कृष्ट शिक्षा देने के उद्देश्य से प्रदेश के 19 आदिवासी जिलों मे उत्कृष्ट शिक्षा केन्द स्थापित किए गए है इस योजना को विस्तार देते हुए इस विकासखण्ड मुख्यालयों पर भी उत्कृष्टता शिक्षा केन्द्र खोले गए हैं इन केन्द्रों में विद्यार्थियों को आवासीय सुविधा के साथ वर्ष में ₹ 2000 की स्टेशनरी एव पूरे वर्ष कोचिग सुविधा उपलब्ध कराई जाती है

पोस्ट मैट्रिक छात्रावासो में आगमन भत्ता–इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जनजाति के पोस्ट मैट्रिक छात्रावासों में प्रवेशित विद्यार्थियों को छात्रावास मे प्रवेश के प्रथम वर्ष में ₹ 500 द्वितीय वर्ष मे ₹ 250, तृतीय वर्ष मे ₹ 200

आगमन भत्ते की राशि का भुगतान चैक से किया जाता है इसके अतिरिक्त प्रति विद्यार्थी प्रतिमाह 25 यूनिट की सीमा तक विद्युत् व्यय की राशि का भी भुगतान किया जाता है

निःशुल्क साइकिल प्रदाय योजना–बालिका शिक्षा प्रोत्साहन के लिए कक्षा 9वीं में पढने वाली ऐसी अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओ को जिनके ग्राम में हाईस्कूल नहीं है तथा उन्हें अध्ययन हेतु दूसरे ग्राम जाना पडता है आने-जाने की सुविधा के लिए निःशुल्क साइकिल प्रदाय की जाती है

प्रशिक्षण सह-उत्पादन केन्द्र–कम पढे-लिखे अनुसूचित जनजाति के युवाओ के लिए 09 विभागीय प्रशिक्षण सह-उत्पादन केन्द्र सचालित है इन केन्द्रों में कुल 420 स्थान स्वीकृत हैं, जिनमे लोहारी सुनारी, सिलाई बुनाई राजगिरी, गुडिया बनाना, ब्रश बनाना शीट मेटल रेशम उद्योग, चटाई उद्योग, बेत-बाँस तथा कढाई आदि कुल 12 व्यवसायो में प्रशिक्षण दिया जाता है

मध्याह्न भोजन कार्यक्रम–प्रदेश शासन द्वारा मध्याह्न भोजन कार्यक्रम अन्तर्गत 19 आदिवासी बाहुल्य जिलों के 89 आदिवासी विकासखण्डो में सचालित समस्त शासकीय तथा अनुदान प्राप्त 22,745 प्राथमिक शालाओं मे अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थियो को प्रतिदिन पालक शिक्षक सघों के माध्यम से मध्याह्न भोजन का वितरण किया जा रहा है

भारत सरकार से खाद्यान्न निःशुल्क प्राप्त होता है जिसको पकाकर दिए जाने में दाल/सब्जी/पारिश्रमिक एव ईंधन सहित ₹ 1.27 पैसे गेहूँ प्रचलन क्षेत्र में तथा ₹ 1.14 पैसे चावल प्रचलन क्षेत्र में व्यय किया जा रहा है इसमें ₹ 1 की प्रतिपूर्ति भारत सरकार से एक शेष की पूर्ति प्रदेश शासन से की जाती है

शिक्षा के लिए भोजन कार्यक्रम–बड़वानी तथा झाबुआ जिले की कक्षा 1 से 5 तक (शिक्षा गारटी शालाओं को छोडकर) के छात्र/छात्राओं को सुबह के नाश्ते में इडिया मिक्स 'रेडी टू ईट फॉर एजूकेशन कार्यक्रम फरवरी 2004 से प्रारम्भ किया गया है इस योजना के अन्तर्गत बडवानी तथा झाबुआ जिलों में विभाग द्वारा सचालित 2825 प्राथमिक शालाओं को कक्षा 1 से 5 तक की कुल 2,19,254 छात्र/छात्राओं का 200 दिवसों के लिए सुबह का नाश्ता रेडी टू ईट 100 ग्राम प्रति हितग्राही के मान से विश्व खाद्य कार्यक्रम द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है

उत्कृष्ट विद्यालय विभाग के 6 जिला मुख्यालयों पर तथा 76 विकासखण्डों में उत्कृष्ट विद्यालय प्रारम्भ किए गए हैं विद्यालयों में कक्षा 9वीं में प्रावीण्यता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है इन विद्यालयों में सुसज्जित प्रयोगशालाएँ समृद्ध पुस्तकालय, आवश्यक खेल सामग्री सहित अनुभवी एव सुयोग्य आचार्य का मार्गदर्शन तथा विद्वान् शिक्षको द्वारा अध्ययन की व्यवस्था की गई है इन विद्यालयों मे आवश्यक सुविधाओं की पूर्ति हेतु 10 लाख रुपए प्रति सस्थान के मान से राशि का प्रावधान किया गया है

स्वर्ण जयन्ती मध्य प्रदेश अनुसूचित जनजाति क्षेत्रीय विकास योजना–विकास की अधोसंरचना की दृष्टि से पिछडे रह गए आदिवासी बाहुल अचलों के विकास हेतु उक्त योजना प्रारम्भ की गई है इस योजना के तहत आदिवासी बाहुल्य ग्रामो में सडक निर्माण, नाली, खरजा शौचालय शैक्षणिक सस्थाओं के बाउण्ड्री वॉल, सामुदायिक भवनों आदि का निर्माण कराया जाता है

क्रीड़ा परिसर–प्रदेश में 16 विभागीय क्रीडा परिसर सचालित हैं इनमें से 12 बालकों के लिए तथा 4 बालिकाओं के लिए है ये परिसर पूर्णत आवासीय है प्रत्येक परिसर में 100 छात्र/छात्राओं के लिए व्यवस्था है प्रत्येक क्रीडा परिसर में प्रवेशित छात्र/छात्राओं को क्रमश प्रतिमाह ₹ 500, 525 शिष्यवृत्ति, ₹ 100 पोषण आहार तथा वर्ष मे एक बार ₹ 350 गणवेश एव ₹ 500 खेल किट्स के लिए दिए जाते हैं प्रत्येक क्रीडा परिसर में खिलाडी छात्र/छात्राओं को नियमित प्रशिक्षण देने हेतु कोच एव पी टी आई के पद स्वीकृत हैं इन क्रीडा परिसरों का उद्देश्य प्रतिभावान खिलाडी छात्र/छात्राओं की खोज करना एव उन्हे नियमित प्रशिक्षण देकर विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में शामिल कराकर उनकी प्रतिभा, प्रगति व विकास का आकलन करना तथा राज्य एव राष्ट्र स्तर के खिलाडी के रूप में तैयार करना है

आदर्श उच्चतर माध्यमिक शालाएँ–अनुसूचित जनजातियों के लिए इजीनियरिंग/मेडिकल/राज्य व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवाओं तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने के उद्देश्य से इन वर्गों के प्रतिभावान विद्यार्थियों को आदिवासी क्षेत्रों में उत्तम कोटि की शिक्षा व्यवस्था और प्रोत्साहनकारी पर्यावरण उपलब्ध कराने के लिए 9 आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सचालित हैं प्रत्येक सस्था में कक्षा 6वी 9वी एव 11वी में प्रवेश दिया जाता है

कन्या शिक्षा परिसर आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के समान ही अनुसूचित जनजाति की प्रतिभावान बालिकाओं के लिए आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में 3 कन्या शिक्षा परिसरों की स्थापना की गई है कन्या शिक्षा परिसरों में प्रवेशित बालिकाओ को ₹ 360 मासिक दर से शिष्यवृत्ति प्रदाय की जाती है पोषण आहार के लिए प्रति विद्यार्थी ₹ 500 एव सत्र मे एक बार गणवेश हेतु ₹ 350 की आर्थिक सहायता दी जाती है

सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना–राज्य शासन ने सघ लोक सेवा आयोग तथा मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जाने वाली सिविल सेवा परीक्षाओं में विभिन्न स्तरों पर सफल होने वाले अनुसूचित जनजाति के

अभ्यर्थियों को प्रोत्साहन राशि देने का प्रावधान किया है प्रोत्साहन राशि इस प्रकार है–

(अ) संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा के लिए–

1. प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण करने पर	₹ 40,000
2. मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण होने पर	₹ 60,000
3. चयन होने पर	₹ 50,000

(ब) मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के लिए–

1. प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण करने पर	₹ 20,000
2. मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण होने पर	₹ 30,000
3. चयन होने पर	₹ 25,000

विशेष पिछड़ी जनजाति के बालकों को नि:शुल्क गणवेश प्रदाय–सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत राज्य शिक्षा केन्द्र के माध्यम से बालिकाओं को नि शुल्क गणवेश प्रदाय किए जाते है, किन्तु विभाग ने विशेष पिछडी जनजाति (बैगा, सहरिया एव भारिया) के कक्षा 1 से 8 तक अध्ययनरत् बालकों के लिए भी नि.शुल्क गणवेश योजना प्रारम्भ की है

अनुसूचित जनजातियों के कल्याण कार्यक्रम

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में अनुसूचित जनजातियों की जनसख्या 153·16 लाख है, जो राज्य की कुल आबादी का 21·10 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण देश में कुल अनुसूचित जनजाति की जनसख्या का 14·51 प्रतिशत है प्रदेश मे बैगा, भारिया एव सहरिया जनजाति को भारत सरकार द्वारा विशेष पिछडी जनजाति समूह के रूप में मान्यता दी गई है इन जनजातियों के विकास हेतु 3 प्राधिकरण एवं प्रदेश में 11 अभिकरण कार्यरत् है एकीकृत आदिवासी विकास परियोजनाओं के अन्तर्गत 26 वृहद एव मध्यम परियोजनाएँ, 30 माडा पाकेट्स एव 6 लघु जगल कार्यरत् है प्रदेश में तीन पूर्णत: अनुसूचित जनजाति जिले तथा 89 अनुसूचित जनजाति विकास खण्ड है

राज्य में अनुसूचित जनजातियों के उत्थान हेतु आदिवासी विकास विभाग के माध्यम से विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है, जिनमे शिक्षा विषयक योजनाएँ प्रमुख हैं विभाग द्वारा शालेय शिक्षा के अन्तर्गत आदिवासी विकास खण्डों में प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शालाओं का सचालन किया जा रहा है इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रदेश में अन्य योजनाएँ तथा आवासीय सस्थाएँ प्री मैट्रिक/पोस्ट मैट्रिक छात्रावास/ आश्रम शालाएँ एव उत्कृष्ट शिक्षा केन्द्रों की स्थापना, छात्र-गृह, विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों का वितरण, प्रशिक्षण सह-उत्पादन केन्द्र, राहत एव सामूहिक विवाह योजना तथा स्वरोजगार हेतु आदिवासी वित्त एव विकास निगम के माध्यम से आर्थिक विकास की विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है

आदिवासी विकास

राज्य योजनाएं तथा केन्द्र प्रवर्तित योजनाएं–आदिम जाति, कल्याण विभाग, प्रदेश सरकार के प्रमुख विभागो मे से है, इस विभाग को जनजाति वर्गों के विकास एवं हित संरक्षण का दायित्व सौपा गया है. इस दायित्व के निर्वहन हेतु विभाग जहाँ एक ओर अपने स्तर पर सामाजिक, आर्थिक एव शैक्षणिक योजनाएं संचालित कर रहा है वहीं दूसरी ओर आदिवासी उपयोजना तथा अनुसूचित जाति उपयोजना अन्तर्गत विभिन्न विभागों को प्राप्त होने वाली धनराशि के अनुश्रवण हेतु नोडल विभाग का दायित्व सौंपा गया है.

(अ) राज्य योजनाएं

शैक्षणिक गतिविधियाँ

शालाएं

आदिवासियों के विकास के लिए संचालित योजनाओं में 'शिक्षा' की योजनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है. शैक्षणिक उत्थान के लिए विभाग द्वारा आदिवासी उपयोजना क्षेत्र के 89 आदिवासी विकासखण्डों मे प्राथमिक स्तर से उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शालाओं का संचालन किया जा रहा है.

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

प्रदेश के 18 जिलों झाबुआ, धार, बडवानी, रतलाम, बैतूल, सिवनी, मण्डला, डिण्डौरी, अनूपपुर, छिदवाड़ा, सीधी, उमरिया, अलीराजपुर, खण्डवा, शहडोल, बालाघाट, जबलपुर, एवं होशंगाबाद मे 25 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय संचालित हैं 4 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय 2015-16 में स्वीकृत हो चुके हैं जो आगामी शैक्षणिक सत्र से आरम्भ होगे. झाबुआ एवं छिन्दवाडा जिले में दो–दो एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय सचालित हैं.

वर्ष 2008 से इन विद्यालयों में सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम लागू किया गया है इन सस्थाओ में विद्यालयों को ऐकेडेमिक शिक्षा के साथ–साथ कम्प्यूटर शिक्षा, व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण, भोजन, गणवेश, पुस्तके, स्टेशनरी, लायब्रेरी तथा सुसज्जित आवासीय सुविधा नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाती है

कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना

- कक्षा 5वीं उत्तीर्ण कर कक्षा 6वीं में प्रवेश लेने वाली छात्राओं को ₹ 500
- कक्षा 8वीं उत्तीर्ण कर कक्षा 9वीं में प्रवेश लेने वाली छात्राओं को ₹ 1000
- कक्षा 10वीं उत्तीर्ण कर कक्षा 11वीं में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को ₹ 3000 प्रोत्साहन राशि दी जाती है.

शंकर शाह पुरस्कार योजना

मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल की 10वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षा में प्रदेश में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले आदिवासी छात्रों को निम्नानुसार राशि से पुरस्कृत किया जाता है. कक्षा 10वीं में प्राप्त प्रावीण्यता को कक्षा 12वी में निरन्तर रखने वाले विद्यार्थियों को अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि ₹ 11,000 दिए जाने का प्रावधान है.

कक्षा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
10वीं	20,000	15,000	10,000
12वीं	30,000	20,000	10,000

रानी दुर्गावती पुरस्कार योजना

मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल की 10वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षा में प्रदेश में अपने संवर्ग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली प्रतिभावान आदिवासी छात्राओ को क्रमशः निम्नानुसार राशि से पुरस्कृत किया जाता है. कक्षा 10वीं में प्राप्त प्रावीण्यता को कक्षा 12वीं मे निरन्तर रखने वाले विद्यार्थियों को अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि ₹ 11,000 दिए जाने का प्रावधान है.

कक्षा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
10वीं	20,000	15,000	10,000
12वीं	30,000	20,000	10,000

सर्वश्रेष्ठ छात्रावास/ आश्रम एवं हाईस्कूल / हायर सेकण्डरी स्कूल को पुरस्कार

- आदिवासी बाहुल्य जिलों मे संचालित संस्थाओ में जिले में सर्वश्रेष्ठ परीक्षाफल देने वाले हाईस्कूल/ हायर सेकण्डरी एवं सर्वश्रेष्ठ छात्रावास/आश्रमों को पुरस्कार स्वरूप प्रथम पुरस्कार ₹ 25,000 द्वितीय पुरस्कार ₹ 15,000 एवं तृतीय पुरस्कार ₹ 10,000 प्रदान कर सम्मानित किया जाता है.
- राज्य स्तर पर चयनित सर्वश्रेष्ठ 03 संस्थाओं का प्रथम पुरस्कार ₹ 51,000 द्वितीय ₹ 31,000 तथा तृतीय को ₹ 21,000 की राशि से सम्मानित किया जाता है.

विद्यार्थी कल्याण

- अनुसूचित जनजाति के आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को आकस्मिक विपत्ति में, विशेष रोग से पीडित होने पर इलाज हेतु, विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु एवं विशेष अभिरुचि को प्रोत्साहन देने हेतु निम्नानुसार सहायता दी जाती है.

1.	विशिष्ट आयोजनों में सम्मिलित होने हेतु पोशाक परिधान, साज–सज्जा हेतु	1000
2.	विद्यार्थियों को सामूहिक एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु	3000
3.	निःशुल्क छात्र/छात्राओं को ट्रायसाइकिल हेतु	3000
4.	असामयिक विपत्ति	25,000
5.	विशेष रोग, कैंसर, टी.बी. हृदय रोग आदि	5000
6.	मृत्यु पर (दुर्भाग्यपूर्ण रूप से घटना होने पर)	25,000

- विद्यार्थी कल्याण सहायता राशि स्वीकृत करने के अधिकार कलेक्टर को दिये गये हैं.

प्रतिभावान विद्यार्थियों को पुरस्कार

- मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा आयोजित कक्षा 10वीं एवं 12वी बोर्ड परीक्षा में अनुसूचित जनजाति के 100-100 छात्र-छात्राएँ जिन्होने प्रदेश मे अपने संवर्ग में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये हैं प्रत्येक को ₹ 1000 की पुरस्कार राशि दी जाती है.

क्रीड़ा परिसर

अध्ययन के साथ-साथ आदिवासी बच्चो की खेल प्रतिभा को विकसित करने के लिये विभाग द्वारा प्रदेश मे 100 सीटर 17 विभागीय क्रीड़ा परिसर संचालित किए है, इनमे से 12 बालको के लिए तथा 5 बालिकाओ के लिए हैं. ये परिसर पूर्णत आवासीय हैं

प्रत्येक क्रीडा परिसर मे प्रवेशित छात्रो को ₹ 788 तथा छात्राओ को ₹ 815 प्रतिमाह शिष्यवृत्ति पोषण आहार एव ₹ 200 विशेष भत्ता प्रतिमाह दिया जाता है. इसके अतिरिक्त वर्ष में एक बार गणवेश के लिए ₹ 350 तथा स्पोर्टस् किट के लिए ₹ 500 दिये जाते हैं. इन क्रीडा परिसरो का ध्येय प्रतिभावान खिलाड़ी छात्र/छात्राओं की खोज करना एवं उन्हें नियमित प्रशिक्षण देकर विभिन्न खेल विधाओं में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में शामिल कराकर उनकी प्रतिभा को विकसित करना है.

राष्ट्रीय स्तर तथा राज्य स्तर पर प्रतिभागियों को निम्नानुसार राशि से सम्मानित किया जाता है :–

राष्ट्रीय स्तर	राज्य स्तर
प्रथम स्थान	7000
द्वितीय स्थान	5000
तृतीय स्थान	3000
सहभागिता स्थान	–

आवासीय संस्थाएं

दूरस्थ अंचलों मे आदिवासी विद्यार्थियो को आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने हेतु बालक तथा बालिकाओं के लिए प्री-मैट्रिक तथा पोस्ट मैट्रिक छात्रावास एव आश्रम सचालित किये जा रहे हैं.

पूर्व में छात्रावास एवं आश्रमों मे प्रवेश लेने वाले बालकों को ₹ 725 तथा बालिकाओ को ₹ 750 प्रतिमाह की दर से शिष्यवृत्ति दी जा रही थी.

पोस्ट मैट्रिक छात्रावासों में आगमन भत्ता

योजना अंतर्गत अनुसूचित जनजाति के पोस्ट मैट्रिक छात्रावासों में प्रवेशित विद्यार्थियो को छात्रावास में प्रवेश के प्रथम वर्ष मे ₹ 1500 द्वितीय वर्ष में ₹ 250 एव तृतीय वर्ष मे ₹ 250 आगमन भत्ते की राशि ₹ 2000 का भुगतान चेक से किया जाता हैं इसके अतिरिक्त प्रति विद्यार्थी प्रतिमाह 25 यूनिट की सीमा तक विद्युत व्यय की राशि का भी भुगतान किया जाता है.

- **सैनिक स्कूल/प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शुल्क की प्रतिपूर्ति**

सैनिक स्कूल रीवा तथा प्रदेश मे स्थित डेली कॉलेज इन्दौर, सिंधिया पब्लिक स्कूल ग्वालियर, दिल्ली पब्लिक स्कूल भोपाल एव इन्दौर जैसे विशिष्ट पब्लिक स्कूलों में अनुसूचित जनजाति वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियो को प्रवेश की योजना है. प्रवेशित छात्रों के समस्त शुल्को का वहन विभाग करता है.

- **राज्य छात्रवृत्ति**

राज्य छात्रवृत्ति कक्षा 1 से 5 तक की समस्त बालिकाओं को तथा कक्षा 1 से 5 तक के विशेष पिछड़ी जनजाति के बालकों को एवं कक्षा 6 से 10 तक के बालक-बालिकाओं को, दस माह हेतु निम्न दरों पर छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है–

कक्षा	बालक	बालिका
1 से 5	150 (केवल विशेष पिछडी जनजाति के बालको के लिए)	150
6 से 8	200	300
9 से 10	600	800

पोस्टमैट्रिक छात्रवृत्ति (राज्य योजना मद अंतर्गत)

पोस्टमैट्रिक छात्रवृत्ति योजनांतर्गत ₹ 2.00 लाख से ₹ 3.00 लाख तक की वार्षिक आय वाले अभिभावकों के बच्चों को राज्य शासन के स्रोत से पोस्टमैट्रिक छात्रवृत्ति दी जाती है.

विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने हेतु छात्रवृत्ति

अनुसूचित जनजाति वर्ग के युवाओ के भविष्य निर्माण हेतु उन्हे उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विदेशों मे शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रतिवर्ष 10 छात्र-छात्राओ को छात्रवृत्ति देना प्रावधानित है.

बोर्ड परीक्षा शुल्क की प्रतिपूर्ति

माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा आयोजित बोर्ड परीक्षा मे सम्मिलित होने वाले अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो के बोर्ड परीक्षा शुल्क की राशि विभाग द्वारा मण्डल को भुगतान की जाती हैं.

छात्रगृह योजना

यह योजना मैट्रिकोत्तर स्तर के उन छात्रो के लिए है, जिन्हे पोस्टमैट्रिक छात्रावासो मे स्थानाभाव के

कारण प्रवेश नहीं मिल पाता है ऐसे छात्रों को योजना का लाभ दिया जाता है. योजना में किराये के मकान का किराया, पानी तथा बिजली का शुल्क तथा छात्रावासी दर पर मेट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति स्वीकृत की जाती है.

- **प्रतिभाशाली आदिवासी छात्र–छात्राओं के लिए नेतृत्व विकास शिविर का आयोजन**–प्रति वर्ष 23 जनवरी से 28 जनवरी तक भोपाल में यह शिविर आयोजित किया जाता है, इसमें प्रत्येक जिले मे कक्षा 10वीं बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले एक बालक तथा एक बालिका को आमंत्रित किया जाता है. विशेष पिछड़ी जनजाति के 15 जिलों से विशेष पिछडी जनजाति के 10वीं बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 1-1 विद्यार्थी को भी इस शिविर में सम्मिलित किया जाता है.

- **साक्षरता के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाली ग्राम पंचायतों को पुरस्कार**–प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग के, प्राथमिक शाला में प्रवेश योग्य बालक/बालिकाओं को शतप्रतिशत प्रवेश करवाने तथा शाला त्याग की प्रवृत्ति को रोकने का प्रयास करने वाली 89 आदिवासी विकासखण्डो की सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायतो को पुरस्कारस्वरूप ₹ 25,000 के मान से राशि प्रदान की जाती हैं.

(अ) संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा प्रारम्भिक, मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार की तैयारी के लिए प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान से कोचिंग योजना–संघ लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा तथा साक्षात्कार में प्रदेश के आदिवासी वर्ग के योग्य प्रतिभागियो को दिल्ली स्थित प्रतिष्ठित कोचिंग सस्थानों से कोचिग की योजना शासन द्वारा स्वीकृति की गई है.

(1) संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी हेतु राज्य सिविल सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण होने वाले प्रतियोगी तथा मुख्य परीक्षा की कोचिग के लिए संघ लोक सेवा आयोग की प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण होने वाले प्रतियोगी एव साक्षात्कार के लिए मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले अनुसूचित जनजाति वर्ग के प्रतियोगी पात्र होगे.

(2) योजना के लाभ लेने हेतु आय सीमा ₹ 5 लाख निर्धारित की गई है.

(3) संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा कोचिग योजना अन्तर्गत प्रारम्भिक परीक्षा की कोचिंग के लिए ₹ 60,000 कोचिंग शुल्क तथा शिष्यवृत्ति एवं लॉजिंग बोर्डिंग की सुविधा दी गई है.

अनुसूचित जनजाति बस्ती विकास योजना

अनुसूचित जनजाति बस्ती विकास का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण/नगरीय क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति बाहुल्य ग्रामों/बस्ती/वार्ड में मूलभूत सुविधाए उपलब्ध कराना यथासमुचित पेयजल, विद्युत् व्यवस्था आतरिक क्षेत्रों में पक्की सडकें, नाली निर्माण मुख्य सडक से अनुसूचित जनजाति बस्ती/ग्राम तक सडक, पुलिया रपटा, निर्माण, सामुदायिक भवनो का निर्माण (सामाजिक एवं सास्कृतिक समारोह आदि) के लिये जिलो को राशि उपलब्ध कराई जाती है.

प्रशिक्षण सह उत्पादन केन्द्र

अनुसूचित जनजाति के युवाओं के लिए 9 विभागीय प्रशिक्षण सह उत्पादन केन्द्र सचालित हैं. इन केन्द्रों मे कुल 420 स्थान स्वीकृत हैं जिनमे लोहारी सुतारी, सिलाई बुनाई, राजगिरी, गुड़िया बनाना, ब्रश बनाना शीट मेटल, रेशम उद्योग, चटाई उद्योग, बेंत-बांस तथा कढाई आदि कुल 12 व्यवसायो में प्रशिक्षण दिया जाता हैं.

(ब) केन्द्र प्रवर्तित योजनाएँ

- **मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति**–यह छात्रवृत्ति कक्षा 11वी 12वी एव महाविद्यालयीन कक्षाओं मे अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो को दी जाती है छात्रवृत्ति की दरें व शर्तें भारत सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है. छात्रवृत्ति का वितरण बैंको के माध्यम से होता है.

- **व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना**–अनुसूचित जनजाति वर्ग के सामाजिक एव आर्थिक विकास के लिए इस योजना अन्तर्गत आदिवासी युवाओ को तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाकर स्वावलम्बी बनाने मे सहयोग किया जा रहा है. शिक्षित आदिवासी युवाओ को रोजगार उपलब्ध कराने की दृष्टि से एवं उनके तकनीकी कौशल को विकसित करने

के उद्देश्य से यह योजना वित्तीय वर्ष 1999-2000 से मध्य प्रदेश के 7 जिलों में 10 केन्द्रों पर प्रारम्भ की गई है. वर्तमान में मध्य प्रदेश में 10 व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं. जिनमें प्रतिवर्ष प्रत्येक केन्द्र पर 100 प्रशिक्षणार्थी के मान से विभाग के 10 व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों में 1000 सीटें स्वीकृत हैं.

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2009-10 में नवीन मार्गदर्शिका अनुसार प्रति प्रशिक्षणार्थी राशि ₹ 30,000 व्यय सीमा निर्धारित की गई है. इस प्रकार एक केन्द्र के 100 प्रशिक्षणार्थियो के लिए राशि ₹ 30 लाख वार्षिक सीमा निर्धारित है.

कोचिंग एण्ड एलाइड स्कीम

- यह केन्द्र प्रवर्तित योजना है जिसमे, तकनीकी एव चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रवेश हेतु परीक्षा से पूर्व कोचिंग दिलाये जाने का प्रावधान है.
- छात्र-छात्राओं को प्रति वर्ष 3 माह की कोचिंग दी जाती है.
- यह योजना आदिवासी बहुल 22 जिलो मे संचालित है. कोचिंग अवधि में प्रति माह शिष्यवृत्ति दी जाती है.

निर्माण कार्य

भारत सरकार जनजाति कार्य मंत्रालय की छात्रावास भवन निर्माण एवं आश्रम स्कूलों की स्थापना योजना के अन्तर्गत उपयोजना क्षेत्र के बालक छात्रावास/आश्रम स्कूल के भवनो के लिए कुल लागत का 50 प्रतिशत एव बालिका छात्रावास/आश्रम स्कूल के भवनों के लिए 100 प्रतिशत केन्द्रीय सहायता राशि से भवन निर्माण कार्य कराय जाते हैं.

राजीव गांधी खाद्यान्न सुरक्षा मिशन

प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में आवागमन रोजगार तथा सिचाई सुविधा के अभाव में अभी भी पारिवारिक स्तर पर खाद्यान्न सुरक्षा का अभाव है. ग्रामो मे गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारो को भूख से मुक्ति दिलाने एवं भोजन की सम्मानजनक स्थायी व्यवस्था कराने की दृष्टि से राजीव गाधी खाद्यान्न सुरक्षा मिशन की स्थापना 20 अगस्त, 1998 से की गई है. मिशन द्वारा खाद्यान्न ग्रामीण ग्रेन बैंको की स्थापना कर चिह्नित परिवारों को खाद्यान्न सुरक्षा देकर उनकी जीविका चलाने मे सहयोग दिया गया है.

मध्य प्रदेश आदिम जाति मंत्रणा परिषद्

संविधान के अनुच्छेद 244 (1) के तहत् प्रदेश के अनुसूचित क्षेत्रो के प्रशासन और नियत्रण तथा अनुसूचित जनजातियों के हित संरक्षण के लिये सुझाव देने हेतु **मध्य प्रदेश आदिम जाति मंत्रणा परिषद् की नियमावली 1957** लागू की गई है. मध्य प्रदेश शासन आदिम जाति एवं अनुसूचित जाति कल्याण विभाग की अधिसूचना से दिनाक 18 जनवरी, 2009 मे आदिम जाति मंत्रणा परिषद् का पुनर्गठन किया गया है.

आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्था

संस्था के दायित्व

1. अनूसूचित जनजाति से सम्बन्धित सर्वेक्षण, अध्ययन तथा विकास कार्यक्रमो का मूल्यांकन.
2. अनुसूचित जनजाति के रीति-रिवाजो एव रहन-सहन के तरीको का अध्ययन एवं दस्तावेजीकरण.
3. आदिवासी क्षेत्र मे पदस्थ अधिकारियो एव कर्मचारियो का प्रशिक्षण.
4. अनुसूचित जनजाति के जाति सम्बन्धी मामलो का अध्ययन.
5. राज्य आदिवासी सग्रहालय छिन्दवाडा का सचालन.
6. जनजातीय संस्कृति एवं बोलियों का दस्तावेजीकरण, संरक्षण एवं विकास.

- **सस्था द्वारा नोडल टी. आर. आई. के रूप में कार्य**–भारत सरकार द्वारा अन्य टीआरआई के साथ कार्य समन्वय के दृष्टिकोण से मध्य प्रदेश टीआरआई को सितम्बर 2008 मे नोडल टीआरआई घोषित किया गया है. छत्तीसगढ, उत्तर प्रदेश हिमाचल प्रदेश एव राजस्थान टीआरआई मध्य प्रदेश की लिक टीआरआई है।

वर्षवार उपलब्धियाँ

1 **अनुसधान, मूल्यांकन अध्ययन एवं शोध कार्य**– सस्था द्वारा अनुसूचित जनजाति के विभिन्न आयामो जैसे सामाजिक सास्कृतिक आर्थिक

जीवन-शैली तथा रीति-रिवाजो पर अनुसंधान, मूल्यांकन एवं शोध कार्य किया जाता है.

2. **प्रशिक्षण**--संस्था द्वारा विभिन्न विषयों पर आदिवासी क्षेत्रों में पदस्थ अधिकारियो तथा कार्यपालिक कर्मचारियों, जाति प्रमाण पत्र जारीकर्ता राजस्व अधिकारी, जॉचकर्ता पुलिस अधिकारी, अत्याचार निवारण अधिनिमय तथा पंचायती राज नियम एवं अधिनियम सम्बन्धी प्रशिक्षण जनप्रतिनिधियो को दिया जाता है.

3. **संदर्भ**--अन्वेषण संस्था द्वारा जाति सम्बन्धी प्राप्त प्रकरणो का परीक्षण कर शासन को अभिमत दिया जाता है.

4. **प्रकाशन**--सस्था द्वारा विभिन्न जनजातीय विषयो पर किए गए अनुसधान, मूल्याकन अध्ययन तथा शोध कार्य सम्बन्धी तैयार कराये गये प्रतिवेदनो का प्रकाशन किया जाता है.

5. **पुस्तकालय**--सस्था का स्वयं का एक पुस्तकालय सचारित है जिसमें 23,000 से अधिक पुस्तको का संग्रह किया गया है, सस्था के बाहर के शोधार्थी भी पुस्तकालय का लाभ प्राप्त करते हैं.

6. **जनजातीय संस्कृति एवं बोलियों का संरक्षण और विकास**--आदिम जाति अनुसधान एव विकास संस्था द्वारा विधान सभा सकल्प 2010 के बिन्दु क्रमांक 51 के अनुसार प्रदेश की जनजातीय सस्कृति एव बोलियों के सरक्षण और विकास के लिए निम्नानुसार कार्य किया जा रहा है--

1 भिलाली--हिन्दी शब्दकोश का सम्पादन एव प्रकाशन.

2 मवासी--हिन्दी शब्दकोश का सम्पादन एव प्रकाशन.

3 पारम्परिक गोंडी गीत सकलन का प्रकाशन.

4 पारम्परिक जनजातीय गीतो का (स्वरलिपि सहित) प्रकाशन.

5 जनजातीय सस्कृति कोश के लिए भील सस्कृति से सम्बधित शब्दो का पृष्ठभूमि सहित सकलन.

6. नहाली शब्दकोश के लिए शब्दो का सकलन

7 जनजातीय विषयों पर केन्द्रित दो राष्ट्रीय सगोष्ठियों का आयोजन.

8 जनजातीय नृत्य--संगीत--परम्परा पर केन्द्रित दो उत्सवो आदिरग एव आदिरग का आयोजन.

विशेष पिछड़ी जनजाति समूह मध्य प्रदेश

प्रदेश मे तीन विशेष पिछडी जनजाति यथा भारिया बैगा एवं सहरिया निवास करती है. राज्य शासन द्वा 11 विशेष पिछडी जनजाति विकास अभिकरणो का गठन किया गया है, जो मण्डला, बैहर (बालाघा डिण्डौरी, पुष्पराजगढ (अनूपपुर) शहडोल, उमरि ग्वालियर (दतिया जिला सहित), श्योपुर (मिण्ड और जिला सहित), शिवपुरी, गुना (अशोकनगर जिला सहि तथा तामिया (जिला छिन्दवाडा) मे स्थित है इ अभिकरणो मे चिह्नांकित किए गए 2314 ग्रामों में विश पिछड़ी जनजाति के 5.51 लाख व्यक्ति निवास करत यह प्रदेश की कुल जनजाति जनसख्या (122.33 लाख कर 4.51 प्रतिशत है. (वर्ष 2001 की जनगण्ड अनुसार) विशेष पिछडी जनजाति समूह अन्त अचिह्नांकित क्षेत्र के सर्वे के अनुसार सहरिया जनजाति की जनसख्या 42,604 बैगा जनजाति की जनसख्या 18,382 तथा भारिया जनजाति की जनसख्या 15,26 पाई गई है.

चिह्नाकित क्षेत्रो मे निवासरत विशेष पिछडी जन जातियों हेतु योजनाओ के बनान, क्रियान्वयन अनु श्रवण एवं मूल्यांकन हेतु गवर्निंग बॉडी के गठन का प्रावधान है. जिसमें विशेष पिछडी जनजाति समुदाय के सदस्यो को ही अध्यक्ष एवं सचालक मण्डल के सदस्यों के रूप मे शासन स्तर स दो वर्षो के लिए मनोनीत किया जाता है.

सचालक मण्डल मे अभिकरण क्षेत्र से सम्बधित आदिवासी विधायक/जिला पचायत अध्यक्ष एव जनपद पंचायतो के अध्यक्षो को सदस्यों के रूप मे रखा जाता है। सम्बन्धित अभिकरण क परियोजना प्रशासक/सहायक आयुक्त/जिला संयोजक सदस्य सचिव के रूप में कार्य सम्पादित करते हैं.

भारत सरकार के निर्देशानुसार विशेष पिछडी जनजातियों क विकास हेतु विशेष केन्द्रीय सहायता अन्तर्गत कृषि उद्यानिकी, भूमिसमतलीकरण सिंचाई पेयजल तथा रोजगारमूलक योजनाओ की प्राथमिकता तय की गई हैं.

राज्य शासन द्वारा विशेष पिछड़ी जनजातियों के विकास के लिये किये जा रहे प्रयास. प्रदेश अनुसूचित जनजातिया क लिये सचालित योजनाओं लाभ विशेष पिछडी जनजातियो को भी प्राप्त होगा इसके अतिरिक्त निम्नलिखित विशेष योजनाएँ विशेष पिछडी जनजाति के लिये पृथक स सचालित हैं--

1 **छात्रवृत्ति**–विशेष पिछड़ी जनजाति समूह के कक्षा एक से पाँच तक के बालकों को भी प्रतिमाह ₹ 5 के मान से 10 माह के लिये ₹ 150 की छात्रवृत्ति दी जाती है. इस योजना में प्रति वर्ष राशि राज्य आयोजना मद से व्यय की जा रही है.

2 विशेष पिछड़ी जनजाति के कक्षा एक से 12वी तक के विद्यार्थियों को नि.शुल्क गणवेश, स्वेटर, जूते, मोजे तथा स्कूल बैग दिये जाने की योजना है.

3 विशेष पिछड़ी जनजाति समूह यथा सहरिया, बैगा तथा भारिया के छात्र–छात्राओं हेतु आदर्श एकलव्य आवासीय विद्यालय जबलपुर, गुना तथा इन्दौर में संचालित हैं.

4 **शासकीय सेवाओं में नियुक्तियाँ**–सामान्य प्रशासन विभाग के निर्देशानुसार विशेष पिछड़ी जनजाति के अभ्यार्थियों को शासकीय सेवा में सीधे (बिना किसी चयन प्रक्रिया के) नियुक्ति दी जाती है, यदि उनके पास न्यूनतम अर्हता है. यह प्रावधान तृतीय (अकार्यपालिक) एवं चतुर्थ श्रेणी के पदों के लिये लागू है।

मध्य प्रदेश आदिवासी वित्त एवं विकास निगम

निगम की स्थापना–मध्य प्रदेश आदिवासी वित्त एव विकास निगम की स्थापना इंडियन कम्पनी एक्ट 1956 की धारा 25 के अंतर्गत (लाभ के लिए नही) की गई. रजिस्ट्रार ऑफ कम्पनीज, ग्वालियर द्वारा इसका पंजीयन दिनाक 29.09.1994 को किया गया. निगम द्वारा आर्थिक एव स्वरोजगार योजनाओ का क्रियान्वयन दिनाक 1 अप्रैल, 1995 से प्रारंभ किया गया.

निगम के उद्देश्य

1 आर्थिक, सामाजिक एव शैक्षणिक विकास करना है.

2 शोषण समाप्त कर उन्हे विकसित कर गरीबी रेखा से ऊपर उठाना है.

3 उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सुविधाजनक (ऋण/अनुदान उपलब्ध कराकर (ऋण ब्याज सहित वसूल करना.

निगम की अधिकृत अंशपूँजी–निगम की अधिकृत अंशपूँजी ₹ 50 00 करोड़ है. जिसमे राज्य शासन का हिस्सा 51 प्रतिशत तथा केन्द्र सरकार का हिस्सा 49 प्रतिशत है.

मध्य प्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद् (मेपसेट)–मध्य प्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद (मूलतः आदिवासी तकनीकी शिक्षा मण्डल) वर्ष 1981 से आदिम जाति वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए विभिन्न तकनीकी एवं व्यावसायिक क्षेत्रो मे कुशलता का विकास कर उनके रोजगार/स्वरोजगार के अवसरो मे वृद्धि हेतु शासन द्वारा सोसायटी एक्ट 1973 अतर्गत स्थापित है तदुपरान्त वर्ष 1989 से सस्था के उद्देश्यों में वृद्धि कर अनुसूचित जाति वर्ग के लिये तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमो के आयोजन को भी सम्मिलित कर नाम परिवर्तित हुआ है.

उपलब्धियाँ

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की स्थापना–सामुदायिक रेडियो से प्रदेश के आदिवासियों के बीच जहाँ सीधे उनकी तरक्की के लिए राज्य द्वारा संचालित प्रवर्तित योजनाओं की जानकारी पहुँचाई जा सकेगी, वहीं जनजातीय जीवन, संस्कृति, परम्पराओ के बारे में भी जानकारी दी जा सकेगी और उनकी सास्कृतिक परम्पराओं का दस्तावेजीकरण तथा सरक्षण भी सम्भव होगा.

अन्तर्राष्ट्रीय जनजातीय फिल्म महोत्सव–जनजातीय समाज की सास्कृतिक परम्पराओ, जीवन शैली, ज्ञान, कला–कौशल अभिरुचियों के संरक्षण और सवर्द्धन के लिए आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय जनजातीय फिल्म महोत्सव का आयोजन वर्ष 2008 से किया जा रहा है. जनजातीय जीवन पर केन्द्रित फिल्मो के माध्यम से विषय की जनजातीय संस्कृति का समझने, प्रचारित–प्रसारित करने का प्रयास किया जाता है. तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय जनजातीय फिल्म महोत्सव प्रस्तावित है.

जनजातीय नृत्य संगीत प्रतियोगिता–तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय जनजातीय महात्सव के साथ जनजातीय नृत्य–संगीत प्रतियागिता का आयोजन प्रस्तावित है. जिसमे प्रदेशभर के लगभग 1000 से अधिक कलाकारों द्वारा नृत्य–संगीत कौशल का प्रदर्शन किया जाएगा।

उद्यमी विकास संस्थान, मध्य प्रदेश

संस्थान की स्थापना–उद्यमी विकास सस्थान की स्थापना वर्ष 1980 मे मध्य प्रदेश शासन, आदिम जाति, अनुसूचित जाति एवं पिछडा वर्ग कल्याण विभाग के उपक्रम के रूप में हुई है. इस सस्थान का पंजीयन फर्म्स एव सोसायटीज मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा किया गया है

संस्थान के मुख्य उद्देश्य–मध्य प्रदेश के आदिवासी, अनुसूचित जाति तथा आर्थिक रूप से पिछडे हुए व्यक्तियों को उद्योग तथा व्यापार प्रारम्भ प्रशिक्षण, आर्थिक तथा तकनीकी सहायता, उत्पादन और इसके लिए उन्हे प्रशिक्षण, आर्थिक तथा तकनीकी सहायता, उत्पादन तथा उसके विपणन मे सहयोग करना तथा उनके उद्यमो का मार्गदर्शन, समन्वय तथा नियत्रण करना.

- उद्यमी विकास केन्द्रो (उत्पादन सह प्रशिक्षण केन्द्रों) की स्थापना करना गतिविधियो का सचालन, मार्गदर्शन तथा नियत्रण करना.
- शासन द्वारा स्थापित ऐसे उत्पादन सह प्रशिक्षण केन्द्रो एव अन्य सस्थाओ का सचालन मार्गदर्शन एव नियत्रण करना जिनके लिए शासन सस्थान को अधिकृत करे.
- सस्थाओ को तथा उद्यमी वर्ग की इकाइयो को उद्यम स्थापित करने मे सहयोग व सहायता करना एव उन्हे सस्थान से सम्बद्ध करना उनका मार्ग-दर्शन करना
- शासन के अथवा शासकीय सस्थाओ अथवा सस्थान द्वारा सम्बद्ध उद्यमियो के लिए एजेन्ट के रूप मे कार्य करना और उसके लिए आवश्यक अनुबन्ध आदि करना.

मध्य प्रदेश देश का ऐसा राज्य है, जहाँ हर पाँचवाँ व्यक्ति अनुसूचित जनजाति वर्ग का है इन वर्गों के कल्याण एव विकास का सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश की आयोजना मद का 20 प्रतिशत हिस्सा अनुसूचित जनजाति उपयोजना की अवधारणा के तहत पृथक से प्रावधानित किया जाता है.

शैक्षणिक स्तर एव आर्थिक सुदृढता किसी भी वर्ग की सामाजिक स्थिति की पहचान होती है, इसलिए विभाग का लक्ष्य अनुसूचित वर्गों का शैक्षणिक एव आर्थिक उत्थान कर उन्हे समाज के अगले पायदान पर लाना है. मध्य प्रदेश ऐसा राज्य है, जहाँ आदिवासी विकास खण्डो मे शिक्षा का सचालन आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा किया जाता है.

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा अनुसूचित जाति एव जनजाति के छात्र-छात्राओ को शिक्षण के साथ निःशुल्क आवास भोजन स्वच्छ पेयजल, विद्युत आदि की सुविधा देने के उद्देश्य से 1311 छात्रावास एव 1025 आश्रम शालाये तथा 110 पोस्ट मैट्रिक छात्रावास तथा विशिष्ट आवासीय संस्थाओं का सचालन किया जा रहा है, जिसमे एक लाख चौबीस हजार छात्र से नौ तथा अन्य विशिष्ट सस्थाओ में आवासीय सुविधा सहित 1,46,715 विद्यार्थी लाभावित हो रह है.

मध्य प्रदेश पहला ऐसा राज्य है जहाँ अनुसूचित जनजाति एव अन्य परम्परागत वन निवासी (वन अधिकारो की मान्यता) अधिनियम 2006 का प्रभावी क्रियान्वयन कर 1,68,387 अनुसूचित जनजाति वर्ग दावेदारो के अधिकार मान्य किये गये है. मध्य प्रदेश मे अनुसूचित जनजाति और अन्य परम्परागत (वन अधिकारो की मान्यता) अधिनियम 2006 का प्रभावी क्रियान्वयन किया गया है. राज्य सरकार का यह सकल्प है कि एक भी पात्रताधारी वन निवासी वन अधिकार से वचित न रहे. अधिकार धारकों के कृषि प्रयोजन सम्बन्धी अन्य सुविधाए उपलब्ध कराने की ओर राज्य सरकार अग्रसर है.

विभाग द्वारा अनुसूचित जनजाति की परम्परागत सस्कृति के सरक्षण एव सम्वर्धन हेतु राज्य स्तरीय आदिवासी सग्रहालय का निर्माण भोपाल मे कराया गया है. सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की स्थापना कराई जा रही है, जिससे प्रदेश के आदिवासियो के बीच जहाँ सीधे उनकी तरक्की के लिए राज्य द्वारा सचालित प्रवर्तित योजनाओ की जानकारी पहुँचाई जा सकेगी.

विवेकानन्द समूह बीमा योजना–2007–राज्य शासन द्वारा मध्य प्रदेश मे 28 जनवरी 2006 से गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले सभी ग्रामीण एव शहरी क्षेत्रों के परिवारों को प्राकृतिक आपदा अथवा दुर्घटना से पीड़ित होने पर विवेकानन्द समूह बीमा योजना के तहत् अधिक सुरक्षा प्रदान की गई है शासन द्वारा एक वर्ष की अवधि के लिए दिनाक 31 मार्च 2007 को रिलायस जनरल इश्योरेस कम्पनी लिमिटेड को बीमा का कार्य सौपा गया दिनाक 31 मार्च 2007 मध्यरात्रि से 31 मार्च 2008 की मध्य रात्रि की अवधि के दुर्घटना के प्रकरणो मे बीमा का लाभ रिलायस जनरल इश्योरेस कम्पनी लिमिटेड द्वारा प्रदान किया गया

इस योजना में गरीबी रेखा के परिवारों के 18 से 59 वर्ष के आयु समूह के सभी स्त्री/पुरुष सम्मिलित किए गए है योजनान्तर्गत प्राकृतिक आपदा दुर्घटना मे हुई आशिक क्षति के प्रकार तथा बीमा राशि अनुसार दी जाती है

1 दुर्घटना में मृत्यु होने पर–	₹ 50,000
2 स्थायी अशक्तता होने पर–	₹ 50,000
3 दुर्घटना मे दोनों आँख या दो अग या एक आँख तथा एक अग की क्षति होने पर–	₹ 50,000
4 एक आँख या एक अग की क्षति होने पर–	₹ 25,000
5 दुर्घटना होने पर प्रभावित व्यक्ति को किसी अस्पताल या नर्सिंग होम में इलाज कराने पर. एफ आई. आर एव चिकित्सा प्रमाण-पत्र के आधार पर–	₹ 1,000

ग्राम पंचायतों को पुरस्कार–प्राथमिक शिक्षा के लोक व्यापीकरण तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग के प्राथमिक शाला में प्रवेश योग्य बालक/बालिकाओ को शत-प्रतिशत प्रवेश करवाने तथा शाला त्याग की प्रवृत्ति को रोकने वाली ग्राम पचायतों को पुरस्कार स्वरूप ₹ 25·00 हजार प्रति ग्राम पचायत के मान से ऐसी ग्राम पंचायतो को जिनमें शाला त्याग की दर 10 प्रतिशत से कम हो राशि प्रदान की जाती है

कन्या साक्षरता योजना का विस्तार कक्षा 9वीं एवं 11वीं–कन्या साक्षरता को प्रोत्साहन देने हेतु उन्हें शिक्षा के प्रति जागृत करने के उद्देश्य से प्रदेश में अनुसूचित जनजाति वर्ग की कन्याओ को क्रमश कक्षा 5वी उत्तीर्ण कर 6वीं में प्रवेश लेन पर ₹ 500, कक्षा 8वी पास करने के उपरान्त कक्षा 9वीं में प्रवेश लेने पर प्रति छात्रा ₹ 1000 एव कक्षा 10वीं पास करने क उपरान्त कक्षा 11वीं प्रवेश लेने पर प्रति छात्रा ₹ 2000 एकमुश्त प्रोत्साहन राशि दिए जाने का प्रावधान है

प्राथमिक स्तर में बालिकाओं को छात्रवृत्ति–कन्या साक्षरता को प्रोत्साहन देने एव उन्हें शिक्षा के प्रति जागृत करने क उद्देश्य से कक्षा 1 से 5 तक प्रदेश की अनुसूचित जनजाति वर्ग की प्राथमिक स्तर तक की छात्राओं को ₹ 15 प्रतिमाह के मान से 10 से 12 माह तक (कुल ₹ 150 अधिकतम), प्रति छात्रा को छात्रवृत्ति देना प्रावधानित किया गया है

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के लिए प्रावीण्य छात्रवृत्ति योजना–अनुसूचित जाति-जनजाति के प्रतिभावान छात्र छात्राओं को अधिकतम प्रवीण्यता अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रावीण्य छात्रवृत्ति योजना क्रियान्वयन की जा रही है यह योजना प्रदेश के सभी जिलो में लागू है प्रावीण्य छात्रवृत्ति के अन्तर्गत माध्यमिक शाला स्तर पर ₹ 40 तथा हाईस्कूल स्तर पर ₹ 50 प्रतिमाह की दर से 10 माह के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है इस छात्रवृत्ति की पात्रता के लिए आय का कोई बन्धन नहीं है छात्रवृत्ति के नवीनीकरण के लिए विद्यार्थी का प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण होना अनिवार्य है

प्रावीण्य छात्रवृत्ति की पात्रता के लिए निर्धारित संख्या तक मैरिट में आने वाले विद्यार्थी इस छात्रवृत्ति के लिए पात्र हैं इस योजना के अन्तर्गत हितग्राही का चयन जिले के लिए निर्धारित लक्ष्य तक मैरिट के आधार पर किया जाता है

योजना क्रियान्वयन की प्रक्रिया के तहत् प्रावीण्य छात्रवृत्ति के लिए परीक्षा परिणाम के आधार पर सम्बन्धित जिले में छात्रवृत्ति के लिए निर्धारित सख्या तक स्थान पाने वाले विद्यार्थियों की प्रावीण्य सूची तैयार की जाती है इसके अतिरिक्त 10 प्रतिशत छात्रों की प्रतीक्षा सूची भी तैयार की जाती है सूची के आधार पर प्रवीण्यता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाती है इस छात्रवृत्ति को स्वीकृत करने का अधिकार कलेक्टर को है

पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण

राज्य शासन द्वारा वर्ष 1984 में 82 जाति/वर्ग/समूहों को प्रदेश में पिछडी जातियों के रूप में घोषित किया गया था विभिन्न सशोधनों के फलस्वरूप वर्तमान में 91 जाति/उपजाति/वर्ग/समूहो को पिछडी जातियों के रूप में मान्य किया गया है राज्य शासन द्वारा शासकीय एवं सम्बद्ध सेवाओं में इन समूहों के लिए सीधी भर्ती में 14 प्रतिशत आरक्षण देने की सुविधा के साथ-साथ इनके शैक्षणिक उन्नयन, रोजगारमूलक प्रशिक्षण एव सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम क्रियान्वित कर इन्हें लाभान्वित किया जा रहा है

पिछड़े वर्गों के हित में राज्य शासन द्वारा लिए गए निर्णय के तहत् हिन्दू एव मुस्लिम वर्ग के धोबी, लुहार, कुम्हार, बढई, नाई एव जुलाहा/बुनकर व्यक्तियों को ग्रामीण क्षेत्रों में रहकर अपने पैतृक धन्धों को करने की शर्त पर क्रीमीलेयर से छूट दी गई है साथ ही क्रीमीलेयर के निर्धारण मे वार्षिक आय सीमा ₹ 1 लाख से बढाकर ₹ 2 लाख कर दी गई है इस वर्ग के विद्यार्थियों को प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति वितरण तीन किस्तों के बजाय अब दो किस्तों में देय होगा तथा छात्रवृत्ति प्रकरणों मे इन वर्गों के विद्यार्थियों

को जारी आय प्रमाण-पत्र 10 वर्ष की अवधि के लिए मान्य होगा

राज्य शासन द्वारा भोपाल में 100 प्रशिक्षणार्थी सख्या वाला एक परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र भी छात्रावास की सुविधा सहित सचालित है, इसके अतिरिक्त जिला मुख्यालय खरगौन में एक बजारा जाति छात्रावास सचालित है

सामाजिक कुरीति उन्मूलन कार्यक्रम के तहत् समाज मे व्याप्त कुरीतियो को दूर करने हेतु विभाग द्वारा जन जागरण योजना सचालित की जा रही है विभाग के अन्तर्गत मध्य प्रदेश पिछडा वर्ग, वित्त एव विकास निगम भी स्थापित है जिसके माध्यम से पिछडे एवं अल्पसख्यक वर्ग के व्यक्तियों को स्वरोजगार हेतु ऋण उपलब्ध कराया जाता है

पिछडे वर्गों के हित में राज्य शासन द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय इस प्रकार हैं–

1. धोबी, कुम्हार, बढई, लुहार, नाई एव जुलाहा, बुनकर जाति के व्यक्तियों को गाँव मे रहकर पैतृक धधे में कार्यरत् रहने पर क्रीमीलेयर से छूट प्रदान की गई है
2. क्रीमिलेयर के निर्धारित मापदण्ड की सीमा को ₹ 2 लाख से बढाकर ₹ 2·50 लाख वार्षिक कर दी गई है
3. पिछडे वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के प्रकरणो में आय प्रमाण-पत्र 10 वर्ष की अवधि के लिए मान्य होगा
4. प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना का वितरण दो के स्थान पर अब एक किश्त मे किया जाएगा
5. पोस्टमैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के तहत् निर्धारित आय सीमा ₹ 25 हजार से बढाकर ₹ 75 हजार वार्षिक निर्धारित की गई है
6. योग्य छात्रों हेतु प्रावीण्य छात्रवृत्ति की योजना सचालित है
7. प्रदेश के सम्भागीय मुख्यालयों पर एक-एक सौ पोस्ट मैट्रिक छात्रावास का निर्माण किया जा रहा है
8. प्रदेश क सभी 50 जिला मुख्यालयों पर एक-एक-कन्या छात्रावास स्थापित करने की पहल की जा रही है

अनुसूचित जातियों के कल्याण कार्यक्रम

राज्य में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जातियों की जनसख्या 113·42 लाख है, जो राज्य की कुल जनसंख्या का 15·6 प्रतिशत है राज्य शासन द्वारा इन अनुसूचित जातियों में व्याप्त निरक्षरता, आर्थिक पिछड़ापन, रहन-सहन की कमजोर स्थिति एव अस्पृश्यता जैसी समस्याओं के निवारण हेतु शिक्षा एव प्रशिक्षण इत्यादि योजनाए क्रियान्वित कर इनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए प्रयास जारी है अनुसूचित जातियों के शिक्षा के प्रति जाग्रत करने के उद्देश्य से शिक्षा सम्बन्धी सुविधाए प्रदान की जा रही हैं दूरस्थ स्थानों से अनुसूचित जाति के बच्चों को आवास की सुविधा तथा पढाई हेतु अनुकूल वातावरण निर्मित करने हेतु बालक/बालिकाओं के लिए विभिन्न प्रकार के छात्रावास तथा आश्रमशालाए सचालित की जा रही है, जो निम्नवत् हैं–

1. **प्री-मैट्रिक छात्रावास**–अनुसूचित जातियों का शैक्षणिक विकास करने के लिए प्रदेश के सभी जिलों मे प्री-मैट्रिक छात्रावासो का सचालन किया जा रहा है इन छात्रावासों मे नि:शुल्क आवास, बिस्तर एव खेलकूद की व्यवस्था रहती है त्रिस्तरीय पचायत राज व्यवस्था के अन्तर्गत इन छात्रावासो का सचालन पचायतों के माध्यम से किया जाता है

2. **पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति**–कक्षा 11वीं एव उच्च कक्षाओं में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र एव छात्राओं को पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति स्वीकृत की जाती है यह केन्द्र प्रवर्तित योजना है केन्द्र सरकार द्वारा गत वर्ष से छात्रवृत्ति हेतु आय सीमा ₹ 2 लाख वार्षिक निर्धारित की गई है राज्य शासन अपने स्रोत से ₹ 2 से ₹ 3 लाख वार्षिक आय सीमा वाले छात्रों को भी आधी फीस स्वीकृत कर रहा है

3. **आश्रमशालाएँ**–अनुसूचित जाति वर्ग के आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए विभाग द्वारा जिलों में आश्रम-शालाओं का सचालन किया जा रहा है बालकों के लिए 733 तथा बालिकाओ के लिए 535 छात्रावास/आश्रम सचालित किए जा रहे है, जिसमें निवासरत छात्र को प्रतिमाह ₹ 725 तथा छात्राओ को ₹ 750 शिष्यवृत्ति देने का प्रावधान है

4. **उत्कृष्ट शिक्षा केन्द्रो का सचालन**–राज्य शासन ने 60 प्रतिशत से अधिक अक पाने वाले ऐसे अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के मेधावी छात्र छात्राओं का शैक्षणिक विकास करने की दृष्टि से विभाग द्वारा जिला मुख्यालय पर 50-50 सीट्स क्षमता के बालक/कन्या उत्कृष्ट छात्रावासो का सचालन प्रत्येक जिले में किया जा रहा है

5. **राज्य छात्रवृत्ति**–राज्य छात्रवृत्ति कक्षा 1 से 5 तक अध्ययन करने वाली अनुसूचित जाति की बालिकाओं को प्रदान की जाती है तथा 6 से 10 तक की कक्षा के बालक एव बालिकाओं दोनों को निम्नानुसार निर्धारित दरों पर प्रदान की जाती है–

अनुसूचित जाति राज्य छात्रवृत्ति की वार्षिक दरें

कक्षा	बालक	बालिका
1 से 5 तक	–	150
6 से 8 तक	200	300
9 से 10 तक	600	800

6. **अशासकीय संस्थाओं को शैक्षणिक एवं अन्य कल्याणकारी प्रवृत्तियों के लिए अनुदान**–अनुसूचित जाति का शैक्षणिक विकास करने के लिए अशासकीय सस्थाओं द्वारा सचालित शैक्षणिक प्रवृत्तियों के लिए

7. **परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र**–अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियो को प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल होने के लिए विभाग के परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केद्र भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा सचालित है

8 **छात्रगृह योजना**–यह योजना महाविद्यालयों में पढने वाले उन छात्रों को जिन्हें छात्रावास में प्रवेश नहीं मिल पाता है तथा शहरों में अनुसूचित जाति के छात्रों को अकेले रहने के लिए मकान भी नही मिलता ऐसे छात्रों की कठिनाई को दूर करने के लिए एक छात्र से लेकर अधिकतम दस छात्रों के लिए विभाग किराये के मकान की व्यवस्था करता है

9 **अस्वच्छ धंधे में कार्यरत् परिवारों के बच्चों के लिए केन्द्रशासित विशेष छात्रवृत्ति योजना**–अस्वच्छ धन्धो मे कार्यरत/नियोजित कामगारो के बालक/बालिकाओ के लिए यह विशेष छात्रवृत्ति उनकी मूल छात्रवृत्ति के अतिरिक्त देय होती है

विभाग द्वारा कक्षा 1 से 10वीं तक में लगे अस्वच्छ धन्धे में लग लोगों के बच्चों के लिए छात्रवृत्ति स्वीकृत की जाती है योजनातर्गत विद्यार्थियों को ₹ 1100 प्रति वर्ष छात्रवृत्ति तथा ₹ 750 एकमुश्त शिक्षा सहायता अनुदान प्रदान किया जाता है एव कक्षा 3 से 10 तक छात्रावासी विद्यार्थियों को ₹ 700 शिष्यवृत्ति तथा ₹ 1100 अनुदान प्रदान किया जाता है

10. **विद्यार्थी कल्याण कार्यक्रम**–इस योजना में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को आकस्मिक चिकित्सा एव विभिन्न रुचियों को प्रोत्साहन देने एव व्यावसायिक शिक्षा कक्षाओं में प्रवेश देने के लिए ₹ 500 तक की आर्थिक [illegible] दी जाती है

11. **कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना**–महिला साक्षरता को बढावा देने एव अनुसूचित जाति की बालिकाओ को शैक्षणिक प्रोत्साहन देने के लिए योजनान्तर्गत कक्षा 6वीं, 9वी, 11वी, में प्रवेश लेने वाली अनुसूचित जाति की प्रत्येक छात्रा को शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु क्रमश ₹ 500, 1000 एव 3000 दी जाती है

12. **मुख्यमंत्री कन्यादान योजना**–इस योजना का प्रमुख उद्देश्य मध्य प्रदेश शासन द्वारा गरीब जरूरतमन्द निराश्रित/निर्धन परिवारो की विवाह योग्य कन्या/विधवा/परित्यक्ता के विवाह हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना है यह योजना 1 अप्रैल, 2006 से प्रभावशील है

इस योजना के अन्तर्गत लाभार्थी को मध्य प्रदेश का निवासी तथा परिवार मध्य प्रदेश मे निवासरत् होना चाहिए तथा निराश्रित एव निर्धन परिवार की कन्या/विधवा/परित्यक्ता की 18 वर्ष की आयु पूर्ण होनी चाहिए

इस योजनान्तर्गत कन्या की गृहस्थी की व्यवस्था/स्थापना हेतु ₹ 5000 तथा इसके अतिरिक्त प्रति आवेदक ₹ 1000 सामूहिक विवाह आयोजन के खर्चों के लिए उपलब्ध कराई जाती है

कन्या विवाह 'सौभाग्यवती' योजना–सौभाग्यवती योजना के अन्तर्गत गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाली अनुसूचित जाति की कन्याओं के विवाह के लिए राशि ₹ 5000 की आर्थिक सहायता प्रदान करने का प्रावधान किया गया है

स्वरोजगारोन्मुखी व्यावसायिक प्रशिक्षण–अनुसूचित जाति के विभागीय छात्रावासों मे अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को इलेक्ट्रोनिक्स/आई टी. एव कम्प्यूटर आदि विषयो के सम्बन्ध मे मध्य प्रदेश उद्यमिता विकास केन्द्र (सेडमैप) भोपाल एव रोजगार प्रशिक्षण परिषद् (मेपसेट) के माध्यम से विशिष्ट रोजगारमूलक व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि अध्ययन उपरान्त उन्हें स्वरोजगार स्थापित करने हेतु सहायता मिल सके

नेतृत्व विकास शिविर का आयोजन–अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियो के लिए व्यक्तित्व एव नेतृत्व विकास शिविर' योजना वर्ष 2006-07 से प्रारम्भ की गई है शिविर का आयोजन 26 जनवरी (गणतत्र दिवस) के अवसर पर राजधानी भोपाल मे किया जाता है इस शिविर मे प्रदेश के सभी जिलों के अनुसूचित जाति वर्ग के ऐसे एक छात्र एव

विद्युतीकरण आदि मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए सम्मिलित है ऐसी पंचायतों को उत्कृष्ट कार्यों के लिए जिला स्तर सम्भाग स्तर एव राज्य स्तर पर मूल्याकन कर नकद पुरस्कार दिए जाते है यह पुरस्कार जिला स्तर पर ₹ 5 हजार सम्भाग स्तर पर ₹ 10 हजार एव राज्य स्तर पर सर्वश्रेष्ठ पचायत को ₹ 20 हजार तथा द्वितीय क्रम की पचायत को ₹ 15 हजार की राशि से पुरस्कृत किया जाता है.

15 **अस्पृश्यता निवारणार्थ अन्तर्जातीय विवाह प्रोत्साहन योजना**–इस योजना का मूल उद्देश्य अस्पृश्यता का उन्मूलन करना है ऊँच-नीच और छुआछूत के विचारों का त्याग कर इन विचारों से ओतप्रोत सवर्ण युवक/युवती द्वारा अनुसूचित जाति की युवती/युवक से विवाह करने पर ऐसे दम्पतियों को पुरस्कृत एव सम्मानित किया जाता है प्रतिवर्ष ऐसे साहसी दम्पतियों को ₹ 10 हजार का नकद पुरस्कार, स्वर्ण पदक के स्थान पर ₹ 1 हजार नकद एव प्रशस्ति-पत्र तथा यात्रा व्यय दिया जाता है

16. **बाँछड़ा/बेड़िया सजातीय विवाह प्रोत्साहन योजना**–बाँछड़ा/बेडिया समाज मे वेश्यावृत्ति का घृणित सामाजिक अपराध आज भी कलक के रूप में समुदायों मे व्याप्त है बाँछड़ा/बेडिया समाज में ऐसे युवक-युवतियाँ, जो अपना कलंकित जीवन त्यागकर परिवार स्थापना के लिए सजातीय विवाह कर सम्मानित जीवन जीने के लिए युक्त होते हैं, को इस योजना के अन्तर्गत पुरस्कार दिया जाता है पुरस्कार में ₹ 5000 नकद एव स्वर्ण पदक के स्थान पर ₹ 1000 नकद तथा प्रशस्ति-पत्र दिया जाता है

17. **विधि स्नातकों को आर्थिक सहायता**–इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति के विधि व्यवसाय में सुप्रशिक्षित स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया जाता है विधि स्नातकों को आर्थिक सहायता हेतु चयन बार कौन्सिलिएशन की अनुशासा पर किया जाता है कलेक्टर द्वारा परीक्षण पश्चात् विधि स्नातको को ₹ 200 प्रतिमाह की सहायता एक वर्ष के लिए स्वीकृत की जाती है

विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति–स्नातक पाठ्यक्रमों के बाद विदेशों में उच्च अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति जिसमें फीस के साथ जीवन निर्वाह हेतु राशि भी स्वीकृत की जाती है प्रतिवर्ष इस योजनातर्गत 10 विद्यार्थियों के विदेश अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति स्वीकृत करने का प्रावधान रखा गया है चयनित विद्यार्थी को तीन वर्षों के अन्दर चयनित कोर्स मे विश्वविद्यालय का चयन कर प्रवेश लेना होता है जिस वर्ष विद्यार्थी प्रवेश लेगा उस वर्ष छात्रवृत्ति स्वीकृत की जायेगी वर्ष 2012-13 मे 10 अभ्यर्थियो का चयन किया गया है.

18 **अनुसूचित जाति बस्तियों का विकास**–विशेष घटक योजना के अधीन यह योजना क्रियान्वित की जा रही है, जो अनुसूचित जाति बस्ती सघन नियम 1987-88 द्वारा नियन्त्रित है अनुसूचित जाति बाहुल्य बस्तियों में पहुँच मार्ग का निर्माण, मरम्मत तथा बस्तियों के भीतर सडक पर पुलियों का निर्माण/मरम्मत, पक्की नालियों का निर्माण सामुदायिक भवन पेयजल व्यवस्था, गुमठियों का निर्माण आदि कार्य सम्मिलित है

अनुसूचित जाति बाहुल्य बस्तियाँ जहाँ 40 प्रतिशत से अधिक या न्यूनतम 20 परिवार अनुसूचित जाति के निवासरत हैं, मे सामुदायिक विकास के कार्य यथा सीमेंट रोड, नाली निर्माण, पेयजल कूप निर्माण, सामुदायिक शौचालय एव स्ट्रीट लाइट आदि निर्माण किए जाने की योजना सचालित की जा रही है

पब्लिक/सैनिक स्कूलों में प्रवेश–डेली कॉलेज इदौर, देहली पब्लिक स्कूल इदौर, सिंधिया पब्लिक स्कूल, ग्वालियर एव देहली पब्लिक स्कूल भोपाल में प्रति सस्था अनुसूचित जाति के 5-5 विद्यार्थियों के नवीन प्रवेश कराये जाने का प्रावधान रखा गया है योजना हेतु पालकों की आय सीमा ₹ 1·50 लाख वार्षिक निर्धारित है योजनातर्गत इस सस्थाओ में अनुसूचित जाति के प्रवेशित छात्रों के अध्ययन पर होने वाले समस्त व्यय की प्रतिपूर्ति विभाग द्वारा की जाती है सैनिक स्कूल में समस्त प्रवेशित विद्यार्थियो को योजनातर्गत लाभावित किया जाता है

महर्षि वाल्मिकी प्रोत्साहन योजना–अनुसूचित जाति के होनहार छात्र/छात्राओ को पुरस्कृत एव प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से महर्षि वाल्मिकी प्रोत्साहन योजना प्रारम्भ की गई है इस योजनातर्गत आई आई टी में प्रवेश लेने, एम्स प्रवेश परीक्षा उपरान्त प्रवेश लेने क्लेट प्रवेश परीक्षा उपरान्त प्रवेश लेने तथा एन डी ए प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रशिक्षण मे सम्मिलित होने पर अभ्यर्थियों को ₹ 50 हजार प्रोत्साहन राशि स्वीकृत की जाती है यह राशि महर्षि वाल्मीकी के प्रकटोत्सव के आयोजन पर छात्र/छात्राओ को प्रदान की जाती है

योजना का लाभ लेने के लिए आवदक मध्य प्रदेश के मूल-निवासी और राज्य के लिए निर्धारित अनुसूचित जाति वर्ग का होना चाहिए माता-पिता, पालक एव स्वय की समस्त वार्षिक आय राज्य द्वारा अनुसूचित जाति पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति के लिए निर्धारित सीमा तक मान्य होगी

अन्नपूर्णा योजना–अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छोटे और सीमान्त कृषकों के लिए वर्ष 1999-2000 से अन्नपूर्णा योजना लागू की गई है इस योजना के तहत् खरीफ मौसम मे धान ज्वार बाजरा मक्का, कोदो कुटकी, रागी और रबी मौसम में बीजों की व्यवस्था की जाती है इसी योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति व

अनुसूचित जनजाति के सदस्यों और सीमान्त किसानों के लिए बीज अदला-बदली, बीज स्वावलम्बन और बीज उत्पादन कार्यक्रम भी शामिल किए गए हैं

रानी दुर्गावती अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति स्वरोजगार योजना–यह योजना 2 अप्रैल, 2003 से शुरू की गई है यह अपनी तरह की देश की पहली योजना है, जिसमे समाज के ऐसे कमजोर वर्ग के युवा हितग्राहियों को मदद दी जाएगी, जो विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं का सिर्फ इसलिए लाभ नही उठा पाते, क्योंकि वे मार्जिन मनी जमा कर पाने मे असमर्थ होते हैं

रानी दुर्गावती अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति स्वरोजगार योजना के तहत् अपने प्राथमिक लक्ष्य में 5 हजार युवक-युवतियों को रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा

अनुसूचित जनजातियों का कल्याण–वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में अनुसूचित जनजाति की जनसख्या 153·16 लाख है, जो राज्य की कुल आबादी का 21·10 प्रतिशत है भारत सरकार द्वारा प्रदेश मे **बैगा, भारिया एव सहारिया** जनजाति को विशेष पिछडी जनजाति समूह के रूप मे मान्यता दी गई है इन जनजातियों के विकास हेतु प्रदेश मे 3 प्राधिकरण तथा 11 अभिकरण कार्यरत् है एकीकृत आदिवासी विकास परियोजनाओं के अन्तर्गत 26 वृहद् परियोजनाये, 5 मध्यम परियोजनाये, 30 माडा पॉकेट्स एव 6 लघु अंचल कार्यरत् है प्रदेश में 89 अनुसूचित जनजाति विकास खण्ड हैं

आदिवासी विकास विभाग द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थान (2016-17)

संस्था का प्रकार	संख्या
प्राथमिक शालाएँ	12,643
माध्यमिक शालाएँ	4,369
हाईस्कूल	805
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	786
आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	08
कन्या शिक्षा परिसर	80
एकलव्य आदर्श व्यावसायिक विद्यालय	29
विशेष पिछडी जनजाति आवासी विद्यालय	03
क्रीडा परिसर	26
प्री मैट्रिक छात्रावास	1,368
पोस्ट मैट्रिक छात्रावास	210
आश्रम शालाए	1,051
आदिवासी पुनर्अध्ययन प्रशिक्षण केन्द्र	01

कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना

कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजनान्तर्गत अनु जनजाति की बालिकाओं को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए कक्षा 5वी उत्तीर्ण कर कक्षा 6वीं में प्रवेशित छात्राओं को ₹ 500, कक्षा 8वी से 9 में प्रवेशित छात्राओं को ₹ 1000 तथा कक्षा 10वी उत्तीर्ण कर कक्षा 11वीं में प्रवेशित छात्राओं को ₹ 2000, प्रोत्साहन राशि देने का प्रावधान है

अनुसूचित जनजाति बस्ती विकास योजना

अनुसूचित जनजाति बस्ती विकास का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण/नगरीय क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति बाहुल्य ग्राम बस्ती/वार्ड में मूलभूत सुविधायें उपलब्ध कराना यथा- समुचित पेयजल व्यवस्था, विद्युत् व्यवस्था आन्तरिक क्षेत्र में पक्की सडकें, नली निर्माण, मुख्य सडक से अनुसूचित जनजाति बस्ती/ग्राम तक सडक पुलिया स्लैब निर्माण सामुदायिक भवनों का निर्माण (सामाजिक एव सांस्कृतिक समारोह आदि) के लिए जिलों का राशि उपलब्ध कराई जाती है

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

प्रदेश के 18 जिलों झाबुआ धार बडवानी रतलाम बैतूल, सिवनी, मण्डला, डिण्डोरी, अनूपपुर छिन्दवाड़ा सीधी उमरिया अलीराजपुर, खण्डवा शहडोल बालाघाट जबलपुर एव होशगाबाद में 25 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय सचालित हैं 4 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय वर्ष 2015-16 में स्वीकृत हुए हैं जो आगामी शैक्षणिक सत्र से प्रारम्भ होंगे झाबुआ एव छिन्दवाडा अलीराजपुर एव सतना जिले में दो-दो एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय सचालित हैं इन विद्यालयों में कक्षा 6 से 12वीं तक 7086 विद्यार्थी है, जिसमें 3637 बालक एव 3449 बालिकाए अध्ययनरत् हैं वर्ष 2005-06 से इन विद्यालयों में सी बी एस ई पाठ्यक्रम लागू किया गया है इन संस्थाओं में विद्यार्थियों को एकेडमिक शिक्षा के साथ साथ कम्प्यूटर शिक्षा व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण राष्ट्रीय महाविद्यालया में जईई एव ऑल इडिया पी एम टी में प्रवेश हेतु कोचिग सुविधा साजन गणवेश पुस्तकें स्टेशनरी लायब्रेरी तथा सुसज्जित आवासीय सुविधा नि शुल्क उपलब्ध कराई जाती है वर्तमान में राज्य क 18 जिलो म 25 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय सचालित किए जा रह है

अनुसूचित जनजाति बालिकाओ हेतु साइकिल रखरखाव योजना

इस योजनान्तर्गत शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा 9वीं की जिन आदिवासी बालिकाओं का साइकिल प्रदान की जाती

उन्हे कक्षा 11वी मे प्रवेश लेने पर साइकिल रखरखाव भत्ता ₹ 1000 प्रति बालिका को देय होगा

शंकर शाह पुरस्कार योजना

मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल की 10वी एव 12वी बोर्ड परीक्षा में प्रदेश में प्रथम, द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले आदिवासी छात्रों को निम्नानुसार राशि से पुरस्कृत किया जाता है कक्षा 10वी मे प्राप्त प्रावीण्यता को कक्षा 12वीं मे निरन्तर रखने वाले विद्यार्थियो को अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि ₹ 11,000 दिए जाने का प्रावधान है वर्ष 2014-15 से निम्न दरे प्रभावशाली हैं–

कक्षा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
10वीं	51,000	31,000	21,000
12वीं	51,000	31,000	21,000

रानी दुर्गावती पुरस्कार योजना

मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षा में अपने सवर्ग मे प्रथम, द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली प्रतिभावान आदिवासी छात्राओ को क्रमश निम्नानुसार राशि से पुरस्कृत किया जाता है कक्षा 10वी मे प्राप्त प्रावीण्यता को कक्षा 12वी मे निरन्तर रखने वाले विद्यार्थियों को अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि ₹ 11,000 दिए जाने का प्रावधान है वर्ष 2014-15 से निम्न दर प्रभावशाली हैं–

कक्षा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
10वीं	51,000	31,000	21,000
12वीं	51,000	31,000	21,000

सर्वश्रेष्ठ छात्रावास/आश्रम एवं हाईस्कूल/हायर सेकेण्डरी स्कूल को पुरस्कार

आदिवासी बाहुल्य जिलो मे सचालित सस्थाओं में जिले में सर्वश्रेष्ठ परीक्षाफल देने वाले तीन हाई स्कूल/तीन हायर सेकेण्डरी एव सर्वश्रेष्ठ तीन छात्रावास/आश्रमो को पुरस्कार स्वरूप प्रथम पुरस्कार ₹ 25,000 द्वितीय पुरस्कार ₹ 15,000 एव तृतीय पुरस्कार ₹ 10,000 प्रदान कर सम्मानित किया जाता है

मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग

किसी लोक कल्याणकारी राज्य के लिए यह आवश्यक है कि वह समाज के सबसे पिछडे वर्ग के लिए विशेष प्रावधान निर्धारित करे सम्पूर्ण भारत में अनुसूचित जन जातियो को इस पिछडे तबके के रूप में देखा जा सकता है जिसे न केवल आर्थिक विकास, बल्कि सामाजिक न्याय की भी आवश्यकता अपेक्षया अन्य वर्गों से अधिक है यही कारण है कि भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजातियों के हितों के सरक्षण के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं

मध्य प्रदेश ने भी सघ की उक्त नीति एव सिद्धान्त का अनुगमन करते हुए राज्य की सीमाओं में निवास कर रहे जनजातीय वर्ग के हित सवर्द्धन सरक्षण कल्याण और विकास हेतु एक आयोग का गठन किया है मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग अधिनियम 1995 के तहत् मार्च 1996 में 'मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग' का गठन किया गया है तीन सदस्यीय आयाग में एक सदस्य आयोग का अध्यक्ष होता है इसका मुख्यालय भोपाल में स्थित है

आयोग मुख्यत निम्नलिखित कार्यों को निष्पादित करता है–

1. अनुसूचित जनजातियों के सदस्यों को सविधान के अधीन तथा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन दिए गए सरक्षण के लिए हितग्रहरी के रूप में कार्य करना
2. किसी विशिष्ट जनजातियों या जनजातीय समुदायों या ऐसी जनजातियों या जनजाति समुदायों के भागों या उनके ग्रुपों को सविधान 'अनुसूचित जनजातियों' आदेश 1950 में सम्मिलित करने के लिए कदम उठाने के लिए राज्य सरकार को सिफारिश करना
3. अनुसूचित जातियो के कल्याण के लिए बने कार्यक्रमों के समुचित तथा यथासमय कार्यान्वयन की निगरानी करना तथा राज्य सरकार या किसी अन्य निकाय अथवा प्राधिकरण के कार्यक्रमों के सम्बन्ध में जो ऐसे कार्यक्रमों के लिए जिम्मेदार है सुधार हेतु सुझाव देना
4. लोक सेवाओं तथा शैक्षणिक सस्थाओं मे प्रवेश के लिए अनुसूचित जनजातियों के आरक्षण के सम्बन्ध में परामर्श देना
5. ऐसे कृत्यो का पालन करना जो राज्य सरकार द्वारा उसे सौंपे जाए

आयोग को अपने कर्तव्यो के पालन में निम्नलिखित शक्तियाँ प्राप्त हैं–

1. राज्य के किसी भाग से किसी व्यक्ति को सम्मन करना और हाजिर कराना और शपथ पर उसकी परीक्षा करना
2. किसी दस्तावेज को प्रकट करने और पेश करने का आदेश देना
3. शपथ-पत्रों पर साक्ष्य ग्रहण करना
4. किसी न्यायालय या कार्यालय से किसी अभिलेख या उसकी प्रतिलिपि की अध्यपेक्षा करना

आयोग द्वारा दिया गया परामर्श राज्य सरकार के लिए आबद्धकारी है, यदि राज्य सरकार कोई सलाह स्वीकार नही करती है तो वह उसके लिए कारण अभिलिखित करने के लिए बाध्य होती है प्रत्येक वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर आयोग वार्षिक प्रतिवेदन तैयार करता है जिसमें उसके

कार्यकलापों का सम्पूर्ण विवरण दिया जाता है यह रिपोर्ट राज्य सरकार द्वारा विधान सभा पटल पर रखी जाती है

मध्य प्रदेश की जनजातियों की सामान्य विशेषताएँ

मध्य प्रदेश की जनजातियों में सभी की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ है, किन्तु फिर भी कुछ विशेषताओं को अवश्य ही सूचीबद्ध किया जा सकता है जो सभी जन-जातियों में दृष्टिगत होती है प्रदेश की जनजातियों मे पाई जाने वाली मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) राज्य में निवास कर रही जनजातियों का एक निश्चित भू भाग है हालांकि इन लोगों में स्थान परिवर्तन की प्रवृत्ति पाई जाती है, किन्तु कालान्तर में घुमक्कड जनजातियों ने भी अपने 'स्थायी डेरे' लगाने शुरू कर दिए है

(2) यहाँ पाई जाने वाली सभी जनजातियों की एक सामान्य भाषा है, जो अनेक समुदायों में एकरूपता लिए हुए है

(3) यहाँ की जनजातियों में सामाजिक सगठन की मूल इकाई 'परिवार' का अस्तित्व विद्यमान है यहाँ सयुक्त तथा एकल परिवार प्रथाएँ प्रचलित है

(4) यहाँ की अधिकाश जनजातियों में अन्तर्विवाह की प्रथा प्रचलित है अर्थात् एक जनजाति के सदस्य अपनी ही जनजाति क सदस्यों स विवाह करते है

(5) परिवार पितृसत्तात्मक या पितृवशीय पाए जाते है परिवार का मुखिया पिता होता है तथा वह ही परिवार के सदस्यों पर नियन्त्रण स्थापित करता है

(6) किसी जनजाति के सभी सदस्यों मे सस्कृति की एकरूपता होती है

(7) राज्य मे निवास कर रही जनजातियो का आर्थिक जीवन आज भी रूढिवादी व परम्परावाद पर आधारित है वन तथा वनोपज पर आश्रित इन लोगों के अन्य अर्थ स्रोत कृषि मजदूरी, औद्योगिक मजदूरी, चटाई, झाड़ू तथा बाँस से निर्मित बर्तन तथा आखेट आदि है

(8) इनके परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वयं में एक आर्थिक इकाई है इस प्रकार बच्चों से लेकर बूढे तक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते है तथा परिवार की अर्थ-व्यवस्था में सहायता देते हैं

(9) राज्य की जनजातियाँ अपने प्राचीन धर्म 'प्रेतवाद' में अटूट विश्वास रखती है इसके अतिरिक्त भूत-प्रेत, जादू-टोना, टोटम-टोटमवाद, निषेध जैसे अन्धविश्वासों का प्रचलन भी है

(10) इन जनजातियों मे राजनैतिक सगठन भी पाया जाता है सामान्यत एक गाँव का मुखिया वशानुगत आधार पर होता है जो अधिकार सम्पन्न एव प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है कुछ जनजातियों मे पचायत जैसी सस्थाएँ भी पाई जाती है

(11) यहाँ निवास कर रही जनजातियाँ मुख्यत निग्रीटो आस्ट्रेलॉयड तथा मगोलॉयड प्रजाति की सदस्य हैं

(12) यह जनजातियाँ मद्यपान नृत्य सगीत में डूबी रहती हैं तथा मासाहारी होती है

(13) यह जनजातियाँ आज भी आधुनिक समाज से असपृक्त हैं तथा दूर पहाडियों व जगलो में निवास करती है

ध्यातव्य बिन्दु

- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल आबादी में अनुसूचित जनजाति का 1,53,16,784 है
- जनजाति को आदिवासी नाम ठक्कर बापा ने दिया है जी घुरिया ने इन्हें 'पिछडे हिन्दू' कहा है
- मुस्लिम भील तडवी कहलाते हैं

23

जनजातियों की सांस्कृतिक विशेषताएँ

मध्य प्रदेश एक जनजातीय बाहुल्य प्रदेश है जनजातियों
ं अमूल्य सम्पदा उनकी अपनी विशिष्ट सस्कृति है जो न
त उनकी पहचान' है, बल्कि उनके जीवन का आधार
वास्तव में प्रत्येक समाज के लिए उसकी सस्कृति का विशेष
त्व होता है किन्तु जनजातीय लोग अपनी सस्कृति के
ति अधिक सवेदनशील होते हैं यह इनकी सस्कृति ही है
जसने सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया
नों तथा जगलों में निवास करने वाली यह जनजातियाँ
अपने सरल समाज' में बधुता, भ्रातृत्व तथा त्याग की
वना से ओतप्रोत है तथा इस सन्दर्भ में प्राक्साक्षर होने
े बावजूद हमारे 'तथाकथित सभ्य समाज' पर प्रश्नचिह्न
गाती है जनजातीय समाजों मे सस्कृति का महत्व इस
ात से आंका जा सकता है कि किसी स्त्री के गर्भ मे भ्रूण
प में आने से पूर्व वहाँ सस्कृति प्रविष्ट होती है और इस नव-
जात बच्चे की जीवन से प्रौढावस्था तथा उसके बाद मृत्यु
क सम्बद्ध रहती है

मध्य प्रदश की जनजातियाँ अपनी सस्कृति के लिए
ारे भर में प्रसिद्ध है हालाकि छत्तीसगढ राज्य के साथ
ध्य प्रदेश जनजातियो तथा उनकी सस्कृति के विशाल भण्डार
ो भी खोया है किन्तु विभाजित मध्य प्रदेश में निवासरत्
नजातियाँ भी सस्कृति की दृष्टि से सम्पन्न है प्रदेश की
नजातीय सस्कृति को हम जिन शीर्षकों के अन्तर्गत पढेंगे
: इस प्रकार है –परिवार, विवाह प्रथा, वधू मूल्य, धर्म,
दू दृष्टिवाद, शामनवाद, मडई तथा भगोरिया

परिवार- मध्य प्रदश की जनजातियों में परिवार सगठन
ेमान है अधिकाश परिवार पितृसत्तात्मक एव पितृवशीय
जाते है अर्थात विवाह के पश्चात् स्त्री वर के घर
कर रहती है तथा इनसे होने वाले बच्चो का वश पिता
े नाम से जाना जाता है ऐसी जनजातियों में
रिवार का मुखिया पिता होता है पिता ही पूरे परिवार पर
ियन्त्रण रखता है तथा धार्मिक कार्यक्रम, उत्सव पर्व व
ी की व्यवस्था भी इसी के द्वारा की जाती है

विवाह- विवाह सामाजिक सगठन व सरचना का प्रमुख
ग है यह न केवल सामाजिक सगठन को स्थिरता
और दृढता प्रदान करता है, बल्कि स्त्री-पुरुष के यौन
सम्बन्धो को नियमित व नियन्त्रित करके परिवार का निर्माण
करता है वस्तुत विवाह के द्वारा ही परिवार की स्थापना
होती है

मध्य प्रदेश की जनजातियों में एकल विवाह, बहुपति
विवाह तथा बहुपत्नी विवाह प्रचलित है फिर भी अधिकाश
जनजातियों में बहुपत्नी विवाह का प्रचलन अधिक है

भारत की जनजातियो की तरह ही प्रदेश के जन-
जातीय समाज में भी जीवन साथी अथवा विवाह साथी
चुनने की कई प्रथाएँ प्रचलित है मध्य प्रदेश की जनजातियों
में विवाह साथी चुनने की प्रमुख पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं–

हरण विवाह–जैसाकि नाम से स्पष्ट है विवाह की इस
पद्धति में युवक द्वारा युवती को उसके माता-पिता की इच्छा
के विरुद्ध हरण कर लिया जाता है, किन्तु कालान्तर में यह
विवाह वास्तविक हरण न होकर नाटकीय अथवा अभि-
नयात्मक मात्र रह गया है अर्थात् अब युवक-युवती अपने
परिवार की इच्छा से ही एक-दूसरे के साथ जाते है, किन्तु
कहा यह जाता है कि युवक द्वारा युवती का हरण किया
गया है तत्पश्चात् दोनों पक्षो द्वारा युवक-युवती को परिणय
सूत्र में बाँध दिया जाता है सम्प्रति इन समाजो मे हरण
विवाह के अवशेष ही रहे हैं और वह भी सम्भवत बरसों
पुरानी परम्परा का निर्वाह मात्र है प्रदेश की गोंड तथा
भील जनजाति मे इस प्रकार की विवाह प्रथा प्रचलित है

सेवा विवाह–सेवा विवाह से आशय यह है कि वर
अपनी वधू प्राप्त करने के उद्देश्य से कन्या के घर में कुछ
दिन, महीनो अथवा वर्षों तक सेवा करता है, तत्पश्चात्
इसकी सेवा से प्रसन्न होकर वधू पक्ष द्वारा उसे कन्या सौप
दी जाती है दरअसल यह प्रथा ऐसी जनजातियो में अधिक
प्रचलित है जहाँ वधूमूल्य अधिक है अत जो युवक
वधूमूल्य चुकाने मे असमर्थ होते हैं वे सेवा के रूप में वधू
मूल्य अदा करते है

मध्य प्रदेश की गोंड तथा बैगा जनजाति मे यह प्रथा
देखी जा सकती है गोंड ऐसे व्यक्ति को 'लमनई' और
'लमनेसा' कहते हैं

सहपलायन विवाह–विवाह की इस पद्धति के अन्तर्गत युवक और युवती स्वेच्छा से विवाह के लिए गाँव से दूर पलायन कर जाते हैं, क्योकि माता-पिता या जनजातीय नियमों की कठोरता के कारण उनके लिए अपने गाँव में रहकर विवाह करना सम्भव नही होता. मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में भीलों के प्रमुख पर्व भगोरिया मे इसी प्रकार के विवाह के लक्षण दृष्टिगत होते हैं

क्रय विवाह–इस विवाह प्रथा के अन्तर्गत वर को कन्या के माता-पिता को वधूमूल्य देना होता है जनजातीय समाजों में यह विवाह की अत्यधिक प्रचलित प्रथा है. मध्य प्रदेश की गोड, भील तथा बैगा जनजाति में क्रय विवाह प्रथा पाई जाती है

परीक्षा विवाह–इस विवाह प्रथा में पुरुष को वधू प्राप्त करने हेतु अपनी वीरता, साहस और पौरुष का परिचय देना होता है यदि वह निर्दिष्ट कार्य को पूर्ण करने में सफल होता है तो उसे यह अधिकार होता है कि वह किसी भी विवाह योग्य लड़की को अपनी विवाह साथी बना ले पश्चिमी मध्य प्रदेश के भीलों मे 'गोल गधेडो' उत्सव के दौरान परीक्षा विवाह के तहत् ही साहसी युवक को अपनी पत्नी चुनने का अधिकार दिया जाता है

विनिमय विवाह–इस विवाह के अन्तर्गत एक परिवार के भाई और बहन का विवाह क्रमश दूसरे परिवार की एक बहन एव उसके भाई के साथ किया जाता है यह विवाह का एक मितव्ययी तरीका है जिसमें दोनों ही पक्षों द्वारा वधूमूल्य बचा लिया जाता है यही कारण है कि विनिमय विवाह लगभग सभी जनजातियों मे पाई जाने वाली एक लोकप्रिय प्रथा है

वधूमूल्य–जनजातीय समाजों में वैवाहिक सम्बन्धों के दौरान वधूमूल्य का प्रचलन एक सार्वभौमिक घटना है जब कोई इच्छुक वर कन्या पक्ष को कुछ शुल्क भुगतान कर वधू प्राप्त करता है तो यह भुगतान अथवा शुल्क ही वधूमूल्य कहा जाता है मर्डोक के अनुसार यह करीब 47 प्रतिशत समाजों में पाया जाता है लगभग सभी जनजातीय समाजो में यह प्रथा किसी न किसी रूप में अवश्य पाई जाती है स्वाभाविक रूप से मध्य प्रदेश की जनजातियाँ भी इस प्रथा से नही बच सकी हैं और यहाँ भी वधूमूल्य प्रथा व्यापक रूप से फैली हुई है

विद्वानों द्वारा वधूमूल्य प्रथा प्रचलन के बताए गए प्रमुख कारण इस प्रकार है–

(1) विवाह के पश्चात् वधू अपने ससुराल आ जाती है जिससे उसके मायके के लोग अपनी कन्या और उससे होने वाली सन्तान से वचित रह जाते है अत. वर पक्ष को यह क्षतिपूर्ति वधूमूल्य देकर करनी होती है

(2) मायके में कन्या परिवार की एक आर्थिक इकाई के रूप मे काम करती है अत विवाह के पश्चात् वर के घर जाने से होने वाली क्षति को वधूमूल्य से पूरा किया जाता है.

(3) पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों की सख्या का कम होना भी वधूमूल्य के प्रचलन का एक प्रमुख कारण है

(4) वधूमूल्य दो परिवारो के मध्य आर्थिक सहयोग का प्रतीक होता है

(5) कतिपय समाजों में यह मान्यता है कि वधूमूल्य देने से वधू के ऊपर से उसके पारिवारिक देवता का सरक्षण हट जाता है एव उसके साथ ही पति के पारिवारिक देवताओं का सरक्षण प्राप्त हो जाता है

(6) स्त्रियों को क्रय-विक्रय की वस्तु समझना भी वधू-मूल्य प्रचलन का एक अन्य कारण है

टोटमवाद–टोटमवाद जनजातीय जीवन के धार्मिक तत्वों एवं सामाजिक सगठन का एक अनूठा सयोग है टोटमवाद मे कोई जनजाति अपने गोत्र का सम्बन्ध केवल मनुष्यों तक सीमित न रखते हुए भौतिक वस्तु, पशु, पेड पौधे तथा अन्य नैसर्गिक घटनाओं से भी अपना सम्बन्ध स्थापित करती है तथा इस आधार पर उसमे ऐसी वस्तुओं अथवा घटनाओं के प्रति अन्धविश्वास, श्रद्धा, भक्ति तथा आदर के भाव जाग्रत हो जाते है इस प्रकार पशु-पक्षी तथा भौतिक वस्तु 'टोटम तथा टोटम की धारणाओं पर विश्वास 'टोटमवाद' कहलाता है

टोटम शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1791 मे जे लॉग ने उत्तरी अमरीका के इण्डियन के लिए किया था ऐसा अनुमान है कि भारत में टोटमवाद का विकास प्रोटो आस्ट्रेलॉयड द्वारा ही किया गया होगा चूँकि मध्य प्रदेश मे भी प्रोटो आस्ट्रेलियॉड प्रजाति की जनजातियाँ निवास करती है अत यहाँ भी टोटमवाद के प्रमाण स्पष्ट देखे जाते है

टोटम को हिन्दी में 'गोत्र चिह्न' अथवा 'गणचिह्न कहते हैं वस्तुत टोटमवाद मनुष्य या रक्त सम्बन्धो के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं अथवा जीव-जन्तुओं के आधार पर गोत्र का निर्माण करता है इस प्रकार यह गोत्र सम्बन्ध समाज तथा विवाह आदि नियत्रित करने में सहायक होता है यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि टोटमवाद न तो धर्म है और न ही टोटम कोई भगवान या भगवान का प्रतीक निष्कर्षत टोटम तथा टोटमवाद जनजातीय सामाजिक सगठनों का एक प्रमुख आधार है

भगोरिया–जनजातीय समाजो में हाट बाजार तथा पर्व त्यौहार का अत्यधिक महत्व होता है जनजातीय क्षेत्रो मे लगने वाले हाट बाजार न केवल इनके मनोरजन के साधन होते हैं, अपितु सास्कृतिक आदान-प्रदान आर्थिक विनिमय तथा परिणय स्थल के रूप में भी उल्लेखनीय है पश्चिमी मध्य प्रदेश के भीलों द्वारा आयोजित 'भगोरिया पर्व इस दृष्टि से अत्यधिक महत्व का हो जाता है

भगोरिया उत्सव का आयोजन होलिका दहन से सात दिन पूर्व आरम्भ हो जाता है यह मुख्यत भीलों का त्यौहार है अत इस उत्सव का प्रमुख केन्द्र झाबुआ जिला होता है झाबुआ जिले में कट्टीवाड़ा और भामरा इसके प्रमुख आकर्षण केन्द्र है इसके अतिरिक्त बोरी, सौंडवा, फूल-गाल बालमपुर, उमराली, नानपुर, चरुचला, बखतगढ आदि ग्रामों मे भी यह उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है

भगोरिया हाट केवल मौज-मस्ती और 'खरीद फरोख्त का केन्द्र ही नही होता, बल्कि युवक-युवतियों के लिए 'विवाह मण्डप' का कार्य भी करता है अविवाहित भील अपनी जीवनसगिनी की तलाश में हाट में घूमते रहते हैं युवतियाँ भी सजधज कर टोलियों में घूमती हैं. यदि किसी युवक को कोई युवती पसंद आ जाती है, तो वह उसके चेहरे पर गुलाल लगा देता है प्रतिक्रियास्वरूप यदि लड़की भी ऐसा ही करती है, तो यह युवती की सहमति मानी जाती है और यदि वह सिर पर लगा गुलाल साफ कर देती है तो इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि उसे विवाह प्रस्ताव स्वीकार नहीं है. 'भगोरिया हाट' में अधिकाश ऐसे विवाह सम्पन्न होते है जो या तो पारिवारिक विवाद में उलझे हुए रहते हैं अथवा वर पक्ष वधूमूल्य देने में असमर्थ होता है इस प्रकार यह सम्मेलन एक ओर जहाँ सामाजिक कुरीतियों पर अकुश लगाता है वही दूसरी ओर नवयुगलो को स्वेच्छा से जीवन साथी चुनने की इजाज़त देता है जिससे एक सुखद वैवाहिक जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है

भगोरिया हाट की एक विशेषता यह है कि यहाँ जनजातीय सदस्यों के प्रत्येक वर्ग यथा बच्चे, युवक, प्रौढ़ तथा वृद्धजन को देखा जा सकता है यहाँ तक कि अब इन हाटो में शहरी लोग भी नजर आने लगे हैं हाट मे जनजातीय लोगो की जीवन आवश्यक वस्तुओं का पर्याप्त सकलन होता है चूँकि भील जनजाति सौंदर्य के प्रति अधिक सजग है अतः इन हाटों में सौंदर्य प्रसाधन तथा रगबिरगे वस्त्रों के विशाल भण्डार होते है जिन्हें भील स्त्रियाँ तथा पुरुष खरीदते हैं हाट में धार्मिक क्रियाएँ भी होती है जिन्हें समाज के वृद्धजनों द्वारा सम्पन्न किया जाता है

नृत्य तथा सगीत के बिना किसी भी समारोह का पूर्ण आनन्द नहीं लिया जा सकता भगोरिया हाट में नृत्य तथा सगीत का सगम भी शामिल है स्त्रियाँ तथा पुरुष एक साथ मिलकर नृत्य गान करते है वाद्य यत्रों में ढोल, मादल, कुण्डी, थाली, शहनाई बाँसुरी आदि प्रयोग मे लाई जाती हैं. इसी दौरान किसी वृद्ध व्यक्ति द्वारा नृत्य देवता 'भगेरा देव' की पूजा भी की जाती है.

भगोरिया तीन चरणों मे आयोजित किया जाता है प्रथम बाजार के दिन को 'गुलालिया हाट' भरता है इस दिन स्त्रियाँ तथा पुरुष अपनी आवश्यकता का सामान खरीदते है इसके बाद 'भगोरिया हाट लगता है जिसमे सबसे अधिक चहल-पहल होती है इसी हाट में युवक-युवती एक-दूसरे को पसन्द करते हैं अन्त में हाट समाप्त हो जाता है तथा शोर/शराबे से भरा मैदान वीरानी में बदल जाता है अत इसे 'उजाड़िया हाट' कहते हैं

अविभाजित मध्य प्रदेश मे बस्तर के युवागृहों (घोटुल) ने विश्व के नृतत्वशास्त्रियो का ध्यान अपनी ओर खीचा था, किन्तु अब यह छत्तीससगढ राज्य की अपनी सास्कृतिक सम्पदा है. शेष मध्य प्रदेश में 'भगोरिया' राज्य का ऐसा पहला त्यौहार है जो अपनी विशिष्ट पहचान के लिए मानवशास्त्रीय मानचित्र पर अपना स्थान बना सकता है

मड़ई–मडई गोंड तथा इसकी उपजातियो का महत्वपूर्ण मेला है वैसे तो यह मेला मण्डला से बस्तर तक के विभिन्न क्षेत्रों मे लगता है, किन्तु बस्तर के नारायणपुर की मड़ई सर्वाधिक प्रसिद्ध है, जोकि अब छत्तीसगढ राज्य मे है शेष मध्य प्रदेश में मण्डला तथा इसके आसपास के क्षेत्रो मे गोड तथा मुरिया जनजाति द्वारा मडई का आयोजन किया जाता है यह मेला जनवरी से अप्रैल माह के मध्य लगाया जाता है

मड़ई के माध्यम से जनजातीय लोगों को अपने दैनिक जीवन में जरूरत पडने वाली वस्तुएँ एक ही स्थान पर मिल जाती हैं साथ ही यह मेल-मिलाप तथा सास्कृतिक आदान-प्रदान का भी मुख्य केन्द्र है मड़ई का आयोजन तीन से चार दिन के लिए किया जाता है जिसकी तैयारियाँ गोंडों द्वारा पूर्व से ही कर ली जाती है मडई के प्रथम दिन पवित्र वृक्ष के नीचे सगीत एव नृत्य के साथ देवी के समक्ष बकरे की बलि चढाई जाती है और जुलूस निकालकर मेला क्षेत्र में प्रवेश किया जाता है इस दौरान आदिवासी लोग अपने देव अगा देव को कधे पर उठाकर सवारी निकालते है मेले का प्रमुख आकर्षण मडई के मुख्य दिन-रात्रि में एक खुले मैदान मे किया जाने वाला 'एबालतोर नृत्य' है

24

मध्य प्रदेश में त्यौहार एवं मेले

मध्य प्रदेश के पर्व और उत्साव

रसनवा यह पर्व मण्डला जिले के बैगाओं द्वारा अपने आदि पुरुष नगा बैगा की याद मे मनाया जाता है इस पर्व की पृष्ठभूमि मे यह कथा प्रचलित है कि एक बार मोहती और अन्हेरा झाडियों मे लगी शहद से एक बूँद शहद जमीन पर गिर गई जिसे नगा बैगा ने उठाकर चख लिया शहद चखने के तुरन्त बाद सभी मधुमक्खियाँ बाघ बन गई और नगा बैगा की ओर आक्रमण कर दिया नगा बैगा वहाँ से किसी तरह जान बचाकर घर पहुँचा तो देखता है कि उसके पूरे घर मे मधुमक्खियाँ भरी है उसने इस समस्या से बचने के लिए मधुमक्खियों को यह वचन दिया कि वह हर नौवें दिन उनका पूजन करवाया करेगा तभी से नगा बैगा के सम्मान में बैगा जनजाति द्वारा इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है

मेघनाद मेघनाद गोंडो का एक प्रमुख त्यौहार है मेघनाद गोंडो का सर्वोच्च देवता है तथा इसी के सम्मान में यह पर्व आयोजित किया जाता है यह पर्व फाल्गुन के पहले पक्ष में मनाया जाता है, किन्तु इसकी तिथि निश्चित नही होती है मेघनाद पर्व का प्रमुख आकर्षण गोंड आदिवासियों द्वारा विभिन्न कलाओं व करतब का प्रदर्शन है इन दिनो उत्सव स्थल पर चार खम्भों पर एक तख्ता जमाया जाता है इस तख्त के मध्य मे एक पेड़ पर पुन एक खम्भा लगाते है जिस पर एक आडी बल्ली लगायी जाती है यह बल्ली गोलाई में घूमती है तथा इस घूमती बल्ली पर आदिवासी कई रोमाचक करतब दिखाते है तख्त के चारो ओर मण्डली सदस्य तथा दर्शक होते है जो मत्र उच्चारण करते रहते है तथा वातावरण को भक्तिमय बनाते है कुछ जिलो मे इसे खडेरा या खरेरा नाम से भी जाना जाता है

लारुकाज—लारुकाज गोंडो का एक मुख्य पर्व है जिसे नारायणदेव के सम्मान मे मनाया जाता है यह पर्व सुअर के विवाह का प्रतीक माना जाता है समय के साथ इस पर्व का महत्व कम होता जा रहा है तथा यह लुप्त प्राय है इस पर्व मे सुअर की बलि चढाई जाती है ऐसा माना जाता है कि इस उत्सव के आयोजन से परिवार में सुख समृद्धि तथा सम्पन्नता बनी रहती है

भाईदूज भाईदूज पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है एक चैत्र माह मे होली के उपरान्त और दूसरा कार्तिक मे दीपावली के बाद यह पर्व रक्षाबधन की तरह ही है बहनें भाई को कुमकुम, हल्दी, चावल से तिलक करती है भाई बहिनों को उनकी रक्षा करने का वचन देता है इस पर्व से सम्बन्धित एक कथा यमुना तथा यमराज पर केन्द्रित है ऐसा माना जाता है कि यमुना (नदी) व यमराज (मृत्यु के देवता) आपस में बहन, भाई थे एक बार यमराज भाईदूज के दिन बहन के घर टीका कराने पहुँचे जब भैया ने उपहार दिया तो यमुना ने इसे स्वीकार नही किया बल्कि इसके एवज मे यह वचन माँगा कि जो भाई इस दिन अपनी बहिन से टीका कराएगा उसकी उम्र में एक दिन बढ़ जाएगा यमराज ने अपनी बहिन की इच्छा पूरी की और वे वचनबद्ध हो गए इस तरह भाई दूज पर्व भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को सुदृढता प्रदान करता है

गणगौर गणगौर पर्व मे शिव तथा पार्वती की पूजा की जाती है मालवा मे यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है एक चैत्र माह (मार्च अप्रैल) तथा दूसरा भाद्र माह में इस त्यौहार पर स्त्रियाँ शिव-पार्वती की प्रतिमाएँ बनाती है फिर उनकी पूजा की जाती है पूजा के दौरान महिलाएँ नृत्य करती है, बताशे, बाँटती हैं और प्रतिमाओं को जलाशय या नदी मे विसर्जित करती है

संजा व मामूलिया—यह पर्व अविवाहित युवतियों द्वारा मनाया जाता है जो अश्विन माह में 16 दिन तक चलता है इसके अन्तर्गत नवयुवतियाँ अपने घरो की दीवारों पर गोबर की विभिन्न आकृतियाँ बनाती है तथा शाम को सामूहिक रूप से गीत गाती है

बुन्देलखण्ड क्षेत्र मे युवतियों द्वारा मनाये जाने वाले ऐसे ही एक पर्व को मामूलिया कहा जाता है इस पर्व में किसी वृक्ष की कटी टहनी या झाडी (विशेषकर नीम की रगीन कुर्ता या ओढनी पहनाकर उसमे फूलों का श्रृंग उलझाया जाता है शाम को सभी लडकियाँ एकत्रित होकर

गीत गाते के साथ इस टहनी अथवा डाली को किसी जलाशय या नदी में विसर्जित करती हैं

हरेली या हरेरी—यह पर्व श्रावण माह की अमावस्या को मनाया जाता है यह मुख्यत किसानो का त्यौहार है जिसमे वे अपने कृषि उपकरणो की पूजा करते हैं मण्डला जिले मे यह पर्व श्रावण माह की पूर्णिमा को तथा मालवा क्षेत्र मे आषाढ के महीने में मनाया जाता है मालवा क्षेत्र मे इसे 'हर्यागोधा' कहते हैं तथा महिलाएँ इस दिन व्रत रखती हैं

गंगा दशमी या गंगा दशहरा—यह पर्व ज्येष्ठ माह की शुक्ल दशमी तिथि (कृष्ण पक्ष) को मनाया जाता है यह पर्व सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में मनाया जाता है इस पर्व के पीछे यह मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी पर गगा का अवतरण हुआ था इसीलिए जेठ (मई-जून) की दसवी तिथि को पडने वाला यह पर्व गगा दशमी कहा जाता है. किन्तु फिर भी इस त्यौहार का प्रत्यक्ष सम्बन्ध धर्म से नही है इस दिन लोग सपत्निक नदी किनारे जाते हैं तथा अपने अराध्य देव की पूजा करते हैं

गोवर्धन पूजा—गोवर्धन पूजा कार्तिक माह में दीपावली के दूसरे दिन की जाती है इसमें गोवर्धन पर्वत तथा गौधन की पुजा की जाती है स्त्रियाँ गोबर से यह पर्वत तथा बैलों की आकृतियाँ बनाती है गोंड तथा भूमिया जनजाति में यह पर्व नहीं मनाया जाता है पशुपालक अहीर इस दिन खेर देव की पूजा करते है चद्रावली नामक कथागीत भी इस अवसर पर गाया जाता है

नवात्र—फसल के पकने पर यह पर्व दीपावली के बाद मनाया जाता है बुन्देलखण्ड में यह दीवाली के ग्याहरवे दिन मनाया जाता है इस दिन गन्ना तथा ज्वार की पूजा होती है कई जगह इस छोटी दीवाली भी कहते हैं

नौरता—दशहरे के पूर्व नौ दिनों तक चलने वाला यह पर्व मुख्यत महिलाओं द्वारा मनाया जाता है इन नौ दिनो में स्त्रियाँ माँ दुर्गा की पूजा करती हैं और उपवास रखती हैं कई जगह महिलाएँ 'गरबा नृत्य' के साथ माँ दुर्गा की उपासना करती हैं

घड़ल्ला— घडल्ला नौरता के साथ-साथ ही मनाया जाता है इस अवसर पर लडकियाँ सामूहिक रूप से एकत्रित होती हैं इनमें से एक लडकी के सिर पर छिद्रयुक्त घडा रख दिया जाता है जिसमे दीपक जलता रहता है तत्पश्चात यह घर घर जाकर अनाज और पैसा एकत्र करती है इसी तरह का एक पर्व अविवाहित युवको द्वारा भी मनाया जाता है जिसे 'छला' कहते है

सुआरा— बुन्देलखण्ड का 'सुआरा' पर्व मालवा के घड़ल्ला की तरह ही है सुआरा त्यौहार पर दीवार में लगे लकड़ी के खम्भे पर राक्षस की प्रतिमा बैठायी जाती है राक्षस के साथ ही शिव पार्वती की प्रतिमाएँ रखी जाती है दीवार पर सूर्य और चन्द्र बनाए जाते है इसके पश्चात् लडकियाँ पूजा करती और गीत गाती हैं

दशहरा, होली तथा दीपावली—भारत के अन्य भागों की तरह ही मध्य प्रदेश मे भी यह तीनों त्यौहार हर्ष एव उल्लास के साथ मनाए जाते है

मध्य प्रदेश के प्रमुख मेले

मेले हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं जो न केवल हमारी आर्थिक गतिविधियो से सम्बद्ध हैं, बल्कि हमारे धार्मिक, सास्कृतिक और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करते हैं मेले की अवधारणा को आदिमकाल की अर्थ व्यवस्था मे देखा जा सकता है जब किसी निश्चित समय मे एक निश्चित स्थान पर जीवन आवश्यक वस्तुओं का सकलन मिलता था और आसपास के ग्रामीणवासी अपनी जरूरत के सामान की खरीद फरोख्त किया करते थे, किन्तु समय के साथ मेले का महत्व केवल वस्तुओं के क्रय विक्रय एव विनिमय तक सीमित न रहकर सामाजिक मान्यताएँ और सास्कृतिक मूल्यों के आदान-प्रदान तक विस्तारित हो गया है इस प्रकार मेले अर्थव्यवस्था, समाज और सस्कृति की अनूठी त्रिवेणी बनकर उभरे है

भारत की ही तरह मध्य पदेश में भी मेलों का आयोजन कृषि तथा मौसम को ध्यान में रखते हुए किया जाता है मौसम के अनुसार सबसे अधिक मेले चैत्र (मार्च-अप्रैल) तथा वैशाख (अप्रैल-मई) मे लगते हैं वर्षा ऋतु में आवागमन कठिन होता है अत आषाढ, श्रावण तथा भादपद (जून-जुलाई-अगस्त) मे मेले बहुत कम लगते हैं कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर), माघ (जनवरी-फरवरी) तथा फाल्गुन (फरवरी-मार्च) के महीने में भी मेलो की अधिकता होती है

एक अनुमान के अनुसार इदौर सम्भाग मे सर्वाधिक मेले लगते हैं प्रदेश मे भरे जाने वाले प्रमुख मेले निम्न लिखित है—

(1) **कुम्भ मेला**—उज्जैन मे लगने वाला यह मेला न केवल प्रदेश बल्कि विश्वभर में विख्यात है कुम्भ मेला (सिहस्थ) 12 वर्षों के अन्तराल मे लगता है जिसमें शामिल होने देश-विदेश से करोडों श्रद्धालु आते है इसी अवधि में शाही स्नान भी होते हैं बृहस्पति के सिह राशि पर स्थित होने पर पवित्र क्षिप्रा नदी पर चैत्र मास की पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक यह स्नान चलता रहता है

(2) **महामृत्युंजय का मेला** रीवा जिले मे अवस्थित महामृत्युजय के मन्दिर में यह मेला प्रतिवर्ष बसत पचमी व शिवरात्रि को लगता है जब महाराजा विक्रमादित्य ने रीवा शहर को बसाया, तब यह मन्दिर प्रमुख पूजा का स्थल था ऐसी मान्यता है कि मन्दिर मे आराधना करने से वर्षा हो जाती है

(3) **बाबा शहाबुद्दीन औलिया का उर्स**–यह उर्स नीमच स्थित बाबा शहाबुद्दीन औलिया की दरगाह पर प्रतिवर्ष फरवरी माह में चार दिन तक चलता है बाबा शहाबुद्दीन उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के रहने वाले थे वे सैनिक थे तथा अफसरों को अपने चमत्कारों से उन्होने प्रभावित कर लिया था लगभग 85 वर्षों से यहाँ पर उर्स हो रहा है

(4) **नागाजी का मेला**–यह मेला सन्त नागाजी के स्मरण मे अगहन मास (नवम्बर-दिसम्बर) मे आयोजित किया जाता है नागाजी मुगल शासक अकबर के शासन काल में मुरैना जिले के पोरसा गाँव में सन्त थे एक महीने तक चलने वाले इस मेले का मुख्य आकर्षण यहाँ बन्दर सहित अनेक पालतू जानवरों का बेचा जाना है

(5) **गरीबनाथ बाबा का मेला**–शाजापुर जिले के अवन्तीपुर बरोडिया गाँव मे लगने वाला यह मेला पूरे चैत्र माह (मार्च-अप्रैल) तक चलता है बाबा गरीबनाथ नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी थे और इसी गाँव में रहते थे यहाँ प्रतिमाह मेला लगाने का निर्देश उन्होने ही गाँव वालो को दिया था

(6) **तेजाजी का मेला**–गुना जिले के मामावद गाँव में यह मेला प्रतिवर्ष भाद्र माह (अगस्त-सितम्बर) मे तेजाजी की जन्मतिथि पर लगभग 70 वर्षों से लगता आ रहा है तेजाजी एक सभ्य सुसस्कृत परिवार के लड़के थे वे अपनी सत्यवादिता के लिए प्रसिद्ध थे.

(7) **सिंगाजी का मेला**–यह मेला प्रतिवर्ष क्वार माह (अगस्त-सितम्बर) में पश्चिमी निमाड (खरगौन) जिले के ग्राम पिपल्या में लगता है यह मेला एक सप्ताह तक चलता है सिगाजी एक चरवाहा थे, जो लगभग 400 वर्ष पूर्व यहाँ रहा करते थे अनेक चमत्कारों और अन्य अलौकिक घटनाओं के कारण अपनी मृत्यु के पश्चात् वे एक दिव्य पुरुष बन गए

(8) **जोगेश्वरी देवी का मेला**–यह मेला गुना जिले में चदेरी नामक स्थान पर प्रतिवर्ष चैत्र माह में लगाया जाता है इस मेले में वस्त्र बर्तन, पशु तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं की खरीद-फरोख्त की जाती है

(9) **हीरा भूमिया का मेला**–ग्वालियर, गुना तथा आसपास के गाँवों में हीरा भूमिया सत की स्मृति में भाद्र माह (अगस्त-सितम्बर) मे अलग-अलग तिथियो मे क्षेत्रभर में मले लगते हैं ये मेले लगभग 1000 वर्ष से लगते चले आ रहे है

(10) **कालूजी महाराज का मेला**–पश्चिमी निमाड़ (खरगौन) जिले के पिपल्याखुर्द गाँव का यह प्रसिद्ध मेला 220 वर्षों से लगता आ रहा है कालूजी महाराज सत सिगाजी के भतीजे थे ऐसा कहा जाता है कि कालूजी महाराज अपनी शक्ति से पशुओं और आदमियो की बीमारी ठीक कर देते थे 30 दिन चलने वाले इस मेले में हजारो स्त्री-पुरुष शामिल होते हैं

मध्य प्रदेश के प्रमुख मेले – एक नज़र में

क्र.	मेले का नाम	आयोजन स्थल
1.	कुम्भ मेला (सिहस्थ)	उज्जैन
2.	महामृत्युजय का मेला	रीवा
3	बाबा शहाबुद्दीन औलिया का उर्स	नीमच
4.	नागाजी का मेला	पोरसा गाँव (मुरैना)
5.	गरीबनाथ बाबा का मेला	अवन्तीपुर बरोडिया (शाजापुर)
6.	तेजाजी का मेला	मामावद गाँव (गुना)
7.	सिगाजी का मेला	पिपल्या (पश्चिमी निमाड)
8.	जोगेश्वरी देवी का मेला	चदेरी (गुना)
9.	हीरा भूमिया का मेला	ग्वालियर गुना तथा आसपास के गाँव
10.	कालूजी महाराज का मेला	पिपल्या खुर्द (पश्चिमी निमाड)
11.	काना बाबा का मेला	सोदालपुर (होशगाबाद)
12	पीरखुधान का मेला	सावरा (शिवपुरी)
13.	थामोनी उर्स	थामोनी (सागर)
14	चण्डी देवी का मेला	धोधरा (सीधी)
15.	शिवरात्रि मेला	पचमढी
16.	रामलीला	भाण्डेर (ग्वालियर)
17	रामजी बाबा का मेला	होशगाबाद
18.	बरमान का मेला	गाडरवारा (नरसिहपुर)
19	जलबिहारी का मेला	छतरपुर
20.	अमरकण्टक का शिवरात्रि मेला	अमरकण्टक (शहडोल)
21.	माघ घोघरा का मेला	मौराधान (सिवनी)
22.	मान्धाता का मेला	मान्धाता (पूर्वी निमाड)
23.	कार्तिक का मेला	उज्जैन
24.	बलदाकजी का मेला	पन्ना
25	त्रिवेणी मेला	रतलाम
26	शहीद मेला	सनावद
27.	धर्म राजेश्वर मेला	मदसौर
28.	कालका मन्दिर मेला	धार
29.	सिद्धेश्वर मन्दिर मेला	शिवपुरी
30	चामुडा माता मेला	देवास
31.	नवग्रह मेला	खरगोन
32.	सनकुआ मेला	दतिया सेंवढा

(11) **काना बाबा का मेला**–होशगाबाद जिले के ग्राम सोदालपुर मे प्रतिवर्ष काना बाबा का मेला लगता है यह मेला 278 वर्ष पुराना है काना बाबा नामक एक सत यहाँ

रहते थे जिन्होने 1714 में जीवित समाधि ग्रहण की थी. काना बाबा के चमत्कारों के बारे में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं

(12) **पीर बुधान का मेला**–शिवपुरी जिले के ग्राम सावरा में प्रतिवर्ष भाद्र माह (अगस्त-सितम्बर) में लगने वाला यह एकदिवसीय मेला लगभग 250 वर्ष पुराना है यहाँ पीर बुधान नामक एक मुस्लिम संत की मजार है.

(13) **धामोनी उर्स**–यह उर्स सागर जिले के धामोनी नामक स्थान पर अप्रैल-मई माह में लगता है 6 दिनों तक चलने वाला यह उर्स मस्तान शाह वली की दरगाह पर आयोजित किया जाता है

(14) **चण्डी देवी का मेला**–सीधी जिले के धोधरा गाँव मे चण्डी देवी का एक प्राचीन मंदिर है यह मेला यहीं भरा जाता है ऐसी मान्यता है कि अकबर के नौ रत्नों मे से एक बीरबल यहीं के रहने वाले थे और इसी स्थान पर सरस्वती देवी ने बीरबल को आशीर्वाद दिया था.

(15) **शिवरात्रि मेला**–यह मेला पचमढ़ी में आयोजित किया जाता है इस मेले में शामिल श्रद्धालुओं की सख्या एक लाख से भी अधिक होती है जिनमें अधिसख्य महाराष्ट्र राज्य से आते है

(16) **रामलीला**–ग्वालियर जिले की भाण्डेर तहसील में प्रतिवर्ष माघ (जनवरी-फरवरी) माह में यह मेला आयोजित होता है लगभग 100 वर्ष पुराना यह उत्सव स्वामी पीताम्बर दास ने प्रारम्भ कराया था कुछ लोगो के अनुसार भाण्डेर उस समय एक सूबा था और यहाँ एक मुसलमान कलेक्टर इनायतुल्लाह पदस्थ थे, जो राम के भक्त थे उन्होंने इसे आरम्भ कराया था

(17) **रामजी बाबा का मेला**–रामजी बाबा का मेला होशंगाबाद जिले में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है

(18) **बरमान का मेला**–नरसिंहपुर जिले की गाडरवारा तहसील में बरमान का मेला प्रतिवर्ष पौष-माघ (जनवरी) में लगता है मकर सक्रान्ति से प्रारम्भ होकर यह मेला 13 दिन तक चलता है

(19) **जलबिहारी का मेला**–जलबिहारी का मेला मध्य प्रदेश के छतरपुर मे प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में लगता है दस दिवसीय इस मेले में अनेक कार्यक्रम होते हैं

(20) **अमरकण्टक का शिवरात्रि मेला**–यह मेला शहडोल जिले मे अमरकण्टक नामक स्थान जोकि नर्मदा नदी का उद्गम स्थल है, पर प्रतिवर्ष लगाया जाता है यह मेला 1914 से लगता आ रहा है

(21) **माघ घोघरा का मेला**–सिवनी जिले के भौराथान नामक स्थान पर प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर माघ घोघरा का मेला लगता है, जो 15 दिन तक चलता है यह मेला अति प्राचीन है यहाँ एक प्राकृतिक गुफा और पानी की प्राकृतिक झील है ऐसा कहा जाता है कि यहाँ भगवान शिव प्रकट हुए थे

(22) **मान्धाता का मेला**–पूर्वी निमाड (खण्डवा) जिले के मान्धाता नामक पवित्र स्थान पर कार्तिक माह (सितम्बर-अक्टूबर) मे लगने वाला यह सातदिवसीय मेला है यहाँ लाखो श्रद्धालुओ द्वारा शिवजी की पूजा-अर्चना की जाती है

25

साहित्य, संगीत तथा कला क्षेत्र में स्थापित विभिन्न संस्थाएँ

विषय प्रवेश

मध्य प्रदेश शासन की सांस्कृतिक क्षेत्र से सम्बन्धित गतिविधियाँ

मध्य प्रदेश सास्कृतिक दृष्टि से एक सम्पन्न एव समृद्ध राज्य है इसकी अपनी मौलिक सस्कृति ने न केवल राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है देश के मध्य में स्थित होने के कारण उसने उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के सास्कृतिक पृष्ठ के मध्य पारगम्य झिल्ली का काम किया है जिससे इसकी स्वय की सस्कृति भी प्रभावित हुई है साहित्य, सगीत तथा कला के क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने वाले सैकड़ों कलाकारो की साधनास्थली रहा. यह प्रदेश सास्कृतिक इतिहास के पन्नो पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है महाकवि कालिदास से लेकर डॉ शिवमगलसिह 'सुमन' तक तानसेन से लेकर कुमारगधर्व तक प्रदेश की यह साहित्यिक तथा सास्कृतिक सरिता निरन्तर प्रवाहमय है इस पवित्र नदी के शुद्ध जल से न जाने कितने नन्हें-नन्हे पौधे सींचे जा चुके हैं जो अब विशालकाय वृक्ष बनकर राज्य की साहित्यिक, सास्कृतिक और कला की धरती को शीतलता प्रदान कर रहे है

मध्य प्रदेश शासन द्वारा भी इस विषय को गम्भीरता से लिया गया है प्रदेश की सस्कृति के सवर्धन और विकास हेतु शासन द्वारा समय-समय पर कई प्रयास किए जाते रहे है जो उल्लेखनीय भी है और सराहनीय भी. राज्य शासन द्वारा कला और साहित्य के विकास के लिए 1980 मे सस्कृति विभाग की स्थापना की गई मध्य प्रदेश शासन द्वारा सस्कृति के प्रोत्साहन और सरक्षण को बढावा देने हेतु अपनायी गई नीति मुख्यत जिन बिदुओ पर केन्द्रित है वे इस प्रकार है–

1. कलाओं की स्वतत्रता और सम्मान के साथ विकास के अवसरो और साधनो की वृद्धि
2. सास्कृतिक परम्पराओं को सरक्षण
3. नागरिकों के लिए कलाओं के रसास्वादन के अवसरों का विकास
4. प्रदेश की आदिवासी और लोक सस्कृति के सरक्षण के लिए विशेष प्रयत्न
5. कला सम्बन्धी सस्थाओ का पुनर्गठन और विस्तार
6. कलात्मक गतिविधियों का विकेन्द्रीकरण एव दुर्लभ होती जा रही शैलियों और रूपाकारों के लिए विशेष समर्थन

भारत भवन भोपाल

प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित भारत भवन सास्कृतिक गतिविधियो को सरक्षण देने वाला एक प्रमुख केन्द्र है यद्यपि इसका निर्माण कार्य 1974 से ही आरम्भ हो गया था, किन्तु भारत भवन की औपचारिक स्थापना 13 फरवरी, 1982 को की गई इस सस्था की स्थापना भारत भवन न्यास अधिनियम, 1982 के अन्तर्गत की गई है इस भवन का डिजाइन प्रसिद्ध वास्तुकार चार्ल्स कोरिया ने तैयार किया है

भारत भवन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य कलाओं का परिरक्षण, अन्वेषण उन्नयन नवप्रवर्तन तथा प्रसार करना है विभिन्न कलाओ मे अन्तर्सम्बन्ध और अतर्क्रिया को प्राचीन भारतीय परम्परा की स्थापना और इसके साक्ष्यों को राष्ट्रीय मच प्रदान करने के साथ-साथ मनुष्य पर पड़ने वाले अन्यान्य दबावो से जूझने की क्षमता के विकास के लिए विशिष्ट कला-रसिक समुदाय जुटाना भी इसका महत्वा काक्षी उद्देश्य है भारत भवन वस्तुत कला समवाय के नाम से विख्यात कलाओं और साहित्य का समागम स्थल है

रगकर्म रूपकर, लोक कला तथा लोक साहित्य आदि क्षेत्रों पर पृथक्-पृथक् ध्यान देने के उद्देश्य से भारत भवन कई खण्डो में विभाजित है उक्त क्षेत्रो में कार्यरत् यह प्रभाग इस प्रकार है–

रूपंकर–यह आदिवासी लोक कला तथा उनके द्वारा तैयार कला के नमूनो का सग्रहालय है ये सुघड एव अनगढ दोनों ही शैली में रचे गये है यहाँ मूर्तिकला एव शातुकला

के भी कई उत्कर्ष नमूने मिलते हैं. यहाँ कई राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की जाती हैं.

रूपकर शाखा के अन्तर्गत ग्राफिक कार्यशाला 1983 से सक्रिय है. जिसमें समय-समय पर अखिल भारतीय प्रिंट मेकिंग शिविर और आदिवासी कलाकार शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है ग्राफिक ने आदिवासी कला के अनेक पोर्टफोलियो और सैकडों स्क्रीन प्रिन्ट बनाए हैं रूपकर ने कला की दो द्वैवार्षिकियों की स्थापना भी की है, जिनमे से एक भारतीय कला की दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय ग्राफिक कला की द्वैवार्षिकी है ये प्रतिवर्ष बारी-बारी से होती है इन आयोजनों में शामिल कृतियों की प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं और किन्हीं तीन श्रेष्ठ कृतियों को 20-20 हजार ₹ के पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं इसके अतिरिक्त रूपकर द्वारा सचालित ग्राफिक, सिरेमिक, स्टोनकार्विंग, कार्यशालाओं में नियमित रूप से देश के विभिन्न शहरों से आकर कलाकार अपनी कला का सृजन करते हैं

वागर्थ–भारत भवन के इस प्रभाग में भारतीय भाषाओं की कविताओ का एक समृद्ध पुस्तकालय है. इस पुस्तकालय में कविताओं का लिखित, मुद्रित एवं वाचिक प्रत्येक स्तर पर सकलन किया गया है साथ ही भारतीय कवियो की पाण्डुलिपियाँ, उनके चित्र, दस्तावेज, पोस्टर्स एव ऑडियो विजुअल रिकॉर्डस् उपलब्ध हैं देशभर के श्रेष्ठ कवियों और समालोचकों द्वारा यहाँ सगोष्ठी, परिचर्चा इत्यादि आयोजित होती रहती है वागर्थ भारतीय भाषाओं से हिन्दी में और विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवादों की अनेक कार्यशालाएँ आयोजित कर चुका है इसके द्वारा भारतीय भाषा की एक त्रैवार्षिकी 'कविभारती' और एशियाई कविता की एक त्रैवार्षिकी 'कविता एशिया' भी आयोजित की गई है

अनहद–अनहद शास्त्रीय सगीत और लोक सगीत से सम्बन्धित गतिविधियों का केन्द्र है जहाँ एल-पी-रिकॉर्डस, विदेशी सगीत, लाइव रिकॉर्डिंग के साथ-साथ दुर्लभ वाद्यो, सगीत पुस्तकों और पाण्डुलिपियों आदि का सग्रह किया गया है यहाँ सगीतकारो की विभिन्न मुद्राओ के लगभग दो हजार से अधिक छायाचित्र उपलब्ध हैं 1982 में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, उस्ताद निसार खाँ, और गगूबाई हगल के शास्त्रीय गायन से शुरू हुए 'अनहद' मे अब तक भारत के सभी प्रतिष्ठित घरानो के शीर्ष सगीतकार अपना गायन प्रस्तुत कर चुके हैं

अनहद प्रभाग द्वारा वरिष्ठ सगीत साधकों के कार्यक्रम परम्परा' शृखला के अन्तर्गत आयोजित किए जाते हैं, जबकि युवा सगीतकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्यक चार माह मे 'आरम्भ' कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है यहाँ किसी एक सगीतकार पर केन्द्रित कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है यहाँ के 'आस्वाद कक्ष में आगतुकों के लिए सगीत की स्थायी व्यवस्था की गई है

रंगमण्डल–रगमण्डल खण्ड के अन्तर्गत नाटक तथा नाट्यशालाओं से सम्बन्धित गतिविधियाँ सचालित होती हैं यह एक पूर्णकालिक रगमण्डल है जिसमे एक खुली रगशाला 'बहिरग' एक इन्डोर थियेटर 'अन्तरग' अभिरग और एक रगमच संग्रहालय है यहाँ नाट्य से सम्बन्धित एक पुस्तकालय की भी व्यवस्था की गई है रगमच में देश-विदेश के कई प्रख्यात नाटककार अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं रगमण्डल द्वारा अनेक नाटक तैयार किए जाते हैं जिन्हें एक निश्चित वार्षिक समारोह में प्रदर्शित किया जाता है

प्रकाशन–भारत भवन से दो पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है इनमें से एक 'पूर्वाग्रह' नामक पत्रिका साहित्य और आलोचना की द्वैमासिक पत्रिका है 'पूर्वाग्रह ने ही एक अन्य आलोचक त्रैवार्षिकी की शुरूआत भी की है जिसे 'समवाय' कहा जाता है भारत भवन अपने विभिन्न कार्यक्रमों के अवसर पर कविता, पोस्टर, पिक्चर पोस्टकार्ड, स्मारिकाएँ, कैटलॉग और कविताएँ आदि की छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित करता है

इसके अतिरिक्त अग्रेजी की अनियतकालीन पत्रिका बहुचन का प्रकाशन भी किया जाता है

ललित–यह ललित कलाओं का एक भव्य पुस्तकालय तथा अभिलेखागार है इसमें ललित कला से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तकों, जानकारियों एव दस्तावजो का सकलन किया गया है

आकार–यह प्रभाग ग्राफिक्स, मूर्तिकला, चित्रकला से सम्बद्ध एक भव्य कर्मशाला है यहाँ राज्य तथा देश के युवा कलाकार एव विद्यार्थी कला के विभिन्न क्षेत्रों मे नवीन प्रयोग करते हैं तथा प्रशिक्षण प्राप्त करते है

आश्रम–यह एक सृजनीय आवासीय खण्ड है यहाँ प्रतिवर्ष एक या दो माह हेतु एक प्रकाण्ड रगकर्मी सगीतज्ञ अथवा फिल्मी कलाकार-निर्देशक आमत्रित किए जाते हैं तथा उन्हें अपनी इच्छानुसार सृजनात्मक कार्य करने के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है

एशिया कविता केन्द्र–एशिया केन्द्र, एशिया कविता और काव्यशास्त्र का केन्द्र है इसका उद्देश्य विभिन्न एशियाई भाषाओं की कविताओं के अन्य एशियाई भाषाओं मे अनुवाद और समस्त एशियाई काव्यशास्त्रों की अन्त क्रिया स्थापित करना है इस खण्ड द्वारा 'कविता एशिया के नाम से एक पत्रिका भी प्रस्तावित है

मध्य प्रदेश कला परिषद्

मध्य प्रदेश कला परिषद् की स्थापना वर्ष 1952 में की गई इसका मुख्यालय भोपाल में है परिषद् का उद्देश्य प्रदेश के सगीत नृत्य लोक कला ललित कला तथा रगमच को सरक्षण देना एवं उसके विकास व सवर्द्धन हेतु हर सम्भव प्रयास करना है अपने इन प्रयोजनों को प्राप्त करने के उद्देश्य से परिषद् द्वारा कई रचनात्मक व सृजनात्मक आयोजन व कार्यक्रम सम्पन्न किए जाते हैं परिषद् की गतिविधियों में प्रदेश के कलाकर्मियो के लिए

रचनात्मक अभिव्यक्ति के खुले और स्तरधर्मी मचों का विकास करना, कलाओं की बुनियादी स्वतत्रता की सुरक्षा और सार्थक विस्तार करना, प्रादेशिक और अखिल भारतीय स्तरधर्मी मचों की स्थापना करना, विभिन्न कलाओं के मिले-जुले और अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित करना, सम्मेलन, परिसवाद, प्रदर्शनी आदि के आयोजन के साथ-साथ विभिन्न सास्कृतिक सगठनों के बीच सहयोग व समन्वय को बढावा देना तथा उन्हें आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना इत्यादि प्रमुख है

मध्य प्रदेश शासन का सस्कृति विभाग प्रत्येक वर्ष समागीय स्तर पर तीन दिवसीय सगीत, नृत्य और नाटक का आयोजन 'सभागीय उत्सव' के नाम से परिषद् के माध्यम से ही आयाजित करता है परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष 'खजुराहो समारोह' का आयोजन भी किया जाता है, साथ ही भेडाघाट उत्सव, माडू उत्सव तथा ग्वालियर उत्सव भी प्रतिवर्ष आयोजित किए जाते हैं परिषद् द्वारा मूर्तियों की प्रदर्शनी भी आयोजित की जाती है

मध्य प्रदेश कला परिषद् द्वारा समकालीन सृजनकर्म पर केन्द्रित मासिक पत्रिका 'कलावार्ता' का प्रकाशन किया जाता है जिसमें चित्रकला, सगीत, नाटक, नृत्य, पुरातत्व, विचार, सर्वेक्षण, छायाकारी, समीक्षा तथा अन्य स्तम्भों के माध्यम से कला पत्रकारिता को विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है महत्वपूर्ण 'मानाग्राफ शृखला' का प्रकाशन भी किया जा रहा है

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद्

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद की स्थापना वर्ष 1954 में की गई इसका मुख्यालय भोपाल में है परिषद् का उद्देश्य प्रदेश के साहित्य का सृजन, सरक्षण, प्रोत्साहन तथा प्रचार प्रसार के प्रबन्ध के साथ-साथ साहित्यकारो का सम्मान तथा उनकी श्रेष्ठ कृतियों को पुरस्कृत करना भी है इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से परिषद् द्वारा कई पुरस्कारों की स्थापना की गई है परिचर्चा, सवाद, सगोष्ठी सम्मान समारोह तथा प्रकाशन के माध्यम से भी परिषद्, साहित्य क्षेत्र को प्रसारित करने में लगी हुई है

मध्य प्रदश साहित्य परिषद् द्वारा स्वतत्रता सग्राम से जुडे कई प्रख्यात साहित्यकारों तथा अन्य रचनाकारो के जन्मशती अवसर पर समारोह आयोजित किए जाते हैं परिषद् द्वारा आयाजित समारोह में प्रमुख इस प्रकार हैं- केशव जयती समारोह (ओरछा), सुभद्राकुमारी चौहान स्मृति समारोह (जबलपुर), पदमाकर स्मृति समारोह (सागर), बालकृष्ण शर्मा नवीन स्मृति समारोह (शाजापुर) और माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति समारोह (खण्डवा)

भारत भवन भोपाल द्वारा 'विभावरी' शीर्षक आयोजित जयशकर प्रसाद जन्मशती समारोह तथा मुक्तिबोध पीठ सागर और प्रेमचन्द सृजनपीठ उज्जैन में आयोजित गोष्ठियों में परिषद् भरपूर सहयोग देती है आदिवासी तथा पिछडे क्षेत्रों में साहित्य के प्रति जागृति लाने के उद्देश्य से पाठक मच पर गोष्ठियाँ भी सम्पन्न कराई जाती हैं साहित्यकारों तथा लेखकों के मध्य अन्तर्राज्यीय सास्कृतिक गतिविधियों का आदान प्रदान करने हेतु 'सृजनानुभव यात्रा' कार्यक्रम शुरू किया गया है परिषद् द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में दो प्रकार के पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं प्रथम अखिल भारतीय पुरस्कार तथा द्वितीय प्रादेशिक पुरस्कार ये पुरस्कार इस प्रकार हैं-

अखिल भारतीय पुरस्कार

1. भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार-कविता
2. वीरसिह देव पुरस्कार-उपन्यास
3. गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार-कहानी
4. सेठ गोविन्ददास पुरस्कार-नाटक, एकाकी
5. रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार-आलोचना
6. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी पुरस्कार-व्यग्य, ललित निबन्ध, सस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा आत्मकथा डायरी, पत्र, रिपोर्ताज

प्रादेशिक पुरस्कार

1. माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार-कविता
2. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन-पुरस्कार -गीत प्रबन्ध
3. सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार-कहानी
4. विश्वनाथ सिह पुरस्कार-उपन्यास
5. नन्द दुलारे वाजपेयी पुरस्कार-आलोचना
6. हरिकृष्ण प्रेमी पुरस्कार-नाटक एकाकी
7. मुकुटधर पाण्डेय पुरस्कार (सृजनात्मक चिंतन ललित निबन्ध)
8. माधवराव सप्रे पुरस्कार (प्रदेश की विभूति स्थान इतिहास पर लिखी कृति गद्य-पद्य)
9. रामविलास शर्मा पुरस्कार (लेखक की पहली कृति)
10. दुष्यत कुमार पुरस्कार (35 वर्ष से कम आयु के लेखक की पहली कृति)
11. शरद जोशी पुरस्कार-व्यग्य
12. राजेन्द्र माथुर पुरस्कार (रेखाचित्र सस्मरण यात्रा आत्मकथा, पत्र रिपोर्ताज)
13. ईसुरी पुरस्कार-लोक भाषा कृति
14. रविशकर शुक्ल पुरस्कार-बाल साहित्य
15. ताम्बे पुरस्कार मराठी साहित्य (सम्पूर्ण सृजनात्मक विधाएँ)
16. अनिल कुमार पुरस्कार-प्रदेश की लघु पत्रिका

कालिदास अकादमी, उज्जैन

महाकवि कालिदास की नगरी उज्जैन में 1958 से प्रतिवर्ष आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह की

उपलब्धियों के सरक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1977 में कालिदास अकादमी की स्थापना उज्जैन में की गई अकादमी का मुख्य उद्देश्य कालिदास की अक्षय कीर्ति को सस्थानिक करना ही नहीं, अपितु एक ऐसी सस्था की स्थापना करना था जो हमारी संस्कृति तथा समस्त शास्त्रीय परम्परा को सही अभिव्यक्ति दे सके

कालिदास अकादमी शास्त्रीय साहित्य, शास्त्रीय रगमच तथा विभिन्न कला परम्पराओं के अध्ययन, शोध, अनुशीलन, प्रकाशन और प्रयोग के सक्रिय केन्द्र के रूप में कार्यरत् है अकादमी के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

कालिदास अकादमी साहित्य का विश्लेषणात्मक एव अतरानुशासनिक कोणों से शोध, अनुशीलन तथा विभिन्न कला माध्यमो पर उसके समग्र प्रभाव का आकलन, कालिदास की तथा सस्कृत की अन्य गौरवपूर्ण कृतियो का विश्व भाषाओ में अनुवाद एवं प्रकाशन, देश-विदेश से कालिदास नाट्यशास्त्र एवं प्राचीन साहित्य की पाण्डुलिपियों का सकलन, सरक्षण, सम्पादन, प्रकाशन, पाण्डुलिपि, सग्रहालय का निर्माण, नाट्यशास्त्र, कालिदास एव परम्परागत शास्त्रों के विश्व की अन्य भाषाओं में उपलब्ध अनुवादों का सकलन, टेप, वीडियो फिल्म व छाया चित्रों द्वारा डाक्यूमेन्टेशन, नाट्यशास्त्र व सस्कृत नाटकों के रगकर्मियों के उपयोग के अनुरूप सम्पादित सस्करणों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद व प्रकाशन, शास्त्रीय, पारम्परिक-रगमचीय तथा अन्य कला रूपो का सग्रह, सरक्षण व विश्लेषणात्मक अध्ययन, भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुरूप प्रामाणिक नाट्य मण्डप का निर्माण एव मुक्ताकाशी रगमच की स्थापना, प्राचीन शास्त्रों के पारम्परिक अध्ययन हेतु आचार्य कुल की स्थापना, शास्त्र, साहित्य और कलागत समस्त मौखिक परम्पराओं का सरक्षण, सवर्धन एव सम्पोषण, पारम्परिक लोक कलाओं का प्रदर्शन व सरक्षण, कालिदास समारोह, कला प्रदर्शनियों विभिन्न सगोष्ठियों, कर्मशालाओ, व्याख्यान एव स्वरसधान आदि विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन तथा कालिदास साहित्य में वर्णित पुष्प, पौधे व लताओ पर आधारित उद्यान का निर्माण

अकादमी की मुख्य उपलब्धियो मे प्रसस्कृत 'नाट्य मण्डप' का निर्माण तथा 'आचार्य कुल' की स्थापना उल्लेखनीय है सस्कृत नाट्य मण्डप ने जहाँ पूरे देश को एक शास्त्रीय रगमच दिया है वहीं 'आचार्य कुल' की स्थापना के पश्चात् सस्कृत के पारम्परिक पठन-पाठन एव शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया जा सकेगा इसके अतिरिक्त प्राचीन व दुर्लभ पाण्डुलिपियो का सग्रह भी अकादमी की विशेषता है यहाँ अड्यार ग्रथगार (चेन्नई), भण्डारकर आरियन्टल रिसर्च इस्टीट्यूट (पूना), ओरियन्टल लाइब्रेरी (बडौदा) तथा एल डी रिसर्च इस्टीट्यूट (अहमदाबाद) से टीकाओं की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ सगृहीत की गई हैं

मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल

मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी की स्थापना 1976 में की गई, इसका मुख्यालय भोपाल में है अकादमी का मुख्य उद्देश्य उर्दू साहित्य के उन्नयन, प्रोत्साहन, सरक्षण व सवर्धन हेतु सतत् प्रयास करना व इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आवश्यक कदम उठाना है अकादमी उर्दू साहित्य से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों को अन्जाम देती है जैसे–मुशायरे आयोजित करना नशिस्त कराना, उर्दू साहित्य पर चर्चा, परिचर्चा, सगोष्ठियाँ व इसके विकास की सम्भावनाएँ तलाशना, शबे गजल, नाट्य समारोह तथा सेमिनार आयोजित करना उर्दू साहित्य तथा साहित्यकारो को आर्थिक सरक्षण देने के उद्देश्य से साहित्यिक सस्थाओं साहित्यकारों और पुस्तकालयों को अनुदान देने के साथ-साथ साहित्यकारों की पुस्तकें भी प्रकाशित करती है तथा पुस्तक प्रकाशन के लिए अनुदान देती है

मध्य प्रदेश सिन्धी साहित्य अकादमी

मध्य प्रदेश सिन्धी साहित्य अकादमी की स्थापना 1983 में हुई थी इस अकादमी का मुख्य उद्देश्य सिन्धी भाषा एव साहित्य को सरक्षित कर उसका विकास और सवर्द्धन करना है अकादमी द्वारा सिन्धी भाषा में रचनात्मक तथा सृजनात्मक साहित्य के विकास पर विशेष बल दिया जाता है अपने इस उद्देश्य पूर्ति हेतु अकादमी सिन्धी भाषा तथा साहित्य पर केन्द्रित कार्यशालाएँ, सगोष्ठियाँ, परिचर्चा तथा सम्मेलन इत्यादि आयोजित करती है अकादमी द्वारा सिन्धी साहित्यिक सस्थाओं, साहित्यकारों को आर्थिक सहायता दी जाती है साथ ही पुस्तकों के प्रकाशन मे भी अकादमी अनुदान के रूप में सहायता करती है अकादमी द्वारा सिन्धी प्रतिनिधि' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाता है

कुल हिन्द अल्लामा इकबाल अदबी मरकज

अल्लामा इकबाल अदबी मरकज का गठन सन् 1984 में एक स्वायत्त इकाई के रूप में किया गया मुख्यत उर्दू शिक्षा और साहित्य के उन्नयन हेतु गठित इस केन्द की अन्य गतिविधियों मे उर्दू शिक्षा व साहित्य पर शोध करने वालों को वजीफे देना है एक उर्दू लाइब्रेरी की स्थापना अल्लामा इकबाल से सम्बन्धित वस्तुएँ तथा जानकारियाँ एकत्रित करना मुशायरा आयोजित कराना, सेमिनार, पुस्तको का प्रकाशन तथा साहित्यकारों और शायरो को आर्थिक सहायता मुहैया कराना इत्यादि प्रमुख है

मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी, भोपाल

मध्य प्रदेश सस्कृत अकादमी की स्थापना वर्ष 1985 में की गई इस अकादमी का मुख्य उद्देश्य सस्कृत साहित्य को प्रोत्साहन और सरक्षण देना है अकादमी द्वारा इस दिशा मे कई प्रयास किए गए है जैसे सस्कृत विद्वानों का सम्मान सस्कृत साहित्य पर सम्मेलन गोष्ठियाँ दुर्लभ

पाण्डुलिपियों का संग्रह, संरक्षण, सम्पादन और प्रकाशन संस्कृत हिन्दी और इसकी बोलियों के बीच अन्त सम्बन्धो का अन्वेषण संस्कृत की पारम्परिक शिक्षा अनुसधान आदि के पुनराविष्कार और संवर्द्धन हेतु प्रयास इत्यादि अकादमी द्वारा कालिदास भर्तृहरि, भवभूति, बाणभट्ट, साख्यदर्शन, कामसूत्र और ब्राह्मण ग्रन्थो के साथ-साथ ऋग्वेद को लेकर विशेष्ट कार्य सम्पन्न किए जा रहे है अकादमी संस्कृत साहित्य के प्रकाशन और अनुवाद का कार्य करते हुए उसके प्रचार प्रसार के लिए भी प्रयत्नशील है

मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी, भोपाल

मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी का गठन मार्च 1987 में किया गया था इस अकादमी का मुख्य उद्देश्य तुलसी साहित्य का अन्वेषण प्रचार प्रसार का प्रबन्ध तथा संरक्षण करना है इसके अतिरिक्त तुलसी साहित्य के विद्वानों का सम्मान तुलसी साहित्य पर सम्मेलन, गोष्ठियाँ, परिचर्चा आदि का आयोजन, तुलसी साहित्य पर नई और गैर-अकादमिक शोध को प्रोत्साहन, तुलसी साहित्य की शिक्षा, अनुसधान आदि के समर्थन के बारे में राज्य शासन को परामर्श लोक परम्पराओ का प्रभाव और अन्तरावलम्बन का अनुशीलन तथा तुलसी साहित्य और व्यापक भ्रान्ति परम्परा के साहित्य अन्य कला रूपो का अनुसधान तुलसी अकादमी के अन्य प्रमुख उद्देश्य हैं

अकादमी द्वारा एक अनियतकालीन शोध पत्रिका 'समाधान' का प्रकाशन किया जाता है जिसमें तुलसी अकादमी के विभिन्न आयोजनो तथा कार्यक्रमो के अवसर पर विचार गोष्ठियो, शोध पत्रो और आलेखो का प्रकाशन किया जाता है विश्वविद्यालयीन शैली पर भोपाल में प्रतिवर्ष आयोजित तुलसी व्याख्यानमाला के व्याख्यानों का सकलन पृथक् से पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया जा रहा है अकादमी द्वारा चित्रकूट मे स्थापित शोध-सस्थान को तुलसी साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय विद्यापीठ के रूप में विकसित किया जाएगा यहाँ देश विदेश के वाल्मिकी से लेकर तुलसी तक की राम काव्यधारा के जिज्ञासु तथा तुलसी साहित्य पर गहन शोध करने वाले शोधार्थियो को आवास भोजन शोधवृत्ति आदि की सुविधा दी जाएगी इस संस्थान मे पाण्डुलिपियो के संग्रह का कार्य भी जारी है

मध्य प्रदेश आदिवासी लोककला परिषद्

मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् की स्थापना 1980 में की गई थी इस परिषद् का मुख्य उद्देश्य आदिवासी और लोकसगीत, आदिवासी और लोकनृत्य एव नाट्य आदिवासी साहित्य को संरक्षण देना एव उसके विकास व प्रोत्साहन हेतु सभी सम्भव प्रयास करना है अकादमी लोक कला के प्रदर्शन के लिए सम्पदा, लोक रग, जगार लोक रजन निगाड उत्सव मे भागीदारी, लोकोत्सव, नाथ समारोह कबीर समारोह, राष्ट्रीय रामलीला मेला आदि का आयोजन करती है अकादमी द्वारा सर्वेक्षण और दस्तावेजीकरण योजना के अन्तर्गत मिथक सर्वेक्षण एवं परम्परा शृति, आल्हा पाठ सकलन, काष्ठ शिल्प सर्वेक्षण एव सकलन, कोल जनजाति सर्वेक्षण लोक नाट्य रूप का सकलन, छायाकन, मालवी, बघेली शब्द कोष सकलन, अनुसूचित जाति, जनजाति के आभूषण सकलन आदि कार्य किए गए हैं परिषद् द्वारा आदिवासी और लोक कलाओं पर केन्द्रित एक चौमासिक पत्रिका 'चौमासा' का प्रकाशन किया जाता है यह हिन्दी में प्रकाशित आदिवासी और लोक कलाओं की देशभर में एक मात्र पत्रिका है

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ सगीत अकादमी की स्थापना 18 अप्रैल, 1979 को की गई इस अकादमी के द्वारा उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की अक्षय कीर्ति को सस्थान देने का प्रयास किया गया है इस अकादमी का मुख्य उद्देश्य विख्यात मनीषी उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की स्मृति प्रदेश तथा देश के शास्त्रीय सगीत के संरक्षण संवर्द्धन और प्रोत्साहन हेतु सतत् प्रयास करना है इस अकादमी न केवल शास्त्रीय सगीत तथा नृत्य को संरक्षण दिया जाता है बल्कि युवा कलाकर्मियों को बढावा देने के उद्देश्य से उन्हे प्रशिक्षित कर कार्यक्रमों में प्रस्तुत कराया जाता है अकादमी की विशेषता यह है कि यहाँ सगीत तथा नृत्य का अनूठा समागम देखने को मिलता है अकादमी के अधीन दो कला संस्थाएँ चक्रधर नृत्य केन्द्र तथा ध्रुपद केन्द्र कार्यरत है रायगढ के महाराजा चक्रधर सिह की स्मृति में स्थापित चक्रधर नृत्य केन्द्र कथक नृत्य की उच्च शिक्षा का केन्द्र है वहीं ध्रुपद केन्द्र भारतीय सगीत की प्राचीन परम्परा ध्रुपद के उच्च प्रशिक्षण का केन्द्र है इस केन्द्र से पखावज वीणा, सतूर, सारगी आदि वाद्ययत्रो में प्रशिक्षण हेतु इच्छुक कलाकारों का चयन किया जाता है

अकादमी द्वारा उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की स्मृति में उनकी साधना स्थली मैहर में प्रतिवर्ष समारोह आयोजित किया जाता है. इसके अतिरिक्त अकादमी अलाउद्दीन खाँ व्याख्यानमाला, चक्रधर समारोह रायगढ, ध्रुपद समारोह कथक प्रसग तथा अमीर खाँ समारोह (इदौर) आदि का आयोजन भी करती है अकादमी द्वारा समय-समय पर स्मारिकाएँ प्रकाशित की जाती है जिनमें प्रमुख है–मेरी कला (उस्ताद अलाउद्दीन खाँ), रजब अली खाँ (अभीक हनकली) कुमार गधर्व (अशोक वाजपेयी) आदि लुप्तप्राय तथा दुर्लभ वाद्य यत्रो का अस्तित्व बनाए रखने तथा उनके प्रचलन को बढाने के उद्देश्य से अकादमी प्रतिवर्ष 'वाद्य विनोद समारोह' का आयोजन भी करती है

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

इस विश्वविद्यालय की स्थापना 14 अक्टूबर 1956 को खैरागढ में की गई थी एक केन्द्र से कला और संगीत के क्षेत्र मे उच्चकोटि की शिक्षा देने वाला यह विश्वविद्यालय

पूरे देश में अपना पृथक् स्थान रखता है प्रदेश के समस्त शासकीय ललित कला संस्थान और संगीत महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं. इस विश्वविद्यालय में कला, संगीत, नृत्य, चित्रकला आदि संकायों के अन्तर्गत गायन, वाद्य संगीत, नृत्य, लोक संगीत, चित्रकला, संगीत शास्त्र, हिन्दी संस्कृत, भारतीय कला का इतिहास और संस्कृति, प्रौढ तथा सतत् शिक्षा व विस्तार शोध और ध्वनि शास्त्र विभाग कार्यरत् हैं विश्वविद्यालय मे लगभग 80 लोगो का स्टाफ है तथा इसके आवासगृह में लगभग 300 छात्र-छात्राएँ शिक्षणरत् हैं जिनमें से कुछ विदेशी प्रशिक्षणार्थी भी हैं.

सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़ी अन्य प्रमुख संस्थाएँ

मध्य प्रदेश माध्यम

मध्य प्रदेश माध्यम' प्रदेश की संचार गतिविधियों से जुड़ा जनसम्पर्क निदेशालय का एक अग है. इसके गठन का मुख्य उद्देश्य शासन एव जनता के मध्य वार्तालाप एव सूचनाओ के आदान-प्रदान व्यवस्था हेतु 'कड़ी' का काम करना है माध्यम द्वारा एक साप्ताहिक समाचार-पत्र रोजगार और निर्माण' का प्रकाशन किया जाता है, जिसमें प्रदेश और देश की रोजगारमूलक जानकारियो के साथ-साथ प्रदेश शासन की नीतियों की घोषणा, उसके नवीन कार्यक्रम आदि भी प्रकाशित किए जाते हैं 'रोजगार और निर्माण' प्रदेश की समस्त पचायतों में भी नियमित रूप से भेजा जाता है इसके अतिरिक्त ग्राम पचायतो पर केन्द्रित एक पत्रिका 'पचायिका' का प्रकाशन भी किया जाता है जिसमें पचायतो की अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग बनने जैसे आलेख प्रकाशित किए जाते हैं, ताकि ग्रामवासी सत्ता के विकेन्द्रीकरण का वास्तविक रसास्वादन कर सके माध्यम द्वारा शासन की नीतियों, निर्णयों तथा कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचार सामग्री भी तैयार की जाती है जिसमें पोस्टर, हेण्डबिल, फोल्डर आदि का आकल्पन किया जाता है माध्यम की फिल्म शाखा द्वारा प्रदेश की विकास गतिविधियों का फिल्माकन कर दूरदर्शन के लिए समाचार तैयार किए जाते हैं साथ ही जनता के लिए उपयोगी विषयों तथा शिक्षाप्रद सिनेमा निर्माण का कार्य भी इस शाखा द्वारा किया जाता है यह लोक जीवन से जुड़े अनेक विषयों पर वृत्तचित्र बनाकर उनका प्रसारण भी करवाता है जनसम्पर्क निदेशालय द्वारा जारी विभिन्न विभागों की जानकारियों को जनता तक पहुँचाने का कार्य माध्यम द्वारा ही किया जाता है

सृजनपीठ

प्रदेश के सास्कृतिक विभाग के तत्वावधान में विभिन्न विश्वविद्यालयों में सृजनपीठ स्थापित किए गए हैं सृजन पीठो की स्थापना का मुख्य उद्देश्य कला तथा साहित्य के क्षेत्र मे निरन्तर रचनात्मक तथा सृजनात्मक विकास को सम्भव बनाना है साथ ही यह पीठ वरिष्ठ साहित्यकारों तथा उदीयमान रचनाकारों के बीच रचनात्मक सवाद स्थापित करने मे भी सहायक होगी. सृजनपीठ मे दक्ष व योग्य साहित्यकार बने रहें इस हेतु सृजनपीठ से जुडे वरिष्ठ साहित्यकारो के लिए फैलोशिप का प्रबन्ध भी किया जाता है प्रदेश की प्रमुख सृजनपीठ इस प्रकार है–निराला सृजनपीठ बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, प्रेमचन्द सृजनपीठ विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, मुक्तिबोध सृजनपीठ हरिसिह गौर विश्वविद्यालय सागर इसके अतिरिक्त जबलपुर में सुभद्रा कुमारी चौहान सृजनपीठ प्रस्तावित है

गजेटियर संचालनालय

जिले के सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण जानकारियाँ एक ही जगह उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश के गठन के पश्चात् ही शासन द्वारा जिला गजेटियर जारी किए जा रहे हैं जिला गजेटियर में शामिल 19 अध्यायो में जिले की नदियों, पहाडों, वनों और खनिज सम्पदा, इतिहास, लोगों के रीति-रिवाज तथा रहन-सहन, कृषि, उद्योग, धन्धे, राजस्व, प्रशासन, स्वायतत्ता शासन, आर्थिक परिस्थिति, शिक्षा, चुनाव, राजनैतिक दल, दर्शनीय स्थल आदि की जानकारी का समुचित वर्णन किया जाता है इस प्रकार गजेटियर अनेक विषयों पर महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराता है जो शोधकर्ताओ और सामान्य पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी है शासन द्वारा अग्रेजी माध्यम के साथ-साथ हिन्दी मे भी गजेटियर का प्रकाशन किया जा रहा है

रविन्द्र भवन, भोपाल

रविन्द्र भवन न सिर्फ मध्य प्रदेश बल्कि भारत के सर्वश्रेष्ठ नाट्य गृहों में से एक है प्रशासनिक दृष्टि से यह भवन राजभाषा एव सस्कृति सचालनालय के अन्तर्गत कार्यरत है पूर्णत वातानुकूलित यह सभागृह विद्युत् और ध्वनि के आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित है परिसर के चारों ओर रग-बिरगे पुष्पों से भरा उपवन भवन की शोभा में चार चाँद लगाता है

रविन्द्र भवन का उपयोग नाटक, शास्त्रीय नृत्य शास्त्रीय गायन तथा प्रादेशिक फिल्मोत्सव के लिए किया जाता है रविन्द्र भवन में दो रगमच है एक सभागृह के भीतर अत रंगमच और दूसरा बाहर का खुले रगमच सभागृह में 728 सीटें हैं खुले रगमच के सामने लगभग 5000 दर्शकों के बैठने की सुविधा है भवन का विशाल परिसर मेलो तथा समारोह के लिए दिया जाता है यहाँ फिल्म विकास निगम द्वारा फिल्म प्रोजेक्ट भी लगाया गया है

रविन्द्र भवन समस्त प्रकार के सास्कृतिक कार्यक्रमो के लिए एक सर्वश्रेष्ठ चुनाव है यहाँ मुशायरे सगोष्ठियाँ परिचर्चा, शास्त्रीय गायन नृत्य, मेले, लोक कलाओ की प्रदर्शनी के साथ-साथ शरीर सौष्ठव एव कलात्मक प्रतियोगिताओं के कार्यक्रम भी आयोजित होते रहते हैं सस्कृति विभाग के अन्तर्गत आ जाने के बाद यह भवन राजधानी के सास्कृतिक आयोजनो का एकमात्र केन्द्र बनकर उभरा है

पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्य प्रदेश

इस सचालनालय की स्थापना वर्ष 1956 में की गई थी, जबकि 1975 से स्थापित 'राजकीय अभिलेखागार, सचालनालय का सविलियन' 16 अगस्त, 1994 में किया गया इस सचालनालय का मुख्य कार्य प्रदेश भर में बिखरी पड़ी पुरातत्वीय सम्पदा का सर्वेक्षण, चिह्नाकन, सरक्षण, प्रदर्शन एव अनुरक्षण करना है, साथ ही नए सग्रहालयों की स्थापना का जनसामान्य एव शोध शोधार्थियो में पुरातत्वीय सम्पदा के प्रति जागृति पैदा करना है

राजकीय अभिलेखागार प्रभाग के अन्तर्गत राष्ट्रीय महत्व के ऐतिहासिक एव प्राचीन अभिलेख तथा पुस्तकें सुरक्षित रखी जाती है राजकीय अभिलेखागार प्रभाग के चार क्षेत्रीय कार्यालय–इदौर, ग्वालियर, रीवा एव नागपुर मे कार्यरत् हैं इन अभिलेखागारों में पूर्व मध्य प्रदेश, इंदौर, ग्वालियर, भोपाल, नरसिहगढ़, नागौद रियासतों तथा मध्य भारत की लाखो नस्तियाँ, रजिस्टर मोहरे, सनदे, नक्शे तथा दुर्लभ पुस्तकें आदि सुरक्षित हैं अभिलेखो को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने एवं कम स्थान में रखने के लिए माइक्रो फोटोग्राफी इकाई स्थापित की गई है

अभिलेखागार द्वारा स्वाधीनता सेनानियों के सस्मरण रिकॉर्ड करने का कार्य भी आरम्भ किया गया है

महात्मा गांधी 125वॉ जन्म वर्ष समारोह समिति

इस समिति का गठन वर्ष 1994 मे किया गया है इसका मुख्य उद्देश्य शाति एव सद्भावना का मूलमत्र है महात्मा गाधी जन्म शताब्दी वर्ष कार्यक्रमों का आयोजन इसका मुख्य उद्देश्य था तत्पश्चात् भारत की स्वतत्रता के 50 वर्ष के उपलक्ष्य में आजादी की स्वर्ण जयन्ती एव सुभाष जन्मशती के कार्यक्रम भी सम्मिलित किए गए है

मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी

मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना 1969 में की गई थी यह सस्था मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत कार्य करती है इस अकादमी का मुख्य कार्य विश्वविद्यालयीन पाठ्य व संदर्भ ग्रथों का प्रकाशन करना है विभिन्न सस्थाओं की बिक्री सम्बन्धी कठिनाइयों के निराकरण हेतु अकादमी ने इन सस्थाओं द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री की व्यवस्था की है. अकादमी विभिन्न भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद का महत्वपूर्ण कार्य करती है विश्वविद्यालयों में जिन विषयों में एकीकृत पाठ्यक्रम लागू हुआ है उनके अलावा दूसरे विषयों में भी पुस्तको का लेखन कार्य हाथ में लिया है अकादमी द्वारा सगीत, शिक्षा, पुस्तकालय, विज्ञान, पत्रकारिता सैन्य विज्ञान व शारीरिक शिक्षा सम्बन्धी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है अकादमी द्वारा विश्वविद्यालयीन पाठ्य पुस्तको के अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी हिन्दी माध्यम में विषय सामग्री उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं अकादमी द्वारा द्वैमासिक पत्रिका 'रचना' का प्रकाशन भी किया जाता है

संस्कृति परिषद् में अकादमियों और परिषदों का संविलयन

मार्च 2003 मे सस्कृति परिषद् की प्रथम बैठक में सभी सास्कृतिक परिषदो और अकादमियों का सस्कृति परिषद् में सविलयन करने का निर्णय लिया गया है

इस निर्णय से सस्कृति विभाग के अन्तर्गत सचालित लगभग आठ सस्थाओ का सस्कृति परिषद् मे सविलियन होगा इन सस्थाओं में कला परिषद् मध्य प्रदेश साहित्य परिषद्, मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, कालिदास अकादमी मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी मध्य प्रदेश सस्कृत अकादमी, मध्य प्रदेश सिन्धी साहित्य अकादमी और उस्ताद अलाउद्दीन खाँ सगीत अकादमी शामिल है

26

मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय सम्मान

मध्य प्रदेश सरकार का 'सस्कृति विभाग' तथा 'मध्य प्रदेश साहित्य परिषद्' प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय एव राज्य स्तर पर विविध क्षेत्रो के अनेकानेक विशिष्टजनो को उनके क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु पुरस्कृत एव सम्मानित करती है राज्य सरकार द्वारा सरक्षित इन सस्थाओं द्वारा दिए जा रहे पुरस्कार एव सम्मानो का विवरण इस प्रकार है –

संस्कृति विभाग के सम्मान

मध्य प्रदेश सरकार का 'सस्कृति विभाग' प्रत्येक वर्ष सृजनात्मक कलाओ एव साहित्य में विशिष्ट कलाकारो एव साहित्यकारो को उनकी श्रेष्ठतम उपलब्धि हेतु सम्मानित करता है यह सम्मान राष्ट्रीय एव राज्य स्तर पर प्रदान किए जाते हैं इसके साथ ही कलाकारों तथा साहित्यकारों को एक निर्धारित कार्यवधि हेतु छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है इसका विवरण इस प्रकार है–

(क) राष्ट्रीय सम्मान

सम्मान	क्षेत्र	धनराशि (₹ में)
कालिदास सम्मान	रूपकर	दो लाख
कालिदास सम्मान	रगकर्म	दो लाख
कालिदास सम्मान	शास्त्रीय सगीत	दो लाख
कालिदास सम्मान	शास्त्रीय नृत्य	दो लाख
कबीर सम्मान	भारतीय कविता	तीन लाख
तानसेन सम्मान	शास्त्रीय सगीत	दो लाख
मैथिलीशरण गुप्त सम्मान	हिन्दी कविता	दो लाख
लता मगेशकर सम्मान	सुगम सगीत	दो लाख
इकबाल सम्मान	उर्दू साहित्य	दो लाख
तुलसी सम्मान	लोक एव पारम्परिक कलाएँ	दो लाख
कुमार गन्धर्व सम्मान	युवा शास्त्रीय सगीतकार	एक लाख
शरद जोशी सम्मान	हिन्दी व्यग्य-लेखन	एक लाख
महात्मा गाधी सम्मान	गाधी-दर्शन के अनुरूप सामाजिक कार्य	दस लाख
देवी अहिल्याबाई सम्मान	विशेष क्षेत्र	दो लाख
किशोर कुमार सम्मान	सगीत	दो लाख

(ख) राज्यस्तरीय सम्मान

क्र.	सम्मान	क्षेत्र	धनराशि (₹ में)
1.	शिखर सम्मान	साहित्य	बासठ हजार
2.	शिखर सम्मान	प्रदर्शनकारी कलाएँ	बासठ हजार
3.	शिखर सम्मान	रुपकर कलाएँ	बासठ हजार

(ग) शिक्षावृत्ति

क्र.	शिक्षावृत्ति	अवधि	शिक्षावृत्ति राशि प्रतिमाह (₹ में)
1.	अमृता शेरगिल फैलोशिप	एक वर्ष	एक हजार
2.	उस्ताद अलाउद्दीन खाँ सगीत फैलोशिप	एक वर्ष	एक हजार
3	मुक्तिबोध फैलोशिप	एक वर्ष	एक हजार
4.	चक्रधर फैलोशिप	एक वर्ष	एक हजार
5.	श्रीकान्त वर्मा फैलोशिप	एक वर्ष	एक हजार

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् के पुरस्कार

वर्ष 1954 में गठित 'मध्य प्रदेश साहित्य परिषद्', साहित्य की समुन्नति एव विकास में उत्प्रेरक का काम करती है वह साहित्यकारों का सम्मान तथा उनकी श्रेष्ठतम कृतियो को पुरस्कृत भी करती है

परिषद् साहित्यकारो को अखिल भारतीय स्तर तथा प्रादेशिक स्तर पर पुरस्कृत करके सम्मानित करती है वह अखिल भारतीय पुरस्कारों में ₹ 11 हजार तथा प्रादेशिक पुरस्कारो में ₹ 7 हजार की नकद धनराशि प्रदान करती है

इन पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है–

(क) अखिल भारतीय पुरस्कार

क्रमांक	पुरस्कार	क्षेत्र	पुरस्कार राशि
1.	भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार	कविता	₹ 11,000
2.	वीर सिह देव पुरस्कार	उपन्यास	₹ 11,000
3.	गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार	कहानी	₹ 11,000
4.	सेठ गोविन्द दास पुरस्कार	नाटक एव एकाकी	₹ 11,000
5.	रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार	आलोचना	₹ 11,000
6.	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी पुरस्कार	व्यग्य, ललित निबन्ध सस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा, आत्मकथा, डायरी, पत्र, रिपोर्ताज	₹ 11,000

(ख) प्रादेशिक पुरस्कार

क्रमांक	पुरस्कार	क्षेत्र	पुरस्कार राशि
1.	माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार	कविता	₹ 7,000
2.	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार	गीत प्रबन्ध	₹ 7,000
3.	सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार	कहानी	₹ 7,000
4.	विश्वनाथ सिह पुरस्कार	उपन्यास	₹ 7,000
5.	नन्द दुलारे वाजपेयी पुरस्कार	आलोचना	₹ 7,000
6.	हरिकृष्ण प्रेमी पुरस्कार	नाटक एव एकाकी	₹ 7,000
7.	मुकुटधर पाण्डेय पुरस्कार	सृजनात्मक चिन्तन एव ललित निबन्ध	₹ 7,000
8.	माधवराव सप्रे पुरस्कार	प्रदेश की विभूति, स्थान एव इतिहास पर गद्य अथवा पद्य मे लिखित कृति	₹ 7,000
9.	राम विलास शर्मा पुरस्कार	लेखक की प्रथम कृति	₹ 7,000
10.	दुष्यन्त कुमार पुरस्कार	35 वर्ष से कम आयु के लेखक एव लेखिका की प्रथम कृति	₹ 7,000
11.	शरद जोशी पुरस्कार	व्यग्य	₹ 7,000
12.	राजेन्द्र माथुर पुरस्कार	रेखाचित्र, सस्मरण, यात्रा, आत्मकथा, पत्र, रिपोर्ताज	₹ 7,000
13.	ईसुरी पुरस्कार	लोकभाषा कृति	₹ 7,000
14.	रविशकर शुक्ल पुरस्कार	बाल-साहित्य (12 वर्ष तक के बच्चो हेतु)	₹ 7,000
15.	ताम्बे पुरस्कार	मराठी साहित्य	₹ 7,000
16.	अनिल कुमार पुरस्कार	प्रदेश की लघु पत्रिका	₹ 7,000

मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण पुरस्कार एवं सम्मान

मध्य प्रदेश शासन द्वारा दिए जाने वाले राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय सम्मान

कालिदास सम्मान–कालिदास सम्मान की स्थापना 1980 में की गई प्रदेश शासन के 'सस्कृति विभाग' द्वारा दिया जाने वाला यह राष्ट्रीय सम्मान शास्त्रीय सगीत, रुपकर, कला व रगकर्म के क्षेत्र में अपनी कला में विशिष्ट उपलब्धि अर्जित करने वाले साहित्यकारों और कलाकारो को प्रदान किया जाता है

इस पुरस्कार की स्थापना का मुख्य उद्देश्य कला के क्षेत्र मे सृजनात्मक एव रचनात्मक कलाकारो को प्रोत्साहित करना है पुरस्कार में दो लाख रुपए नगद तथा 'प्रशस्ति पत्रिका' प्रदान की जाती है प्रारम्भ में यह पुरस्कार केवल शास्त्रीय सगीत के लिए ही दिया जाता था, किन्तु बाद में तीन और क्षेत्रों के लिए दिया जाने लगा

कालिदास सम्मान से सम्मानित कलाकार

क्र	कलाकार एवं सम्बन्धित क्षेत्र	वर्ष
1	प मल्लिकार्जुन तथा सेमन गुडी श्रीनिवास अय्यर (शास्त्रीय सगीत)	1980
2	के जी सुब्रमण्यम (रूपकर कला)	1981
3.	शम्भू मित्र (रगकर्म)	1982
4	सुश्री रुक्मिणी देवी अरुणडेल (शास्त्रीय नृत्य)	1983
5	कुमार गन्धर्व (शास्त्रीय सगीत)	1984
6	राम कुमार गन्धर्व (चित्रकारी)	1985
7	बिरजू महाराज (शास्त्रीय नृत्य), इब्राहीम अलकाजी (रगकर्म), उस्ताद मोहिनुद्दीन डागर (शास्त्रीय सगीत) एव एन एस बेन्द्रे (चित्रकारी)	1986
8	पुरुषोत्तम लक्ष्मण देशपाण्डे (रगकर्म) एव मकबूल फिदा हुसैन (चित्रकारी)	1987
9	गुरु विपिन सिह (शास्त्रीय नृत्य), हबीब तनवीर (रगकर्म) उस्ताद विलायत खाँ (शास्त्रीय सगीत), वी एस गायतोडे (रूपकर कला)	1989
10.	विजय तेन्दुलकर (साहित्य), डॉ पइसा सुब्रमण्यम (शास्त्रीय नृत्य) एव उस्ताद अली (शास्त्रीय सगीत)	1990
11	वेम्पति चित्रा (शास्त्रीय नृत्य) एव उस्ताद अली अकबर खाँ (शास्त्रीय वादन)	1991
12	वेद प्रकाश यादव (मूर्तिकला)	1992
13	अमानूर माधव चाक्यार (शास्त्रीय नृत्य) एव प रामनारायण (शास्त्रीय गायन)	1993
14	सुश्री पद्मावती सालिगराम गोखले (शास्त्रीय सगीत), बी वी कारथ (नाट्य कला) एव सी वी रामन कुट्टी (शास्त्रीय नृत्य)	1994
15	सुश्री शान्ताराव (शास्त्रीय नृत्य), कपलम नारायण पेनिकर (रगकर्म)	1995
16	अल्ला रक्खा (शास्त्रीय वादन)	1996
17	सैयद हैदर रजा (रूपकर कला) एव सुश्री पद्मावती गोखले	1997
18	गिरीश कर्नाड (रगमच), सुश्री डी के पद्दमाल (शास्त्रीय सगीत), कलानिधि नारायण (शास्त्रीय नृत्य) एव सुश्री अर्पिता सिह (रूपकर कला)	1998
19	प सत्यदेव दुबे (रगमच), हरिप्रसाद चौरसिया (शास्त्रीय सगीत), के पी किट्प्पा (शास्त्रीय नृत्य) एव फ्रासिस न्यूटन सूजा (रूपकर कला)	1999-2000
20	डॉ एम बी मुरलीकृष्ण (शास्त्रीय सगीत), रोहिणी भाहे (शास्त्रीय नृत्य), सुश्री जोहरा सहगल (रगकर्म), लक्खो चौधरी (रूपकर कला)	2000-01
21	सुमित मुटाटकर (शास्त्रीय सगीत), यामिनी कृष्णमूर्ति (शास्त्रीय नृत्य), के बी सुबन्ना (रगकर्म), जोगेन चौधरी (रूपकर कला)	2001-02
22	उस्ताद रहीमुद्दीन फहीमुद्दीन डागर (शास्त्रीय सगीत), कुमुदिनी लाखिया (शास्त्रीय नृत्य), खालिद चौधरी (रगकर्म), गुलाम मोहम्मद शेख (रूपकर कलाए)	2002-03
23	गुरुशरण सिह (रगकर्म), प वी जी जोग (शास्त्रीय सगीत), सुश्री चन्द्रलेखा (शास्त्रीय नृत्य), हिम्मत शाह (रूपकर कलाए)	2003-04
24	डॉ प्रभा अत्रे (शास्त्रीय सगीत), राजकुमार सिह (शास्त्रीय नृत्य), देवेन्द्र राज अकुर (रगकर्म), नागजी पटेल (रूपकर कलाए)	2004-05
25	उस्ताद जाकिर हुसैन (शास्त्रीय सगीत), डॉ कनक रेले (शास्त्रीय नृत्य), रतन थियाम (रगकर्म) मजीत बाबा (रूपकर कलाए)	2005-06
26	प पुट्टराज कवि गावा (शास्त्रीय सगीत), सोनल मानसिंह (शास्त्रीय नृत्य), बीमल लाठ (रगकर्म) शान्ति दवे (रूपकर कलाए)	2006-07
27	बलवन्त राय भट्ट (शास्त्रीय सगीत), सतीश गुजराल (रूपकर कलाए) प्रो सी वी चन्द्रशेखर (शास्त्रीय सगीत) बाबा साहब पुरन्दरे (रगकर्म)	2007-08
28	बन्नू लाल मिश्रा (शास्त्रीय सगीत), जैरमा पटेल (रूपकर कलाए), कलामण्डलम गोपी (शास्त्रीय सगीत)	2008-09
29	गुरु सरोजा विद्यानाथन (शास्त्रीय सगीत), डॉ एन राजन (शास्त्रीय सगीत)	2009-10
30	अनुपम खेर (रगकर्म),	2010-11
31	डॉ केशवराव सदाशिव शास्त्री मुसलगावकर	2011-12
32	श्री कृष्ण कन्हाई लाल (रूपकर कला)	2012-13
33	डॉ मोहन महर्षि (रगकर्म)	2013-14
34	मन्जा एलकुचवा (रगकर्म)	2014-15
35	प्रो राज बिसरिया (रगकर्म)	2015-16

तानसेन सम्मान -प्रदेश शासन के 'संस्कृति विभाग' द्वारा वर्ष 1980 से दिया जा रहा 'तानसेन सम्मान' राष्ट्रीय स्त
का पुरस्कार है जिसे संगीत क्षेत्र के मनीषी संगीतज्ञों को अपने समर्पण और योगदान के फलस्वरूप प्रदान किया जाता है
इस पुरस्कार की स्थापना का मुख्य उद्देश्य संगीतकारों की उत्कृष्टता, सृजनात्मकता और निष्ठा का सम्मान करना है
इस सम्मान के अन्तर्गत ₹ 2 लाख की नकद धनराशि, रजत पदक तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है
उल्लेखनीय है कि अपनी स्थापना से वर्ष 1985 तक इस पुरस्कार की धनराशि ₹ 5,000 नकद थी, जो 1986 में बढ़कर
₹ 50,000 तथा 1990 में ₹ 1 लाख कर दी गई थी बाद में इसे बढाकर ₹ 2 लाख कर दिया गया

तानसेन सम्मान से सम्मानित कलाकार

क्र.	वर्ष	कलाकार एवं सम्बन्धित कला
1.	1980	श्रीमती हीराबाई बडोदकर (गायन), उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ (वादन), एव प कृष्णा राव (गायन)
2.	1981	प. राजचन्द्र मलिक (गायन)
3.	1982	दिलीप चन्द बेदी, निसार हुसैन खाँ, नारायण राव व्यास (शास्त्रीय संगीत)
4.	1983	बी आर देवधर एव ठाकुर जयदेव सिह (शास्त्रीय संगीत)
5.	1984	बेगम असगरी बाई (गायन), गजानन राव जोशी (गायन)
6.	1985	प सरनायक (शास्त्रीय संगीत)
7.	1988	श्रीमती मोंगूबाई कुर्दीकर (गायन)
8.	1989	प्रो देबू चौधरी (शास्त्रीय संगीत)
9.	1990	उस्ताद नसीर अमीनुद्दीन डागर (गायन)
10.	1991	पं भीमसेन जोशी
11.	1993	उस्ताद जिया फरीदउद्दीन एव प एम सी आर भट्ट (शास्त्रीय संगीत)
12.	1994	उस्ताद असद अली खाँ (वादन)
13.	1995	डॉ ज्ञान प्रकाश घोष (वादन) एव राजा छत्रपति सिह (वादन)
14.	1996	सुश्री गिरिजा देवी (गायन)
15.	1997	बालासाहब पूछवाले (गायन) एव प हनुमान प्रसाद मिश्र (वादन)
16.	1998	पं सियाराम तिवारी
17.	1999	प चिन्तामणि रघुनाथ व्यास
18.	2000-01	उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खाँ
19.	2001-02	उस्ताद अमजद अली खाँ (सरोदवादक)
20.	2002-03	उस्ताद नियाज अहमद खान (गायन)
21.	2003	दिनकर कायकिणी (गायन)
22.	2004	प शिव कुमार शर्मा (संतूरवादन)
23.	2005	मालिनी राजुरकर
24.	2006	सुलोचना बृहस्पति
25.	2007	आचार्य पण्डित गोस्वामी गोकुलोत्सव जी महाराज
26.	2008	गुलाम मुस्तफा खान
27.	2009	प अजय पोहनकर
28.	2010-11	सुश्री सविता देवी
29.	2011-12	राजन व साजन मिश्र
30.	2012-13	विश्वमोहन भट्ट
31.	2013-14	प प्रभाकर कारेकर (शास्त्रीय संगीत)
32.	2015-16	अजॉय चक्रवर्ती प लक्ष्मण कृष्णराव पण्डित (शास्त्रीय गायक
33.	2016-17	प डालचन्द शर्मा (पखावजवादक)

तुलसी सम्मान--इस पुरस्कार की स्थापना वर्ष 1983 में की गई यह सम्मान मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त किया जाता है यह राष्ट्रीय सम्मान आदिवासी लोक एव पारम्परिक कलाओ मे उत्कृष्टता तथा श्रेष्ठ उपलब्धि को सम्मानित करने हेतु दिया जाता है इस सम्मान का एक मुख्य उद्देश्य कलाओं में राष्ट्रीय मानदण्ड विकसित करना है

इस वार्षिक पुरस्कार में ₹ 2 लाख की नकद धनराशि प्रदान की जाती है यह सम्मान तीन वर्ष में दो प्रदर्शनकारी कलाओं तथा एक बार रूपकर कलाओ के क्षेत्र में दिया जाता है

तुलसी सम्मान से सम्मानित कलाकार

क्र	कलाकार एवं क्षेत्र	वर्ष
1.	हरिजी केशव जी (लोक एव पारम्परिक रगकर्म), गिर्राज प्रसाद (बृज लोककला)	1983
2.	भागवान साहू	1984
3	श्रीमती नीलमणि देवी, श्रीमती सोनाबाई एव श्रीमती गगा देवी	1985
4	मणिमाधव चाक्यार	1986
5	डलप्पा की हुकेरी, झाडूराम देवागन, बालकृष्ण दास	1991
6	चमरूलाल बघेल	1992
7	कोम्मा देवत्रा कामथ, अर्जुन सिह धुवे	1993
8	स्वामी हरगोविन्द (रासमच), श्रीमती महासुन्दरी देवी (चित्रकला)	1997
9.	ओमप्रकाश टाक (चित्रकला)	1998
10.	पूरनचन्द बडाली एव प्यारेलाल बडाली (पंजाबी लोक गायक)	1999-2000
11.	पूर्णचन्द दास (आदिवासी लोक व पारम्परिक कलाओं मे उत्कृष्टता के लिए)	2000-01
12	गुरुप्पा चेट्टी (कलमकारी चित्रण)	2001-02
13	राम कैलाश यादव (लोक गायक)	2002-03
14	उस्ताद गुलाम मोहम्मद साज नवाज	2003-04
15	प्रकाश चन्द (लोक शिल्पी)	2004-05
16.	स्वामी रामस्वरूप शर्मा	2005-06
17.	उत्लू वाजपेयी (लोक कलाकार)	2006-07
18	प सत्यनारायण शर्मा	2007-08
19	रगास्वामी वेडार	2008-09

शिखर सम्मान--मध्य प्रदेश सरकार के 'सस्कृति विभाग' द्वारा वर्ष 1980 से प्रदत्त यह राज्यस्तरीय सम्मान शिखर सम्मान समग्र योगदान के आधार पर साहित्य एव प्रदर्शनकारी कलाओ तथा रूपकर कलाओं में पृथक्-पृथक् दिया जाता है पुरस्कार में 62 हजार की नकद धनराशि प्रदान की जाती है

'शिखर सम्मान' से सम्मानित साहित्यकार एवं कलाकार

क्र	साहित्यकार कलाकार	वर्ष
1	श्रीकान्त वर्मा (साहित्य,) डी के जोशी (रूपकर कला) एव कार्तिक राम (शास्त्रीय नृत्य)	1980
2	जयदेव बघेल (रूपकर कला), सत्यदेव दुबे (रगकर्म) एव गुलशेर खाँ (साहित्य)	1981
3	प भवानी प्रसाद मिश्र (साहित्य), प कुमार गन्धर्व (गायन) एव रमेश पेट्रेरिया (रूपकर कला)	1982
4	हरिशकर परसाई (साहित्य), झाडूराम देवागन (लोक रगकर्म) एव विष्णु चिचालकर (लोक रगकर्म)	1983
5	नरेश महता (साहित्य) हबीब तनवीर (रगकर्म), जनगणा सिह (रूपकर कला) एव गोविन्द झारा (रूपकर)	1984
6	शीलचन्द्र कुमार जैन (साहित्य), एल एस राजपूत (चित्रकला) एव बेगम असगरी बाई (गायन)	1985
7	चन्द्रकान्ता देवताले (साहित्य) एव कल्याणदास महत (शास्त्रीय सगीत)	1986
	सुश्री प्रेमकत्या (रूपकर कला) एवं श्रीमती भूरीबाई (रूपकर कला)	
8	प्रभात गागुली (लोक कला), श्रीमती मिठ्ठी बाई (रूपकर कला) एव श्रीमती सुन्दरी बाई (रूपकर कला)	1989
9	अणिक जैन (रूपकर कला) एव बर्मन लाल (प्रदर्शनकारी कला)	1991
10	डॉ शिवमगल सिह सुमन (साहित्य)	1992
11	प हरिनारायण व्यास (साहित्य), सिद्धेश्वर सेन (प्रदर्शनकारी कला) एव सच्चिदानागदेव	1996
12	इकबाल मजीद (साहित्य), प्रभाकर चिचोरे (प्रदर्शनकारी कला) एव इब्राहीम खात्री (रूपकर कला)	1999-2000
13	मजूर एहतशाम (साहित्य), विवेक (रूपकर कलाए) ओ पी शर्मा (प्रदर्शनकारी कलाए)	2000-01
14	विष्णु नागर (साहित्य) यूसुफ (रूपकर कलाए), गुलवर्धन (प्रदर्शनकारी कलाए)	2001-02
15	राजेश जोशी (साहित्य) श्रीमती कृष्णा वर्मा (रूपकर कलाए) प रामलाल (प्रदर्शनकारी कलाए)	2002-03
16	विनय दुबे (साहित्य) ओमप्रकाश सारे (रूपकर कलाए) प लक्ष्मण कृष्णराव (प्रदर्शनकारी कलाए)	2003-04
17	निदा फाजली (साहित्य) प्रहलाद टिपणियाँ (प्रदर्शनकारी कलाए), रॉबिन डेविड (रूपकर कलाए)	2004-05
18	कलेक्षनदन (प्रदर्शनकारी कलाए) नर्मदा प्रसाद टिकाग (रूपकर कला),	2005-06
19	डॉ पुरु दाधीच (प्रदर्शनकारी कलाए) शोभा सारे (रूपकर कलाए)	2006-07
20	डॉ लक्ष्मी नारायण भावसार (रूपकर कलाएँ), श्री वसत रामभाऊ शेवलीकर (प्रदर्शनकारी कलाएँ), डॉ आनन्द कुमार पयासी (साहित्य)	2007-08

देवी अहिल्या सम्मान—मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त यह राष्ट्रीय सम्मान वर्ष 1996-97 में आदिवासी लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में महिला कलाकारों की सृजनात्मकता को सम्मानित करने हेतु स्थापित किया गया था इस सम्मान से सम्मानित महिला कलाकार को पुरस्कारस्वरूप ₹ 2 लाख नकद तथा प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है प्रथम देवी अहिल्या सम्मान शीर्ष पडवानी कलाकार श्रीमती तीजनबाई को और वर्ष 1998-99 का पुरस्कार जनजातीय चित्रकार श्रीमती भूरीबाई को तथा 2012-13 का यह सम्मान सिनेगीतकार समीर को प्रदान किया गया.

वर्ष 2003-04 हेतु श्रीमती राजबेगम को, वर्ष 2004-05 हेतु रूकमा देवी (लोक गायिका) को तथा वर्ष 2005-06 हेतु यह सम्मान शारदा सिन्हा को प्रदान किया गया. शारदा देवी सिन्हा को वर्ष 2005-06 के लिए, सुश्री गौरी देवी को वर्ष 2006-07 के लिए तथा डॉ शान्ति जैन को वर्ष 2007-08 के लिए देवी अहिल्या सम्मान प्रदान किया गया

कुमार गन्धर्व सम्मान—राज्य के संस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त इस राष्ट्रीय सम्मान में सम्मान स्वरूप ₹ 1 लाख तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए जाते हैं.

कुमार गंधर्व सम्मान से सम्मानित कलाकार

क्र.	कलाकार	वर्ष
1.	अजय चक्रवर्ती	1992-93
2.	बुधादित्य मुखर्जी	1993-94
3.	राजन-साजन मिश्रा	1994-95
4.	रवि किरण	1995-96
5	मुकुल शिवापुत्र	1996-97
6.	शाहिद परवेज	1997-98
7	उमाकांत रमाकांत गुदेचा	1998-99
8	ई गायत्री	1999-2000
9.	उदय भावलकर	2000-01
10.	शुजात हुसैन खान	2001-02
11	उस्ताद रशीद खान	2002-03
12.	यू श्रीनिवास	2003-04
13.	अश्विनी भिडे देशपांडे	2004-05
14	प रेणु नजूमदार	2005-06
15	सुश्री आरती अंकलीकर टिकेकर	2006-07
16.	सुश्री कला रामनाथ	2007-08

किशोर कुमार सम्मान से सम्मानित कलाकार

क्र.	कलाकार	वर्ष
1.	ऋषिकेश मुखर्जी	1997-98
2.	जसरुद्दीन शाह	1998-99
3.	गुलजार	1999-2000
4.	कैफी आजमी	2000-01
5.	बी आर चोपडा	2001-02
6	अमिताभ बच्चन	2002-03
7.	गोविन्द नहलानी	2003-04
8	जावेद अख्तर	2004-05
9.	श्याम बेनेगल	2005-06
10.	शत्रुघ्न सिन्हा	2006-07
11.	मनोज कुमार	2007-08
12.	गुलशन बावरा (मरणोपरांत)	2008-09
13	यश चोपडा	2009-10
14	देवानन्द	2010-11
15.	सलीम खान	2011-12
16.	दिलीप कुमार	2013-14
17.	सई पराजपे	2014-15

कबीर सम्मान से अलंकृत व्यक्ति

क्र	व्यक्ति	वर्ष
1.	कन्नड कवि गोपाल कृष्णा	1986-87
2.	सुभाष मुखोपाध्याय	1987-88
3.	शमशेर बहादुर	1989
4	गोविन्द विनायक करनदीकर	1990
5	परशुराम पाण्डे व जे सी पालीवाल	1991
6	डॉ मुदस्सर अली (साम्प्रदायिक एकता)	1992
7.	रमाकान्त रथ	1992-93
8	जगदीश गुप्त	1994
9	नवकान्त बरुआ	1995
10.	डॉ के अय्यप्पा पानिकर और श्रीमती महासुन्दरी देवी (साहित्य)	1996
11.	शीताशु यशचन्द (साहित्य)	1997-98
12.	शखघोष	1998-99
13	नारायण सुर्वे (साहित्य)	1999-2000
14	सीताकान्त महापात्र	2000-01
15.	कुँवर नारायण	2001-02
16	चन्द्रशेखर कंबार	2002-03
17.	श्री ए रहमान राही (कश्मीरी भाषा)	2003-04
18	गोविन्द चन्द्र पाण्डेय	2004-05
19.	अशोक वाजपेयी	2005-06
20	अक्किट्टम अच्युत्तन नम्बूदरी	2006-07
21	पद्मा सचदेव	2007-08
22.	नगेश पडगाकर	2008-09

वर्ष 2007-08 के लिए कुमार गधर्व सम्मान सुश्री कला रामनाथ को प्रदान किया गया

किशोर कुमार सम्मान–राज्य शासन के सस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त यह राष्ट्रीय सम्मान वर्ष 2003-04 हेतु फिल्म निर्देशक गोविन्द निहलानी को प्रदान किया गया वर्ष 2004-05 हेतु गीतकार जावेद अख्तर को तथा वर्ष 2005-06 का यह सम्मान श्याम बेनेगल को प्रदान किया गया इस सम्मान में ₹ 2 लाख नकद तथा प्रशस्ति-पत्र भेंट किया जाता है 2006-07 के लिए शत्रुघ्न सिन्हा को ये सम्मान दिया गया वर्ष 2007-08 के लिए मनोज कुमार को वर्ष 2008-09 के लिए दिवगत गीतकार गुलशन बावरा को किशोर कुमार सम्मान प्रदान किया गया वर्ष 2009-10 के लिए निर्माता-निर्देशक यश चोपडा को, वर्ष 2010-11 के लिए यह पुरस्कार देवानन्द को, 2011-12 के लिए यह पुरस्कार सलीम खान को तथा 2012-13 का यह सम्मान सिनेगीतकार समीर को प्रदान किया गया वर्ष 2013-14 एव 2014-15 के लिए यह पुरस्कार क्रमश दिलीप कुमार एव सई पराजपे को दिया गया

कबीर सम्मान–राज्य के सस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त यह राष्ट्रीय सम्मान वर्ष 2003-04 हेतु श्री ए रहमान राही (कश्मीरी भाषा) को प्रदान किया गया वर्ष 2004-05 हेतु यह सम्मान सस्कृत एव हिन्दी के कवि गोविन्द चन्द्र पाण्डेय को प्रदान किया गया इस सम्मान मे ₹ 3 लाख नकद तथा प्रशस्ति पट्टिका भेंट की जाती है

इकबाल सम्मान–राज्य के सस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त यह राष्ट्रीय सम्मान उर्दू साहित्य मे विशिष्ट योगदान हेतु प्रदान किया जाता है पुरस्कार मे ₹ 2 लाख की नकद धनराशि तथा प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है

इससे पूर्व यह पुरस्कार वर्ष 1992 में विख्यात शायर मजरूह सुल्तानपुरी, वर्ष 1993 में सुप्रसिद्ध शायर डॉ बुर्हान अहसन जज्बी, 1994-95 में हिन्दी उर्दू के शीर्षस्थ रचनाकार उपेन्द्रनाथ 'अश्क', वर्ष 1996-97 में लेखक बशीर उल्लाह असारी तथा वर्ष 1997-98 मे साहित्यकार अख्तर सईद को प्रदान किया गया था

मैथिलीशरण गुप्त सम्मान–राज्य के सस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त यह राष्ट्रीय सम्मान हिन्दी कविता मे उल्लेखनीय योगदान हेतु प्रदान किया जाता है सम्मानित व्यक्ति को दो लाख रुपए नकद तथा प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है यह सम्मान खडी बोली के शीर्ष प्रवर्तक कवि मैथिलीशरण गुप्त की स्मृति मे वर्ष 1987-88 से प्रारम्भ किया गया है

शरद जोशी सम्मान–मध्य प्रदेश शासन के सस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय सम्मान हिन्दी व्यग्य लेखन हेतु दिया जाता है सम्मान मे व्यक्ति विशेष को ₹ 1 लाख नकद तथा प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है

लता मंगेशकर सम्मान–मध्य प्रदेश सरकार के सस्कृति विभाग द्वारा नवम्बर 1984 से प्रदत्त यह राष्ट्रीय सम्मान सुगम सगीत में उल्लेखनीय योगदान हेतु प्रदान किया जाता है व्यक्ति विशेष को सम्मानस्वरूप ₹ 2 लाख की सम्मान निधि तथा प्रशस्ति ताम्र-पत्र प्रदान किया जाता है

लता मंगेशकर सम्मान से सम्मानित कलाकार

क्र.	वर्ष	कलाकार एवं सम्बन्धित क्षेत्र
1.	1984	नौशाद अली (सगीत निदेशक)
2.	1985	किशोर कुमार (पार्श्व गायक अभिनेता निर्माता निर्देशक सगीत निर्देशक)
3.	1986	जयदेव (सगीत निर्देशक)
4.	1987	मन्नाडे (पार्श्व गायक एव सगीत निर्देशक)
5.	1988	खय्याम (सगीत निर्देशक)
6	1989	आशा भोसले (पार्श्व गायिका)
7.	1990	लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल (सगीत निर्देशक)
8	1991	येसुदास (पार्श्व गायक)
9	1992	आर डी बर्मन (पार्श्व गायक एव सगीत निर्देशक)
10.	1993	सध्या मुखर्जी (पार्श्व गायिका)
11	1994	अनिल बिस्वास (सगीत निर्देशक)
12.	1995	तलत महमूद (पार्श्व गायक)
13.	1996	कल्याणजी-आनन्दजी (सगीत निर्देशक)
14.	1997	जगजीत सिह (गजल गायक)
15.	1998	इलिया राजा (सगीतकार)
16	1999-2000	एस पी बाला सुब्रह्मण्यम (पार्श्व गायक)
17	2000-01	डॉ भूपेन्द हजारिका (गायन एव सगीत निर्देशन)
18.	2001-02	महेन्द कपूर (गायक)
19	2002-03	रविन्द जैन (सगीतकार गीतकार गायक)
20	2003-04	सुरेश वाडेकर (गायक)
21	2004-05	ए आर रहमान (सगीतकार)

22.	2005-06	सुश्री कविता कृष्णमूर्ति (पार्श्व गायिका)
23	2006-07	प हृदयनाथ मगेशकर
24	2007-08	श्री नितिन मुकेश
25	2008-09	रवि (सगीतकार)
26.	2009-10	अनुराधा पौडवाल
27.	2010-11	राजेश रोशन
28	2011-12	हरिहरन (पार्श्व गायक)

महात्मा गांधी सम्मान—मध्य प्रदेश सरकार के सस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त यह राष्ट्रीय सम्मान महात्मा गाधी सम्मान गाधी-दर्शन के अनुरूप सामाजिक कार्य करने हेतु वर्ष 1995-96 से प्रदान किया जाता है

इस सम्मान मे सम्मानित गाधीवादी व्यक्ति या सस्था को ₹ 10 लाख की नकद धनराशि प्रदान की जाती है

1995-96 : कस्तूरबा गाधी स्मारक ट्रस्ट, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

1996-97 : लोक भारती शिक्षा समिति सणोसरा (गुजरात)

1997-98 : आचार्य कुल-खादी मिशन विनोबा आश्रम वर्धा (महाराष्ट्र)

1998-99 : भारतीय आदिम जाति सेवक सघ, नई दिल्ली

1999-2000 : मणि भवन स्मारक ट्रस्ट, मुम्बई

2000-01 : गाधी नेशनल मेमोरियल सोसायटी पुणे

2001-02 : अशोक आश्रम चौचलू (देहरादून)

2003-04 : वनवासी सेवा आश्रम गोविन्दपुर (सोनभद्र)

2004-05 : जीव सेवा सस्थान बैरागढ (भोपाल)

2005-06 : दीनदयाल शोध सस्थान चित्रकूट (सतना)

2006-07 : दिव्य प्रेम सेवा मिशन (हरिद्वार)

2007-08 : आर एस एस से सम्बद्ध सेवा भारती नई दिल्ली

2008-09 : डी पी डी आई गढवाल (उत्तराखण्ड)

रानी दुर्गावती राष्ट्रीय सम्मान—आदिवासी एव पारम्परिक सृजनात्मक कला शिल्प समाज सेवा प्रशासन मे अद्वितीय उपलब्धि एव योगदान के लिए मध्य प्रदेश शासन द्वारा सितम्बर 2008 मे रानी दुर्गावती राष्ट्रीय सम्मान गठित किया गया

वीर शंकर शाह रघुनाथ शाह राष्ट्रीय सम्मान-यह सम्मान भारतीय साहित्य मे जनजातीय जीवन के सृजनात्मक सौन्दर्य परम्परा और विशिष्टता के उत्कृष्ट रेखाकन-लेखन मे सुदीर्घ योगदान तथा आदिवासी पारम्परिक कलाओ के क्षेत्र मे उल्लेखनीय साधना के लिए वर्ष 2008 से प्रारम्भ की गई है इस सम्मान के तहत् सम्भावित विभूतियो को प्रति सम्मान ₹ 2 लाख की सम्मान निधि एव प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है

ठक्कर बापा राष्ट्रीय सम्मान—यह सम्मान गरीब पीडित और हर तरह से पिछडे आदिवासी समुदाय के लोगो के प्रति प्रेम समदृष्टि, ममतापूर्ण सेवा एव सुदीर्घ साधना प्रदान करने के लिए दिया जाता है यह सम्मान वर्ष 2008 मे प्रारम्भ किया गया तथा इस सम्मान के तहत् सम्भावित विभूतियों को प्रति सम्मान ₹ 2 लाख की सम्मान निधि एव प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है

भामाशाह पुरस्कार—तत्कालीन वित्त एव वाणिज्यिक कर मत्री श्री राघवजी ने शहडोल जिले के एक समारोह में मध्य प्रदेश पॉवर जनरेटिग कम्पनी लिमिटेड को भामाशाह पुरस्कार से पुरस्कृत किया कम्पनी को वित्तीय वर्ष 2010-11 में सर्वाधिक करीब 48 करोड की राशि जमा करने पर जबलपुर जिले के श्रेष्ठ भामाशाह कर दाता का प्रथम पुरस्कार दिया गया

राष्ट्रपति पुरस्कार—महात्मा गाधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना (मनरेगा) के अन्तर्गत 2 फरवरी 2013 को मनरेगा दिवस के अवसर पर प्रधानमत्री डॉ मनमोहन सिह ने राज्य के बैतूल जिले की समादेही ग्राम पचायत को श्रेष्ठ कार्यों के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किया

मध्य प्रदेश सरकार एवं नागरिकों की समसामयिक उपलब्धियाँ

- नई दिल्ली मे 24 जनवरी, 2017 को मध्य प्रदेश ऊर्जा विकास निगम को नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र मे देश में कार्यरत सभी सस्थाओ मे सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिये केन्द्रीय नवकरणीय ऊर्जा सचिव श्री राजीव कपूर द्वारा पुरस्कृत किया गया
- केन्द्रीय महिला बाल विकास मत्री श्रीमती मेनका गाधी ने 22 दिसम्बर, 2016 को नई दिल्ली मे कटनी जिले के ग्राम जातपुर उमरिया की ऑगनवाडी कार्यकर्ता श्रीमती कार्शोबाई विश्वकर्मा को राष्ट्रीय पुरस्कार दिया
- राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर 26 नवम्बर, 2016 मध्य प्रदेश के केन्द्रीय वीर्य सस्थान को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला
- मुख्यमत्री श्री शिवराज सिह चौहान को 9 नवम्बर 2016 को नगरीय विकास मत्री श्रीमती माया सिह ने दीया नगर निगम को मिले 'वयोश्रेष्ठ सम्मान 2016' की पुरस्कार ट्रॉफी भेंट की
- 4 अक्टूबर, 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय क्लार्क आर्म्स वाइल्ड लाइफ अवार्ड हासिल करने वाले पहले भारतीय बने मध्य प्रदेश के श्री रितेश सिरोठिया

- नगरीय विकास एव आवास मत्री श्रीमती माया सिंह ने 30 दिसम्बर, 2016 को नई दिल्ली मे अमृत योजना में मध्य प्रदेश को मिले इनसेंटिव अवार्ड केन्द्रीय शहरी विकास मत्री श्री वेंकैया नायडू एव केन्द्रीय पचायत एव ग्रामीण विकास मत्री श्री नरेन्द्र सिह तोमर ने ग्रहण किया
- 8 सितम्बर, 2016 को मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान को कृषि क्षेत्र में मिले पॉलिसी लीडरशिप अवार्ड को नई दिल्ली मे किसान कल्याण एव कृषि विकास मत्री श्री गौरीशकर बिसेन ने ग्रहण किया
- 2 अगस्त, 2016 को पर्यटन के क्षेत्र में प्राप्त प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पर्यटन अवार्ड मुख्यमत्री श्री शिवराज सिह चौहान को मत्रालय में सौपे गये
- राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार समारोह में लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन एव केन्द्रीय पर्यटन राज्य मत्री डॉ महेश शर्मा ने मध्य प्रदेश को पर्यटन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ राज्य के लिए दिया गया अवार्ड 30 जुलाई, 2016 को पर्यटन एव सस्कृति राज्य मत्री श्री सुरेन्द्र पटवा ने प्राप्त किया
- भोपाल के सदर मंजिल पशु चिकित्सालय को आई एस ओ अवार्ड प्रमाण-पत्र को मिला
- पचायत एव ग्रामीण विकास मत्री श्री गोपाल भार्गव ने 24 अप्रैल, 2016 को जमशदपुर मे प्रधानमत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मध्य प्रदेश में पेसा एक्ट के तहत् किए गए श्रेष्ठ ग्रामीण विकास कार्यों के लिए प्रथम पुरस्कार ग्रहण किया
- प्रधानमत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19 मार्च, 2016 को मध्य प्रदेश को वर्ष 2014-15 का कृषि कर्मण अवार्ड किसान कल्याण एव कृषि विकास मत्री श्री गौरीशकर बिसेन को प्रदान किया
- महाराष्ट्र के मुख्यमत्री श्री देवेन्द्र फणनवीस ने 22 जनवरी, 2016 को नागपुर में मध्य प्रदेश के समग्र पोर्टल को राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार प्रदान किया

27

मध्य प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक समारोह

कला, साहित्य और पर्यटन को बढावा देने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश शासन के विभिन्न विभागों द्वारा कई समारोह आयोजित किए जाते है. प्रदेश के प्रमुख समारोह इस प्रकार हैं–

खजुराहो नृत्य समारोह

यह समारोह सन् 1976 से प्रतिवर्ष फरवरी-मार्च माह मे आयोजित किया जाता है अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का सात दिवसीय समारोह भारतीय शास्त्रीय नृत्य का सबसे बडा समारोह है इसमें नृत्य की सभी विधाओं जैसे–कथक, कुचिपुडी, ओडिसी, भरतनाट्यम, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम आदि के कलाकार भाग लेते है इसमें विदेशी सैलानियों और नृत्य विशेषज्ञों के अलावा साधारण नागरिक भी बडी सख्या में एकत्रित होकर समारोह का रसास्वादन करते हैं

कालिदास समारोह

महाकवि कालिदास की स्मृति में उज्जैन नगर मे कालिदास समारोह का आयोजन किया जाता है इस समारोह मे संगीत, नृत्य, कला, रूपकर तथा साहित्य विशेषकर सस्कृत के विद्वानों का बडा जमावडा लगता है कालिदास समारोह के दौरान आयोजन स्थल का वातावरण इस सीमा तक सस्कृत और साहित्यमय हो जाता है कि हमें अनायास ही गुप्त काल का स्मरण होने लगता है उल्लेखनीय है कि राजा विक्रमादित्य ने उज्जैन नगरी पर शासन किया था और कालिदास को इन्ही के नौ रत्नों में से एक माना जाता है

तानसेन समारोह

महान् संगीत सम्राट् तानसेन की साधना व समाधि स्थली ग्वालियर मे यह समारोह प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है यह आयोजन मध्य प्रदेश शासन के सस्कृति विभाग द्वारा किया जाता है समारोह में संगीत के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते है जिनमे देशभर के शास्त्रीय सगीत के मूर्धन्य कलाकार शामिल होते हैं इसी समारोह मे सगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्ति को 'तानसेन सम्मान' प्रदान किया जाता है

मालवा उत्सव

मालवा उत्सव मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा 1991 से आयोजित किया जा रहा है इसका आयोजन प्रतिवर्ष गणेश चतुर्थी से त्रयोदशी तक इन्दौर उज्जैन और माडू में क्रमश बारी-बारी से होता है इस आयोजन का उद्देश्य इस अचल की लोक सस्कृति और अद्भुत परम्परा से प्रदेश और दूसरे अचलों और भारत के अन्य राज्यो की लोक परम्परा, कला और सस्कृति का तादात्म्य स्थापित करना है जिससे कला और सस्कृति के विकास के साथ रचनात्मक क्रियाकलापों के लिए प्रतिमान स्थापित किए जा सकें

मध्य प्रदेश के समारोह उत्सव
(एक नजर में)

क्र.	समारोह / उत्सव	आयोजन स्थल
1.	मध्य प्रदेश उत्सव	दिल्ली
2.	भोपाल उत्सव	भोपाल
3.	ध्रुपद समारोह	भोपाल
4	तानसेन समारोह	ग्वालियर
5.	अलाउद्दीन समारोह	मैहर
6.	मालवा उत्सव	इदौर, माडू उज्जैन
7.	कालिदास समारोह	उज्जैन
8	अमीर खाँ समारोह	इदौर
9.	खजुराहो समारोह	खजुराहो
10.	तुलसी उत्सव	चित्रकूट
11.	माखनलाल चतुर्वेदी समारोह	खण्डवा
12.	पद्माकर स्मृति समारोह	सागर
13.	चक्रधर स्मृति समारोह	इन्दौर
14	बालकृष्ण शर्मा नवीन स्मृति समारोह	शाजापुर
15	सुभद्रा कुमारी चौहान स्मृति समारोह	जबलपुर
16.	ओरछा उत्सव	टीकमगढ
17.	निमाड उत्सव	महेश्वर

अलाउद्दीन खाँ समारोह, मैहर

यह समारोह अलाउद्दीन खाँ सगीत अकादमी द्वारा उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की साधना स्थली मैहर में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है. इस समारोह में देशभर से आए ख्यात सगीतकार भाग लेते हैं समारोह में नृत्य व सगीत के कई कार्यक्रम पेश किए जाते हैं

अमीर खाँ समारोह, इंदौर

इदौर की भूमि के महान् संगीत साधक अमीर खाँ की स्मृति में अलाउद्दीन खाँ सगीत अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष इदौर में अमीर खाँ समारोह का आयोजन किया जाता है समारोह में सगीत व गायन से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं

तुलसी उत्सव

तुलसी उत्सव का आयोजन मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी द्वारा धनतेरस से दीपावली तक चित्रकूट के मंदाकिनी तट पर किया जाता है धनतेरस से दीपावली तक असख्य आदिवासी, ग्रामवासी, अपने आराध्य रामजी के साथ दीपावली मनाने के लिए प्रतिवर्ष चित्रकूट पहुँचते है, मदाकिनी में डुबकी लगाते है, दीपदान करते हैं और कामदगिरी की परिक्रमा करते हैं इस परम्परा को एक उत्सव का रूप देने के उद्देश्य से ही तुलसी उत्सव प्रारम्भ किया गया है

मध्य प्रदेश लोक कला समारोह

इस समारोह के अन्तर्गत सभी चयनित लोक कलाकारों को एक मच पर लाकर कार्यक्रम आयोजित किया जाता है इस समारोह हेतु लोक कलाकारों का चयन क्षेत्रीय लोक कला समारोह के माध्यम से किया जाता है

राष्ट्रीय रामलीला समारोह

विभिन्न राज्यों की प्रसिद्ध रामलीला मडलियों की सहभागिता से प्रतिवर्ष यह समारोह आयोजित किया जाता है पूर्व में यह केवल भोपाल मे होता था, जबकि अब प्रदेश के विभिन्न नगरों मे आयोजित किया जाता है

मध्य पर्व

मध्य प्रदेश की स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे मध्य प्रदेश शासन के सस्कृति विभाग द्वारा 1 नवम्बर, 1999 से 'मध्य पर्व' का आयोजन शुरू किया गया है. भोपाल में आयोजित इस कार्यक्रम में पदेश की सस्कृति से लेकर उसकी कला तथा साहित्य जैसे शीर्षकों पर प्रकाश डाला जाता है

मध्य प्रदेश उत्सव

यह उत्सव भारत की राजधानी दिल्ली मे आयोजित होता है. इस उत्सव मे प्रदेश की सस्कृति विकास तथा लोक परम्पराओं की झाँकी प्रदर्शित की जाती है इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य अन्य प्रदेशों की जनता को मध्य प्रदेश राज्य से परिचित कराना है इस उत्सव मे प्रदेश की सास्कृतिक प्रतिभाएँ भाग लेती हैं

अन्य महत्वपूर्ण समारोह

मुक्तिबोध समारोह (भिण्ड), भवभूति समारोह (ग्वालियर), मालवा उत्सव (उज्जैन), राजशेखर समारोह (भोपाल), लोकरग समारोह (भोपाल), प. कुमार गधर्व समारोह (देवास), भोज समारोह (धार), केशव जयती समारोह (ओरछा), अलाउद्दीन खाँ व्याख्यान माला (भोपाल)

28

मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल

मध्य प्रदेश के सास्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक परिवेश ने उसे पर्यटन स्थल के रूप मे अपनी विशिष्ट पहचान दिलवाई है प्रदेश मे फैले हुए वन और उनमे विचरण करते पशु, विविध प्रकार की सस्कृतियाँ, धार्मिक आयोजन, ऐतिहासिक स्थल, प्राकृतिक सुषमा और सुन्दरता सैलानियो का ध्यान सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल अन्य राज्यों के पर्यटक स्थलो से इस अर्थ मे भिन्न हैं कि यहाँ लगभग प्रत्येक पर्यटन स्थल सास्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक और धार्मिक दृष्टि से समान महत्व का है इस प्रकार एक ओर जहाँ पर्यटको के मस्तिष्क को प्राचीन स्मारक अपने अतीत का स्मरण कराते हैं, वहीं नैसर्गिक सौन्दर्य उनके मन को प्रफुल्लित कर देता है और धार्मिक महत्व का ज्ञान होते ही उनका हृदय एव मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है यहाँ सम्भवत कोई भी ऐसा जिला न होगा जहाँ कोई दर्शनीय या पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल न हो

यद्यपि प्रदेश को पर्यटन की दृष्टि से विश्व में वह पहचान नहीं मिल पाई है जो देश के अन्य राज्यों जैसे–राजस्थान, केरल, गोवा आदि को मिली है, किन्तु पिछले एक दशक से शासन ने इस ओर कुछ विशेष प्रयास किए हैं, जिसके परिणाम अब सामने आने लगे हैं वित्तीय साधनों को दृष्टिगत रखते हुए मध्य प्रदेश के पर्यटन मन्त्रालय ने 14 प्रमुख पर्यटन एव धार्मिक स्थानों को विकास के लिए चुना है जो इस प्रकार है–1. खजुराहो 2. कान्हा 3 साँची भोपाल 4. माण्डू-इदौर 5. ग्वालियर-शिवपुरी 6. पचमढी 7. बाँधवगढ 8. अमरकण्टक 9. उज्जैन 10. ओकारेश्वर 11. चित्रकूट 12. सगमरमर की चट्टाने भडाघाट 13. ओरछा 14 बस्तर (अब छत्तीसगढ में)

मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों का निम्नलिखित चार वर्गों मे समूहन किया जा सकता है–

1. एतिहासिक एव पुरातत्वीय महत्व के स्थान
2. प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थान
3. धार्मिक महत्व के स्थान
4. वन्य प्राणी पर्यटन स्थल

मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम

मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों का विकास करने की दृष्टि से वर्ष 1978 में मध्य प्रदश राज्य पर्यटन विकास निगम का गठन किया गया निगम का कार्य पर्यटन स्थलो पर आवासीय, गैर-आवासीय इकाइयों का सचालन पर्यटको को पर्यटन स्थलों की जानकारी सुलभ कराना, पर्यटन स्थलों पर साहित्य का प्रकाशन तथा पर्यटको को परिवहन सुविधा उपलब्ध कराना है निगम के अन्य कार्यों मे शामिल है, आवासीय इकाइयों में आरक्षण, राज्य के बाहर निगम के सेटेलाइट कार्यालयों से पर्यटकों क लिए विभिन्न रुचि, अवधि एव दरों के पैकज टूरो का सचालन पर्यटन स्थलों का अखिल भारतीय स्तर पर प्रचार-प्रसार पर्यटन क्षेत्र से जुडे ट्रेवल एजेंट्स लेखक फोटोग्राफर्स विशिष्ट व्यक्तियों के लिए टूर का आयोजन, प्रदेश के पर्यटन स्थलो की व्यापक मार्केटिग तथा प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अतर्राष्ट्रीय पर्यटन सम्मेलनों तथा ट्रेवल मार्ट आदि में भागीदारी, पर्यटन विभाग की परामर्शदात्री समिति सभागीय समिति तथा शासन की पर्यटन सम्बन्धी समितियों द्वारा लिए गए निर्णयों पर कार्यवाही निगम द्वारा प्रदश के पर्यटन स्थलों पर आवास, खानपान, परिवहन सुविधा आदि उपलब्ध कराई जाती है

नई पर्यटन नीति के तहत् हरिटेज हाटल की योजना प्रदेश में लागू की गई है इस योजना के अन्तर्गत पुराने महल, हवेलियाँ तथा किलों को हाटलों में परिवर्तित किया जाना है इनमे छतरपुर स्थित राजगढ पैलेस को होटल का स्वरूप दिए जाने का निर्णय लिया जा चुका है इसके अलावा पचमढी स्थित शखर सुमन एव डी आई जी बगलो को हेरिटेज होटल में परिवर्तित किया जाएगा

पर्यटन को बढावा देने क लिए निजी निवेशकों की भागीदारी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है निजी निवेशकों को राज्य शासन की ओर से सरकारी जमीन निर्धारित नियमो के तहत् उपलब्ध कराई जाएगी राजस्व विभाग ने खजुराहो छिदवाडा, मदसौर ओरछा बाँधवगढ चित्रकूट में सरकारी जमीन पर्यटन विकास निगम को द दी है इन स्थलों का भूमि आधिपत्य निगम द्वारा ग्रहण किया जा चुका है

पर्यटन स्थल

पचमढ़ी

सतपुडा पर्वत के मनोरम पठार पर अवस्थित पचमढी का प्राकृतिक सौदर्य ऐसा अनोखा है कि वहाँ पहुँचकर कोई भी पर्यटक मत्रमुग्ध-सा रह जाता है ग्रीष्मकाल में जब मैदानी भाग लू के तपते थपेडो से व्याकुल रहते है तब पचमढी मे शीतल समीर के झोंकों का स्पर्श अत्यत आनद-दायी तथा सुखद प्रतीत होता है पर्वतीय जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है

पचमढी का शाब्दिक अर्थ है पाँच कुटियाँ जो अब इन विद्यमान पाँच गुफाओं की सूचक है प्रचलित दत कथा के अनुसार इनमें पाण्डवो ने वनवास काल का एक वर्ष बिताया था प्राचीन वास्तुवेत्ता इन गुफाओ को बौद्धकालीन मानते है जो सम्भवत साँची और अजन्ता के बीच की सयोजक कडियो की प्रतीक है

दर्शनीय स्थल–प्रियदर्शिनी हाडी खोह पचमढी की सबसे प्रभावोत्पादक घाटी है अप्सरा बिहार रजत प्रपात, राजगिरि, लाजी गिरी, आईरीन सरोवर, जलावतरण (डचेस फॉल) जटाशकर, छोटा महादेव महादेव चौरागढ धूपगढ पाडव गुफाएँ गुफा समूह, धुआँधार प्रात नीर (डीरोथी डिप), अस्ताचल, बीनवादक की गुफा (हार्पर केव) तथा सरदार गुफा देखने योग्य हैं

साँची

भोपाल से 46 किमी की दूरी पर साँची स्थित है साँची को पूर्व मे काकणाय 'काकणादबोट', 'बौद्ध-श्रीपर्वत' नामों से जाना जाता था यहाँ स्थित स्मारकों का निर्माण तृतीय शती ईसा पूर्व से बारहवीं शती ईस्वी तक निरन्तर जारी रहा साँची के पुराने स्मारकों के निर्माण का श्रय मौर्य सम्राट् अशोक (तत्कालीन राज्यपाल विदिशा) को है जिन्होंने अपनी विदिशा निवासी रानी की इच्छानुसार साँची की पहाडी पर स्तूप विहार एव एकाश्म स्तम्भ का निर्माण कराया था शुग काल मे साँची एव उसके निकटवर्ती स्थानों पर अनेक स्मारकों का निर्माण हुआ था इसी काल में अशोक के ईंट निर्मित स्तूप को प्रस्तर खण्डों से आच्छादित किया गया था स्तूप 2 और 3 तथा मदिर का निर्माण शुगकाल में ही हुआ था भारत सरकार के पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा साँची के निकटवर्ती स्थानों पर खुदाई म साँची सदृश अन्य स्तूप शृखला का पता चला है साँची के स्तूप विश्व धरोहर में सम्मिलित है

साँची बौद्ध स्तूपो के लिए विश्वविख्यात है तथा यहाँ बड़ी सख्या में बौद्ध धर्मावलम्बी आते है यहाँ तीन स्तूप है पहला स्तूप अन्य दो स्तूपों से बडा है इसलिए इसे मुख्य स्तूप कहते है इसका व्यास 36·5 मीटर है और ऊँचाई 16·4 मीटर है स्तूपों के तोरण द्वार पर जातक कथाएँ व बुद्ध के जीवन की जन्म से मोक्ष प्राप्ति तक की घटनाएँ अकित है नव विहार में बुद्ध के शिष्य द्वय सारी पुत्र एव महा मोगलायन के अस्थि अवशेष काँच की मजूषा में रखे हैं जिन्हें प्रतिवर्ष बुद्ध जयन्ती के अवसर पर देखा जा सकता है इस प्रकार साँची धार्मिक केन्द्र के साथ-साथ ऐतिहासिक केन्द्र भी है

दर्शनीय स्थल–बौद्ध विहार, अशोक स्तभ, महापात्र, गुप्तकालीन मदिर तथा सग्रहालय यहाँ के अन्य दर्शनीय स्थल है

खजुराहो

पत्थरो पर तराशी गई सुदर कला की नगरी खजुराहो मध्य प्रदेश ही नहीं, अपितु हिन्दू स्थापत्य एव शिल्पकला की दृष्टि से भारत के प्रमुख पर्यटन केन्द्रों में तीसरा स्थान रखती है ऐसा कहा जाता है कि चन्देल राजाओ के समय मुख्य द्वार पर सोने के झिलमिलाते खजूर आकृति के दो तोरण द्वार थे इसी आधार पर इसका नाम 'खर्जूरवाहक' पडा और कालान्तर में खजुराहो' नाम से प्रसिद्ध हुआ यहाँ के विश्व प्रसिद्ध मदिरों का निर्माण चन्देल राजाओं ने 950–1050 ईस्वी के मध्य करवाया था इन मदिरो की सख्या 85 थी, लेकिन अब इनकी सख्या कम हो गई है ये मदिर मध्ययुगीन भारत की शिल्प एव वास्तुकला के सर्वोत्कृष्ट नमूने हैं यहाँ दूर-दूर तक फैले मदिरो की दीवारो पर देवताओं तथा मानव आकृतियों का अकन इतना भव्य एव कलात्मक हुआ है कि दर्शक देखकर मत्रमुग्ध रह जाते हैं यहाँ की मूर्तियों मे सजीव मैथुन, काम और रति-क्रीडाएँ सासारिक निष्कपटता तथा स्वच्छन्द एव उन्मुक्त प्रेम का प्रतीक है, जोकि शिल्पी की कला का वास्तविक चित्रण है खजुराहो के मन्दिरों में विश्व धरोहर के रूप में दर्ज किया गया है

दर्शनीय स्थल–पश्चिम समूह के मदिर–कदरिया महादेव चौसठ योगिनी, चित्रगुप्त मदिर, विश्वनाथ मदिर, लक्ष्मण मदिर तथा मातगेश्वर मदिर पूर्वी समूह–पार्श्वनाथ मदिर, घटाई मदिर, आदिनाथ मदिर दक्षिण समूह–दूल्हादेव मदिर तथा चतुर्भुज मदिर

इसके अलावा–बेनी सागर बाँध तथा स्नेह प्रपात भी दर्शनीय है

मांडू (मांडव)

इन्दौर से 100 किमी दूर विंध्याचल पहाडियों में स्थित माण्डू शताब्दियो से अनेक हिन्दू और मुस्लिम शासकों के अधीन रहा है प्रकृति की मनोहारी छटा ने माडू के सौदर्य को निखार दिया है सैकडों फुट नीचे नर्मदा का विशाल पाट फैला है जिसकी सोधी गध समूचे परिवेश को अति रोमाचक बना देती है यहाँ निर्मित मडपो स्तभ युक्त कक्षो, गुम्बदों और बुर्जों से अतीतकाल की अनेक स्मृतियाँ जुडी है माडू को बाज बहादुर और रानी रूपमती की प्रणय गाथा से भी जोडा गया है समुद्र से 2000 फुट की

ऊँचाई पर विध्य पर्वतमाला की गोद में स्थित इस सुरक्षित स्थल को मालवा के परमार राजाओ ने अपनी राजधानी बनाया था यहाँ का प्रत्येक स्थापत्य भारतीय वास्तुकला का भव्य नमूना है

दर्शनीय स्थल—माडू का परकोटा—इसमे 12 दरवाजे हैं जो रामपोल, तारापुर दरवाजा जहाँगीर दरवाजा, दिल्ली दरवाजा आदि नामो से जाने जाते हैं यह निर्माण अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध है इसके अतिरिक्त जहाज महल हिडोला महल, होशगशाह का मकबरा, जामा मस्जिद, अशर्फी महल, रेवा कुण्ड, रूपमती मडप, नीलकठ, नीलकठ महल हाथी महल तथा लोहानी गुफाएँ आदि दर्शनीय हैं

उज्जैन

पुण्य-सलिला क्षिप्रा के पूर्वी तट पर स्थित भारत की महाभागा नगरी उज्जयिनी को भारत की सास्कृतिक-काया का मणि-चक्र माना गया है पुराणो मे उज्जयिनी, अवन्तिका, अमरावती प्रतिकल्पा, कुमुद्धती आदि नामो से इसकी महिमा गायी गई है महाकवि कालिदास द्वारा वर्णित "श्री विशाला विशालौ एव पुराणो मे वर्णित सार्वभौम" नगरी यही है उज्जैन का सिहस्थ पर्व प्रत्येक बारह वर्षों के अतराल से कुम्भा पर्व रूपी दुर्लभ अवसर पर मनाया जाता है श्रीकृष्ण-सुदामा ने यहीं सदीपनि आश्रम में शिक्षा प्राप्त की थी

दर्शनीय स्थल—यहाँ महाकाल मदिर परिसर, मगलनाथ, काल भैरव, विक्रान्त भैरव, हरसिद्धि चौसठ-योगिनी, गढकालिका, नगर कोट की रानी, गोपाल मदिर, अनत नारायण मदिर, अकपात, त्रिवेणी सगम पर नवग्रह मदिर, चिन्तामण-गणेश, अवन्ति-पार्श्वनाथ मदिर, ख्वाजा शकेब की मस्जिद, बोहरों का रोजा, जामा मस्जिद, शाही मस्जिद, वैश्य टेकरी का स्तूप-स्थल, कालियादह महल, ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर, पीर-मत्स्येन्द्र की समाधि, जय-सिहपुरा, दिगम्बर जैन सग्रहालय, वाकणकर स्मृति जिला पुरातत्व सग्रहालय, भारतीय कला भवन, दुर्गादास राठौर की छत्री आदि दर्शनीय स्थल हैं

भेड़ाघाट

भेडाघाट (जबलपुर) में सगमरमरी चट्टानो पर तेज प्रवाह से गिरता नर्मदा नदी का जल पर्यटको को आकर्षित करता है जबलपुर से 21 किमी दूर सगमरमर की ऊँची दूधिया चट्टानो के बीच बहती हुई नर्मदा नदी अति सुदर दृश्य उपस्थित करती है इस स्थल पर पर्यटकों के लिए नौका विहार की सुविधा है

दर्शनीय स्थल

धुआँधार और बन्दर कूदनी, पूर्णिमा रात्रि का नौका विहार आदि प्रमुख आकर्षण है बन्दर कूदनी वह स्थान है जहाँ धवल सगमरमर की चट्टाने प्रहरी सदृश दिखाई देती हैं और उनके मध्य नर्मदा की निर्मल जलधारा बहती है भेडाघाट के समीप प्रसिद्ध चौसठ योगिनी का गोल तथा भव्य मदिर है जिसमें 81 मूर्तियाँ हैं गोल में गौरी शकर का सुविख्यात मदिर है जिसमे शिव-पार्वती की नन्दी पर आसीन प्राचीन सजीव मूर्ति विद्यमान है

चित्रकूट

प्राचीनकाल मे तपस्या और शाति का स्थल चित्रकूट ब्रह्मा, विष्णु महेश के बाल अवतार का स्थान माना जाता है वनवास के समय भगवान राम सीता लक्ष्मण महर्षि अत्रि तथा सती अनुसूया के अतिथि बनकर यहाँ रहे थे भक्त शिरोमणि तुलसीदास जी आत्मिक शाति की खोज में यहाँ आये थे, जबकि जहाँगीर के क्रोध से पीडित अकबर के नौ रत्नों में से एक महाकवि अब्दुल रहीम खानखाना ने यहाँ शरण ली थी प्राकृतिक सुषमा के बीच चित्रकूट में पर्यटक मानसिक शाति प्राप्त करते हैं

दर्शनीय स्थल—रामघाट में मदाकिनी नदी के तट पर स्थित घाटों की कतारें हैं कामदगिरि जानकी कुण्ड सती अनुसूया, स्फटिक शिला गुप्त गोदावरी हनुमान धारा भरत कूप दर्शनीय हैं

अमरकंटक

भारत की प्रमुख सात नदियो में से अनुपम नर्मदा का उद्गम स्थल अमरकण्टक प्रसिद्ध तीर्थ और नयनाभिराम पर्यटन स्थल है मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के पुष्पराजगढ तहसील के दक्षिण-पूर्वी भाग में मैकाले पर्वत-मालाओं में स्थित अमरकण्टक भारत के पवित्र स्थलों में गिना जाता है नर्मदा और सोन नदियों का यह उद्गम आदिकाल से ऋषि-मुनियो की तपोभूमि रहा है नर्मदा का उद्गम यहाँ एक कुण्ड से तथा सोनभद्र का पर्वत शिखर से है

दर्शनीय स्थल—अमरकण्टक के मन्दिर जिनकी सख्या 24 है कपिलधारा जलप्रपात, सोन मुग माई की बगिया कबीर चौरा, भृगु कमण्डल और पुष्कर बाँध देखने योग्य है घाटी मे बसे अमरकण्टक ग्राम में भव्य शिखरो वाले मदिर और कई धर्मशालाएँ हैं

ग्वालियर

ग्वालियर राज्य की यह पुरातन राजधानी आज भी अपने प्राचीन वैभव की कहानी कह रही है ग्वालियर शहर सदियो तक अनेक राजवशों का आश्रय स्थल रहा और प्रत्येक के राज्यकाल मे इसमे नए आयाम जुडे यहाँ के योद्धाओ, राजाओ कवियो सगीतकारो और साधु सतो ने अपने योगदान से इस नगर को अधिकाधिक समृद्धि और सम्पन्नता प्रदान की और यह नगर सारे देश में विख्यात हुआ विशाल ग्वालियर दुर्ग का निर्माण 1500 वर्ष पूर्व राजा सूरज सेन ने प्रसिद्ध ऋषि गालव की स्मृति में करवाया था इस किले को 'पूर्व का जिब्राल्टर' तथा भारत के समस्त दुर्गों के कण्ठहार में मण्डित मणि भी कहा जाता है मुगल बादशाह जहाँगीर ने छठवें सिख गुरु हरगोविन्दसिंह को इसी दुर्ग में बुलाया था दुर्ग पर निर्मित विशाल बन्दी छोड गुरुद्वारा इसी का प्रतीक है मध्यकाल के इतिहास में इस दुर्ग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है

दर्शनीय स्थल—ग्वालियर दुर्ग बलुए पत्थर की सीधी चट्टान पर खड़ा हुआ समूचे शहर की दृष्टि से ऊँचे आसन पर विराजमान है गूजरी महल, राजा मानसिह तोमर ने गूजर रानी मृगनयनी के प्रेम में बनवाया मान मंदिर सूरजकुण्ड, तेली का मंदिर, सास-बहू का मंदिर, जयविलास महल, रानी लक्ष्मीबाई की अश्वारोही मूर्ति संग्रहालय तानसेन की समाधि गौस मोहम्मद का मकबरा, रानी लक्ष्मीबाई की समाधि, कला वीथिका, नगरपालिका संग्रहालय, चिडियाघर, गुरुद्वारा, सूर्य मंदिर आदि दर्शनीय स्थल हैं प्रति वर्ष यहाँ मेला लगता है

शिवपुरी

ग्वालियर रियासत के सिंधिया राजाओ की ग्रीष्म-कालीन राजधानी रह चुकी शिवपुरी आज भी अपने सुन्दर राजप्रासादो तथा संगमरमर से निर्मित अलंकृत छतरियों के द्वारा विगत राजसी विरासत की याद दिलाती है

दुर्लभ वन्य प्राणियो और पक्षियों के लिए यहाँ के आकर्षक अभयारण्य ने शिवपुरी के शानदार अतीत को अत्यंत स्पंदनशील बना दिया है

दर्शनीय स्थल—माधव राष्ट्रीय उद्यान 156 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है यह उद्यान विभिन्न प्रकार की वनस्पति एव विविध प्राणियों से समृद्ध है राष्ट्रीय उद्यान के अतिरिक्त सिंधिया राजवश की कलात्मक छतरियाँ गुलाबी रंग का माधव विलास प्रासाद, अभयारण्य के बीच उसके सर्वोच्च बिन्दु पर स्थित कंगूरेदार जॉर्ज कैसल सख्या सागर बोट क्लब, भदैया कुण्ड तथा वीर तात्या टोपे की विशाल मूर्ति यहाँ के अन्य दर्शनीय स्थल हैं

ओंकारेश्वर

'ऊँ' की पवित्र आकृति स्वरूप यह द्वीप सदृश मनोरम स्थल अनतकाल से तीर्थ के रूप मे मान्य है यहाँ नर्मदा-कावेरी के संगम पर ओंकार माधाता के मंदिर में स्थापित ज्योतिर्लिंग पुराण प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगो में से एक है

दर्शनीय स्थल—ओंकार माधाता, सिद्धनाथ मंदिर चौबीस अवतार, सप्तमातृ का मंदिर तथा काजल रानी गुफा आदि यहाँ है

महेश्वर

इतिहास प्रसिद्ध सम्राट कार्तवीर्य अर्जुन की प्राचीन राजधानी महिष्मति ही आधुनिक महेश्वर है इसका उल्लेख रामायण तथा महाभारत मे भी मिलता है रानी अहिल्याबाई होल्कर ने यहाँ की महिमा को चार-चाँद लगाए महेश्वर के मंदिर तथा दुर्ग परिसर के सौंदर्य मे अपार आकर्षण विद्यमान है

दर्शनीय स्थल- महेश्वर मे सम्पूर्ण नर्मदा तट और अहिल्या घाट के करीब तीन किमी दूर सहस्त्रधारा तक नर्मदा मे नौका विहार में एक पावन अनुभव होता है अहिल्या संग्रहालय, राजेश्वरी मंदिर, पेशवाघाट, होल्कर परिवार की छतरियाँ, राजगद्दी और रजवाडा घाट तथा मंदिर दर्शनीय है महेश्वर की साडियाँ अत्यन्त प्रसिद्ध है

भोपाल

ग्यारहवीं सदी के भोजपाल तथा तत्पश्चात् भूपाल नामक इस नगर को परमारवशी राजा भोज ने बसाया था मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल एक बहुरंगी तस्वीर पेश करती है एक ओर पुराना शहर है, जहाँ लोगो की चहल-पहल उसके बीच बाजार है, पुरानी सुन्दर मस्जिदे तथा महल हैं दूसरी तरफ नया शहर बसा हुआ है जिसके सुन्दर पार्क और हरे-भरे वृक्ष गहरी राहत देते है भोपाल पाँच पहाडियों पर बसा है तथा इसमें दो झीलें है यहाँ की जलवायु सम है

दर्शनीय स्थल—ताज-उल-मसजिद जामा मस्जिद लक्ष्मीनारायण मंदिर, बिड़ला संग्रहालय, शौकत महल और सदर मंजिल, भारत भवन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, राजकीय संग्रहालय गांधी भवन वन विहार चौक बडी और छोटी झील मछली घर इत्यादि दर्शनीय हैं

बाँधवगढ़

शहडोल जिले में विन्ध्य पर्वतमाला की दूरस्थ पहाडियो में 448 वर्ग किमी क्षेत्र मे फैला छोटा किन्तु सघन राष्ट्रीय उद्यान है सफेद शेर की मातृभूमि बाँधवगढ में बाघों की सघनता पूरे भारत की तुलना मे सबसे अधिक है इस भू-भाग की घाटियो और ढलानों में साल-वन फैले हुए है जो पहाडियों तथा उद्यान के दक्षिण और पश्चिम में शुष्क क्षेत्र होने के कारण पतझरीय वनों के रूप मे बदलते जाते है यहाँ बाँस सब जगह पाया जाता है

दर्शनीय स्थल—यहाँ लगभग दो हजार वर्ष पूर्व निर्मित दुर्ग अनेक राजवशो की निशानी है

कान्हा

साल और बाँसो से भरा कान्हा का जंगल झूमते-लहराते घास के मैदानो और टेढी-मेढी बहने वाली नदियो की निसर्ग भूमि है सन् 1955 में एक विशेष कानून के द्वारा कान्हा राष्ट्रीय उद्यान अस्तित्व मे आया यह पशु-पक्षियो के लिए एक निर्भय आश्रय स्थल बन गया है

दर्शनीय स्थल—बमनीदादर स्तनपायी प्राणियो की जातियाँ तथा कान्हा का पशु-पक्षी ससार दर्शनीय है

ओरछा

ओरछा राज्य की स्थापना 16वीं सदी मे बुन्देला राजपूत रुद्रप्रताप ने की थी ओरछा के प्रांगण में अनेक छोटे मकबरे और स्मारक है इनमे से प्रत्येक का रोचक इतिहास है मध्यकाल की यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी है 16वीं शताब्दी में राजा वीरसिह जूदेव के समय ओरछा ने भारी ख्याति प्राप्त की थी क्रांतिवीर चन्द्रशेखर आजाद की साधना स्थली के नाते भी ओरछा विख्यात है

दर्शनीय स्थल जहाँगीर महल, राजमहल, राय प्रवीण महल रामराजा मंदिर, चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, फूलबाग, दीवाल हरदौल महल सुन्दर महल छतरियाँ शहीद स्मारक आदि दर्शनीय स्थल है

भोजपुर

जनश्रुतियो और किवदन्तियो के रूप मे अमरता प्राप्त धार के महान् सम्राट राजा भोज ने इसकी स्थापना की थी यहाँ का भव्य शिवमदिर मध्य भारत का सोमनाथ कहलाता है

दर्शनीय स्थल भोपाल से 28 किमी दूर भोजपुर की प्रसिद्धि भव्य शिवमदिर और विशाल बाँध के कारण है यह मदिर भोजेश्वर मदिर के रूप में माना जाता है जैन मदिर भी दर्शनीय है

भीम बेठका

विन्ध्य पर्वत शृखलाओ की उत्तरी छोर से घिरा हुआ भीम बेठका भोपाल से 40 किमी दूर दक्षिण दिशा की ओर स्थित है भीम बेठका समूह मानव इतिहास का एक बहुमूल्य इतिवृत्त और समृद्ध पुरातात्विक सकुल माना जाता है

भीम बेठका को विश्व धरोहर समिति ने विश्व धरोहर के लिए चुना है यह प्रदेश का तीसरा स्थान है जिसका चयन विश्व धरोहर के लिए किया गया है इसके पूर्व खजुराहो के मन्दिर और साँची के स्तूप भी विश्व धरोहर के रूप में शामिल किए जा चुके है

दर्शनीय स्थल यहाँ 500 से अधिक गुफाओ मे प्रागैतिहासिक गुफावासियो की दैनदिन जीवनचर्या के मनोहारी चित्र दर्शाए गए है

विदिशा

विदिशा, बेसनगर तथा भेलसा के नाम से प्रसिद्ध यह क्षेत्र प्राचीन इतिहास की समृद्ध धरोहर के रूप म साँची से केवल 10 किमी दूर बेतवा और बेस नदियो के बीच अवस्थित है विदिशा नगर का प्राचीन नाम महामालिस्तान या मेवासा था यह क्षेत्र शुग नाग, सातवाहन तथा गुप्त सम्राटो के अधीन रहकर अत्यत समृद्धि को प्राप्त हुआ था सम्राट बनने के पूर्व अशोक यहाँ के राज्यपाल रहे थे विदिशा का उल्लेख महाकवि कालिदास की महान् कृति मेघदूत में मिलता है विदिशा बौद्ध और जैन सम्प्रदायों का भी एक शक्तिशाली केन्द रहा है

दर्शनीय स्थल लोहागी शिला गुम्बज, बीजा मडल आदि है हेलियोदारस का स्तभ 'खम्बा बाबा' हेलियोदोरस द्वारा वासुदव के सम्मान मे स्थापित गरुड स्तभ है

ग्यारसपुर

साची से 41 किमी दूर स्थित यह स्थान मध्ययुग का महत्वपूर्ण स्थान है स्तम्भो पर निर्मित दो मदिरो के भग्नावशेषो की नक्काशी तत्कालीन कला की मुँह बोलती तस्वीर है वज्र भाद्र और मालादेवी के नक्काशीदार स्तभ दर्शनीय है

उदयपुर

यह स्थान भोपाल से विदिशा तथा गजबासौदा होते हुए 90 किमी की दूरी पर है यहाँ का विशाल कठेश्वर मदिर परमार कालीन स्थापत्य कला का बेजोड उदाहरण है बीजा मडल, शाही मस्जिद महल, पिसनहारी का मदिर आदि अन्य दर्शनीय स्थल है

प्राचीन गुफाएँ

(1) **उदयगिरि की गुफाएँ**--मध्य प्रदश के विदिशा जिले मे उदयगिरि की बीस गुफाएँ है इन्हे उदयगिरि की पहाडियो की पूर्वी ढाल को खोदकर तराशा गया है इन गुफाओ में गुफा न 1-20 जैन धर्म से सम्बद्ध है गुफा न 5 मे वराह की विशाल प्रतिमा है जो पुराणों मे वर्णित पृथ्वी के उद्धार की कहानी पर आधारित है उदयगिरि की गुफाएँ ईसा के बाद चौथी और पाँचवी शताब्दी की है जो गुप्त वश की अद्भुत निर्माण कला का सुन्दर उदाहरण है

(2) **भर्तृहरि गुफाएँ** -उज्जैन से 12 किलोमीटर कालिया देह महल की ओर भर्तृहरि गुफाएँ हैं इन गुफाओ की कुल सख्या 9 है जिनमें 4 खण्डित हो चुकी है इन गुफाओ का निर्माण राजा भर्तृहरि की स्मृति में परमार वश के राजाओ ने ग्यारहवी शताब्दी मे कराया था गुफाओ मे सभी चित्र रगीन है जो प्राचीन उज्जैन नगर की सभ्यता और सस्कृति के प्रतीक है

(3) **बाघ की गुफाएँ**--माण्डू से 125 किलोमीटर धार से 97 किलोमीटर और इदौर से 154 किलोमीटर दूर स्थित बाघ की गुफाएँ विन्धयाचल की पहाडियों मे स्थित है बाघ की गुफाएँ अजन्ता की गुफाओ के समान कलापूर्ण भित्ति-चित्रो से युक्त है इन चित्रो को पाँचवी और सातवी शताब्दी के मध्य चित्रित किया गया होगा इन्हे बौद्ध चित्रो के प्राण कहा जाता है

इन गुफाओ का निर्माण ऊँची ऊँची पहाडियों को काटकर किया गया है ये पहाडियाँ बाघ नदी के किनारे स्थित है प्रारम्भ मे यहाँ नौ गुफाएँ थी लेकिन अब केवल पाँच रह गई है ये गुफाएँ बौद्ध विहारो के रूप मे ईसा की पाँचवी सदी मे निर्मित की गई थी

केन्दीय पुरातत्व सरक्षण विभाग इन गुफाओ के भित्ति चित्रो को सुरक्षित रखने के लिए निरतर प्रयत्नशील है मध्य प्रदेश सरकार ने भी इनकी सुरक्षा पर काफी धन व्यय किया है

ऐतिहासिक दुर्ग

ग्वालियर दुर्ग राजा सूरज सेन द्वारा बनवाया गया ग्वालियर का किला सम्भवत सर्वाधिक महत्व का है यह इतना विशाल व सुदृढ दुर्ग है कि इसे भारत के किलो का सिरमौर (जिब्राल्टर) कहा जाता है

[illegible] इस दुर्ग का निर्माण 525 ई में राजा सूरज [illegible] करवाया था यह दुर्ग उत्तर भारत के इतिहास में [illegible] महत्व रखता है ग्वालियर दुर्ग में उन राजवशों की [illegible] सुरक्षित है जिन्होंने यहाँ राज्य किया और समय के [illegible] सम गए सन् 1857 के स्वतन्त्रता सग्राम मे [illegible] दुर्ग का महत्वपूर्ण योगदान है

ग्वालियर के विशाल पहाडी दुर्ग मे पाँच द्वार है [illegible] क्रमश आलमगीरी दरवाजा, हिन्दौला दरवाजा, [illegible] महल दरवाजा, भर्तृहरि दरवाजा और हाथी पौड [illegible] कहते है इस दुर्ग मे बादल महल चतुर्भुज मदिर [illegible] महल सास-बहू का मदिर विष्णु मदिर तेली का [illegible] आदि दर्शनीय स्थल है दुर्ग के मान मदिर और [illegible] महल प्रसिद्ध राजा मानसिह तोमर ने सन् 1486 से [illegible] के मध्य बनवाए थे

दुर्ग की तलहटी में पद्रहवी शताब्दी मे राजा डोगर [illegible] के शासनकाल मे बनवाए गए जैन मदिर हैं इन [illegible] में सर्वाधिक ऊँची (17 मीटर) जैन तीर्थंकर [illegible] की प्रतिमा है यह एलोरा की भाँति पत्थरों को [illegible] कर बनाई गई है

धार का किला—मध्य पदेश के पश्चिमी भाग मे धार [illegible] है जहाँ धार शहर मे एक छोटी पहाडी पर यह [illegible] स्थित था इसका पुनर्निर्माण सन् 1344 ई मे [illegible] मोहम्मद तुगलक ने अपनी विजय के दौरान [illegible] जाते समय यहाँ ठहरने के उद्देश्य से कराया था [illegible] सम्राट शाहजहाँ के बडे बेटे दाराशिकोह ने भी [illegible] के सघ युद्ध के दौरान यहाँ आश्रय लिया था [illegible] 1732 ई म मराठा पवार नरेशो का इस किले पर [illegible] हो गया था

इस किले में देवी कालका जी का मदिर व अब्दुल्ला [illegible] का मकबरा है इस किले का सर्वाधिक प्राचीन स्थल [illegible] महल जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे है किले के अदर [illegible] बाबरनामा का जन्म स्थान है दुर्ग के निकट हजरत [illegible] की कब्र है

असीरगढ़ किला—मध्य रेलवे की इटारसी-मुसावल [illegible] पर बुरहानपुर से 20 किलोमीटर दूर महेश्वर नगर [illegible] जाकर असीरगढ का छोटा-सा कस्बा है यहाँ एक [illegible] पर विशाल किला निर्मित है इस किले का निर्माण [illegible] नाम के एक अहीर राजा ने करवाया था इसकी [illegible] लगभग 250 मीटर ऊँची है किल में आशादेवी की प्रतिमा [illegible] है

[illegible] ऐतिहासिक एव पुरातत्वीय महत्व का असीरगढ का [illegible] स्थान था जिस किसी समय गुजरात महाराष्ट्र और [illegible] की उत्तरी आक्रमणों से बचाने के लिए दीवार समझा [illegible] था किले के नीचे 10वी शताब्दी में निर्मित एक [illegible] शैली का शिव मदिर है

गिन्नौरगढ भोपाल से 60 किलोमीटर दूर गिन्नौर है [illegible] मीटर लम्बी और 50 मीटर चौडी पहाडी पर [illegible] बना है इस गिन्नौरगढ कहते हैं इसका निर्माण तेरहवी शताब्दी में महाराजा उदयवर्द्धन ने करवाया था इस दुर्ग का अन्तिम गोड शासक कमलापति था किले के निकटवर्ती क्षेत्र मे शुक अर्थात् तोतो का स्थल है यहाँ के तोते सम्पूर्ण भारत में प्रख्यात है इस दुर्ग मे सभी महल विशेष दर्शनीय है किले के तीन भाग है मध्य में कमरगढ मनाईगढ भागों का निर्माण अदिल खाँ फारुखी ने कराया

चंदेरी का किला—चदेरी बीना-कोटा रेल मार्ग पर मुगावली स्टेशन से 38 किलोमीटर और ललितपुर से 34 किलोमीटर दूर स्थित है बेतवा नदी के किनारे स्थित चदेरी के किले का निर्माण प्रतिहार नरेश कीर्तिपाल ने 11वीं शताब्दी मे कराया था यह दुर्ग सुदृढ है जो 70 मीटर ऊँची पहाडी पर बना है इस किले की दीवारों का निर्माण चदेरी के मुस्लिम शासको ने कराया था

चदेरी के दुर्ग का चार मजिला महल काफी पुराना है जो अब भग्नावस्था मे है इस दुर्ग में जौहर कुण्ड, हवा महल नौखण्डा महल खूनी दरवाजा आदि दर्शनीय स्थल हैं बाबर के आक्रमण के समय आठ सौ राजपूत नारियाँ प्रज्ज्वलित अग्निकुण्ड मे जलकर भस्म हो गई थी

बाँधवगढ़—यह दक्षिण-पूर्व में कटनी-बिलासपुर मार्ग पर उमरिया स्टेशन से 30 किलोमीटर दूर है यह अभेद्य सुदृढ और भव्य दुर्ग विध्याचल पर्वत के बीहड जगलों मे ऊँचाई पर स्थित है 14वी शताब्दी मे इस किले का निर्माण किया गया था सोलहवी-सत्रहवी शताब्दी मे बघेलखण्ड के राजा विक्रमादित्य ने अपने शासनकाल मे अपनी राजधानी बाँधोगढ (बाँधवगढ) से हटाकर रीवा कर ली थी सन् 1597 मे अकबर बादशाह ने अपने एक सरदार पालदास को बडी सेना देकर दुर्ग-विजय को भेजा था यह दुर्ग आठ मास पाँच दिन की मजबूत घेराबदी के पश्चात् जीता जा सका था किला भीतर से बहुत विशाल ऊबड-खाबड एव भयावह लगता है इसकी अनेक इमारतें ऐतिहासिक महत्व की हैं

रायसेन का दुर्ग—यह भोपाल से 46 किलोमीटर दूर रायसेन मे अवस्थित है यहाँ एक पहाडी के शिखर पर रायसेन का दुर्ग सोलहवीं शताब्दी मे राजा राजवसती ने बनवाया था सैनिक दृष्टि से यह दुर्ग अति महत्वपूर्ण है इसी कारण मुस्लिम शासको ने इसे अपना मुख्यालय बनाकर अनेक वर्षों तक मालवा पर राज्य किया था इस पर मराठों ने भी कब्जा किया इस दुर्ग मे राजमहल बादल महल राजारोहित महल और इत्रदार महल हैं दुर्ग मे 40 कुएँ और चार तालाब हैं इसके अतर्गत एक बडा तालाब है तालाब के किनारे लक्ष्मी नारायण का मदिर है शिखर से लगभग 400 मीटर नीचे शेषगाही नामक तालाब है जो एक प्रसिद्ध एव चमत्कारी सत योगी के नाम पर बना था तालाब के किनारे उनकी समाधि और क्षीर सागर कुण्ड है दुर्ग मे तोप शस्त्रास्त्र और गोला बारूद रखने के लिए विशाल तहखाने है

अजयगढ़—पन्ना नगर से 35 किलोमीटर दूर अजयगढ एक छोटा नगर है यहाँ एक विशाल सुदृढ एव दुर्गम

किला है जिसका निर्माण राजा अजयपाल ने कराया था अठारहवीं शताब्दी मे पन्ना रियासत के राजाओ ने इस किले का पुन निर्माण कराया इस किले मे राजा अमन का महल विशेष दर्शनीय स्थल है इस महल मे बारीक पत्थरों की पच्चीकारी का सुन्दर नमूना है

ओरछा दुर्ग–मानिकपुर-झाँसी रेलमार्ग पर बेतवा नदी पर झाँसी से अगला स्टेशन ओरछा है जहाँ विशाल एव सुदृढ दुर्ग बुदेला वश के राजाओ के शौर्य पराक्रम और वीरतापूर्ण गौरव गाथाओ का यशोगान आज भी कर रहा है दुर्ग के अदर अनेक प्राचीन मदिर हैं जिनमें चतुर्भुज मदिर, राम मदिर तथा लक्ष्मीनारायण मदिर प्रसिद्ध हैं मदिरो का निर्माण राजा वीर सिह ने सत्रहवी शताब्दी मे कराया था

यही बेतवा नदी के द्वीप पर राजा वीर सिह जूदेव द्वारा बनवाया गया विशाल महल स्थित है राज मदिर और जहाँगीर महल के पुराने खण्डहर अनुपम कला के उदाहरण हैं

मण्डला का दुर्ग–जबलपुर से 96 किलोमीटर दूर महिष्मति नामक प्राचीन नगर है जिसे मण्डला कहते हैं यहाँ बजर व नर्मदा के सगम पर एक दुर्ग विद्यमान है जिसे मण्डला का दुर्ग कहते हैं नर्मदा नदी इसे तीन ओर से घेरे है जबकि चौथी ओर गहरी खाई बनी है पहले इस दुर्ग के चारों ओर पानी था दुर्ग के नीचे कभी एक सुरग थी जो मदन महल से जुडती थी यह दुर्ग गोंड राजाओं की राजधानी और शक्ति का प्रमुख केन्द्र रहा है, जिसका निर्माण प्रख्यात गोंड नरश राजा नरेन्द्र शाह ने अनेक वर्षों में कराया था

मण्डला के किले म राज-राजेश्वरी की स्थापना की गई थी विजयशाह की मृत्यु के बाद आपसी झगडों के कारण मराठा ने हमला कर सन 1789 में गोंड वश के शासक का अत कर दिया दमोह के निकट वन मे स्थित सिंगोरगढ भी प्रसिद्ध तथा सुदृढ वन्य दुर्ग है अकबर के आक्रमण क पूर्व तक यही रानी दुर्गावती की राजधानी था

मंदसौर का किला–मध्य प्रदश के उत्तरी पश्चिमी भाग में मालवा की हरी-भरी भूमि में शिवना नदी के किनारे मदसौर स्थित है इस प्राचीन काल में दशपुर कहते थे इस नगर के पूर्वी भाग म 14वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खलजी ने एक किले का निर्माण कराया था जिसे मदसौर का किला कहत हैं यह बहुत से स्थानों से टूट-फूट चुका है दुर्ग के किले में चुन गए अनेक पत्थरो पर हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनी हैं किल क बारह दरवाजे हैं जिनम भाई दरवाजा खानपुरा दरवाजा, महादेव घाट दरवाजा तथा मंडी दरवाजा प्रमुख हैं किले में पाँचवी शताब्दी की शिवमूर्ति तारण द्वार स्तम्भ आदि हैं यहाँ 500 वर्ष पुराना तापेश्वर महादेव का मदिर भी विद्यमान है

नरवर का किला शिवपुरी से उत्तर मे 19 किलोमीटर दूर सतनवाडा स्टेशन से 25 किलोमीटर उत्तर मे नरवर स्थित है यहाँ एक सुदृढ पहाडी दुर्ग है जो राजा नल की राजधानी थी राजा नल और दमयती की प्रणय कथाएँ विख्यात हैं यह ग्वालियर दुर्ग के समान ही महत्वपूर्ण है यह कछवाहो, तोमरो और अन्य राजपूत राजघरानों से सम्बद्ध रहा है

दतिया का किला–बुदेला नरेश वीर सिह देव ने इसका निर्माण करवाया था तथा नरेश भवानी सिह ने इसके द्वार पर 'जस्टिस इज द गेम ऑफ क्राउन अकित करवाया था

राजमहल

गूजरी महल–ग्वालियर के प्रख्यात राजा मानसिह तोमर ने सन् 1486–1516 के मध्य अपनी प्रेमिका मृगनयनी जो गूजर जाति की थी, के लिए ग्वालियर के दुर्ग मे एक कलात्मक एव सुदर महल बनवाया था जिसे गूजरी महल कहते हैं

जय विलास महल–ग्वालियर नगर में जीवाजी राव सिंधिया का निवास जय विलास राजमहल कहलाता है यहाँ का सग्रहालय देखने योग्य है यह महल पाश्चात्य नमूने पर बना है

मोती महल (ग्वालियर)–ग्वालियर नगर में ग्वालियर के राजा जीवाजी राव का सुन्दर एव कलात्मक राजमहल था, जहाँ कुछ दिन पूर्व तक मध्य प्रदेश का ए जी ऑफिस था

मोती महल (मंडला)–मडला से लगभग 16 किलोमीटर दूर रामनगर के सघन जगल मे 25 मीटर की ऊँचाई पर 65 मीटर लम्बा और 61 मीटर चौडा आयताकार महल बना है, जिसे मोती महल कहते हैं यह महल गोंड-नरेश हृदय शाह ने बनवाया था यह तीन मंजिला है

बघेलिन महल–मोती महल, मडला के पूर्व मे तीन किलोमीटर दूर नर्मदा के किनारे एक रमणीक स्थल पर बघेलिन महल बना है यह पर्यटको का मुख्य केन्द्र है

मदन महल–मदन महल जबलपुर नगर मे पहाडी पर स्थित है इसे गोंड राजा मदन शाह ने सन् 1200 ई में बनवाया था यह उनका राजप्रसाद था मदन महल के निकट का कई किलोमीटर का भाग पत्थर की विशालकाय चट्टानों से घिरा हुआ है यह महल गोंड कला का नमूना है और पुरातत्व की एक उत्कृष्ट धरोहर है

खरबूजा महल–धार के किले मे एक पुरानी जीर्ण शीर्ण इमारत है जिसे खरबूजा महल कहते हैं इस महल के ऊपर से देखने से सारा नगर दिखाई देता है

राजा रोहित का महल–राजा राजवसती द्वारा निर्मित यह महल रायसेन दुर्ग मे है

बादल महल–रायसेन दुर्ग मे राजा राजवसती ने सोलहवी शताब्दी में यह महल बनवाया था

इन्नरदार महल–यह महल भी रायसेन दुर्ग मे स्थित है

हवा महल–चदेरी के किले मे इसे प्रतिहार राजा कीर्तिमान ने बनवाया था

नौखण्ड महल–यह महल भी चदेरी के किले मे है इसे 11वी शताब्दी मे राजा कीर्तिमान ने बनवाया था

राजा अमन का महल—अजयगढ दुर्ग मे राजा अजय-पाल ने अठारहवी शती में यह महल बनवाया था यह महल पत्थर में बारीक पच्चीकारी का अनुपम उदाहरण है

जहाँगीर महल—जहाँगीर ने अपने विश्राम के लिए ओरछा के दुर्ग मे एक सुदर महल बनवाया था इसके खण्डहर ओरछा दुर्ग के निकट विद्यमान हैं

राज मंदिर—बेतवा नदी के द्वीप मे राजा वीरसिह जूदेव ने एक विशाल महल बनवाया था, जो सुदर व कलात्मक था इसके खण्डहर ओरछा दुर्ग के निकट विद्यमान हैं

अशरफी महल—यह महल माण्डू की प्रमुख इमारत है इसकी बनावट कटोरी की भाँति है महल पर बेल-बूटों की पच्चीकारी की हुई है जालीदार खिडकियाँ इस इमारत को भव्य एव आकर्षक बनाती हैं यहाँ एक मस्जिद भी बनी है जो दमिश्क की मस्जिद के नमूने पर बनाई गई है

दाई का महल—माण्डू मे ही तालाब के किनारे दाई का महल बना है कहा जाता है कि सम्राट् अकबर खान-देश विजय के लिए आगरा से निकला था, तब मार्ग मे यहाँ विश्राम किया था विजयोपरान्त भी वह यहाँ रुका था यहाँ नीलकठ महादेव का भव्य मदिर है मदिर के बीच मे लम्बा-चौडा स्वच्छ खुला आँगन है

रानी रूपमती का महल—माण्डू से तीन किलोमीटर दूर रेवाकुण्ड है रानी रूपमती ने इस झील को चौडा कराया था और एक महल भी बनवाया था यहीं से बाज बहादुर के महल में पानी जाता था ऐसा कहा जाता है कि बाज बहादुर की प्रेयसी रानी रूपमती इस महल पर हर रोज आती थी और पवित्र नदी के दर्शन करती थी

समाधियाँ तथा मकबरे

महारानी सख्याराजे सिंधिया की समाधि—शिवपुरी में सख्या सागर के निकट महारानी सिंधिया की समाधि है जिसका निर्माण महारानी के पुत्र स्वर्गीय महाराज माधवराव सिंधिया ने कराया था इस समाधि के चारों ओर आकर्षक बाग बना हुआ है जिसमें महाराज की समाधि भी है

मुहम्मद गौस का मकबरा—मुहम्मद गौस सूफी फकीर कहे जाते थे ग्वालियर दुर्ग के बाहर उनका मकबरा बना हुआ है मकबरा प्रारभिक मुगलकालीन कला का नमूना कहा जाता है

तानसेन का मकबरा—प्रसिद्ध सगीतज्ञ तानसेन वस्तुत ब्राह्मण कुल मे पैदा हुए थे उनका वास्तविक नाम मकरद पाण्डे था तानसेन मुगलकाल के महान् सगीतज्ञ एव सम्राट् अकबर के राज दरबार के नवरत्नों में से एक थे 55 वर्ग मीटर के क्षेत्र में ग्वालियर में तानसेन का मकबरा बना है जो मुगलकाल की कला का सुदर नमूना है

रानी दुर्गावती की समाधि—जबलपुर से 17 किलोमीटर दूर बरेला ग्राम मे रानी दुर्गावती की समाधि है यहाँ युद्ध में रानी ने अपनी पराजय होते देख महावत से कटार छीनकर अपने पेट में भोंक ली थी अत ग्राम बरेला मे ही उनकी समाधि बनाई गई थी

प्रसिद्ध तीर्थस्थल

मुक्तागिरि—बैतूल जिले में मुक्तागिरि जैन मतावलम्बियों का पवित्र तीर्थस्थल है यहाँ 52 मदिर है कुछ मदिर चट्टानों के अदर बने हैं निर्जन तथा वनों से आच्छादित गुफाओ तथा पर्वत शिखरो पर निर्मित ये मदिर बडे आकर्षक हैं एक छोटा-सा जलप्रपात यहाँ के आकर्षण को और बढा देता है

बावनगजा—इदौर से 128 किलोमीटर दूर व बडवानी से 10 किलोमीटर दूर बावनगजा की पहाडियो में स्थित मदिर जैनो का प्रमुख स्थल है इन पहाड़ियों मे 15वीं शताब्दी की 72 फीट ऊँची मूर्ति है जो आकर्षण की मुख्य केन्द्र है

नोहटा—बीना-कटनी रेलमार्ग पर दमोह से 21 किलो-मीटर दूर नोहटा, 12वी शताब्दी में चदेल राजाओ की राजधानी थी गुरइया और बेरसा नदियो के सगम पर बसा यह नगर प्राचीन शिव मदिर और जैन मदिरों के अवशेषों के लिए विख्यात है

पशुपतिनाथ का मंदिर—राजगढ जिले की ब्यावरा तहसील में गिरोद हाट ग्राम के निकट विन्ध्य पर्वत की 500 मीटर लम्बी व 150 मीटर चौडी पहाडी है, जिसे धुरैल की पहाडी कहते हैं इसी मे सन् 1982 में बिडला मदिर के प्रारूप पर एक मदिर का निर्माण किया गया था मदिर के चबूतरे का आकार 51' × 51' फुट है मध्यवर्ती गर्भस्थल का आकार 21' × 21' फुट है यद्यपि मदिर बहुत विशाल नहीं है, परन्तु सुन्दर एव भव्य है इसमें पशुपतिनाथ की सवा पाँच फुट ऊँची प्रतिमा लगी है इस प्रतिमा के अतिरिक्त चार छोटी प्रतिमाएँ भी हैं जो पार्वती, गणपति कार्तिकेय तथा नदी की है इनमें से केवल पार्वती की प्रतिमा नाखूनी रग के पत्थर से निर्मित है तथा शेष चारो प्रतिमाएँ काले पत्थर की बनी हुई है

प्राकृतिक रमणीय स्थल

चचाई जलप्रपात—रीवा से 46 किलोमीटर दूर बीहड नदी पर चचाई का मनोरम जलप्रपात स्थित है 130 मीटर की ऊँचाई से गिरता यह प्रपात अत्यन्त आकर्षक एव मनोरम दृश्य उपस्थित करता है यहाँ निकट में केवटी और बहुटी जलप्रपात भी देखने योग्य है

कपिल धारा व दुग्ध धारा जलप्रपात—अमरकटक में नर्मदा कुण्ड से 6 किलोमीटर बहने के उपरान्त 15 मीटर की ऊँचाई से गिरकर प्रपात बनता है यह प्रपात कपिल धारा के नाम से विख्यात है लगभग 80 मीटर की दूरी पर दुग्ध धारा प्रपात है जो कपिल धारा की तुलना मे कम ऊँचाई से जल प्रपात बनाता है ये दोनो प्रपात प्राकृतिक सुषमा की दृष्टि से अनुपम है

29

मध्य प्रदेश का संक्षिप्त इतिहास

प्रागैतिहासिक तथा आद्यैतिहासिक काल

मध्य प्रदेश के इतिहास का प्रारम्भ पाषाण युग से होता है पाषाण युग वह युग है, जब मनुष्य पशुओ की भाँति जगलों, पर्वतो और नदी-घाटियो में विचरण करता था तथा कन्दमूल-फल या पशुओ का शिकार कर अपना पेट भरता था मूलादि के खोदने तथा पशुओ का शिकार करने के लिए वह नदियों में तथा स्थानीय प्राप्त होने वाले बट्टिदार पत्थरो को तोडकर उन्हे नुकीला बनाकर भद्दे औजार बनाता था जिस युग में मनुष्य ने इस प्रकार के औजार बनाए, उसे पाषाण युग कहा जाता है विकास की अवस्थाओं को दृष्टि में रखते हुए विद्वानों ने पाषाण युग को तीन भागों में विभाजित किया है ये भाग निम्नलिखित है–

1. पूर्व-पाषाण युग
2. मध्य-पाषाण युग
3. उत्तर-पाषाण युग

मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानो से इन तीनो कालो से सम्बन्धित औजार प्राप्त हुए हैं

पूर्व पाषाण युग

इस युग का विशेष औजार जो बिना बेंट अथवा लकड़ी के बेट के साथ उपयोग मे लाया जाता था, हस्तकुठार था इसके अतिरिक्त खुरचनी, मुष्टि कुठार तथा क्रोड भी इस काल के औजारों मे शामिल हैं इन औजारों के प्राप्ति स्थानों से स्पष्ट होता है कि तत्कालीन मनुष्य या तो नदियों के कगारों और झीलो के तटो पर या पर्वत कदराओं में विचरण करते हैं खोज की दृष्टि से मध्य प्रदेश में अभी तक अग्नि, कुण्डाला, गौर, चम्बल, नर्मदा, सोनार, रेतम, परियट, पार्वती, बैनगगा, बाघ, बिला, घसान बीना, बेतवा, अन्सेर, गजई, मुर्ना, सोन, हिरन तथा मधिकुदा नदी घाटियों का पर्यवेक्षण किया गया है यह कार्य अभी भी जारी है उपर्युक्त खोज करने में केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, केन्द्रीय जिओलॉजिकल सर्वे ऑफ इडिया विभाग, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा सस्कृति विभाग सागर विश्वविद्यालय, डेक्कन कॉलेज रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना तथा विक्रम विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय सस्कृति विभाग अग्रणी रहे हैं इन खोजों से पूर्व पाषाणयुगीन जो स्थल अब तक प्रकाश में आये हैं, वे सीधी शहडोल सागर, पूर्व तथा पश्चिम निमाड़, मन्दसौर, शाजापुर, इदौर, जबलपुर, गुना, बस्तर, विदिशा, दमोह, राजगढ़, होशगाबाद, छतरपुर, मण्डला, नरसिहपुर रीवा राजगढ, सिवनी, पन्ना, धार, सीहोर, रायसेन तथा रायगढ जिलों के अतर्गत स्थित है भारत के पूर्व पाषाण युग का महत्वपूर्ण अनुसधान कार्य 1935 मे डिटेरा के नेतृत्व में 'येल कैम्ब्रिज एक्सपेडिशन' ने किया इस अनुसधान का क्षेत्र काश्मीर घाटी से लेकर साल्ट रेंज तक था 'डिटेरा' का लक्ष्य था–इस सम्पूर्ण क्षेत्र मे हिमानी और अन्तर हिमानी के क्रम के आधार पर पाषाण कालीन सभ्यता का विश्लेषण करना इस विश्लेषण में स्तरीय प्रमाण का सहारा लेकर उन्होंने पाषाणयुगीन औजारों के विकास की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी की घाटी मे भी अनुसधान करना 'येल कैम्ब्रिज एक्सपेडिशन' के कार्य का एक महत्वपूर्ण अग था होशगाबाद तथा नरसिंहपुर के बीच खोज तथा उत्खनन करते हुए उन्होंने पाषाणयुगीन तीन स्तरों के अस्तित्व का निष्कर्ष निकाला यह थे–

(1) निम्न स्तर जिसमे पूर्व-सोहन प्रणाली के शल्क अबेवीली, ऐश्यूली प्रणाली के हस्तकुठार तथा विदारणी मिले यह सामग्री मिट्टी की मोटी तह से ढकी थी इस तह मे पूर्वकालीन सोहन प्रणाली के शल्क और उत्तर कालीन ऐश्यूली प्रणाली के हस्तकुठार उपलब्ध हुए

(2) ऊर्ध्व सतह से ऐश्यूली प्रणाली के दुधारा उपकरण तथा उत्तरकालीन सोहन प्रणाली के 'पेबल' उपकरण शल्क और क्रोड मिले

(3) काली मिट्टी से विभिन्न पत्थरो के बने लघु पाषाण औजार प्राप्त हुए

येल केम्ब्रिज एक्सपेडिशन के उक्त निष्कर्ष को मेक क्राउन, बनर्जी डॉ साकलिया, खत्री, सुब्बाराव आदि

विद्वानों द्वारा बाद में किये गये खोजों के आधार पर गलत बताने का प्रयत्न किया गया नर्मदा के स्तरीय साक्षों का ठीक से अध्ययन करने के लिए महेश्वर, आदमगढ, महादेव पिपरिया आदि स्थानों पर उत्खनन कार्य करवाया गया तथा विभिन्न निष्कर्षों पर पहुँचा गया इस दिशा में और खोज अपेक्षित है मालवा क्षेत्र में भी चम्बल की सहायक शिवना नदी की खोज में मदसौर तथा नाहरगढ नामक स्थानों पर प्राप्त पूर्व-पाषाणयुगीन औजारों के अध्ययन से डॉ खत्री द्वारा महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचा गया है

मध्य-पाषाण युग

1954 तक विद्वानो का यह मत था कि भारतवर्ष के पूर्व-पाषाण काल तथा उत्तर पाषाणकाल के बीच एक मध्यातर है, परन्तु 1954-55 में नेवासा में की गई खोज में तथा बाद मे किये गये अन्य स्थानों की खोज में यह प्रमाणित हो गया कि पूर्व-पाषाण युग तथा उत्तर-पाषाण युग के बीच एक सक्राति का काल था, जिसमे बनाए गए औजार आकार, प्रकार तथा उपयोग मे पूर्व तथा उत्तर-पाषाणयुगीन औजारों से भिन्न थे इस काल मे बनाए गए औजारो की कला पूर्व-पाषाण युग के उत्तर चरण के औजार बनाने की कला पर ही आधारित थी परन्तु इस काल के कुछ औजारों में लघुरूपता का प्रश्रय दिया गया फलत कुछ औजार तो 15 सेमी लम्बे बनाए गए, परन्तु इसके विपरीत कुछ केवल तीन सेमी लघु ही बने अत इन्हें लघुपाषाण औजारों की कोटि में नहीं रखा जा सकता ये औजार जैस्पर चट्, क्वार्ट्ज, फिलन्ट आदि उच्चकोटि के पत्थरों से बनाए जाते थे बनाए जाने वाले औजारो मे विभिन्न प्रकार की खुरचनियाँ, नोक तथा बेधनी प्रमुख हैं

मध्य प्रदेश मे किए गए चम्बल, बेतवा, नर्मदा, महानदी तथा इनकी सहायक नदियों की घाटियो की खोज म अनेक ऐसे स्थल मिलते है जहाँ से मध्यपाषाण युगीन औज़ार प्राप्त हुए है इनके अतिरिक्त जबलपुर सागर मदसौर सीधी, पूर्व तथा पश्चिम निमाड, शहडोल दमोह सिवनी, रीवा, मण्डला, छत्तरपुर, विदिशा गुना, होशगाबाद नरसिहपुर, देवास, छिदवाडा तथा उज्जैन जिलो में किए गए खोजों मे अनेक मध्य-पाषाणयुगीन औजार प्राप्त होने वाले स्थल मिले है

उत्तर-पाषाण युग

इस युग में सम्बन्धित औजारो की पहचान इनकी लघुरूपता से होती है अपनी लघुरूपता के कारण ये लघुपाषाण औजार कहलाते है दक्षिण भारत के उत्खननो म मध्यपाषाण युगीन औजारो से उत्तर-पाषाणयुगीन औजारों क विकास का सम्पूर्ण चित्र स्पष्ट समझ मे आ जाता है परन्तु मध्य प्रदेश तथा गुजरात के क्षेत्र मे अनेक उत्खनन किये जाने के बाद भी मध्य पाषाणयुगीन औजारों से उत्तर-पाषाणयुगीन औजारो का किस प्रकार विकास हुआ इसका स्पष्ट चित्र सामने नहीं आया है उत्तर-पाषाण युग से सम्बन्धित शल्क क्रोड फलक (समानान्तर), खुरचनी, बेधनी, समलम्ब, तिकोने तथा अर्धचदाकार औजार हैं ये औजार जास्पर, कैल्सेडोनी तथा क्वार्ट्ज के बने पाए गए हैं

मध्य प्रदेश में उत्तर-पाषाणयुगीन औजार खोज के दौरान पूर्वी निमाड, शहडोल, मदसौर सीहोर, होशगाबाद रीवा, उज्जैन, जबलपुर, रायगढ इदौर मण्डला छत्तरपुर बस्तर, विदिशा, सागर गुना पन्ना, छिदवाडा, रतलाम तथा धार जिलों में स्थित अनेक स्थानो से प्राप्त हुए है इन औजारों तथा उत्खननो में प्राप्त अन्य उपकरणो से ज्ञात होता है कि उत्तर-पाषाण युग के निवासी शिकारो में प्राप्त विभिन्न पशु तथा मछली की हड्डियाँ इस बात की साक्षी है इस काल का मनुष्य मिट्टी के बर्तनों का भी उपयोग करता था, ऐसा प्रतीत होता है आभूषणो मे मनके तथा सीप की बनी वस्तुओं का भी वे उपयोग करते थे ऐसा उत्खननों से प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है आदमगढ के उत्खनन मे उत्तर-पाषाण युग से सम्बन्धित स्तर से सीप की बनी वस्तुए मिली हैं, जिनकी तिथि कार्बन-14 की विधि से निर्धारित की गई है कार्बन-14 की रीति से इनकी तिथि लगभग 5500 ई पू ज्ञात हुई है, जो अभी तक भारत में किये गये उत्खननो में कार्बन-14 की रीति से प्राप्त सभी तिथियों मे प्राचीनतम है

नव-पाषाण युग

पाषाण युग के उपर्युक्त तीन कालों के पश्चात् भारत में नव-पाषाण युग का प्रारम्भ हुआ यह कहना कठिन है कि यह प्रादुर्भाव कब और किस जाति द्वारा हुआ इस काल के उपकरण प्रधानत गहरे हरे ट्रप पत्थर के बनाये जाते थे इस युग के औजारों पर या तो सम्पूर्ण भाग पर ओप पाया जाता है अथवा कम से कम ऊपर और नीचे के सिरों पर इस काल के जो औजार मिले है उनमें सेल्ट, कुल्हाडी बसूला रचक घन आदि उपकरण प्रमुख है आकार-प्रकार के आधार पर सम्पूर्ण भारत मे पाये जाने वाले इन उपकरणों को पाँच समूहों मे विभाजित किया गया है ये समूह हैं क्रमश (1) उत्तरी समूह (2) दक्षिणी समूह (3) पूर्वी-समूह (4) मध्य-समूह तथा (5) पूर्वी मध्य समूह

मध्य प्रदेश में पाये जाने वाले ये उपकरण मध्य समूह के अन्तर्गत आते हैं नव-पाषाणयुगीन औजार मध्य प्रदेश में अर्जुनी एरण, कुण्डम गढी-मोरीला जतकारा जबलपुर दमोह राजनादगाँव बहूतराई बुरचेका, मुनई, सागर, हटा तथा होशगाबाद से प्राप्त हुए हैं नव-पाषाण युग के उपकरणों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस काल का मनुष्य सभ्यता के दृष्टिकोण से प्रगति की ओर अग्रसर हुआ इस काल के मनुष्य ने कृषि-कर्म का ज्ञान प्राप्त किया, पशुपालन प्रारम्भ किया मृद्भाण्ड कला का आविष्कार किया तथा वस्त्र निर्माण गृह-निर्माण अस्त्र-शस्त्र का उपयोग और

अग्नि प्रयोग करना सीखा इस प्रकार नव-पाषाण युग मे वर्तमान सभ्यता के अनेक अगों का बीजारोपण हुआ

ताम्र-पाषाण युग

विश्व के अन्य भागों की तरह भारत में भी पाषाण युग के पश्चात् धातु-युग का प्रादुर्भाव हुआ धातुओ मे ताँबा सर्वप्रथम उपयोग में लाया गया, अत यह युग ताम्रयुग के नाम से जाना जाता है कालान्तर मे मनुष्य ने यह अनुभव किया कि अति कठोर कर्मों के लिए ताँबा अधिक उपयोगी नही है अत इस आवश्यकता की कमी की पूर्ति हेतु मनुष्य ने काँसे का आविष्कार कर लिया अत यह युग कास्य-युग के नाम से जाना जाता है, परन्तु यह महत्वपूर्ण बात है कि ताँबे और काँसे की सामग्री विशेषतया उत्तर भारत में ही उपलब्ध हुई है दक्षिण भारत में यह सामग्री नगण्य है ऐसा प्रतीत होता है कि पाषाण काल के पश्चात् ताम्रयुग और कास्य युग का उदय उत्तर भारत में ही हुआ दक्षिण भारत में पाषाण युग के पश्चात् सीधे लौह-युग का पदार्पण हुआ, ऐसा प्रतीत होता है उत्तर भारत में लौह-युग ताम्र युग तथा कास्य-युग के बाद आता है परन्तु यह नहीं समझना चाहिए कि धातु युग मे पाषाण प्रयोग का पूर्ण विलोप हो गया धातु के साथ-साथ काफी मात्रा में पाषाण के औजार भी उपयोग में लाए गए यही कारण है कि उत्खनन मे अनेक स्थलों पर धातु सामग्री के साथ-साथ पाषाण सामग्री भी उपलब्ध हुई

प्राचीन भारत की प्रसिद्ध सिन्धु घाटी की सभ्यता ताम्र तथा कास्य-युग की सभ्यता है जहाँ तक मध्य प्रदेश का प्रश्न है, इस सभ्यता के कोई भी अवशेष मध्य प्रदेश की सीमा के अतर्गत किसी भी स्थल से प्राप्त नही हुए है अधिकाश विद्वान् सिन्धु-सभ्यता का पतन 18वीं सदी ई पू के मध्य के लगभग स्वीकार करते हैं इसके पश्चात् इस सभ्यता का क्या हुआ यह अभी तक अज्ञात है, परन्तु उत्खननों का सहारा लेकर विद्वानों का अब यह मत दृढ होता जा रहा है कि 18वी सदी ई पू के पश्चात् ताम्र-पाषाण युग मे सिन्धु घाटी की सभ्यता का सास्कृतिक विस्तार तीन क्षेत्रो की ओर हुआ, जिसमे तीसरा क्षेत्र मध्य प्रदेश के अन्तर्गत मालवा क्षेत्र था, जहाँ नागदा, नारडाटोली कायथा आवरा एरण बेसनगर आदि के महत्वपूर्ण उत्खननो में इस ताम्र-पाषाणयुगीन सभ्यता के महत्वपूर्ण अवशेष मिले है नावडाटोली के ताम्र-पाषाणयुगीन स्तर 1660 ई पू से 1440 ई पू के बीच के मिले हैं कायथा उत्खनन जो और भी अधिक महत्वपूर्ण है 2015 ई पू से 1380 ई पू के स्तरीय प्रमाण उपलब्ध कराता है एरण के उत्खनन में ताम्र-पाषाणयुगीन स्तर 2000 ई पू से 700 ई पू के बीच का मिला है इसी प्रकार बेसनगर के उत्खनन में ताम्र-पाषाणयुगीन स्तर 1100 ई पू से 900 ई पू के बीच का मिला है इन उत्खननो के अतिरिक्त मध्य प्रदेश के मदसौर शाजापुर, इदौर पश्चिम निमाड, धार, उज्जैन जबलपुर, देवास तथा भिण्ड जिले में किये गये खोजों में लगभग तीस ऐसे स्थल प्राप्त हुए है जहाँ ताम्र-पाषाणकालीन अवशेष मिले है विक्रम विश्वविद्यालय के श्री वाकणकर द्वारा चम्बल क्षिप्रा रेतम छोटी काली सिन्ध, पार्वती, बेतवा तथा गभीर आदि नदियों में किये गये खोज में बावन ऐसे स्थल प्राप्त हुए है जहाँ ताम्र-पाषाणयुगीन सभ्यता से सम्बन्धित मृद्भाण्ड लघु पाषाण औजार आदि सामग्री प्राप्त हुई है

गगा-जमुना दोआब में प्राप्त ताम्र निधियो से मिलते-जुलती निधियाँ मध्य प्रदेश में भी गुगेरिया जबलपुर दबकिया तथा रामजीपुरा से प्राप्त हुई इन ताम्रनिधियों में सबसे महत्वपूर्ण निधि बालाघाट जिले मे स्थित गुगेरिया की है, जिसमे 424 उपकरण पाए गए है इनमें से कुछ उपकरण चाँदी के भी बने मिले हैं जो आकार में सीगयुक्त बैल के सिर से मिलते-जुलते थे मध्य प्रदेश में पाये जाने वाले इन उपकरणों का आकार-प्रकार गगा-जमुना घाटी में प्राप्त उपकरणो से भिन्न होने के कारण विद्वानों का विश्वास है कि इन दोनों समकालीन सभ्यताओं मे कुछ अन्तर रहा होगा जिसका स्वरूप तथा कारण अज्ञात है

मध्य-भारतीय गुहा चित्र

मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के कतिपय स्थानों पर शिलाश्रय मिले हैं जिनके भीतरी छतों और दीवारो पर अनेक ढग की रोचक चित्र रचना मिली है इन शिलाश्रयों के काल के सम्बन्ध मे विद्वानों में गहरा मतभेद है एक ओर कुछ विद्वान् इन्हे प्रागैतिहासिक कालीन मानते है तो दूसरी ओर अन्य विद्वान् इन्हे इतिहास काल से सम्बन्धित मानते हैं अधिकाश विद्वान् अब इस बात का स्वीकार करने लगे है कि ये सभी चित्रित शैलकृत निवास किसी एक विशेष युग के नहीं हैं पुरातत्व उत्खनन तथा अन्य प्रमाणो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इनमें से कुछ अवश्य ही प्रागैतिहासिक काल से सम्बन्धित हैं परन्तु कुछ अन्य इतिहास काल से सम्बन्धित हैं जैसाकि उनमें से कुछ में उपलब्ध उत्कीर्ण तथा चित्रित लेखों से पता लगता है कुछ शिलाश्रयों मे चित्रो की कई परतें मिलती है जिससे उनमे एक लम्बे समय तक विभिन्न जातियों के निवासियो के रहने का अनुमान किया जा सकता है उन शिलाश्रयों का विशद अध्ययन जारी है

भारत में जितने चित्रित शिलाश्रय प्राप्त हुए है उनमे से मध्य प्रदेश मे पाये जाने वाले शिलाश्रयों की सख्या सबसे अधिक है ये चित्रित शिलाश्रय होशगाबाद सागर रीवा मदसौर जबलपुर सीहोर रायसेन ग्वालियर पूर्व निमाड शिवपुरी छिन्दवाडा छतरपुर दमोह पन्ना तथा नरसिहपुर जिलों के अनेक स्थानो पर मिले है अधिकाश गुफा चित्रों में लाल सफेद काला नीला या पीला रग उपयोग में लाया गया है कई चित्रो मे पहले लाल अथवा

सफेद रंग की पृष्ठभूमि देकर उस पर चित्र बनाए गए हैं इन गुफा चित्रों से वहाँ निवास करने वाले लोगों की जीवन चर्या तथा रुचि का पता चलता है मुख्यतः जो दृश्य इन चित्रों में मिलते हैं, वे हैं—विविध आयुधों से पशु-पक्षियों का शिकार, जानवरों की लड़ाई, मानवों में पारस्परिक युद्ध, पशुओं पर सवारी, गीत, नृत्य, पूजन, मधुसंचय तथा घरेलू जीवन सम्बन्धी अनेक दृश्य

लौह युग तथा इतिहास का प्रारम्भ

पश्चिम में हड़प्पा से लेकर पूर्व में गंगा-यमुना दोआब के बीच स्थित विस्तृत क्षेत्र में कई स्थानों पर किए गए उत्खननों में 'चित्रित धूसर-भाण्ड' प्राप्त हुए हैं विद्वानों के अनुसार यह लौह युग से सम्बन्धित संस्कृति के हैं उनका विश्वास है कि चित्रित धूसर-भाण्ड लौह युग का द्योतक है स्तरीय प्रमाणों के अनुसार चित्रित धूसर-भाण्ड संस्कृति के पश्चात् काले ओपदार उत्तरी भाण्ड संस्कृति का उदय हुआ जो इतिहास काल में बौद्ध तथा जैन धर्मों के उदय तथा शिशुनाग-नंदकाल से सम्बन्धित है

उत्खननों में उपर्युक्त स्तरीय प्रमाण केवल हड़प्पा से गंगा-यमुना दोआब के विस्तृत क्षेत्र में ही पाया जाता है गंगा-यमुना संगम के पूर्व में स्थित विस्तृत क्षेत्र में किए गए उत्खननों में ताम्र पाषाणयुगीन स्तर के पश्चात् ही काले ओपदार उत्तरी भाण्ड से सम्बन्धित स्तर पाया जाता है अर्थात् चित्रित धूसर-भाण्ड से सम्बन्धित स्तर यहाँ नहीं मिलता इससे इस तथ्य की ओर संकेत होता है कि इस क्षेत्र में ताम्र-पाषाण युग के पश्चात् सीधा इतिहास युग प्रारम्भ हुआ था ठीक यही तथ्य मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में किए गए अधिकांश उत्खननों में मिलता है यहाँ पर भी चित्रित धूसर-भाण्ड संस्कृति का अभाव तथा ताम्र-पाषाण संस्कृति के पश्चात् सीधा लौह-युग तथा इतिहास युग के प्रारम्भ का पता चलता है

महापाषाण युग

दक्षिण भारत में विशाल पाषाण-खण्डों की बनी हुई कुछ समाधियाँ प्राप्त होती हैं, जिन्हें महापाषाणीय स्मारक (मेगालिथ) के नाम से सम्बोधित किया जाता है जिस काल में इनका निर्माण हुआ, उसे महापाषाण काल कहा जाता है, क्योंकि इन समाधियों में लौह सामग्री अवश्य ही प्राप्त होती है, इसलिए यह काल दक्षिण भारत के लौह युग से सम्बन्धित था अभी तक भारत में महापाषाण स्मारकों के जो विभिन्न प्रकार प्राप्त हुए हैं, उनमें से उल्लेखनीय हैं ताबूती कब्र (सिस्ट-ग्रेव), गर्त-वृत्त (पिट सर्कल) संगोरा वृत्त (कैर्न सर्कल), डोलमेन, छत्र पाषाण (अम्ब्रेला-स्टोन) फणाकृति पाषाण (हूड स्टोन) कन्दराएँ तथा एकाश्मीय मेहिर

यद्यपि इन महापाषाणयुगीन स्मारकों का निर्माण विशेषतया दक्षिण भारत में ही हुआ, तथापि उनके उदाहरण मध्य प्रदेश उड़ीसा असम, बिहार, राजस्थान, गुजरात तथा कश्मीर आदि प्रांतों में भी उपलब्ध हुए हैं मध्य प्रदेश में ये स्मारक सिवनी तथा रीवा जिलों में पाए गए हैं छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले में स्थित घनारा में एक ही स्थान पर लगभग 500 महापाषाणीय स्मारक मिले हैं, जिन्हें चार वर्गों में विभाजित किया गया है 1956-57 में यहाँ प्रथम वर्ग के तीन तथा दूसरे वर्ग के एक स्मारक का उत्खनन किया गया उत्खनन से प्राप्त प्रमाण अपूर्ण रहे

वैदिक युग

वैदिक काल का आदि ग्रंथ ऋग्वेद है ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना मुख्यतया यज्ञों में उच्चारण के लिए हुई थी उनमें जहाँ भी ऐतिहासिक उल्लेख आए हैं वे केवल प्रसंगवश ही आए हैं ऋग्वैदिककालीन आर्यों का विस्तार इतना नहीं हुआ था, कि वे मध्य प्रदेश के किसी भाग तक पहुँच सके हों अतः मध्य प्रदेश से सम्बन्धित किसी भी ऐतिहासिक तथ्य का ऋग्वेद में न होना स्वाभाविक ही है उत्तर-वैदिक काल की कुछ अनार्यजातियों के नाम, ऐतरेय ब्राह्मण में मिलते हैं जो मध्य प्रदेश के अन्तर्गत घने जंगलों में निवास करती थीं इनमें निषादों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है

अनुश्रुतिगम्य इतिहास

वैदिक और उत्तर-वैदिक काल के पश्चात् के इतिहास की जानकारी के लिए रामायण महाभारत तथा पुराणों में वर्णित अनुश्रुतियाँ ही वर्तमान साधन हैं इन अनुश्रुतियों के अनुसार मनुष्यों की परम्परा में अंतिम मनु वैवस्वत हुए जिनके समय में विश्वव्यापक बाढ़ आई उनके दस पुत्र हुए जिनका नाम था— इल, इक्ष्वाकु नाभाग धृष्ट शर्याति नरिष्यंत प्रांशु, नाभागोदिष्ट, करुष तथा पृषध्र इनमें से करुष नामक पुत्र से कारुष वंश चला तथा कारुष देश की स्थापना हुई यह कारुष देश वर्तमान बघेलखण्ड में स्थित था वैवस्वत मनु की पुत्री का नाम इला था जिसका विवाह सोम से हुआ था इसी से ऐल अर्थात् चंद्रवंश की स्थापना हुई जिसका आदि पुरुष पुरुरवा था पुरुरवा के अधीन ऐल साम्राज्य का विस्तार हुआ अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए उसने वर्तमान बुन्देलखण्ड के क्षेत्र पर भी अधिकार कर लिया. इस विस्तार से उसके राज्य की सीमा बघेलखण्ड में राज्य करते हुए कारुष वंशी राजा के राज्य से आ मिली

पुरुरवा के पुत्र आयु और अमावसु हुए आयु की तीसरी पीढ़ी में ययाति हुआ ययाति ने भार्गव ऋषि शुक्र की कन्या देवयानी से विवाह किया उसने वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा से भी विवाह किया देवयानी से उसके दो पुत्र—यदु और तुर्वसु हुए और शर्मिष्ठा से तीन पुत्र—अनु द्रुह्य तथा पुरु हुए यदु से यादव वंश की स्थापना हुई तथा पुरु से पौरव वंश की ययाति ने अपने विशाल साम्राज्य का

विभाजन अपने पुत्रो में कर दिया इस विभाजन में यदु को चर्मणवती (चम्बल), वेत्रवती (बेतवा) तथा शुक्तिमती (केन) की धाराओं से सिंचित प्रदेश प्राप्त हुआ यदु के दो प्रसिद्ध पुत्र थे क्रोष्टु और सहस्त्रजित क्रोष्टु की सन्तान यादव कहलाई और सहस्त्रजित की हैहय. मानव वश के (इक्ष्वाकु) के पुत्र दण्डक का राज्य मध्य प्रदेश के दक्षिण क्षेत्र पर था, जो घने जगलों से घिरा हुआ था उसी के नाम से यह क्षेत्र दण्डकारण्य कहलाया

अयोध्या के इक्ष्वाकुओं के वश में मान्धाता चक्रवर्ती सम्राट् हुआ ऐलवश की राजकुमारी बिंदुमती से उसके तीन पुत्र पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुद तथा कावेरी नामक कन्या हुई पुरुकुत्स ने मध्य प्रदेश मे मध्यभारत क्षेत्र मे बसे नाग राजाओं को मौनेय गधर्वों के विरुद्ध सहायता देकर विजयी बनाया तथा नाग राजा की कन्या नर्मदा से विवाह किया उसके भाई मुचुकुद ने पारियात्र और ऋक्ष पर्वत के प्रदेश को जीतकर नर्मदा के किनारे एक दुर्ग का निर्माण किया हैहय राजा महिष्मन्त ने मुचुकुद को पराजित कर उससे यह गढ छीन लिया इस नगर तथा गढ का नाम महिष्मन्त ने महिष्मती (वर्तमान महेश्वर रखा)

महिष्मन्त के वश मे कृतवीर्य हुआ, जिसके राज्यकाल में विशाल हैहय साम्राज्य की स्थापना हुई कृतवीर्य के वंश में अर्जुन, जिसे कार्तवीर्य, सहस्त्रार्जुन या सहस्त्रबाहु भी कहा जाता है, सम्पूर्ण मध्य प्रदेश मे फैले विशाल हैहय साम्राज्य का उत्तराधिकारी हुआ वह महान चक्रवर्ती सम्राट् था और उसकी हजार भुजाएँ कही जाती हैं, जो सम्भवत उसकी अपार सैन्यशक्ति का द्योतक है अनुश्रुतियो के अनुसार उसने समस्त पृथ्वी को जीता और अनेक यज्ञ किए इन विजयो से उसे दम्भ हुआ प्रतीत होता है

कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन के पुत्र जयध्वज का राज्य अवन्ति (आधुनिक मालवा क्षेत्र) पर था जयध्वज का पुत्र तालजघ हुआ, जिसके पाँच पुत्र थे–वीतिहोत्र शार्यात, भोज, अवन्ति और कुडिकेर इनमें से वीतिहोत्र और कुडिकेर विन्ध्याचल मे वर्तमान बुन्देलखण्ड मे फैली पर्वतमालाओ मे रहे अवन्ति ने मालवा क्षेत्र में राज्य किया और उसी के नाम से यह क्षेत्र अवन्ति नाम से जाना जाने लगा उसने यादवों से विदिशा छीन लिया तथा कान्यकुब्ज काशी और कौशल पर आक्रमण किए

तालजघ का समकालीन विदर्भ का शासक यादववशी था इस वश के शासक कौशिक ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर चर्मणवती (चम्बल) और शुक्तिमती (केन नदी) के मध्य के प्रदेश (अर्थात् बुन्देलखण्ड) में राज्य स्थापित किया, जो चेदि जनपद कहलाया विदर्भ का एक अन्य प्रसिद्ध राजा भीमरथ हुआ जिनकी सुन्दरी कन्या दमयती से नलपुर के राजा नल ने विवाह किया अनुश्रुति के अनुसार नल ने ही नलपुर नगर बसाया था जो आधुनिक शिवपुरी जिले में नरवर के रूप मे विद्यमान है

रामायण मे उपलब्ध कथा के अनुसार राम को वनवास दिये जाने पर राम ने अपना अधिकाश समय दण्डक वन मे बिताया यह दण्डक वन बस्तर जिले का दण्डकारण्य क्षेत्र ही है वनवास के काल में लका के राजा रावण द्वारा सीता हरण कर लिया गया, जिसके परिणाम स्वरूप राम का लका पर आक्रमण कर रावण का पराजित कर वध करना पडा इस लका राज्य की स्थिति क्या थी इस सम्बन्ध में विद्वानों मे गहरा मतभेद है कुछ विद्वानों का मत है कि लका का राज्य नर्मदा के उद्गम स्थान अमरकण्टक में था कुछ अन्य विद्वानो के मतानुसार लका आधुनिक जबलपुर के निकटवर्ती क्षेत्र में थी वनवास काल के पश्चात् राम अयोध्या लौट आये तथा वहाँ के राजा बने अपने राज्यकाल मे उन्होने लोकमत का सम्मान करने के लिए गर्भवती निर्दोष सीता को निर्वासित किया उसने वाल्मीकि मुनि के आश्रम मे शरण प्राप्त की जहाँ उनके लव और कुश नामक दो पुत्रो ने जन्म लिया आदि कवि वाल्मीकि का आश्रम 'तमसा' नदी के तट पर था कुछ विद्वानो के अनुसार यह 'तमसा' आधुनिक टॉस नदी है जो अमरकंटक से निकलती है भविष्य में राम का पुत्र कुश दक्षिण कोसल का राजा हुआ महर्षि वाल्मीकि और दशरथ राम के पश्चात् भारतीय अनुश्रुति का त्रेतायुग समाप्त हुआ तथा द्वापर युग प्रारम्भ हुआ

द्वापर युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी महाभारत का युद्ध इस युद्ध मे कृष्ण अर्जुन के सारथी के रूप में पाण्डवों के साथ रहे महाभारत के युद्ध में वत्स, काशी चेदि, कारुष, दशार्ण और मत्स्य अर्थात् वर्तमान बुन्देल खण्ड और बघेलखण्ड की सीमाओं के जनपदो के राजा अपनी सेनाओं के साथ पाण्डवों की ओर से लडे माहिष्मती का नील, अवन्ति के बिंद और अनुविंद, भोज, अन्धक वृष्णियो का कृतवर्मा, विदर्भ तथा निषध के राजा कौरवों की ओर से लडे कौरव इस युद्ध में पराजित हुए और पाण्डव विजयी कुछ समय पश्चात् पाण्डव अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को राज्य देकर हिमालय को चले गए इस प्रकार परीक्षित के राज्यारोहण के साथ द्वापर युग समाप्त हुआ और कलियुग ने पदार्पण किया

महाजनपद युग

छठी शताब्दी ई पू के लगभग उत्तर भारत मे सोलह महाजनपद स्थापित थे, जिनका वर्णन बौद्ध ग्रन्थ जैन ग्रन्थ तथा पुराणों मे आया है उनमें से मध्य प्रदेश के इतिहास से सम्बन्धित जनपद थे चेदि तथा अवन्ति

चेदि जनपद आधुनिक बुन्देलखण्ड के पूर्वी भाग तथा उसके समीपस्थ भू-खण्ड में विस्तीर्ण था

अवन्ति जनपद लगभग उज्जैन प्रदेश के आस-पास के जिलो से मिलकर बना था वेत्रवती नदी द्वारा यह प्रदेश उत्तर तथा दक्षिण दो प्रातों में विभाजित था उत्तर अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी थी तथा दक्षिण की राजधानी

महिष्मती महिष्मती तथा उज्जयिनी दोनों नगर राजगृह से प्रतिष्ठान तक जाने वाले सुप्रसिद्ध दक्षिण राजमार्ग पर स्थित थी विदिशा नगरी भी इसी मार्ग मे स्थित थी महाभारत एव मेघदूत में दशार्ण प्रदेश का उल्लेख आया है, जिसकी राजधानी विदिशा थी बौद्ध तथा जैन ग्रथों के अनुसार अवन्ति के अन्य दो प्रसिद्ध नगर थे कुररघर तथा सुदर्शनपुर अवन्ति प्रदेश बौद्ध धर्म का एक सुप्रसिद्ध केन्द्र था

नन्द मौर्य युग

मगध के शिशुनाग वश के पतन के पश्चात् नन्द वश का राज्य प्रारम्भ हुआ नन्द वश के नरेश प्रतापी थे और उनका साम्राज्य दूर-दूर तक विस्तृत था दक्षिण में मैसूर तक भू-भाग उनके राज्य के अतर्गत था उन्होंने कलिग भी जीत लिया था मैसूर तक राज्य करने वाले नन्दों का मध्य प्रदेश पर अवश्य ही पूर्ण अधिकार रहा होगा, किन्तु उनके काल की कोई भी ऐतिहासिक सामग्री इस क्षेत्र से प्राप्त नहीं हो सकी

चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्द वश का नाश कर विशाल मौर्य साम्राज्य स्थापना की मध्य प्रदेश इस विशाल साम्राज्य का अवश्य ही एक भाग रहा होगा, परन्तु इस सम्बन्ध में हमें कुछ भी जानकारी नहीं है चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी बिन्दुसार के समय में हमे इस प्रदेश की राजनैतिक हलचल के सम्बन्ध मे बौद्ध तथा जैन ग्रथो से कुछ जानकारी मिलती है

बिन्दुसार के लिए उसके राज्यकाल में युवराज अशोक ने अवन्ति महाजनपद जीतकर उसे मौर्य साम्राज्य मे मिला लिया था, ऐसा बुद्धघोष ने समन्तपासादिका मे उल्लेख किया है परन्तु अशोक द्वारा अवन्ति विजय का अन्य किसी ग्रथ मे उल्लेख नहीं है सम्भवत वह पहले से ही मगध साम्राज्य मे था हाँ यह हो सकता है कि तक्षशिला की भाँति अवन्ति में भी बिन्दुसार के समय विद्रोह हुआ हो और अशोक ने उसे शस्त्रबल से दबा दिया हो और उस पर पुन सत्ता स्थापित की हो बिदुसार के राज्यकाल मे अशोक 11 वर्ष तक अवन्ति के कुमारपाल रहे तथा उज्जयिनी को अवन्ति की राजधानी बनाया उज्जयिनी जाते समय वे मार्ग मे विदिशा ठहरे यहाँ अशोक ने विदिशा के एक सेठ की कन्या देवी से आकर्षित होकर विवाह कर लिया इसी रानी से अशोक के पुत्र महेन्द्र तथा कन्या सघमित्रा का जन्म हुआ जिन्होने भविष्य मे बौद्ध धर्म के प्रचार मे प्रमुख रूप से भाग लिया अनुश्रुति के अनुसार अशोक ने अपनी इस वैश्यपुत्री रानी के लिए उज्जैन में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया इस स्तूप के अवशेष आज भी 'वैश्य-टेकरी' नामक टीले के रूप में विद्यमान हैं वैश्य-टेकरी के उत्खनन मे इस स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए हैं

चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार बौद्ध धर्म प्रचारार्थ अशोक ने चौरासी हजार स्तूपों का निर्माण करवाया साँची का प्रसिद्ध स्तूप अशोक के द्वारा बनाए गए इन्ही स्तूपो में से एक स्तूप था

अशोक के काल मे बनाये गए साँची के स्तूप को भविष्य में अनेक राजाओ तथा व्यक्तियों द्वारा दान देकर विस्तृत किया गया स्तूप के निकट प्राप्त एक विहार के अवशेष भी साँची में मिले हैं विद्वानो के अनुसार यह विहार सम्भवत अशोक की रानी 'देवी' तथा उसकी सहचरी भिक्षुणियों के निवास के लिए बनवाया गया था सम्भवत 'देवी' की मृत्यु के पश्चात् यह विहार बौद्ध सघ को दान कर दिया गया था साँची के अतिरिक्त अशोक द्वारा आधुनिक विदिशा, सुनारी, सतधारा, भोजपुर और अधेर में भी अनेक स्तूप निर्माण किये गये इन स्तूपो के अवशेष खोज में प्राप्त हुए है

अशोक के अनेक लघु शिलोत्कीर्ण धर्मादेश है, जिनमे से एक जबलपुर जिले के रूपनाथ नामक स्थान पर तथा दूसरा दतिया जिले के गुजर्रा नामक स्थान पर विद्यमान है रूपनाथ के धर्मादेश में अशोक ने पुरुषार्थ की महत्ता बताई है तथा गुजर्रा धर्मादेश की महत्ता यह है कि उसमें अशोक का व्यक्तिगत नाम उल्लेखित है अशोक का एक धर्मादेश साँची के स्तूप क्रमाक 1 के दक्षिण-द्वार के निकट स्थित खण्डित स्तम्भ पर भी उत्कीर्ण मिला है इन तथ्यों से स्पष्ट है कि विदिशा, साँची तथा उज्जयिनी अशोक के राजनैतिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों के मुख्य केन्द्र रहे

अशोक के राज्यकाल मे अवन्ति का कुमारामात्य कौन था, इसका कोई स्पष्ट उल्लेख नही मिलता कुछ विद्वानो के अनुसार अशोक के अतिम दिनों में पाटलिपुत्र पहुँचने के पहले सम्प्रति ही उज्जैन में कुमारामात्य था जैन ग्रथों के अनुसार उज्जयिनी मे रहकर ही सम्प्रति ने जैन धर्म मे दीक्षा ग्रहण की थी तथा यही से उसने जैन धर्म का प्रचार कार्य प्रारम्भ किया था, कुछ अन्य पुरातात्विक प्रमाणो से भी स्पष्ट हो जाता है कि मध्य प्रदेश का क्षेत्र मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत था पहला, मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों के कई स्थानो से छोटे-बडे अभिलेख मिले हैं जो मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण हैं ये स्थान हैं–आरग, कसरावद, कारीतलाई, खरवई, भैन्यपुरा तथा रामगढ दूसरा, मौर्यकाल के आहत सिक्के मध्य प्रदेश के अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं

उपर्युक्त प्रमाणो से स्पष्ट है कि मध्य प्रदेश का क्षेत्र मौर्य साम्राज्य का एक अभिन्न अग ही नही था, बल्कि मौर्य नरेशो के कार्य-कलापो का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था

जनपद काल

मौर्यकाल के अतिम चरण में भारत मे अनेक जनपद राज्य तथा नगर राज्य स्थापित हुए अभी तक जो प्रमाण उपलब्ध हुए हैं उनसे विदित होता है कि मध्य प्रदेश मे उस समय कम-से-कम सात नगर राज्य स्थापित हुए ये नगर राज्य थे–त्रिपुरी एरण महिष्मती भागिल विदिशा

उज्जयिनी एव पद्मावती इन नगर राज्यों द्वारा अपने नामों से अकित ढले अथवा ठप्पे लगे सिक्के चलाए गए आज इन सिक्कों की प्राप्ति से हमें इनके अस्तित्व का पता चला है

त्रिपुरी नगर राज्य के सिक्कों पर 300 ई पू की ब्राह्मी लिपि में 'तिपुरी' लिखा है तथा ये त्रिपुरी 'आधुनिक तेवर' तथा होशगाबाद जिले के खिडिया नामक गाँव से प्राप्त हुए हैं इसी प्रकार एरण नगर राज्य के सिक्कों पर 'एरकण्य लेख मिलता है, जो दूसरी प्रथम शताब्दी ई पू की ब्राह्मी लिपि मे उत्कीर्ण है इसके पहले मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् पूर्वी मालवा में धर्मपाल, इन्द्रगुप्त तथा शिवगुप्त नामक शासक राज्य करते थे धर्मपाल के सिक्के कनिघम को एरण मे मिले थे और ये सिक्के हाल ही मे किए गए एरण उत्खनन मे भी प्राप्त हुए हैं इन्द्रगुप्त के नाम साहित्य एक धातुखण्ड भी एरण के उत्खनन में मिला है इसी प्रकार शिवगुप्त नामाकित एक अन्य राजा की ताम्रमुद्रा विदिशा में मिली है इन सभी राजाओं के नाम तीसरी दूसरी शताब्दी ई पू की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण हैं ऐसा लगता है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् पूर्वी मालवा क्षेत्र में इन राजाओं का राज्य हो गया होगा तथा उसके पश्चात् ही एरकिण तथा विदिशा के गणराज्य स्थापित हुए होगे विदिशा के नगर राज्य के सिक्को पर ब्राह्मी अक्षरो मे 'वेदिस' अथवा 'वेदस लेख उत्कीर्ण मिलता है इसी प्रकार उज्जैन से प्राप्त उज्जयिनी चिह्नाकित अनेक सिक्के मिले हैं, जिनमे से कुछ पर ब्राह्मी अक्षरो में उत्कीर्ण 'उजयिन' स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता है महिष्मती नगर राज्य के सिक्के मुख्यत महेश्वर 'जिला पश्चिम निमाड मे किए गए खोज तथा उत्खनन में मिले हैं कुछ सिक्के उज्जैन मे भी प्राप्त हुए हैं इन पर तीसरी शताब्दी ई पू की ब्राह्मी लिपि मे 'माहिस' उत्कीर्ण है इसी प्रकार पद्मावती नगर राज्य के कुछ सिक्के पवाया से मिले हैं भागिल नामक अन्य नगर राज्य का पता भी सिक्को से ही चला है ये सिक्के होशगाबाद जिले के जमुनिया नामक गाँव मे मिले हैं

शुंग-कण्व काल

हर्षचरित तथा पुराणों के अनुसार सेनापति पुष्यमित्र ने अन्तिम मौर्य नरेश बृहद्रथ की हत्या कर मगध का सिहासन प्राप्त कर लिया था. राज्य प्राप्त कर पुष्यमित्र ने 184-85 ई पू मे जो नये राजवश की स्थापना की वह प्राचीन इतिहास में शुग वश नाम से प्रसिद्ध है शुग नरेश मौर्य साम्राज्य का केवल मध्यवर्ती भाग ही प्राप्त कर सके थे. क्योकि ठीक उसी समय दक्षिण मे सातवाहन वश तथा कलिग मे चेदि वश के प्रभुत्व का विस्तार हो रहा था

अपने शासनकाल मे पुष्यमित्र ने युवराज अग्निमित्र को विदिशा का शासक बनाकर भेज दिया था कालिदास रचित मालविकाग्निमित्र मे यही अग्निमित्र नाटक का नायक है मालविकाग्निमित्र के अनुसार अग्निमित्र ने विदर्भ के शासक यज्ञसेन के साथ युद्ध कर विदर्भ के एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया तथा अपने राज्य की सीमा नर्मदा 'वर्धा' नदी तक विस्तृत कर ली

पुष्यमित्र शुग के समय भारत पर बैक्ट्रिया के यवनों का आक्रमण हुआ मालविकाग्निमित्र अनुसार पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र ने यवनों को सिन्ध नदी के तट पर पराजित कर खदेड दिया यवन आक्रमण का नेता कौन था- डेमेट्रियस अथवा मीनेण्डर 'मिलिन्द तथा एक आक्रमण एक बार हुआ अथवा दो बार इस सम्बन्ध मे विद्वानों में मतभेद है सिन्धु नदी जिसके तट पर यवन पराजित हुए थे के समीकरण के सम्बन्ध मे भी विद्वानो में मतभेद है कुछ विद्वान् इसे काली सिन्ध नदी मानते है जो चम्बल की सहायक है तथा मध्य प्रदेश के मध्य भारत क्षेत्र में बहती है अन्य विद्वान् इसे पजाब की सिन्धु नदी मानते हैं डेमेट्रियस के कुछ मृद् मुद्राकन विदिशा के उत्खनन में यज्ञकुण्ड के साथ प्राप्त हुए थे इसी प्रकार मीनेण्डर के कुछ सिक्के बालाघाट जिले मे मिले हैं इन सिक्कों तथा मृद् मृद्राकनों से स्थानीय इतिहास पर क्या प्रकाश पड़ सकता है यह कहना कठिन है

बौद्ध अनुश्रुतियों का सहारा लेकर कुछ विद्वानों ने शुगकाल को तथा विशेष रूप से पुष्यमित्र शुग को बौद्ध द्रोही प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है, किन्तु अधिकाश विद्वान यही विश्वास करते हैं कि यह ऐतिहासिक तथ्य नहीं है साँची तथा भरहुत के स्तूपों में शुगकाल मे किए गए मुख्य परिवर्तन इस बात के ज्वलत प्रमाण हैं कि शुगकाल मे बौद्ध धर्म के साथ घोर अत्याचार नहीं हुआ जैसा कि दिव्यावदान, तारानाथ, आर्यमजूश्रीमूलकल्प आदि बौद्ध ग्रथों द्वारा प्रचलित किया गया है सतना जिले मे स्थित भरहुत का स्तूप मूलत अशोक द्वारा निर्मित करवाया गया था शुगकाल में इसकी चहार दीवारी तथा तोरण द्वार का निर्माण किया गया जैसा कि एक परिवेष्टनी के भाग पर उत्कीर्ण 'सुगन रजे लेख से पता चलता है इसी प्रकार साँची का स्तूप भी अशोक द्वारा निर्मित किया गया था शुगकाल में इसका आकार बहुत बढा दिया गया इसके चारों ओर पृथ्वी से 16 फीट ऊँची मेधी का निर्माण किया गया, जिस पर पहुँचने के लिए सीढियाँ भी बनाई गई स्तूप के ऊपर वर्गाकार वेदिका स्थापित की गयी इस वेदिका के भीतर हर्मिक बनाया गया तथा उस पर छत्र-यष्टि को खडा किया गया भविष्य मे स्तूप के चारो ओर तोरण स्थापित किए गए

पुष्यमित्र के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध मे हमारा ज्ञान अत्यन्त अल्प है इस वश का नवा नरेश भाग था इतिहासकारो के मतानुसार इस राजा का समीकरण विदिशा मे स्थित गरुड-स्तम्भ 'आजकल इसे खाम्बाबा के नाम से पुकारा जाता है पर उत्कीर्ण लेख मे उल्लिखित महाराज भागभद्र से होना चाहिए इस उत्कीर्ण लेख के

अनुसार यूनानी नरेश ऐण्टिअलसिडस ने अपने राजदूत हेलियोडोरस को भारतीय नरेश भागभद्र की राजसभा में राजदूत के रूप मे भेजा था विदिशा मे रहते हुए हेलियोडोरस भागवत धर्म का अनुयायी बन गया अत प्रभु भगवान के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन करते हुए उसने विष्णु मन्दिर के सम्मुख उपयुक्त गरुड स्तम्भ को स्थापित करवाया विदिशा से प्राप्त एक अन्य गरुड-स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख मे गौतमी पुत्र भागवत द्वारा वासुदेव के 'सादोत्तम श्रेष्ठ मन्दिर' मे महाराज भागवत के राज्यकाल के बारहवें वर्ष मे गरुडध्वज बनवाने का उल्लेख है

अतिम शुग राजा देवभूति था, जिसकी हत्या वसुदेव कण्व ने कर कण्व वश की स्थापना की इन्होंने सम्भवत 72 ई पू से राज्य करना प्रारम्भ किया मध्य प्रदेश के इतिहास के कण्व वश से सम्बन्धित किसी भी महत्वपूर्ण घटना से हम परिचित नहीं है

सातवाहन काल

कण्व वश की शक्ति का नाश कर आन्ध्रदेशीय सातवाहनो ने 27 ई पू के लगभग अपने साम्राज्य की स्थापना की पुराणों मे इस वश के सस्थापक का नाम सिन्धुक शिशुक और शिप्रक मिलता है इसे भृत्य भी कहा गया है जिसस विद्वानो ने अनुमान लगाया है कि स्वतन्त्र राजा होने के पूर्व वह सामन्त रहा होगा पुराणों के अनुसार शिशुक का भाई कृष्ण उसका उत्तराधिकारी था सम्भवत उसका अधिकार नासिक क्षेत्र पर था

सातवाहन वश का सर्वप्रथम पराक्रमी राजा शातकर्णी था पुराण इसे कृष्ण पुत्र कहते है शातकर्णी की उपलब्धियों के सम्बन्ध मे उसकी रानी नागानिका के नानाघाट-अभिलेख से कुछ प्रकाश पडता है साँची के बडे स्तूप की वेदिका पर उत्कीर्ण एक लेख से शातकर्णी के पूर्वी मालवा क्षेत्र पर अधिकार का पता चलता है अभिलेख मे राजा सिरिसातकर्णि के समय 'वासिठिपुत्र आनद' नामक किसी वरिष्ठ अधिकारी द्वारा दिए गए दान का उल्लेख है डॉ ब्यूलर के अनुसार नानाघाट अभिलेख में जिस दक्षिणापति सातकर्णि का उल्लेख है साँची का अभिलेख उसी के समय का है कुछ सातवाहन सिक्कों पर 'राजा सिरि सात' का नामाकन मिलता है रैप्सन महोदय ने सिरि सात का समीकरण शातकर्णी के साथ किया अधिकाश विद्वान इस मत को स्वीकार करते है कि यह मुद्रा राजा शातकर्णी द्वारा अवन्ति देश पर अधिकार करने के बाद सीघ्र ही प्रसारित की गयी मुद्राओ मे से एक है सिरि सात नामाकित सिक्के उज्जैन तथा देवास के अतिरिक्त औरगाबाद जिले के जमुनिया नामक स्थान से तथा नवलपुर जिले के तेवर, भेडाघाट और त्रिपुरी मे किये गये 1951-52 तथा 1968-69 के उत्खनन मे प्राप्त हुए है अत विद्वानो मे सातवाहन साम्राज्य का विस्तार केवल मालवा तक ही नही बल्कि जबलपुर प्रदेश तक हो गया था

शातकर्णी की मृत्यु के समय उसके दोनों पुत्र शक्तिश्री और वेदश्री अल्प वयस्क थे अत शातकर्णी की रानी नागानिका ने अपने पुत्रो के सरक्षक के रूप मे राज्य किया पुराणो मे प्राप्त वशावली के अनुसार आध्र कुल के इस छठे राजा का नाम भी शातकर्णी था विद्वानों ने इस शातकर्णी द्वितीय के नाम से पुकारा है उज्जयिनी से रजोसिरि सतस नामाकित सिक्के बडी सख्या मे प्राप्त हुए है कुछ विद्वानों के अनुसार ये सिक्के सम्भवत इसी द्वितीय शातकर्णी के काल में प्रचलित किए गए थे क्योंकि पौराणिक परम्परा के अनुसार इसने 56 वर्षों से भी अधिक राज्य किया, अत इसकी मुद्राओं का अधिक मात्रा में प्राप्त होना स्वाभाविक है

गौतमीपुत्र शातकर्णी सातवाहन वश का सबसे बडा और पराक्रमी राजा था उसके पुत्र वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी के नासिक अभिलेख मे उसकी सफलताओं का वर्णन मिलता है इस अभिलेख मे उसे सातवाहन कुल का फिर से स्थापित करने वाला क्षत्रियों के दर्प और मान का मर्दन करने वाला शक यवन और पल्लवों का नाश करने वाला तथा अहरात वश का निर्मूलन करने वाला कहा गया है उसके राज्य के अन्तर्गत कौन-कौनसे प्रदेश थे? इसकी सूची देते हुए बतलाया गया है कि उसके साम्राज्य में अनूप (माहिष्मती—आधुनिक महेश्वर के आस-पास के निमाड़), आकर (पूर्वी मालवा) तथा अवन्ति (पश्चिमी मालवा) भी शामिल थे उज्जैन से प्राप्त गौतमीपुत्र शातकर्णी के सिक्के इस बात को और पुष्ट करते है उसका शासनकाल 106 से 130 ई तक था

पुराणो के अनुसार गौतमीपुत्र की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी राजा हुआ पुराण टालमी, रुददामन का अभिलेख सिक्के आदि अनेक साक्षी मे इस राजा का उल्लेख मिलता है मिलसा से प्राप्त उसके चाँदी सीसे के सिक्के तथा देवास मे उपलब्ध उसके सिक्कों से ज्ञात होता है कि उसने मध्यभारत के एक बड भाग पर अपना प्रभुत्व कायम रखा उसका शासनकाल कम से-कम 130 ई से 154 ई तक था

सातवाहन वश का अतिम प्रतापी राजा यज्ञश्री शातकर्णी था जिसने कम से कम 165 ई से 193 ई तक राज्य किया मध्य प्रदेश मे इसके सिक्के बसनगर 1913-14 मे किए गए उत्खनन मे तथा तेवर (त्रिपुरा) और देवास से प्राप्त हुए है यज्ञश्री शातकर्णी के पश्चात सातवाहन वश मे कोई ऐसा पराक्रमी राजा न हुआ जो अपने वश को सरक्षित रख सकता अत उसके पश्चात् सातवाहन राज्य की उत्तरोत्तर अवनति होती गई और सातवाहनो का साम्राज्य आभीर इक्ष्वाकु तथा पल्लवों के हाथ चला गया अवनति काल से सम्बन्धित कुछ सातवाहन नरेशों का नाम हमे उनके द्वारा चलाए गए सिक्कों से ज्ञात होता है उदाहरणस्वरूप कुम्भ शातकर्णी का एक सिक्का देवास मे मिला है इनके अतिरिक्त सातवाहनो से सम्बन्धित कई

अस्पष्ट सिक्के महेश्वर तथा त्रिपुरी के उत्खनन में आवरा तथा विदिशा के धरातल खोज में प्राप्त हुए हैं

सातवाहन काल में भारत से सम्बन्धित कुछ अन्य अभिलेख मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों से भी प्राप्त हुए हैं

सातवाहन काल में भारत का विदेशों से विशेषकर रोम से, व्यापार बढ़ा था इसलिए रोम देश के सिक्के भारत में आने लगे थे ये सिक्के आवरा चकरवेड़ा तथा विलासपुर में प्राप्त हुए हैं 1952 के त्रिपुरी के उत्खनन में मिट्टी का एक रोमन पदक तथा रोमन मृत्पात्र अंतिम सातवाहन स्तर में मिले हैं सातवाहनों के माध्यम से सम्बन्ध के अभाव में इन सिक्कों का यहाँ प्राप्त होना असम्भव था

हिन्द-यूनानी उत्कर्ष

दूसरी प्रथम शताब्दी ई पू के बीच भारत पर यूनानी नरेशों का आक्रमण हुआ जिसके फलस्वरूप उत्तर पश्चिम सीमांत प्रदेश सिन्ध पंजाब तथा उत्तर प्रदेश का कुछ भाग विदेशियों के अधिकार में चला गया जहाँ तक मध्य प्रदेश के किसी क्षेत्र पर हिन्दू यूनानियों के अधिकार का प्रश्न है, अभी तक कोई ऐसा प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि हिन्दू यूनानियों का साम्राज्य यहाँ तक विस्तृत था बालाघाट से अवश्य ही मिनेन्डर के तथा अन्य कुछ हिन्दू यूनानी शासकों के सिक्के मिले हैं इसी प्रकार स्व आडवानी द्वारा मध्यभारत के कुछ स्थानों से विभिन्न हिन्दू यूनानी नरेशों के सिक्के प्राप्त कर अपने संग्रह में एकत्र किए गए परन्तु इन अपर्याप्त प्रमाणों के आधार पर मध्य प्रदेश के किसी क्षेत्र पर हिन्दू यूनानी नरेशों का अधिकार मान लेना कठिन है

शक-क्षत्रप काल

प्रथम शताब्दी ई पू में उत्तर पश्चिम भारत में यूनानी राज्य का अंत हो गया उसके स्थान पर शक नामक एक अन्य विदेशी जाति ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया शक नरेशों ने भारत के एक विस्तृत प्रदेश पर सीधे अथवा अपने क्षत्रपों (अर्थात् शासकों) के माध्यम से ईसा की तीसरी शताब्दी तक राज्य किया शकों के प्रारम्भिक नरेशों में माअस, आजस प्रथम, एजिलिसेस आजेस द्वितीय के नाम उल्लेखनीय हैं माअस तथा आजस प्रथम के कुछ सिक्के इंदौर के स्व आडवानी द्वारा अपने संग्रह में एकत्र किए गए पश्चिम भारत के शकक्षत्रपों का मध्य प्रदेश के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान रहा

पश्चिम भारत के क्षत्रप के दो वंश थे पहला वंश क्षहरात वंश के नाम से प्रसिद्ध था जिसके दो महत्वपूर्ण क्षत्रपों का नाम भूमक तथा नहपान था भूमक का इतिहास एकमात्र उसकी मुद्राओं से ज्ञात होता है उसकी मुद्राएँ गुजरात काठियावाड़ तथा मालवा के प्रदेशों में मिली हैं जिनसे प्रकट होता है कि इन प्रदेशों पर उसका अधिकार था शिवपुरी के मुनिराज संग्रह में उसके ताँबे के कुछ सिक्के संगृहीत हैं

क्षहरात वंश का सबसे प्रतापी क्षत्रप नहपान था जैन साहित्य में इसका उल्लेख नरवाहन अथवा नवबाहन के रूप में हुआ है 'पेरिप्लस ऑफ दी एरिथियन सी' नामक पुस्तक के लेखक ने उसका वर्णन नैम्बैनस के नाम से किया है नहपान के दामाद उषवदात के अभिलेखों में आए हुए स्थान नामों से पता चलता है कि नहपान का राज्य शूर्पारक 'उत्तरी कोंकण' से लेकर प्रभास 'काठियावाड़ मंदसौर, उज्जैन और अजमेर तक विस्तृत था

पेरिप्लस के लेखक के अनुसार नहपान की राजधानी मिन्नगर थी यह एरिआक में थी मिन्नगर को कुछ विद्वान मंदसौर मानते हैं तथा कुछ विद्वान दोहद कुछ विद्वान एरिआक से अपरान्तिका समझते हैं तथा इसके विरुद्ध कुछ लोग एरिआक का समीकरण आर्यावर्त से करते हैं जोगलथम्बी से प्राप्त नहपान की पुनर्मुद्राकित सिक्कों से पता चलता है कि सातवाहन नरेश गौतमीपुत्र शातकर्णी ने नहपान को पराजित किया था नहपान के इस प्रकार के चाँदी के सिक्के जिन्हें गौतमीपुत्र शातकर्णी द्वारा पुनर्मुद्राकित किया गया, शिवपुरी में प्राप्त हुए हैं जैसा कि हम देख चुके हैं नहपान के पराजित होने पर मालवा पर कुछ समय तक सातवाहनों का प्रभुत्व स्थापित हो गया नहपान क्षहरात वंश का अंतिम क्षत्रप था

उज्जैन से 'महू' 'दास' तथा सोम नामक शासकों के सिक्के मिले हैं कुछ विद्वान् इन्हें मालवा के भूमक वंश के शकक्षत्रपों के पूर्वज मानते हैं इसी प्रकार क्षहरात का एक ताँबे का सिक्का शिवपुरी के मुनिराज संग्रह में संरक्षित है इसके सम्बन्ध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं

पश्चिम भारत के शकक्षत्रपों के दूसरे वंश का नाम कार्दमक था इस वंश का संस्थापक यसोमतिक का पुत्र चष्टन था टालमी के अनुसार चष्टन की राजधानी उज्जयिनी थी अधो अभिलेखों से प्रकट होता है कि वह कच्छ तथा समीपवर्ती कुछ अन्य भूखंडों का शासक था उसकी मुद्राएँ जूनागढ और गुजरात में प्राप्त हुई हैं जिससे स्पष्ट है कि ये प्रदेश उसके अधीन थे मध्य प्रदेश में उसके सिक्के उज्जैन तथा शिवपुरी में मिले हैं

चष्टन का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जयदामन स्वतंत्र रूप से राज्य न कर सका

उसके राज्य क्षेत्र में पूर्व और अपरान्त आकर तथा अवन्ती (पूर्वी और पश्चिमी मालवा) अनूपनिभृत (नर्मदा प्रदेश) आनर्त (द्वारका का चतुर्दिक प्रदेश) सौराष्ट्र (जूनागढ का चतुर्दिक प्रदेश) स्वभ्र (साबरमती नदी का तटवर्ती प्रदेश) मरु (मारवाड़) कच्छ, सिन्धु सौवीर (सिन्धु नदी का डेल्टा) कुकुर (सिन्धु नदी और पारियात्र पर्वत के बीच का प्रदेश) उपरात (उत्तरी कोंकण) निषाद (सरस्वती और पश्चिमी विन्ध्य का प्रदेश) और कुछ अन्य प्रदेश क्षेत्र उल्लेखनीय है

अपने दादा की तरह रुद्रदामन ने भी अपनी राजधानी उज्जयिनी मे ही रखी तथा यही से अपने साम्राज्य का विस्तार किया

रुद्रदामन के पश्चात् उज्जयिनी में ही उसके वशजों की राजधानी रही उनका इतिहास तथा आपसी सम्बन्धो को समझने के लिए उज्जयिनी के क्षत्रपो के वश वृक्ष को समझना आवश्यक है

रुददामन के अनेक उत्तराधिकारियों के सिक्के मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं. महाक्षत्रप रुद्रसिह प्रथम के चाँदी के सिक्के शिवपुरी से प्राप्त हुए हैं रुद्रसेन प्रथम के सिक्के शिवपुरी, साँची तथा सिवनी से प्राप्त हुए हैं दामजदश्री द्वितीय के सिक्के आवरा के उत्खनन में मिलते हैं दामसेन के सिक्के शिवपुरी में सगृहीत किए जाते हैं वीरदामन के सिक्के बेसनगर के उत्खनन में मिले हैं विजयसेन के सिक्के गोंदरमऊ में प्राप्त क्षत्रप सिक्कों की निधि में मिले हैं रुद्रसेन द्वितीय के सिक्के केवलारी, गदरमऊ बेसनगर तथा साँची में मिले हैं विश्वसिह के सिक्के साँची से प्राप्त हुए है भर्तृदामन के सिक्के केवलारी गोंदरमऊ तथा साँची और विश्वसेन के सिक्के गोंदरमऊ तथा साँची मे मिले हैं छिदवाडा जिले में सोनपुर नामक स्थान से पश्चिम भारत के क्षत्रप शासकों की 670 सिक्कों की एक निधि प्राप्त हुई है, जिसमें सघदामन को छोड रुद्रसेन प्रथम से लेकर स्वामी रुद्रसेन तृतीय तक सभी शासकों के सिक्के मिले हैं इस निधि से महाकौशल के क्षेत्र पर भी पश्चिम भारत के क्षत्रप शासकों का प्रभाव जान पडता है

कार्दमक वश के इन क्षत्रपों के अतिरिक्त परवर्ती क्षत्रपों के कुछ सिक्के तथा अभिलेख मध्य प्रदेश के कुछ स्थानो से प्राप्त हुए हैं रुद्रसेन तृतीय के सिक्के आवरा उत्खनन गोंदरमऊ तथा साँची मे मिले हैं इसी प्रकार रुद्रसिह द्वितीय तथा रुद्रसिह तृतीय के सिक्के क्रमश साँची और गोंदरमऊ मे प्राप्त हुए हैं पिछोर से श्रीदामन के सिक्के मिले हैं अभिलेखों मे पश्चिम भारत के क्षत्रपों से सम्बन्धित एक अभिलेख उज्जैन से प्राप्त हुआ है तथा विदिशा एरण क्षेत्र में राज्य करते हुए एक नए शक वश के शासक श्रीधर वर्मन का एक अभिलेख एरण से तथा दूसरा साँची के निकट कानाखेरा से प्राप्त हुआ है इसके अतिरिक्त आभीर ईश्वरदत्त का एक सिक्का बेसनगर से प्राप्त हुआ है यहाँ उल्लेखनीय है कि पश्चिम भारत के क्षत्रपों के मालवा क्षेत्र पर शासनकाल में कुछ थोडे समय के लिए आभीरो का राज्य स्थापित हो गया था तत्पश्चात् आभीरो का यहाँ से खदेड दिया गया तथा क्षत्रप शासन पुनर्स्थापित हो गया उपर्युक्त सिक्को तथा अभिलेखों से मध्य प्रदेश के पूर्व गुप्तकाल के इतिहास पर प्रकाश डालने में सहायता मिलती है

कुषाण काल

जब मध्य प्रदेश में सातवाहनो और शकक्षत्रपो के बीच सघर्ष चल रहा था, उस समय भारत पर उत्तर-पश्चिम की ओर से विदेशियो का एक नया आक्रमण हुआ ये विदेशी पश्चिम चीन में बसने वाली यू-ची नामक जाति की पाँच शाखाओं में से एक शाखा थी, जो कुई-शाग अथवा कुषाण कहलाती थी प्रथम शताब्दी ई पू में इस जाति ने भारत मे प्रवेश किया

कुषाण वश का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण राजा कुजुल कैडफिसेस था कुजुल कैडफिसेज के मृत्यु के उपरात उसका पुत्र वीम कैडफिसेज राज्याधिकारी हुआ वीम कैडफिसेज का एक सिक्का विदिशा से प्राप्त हुआ है शहडोल में कुषाण शासकों के 757 सिक्कों की एक बडी निधि प्राप्त हुई थी इसमे वीम कैडफिसेज के भी 44 सिक्के मिले थे, परन्तु क्या इन सिक्को के आधार पर वीम कैडफिसेज के साम्राज्य का विस्तार मध्य प्रदेश तक मान लिया जाए, यह कहना कठिन है

वीम कैडफिसेज का उत्तराधिकारी कनिष्क प्रथम था अधिकाश विद्वान् इसके राज्यारोहण की तिथि 78 ई मानते हैं, जब उसके द्वारा प्रचलित शक सवत् का प्रारम्भ हुआ छत्तीसगढ में उसके सिक्के बिलासपुर जिले मे स्थित झाझापुरी नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं शहडोल से प्राप्त उपर्युक्त कुषाण शासको के सिक्को की निधि मे कनिष्क प्रथम के 324 सिक्के मिले हैं

कनिष्क प्रथम का उत्तराधिकारी वासिष्क था उसके शासनकाल का एक अभिलेख मथुरा मे तथा दूसरा साँची मे प्राप्त हुआ प्रथम लेख की तिथि 24 और दूसरे की 28 है

वासिष्क के बाद हुविष्क सिहासन पर बैठा इसके अनेक सिक्के और अभिलेख मिले हैं जिनसे ज्ञात होता है कि उसका साम्राज्य पश्चिम मे काबुल उत्तर में कश्मीर तथा पूर्व मे मथुरा तक विस्तृत था मध्य प्रदेश के एक बडे भाग पर भी उसके साम्राज्य के विस्तार का पता लगता है जैसा कि झाझापुरी, शहडोल तथा हरदा से प्राप्त उसके सिक्कों से ज्ञात होता है हुविष्क की तिथियाँ 26 से 60 तक मिली है जिससे प्रकट होता है कि उसने कम-से-कम 138 ई तक राज्य किया

आरा से प्राप्त अभिलेख एक में कनिष्क का उल्लेख मिलता है जिसकी तिथि 41 है अधिकाश विद्वान् इसे कनिष्क द्वितीय मानते है जिसने हुविष्क के साथ राज्य किया होगा इस कनिष्क द्वितीय अथवा कनिष्क तृतीय का एक सिक्का होशगाबाद जिले के हरदा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है

हुविष्क के पश्चात् वासुदेव प्रथम कुषाण साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना इसकी तिथियाँ 67 से 98 तक मिलती है जिससे प्रकट होता है कि उसने कम से-कम 176 ई तक राज्य किया इसके द्वारा प्रचलित एक ताँबे का सिक्का

जबलपुर जिले में स्थित तेवर (प्राचीन त्रिपुरी) नामक स्थान से प्राप्त हुआ है इस क्षेत्र पर कुषाण साम्राज्य के आधिपत्य के और प्रमाण तेवर के निकट भेड़ाघाट से प्राप्त कुषाणकालीन दो मूर्ति लेख तथा निकटवर्ती घाट से प्राप्त कुषाणकालीन गाधार कला की बौद्ध प्रतिमाओ की प्राप्ति से होता है

वासुदेव प्रथम के उत्तराधिकारी कनिष्क तृतीय तथा वासुदेव द्वितीय हुए मध्य प्रदेश के किसी भी भाग पर इन दोनो शासकों के अधिकार का कोई भी प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है वासुदेव द्वितीय इस वश का अंतिम नरेश प्रतीत होता है, जिसके शासनकाल के पश्चात् इस वश का पूर्णत विलोप हो गया

नाग वंश

दूसरी शताब्दी ई के अतिम चरण मे जब मध्यभारत के दक्षिण क्षेत्र में राजनैतिक उथल-पुथल चल रही थी, उस समय विदिशा-ग्वालियर क्षेत्र में एक नये राजवश का उदय हुआ जो नागवश के नाम से प्रसिद्ध है कुषाण वश के अतिम नरेशों की कमजोरी का पूरा लाभ उठाकर इस वश के राजाओ ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया तथा विदेशियों को भारत से खदेडने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया

विष्णु पुराण में पद्मावती, कातिपुरी तथा मथुरा के नव नाग शासको का उल्लेख आया है सिक्कों को आधार बनाकर जो जानकारी अभी तक उपलब्ध है, उससे विद्वानों का मत है कि इस वश की स्थापना विदिशा मे हुई तथा कालान्तर मे यही से पद्मावती कातिपुरी तथा मथुरा में गये अधिकाश विद्वान् यह मानते है कि इन तीन स्थानों के नाग एक ही वश से सम्बन्धित थे

विद्वानों के अनुसार नाग वश का सस्थापक वृषनाग था, जिसने दूसरी शताब्दी ई के अतिम भाग मे विदिशा मे इस वश की स्थापना की वृषनाग का एक सिक्का यहाँ से प्राप्त हुआ था, जिसे ग्वालियर पुरातत्व सग्रहालय मे सरक्षित किया गया विदिशा नाग वश का एक महत्वपूर्ण गढ था 1913-14 के बेसनगर उत्खनन मे नागों के सिक्के मिले थे आज भी यहाँ नागो के सिक्के अक्सर मिल जाते है

वृषनाग के पश्चात् सम्भवत भीमनाग का शासन हुआ था ऐसा लगता है कि उसने अपनी राजधानी को विदिशा से पद्मावती स्थानातरित किया उसके सभी उत्तराधिकारियो की राजधानी पद्मावती ही रही जैसा कि उसके सभी उत्तराधिकारियो के सिक्कों की पवाया (प्राचीन पद्मावती) से प्राप्ति से ज्ञात होता है जायसवाल के अनुसार, उसका शासनकाल 210 ई से 230 ई के बीच माना जा सकता है

विदिशा तथा पद्मावती के अतिरिक्त पुराणो के अनुसार कातिपुरी (आधुनिक कुतवार) मे भी नागों की एक राजधानी थी कुतवार से प्राप्त नाग शासको के 18959 सिक्कों की एक विशाल निधि से भी यही बात प्रमाणित होती है नागवश का इतिहास आज भी अस्पष्ट है इस ओर अधिक शोध अपेक्षित है

बोधि तथा मघ राजवंश

ईसा की दूसरी-तीसरी शती में त्रिपुरी क्षेत्र (आधुनिक तेवर, जिला जबलपुर) पर बोधिवश के राजाओं के शासन का पता चलता है त्रिपुरी उत्खनन में इस राजवश के जो मृद-मुद्राकन प्राप्त हुए हैं, उनसे इस वश के चार शासक श्री बोधि, वसुबोधि, चद्रबोधि तथा शिवबोधि के नाम ज्ञात हुए हैं इस राजवश के कुछ सिक्के जबलपुर के डॉ महेशचद्र चौबे के निजी सग्रह में सरक्षित हैं

त्रिपुरी उत्खनन मे प्राप्त एक मिट्टी की मुद्रा पर महासेन नामक शासक का नाम अकित मिलता है महासेन 350 ई के लगभग त्रिपुरी क्षेत्र पर शासन करता होगा महासेन का बोधि वश से कुछ सम्बन्ध था अथवा नही, यह अज्ञात है

लगभग इसी समय मध्य प्रदेश के बघेलखण्ड क्षेत्र पर मघ वश के शासकों का आधिपत्य था इस वश का प्रथम शासक भीमसेन था मघ वश के प्रसिद्ध राजा भद्रमघ और शिवमघ थे इनके तथा मघवशी कई अन्य शासको के सिक्के, मुहर तथा शिलालेख कौशाम्बी एव भटा के अतिरिक्त बाधवगढ (जिला शहडोल) से प्राप्त हुए हैं मघवशी राजाओ ने कुषाणो का प्रतिरोध करने मे विशेष कार्य किया, जिससे कुषाण सत्ता महाकौशल क्षेत्र मे नही जम पाई

गुप्तकाल

तीसरी शताब्दी ई के अन्त तथा चौथी के प्रारम्भ मे उत्तर भारत में कोई सर्वोपरि राजनीतिक शक्ति नही थी हमारा देश कई छोटे-छोटे नृप-तत्रो और प्रजातत्र राज्यों मे बँटा था ऐसी परिस्थिति का लाभ उठाकर साकेत प्रयाग क्षेत्र के आसपास श्रीगुप्त नामक राजा ने एक राजवश की स्थापना की जो गुप्त वश के नाम से प्रसिद्ध हुआ गुप्त युग प्राचीन भारत के इतिहास मे स्वर्णयुग कहलाता है

श्रीगुप्त का पुत्र घटोत्कच गुप्त तथा उसका पुत्र चद्रगुप्त प्रथम था चद्रगुप्त प्रथम ने अपने वीरतापूर्ण कृत्यों द्वारा गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया तथा अपने राज्य के भावी उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त किया

चद्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने अपनी दिग्विजयों द्वारा गुप्त साम्राज्य की सीमा को भारत के एक बडे भाग पर फैलाने का प्रयत्न किया है इलाहाबाद से प्राप्त उसके शासनकाल में उत्कीर्ण स्तभ लेख मे उसकी विजयों का उल्लेख किया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि मध्य प्रदेश के इतिहास मे उसका बडा योगदान रहा समुद्रगुप्त के प्रबल पराक्रम से सीमावर्ती राजाओं की भाँति गणराजे भी उपहार लेकर राजसभा मे उपस्थित होते थे तथा अधीनता स्वीकार की थी ये नौ गणराज्य थे–मालव

अर्जुनायन, यौधेय, मद्रक, आभीर, प्रार्जुन सनकानीक, काक और खरपरिक इनमे से कुछ गणराज्य मध्य प्रदेश से सम्बन्धित थे आभीर मुख्यत पश्चिमी राजस्थान और महाराष्ट्र में बसे थे, किन्तु उनकी एक बस्ती मध्य प्रदेश में भी थी, जिसे उनके नाम पर आज भी अदिखारा कहा जाता है यह स्थान विदिशा और झाँसी के बीच मे है यही स्थान सम्भवत वह प्रदेश है, जिसका प्रयाग प्रशस्ति मे उल्लेख है

इसी पकार सनकानीक विदिशा के पास-पड़ोस में ही कहीं बसे होगे सनकानिक जाति के एक सामन्त शासक ने चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल मे विदिशा के निकट स्थित उदयगिरि पहाडी के वैष्णव गुहा मदिर मे एक दान-लेख अकित कराया था, जो आज भी उपलब्ध है

विदिशा में 20 मील उत्तर की ओर काकपुर नामक गाँव है इतिहासज्ञो ने इसे काकों की राजधानी से समीकरण किया है इसी प्रकार खरपरिकों को मध्य प्रदेश के दमोह जिले मे रखा गया है

अन्त मे प्रयाग प्रशस्ति में उन तीन विदेशी राजाओ का उल्लेख किया गया है, जिन्होने आत्म निवेदन, उपहार में कन्या की भेट आदि देकर समुद्रगुप्त से मित्रता कर ली थी तथा उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी ये तीन नरेश थे -कुषाण वशज, दैवपुत्रशाहिशाहानुशाहि, शक-मुरुण्ड और सिंहल इनमे से शक-मुरुण्ड सम्भवत पश्चिमी क्षत्रप के मालवा शाखा को अथवा मालवा मे बसे उसके किसी गौण शाखा की ओर सकेत करती है

एरण से प्राप्त एक अन्य अभिलेख से एरण क्षेत्र समुद्रगुप्त के साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण केन्द्र प्रतीत होता है इस खण्डित अभिलेख में ऐरिकिण प्रदेश में स्थित इस नगर को 'स्वभोग-नगर' के नाम से पुकारा गया है जहाँ सम्भवत समुद्रगुप्त अपनी वृद्धावस्था में अपनी रानी, पुत्र तथा पौत्रो के सहित विश्राम करने आया था एरण के प्राकृतिक सौदर्य ने अवश्य ही समुद्रगुप्त को आकर्षित किया होगा, अत उसने इसे अपना विश्राम-स्थल बनाया होगा

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि समुद्रगुप्त ने अपने दिग्विजयो द्वारा मध्य प्रदेश के एक बडे भाग पर आधिपत्य स्थापित कर गुप्त साम्राज्य के अतर्गत कर लिया था बम नाला तथा सकौर से प्राप्त समुद्रगुप्त के सिक्को से इस तथ्य का और भी पुष्टिकरण हो जाता है

गुप्त इतिहास मे इस काल से सम्बन्धित 'काच' नामक शासक के कुछ सिक्के मिले है मध्य प्रदेश मे ये सिक्के विदिशा तथा सकौर स प्राप्त हुए है 'काच' कौन था, इतिहासज्ञों मे इस पर गहरा मतभेद है कुछ इतिहासज्ञ इसे समुद्रगुप्त ही मानते है अन्य समुद्रगुप्त का भाई अथवा पुत्र मानत है इस सम्बन्ध मे अभी भी निश्चित मत उपलब्ध नहीं है

गुप्त अभिलेख के अनुसार समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र चद्रगुप्त द्वितीय हुआ कुछ वर्ष पूर्व तक इतिहासज्ञ गुप्त अभिलेखों के इस कथन को सर्वसम्मति से स्वीकार करते थे, परन्तु विशाखदत्त कृत देवीचद्र गुप्तम नामक लुप्त नाटक के कुछ अशों की उपलब्धि से तथा कुछ अन्य प्रामाणिक साक्ष्यों के आधार पर अब इतिहासज्ञ इस बात को मानने लगे हैं कि समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी रामगुप्त नामक राजा हुआ, जो चद्रगुप्त द्वितीय का बडा भाई था मध्य प्रदेश में रामगुप्त के ताँबे के सिक्के मुख्यत एरण तथा विदिशा मे मिले हैं ये सिक्के सिंह तथा गरुड प्रकार के हैं, जिन पर गुप्त लिपि मे रामगुप्त का नाम लिखा मिलता है कुछ सिक्कों पर गुप्त शासन चिह्न गरुड ध्वज भी बना मिलता है हाल ही में विदिशा से प्राप्त तीन जैन तीर्थंकर प्रतिमाओ पर उत्कीर्ण लेखों में महाराधिराज उपाधि सहित रामगुप्त के नामोल्लेख से अब इतिहासज्ञो में यह विश्वास दृढ हो रहा है कि रामगुप्त गुप्त सम्राट् ही था विदिशा का कोई अन्य स्थानीय शासक नहीं, जैसा कि कुछ विद्वानों का मत था वह चद्रगुप्त द्वितीय का बडा भाई था जिसके सम्बन्ध मे अनेक साहित्यिक उल्लेख मिलते हैं इन उल्लेखो के अनुसार शकों द्वारा पराजित होकर रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को एक राजा के हाथों में समर्पित करना स्वीकार कर लिया था परन्तु उसके छोटे भाई चद्रगुप्त ने हस्तक्षेप कर गुप्त साम्राज्य की प्रतिष्ठा को बचा लिया उसने केवल शक राजा की ही हत्या नहीं की, बल्कि अपने बडे भाई को भी मार डालने में सफल हुआ साम्राज्य का अधिकारी होकर उसने अपने बडे भाई की विधवा पत्नी से विवाह कर लिया

चन्द्रगुप्त द्वितीय 366-67 ई के लगभग मगध राजसिंहासन पर बैठा अपने पिता की तरह वह भी पराक्रमी होने के कारण उसने कई अभियान किये विदिशा क्षेत्र में किए गए उसके एक अभियान का पता विदिशा के निकट स्थित उदयगिरि पहाडी में एक गुफा में उत्कीर्ण उसके सन्धि-विग्रहीक (युद्ध तथा शाति के मत्री) वीरसेन के अभिलेख मे चलता है इस अभिलेख में कहा गया है कि यह मत्री पाटलिपुत्र का रहने वाला था और वह अपने स्वामी के साथ जबकि वह सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने की धुन मे व्यस्त था यहाँ आया था इससे स्पष्ट है कि द्वितीय चद्रगुप्त ने अपने साम्राज्य के दक्षिण-पश्चिम भाग की ओर सैनिक अभियान किया था

उदयगिरि गुफा मे चद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल का गुप्त सवत् 82 (401-2 ई) का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है, जिसमे चद्रगुप्त के एक सामन्त किसी सनकानिक महाराज के द्वारा दान दिए जाने का उल्लेख है उदयगिरि के अमृत गुफा के एक अन्य अभिलेख में जो बहुत बाद का वि स 1093 का है, चद्रगुप्त विक्रमादित्य का नाम आया है मूलत चद्रगुप्त द्वारा निर्मित किसी विष्णु मदिर के पुन निर्माण का कार्य बाद में किया गया था, ऐसा इस अभिलेख का अभिप्राय है विदिशा के निकट साँची के स्तूप से प्राप्त एक अन्य अभिलेख मे, जो गुप्त सवत् 93

(412-13 ई) का है आम्रकार्दव द्वारा काकनादबोट (अर्थात् साँची) के महाविहार के आर्यसघ को दो दान देने का उल्लेख है आम्रकार्दव चद्रगुप्त द्वितीय का एक कर्मचारी था जिसने अनेक युद्धो मे कीर्ति तथा विजय ध्वज उपलब्ध किए थे

पूर्वी मालवा के एक ही क्षेत्र मे चद्रगुप्त द्वितीय के एक मत्री, एक सामन्त तथा एक सैनिक अधिकारी की उपस्थिति इस क्षेत्र में चद्रगुप्त की दीर्घकालीन अभियान की ओर सकेत करता है

मालवा क्षेत्र के अतिरिक्त मध्य प्रदेश के अन्य भागो पर चद्रगुप्त द्वितीय के साम्राज्य के विस्तार का पता उसके सिक्को की प्राप्ति से होता है, जो पट्टन बमनाला, सकौर, सिवनी सिहोर तथा हरदा में मिले है

चद्रगुप्त द्वितीय का उत्तराधिकारी कुमारगुप्त प्रथम 415 ई के लगभग मगध के राजसिहासन पर बैठा और 40 वर्षों से भी अधिक समय तक राज्य करता रहा उसने अपने पिता से उत्तराधिकार मे प्राप्त विशाल साम्राज्य को अक्षुण्ण बनाए रखा

अभिलेखो ने उसके कुछ राज्यपालो और सामन्तो के नाम सुरक्षित रखे हैं, जो मालवा क्षेत्र में थे गुना जिले के तुमेन नामक स्थान से प्राप्त गुप्त सवत् 116 के शिलालेख मे कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल मे तुम्बबन के शासक घटोत्कच गुप्त का उल्लेख आया है इसी प्रकार मदसौर से प्राप्त मालव सवत् 493 के अभिलेख मे कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल मे उसके एक सामन्त सेनापति बधु वर्मा के दशपुर (मदसौर) में शासन करने का उल्लेख आया है बधु वर्मा विश्व वर्मा का पुत्र था विश्व वर्मा के पिता का नाम नर वर्मा था तथा पितामह का नाम सिह वर्मा जो जय वर्मा का पुत्र था नर वर्मा सम्भवत चद्रगुप्त विक्रमादित्य के अतर्गत सामन्त था नर वर्मा के मालव सवत् 461 तथा [illegible] के अभिलेख मदसौर से प्राप्त हुए हैं इन अभिलेख स गुप्तकाल क [illegible] तत्र पर प्रकाश पडता है उदयगिरि से प्राप्त गुप्त सवत् 106 के जैन गुफालेख में कुमारगुप्त के शासनकाल में शकर नामक किसी व्यक्ति द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख मिलता है मध्य प्रदेश के कुमारगुप्त के कुछ सिक्के भी मिले जिनसे [illegible] क्षेत्र पर कुमारगुप्त के साम्राज्य के विस्तार का पता चलता है ये सिक्के पूर्व निमाड जिले में स्थित बमनाला नामक स्थान से प्राप्त हुए है

कुमारगुप्त क शासन के अतिम चरण मे राज्य पर गभीर विपत्ति आयी, जिसे स्कन्दगुप्त ने दूर किया स्कन्द गुप्त कुमारगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी था इतिहासज्ञों द्वारा उसका राज्यकाल 455 ई 467 ई के बीच निश्चित किया गया है उसे अपने शासनकाल मे म्लेच्छो (सम्भवत हूणो) से युद्ध करना पडा, जिन्हें उसने पूर्णतया पराजित किया स्कन्दगुप्त ने अपने राज्यकाल में भिन्न-भिन्न प्रातो में शासक नियुक्त किये जिनमें से कुछ का सीधा सम्बन्ध मध्य प्रदेश के इतिहास से है मदसौर से प्राप्त मालव सवत 524 (467-68 ई) के एक अभिलेख में राजा प्रभाकर सेनाओं के सेनापति दत्तभट्ट द्वारा कुछ शिल्प रचना का उल्लेख किया गया है अभिलेख चद्रगुप्त और उसके पुत्र गोविदगुप्त का उल्लेख करता है बतलाया है कि दत्तभट्ट का पिता वायुरक्षित गोविदगुप्त का सेनापति (सेनाधिप) था परन्तु क्योकि अभिलेख तिथि उसे स्कन्दगुप्त के राज्यकाल के अतर्गत या शीघ्र पश्चात् स्थापित करती है जिससे प्रभाकर उसका राज्यपाल प्रमाणित होता है, अत इससे कई विवादास्पद समस्याएँ खडी हो उठती है इतिहासज्ञो मे इस विषय में अभी भी गहरा मतभेद है रीवा जिले के सुपिया नामक स्थान से प्राप्त स्कन्दगुप्त के शासनकाल के गुप्त सवत् 141 के स्मारक स्तम्भ लेख से स्कन्दगुप्त के विन्ध्य प्रदेश क्षेत्र पर प्रभाव का पता चलता है स्कन्दगुप्त के कुछ सोने के सिक्के दमोह जिले के सकोर नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं ये सिक्के उसके महाकौशल क्षेत्र पर प्रभाव के द्योतक है

स्कन्दगुप्त ने अपने राज्यकाल मे हुए विदेशी आक्रमण तथा अन्य झगडो के बावजूद अन्त तक विशाल गुप्त साम्राज्य पर अधिकार बनाये रखा जब 467 ई के लगभग उसकी मृत्यु हुई तो किसी को यह स्वप्न मे भी नही आया था कि इतना शक्तिशाली साम्राज्य आने वाली पीढियो के सामने आँखों देखते ही क्षीण हो जाएगा

ऐतिहासिक सकलन की वर्तमान परिस्थिति मे स्कन्द गुप्त की मृत्यु के पश्चात् गुप्त सम्राटो के इतिहास को एक निश्चित रूपरेखा दे सकना असम्भव है गहरे मतभेदो के बावजूद इतिहासज्ञो द्वारा जो अस्थायी पुनर्निर्माण उपस्थित किया गया है, उसके अनुसार स्कन्दगुप्त के पश्चात क्रमश पुरुगुप्त, बुधगुप्त, नरसिहगुप्त, कुमारगुप्त (द्वितीय अथवा तृतीय) तथा अतिम नरेश विष्णुगुप्त हुए बुधगुप्त के शासनकाल मे मध्य प्रदेश मे बुन्देलखण्ड के परिव्राजक महाराज तथा निकटवर्ती उच्चकल्प नरेश कालिजर तथा दक्षिण कोसल के पाण्डुवशी नरेश, रीवा का लक्ष्मण तथा महिष्मती का सुबन्धु जो सभी मूलत गुप्त शासकों के अधीन सामन्त थे अपने अभिलेखो मे गुप्त साम्राज्य की अधीनता का कोई भी उल्लेख नहीं करते इससे उनकी स्वतत्रता का प्रमाण मिलता है, परन्तु अभी तक फिर भी ऊपरी तौर पर गुप्त साम्राज्य का ढाँचा बना हुआ था जैसा कि एरण से प्राप्त बुधगुप्त के शासनकाल क गुप्त सवत 165 के महाराज मातृविष्णु तथा धन्यविष्णु के स्तम्भ लेख से पता चलता है परन्तु शीघ्र ही इस ढाँचे का अस्तित्व भी समाप्त हो गया जैसा कि हम एरण से ही प्राप्त स्वतत्र शासक भानुगुप्त के गुप्त सवत् 191 के अभिलेख से जान सकते है इस अभिलेख के अनुसार भानुगुप्त का अधिकारी गोपराज एरण मे हुए किसी भयकर युद्ध मे मारा गया था इतिहासज्ञो के अनुसार यह युद्ध हूण नरेश तोरमाण के विरुद्ध लडा गया था जिसने आक्रमण कर अन्तत इस प्रदेश को जीत लिया

एक ओर हूणो का विदेशी आक्रमण हुआ तो दूसरी ओर मालवा के यशोधर्मन जैसे शासक विद्रोह घोषित कर स्वतन्त्र हो गये गुप्त साम्राज्य के अतिम नरेश इस विकट परिस्थितियो का मुकाबला नही कर सके जिसके फलस्वरूप लगभग छठी शताब्दी के मध्य मे गुप्त वश की प्रभुता का केवल कलिग को छोड भारत के अन्य भाग मे लोप हो गया

वाकाटक वंश

वाकाटक राजवश के मूलस्थान के सम्बन्ध मे इतिहासज्ञो में मतभेद है कुछ इतिहासज्ञ इन्हें उत्तर भारत के निवासी मानते हैं, अन्य दक्षिण भारत के इस वश का सर्वप्रथम राजा विन्ध्य शक्ति प्रथम था विद्वानो ने उसका शासनकाल 250 ई से 270 ई के बीच माना है पुराणों के वर्णन के आधार पर कुछ विद्वानों का अनुमान है कि वह मूलत विदिशा का निवासी था, परन्तु अन्य विद्वान् इस मत को स्वीकार नही करते उसके राज्य विस्तार के सम्बन्ध मे हम कोई जानकारी उपलब्ध नही है

विन्ध्यशक्ति के अनन्तर उसका पुत्र प्रवरसेन प्रथम गद्दी पर बैठा वह वाकाटक वश का सर्वश्रेष्ठ राजा था उसका शासनकाल 270 ई से 330 ई के बीच माना गया है उसने अनेक दिशाओ मे अपने साम्राज्य का विस्तार किया उत्तर मे नर्मदा तक अभियान कर उसने पुरिका नामक नगरी पर अधिकार किया पुराणो के अनुसार पुरिका में उस समय विदिशा के नागराजा का दौहित्र शिशुक राज्य कर रहा था प्रवरसेन ने उसे पदच्युत कर उस प्रदेश को अपने राज्य मे मिला लिया तथा पुरिका को अपनी राजधानी बना ली हरिवश में कहा गया है कि यह नगरी ऋक्षवत अथवा सतपुडा पर्वत की उपत्यका में स्थित थी प्रवरसेन ने मालवा के पश्चिमी क्षत्रपों का पराभव किया तथा नर्मदा के उत्तर मे अभियान कर बघेलखण्ड पर अपनी सत्ता स्थापित की. यद्यपि यह सर्वमान्य नहीं है

प्रवरसेन के निधन के पश्चात् उसका विस्तृत साम्राज्य सम्भवत उसके चार पुत्रो के बीच बँट गया ज्येष्ठ पुत्र गौतमीपुत्र की मृत्यु इसके पूर्व ही हो जाने के कारण उसका पुत्र रुद्रसेन प्रथम गद्दी पर बैठा इतिहासज्ञ रुद्रसेन प्रथम का काल 330 ई से 350 ई के बीच मानते हैं रुद्रसेन का उत्तराधिकारी पृथ्वीसेन प्रथम 350 ई के लगभग सिंहासन पर बैठा तथा लगभग 400 ई तक राज्य करता रहा

पृथ्वीसेन प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र रुद्रसेन द्वितीय राज्य करने लगा उसका शासनकाल 400 ई से 405 ई तक केवल 5 वर्ष तक रहा 405 ई के लगभग उसका देहावसान हो गया इस समय उसके दोनो पुत्र दिवाकर सेन और दामादर सेन अल्पवयस्क थे अत उसकी विधवा पत्नी प्रभावती गुप्त दिवाकर सेन के नाम पर स्वय राज कार्य देखने लगी दुर्भाग्यवश दिवाकर सेन भी अल्पायु हुआ और 420 ई के लगभग उसकी भी मृत्यु हो गई

दिवाकर सेन के पश्चात् उसका छोटा भाई दामोदर सेन गद्दी पर बैठा डॉ मिराशी के अनुसार राज्यारोहण के अवसर पर उसने अपने सुप्रसिद्ध पूर्वज प्रवरसेन का नाम धारण किया तथा प्रवरसेन द्वितीय कहलाया उसके बारह-तेरह दान पत्र अभी तक उपलब्ध हो चुके है, जिनमे से सात के लगभग मध्य प्रदेश की सीमा मे छिदवाडा, सिवनी, बैतूल तथा बालाघाट जिले से प्राप्त हुए हैं सिवनी से प्राप्त ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के 18वें वर्ष मे प्रचलित किया गया था छिदवाड़ा जिले में स्थित दुडिया तथा बालाघाट जिले मे स्थित तिरोडी से प्राप्त और इदौर मे उपलब्ध ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के 23वे वर्ष में प्रचलित किए गए थे बैतूल जिले में पट्टन नामक स्थान से उसके राज्यकाल के 27वें वर्ष का ताम्रपत्र मिला है

इसी प्रकार छिदवाडा जिले के पाण्डुर्णा से उसके राज्यकाल के 29वें वर्ष का ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है बालाघाट से उसके शासनकाल का तिथि रहित एक अन्य ताम्रपत्र भी मिला है इन दानपत्रो में दिए गए ग्राम दानों से यह स्पष्ट है कि सम्बन्धित क्षेत्र उसके राज्य के अतर्गत थे

प्रवरसेन द्वितीय अपने राज्यकाल के ग्यारहवें वर्ष तक प्राचीन राजधानी नन्दिवर्धन से ही राज्य करता रहा इसके अनन्तर उसने अपने नाम से प्रवरपुर नामक नगर बसाया तथा उसे अपनी नवीन राजधानी बनाया इतिहासज्ञ वर्धा के निकट स्थित आधुनिक पवनार को ही प्राचीन प्रवरपुर मानते हैं उसका शासनकाल लगभग तीस वर्ष (420 ई से 450 ई तक) का था

प्रवरसेन द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र नरेन्द्र सेन 450 ई के लगभग गद्दी पर बैठा अभी तक उसका एक भी लेख नही मिला तथापि उसका उल्लेख बालाघाट से प्राप्त उसके पुत्र पृथ्वीषेण द्वितीय के ताम्रपत्र मे आया है

नरेन्द्र सेन का राज्यकाल 470 ई के लगभग समाप्त हुआ परन्तु इसके पूर्व ही उसके राज्य पर एक सकट आया बस्तर क्षेत्र में राज्य करते हुए नलवशी भवदत्त वर्मा ने वाकाटकों के राज्य पर आक्रमण कर एक बडे भाग पर अधिकार कर लिया नरेन्द्र सेन के उत्तराधिकारी पृथ्वीषेण द्वितीय के बालाघाट ताम्रपत्र मे उसे निमग्न वश का उद्धर्ता कहा गया है ऐसा प्रतीत होता है कि इस कठिन समय में नरेन्द्र सेन अपनी राजधानी प्रवरपुर से हटाकर आधुनिक भण्डारा जिले मे स्थित आमगाव के निकट पद्मपुर नगरी ले गया इसी पद्मपुर से प्रचलित एक अपूर्ण ताम्रपत्र दुर्ग जिले मे प्राप्त हुआ है

नरेन्द्र सेन का उत्तराधिकारी पृथ्वीषेण द्वितीय 470 ई के लगभग गद्दी पर बैठा पद्मपुर मे रहकर अपनी शक्ति को बढाया बालाघाट से उसका एक अपूर्ण ताम्रपत्र मिला है जिसमे उसके द्वारा वाकाटक वश को अवनत दशा से उत्कर्षपूर्ण स्थिति मे लाने का उल्लेख किया गया है

पृथ्वीषेण द्वितीय के शासन का अन्त 490 ई के लगभग हुआ होगा इसके पश्चात् वाकाटको के इस शाखा का राज्य वत्सगुल्म शाखा के राजा हरिषेण के साम्राज्य में विलीन हो गया इस प्रकार लगभग 160 वर्ष शासन के पश्चात् वाकाटको की इस शाखा का अन्त हो गया

वत्सगुल्म शाखा के हरिषेण का शासनकाल 475 ई से 500 ई की बीच माना गया है वह शूर और महत्वाकाक्षी था और उसने अपने राज्य की समस्त दिशाओ मे विजय प्राप्त की अजन्ता गुफा मे प्राप्त उसके लेख मे उसके द्वारा विजित अथवा कर देने के लिए बाध्य किए गए राजाओ का उल्लेख है उनमें अवन्ति (मालवा) तथा कोसला (दक्षिण कोसल) का भी नाम आया है कहाँ तक ये प्रदेश उसके राज्य के अन्तर्गत आ सके अथवा आने के पश्चात् रह सके यह कहना कठिन है

हरिषेण वत्सगुल्म शाखा का अन्तिम ज्ञात राजा है सम्भवत उसके पश्चात् एक-दो राजा और हुए, परन्तु इस समय उनके सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं प्रतीत होता है कि 550 ई के लगभग वाकाटक राजवश का अन्त हो गया और विदर्भ पर महिष्मती के कलचुरियो की सत्ता स्थापित हो गई

हूण आक्रमण

हूण यायावर जगलियो का एक गिरोह था और चीन के आस-पास उनका आदि निवास स्थान था मूलत इनकी दो शाखाएँ थी, जिनमें से एक शाखा ने आक्सस नदी पार कर ईरान तथा इसके पश्चात् भारत पर आक्रमण किया हूणो का भारत पर पहला आक्रमण गुप्त समाटो के राज्यकाल में हुआ जब स्कन्दगुप्त ने उन्हें 460 ई के लगभग करारी हार दी और उनके उत्पातो से अपने साम्राज्य की रक्षा की हूणों का दूसरा आक्रमण पाँचवी शताब्दी के अन्त अथवा छठी शताब्दी के प्रारम्भ मे हुआ उनका नेता तोरमाण पजाब तथा पश्चिमी भारत को जीतता हुआ मध्य प्रदेश के सागर जिले तक पहुँच गया सागर जिले में स्थित एरण मे उपलब्ध एक विशालकाय वराह मूर्ति पर तोरमाण के शासनकाल के प्रथम वर्ष का अभिलेख उत्कीर्ण है इस अभिलेख मे तोरमाण को महाराजाधिराज' उपाधि से विभूषित किया गया है एरण के उत्खनन मे भी तोरमाण के ताँबे के सिक्के मिले है इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि इस भाग पर तोरमाण का आधिपत्य स्थापित हो गया था यह घटना गुप्त सम्राट बुधगुप्त के शासनकाल के थोडे समय पश्चात् 510 ई के लगभग हुई होगी, जैसा कि यहाँ से प्राप्त भानुगुप्त के गुप्त सवत् 191 के अभिलेख से पता चलता है कुछ विद्वानो के विचार में तोरमाण हूण नही था वरन् कुषाण था जिसने हूणो से मैत्री करके उनका नेतृत्व ग्रहण कर लिया था परन्तु अधिकाश विद्वान् तोरमाण को हूण शासक ही मानते है

तोरमाण के पश्चात् उसका पुत्र मिहिरकुल 515 ई के लगभग उसका उत्तराधिकारी बना वह अपने पिता से भी अधिक निर्दयी और पैशाचिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था उसका राज्य कश्मीर से मालवा तक फैला हुआ था उसकी राजधानी साकल अर्थात् सियालकोट थी उसके राज्य के 15वे (530 ई) का एक अभिलेख ग्वालियर दुर्ग से प्राप्त हुआ है, जिसमे गोप-पर्वत पर सूर्यमदिर के निर्माण का उल्लेख है परन्तु वह अधिक समय तक इतने बडे साम्राज्य पर राज्य नहीं कर सका मदसौर मे औलिकरवशी यशोधर्मन नामक राजा का उदय हुआ और उसने मिहिरकुल को पराजित कर मालवा से खदेड दिया मदसौर अभिलेख मे यशोधर्मन की गर्वोक्ति है कि राजा मिहिरकुल भी उसके चरणो मे सम्मानोपहार लाया वस्तुत मिहिरकुल की पराजय हुई थी परन्तु उसका राज्य व प्रभुत्व नष्ट नही हुआ था यशोधर्मन का पतन जो सम्भवत बहुत देर बाद नही हुआ के साथ ही मिहिरकुल फिर से रगमच पर आ पहुँचा और गुप्त साम्राज्य की कमजोरियो का लाभ उठाकर गुप्त साम्राज्य के एक बडे भाग पर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न करने लगा परन्तु समकालीन गुप्त सम्राट नरसिहगुप्त बालादित्य द्वारा वह पराजित कर दिया गया और इस घटना के कुछ समय पश्चात् ही कश्मीर में उसकी मृत्यु हो गई मिहिरकुल के बाद हूणो का कोई योग्य नेता न हुआ अतएव कुछ ही दिनो मे हूणों का साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया

दशपुर का औलिकर वंश

चौथी शताब्दी ई के उत्तरार्ध मे जब गुप्त साम्राज्य का विस्तार हो रहा था, प्राचीन दशपुर (आधुनिक मदसौर) मे मालवो की एक शाखा औलिकरो ने अपना राज्य स्थापित किया मदसौर और उसके आस-पास के क्षेत्र में कुछ अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनसे इस वश के कुछ प्रतापी नरेशो का इस भूमि पर शासन करना ज्ञात होता है

इस वश का सर्वप्रथम शिलालेख मालव सवत् 461 का है जो नरवर्मन के शासनकाल का है इस अभिलेख में नरवर्मन के पिता सिहावर्मन तथा पितामह जयवर्मन का उल्लेख है सम्भवत समुद्रगुप्त के दिग्विजय के कारण जयवर्मन तथा सिहवर्मन ने गुप्तो के राजवश का लोहा मान लिया था तथापि वे अपने आन्तरिक शासन कार्य मे स्वतत्र बने रहे नरवर्मन का एक और शिलालेख मदसौर के निकट मिला है जो मालव सवत् 476 का है नरवर्मन का पुत्र विश्ववर्मन था जिसका एक अभिलेख राजस्थान के गगाधर नामक स्थान से प्राप्त हुआ है विश्ववर्मन के पुत्र बधुवर्मन का शिलालेख जिस पर मालव सवत् 493 तथा 529 उत्कीर्ण है, मदसौर से प्राप्त हुआ है इस वश का यह प्रथम शिलालेख है जिसमे गुप्त सम्राट् की अधीनता स्पष्ट शब्दो मे स्वीकार की गयी है इसके पूर्व विश्ववर्मन तथा नरवर्मन के शिलालेख से यह कही नहीं ज्ञात होता कि वे गुप्त समाटो के अधीन हो इन शिलालेखो मे नरवर्मन और विश्ववर्मन का गुणगान स्वतत्र नरेशो की तरह किया गया है यही नही ये अभिलेख मालव सवत् मे अकित है गुप्त

सवत मे नही ऐसा लगता है कि समकालीन गुप्त सम्राट् चद्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी मालवा तथा सौराष्ट्र के शको के उन्मूलन में व्यस्त रहने के कारण इस वर्मन राज्य क आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया और इसलिए वर्मन काफी हद तक स्वतत्र शासक बने रहे बन्धुवर्मन क शिलालेख से ज्ञात होता है कि वह गुप्त सम्राट् कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में उत्तरी मालवा ने सुख शाति और समृद्धि के अपूर्व सुखद दिनो का उपभोग किया बधुवर्मन के शासन की शाति और समृद्धि से आकृष्ट हो लाट देश से बुनकरों की एक श्रेणी दशपुर आयी जिसे बन्धुवर्मन न सरक्षण प्रदान किया इस श्रेणी की आज्ञा से दशपुर मे मालव सवत् 493 मे सूर्य के एक भव्य और अद्भुत मन्दिर का निर्माण किया गया कालान्तर में दूसर नृपतियो के शासनकाल में मरम्मत न कराये जाने के कारण यह मदिर जीर्ण हो गया और अन्त मे इस मदिर का पुनरुद्धार किय स्पष्ट है कि यह अभिलेख मालव सवत् 529 में उसी तन्तुवायों की श्रेणी ने इस मदिर का पुनरुद्धार किया स्पष्ट है कि यह अभिलेख मालव सवत् 529 अथवा इसके ठीक बाद ही लिखा गया होगा किन्तु वत्सभट्टी द्वारा रचित यह प्रशस्ति जिस ढग से लिखी गयी है उससे प्रशस्ति में उल्लेखित गुप्त सम्राट् कुमारगुप्त का नाम काफी भ्रम पैदा करने वाला है

स्कन्दगुप्त तथा परवर्ती गुप्त सम्राटो के समय में औलिकरवशी इन वर्मन नरेशों का क्या हुआ इस सम्बन्ध में हमें कुछ भी ज्ञात नही इस बीच दशपुर मे राज्य करते हुए राजा प्रभाकर तथा गोविन्दगुप्त, जिनका वर्णन मदसौर से प्राप्त मालव सवत् 524 ई के शिलालेख में आया है से वर्मन वश का क्या सम्बन्ध रहा, यह कुछ भी ज्ञात नहीं इसी प्रकार 490 ई के लगभग दशपुर में राज्य करते हुए अज्ञात वशी शासक महाराज गौरी जिसका अभिलेख मदसौर से प्राप्त हुआ है से वर्मन वश का क्या सम्बन्ध था यह ज्ञात नहीं है सम्भवत दशपुर पर वर्मन नरेशो का आधिपत्य थोडे समय के लिए समाप्त हो गया

मालव सवत् 589 (532-33 ई) म दशपुर पर यशोधर्मन विष्णुवर्धन नामक शासक के आधिपत्य का पता हमें मदसौर से प्राप्त उसके दो अभिलेखों से लगता है इन अभिलेखो मे तिथि रहित एक अभिलेख एक विजय स्तम्भ पर उत्कीर्ण है तथा उसकी दोहरी प्रति दूसरे स्तम्भ पर खुदी है दूसरा अभिलेख जो मालव सवत् 589 का है एक शिला पर उत्कीर्ण पाया गया है यशोधर्मन व नरवर्मन ने अपने शिलालेखों में अपने को औलिकरवशी तथा सूर्यवशी इक्ष्वाकु का वशज कहा है अत इतिहासज्ञो का यह मत कि यशोधर्मन पूर्ववर्ती वर्मन नरेशों का ही वशज था तथा वर्मन वश की पुन स्थापना का प्रयत्न करने वाला था सत्य प्रतीत होता है

यशोधर्मन ने मदसौर शिलालेख में स्वत को जनेद नराधिपति, राजाधिराज, परमेश्वर आदि उपाधियो से अलकृत किया है अभिलेख के अनुसार उसने अपनी दिग्विजय में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) से लकर महेद्र पर्वत तक तथा हिमालय से लेकर पश्चिम समुद्र तक समस्त भू-भाग पर अपनी विजय पताकाएँ फहराई तथा उन क्षेत्रो पर भी अधिकार प्राप्त किया जिन पर गुप्त सम्राट् तथा हूण नरेश भी न कर पाये थे

यशोधर्मन के शासन का अन्त कब और कैसे हुआ तथा औलिकर वश में और कौन से शासक हुए इस सम्बन्ध में अभी तक कुछ भी ज्ञात नहीं सम्भवत यशोधर्मन के पश्चात् दशपुर क्षेत्र पर औलिकरो की राजनीतिक सत्ता कुछ काल तक बनी रही छठी सदी के प्रारम्भ मे कलचुरी शकरगण तथा बाद में मैत्रको का प्रभाव इस क्षेत्र पर फैलने पर औलिकरों का पतन हो गया

परिव्राजक राजवंश

बुन्देलखण्ड से प्राप्त कुछ अभिलेखों से पता चलता है कि 5वीं सदी ई में जब उत्तर भारत पर गुप्तों का आधिपत्य था उस समय पन्ना जिले में परिव्राजक नामक राजवश के राजाओं का राज्य चला करता था ये गुप्त सम्राटो के माण्डलिक हो गये थे तथा अपने दान-पत्रों मे गुप्त सवत का प्रयोग करत थे अपने सभी अभिलेखो मे इन्होंने गुप्त सम्राटो की प्रभुता स्वीकार करने का उल्लेख किया है

नलवंश

नलवशी शासक वाकाटको के समकालीन थे इनकी शक्ति का मुख्य केन्द्र बस्तर तथा बस्तर के ओडिशा से लगे सीमा के आसपास का क्षेत्र था नलवश का क्रमबद्ध इतिहास और उनके राज्य-विस्तार के सम्बन्ध मे पूरी जानकारी अभी तक उपलब्ध नहीं है इस वश के केवल चार उत्कीर्ण लेख और थोडे से सोन के सिक्को के आधार पर ही इनके इतिहास का निर्माण करने का प्रयत्न किया गया है

नलवश के प्राप्त चार लेखों मे एक लेख महाराष्ट्र मे स्थित ऋद्धिपुर नामक स्थान से दूसरा बस्तर की पूर्वी सीमा से ओडिशा में 6 मील पर स्थित पोडागढ से तीसरा उडीसा में स्थित कुत्तरी बेडा तथा चौथा रायपुर मे स्थित राजिम के राजीवलोचन मदिर से प्राप्त हुआ है

नलवश के सिक्को की एक निधि बस्तर जिले मे स्थित एडेगा से मिली है प्रथम तीन लेखों का तथा सिक्कों का अध्ययन कर ज्ञात हुआ है कि इस वश का सर्वप्रथम राजा भवदत्त वर्मा था जिसने बस्तर तथा कोसल क्षेत्र म राज्य करते हुए वाकाटको को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार नागपुर तथा बरार तक कर लिया था परन्तु वाकाटको द्वारा पुन शक्ति प्राप्त कर लेने पर नागपुर तथा विदर्भ का क्षेत्र उसके हाथो से छिन गया किन्तु वह बस्तर तथा दक्षिण कोसल पर बराबर राज्य करता रहा

नलवशी नरेश बस्तर तथा दक्षिण कोसल के भू-भाग पर काफी समय तक राज्य करते रहे सम्भवत: उनका राज्य पाण्डुवंशियों द्वारा पराजित होने के कारण समाप्त हो गया

शरभपुरीय वंश

दक्षिण कोसल के शरभपुर नामक स्थान पर पाँचवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में अथवा छठी शताब्दी के प्रथम भाग में एक प्रमुख राजवश का उदय हुआ जिसे शरभपुरीय वश कहा गया है इस वंश की राजधानी शरभपुर कहाँ थी यह अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है शरभपुरीय वश के नरेश अपने आपको 'परमभागवत्' कहते थे, अर्थात् वे भागवत् धर्म को मानने वाले थे उनके दानपत्रो की राजमुद्रा पर अकित गजलक्ष्मी की खडी प्रतिमा से भी यही जान पडता है उनकी एक और राजधानी श्रीपुर (वर्तमान सिरपुर, रायपुर जिला) मे थी इस वश का सस्थापक शरभ नामक राजा था और इसी के नाम पर इनकी राजधानी का नाम शरभपुर पडा

जयराज के तीन पुत्र थे--सुदेवराज, प्रवरराज और व्याघ्रराज जयराज का उत्तराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र सुदेवराज हुआ जिसके सात ताम्रपत्र-लेख अब तक हो चुके है इन लेखो में रायपुर से प्राप्त ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के दसवे वर्ष में प्रचलित किया गया था अत यह स्पष्ट है कि उसने कम-से-कम दस वर्ष तक राज्य किया होगा उसके अभिलेखों में दो ताम्रपत्र श्रीपुर से प्रचलित किये गये थे तथा शेष शरभपुर से इससे लगता है कि उसके शासनकाल में ही शरभपुर के अतिरिक्त श्रीपुर भी राजधानी बन गयी थी

इस वश का अन्तिम नरेश सुदेवराज का छोटा भाई प्रवरराज था जिसने अपनी राजधानी श्रीपुर रखी थी लगभग छठी शताब्दी ईसवी के अन्तिम चरण मे पाण्डुवशियों ने दक्षिण कोसल की विजय पर शरभपुरीय राजवश को समाप्त किया और श्रीपुर को अपनी राजधानी बनाया

वलभी का मैत्रक वंश

गुप्त वश की शक्ति के ह्रास होने का लाभ उठाकर भारत के विभिन्न भागों में जिन राजवशो का उदय हुआ उनमें वलभी क मैत्रक वशी शासक भी थे प्रारम्भ मे ये गुप्त शासकों की अधीनता स्वीकार किये हुए थे छठी सदी ई के मध्य में जब गुप्त शासको की सत्ता का लोप हो गया, इसके पूर्व ही मैत्रकों ने अपने अभिलेखो मे गुप्त अधीनता का उल्लेख करना बद कर दिया यद्यपि वे गुप्त सवत् का उपयोग अवश्य ही करते रहे स्वतत्र होकर मैत्रक वशी शासकों ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया मैत्रक वशी नामक महाराज शिलादित्य प्रथम धर्मादित्य 580 ई में वलभी में राज्य कर रहा था ऐसा चीनी यात्री ह्वेनसाग के वर्णन से पता चलता है उसने अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिमी मालवा तक कर लिया था शिलादित्य का शासनकाल 612 ई तक चलता रहा उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई खरग्रह हुआ तथा उसके पश्चात् उसका पुत्र धरसेन तृतीय हुआ धरसेन तृतीय का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य हुआ जो 629 ई के पूर्व वलभी का शासक हुआ वह चीनी यात्री ह्वेनसाग का समकालीन था तथा कम-से-कम 640-641 ई तक राज्य करता रहा पश्चिमी मालवा क्षेत्र पर उसका प्रभाव बराबर बना रहा यह रतलाम जिले से प्राप्त दो ताम्रपत्रों से पता चलता है नोगवा से प्राप्त पहला ताम्रपत्र गुप्त सवत् 320 ई का है जो वलभी से प्रचलित किया गया था तथा जिसमें मालवक भुक्ति (अर्थात् मालवा प्रान्त) में स्थित एक सौ 'भक्ति' भूमि को दान में देने का उल्लेख है इसी स्थान से प्राप्त दूसरा ताम्रपत्र गुप्त सवत् 321 का है, जो वन्दितपल्ली के विजित शिविर से प्रचलित किया गया था तथा जिसमे मालवक भुक्ति मे स्थित एक सौ 'भक्ति' भूमिदान मे देने का उल्लेख आया है मैत्रकों का राजवश 766 ई तक बराबर चलता रहा तथा 766 से 783 के बीच इसका लोप हो गया पश्चिमी मालवा क्षेत्र पर से इनका आधिपत्य कब समाप्त हुआ यह अज्ञात है

मौखरी वंश

मौखरी साम्राज्य की स्थापना भी गुप्त वश की शक्ति के ह्रास के कारण हुई इस वश के पहले शासक भी गुप्त वश के अधीन थे छठी सदी ई के मध्य में जब गुप्त वश की शक्ति का लोप हुआ तो मौखरियो ने अपनी राजसत्ता स्थापित की

मौखरियों की कई शाखाएँ थी, जिनमे कन्नौज की शाखा अधिक शक्तिशाली थी इनके शासकों मे महाराज हरिवर्मन, महाराज आदित्यवर्मन, महाराज ईश्वरवर्मन महाराजाधिराज ईशानवर्मन, महाराजाधिराज सर्ववर्मन महाराजाधिराज अवन्तिवर्मन तथा महाराजाधिराज गाहवर्मन हुए उनके साम्राज्य का विस्तार लगभग आधुनिक उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर था मध्य प्रदेश के पूर्व निमाड जिले मे असीरगढ के किले के महाराजाधिराज सर्ववर्मन का एक ताम्र-मुहर लेख प्राप्त हुआ है इस लेख की प्राप्ति से कुछ विद्वानों का यह मत है कि मौखरियो के साम्राज्य का पूर्व निमाड जिले तक विस्तार था तथा दक्कन की ओर असीरगढ का दुर्ग उनके राज्य का एक महत्वपूर्ण दुर्ग था परन्तु अधिकाश विद्वान् इस मत को स्वीकार नहीं करते किसी भी प्रमाण के आधार पर मौखरियो के साम्राज्य का मध्य प्रदेश के किसी भाग का विस्तार का पता नही लगता

वर्धनवंश

छठी शताब्दी ई के अन्तिम चरण से थानेश्वर के वर्धन वश का उत्कर्ष हुआ इस वश के प्रारम्भिक राजा थे नरवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन प्रभाकरवर्धन की

कन्या राजश्री का विवाह मौखरी राजा गृहवर्मा के साथ हुआ था हर्षचरित के अनुसार प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के तत्काल बाद जब हर्षवर्धन तथा उसके बडे भाई राज्यवर्धन एक-दूसरे को राज्य भार सँभालने के लिए मना रहे थे तो समाचार प्राप्त हुआ कि मालवा के राजा ने मौखरियों के राज्य पर आक्रमण कर गृहवर्मा का प्राणान्त कर दिया तथा राज्यश्री को कारागार मे डाल दिया मालवराज के दुष्कर्म का समाचार पाते ही राज्यवर्धन ने सन्यास ग्रहण करने का विचार छोड दिया तथा अपने बहनोई के हत्यारे को दण्डित करने के निश्चय से युद्ध क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया बाण के अनुसार उसने बड़ी सरलता से मालवराज को पराजित कर दिया परन्तु वह मालवराज के मित्र गौड नरेश के भुलावे मे आ गया, जिससे गौड नरेश ने उसे अकेले पाकर उसकी हत्या कर डाली राज्यवर्धन की हत्या के बाद हर्षवर्धन ही थानेश्वर राज्य का एकमात्र उत्तराधिकारी था अत 16 वर्ष की आयु मे ही उसे राज्य का भार सँभालना पडा राज्य प्राप्त होते ही उसने अपने भाई के हत्यारे गौड नरेश शशाक को दण्ड देने की ठानी और सेना लेकर गौड की ओर प्रस्थान किया मार्ग मे उसे राज्यश्री के कारागार से भागने तथा विन्ध्याचल मे पहुँचने का समाचार मिला उसने तत्काल राज्यश्री को ढूँढ निकाल कर उसके प्राणो की रक्षा की तत्पश्चात् उसने गौड राज्य की ओर प्रस्थान किया जिसका परिणाम अज्ञात है

हर्ष को अपने राज्यकाल मे गौडों के अतिरिक्त वलभी, चालुक्य तथा सिन्ध के शासको के साथ युद्ध करना पडा हर्ष के साम्राज्य का विस्तार कितना था इस सम्बन्ध मे विद्वानो मे मतभेद है कुछ विद्वान् उसे सम्पूर्ण उत्तर भारत का स्वामी मानते हैं, परन्तु यह मत आधुनिक विद्वानो द्वारा असगत ठहराया गया है जहाँ तक मध्य प्रदेश के इतिहास से हर्षवर्धन के साम्राज्य का सम्बन्ध है, कुछ विद्वानों के अनुसार विन्ध्य का आटविक क्षेत्र उसके राज्य के अतर्गत था हर्ष द्वारा प्रचलित सवत् उसके साम्राज्य के विभिन्न भागो में लम्बे समय तक चला खजुराहो से प्राप्त एक मूर्ति पर हर्ष सवत् 218 की तिथि उत्कीर्ण है

दक्षिण कोसल का पाण्डव वंश

ईसवी सन् की छठी शताब्दी में कोसल के बडे भू-भाग पर पाण्डव वशी राजाओ का राज्य था पाण्डुवशी राजा सोमवशी थे तथा वैष्णव धर्मावलम्बी थे इस वश का सर्वप्रथम राजा उदयन था जो सम्भवत 5वीं शताब्दी ई के अन्तिम चरण मे रहा होगा कालिन्जर से प्राप्त एक शिलालेख मे सोमवशी राजा उदयन का उल्लेख है, किन्तु क्या ये दोनों व्यक्ति एक ही थे इस सम्बन्ध में अनुमान करना कठिन है

सिरपुर के प्राप्त बालार्जुन के शिलालेख में उदयन का पुत्र इन्द्रबल बतलाया गया है एक महासामन्त इन्द्रबल का उल्लेख शरभपुरीय राजा सुदेवराज के अभिलेख मे भी मिला है, जो उसका प्रधानमत्री बताया गया है, किन्तु यह कहना कठिन है कि यह इन्द्रबल पाण्डुवशी इन्द्रबल ही था या कोई अन्य भादक से प्राप्त एक अभिलेख में इन्द्रबल के चार पुत्रो का उल्लेख है इनमें एक का नाम नत्र था जो पराक्रमी होने के नाते अपने राज्य को दूर तक विस्तार किये था उसका सबसे छोटा भाई भवदेव (जिसे रणकेसरी तथा चिन्तादुर्ग भी कहा गया है) अपने बड़े भाई नत्र के सामन्त के रूप में चाँदा जिले (आधुनिक महाराष्ट्र) में राज्य करता था भादक से प्राप्त उपर्युक्त अभिलेख में उसके द्वारा पूर्वकाल मे निर्मित कराये गये किसी बुद्ध-मन्दिर के जीर्णोद्धार कराने का उल्लेख है नत्र का छोटा भाई ईशानदेव था जिसका उल्लेख खरोद (बिलासपुर जिला) के लखनेश्वर मन्दिर मे लगे शिलालेख मे मिलता है इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नत्र के राज्यकाल में पाण्डुवशियों का राज्य दक्षिण कोसल के एक बडे भाग पर तथा महाराष्ट्र में चाँदा जिले तक विस्तृत हो चुका था

पाण्डुवशियो की स्थिति को और भी सुदृढ करने का यश महाशिव तीवरदेव को प्राप्त हुआ, जो नत्रराज का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था उसके तीन ताम्रपत्र-लेख अब तक प्राप्त हुए हैं जिनमे बतलाया गया है कि वह परम वैष्णव था (जैसा कि उसके ताम्रपत्रो पर सलग्न मुद्रा पर गरुड की प्रतिमा से भी स्पष्ट है) तथा कोसल, उत्कल और अन्य मण्डलों पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् 'कोसलाधिपति' की उपाधि धारण की थी उसके राज्यकाल के सम्बन्ध में विद्वानों मे मतभेद है, किन्तु विष्णुकुन्डी राजा माधव वर्मा प्रथम (535-85 ई) तथा मौखरी सूर्यवर्मा (553 ई) के समकालीन होने के कारण उसका काल छठी शताब्दी ई के तीसरे चरण में निश्चित किया जा सकता है महाशिव तीवरदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महानत्रराज हुआ उसका केवल एक ताम्रपत्र अडभार (जिला बिलासपुर) से प्राप्त हुआ है जिसमें ताम्रपत्र उसके द्वारा अष्टद्वार में एक ग्रामदान दिये जाने का उल्लेख है सम्भवत महानत्रराज का शासनकाल अल्पकालीन था और वह निसन्तान भी था अत उसका उत्तराधिकारी उसका चाचा चन्द्रगुप्त हुआ उसकी उपलब्धियो के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है

चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र हर्षगुप्त हुआ हर्षगुप्त ने मगधपति सूर्यवर्मा की बेटी वासटा से विवाह किया हर्षगुप्त वैष्णव धर्म को मानता था और वासटा भी वैष्णव थी हर्षगुप्त के स्वर्गवासी होने पर वासटा ने अपनी पति की स्मृति मे श्रीपुर मे हरि (विष्णु) का एक मन्दिर निर्माण करवाया था हर्षगुप्त और वासटा के पुत्र महाशिव गुप्त बालार्जुन के शासनकाल में निर्मित यह मदिर आज भी लक्ष्मण मदिर के नाम से सिरपुर में विद्यमान है और प्राचीन भारतीय वास्तुकला का बेजोड नमूना है वासटा का उपर्युक्त स्मृति का अभिलेख इसी मन्दिर के भग्न मण्डप का मलबा साफ करते समय प्राप्त हुआ था

हर्षगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महाशिवगुप्त था वह बालार्जुन भी कहलाता था क्योंकि छोटी अवस्था मे ही वह धनुर्विद्या मे प्रवीण हो चुका था उसके अनेक ताम्रपत्र-लेख और शिलालेख बारदुला लोधिया, मल्लार, सिरपुर आदि स्थानों से प्राप्त हुए है, जिससे ज्ञात होता है कि उसके राज्य का विस्तार आधुनिक रायपुर बिलासपुर रायगढ जिलो को मिलाकर छत्तीसगढ के एक बडे भू-भाग पर था लोधिया से प्रचलित ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के 57वे वर्ष का है, अत स्पष्ट है कि उसका राज्यकाल लगभग 60 वर्ष का था

महाशिवगुप्त बालार्जुन के माता-पिता वैष्णव धर्मावलम्बी थे परन्तु वह स्वय शैव था उसकी राजमुद्रा पर नन्दी बना हुआ है और लेखो में भी उसे परम-महेश्वर कहा गया है, परन्तु शैव होने के बाद भी वह परम धर्मसहिष्णुता का पालन करने वाला था उसके सरक्षण मे श्रीपुर तथा साम्राज्य के अन्य स्थानों मे शैव, वैष्णव, बौद्ध तथा जैन धर्म का समान रूप से विकास हुआ चारो धर्मों से सम्बन्धित स्मारकों के अवशेष, जो आज भी विद्यमान हैं उसकी धर्मसहिष्णुता की नीति की याद दिलाते हैं

महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासनकाल मे उसकी राजधानी श्रीपुर की कीर्ति दूर-दूर तक फैल चुकी थी और वहाँ बौद्ध यात्रियों का आना-जाना लगा रहता था सिरपुर में किये गये उत्खनन में बौद्ध विहार, विशाल प्रतिमाए तथा शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जो समकालीन धार्मिक तथा सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं महाशिवगुप्त बालार्जुन के राज्यकाल को छत्तीसगढ के इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है बालार्जुन के उत्तराधिकारियों के बारे में अभी तक कुछ भी ज्ञात नही कुछ विद्वानो का विचार है कि वह चालुक्य नरेश पुलकेशी द्वितीय द्वारा ई सन् 634 के पूर्व पराजित किया जा चुका था

इस वश का अन्त कैसे हुआ तथा कौसल के उत्तरकालीन सोमवशियों के साथ उनका क्या सम्बन्ध था, यह सब अभी तक अज्ञात है अभिलेखो के आधार पर कुछ विद्वानों का यह विचार है कि महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासन के कुछ ही समय पश्चात् कोसल के नलवशी राजाओं न इस वश को समाप्त कर अपना राज्य स्थापित किया तथा उनका राज्य तब तक चला जब तक वे उत्तरकालीन सोमवशियो द्वारा पराजित नही किये गये

मेकल का पाण्डव वंश

आधुनिक अमरकण्टक के निकटवर्ती क्षेत्र को प्राचीनकाल में मेकल कहा जाता था सम्भवत यह नाम इस क्षेत्र के मैकाल पहाडियों पर बसे रहने के कारण पडा हो यद्यपि पुराणों मे मेकल के राजाओं के सम्बन्ध में उल्लेख आया है तथापि इस क्षेत्र के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में कोई जानकारी नही है अभिलेखों के आधार पर ज्ञात होता है कि पाँचवीं शती ईसवी में इस क्षेत्र में पाण्डववशियो की एक शाखा राज्य करती थी इस शाखा का दक्षिण कोसल के पाण्डव वश से क्या प्राचीन सम्बन्ध था इस सम्बन्ध मे अभी कुछ नही कहा जा सकता

बह्मनी से प्राप्त एक ताम्रपत्र लेख जो यहाँ के नरेश भरतबल के राज्यकाल के दूसरे वर्ष मे प्रचलित किया गया था, मेकल के पाण्डववशी नरेशों के इतिहास पर कुछ प्रकाश डालता है इस अभिलेख के अनुसार इस वश में सर्वप्रथम जयबल हुआ जयबल का पुत्र वत्सराज था जिसकी रानी द्रोणभट्टारिका से महाराज भरत अर्थात् भरतबल का जन्म हुआ भरतबल का अपर नाम इन्द्र था इन नामों का उल्लेख करते हुए ताम्रपत्र में जयबल और वत्स के सम्बन्ध मे कोई पदवी प्रयोग नही की गयी है इसके विपरीत नागबल तथा भरतबल का उल्लेख करते हुए उन्हे केवल महाराज की उपाधि से ही नहीं बल्कि 'परम-महेश्वर' परमब्रह्मण्य तथा परम-गुरु-देवताधिदैवत-विशेष' की उपाधियों से भी विभूषित किया गया है इससे विदित होता है कि जयबल और वत्सराज सम्भवत साधारण सामन्त थे और समकालीन मगध के गुप्त वश के अधीन थे बाद में गुप्त वश की शक्ति क्षीण होने की परिस्थिति का लाभ उठाकर वे स्वतंत्र राजा बन बैठे

ब्रह्मनी के अभिलेख के अनुसार भरतबल ने कोसल की राजकुमारी लोकप्रकाशा से विवाह किया था लोकप्रकाशा दक्षिण कोसल के किस राजवश की राजकुमारी थी इस सम्बन्ध मे विद्वानों में मतभेद है कुछ विद्वानो के अनुसार वह दक्षिण कोसल के पाण्डव वश की राजकुमारी थी, परन्तु यह असगत जान पड़ता है क्योंकि भरतबल के राज्यकाल तक दक्षिण कोसल मे पाण्डववंशीय नरेशों का आधिपत्य स्थापित नहीं हुआ था अन्य विद्वानों के मतानुसार लोकप्रकाशा शूरा के वश मे हुई थी, किन्तु इसका भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है अधिकाश विद्वान इस बात को मानते हैं कि वह दक्षिण कोसल के शरभपुरीय वश की राजकुमारी थी और वह शरभ की बेटी तथा नरेन्द्र की बहिन थी उसके पति भरतबल के बह्मनी के ताम्रपत्र मे प्रच्छत्र रूप से महाराज नरेन्द्र का गुनगान किया गया है इस ताम्रपत्र-लेख मे लोकप्रकाशा को अमरजकुलजा भी कहा गया है जबकि शरभपुरीय व्याघराज के लेख में उस वश का नाम अमरार्यकुल मिलता है भरतबल के बाद मेकल के पाण्डव वश का क्या हुआ, इस सम्बन्ध मे कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं है

शैलवंश

आठवी सदी ई में महाकौशल के पश्चिम भाग में शैल वश नामक एक राजवश की स्थापना हुई इस वश का ताम्रपत्र बालाघाट, जिले मे स्थित राघोली से प्राप्त हुआ है जिसमें शैलवशी नरेशो की वशावली दी हुई है इस ताम्रपत्र के अनुसार इस वश का प्रथम नरेश श्रीवर्धन था उसका पुत्र पृथुवर्धन हुआ जिसने गुर्जर प्रदेश को जीता उसका पुत्र सौरवर्धन था जिसके तीन पुत्र हुए उनमे से एक ने

पौंड्र (बंगाल तथा बिहार) के राजा को मारकर उसका देश जीत लिया तीसरे पुत्र ने काशी के राजा को मारकर काशी को अपने अधीन कर लिया उसका पुत्र जयवर्धन प्रथम हुआ जिसने विन्ध्य के नरेश को परास्त कर वहाँ पर अपना राज्य स्थापित किया जयवर्धन का पुत्र श्रीवर्धन द्वितीय हुआ जो विन्ध्य का स्वामी था उसका पुत्र जयवर्धन द्वितीय हुआ, जिसने इस ताम्रपत्र को श्रीवर्धनपुर से प्रचलित कर सूर्य मन्दिर के भागार्थ खण्डिडका नामक गाम दान में दिया

राष्ट्रकूट वंश

राष्ट्रकूट वंश की कई शाखाएँ थी इनमें से कम-से कम दो शाखाओं का राज्य मध्य प्रदेश के कुछ भाग पर सातवीं सदी ई से लेकर दसवीं सदी ई तक रहा

राष्ट्रकूटों की एक शाखा सातवीं आठवीं सदी में बैतूल-अमरावती क्षेत्र पर राज्य करती थी इस वंश के चार ज्ञात राजाओं के नाम है दुर्गराज, गोविन्दराज स्वामिक राज तथा नन्नराज युद्धासुर नन्नराज युद्धासुर का एक ताम्रपत्र बैतूल जिले के तिवरखोड नामक स्थान से प्राप्त हुआ यह ताम्रपत्र अचलपुर (महाराष्ट्र) के अमरावती जिले में स्थित (आधुनिक एलिचपुर) से शक संवत् 553 में प्रचलित किया गया था सम्भवत अचलपुर इस वंश की राजधानी थी नन्नराज का दूसरा ताम्रपत्र मूलताई से प्राप्त हुआ है यह शक संवत् 631 (709-10 ई) में प्रचलित किया गया था इन्दगढ से प्राप्त एक अन्य शिलालेख में नन्नराज का उल्लेख है इतिहासज्ञों द्वारा नन्नराज युद्धासुर का काल 690 ई से 735 ई के बीच माना गया है सम्भवत आठवीं सदी ई के मध्य में दक्कन के प्रमुख राष्ट्रकूट शाखा के शासक दन्तिदुर्ग द्वारा इस शाखा का पराभव कर इसके राज्य को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया गया

राष्ट्रकूट वंश की दूसरी शाखा मान्यखेत से राज्य करती थी इस शाखा से सम्बन्धित चार अभिलेख मध्य प्रदेश की सीमा के अन्तर्गत प्राप्त हुए है इनसे तथा इस शाखा के शासकों के अन्य अभिलेखों से ज्ञात होता है कि विभिन्न राजाओं के काल में मध्य प्रदेश के एक बड़े भाग पर इस राजवंश का आधिपत्य था

मान्यखेत के राष्ट्रकूटों का सर्वप्रथम शक्तिशाली राजा दन्तिदुर्ग था जो 733 ई के लगभग राजा बना समनगढ तथा एलोरा से प्राप्त उसके अभिलेखों में उसके विजयों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि उसने माही, महानदी तथा रेवा (अर्थात नर्मदा) के तटों पर कई युद्ध किये तथा कोसी, कलिंग, कोसल, श्रीशैल मालव, लाट तथा टंक पर विजय प्राप्त की एक अन्य अभिलेख में उसके गालधालाट तथा टंक पर विजय प्राप्त की एक अन्य अभिलेख में उसके मालवा विजय के सम्बन्ध में कहा गया है कि उसने उज्जयिनी पर आक्रमण कर वहाँ से गुर्जर शासक को पराजित कर बन्दी बना लिया तथा विजय के उपलक्ष्य में वहाँ हिरण्यगर्भ दान दिया इन वर्णनों से पता चलता है कि 750 ई के लगभग मध्य प्रदेश का एक बड़ा भाग उसके राज्य के अन्तर्गत हो गया था

दन्तिदुर्ग के उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम, गोविन्द द्वितीय तथा ध्रुव के शासनकाल में मध्य प्रदेश के कुछ भाग पर राष्ट्रकूटों का आधिपत्य यथावत रहा ध्रुव का उत्तराधिकारी गोविन्द तृतीय अत्यन्त महत्वाकांक्षी शासक था दक्कन में अपनी सत्ता को सुदृढ कर उसने अपना ध्यान उत्तर भारत की ओर किया कन्नौज पर अधिकार करने के उद्देश्य से वह भोपाल-झाँसी होता हुआ आगे बढा प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय ने उसे रोकने का प्रयत्न किया परन्तु युद्ध में पराजित होकर राजपूताना भाग गया कन्नौज का शासक चक्रायुध तक बंगाल का पालवंशी शासक धर्मपाल ने आत्म समर्पण कर अपनी रक्षा की गोविन्द तृतीय के इस अभियान में उसका अनुज इन्द्र, जिसे मालवा का शासक नियुक्त किया गया था, सेना की एक बडी टुकडी लेकर मालवा में उसके आवागमन के मार्ग की रक्षा करता रहा था अभिलेखों के वर्णन के अनुसार अभियान करते हुए गोविन्द तृतीय हिमालय जा पहुँचा तत्पश्चात् वह अपनी राजधानी की ओर लौटा और रास्ते में मालवा, कोसल कलिंग वंग डाहल तथा ओड्रक देशों को जीता मालवा क्षेत्र में मंदसौर जिले के इन्दगढ नामक स्थान से उसके शासनकाल का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है कोसल में सम्भवत उसने चन्द्रगुप्त नामक राजा को पराजित किया जैसा कि सजान से प्राप्त ताम्रपत्र में उल्लिखित है डाहल पर उसकी विजय का कोई वर्णन प्राप्त नहीं है गोविन्द तृतीय का राज्यकाल 783 ई से 814 ई के बीच माना गया है

गोविन्द तृतीय का उत्तराधिकारी अमोघवर्ष प्रथम था जिसका काल 814 ई से 878 ई तक था उसके बाद उसका पुत्र कृष्ण द्वितीय गद्दी पर बैठा उसने त्रिपुरी के कलचुरि राजा कोकल्ल प्रथम की कन्या से विवाह किया इस वैवाहिक सम्बन्ध के कारण उसे अपने शत्रुओं के साथ युद्ध करने में कलचुरियों की बहुत सहायता मिली यह सहायता विशेष रूप से उसके शत्रु पूर्वी चालुक्य राजा विजयादित्य तृतीय के साथ संघर्ष के समय मिली

पीठापुरम से प्राप्त एक अभिलेख में कहा गया है कि विजयादित्य ने चक्रकूट (आधुनिक बस्तर जिले का मध्य भाग) को जला डाला तथा किरणपुर (आधुनिक बालाघाट जिले में स्थित) को भयभीत किया मालवा पर अपना अधिकार सुरक्षित रखने के लिए कृष्ण द्वितीय को गुर्जर प्रतिहार शासक भोज के साथ युद्ध करना पड़ा कृष्ण के पुत्र जगतुंग का विवाह त्रिपुरी के शासक शंकरगण की दो कन्याएँ लक्ष्मी तथा गोविन्दाम्बा के साथ हुआ कृष्ण की मृत्यु 914 ई के अन्तिम भाग में हो गयी

कृष्ण द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पोता इन्द्र तृतीय हुआ उसका शासनकाल 914 ई से 922 ई के बीच माना गया है उसने भी त्रिपुरी की कलचुरि राजकन्या

वैजम्बा से विवाह कर दोनो राजवशो को और भी निकट लाने का प्रयत्न किया अपने छोटे से शासनकाल मे उसने गुर्जर-प्रतिहार महीपाल को पराजित कर तथा उसकी राजधानी कन्नौज पर अधिकार कर यश प्राप्त किया इन्द तृतीय का एक अभिलेख मन्दसौर मे स्थित इन्दगढ से प्राप्त हुआ है

इन्द तृतीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र अमोघवर्ष द्वितीय हुआ परन्तु शीघ्र ही उसके छोटे भाई गोविन्द चतुर्थ द्वारा उसकी हत्या कर सिहासन हथिया लिया गया गोविन्द चतुर्थ दुश्चरित्र था और इस कारण मत्रियों द्वारा षड्यत्र कर उसके चाचा अमोघवर्ष तृतीय को सिहासन पर बैठाने का प्रयत्न किया गया अमोघवर्ष ने अपने सम्बन्धी त्रिपुरी के कलचुरि शासकों से सहायता माँगी समकालीन कलचुरि शासक युवराजदेव प्रथम ने एक मजबूत सेना भेजकर गोविन्द को पराजित कर अमोघवर्ष को सिहासन प्राप्त करने मे सहायता प्रदान की अमोघवर्ष का विवाह युवराजदेव की कन्या कन्दकदेवी से हुआ था अत कलचुरि शासक ने अपने दामाद को सहायता करने मे कोई भी कसर बाकी न रखी

अमोघवर्ष तृतीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र कृष्ण तृतीय 939 ई के अन्तिम भाग मे सिहासन पर बैठा उसके राज्यकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी उसके द्वारा उत्तर भारत पर आक्रमण उसने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण कर उसके एक बडे भाग पर अधिकार कर लिया मैहर के निकट जूरा से प्राप्त उसकी प्रशस्ति से युक्त एक शिलालेख से इस बात की पुष्टि होती है उसका उल्लेख करते हुए दो अन्य अभिलेख छिन्दवाडा जिले मे स्थित नीलकण्ठी से प्राप्त हुए है कृष्ण तृतीय ने मालवा पर भी आक्रमण किया तथा परमार शासक सीयक को पराजित कर उज्जयिनी पर अधिकार कर लिया

सीयक ने इस पराजय का बदला कृष्ण तृतीय के उत्तराधिकारी खोट्टिग के समय मे लिया उसने राष्ट्रकूट राजधानी मान्यखेत पर आक्रमण कर उसे लूट लिया इस घटना से हतोत्साह होकर खोट्टिग की 972 ई में मृत्यु हो गई उसके दो कमजोर उत्तराधिकारी कर्क्क द्वितीय तथा इन्द चतुर्थ हुए 975 ई के लगभग चालुक्य वशी तैल द्वितीय ने राष्ट्रकूटो के अतिम नरेश इन्द चतुर्थ को पराजित कर राष्ट्रकूट साम्राज्य को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया

राष्ट्रकूट वशी कुछ सामन्तो के अभिलेख भी मध्य प्रदेश की सीमा के अन्तर्गत प्राप्त हुए है जबलपुर जिले मे बहुरीबन्द से राष्ट्रकूट महासामन्ताधिपति गोल्हणदेव का एक अभिलेख जैन मूर्ति पर उत्कीर्ण पाया गया है इसमे त्रिपुरी के कलचुरि शासक गयाकर्ण के शासनकाल मे गोल्हणदेव द्वारा शान्तिनाथ के जिनालय के निर्माण का उल्लेख है इसी प्रकार दमोह जिले के पिपरिया से प्राप्त एक स्तम्भ लेख मे जो विक्रम सवत 1198 का है राष्ट्रकूट महामाण्डलिक राणक जयतसिह का हेमसिह के साथ युद्ध होने का उल्लेख है एक तीसरा अभिलेख जो विदिशा जिले में स्थित पठारी से प्राप्त हुआ है विक्रम सवत 917 का है इसमे किसी राष्ट्रकूट परबल द्वारा गौरी (विष्णु के कृष्ण) के मदिर मे गरुडध्वज के निर्माण का उल्लेख है निमाड जिले मे स्थित जेठवई से एक राष्ट्रकूट सामन्त के शक सवत् 708 का एक ताम्रपत्र भी प्राप्त हुआ है

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मध्य प्रदेश के इतिहास मे राष्ट्रकूटो का महत्वपूर्ण योगदान रहा

उज्जयिनी तथा कान्यकुब्ज का गुर्जर-प्रतिहार वश

आठवीं सदी ईसवी के प्रथम चरण मे उज्जयिनी म एक गुर्जर-प्रतिहार राजवश की स्थापना हुई इस वश का सर्वप्रथम शासक नागभट्ट प्रथम था उसके पूर्वजों के सम्बन्ध मे हमे कुछ भी ज्ञात नहीं है उसके राज्यकाल के सम्बन्ध मे विद्वानो मे मतभेद है अधिकाश विद्वान् उसके राज्यारोहण की तिथि 730 ई के लगभग तथा शासन-काल 556 ई तक मानते है उसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी अरबो के आक्रमण का प्रतिरोध कर उन्हे खदेड देना इस समय अरबों ने पश्चिम भारत पर आक्रमण कर अनेक राज्यो को जीत लिया था

अरबों पर प्राप्त विजय ने उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया और उसका प्रभाव नान्दीपुरी के गुजरों तथा जोधपुर के प्रतिहारो पर भी हो गया भडोच के चाहमान शासक ने भी उसकी प्रभुता को स्वीकार किया अपने राज्यकाल में नागभट्ट को केवल एक राजा से पराजय स्वीकार करनी पडी थी और वह था दक्कन का राष्ट्रकूट वशी दन्तिदुर्ग राष्ट्रकूटो के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि दन्तिदुर्ग ने उज्जयिनी पर आक्रमण कर गुर्जर शासक को पराजित किया तथा वहाँ हिरण्यगर्भ दान दिया यह गुर्जर शासक नागभट्ट प्रथम ही था ऐसा अधिकाश विद्वानो का मत है परन्तु दन्तिदुर्ग का यह आक्रमण अस्थायी रहा और वह शीघ्र ही वापस लौट गया

नागभट्ट प्रथम के दो उत्तराधिकारी उसके भतीजे ककुक्क तथा देवराज थे जिनके विषय मे कुछ ज्ञात नहीं देवराज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वत्सराज था जो एक महत्वाकाक्षी शासक था उसका उल्लेख जैन ग्रन्थ कुवलय माला तथा हरिवश पुराण में आया है जिनसे ज्ञात होता है कि उसका अधिकार मालवा तथा पूर्वी राजपूताना पर था राजस्थान से प्राप्त दो अभिलेखो से ज्ञात होता है कि गौड राजपूताना पर भी उसका अधिकार था कुछ विद्वानों के अनुसार उसने कन्नौज पर भी अधिकार करने का प्रयत्न किया तथा वहाँ के भण्डीवशी शासक को पराजित किया राष्ट्रकूटो के अभिलेखो से पता चलता है कि उसने गौड पर भी आक्रमण किया तथा वहाँ के राजा को पराजित किया गौड का शासक इस समय सम्भवत पालवशी धर्मपाल था पालवशी धर्मपाल भी महत्वाकाक्षी शासक था उसने

उसने भी उत्तर भारत पर अपनी प्रभुता कायम करनी चाही सम्भवत वत्सराज और धर्मपाल का सघर्ष इसी कारण चल रहा था इस समय दक्षिण से राष्ट्रकूटो का दूसरा आक्रमण हुआ राष्ट्रकूट अभिलेखो के अनुसार राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने वत्सराज को पराजित कर उसे मरुभूमि मे शरण लेने को विवश किया और इसी प्रकार उसने धर्मपाल को भी पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया परन्तु ध्रुव की तरह उसका आक्रमण भी अल्पकालीन था और उसके लौटने के पश्चात कन्नौज पर धर्मपाल ने आक्रमण कर चक्रायुध को गद्दी पर बैठा दिया

वत्सराज का उत्तराधिकारी नागभट्ट द्वितीय था उसका राज्यकाल 805 ई से 833 ई तक माना जाता है अपने पैतृक राज्य को पुन शक्तिशाली एव विस्तृत करने के प्रयत्न मे वह एक पराक्रमी योद्धा सिद्ध हुआ राष्ट्रकूट अभिलेखो से ज्ञात होता है कि उसके शासनकाल मे राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द तृतीय ने उत्तर भारत पर आक्रमण किया जिससे वह पराजित हुआ यह युद्ध 806 ई और 810 ई के बीच हुआ होगा सजान ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि नागभट्ट के पराजय के पश्चात् कन्नौज नरेश चक्रायुध तथा गौड के नरेश धर्मपाल ने स्वय ही गोविन्द के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया इस प्रकार गोविन्द तृतीय ने कि राज्य सघ मे राष्ट्रकूटो की महत्ता स्थापित की परन्तु अपने पूर्वजो की तरह वह भी शीघ्र ही अपने राज्य को वापस चला गया और अपने घरेलू झमेलो मे फँस गया उत्तर भारत मे गोविन्द तृतीय की अनुपस्थिति ने नागभट्ट को फिर से अपनी स्थिति सुधारने का अवसर प्रदान किया उसने कन्नौज पर आक्रमण कर वहाँ के राजा चक्रायुध को पराजित किया और कन्नौज पर अधिकार कर लिया इस समय से कन्नौज प्रतिहारो की नयी राजधानी बन गयी कन्नौज के पतन का समाचार मिलते ही गौड नरेश धर्मपाल ने नागभट्ट से मोर्चा लेने का निश्चय किया. क्योकि कन्नौज नरेश चक्रायुध को धर्मपाल का सरक्षण प्राप्त था परन्तु इस सघर्ष मे धर्मपाल की पराजय हुई इन विजयो के फलस्वरूप मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख के अनुसार उसने आनर्त (उत्तरी काठियावाड) मालव (मालवा) किरात (हिमालय अचल का राज्य) तुरुष्क (पश्चिम भारत का मुस्लिम राज्य) वत्स (कोशाम्बी प्रदेश) तथा मत्स्य (पूर्वी राजपूताना) पर आक्रमण कर जबरदस्ती छीन लिया इस प्रकार नागभट्ट द्वितीय अपने वश के विलुप्त गौरव को पुन प्राप्त करने मे सफल हो गया

नागभट्ट द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र रामभद्र था उसका राज्यकाल 833 ई से 836 ई के बीच था तीन वर्ष का था और अशान्ति अव्यवस्था और सकट से पूर्ण था इस सकटपूर्ण स्थिति का पता वराह ताम्र दौलतपुर अभिलेखो से चलता है जिनमे उसके पिता गये दान सक्रम न रह सके और बाद मे उसके मिहिरभोज के समय उनका पुष्टिकरण किया

गया मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख म भी रामभद्र के शासनकाल मे सकट का अनुमान किया जा सकता है यथासम्भव यह सकट पाल नरेश के आक्रमण के कारण आया होगा उसके राज्य के विस्तार के विषय मे भी कुछ निश्चित रूप से कहना कठिन है इतना निश्चित है कि ग्वालियर का प्रदेश उसके अधीन था क्योकि वहाँ वाइलभट्ट नामक पदाधिकारी उसकी ओर से शासन कर रहा था यह तथ्य उसके शासनकाल के एक अभिलेख से पता चलता है जो ग्वालियर से प्राप्त हुआ है

रामभद्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र मिहिरभोज प्रथम था उसका शासनकाल 836 ई से 885 ई के बीच माना जाता है मिहिरभोज अपने वश का पराक्रमी राजा था जिसने अपने पिता के कमजोर शासनकाल मे छिन्न-भिन्न होने वाले साम्राज्य को फिर से सुसगठित कर समृद्ध बनाया

भोज की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी उसके द्वारा बुन्देलखण्ड पर पुन अधिकार करना बुन्देलखण्ड प्रतिहारो के अधीन था परन्तु रामभद्र के कमजोर शासनकाल का लाभ उठाकर सम्भवत चन्देलो ने वहाँ अपनी स्वतत्रता घोषित कर दी थी परन्तु भोज ने कालिजर-मण्डल पर अधिकार कर फिर से बुन्देलखण्ड पर अपनी प्रभुता स्थापित की यह तथ्य बराह अभिलेख से स्पष्ट हो जाता है इसी प्रकार भोज ने राजपुताने पर भी अपनी प्रभुता पुन स्थापित कर ली रामभद्र के शासनकाल मे मण्डौर की प्रतिहार शाखा ने इस भू भाग पर अपनी प्रभुता स्थापित कर ली थी तथा सम्भवत स्वतत्र हो गये थे भोज के इस भू-भाग पर पुन अधिकार का पता दौलतपुर तथा प्रतापगढ के अभिलेखो से चलता है

कहला अभिलेख से ज्ञात होता है कि सरयू पार के कलचुरि वशी गुणाम्बोधिदेव ने भोजदेव से भूमि प्राप्त की थी अधिकाश विद्वान् इस भोज को प्रतिहार मिहिरभोज मानते है इससे स्पष्ट होता है कि सरयू पार का तत्कालीन कलचुरि वश मिहिरभोज के अधीन था

जयपुर से प्राप्त चाटसू अभिलेख से पता चलता है कि गुहिल वशी हर्षराज भोज का सामन्त था तथा उसकी ओर से सम्भवत उसने गौड के राजा से युद्ध किया था इसी प्रकार 822 ई के पहेवा अभिलेख से सिद्ध होता है कि पजाब पर विशेषतया कर्नाल प्रदेश पर भोज का अधिकार था इसी प्रकार काठियावाड पर भोज के प्रभाव का पता उन ताम्रपत्र से लगता है जिसमे बलवर्मन नामक शासक का उल्लेख है कुछ विद्वानो के अनुसार यह बलवर्मन भोज के सामन्त के रूप मे काठियावाड मे शासन कर रहा था

मध्य प्रदेश मे भोज के तीन अभिलेख मिले है जिनमे से वि स 832 तथा 833 के दो अभिलेख ग्वालियर से तथा एक लेख ग्वालियर जिले के सागर ताल नामक स्थान से प्राप्त हुआ है इन तीनो अभिलेखो से स्पष्ट हो जाता है कि मध्य प्रदेश के ग्वालियर क्षेत्र पर मिहिरभोज का अधिकार था

मिहिरभोज का सघर्ष दक्कन के राष्ट्रकूटो से भी हुआ वह राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष और उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय क्रमश दोनों का ही समकालीन था अमोघवर्ष के निर्बल शासन का लाभ उठाकर भोज ने उज्जैन प्रदेश पर अधिकार करते हुए नर्मदा नदी तक अपना राज्य विस्तार कर लिया, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अमोघवर्ष के गुजरात के सामन्त ध्रुव द्वितीय ने मिहिरभोज से लोहा लिया तथा उसे पराजित किया भोज का राष्ट्रकूटो से यह सघर्ष अमोघवर्ष के उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय के समय मे भी चलता रहा और दोनो नरेशो के अभिलेख उज्जयिनी प्रदेश पर अपनी-अपनी विजय का दावा करते है सम्भवत सफलता कभी राष्ट्रकूटो को मिलती थी तो कभी प्रतिहारों को अत मिहिरभोज के शासनकाल मे यह झगडा अनिर्णीत रहा इसी प्रकार गौड के पाल नरेश देवपाल के साथ भी उसका सघर्ष चला जिसमे उसे सफलता भी मिली और असफलता भी

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मिहिरभोज का राज्य उत्तर मे हिमालय की तराई तक, पूर्व में पाल राज्य की पश्चिमी सीमा तक दक्षिण मे बुन्देलखण्ड और कौशाम्बी तक और पश्चिम मे सौराष्ट्र तक विस्तृत था इसके अन्तर्गत राजपूताना का अधिकाश भाग भी सम्मिलित था अरब यात्री सुलेमान ने अपने वर्णन मे जिस जुज्र के राजा का वर्णन किया है, वो मिहिरभोज के सम्बन्ध मे ही था मिहिरभोज की कुछ मुद्राए भी मिली हैं जिन पर उसे 'आदिवराह' कहा गया है पहेवा प्रशस्ति से भोज की अन्तिम तिथि 884 ई ज्ञात होती है अत 885 ई के लगभग उसकी मृत्यु हुई होगी

मिहिरभोज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महेन्द्रपाल प्रथम 885 ई के लगभग गद्दी पर बैठा राजतरगिणी से ज्ञात होता है कि पश्चिम पजाब, जो उसके पिता के द्वारा जीता गया था उसके हाथ से निकल गया था कश्मीर के शासक शकरवर्मन द्वारा जीत लिया गया परन्तु पूर्वी पजाब निश्चित रूप से उसके अधीन था केवल पश्चिमी पजाब को छोड अपने पिता के द्वारा दिये गये बाकी साम्राज्य को महेन्द्रपाल ने सुरक्षित रखा उसके राज्य-वर्ष दो और उन्नीस के सात अभिलेख दक्षिण बिहार तथा उत्तरी बगाल में मिले हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि उसने पाल शासको से मगध तथा उत्तरी बगाल का भाग जीत लिया था महेन्द्रपाल के अभिलेख काठियावाड, पूर्वी पजाब झाँसी जिला तथा अवध से भी मिले हैं जिनके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उसके साम्राज्य का विस्तार हिमालय से विन्ध्य तक तथा पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक विस्तृत था महेन्द्रपाल विद्या प्रेमी एव विद्वानो का आश्रयदाता था उसकी सभा में सस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर रहता था, जिसने अनेक ग्रन्थ लिखे जिनसे तत्कालीन भारत की सास्कृतिक स्थिति पर प्रचुर प्रकाश पडता है

महेन्द्रपाल की मृत्यु 910 ई के लगभग हो गई उसके पश्चात् सिहासन के लिए सम्भवत उसके दो पुत्र–भोज द्वितीय और महेन्द्रपाल प्रथम में गृह युद्ध हुआ इस युद्ध में प्रारम्भ में भोज की विजय हुई और वह 910 ई से 913 ई तक राज्य करता रहा, परन्तु कुछ समय पश्चात् महीपाल ने सिहासन प्राप्त करने का पुन· प्रयत्न किया और अब उसने चन्देल नरेश हर्षदेव का समर्थन प्राप्त किया इस बार महीपाल ने भोज को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया

विद्वानों ने महीपाल प्रथम का राज्यकाल 913 ई से 945 ई के बीच स्वीकार किया है उसके तीन अन्य नाम भी मिलते है–विनायकपाल हेरम्बपाल क्षितिपाल महीपाल बडा प्रतापी राजा सिद्ध हुआ यद्यपि उसे प्रारम्भ से ही अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा गृहयुद्ध से छुटकारा पाते ही उसे राष्ट्रकूटों से युद्ध करना पडा काम्बे के ताम्रपत्र के अनुसार राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय ने मालवा पर आक्रमण कर उज्जैन पर अधिकार कर लिया इस आक्रमण के समय इन्द्र के सामन्त चालुक्य नरेश नरसिह भी उसके साथ था महीपाल पराजित होकर भाग गया, परन्तु अपने पूर्वजों की तरह इन्द्र तृतीय शीघ्र ही उत्तर भारत छोड़कर वापस लौट गया अत· महीपाल ने कन्नौज पर पुन अधिकार कर लिया तथा व्यवस्था स्थापित कर अपने वश के प्रतिष्ठा का पुनरुद्धार किया तत्पश्चात् उसने विजय प्रारम्भ की जिसका उल्लेख राजकवि राजशेखर के ग्रन्थ प्रचण्डपाण्डव में मिलता है राजशेखर के अनुसार महीपाल ने मुरल (नर्मदा नदी की तटीय जाति), मेखल (अमरकटक प्रदेश की जाति) कलिग (उडीसा), केरल (दक्षिण की चेर जाति), कुलूत (कागडा में रहने वाली जाति), कून्तल (मैसूर में रहने वाली जाति) तथा रमठ (पजाब की एक जाति) को पराजित कर अपने अधीन कर लिया था कुछ विद्वानो के अनुसार महीपाल ने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियो को पराजित कर अपने प्रारम्भिक पराभव का बदला लिया था महीपाल का साम्राज्य पूर्व मे बिहार की पश्चिमी सीमा तक तथा पश्चिम मे सौराष्ट्र तक विस्तृत था उत्तर-पश्चिम मे उसका राज्य पजाब के कुछ भाग तक तथा दक्षिण मे नर्मदा तक अवश्य विस्तृत था परताबगढ (प्रतापगढ) अभिलेख का साक्ष्य है कि उज्जैन महीपाल के राज्य के अतर्गत था गुना जिले मे प्राप्त विनायकपालदेव के वि स 999 के अभिलेख से विदित होता है कि यह क्षेत्र भी विनायकपाल (महीपाल) के राज्य के अन्तर्गत था 945 ई के लगभग महीपाल की मृत्यु हो गयी

महीपाल का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महेन्द्रपाल द्वितीय हुआ उसकी सर्वप्रथम तिथि 946 ई के परतावगढ अभिलेख से ज्ञात होती है जिसमे महेन्द्रपाल द्वारा दशपुर

मन्दसौर में एक ग्राम दान देने का उल्लेख आया है इससे स्पष्ट हो जाता है कि यह प्रदेश महेन्द्रपाल के राज्य के अन्तर्गत था जहाँ उसका महादण्डनायक माधव शासन कर रहा था महेन्द्रपाल द्वितीय ने लगभग 948 ई तक राज्य किया

महेन्द्रपाल के पश्चात् अगले 15 वर्षों में चार राजाओं का उल्लेख मिलता है ये थे—देवपाल विनायकपाल द्वितीय महीपाल द्वितीय तथा विजयपाल इनका आपसी सम्बन्ध क्या था यह कहना कठिन है देवपाल का उल्लेख 948 ई के सियदोनि अभिलेख में हुआ है विनायकपाल द्वितीय का उल्लेख खजुराहो से प्राप्त 954 ई के एक अभिलेख में मिलता है महीपाल द्वितीय का उल्लेख बयाना से प्राप्त 955 ई के एक अभिलेख में आया है इसी प्रकार विजयपाल का नाम रजोर से प्राप्त 969 ई के लेख में आया है इन चार राजाओं के शासनकाल में प्रतिहार सत्ता क्षीण होने लगी थी प्रतिहार शासकों की कमजोरी का लाभ उठाकर उनके विभिन्न सामन्त विद्रोह घोषित कर स्वतन्त्र हो गये और स्वाधीन राज्य की स्थापना की इन सामन्तों में प्रमुख थे—गुजरात के चालुक्य बुन्देलखण्ड के चन्देल मालव के परमार डाहल के चेदी शाकम्भरी के चाहमान राजस्थान के गुहिल तथा पश्चिमोत्तर प्रदेश के शाही शासक प्रतिहार वंश के अंतिम तीन नरेश राज्यपाल त्रिलोचनपाल तथा यशपाल हुए इनके शासनकाल में एक ओर सामन्तों का उत्पात मचा हुआ था तो दूसरी ओर गजनी के मुस्लिम नरेश भारत पर आक्रमण किये हुए थे चारों ओर से इन विपत्तियों का सामना न कर सकने के कारण ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में प्रतिहार वंश का पतन हो गया

कन्नौज के प्रतिहारों के पतन के पश्चात् भी प्रतिहारों के तीन गौण शाखाओं के राज्य करने का पता हमें मध्य प्रदेश की सीमा के अंतर्गत प्राप्त कुछ अभिलेखों से चलता है

पहला वंश गुना जिले में चन्देरी के निकटवर्ती क्षेत्र पर 11वीं सदी ई के प्रारम्भ से 13वीं सदी के अन्त तक राज्य करता था इसका पता हमें चन्देरी तथा कदवाहा से प्राप्त अभिलेखों में चलता है अभिलेखों से प्राप्त वंश-वृक्ष से हमें नीलकण्ठ हरिराज भीमदेव रणपाल, वत्सराज, स्वर्णपाल कीर्तिपाल अभयपाल गोविन्दराज राजराज वीरराज एवं जैत्रवर्मन के नामों का पता चलता है इनमें से सातवें नरेश कीर्तिपाल ने कीर्तिदुर्ग (वर्तमान चन्देरी गढ़) कीर्ति-नारायण का मंदिर तथा कीर्तिसागर का निर्माण किया

दूसरे प्रतिहार वंश का पता हमें शिवपुरी जिले में स्थित कुरेठा से प्राप्त मलयवर्मन् के वि स 1277 तथा उसके भाई नरवर्मन के वि स 1304 के ताम्रपत्रों से चलता है इन अभिलेखों से इस वंश का नटुल प्रतापसिंह विग्रह मलयवर्मन तथा नरवर्मन नामक शासकों का पता चलता है प्रतिहारों के एक तीसरे वंश का पता जबलपुर तथा दमोह जिले से प्राप्त उनके लगभग दस अभिलेखों से चलता है ये अभिलेख वि स 1344 से 1366 के बीच के हैं तथा बाघदेव और गजसिंह नामक प्रतिहार शासकों से सम्बन्धित है इन वंशों के आपसी सम्बन्ध और तथ्य अज्ञात हैं

चन्देल राजवंश

प्रतिहार साम्राज्य के पतन के पश्चात् पश्चिम तथा मध्य भारत में कई नये राजवंशों का उदय हुआ इनमें बुन्देलखण्ड का चन्देल वंश सबसे महत्वपूर्ण था चन्देलों के उत्कीर्ण लेख और परम्परा इस विषय में एकमत है कि इस वंश का सम्बन्ध पौराणिक चन्द्रवंश से है इस वंश का सर्वप्रथम राजा नन्नुक था उसका राज्यकाल 825 ई से 840 ई के बीच माना जाता है खजुराहो उसकी राजधानी थी तथा निकटवर्ती क्षेत्र पर उसका अधिकार था सम्भवतः वह गुर्जर-प्रतिहारों का सामन्त मात्र था जैसा कि उसके विरुद 'नृपति' अथवा 'महिपति' से पता चलता है

इस वंश का एक शासक विजयशक्ति था जिसे विज्ज अथवा विज भी कहा गया है खजुराहो से प्राप्त एक अभिलेख में कहा गया है कि उसने अपनी विजय-योजना में सुदूर दक्षिण तक आक्रमण किया था

हर्षदेव (905-925 ई) चन्देल वंश का प्रथम महत्वपूर्ण राजा था उसने उत्तर भारत की समकालीन राजनीति में भाग लेकर अपने वंश की प्रतिष्ठा में एक नये युग का प्रारम्भ किया खजुराहो से प्राप्त एक अभिलेख के अनुसार उसने राजा क्षितिपालदेव को सिंहासन पर बैठाया

हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र यशोवर्मन सिंहासन पर बैठा उसका शासनकाल 925 ई से 950 ई के बीच माना जाता है यशोवर्मन बुन्देलखण्ड में अपनी स्थिति मजबूत कर पूर्व तथा पश्चिम की ओर बढ़ा तथा अपने साम्राज्य का विस्तार किया खजुराहो से प्राप्त 954 ई के अभिलेख के अनुसार उसने गौड़ खस कोसल चेदि कुरु मिथिला मालवा काश्मीर तथा गुर्जरों की विजय की इस अभिलेख के अनुसार उसने एक भव्य विष्णु मन्दिर का निर्माण कराया जो खजुराहो का वर्तमान लक्ष्मण मंदिर है इस मन्दिर में प्रतिष्ठित वैकुण्ठनाथ की प्रतिमा को यशोवर्मन ने हेरम्बपाल के पुत्र ह्यपति देवपाल से प्राप्त किया था

यशोवर्मन की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र धंग गद्दी पर बैठा जिसका शासनकाल 950 ई से 1008 ई तक रहा खजुराहो में उसके राज्यकाल के वि स 1011 तथा 1059 के अभिलेख मिले हैं गोपाद्रि (ग्वालियर) जो प्रतिहार सम्राट के अधिकार क्षेत्र में था पर आक्रमण कर धंग ने उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया परन्तु उसकी ग्वालियर की विजय अस्थायी रही क्योंकि कच्छपघात वज्रदामन ने 977 ई के पूर्व ग्वालियर को जीत लिया धंग के साम्राज्य की सीमा कालिंजर से मालव नदी (अर्थात् बेतवा) तक मालव नदी के कालिंदी (अर्थात् यमुना) तक कालिंदी से चेदि राज्य तक तथा चेदि राज्य से गोपाद्रि तक फैली थी

उसने भारत के अन्य भागों पर भी दूर-दूर तक आक्रमण किया खजुराहो से प्राप्त 1202 ई के अभिलेख के अनुसार कोसल, क्रथ, सिहल तथा कुन्तल के नरेश उसकी आज्ञाएँ शिरोधार्य करते थे काँची, आन्ध, राढ और अग के शासको की पत्नियाँ उसकी कारागारों मे थी निःसदेह इस अभिलेख में वर्णित कुछ तथ्य अतिशयोक्तिपूर्ण है परन्तु इसमें कोई सन्देह नही कि धग चन्देल वश का प्रतिभाशाली और वीर शासक था

विजेता के रूप मे धग महान् था किन्तु कला व स्थापत्य के रूप में वह और भी महान् था उसके राज्य काल मे खजुराहो के दो श्रेष्ठतम मन्दिरों–पार्श्वनाथ और विश्वनाथ का निर्माण हुआ

धग के पश्चात् उसका पुत्र गड 1008 ई के लगभग अल्पकाल के लिए सिहासन पर बैठा उसका शासनकाल शान्तिपूर्ण रहा खजुराहो के जगदम्बी तथा चित्रगुप्त मन्दिर सम्भवत उसी के राज्यकाल में निर्मित हुए गड के बाद उसका पुत्र विद्याधर 1017 ई के लगभग सिहासन पर बैठा उसका राज्यकाल 1029 तक रहा विद्याधर ने मालवा के परमार शासक भोज तथा 'कलचुरि चन्द्र' के साथ युद्ध कर विजय प्राप्त की उसके पुत्र विजयपाल ने कलचुरि शासक गागेयदेव को पराजित किया कुछ विद्वानो का विचार है कि खजुराहो का कदरिया महादेव मन्दिर उसी के द्वारा निर्मित हुआ होगा

विद्याधर के पश्चात् उसका पुत्र विजयपाल सिहासन पर बैठा उसका राज्यकाल 1030 ई से 1050 ई के बीच माना गया है अन्य प्रमाणों से ज्ञात होता है कि उसके कमजोर शासनकाल में चन्देलों को त्रिपुरी के कलचुरि तथा ग्वालियर के कच्छपघातो का पराभव स्वीकार करना पड़ा

विजयपाल का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई देववर्मन था जिसका राज्यकाल 1050 ई से 1060 ई के बीच माना गया है उसका एक ताम्रपत्र जो वि स 1107 का है नन्यौरा से तथा दूसरा ताम्रपत्र जो वि स 1108 का है, चरखारी स प्राप्त हुआ है उसका राज्यकाल विपत्तियों का समय था जब त्रिपुरी के कलचुरि शासक कर्ण ने चन्देलो को पराजित कर उन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करवायी

देववर्मन का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई कीर्तिवर्मन था जिसका राज्यकाल 1060 ई से 1100 ई के बीच माना गया है कीर्तिवर्मन के पश्चात् उसका पुत्र सल्लक्षणवर्मन गद्दी पर बैठा उसका राज्यकाल 1100 ई से 1115 ई के बीच था उसका कोई अभिलेख अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है जयवर्मन जो अपने पिता सल्लक्षणवर्मन के पश्चात् गद्दी पर बैठा, 1115 ई से 1120 ई तक राज्य किया उसका केवल एक अभिलेख जो वि स 1173 का है खजुराहो स प्राप्त हुआ है यह अभिलेख धग के खजुराहो अभिलेख के अन्त मे उत्कीर्ण किया गया है उसके चाँदी तथा ताँबे के सिक्के भी मिले है इस तथा अन्य अभिलेखों और सिक्को स उसके राज्यकाल की घटनाओ का कोई विवरण नहीं मिलता सम्भवत उसे गाहडवाल शासक गोविन्दचन्द्र के हाथो पराजय स्वीकार करना पडी जिसके कारण उसने राज्य त्याग कर शासन-सूत्र को अपने चाचा पृथ्वीवर्मन को समर्पित कर दिया

जयवर्मन का उत्तराधिकारी पृथ्वीवर्मन हुआ जिसका शासनकाल 1120 ई से 1129 ई के बीच माना जाता है उसके राज्यकाल में कोई भी महत्वपूर्ण घटना का वर्णन प्राप्त नहीं है जनरल कनिघम को उसके कुछ ताँबे के सिक्के मिले थे ये ही इस राजा के इतिहास के एकमात्र साधन है

पृथ्वीवर्मन का उत्तराधिकारी उसका यशस्वी पुत्र मदनवर्मन था उसका राज्यकाल, जो 1129 ई से 1163 ई के बीच माना जाता है, चन्देलो से इतिहास में युगान्तर कारी सिद्ध हुआ उसके प्रयत्नों से चन्देल शक्ति का एक बार फिर से उत्थान हुआ उसके राज्यकाल के लगभग 13 प्राप्त अभिलेखों में छ अभिलेख मध्य प्रदेश के अजयगढ छतरपुर, खजुराहो और पपौरा से प्राप्त हुए है तथा शेष उत्तर प्रदेश के कालिजर, मऊ, औगासी तथा महोबा से मिले है मदनवर्मन के चाँदी के 48 सिक्को की एक निधि भी रीवा जिले से प्राप्त हुई है इसके अतिरिक्त उसके राज्यकाल की घटनाओ का उल्लेख उसके परवर्ती शासक तथा समकालीन अन्य वशो के शासकों के अभिलेखों में मिलता है इन सबका अध्ययन कर विद्वानों ने उसके राज्य की सीमा को उत्तर में यमुना से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक तथा पूर्व में रीवा से लेकर दक्षिण-पश्चिम में बेतवा नदी तक माना है उसने मालवा के परमार शासक यशोवर्मन को पराजित कर विदिशा को जीतकर अपने राज्य मे मिला लिया विदिशा के लिए सम्भवत उसे गाहडवाल शासक गोविन्दचन्द्र के साथ भी युद्ध करना पडा उसके द्वारा चेदि शासक को भी पराजित करने का वर्णन मिलता है यह चेदि शासक यथासम्भव गयाकर्ण था उसके राज्यकाल में गुजरात के चौलुक्य शासक जयसिह सिद्धराज ने धार तथा महोबा को जीतने के पश्चात् उसकी राजधानी पर आक्रमण किया जिसे मदनवर्मन ने युद्ध कर रक्षा की इस युद्ध के पश्चात् विदिशा का क्षेत्र मदनवर्मन के हाथो से निकल गया इन तथ्यों से ज्ञात होता है कि मदनवर्मन के राज्यकाल में चन्देलो की शक्ति को केवल पुनर्जीवन ही प्राप्त नही हुआ, बल्कि उसका विस्तार भी हुआ

मदनवर्मन का उत्तराधिकारी उसका पोता परमर्दीदेव था, जिसका शासनकाल 1165 ई से 1202 ई के बीच माना गया है कुछ विद्वान् उसके तथा मदनवर्मन के बीच यशोवर्मन द्वितीय का शासनकाल भी थोडे समय के लिये मानते हैं परमर्दीदेव के राज्यकाल मे बारह अभिलेख अभी तक प्राप्त हो चुके है जिनमे से छ मध्य प्रदेश की सीमा के अतर्गत अजयगढ अहाड चरखारी, मदनपुर और सेमरा से प्राप्त हुए है तथा शेष उत्तर प्रदेश के महोबा पचार बटेश्वर इच्छावर और कालिजर से मिले है उसने

गुजरात के समकालीन चौलुक्य शासक को पराजित कर बुंदेला क्षेत्र को फिर से अपने साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया यह घटना 1173 ई के पश्चात् हुई

परमर्दीदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र त्रैलोक्यवर्मन हुआ जिसका शासनकाल 1203 ई से 1250 ई के बीच माना गया है उसके राज्यकाल के आठ अभिलेख मिले है, जिनमें मध्य प्रदेश की सीमा के अंतर्गत पाये जाने वाले सात अभिलेख रीवा, अजयगढ, सागर, गर्रा से प्राप्त हुए है तथा एक ताम्रपत्र सतना के निकट रामबन मे सरक्षित है त्रैलोक्यवर्मन ने 1211-12 ई के लगभग रीवा को जीतकर बघेलखण्ड के एक भाग पर अधिकार कर लिया इस प्रकार त्रैलोक्यवर्मन का राज्य बेतवा नदी के पास ललितपुर के पश्चिम से लेकर पूर्व मे सोन नदी के आरम्भिक भाग तक विस्तृत था

त्रैलोक्यवर्मन का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वीरवर्मन हुआ जिसका शासनकाल 1250 ई से 1286 ई के बीच माना जाता है उसके राज्यकाल के दस अभिलेख प्राप्त हुए है जिनमे से झाँसी तथा कालिंजर से प्राप्त दो को छोड शेष सभी मध्य प्रदेश के सीमान्तर्गत अजयगढ, गुढहा, बरखारी तथा दाहि से प्राप्त हुए है इन अभिलेखो से ज्ञात होता है कि उसने अपने पिता के साम्राज्य को अक्षुण्ण रखा वीरवर्मन का एक विशेष प्रकार का सोने का द्रम्म खजुराहो से प्राप्त हुआ

वीरवर्मन का उत्तराधिकारी भोजवर्मन हुआ उसका राज्यकाल 1286 से 1288 ई के बीच तीन वर्षों तक रहा उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख अजयगढ से तथा एक ईश्वरभऊ से प्राप्त हुआ है इन अभिलेखो से उसके राज्यकाल की घटनाओं का कोई पता नही चलता

भोजवर्मन का उत्तराधिकारी हम्मीरवर्मन् 1288 ई के लगभग गद्दी पर बैठा तथा 1310 ई तक राज्य करता रहा अलाउद्दीन खलजी ने 1309 ई मे बघेल-जथलपुर क्षेत्र पर आक्रमण कर इस क्षेत्र (अर्थात् डाभल मण्डल) को अपने साम्राज्य के अंतर्गत कर लिया अत 1308-09 ई के बीच चन्देलो का आधिपत्य इस क्षेत्र पर से समाप्त हो गया परन्तु वे अजयगढ कालिंजर क्षेत्र पर राज्य करते रहे

हम्मीरदेव का उत्तराधिकारी वीरवर्मन द्वितीय था, परन्तु उसके सम्बन्ध मे कुछ भी ज्ञात नही है उसके बाद चन्देलों की सत्ता का तब दर्शन होता है जब कालिंजर के राजा कीरतसिंह ने 1544 ई मे शेरशाह सूरी का सामना किया था उसकी कन्या दुर्गावती का परिणय गोंडवाना के राजा दलपतसिंह के साथ 1545 ई मे हुआ दलपतसिंह की मृत्यु के पश्चात् वह अपने अल्प वयस्क पुत्र की संरक्षिका के रूप मे शासन करती रही मुगल सम्राट् अकबर ने जब 1564 ई मे गोंडवाना पर आक्रमण किया तो दुर्गावती ने अभूतपूर्व बहादुरी से उसका सामना किया तथा अन्तिम श्वास तक युद्ध को सचालित कर वीरगति को प्राप्त हुई कालिंजर के चन्देल वशो की यह अन्तिम ज्ञात सन्तान थी जिसने अपने वश के गौरव के अनुकूल वीरता का उदाहरण रखा

परमार राजवंश

नवी सदी ई के पूर्वार्द्ध मे मालवा मे एक नवीन राजवश का उदय हुआ जो परमार राजवश के नाम से प्रसिद्ध हुआ इस वश का सर्वप्रथम राजा उपेन्द्र माना जाता है उसने अपना जीवन राष्ट्रकूट अथवा गुर्जर-प्रतिहारों के सामन्त के रूप में प्रारम्भ किया

उपेन्द्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वैरिसिंह प्रथम था उसके शासनकाल की कोई भी घटना ज्ञात नहीं है

वैरिसिंह का उत्तराधिकारी सीयक प्रथम था पद्मगुप्त वैरिसिंह और सीयक प्रथम का नामोल्लेख नहीं करता इससे अनुमान होता है कि ये दोनों साधारण योग्यता के सामन्त शासक थे

सीयक प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र वाक्पति प्रथम राजा हुआ डॉ गगूली के मतानुसार इसने अपने स्वामी राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय के साथ प्रतिहार नरेश महीपाल के विरुद्ध युद्ध किया था उसके राज्यकाल की और कोई घटना ज्ञात नहीं है

वाक्पति का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वैरिसिंह द्वितीय सिंहासन पर बैठा उसके राज्यकाल में कन्नौज के प्रतिहार शासक महीपाल प्रथम ने अपने सामन्त सरयूपार के कलचुरि वशी भामानदेव के साथ मिलकर मालवा पर आक्रमण किया तथा उसे जीतकर उज्जयिनी मे एक प्रतिहार शासक नियुक्त किया परन्तु उदयपुर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि कुछ समय पश्चात् ही वैरिसिंह ने मालवा फिर से जीत लिया

वैरिसिंह द्वितीय के पश्चात् उसका पुत्र सीयक द्वितीय गद्दी पर बैठा तथा प्रतापी एव योग्य राजा सिद्ध हुआ परमार वश का यही सर्वप्रथम स्वतत्र राजा था, जिसने राष्ट्रकूटों की प्रभुता को अस्वीकार कर अपने वश को स्वतत्र घोषित कर दिया सीयक द्वितीय ने राष्ट्रकूट नरेश खोट्टिग को पराजित कर परमार राज्य को दक्षिण में ताप्ती नदी तक विस्तृत कर दिया था

97 ई के लगभग सीयक द्वितीय की मृत्यु हो गयी और उसके पश्चात् उसका पुत्र मुज सिंहासन पर बैठा 'प्रबन्ध चिन्तामणि' के अनुसार मुज सीयक का गोद लिया हुआ पुत्र था जिसके गोद लेने के पश्चात् सीयक के अपने पुत्र सिन्धुराज का जन्म हुआ, परन्तु सीयक ने निर्णय लिया था कि उसकी मृत्यु के बाद मुज ही राजा बने

मुज बड़ा पराक्रमी राजा सिद्ध हुआ उसके दो नाम वाक्पतिराज (द्वितीय) तथा उत्पलराज काफी प्रचलित थे अभिलेखों मे उसके विरुद अमोघवर्ष पृथ्वीवल्लभ तथा श्रीवल्लभ का प्रयोग किया गया है वि स 1031 से 1047 के बीच के उसके छ अभिलेख अभी तक प्राप्त हुए हैं इन

तथा समकालीन अन्य अभिलेखो से उसके राज्यकाल की घटनाओं का पता चलता है

मुज को अपने पडोसी राज्य त्रिपुरी के कलचुरियो से युद्ध करना पडा. समकालीन त्रिपुरी शासक युवराजदेव द्वितीय था जिसे उसने पराजित कर उसकी राजधानी त्रिपुरी पर अधिकार कर लिया, परन्तु कलचुरि-राज्य किसी भाग को अपने राज्य में मिला नहीं सका

मुज की मृत्यु 993 ई से 998 ई के बीच मानी जाती है उसके साम्राज्य का विस्तार पूर्व मे विदिशा से लेकर पश्चिम मे साबरमती तक और उत्तर मे झालावार की दक्षिण सीमा से लेकर ताप्ती नदी तक विस्तृत था

मुज की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई सिन्धुराज उत्तराधिकारी हुआ अपने भाई की हत्या के पश्चात् अपने वश के राज्य को बनाये रखने के लिए उसे अनेक युद्ध लडने पड़े और अधिकाश युद्धों में वह सफल रहा 1000 ई के लगभग उसकी मृत्यु हो गयी

सिन्धुराज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र भोज प्रथम हुआ उसकी विजय और सास्कृतिक कार्यों के कारण उसकी गणना भारतीय इतिहास के महान् शासको मे होती है उसके राज्यकाल के ग्यारह अभिलेख उज्जैन, देपालपुर, धार, बेटमा, भोजपुर तथा महन्दी से प्राप्त हुए है ये अभिलेख वि स 1074 तथा 1091 के बीच के है इन समकालीन अन्य अभिलेख और भोज द्वारा रचित ग्रन्थों से उसके राज्यकाल के इतिहास पर प्रकाश पडता है

धार प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि भोज ने त्रिपुरी के कलचुरि शासक गागेयदेव को पराजित किया था भोज का चन्देलों से भी युद्ध हुआ समकालीन चन्दल शासक विद्याधर था सम्भवत बुन्देलखण्ड पर अपने राज्य-विस्तार के प्रयत्न मे भोज विद्याधर द्वारा पराजित हुआ था भोज ने ग्वालियर का क्षेत्र कच्छपघात शासक से छीनना चाहा

समकालीन कच्छपघात् शासक कीर्तिराज चन्देलो के अधीन था उसने भोज को पराजित किया और इस प्रकार भोज का प्रयत्न असफल रहा सम्भवत. इस युद्ध में चन्देल नरेश विद्याधर ने कीर्तिराज की सहायता की होगी चिरवा अभिलेख से पता चलता है कि चित्रकूट का दुर्ग भोज के अधीन था सम्भवत वहाँ का गुहिल वशी शासक भोज के अधीन था

अपने शासनकाल के अन्तिम चरण में भोज ने अपने शत्रुओं के एक सघ का सामना करना पडा इस सघ में गुजरात का चालुक्य नरेश भीम प्रथम, कल्याणी का चालुक्य नरेश सोमेश्वर, लाट नरेश त्रिलोचनपाल तथा त्रिपुरी का कलचुरि नरेश कर्ण सम्मिलित थे

इस सघ की सहायता से भीम और कर्ण ने भोज के राज्य पर आक्रमण किया युद्ध के दौरान 1055 ई के लगभग भोज की एक रोग से मृत्यु हो गयी और मालवा पर कर्ण और भीम का अधिकार हो गया अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर भोज का राज्य चित्तौड, बाँसवाडा, डूँगरपुर भिलसा, खानदेश, कोंकण और गोदावरी की घाटी के उत्तरी भाग तक विस्तृत था इस विशाल राज्य की राजधानी धारा नगरी 'आधुनिक धार' थी

भोज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जयसिह प्रथम था उसने कल्याणी के चालुक्य नरेश सोमेश्वर प्रथम से सन्धि कर ली तथा उसकी सहायता से कलचुरि नरेश कर्ण तथा चालुक्य नरेश भीम को पराजित कर मालवा को मुक्त कर लिया इस युद्ध में सोमेश्वर के पुत्र विक्रमादित्य ने उसकी बहुत सहायता की इस घटना से जयसिह और विक्रमादित्य में बहुत मित्रता हो गयी जयसिह का एक ताम्रपत्र जो धार से वि स 1112 में प्रचलित किया गया था, मान्धाता में प्राप्त हुआ है इसमे अमरेश्वर मदिर स्थित पट्टशाला में निवास कर रहे ब्राह्मणों के लिए एक ग्राम देने का उल्लेख है

जयसिह का उत्तराधिकारी उदयादित्य था जो सम्भवत भोज का भाई था शत्रुओ के हाथ से मालवा का उद्धार करना उसकी बडी समस्या थी इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये उसने शाकम्भरी के चाहमान नरेश विग्रहराज तृतीय से सन्धि कर ली दोनों की सम्मिलित सेना ने मालवा पर आक्रमण कर सोमेश्वर द्वितीय और कर्ण को पराजित किया और मालवा पर अधिकार कर लिया इस प्रकार उदयादित्य पुन मालवा का स्वामी होने में समर्थ हो सका उसके राज्यकाल में आठ अभिलेख उज्जैन, उदयपुर, कन धार तथा भोपाल से प्राप्त हुए है उसके राज्य की सीमा दक्षिण में निमाड जिले तक उत्तर मे झालावाड तक तथा पूर्व मे विदिशा तक थी उसने विदिशा के निकट उदयपुर में नीलकण्ठेश्वर के मन्दिर का निर्माण किया

उदयादित्य के पश्चात् उसका पुत्र लक्ष्मदेव राजा हुआ डॉ गागुली के अनुसार उसका दूसरा नाम जगदेव था वह पराक्रमी राजा था अपने राजत्व काल मे उसने गौड, अग और कलिग पर आक्रमण किये, परन्तु सम्भवत इन युद्धों में उसे कोई प्रदेश प्राप्त नहीं हुआ इसी समय उज्जयिनी पर पजाब के मुसलमान शासक महमूद ने आक्रमण किया लक्ष्मदेव ने उसे पराजित कर खदेड दिया कलचुरि नरेश यश–कर्ण तथा चालुक्य नरेश कर्ण भी उसके द्वारा पराजित किये गये 1094 ई के लगभग उसने सिहासन को त्याग दिया और उसका उत्तराधिकारी उसका भाई नरवर्मन हुआ

नरवर्मन का शासनकाल परमारो के लिए असफलताओं का काल प्रमाणित हुआ उसका राज्यकाल 1133 ई तक रहा उसके शासनकाल के पाँच अभिलेख–उज्जैन उदयपुर, धार तथा भोजपुर से प्राप्त हुए है

नरवर्मन का उत्तराधिकारी यशोवर्मन् 1133 ई के लगभग गद्दी पर बैठा उसके राज्यकाल का वि स 1192 का एक ताम्रपत्र उज्जैन से प्राप्त हुआ है उसे धार

चौहानों का सामना करना पड़ा चन्देल नरेश मदनवर्मन ने परमार राज्य के भिलसा क्षेत्र पर अपना अधिकार जमा लिया मालवा में देवास के निकटवर्ती क्षेत्र पर विजयपाल नामक एक व्यक्ति को अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की इसी समय चालुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज ने नाडोल के चाहमान नरेश आशाराज की सहायता से मालवा पर आक्रमण कर यशोवर्मन को पराजित कर बन्दी बना लिया और सम्पूर्ण मालवा पर अधिकार कर लिया उसका यह अधिकार कम से कम 1138 ई तक यथावत् रहा जैसा कि उज्जैन से प्राप्त उसके वि स 1195 के अभिलेख से ज्ञात होता है

यशोवर्मन के पुत्र जयवर्मन ने जयसिंह सिद्धराज के अन्तिम दिनों में मालवा पर आक्रमण कर अपने पैत्रिक राज्य पर पुन अधिकार कर लिया, परन्तु यह अधिकार पुन अस्थायी प्रमाणित हुआ क्योंकि कल्याणी के चालुक्य नरेश जगदेकमल्ल और द्वारसमुद्र के होयसल नरेश नरसिंह प्रथम ने मालवा पर आक्रमण कर जयवर्मन को पराजित कर दिया तथा उसके स्थान पर सम्भवत बल्लाल नामक एक व्यक्ति को गद्दी पर बैठा दिया परन्तु बल्लाल भी अधिक समय तक मालवा पर राज्य न कर सका क्योंकि 1143 ई के लगभग गुजरात के चालुक्य नरेश कुमारपाल ने मालवा पर आक्रमण कर उसे अपने राज्य में मिला लिया मालवा पर चालुक्यों का यह अधिकार 12वीं सदी ई के सप्तम् दशक तक चला, जैसाकि उदयपुर, विदिशा से प्राप्त कुमारपाल के वि स 1220 और 1222 के अभिलेख तथा अजयपालदेव के वि स 1229 के अभिलेख से ज्ञात होता है

इस बीच परमार शाराक महाकुमार की उपाधि धारण करते रहे यह तथ्य कई अभिलेखों से ज्ञात होता है परमार 'महाकुमार' लक्ष्मीवर्मन का वि स 1200 का एक ताम्रपत्र उज्जैन से प्राप्त हुआ है इसी प्रकार विपलियानगर (उज्जैन) से महाकुमार हरिश्चन्द्र का वि स 1235 तथा 1236 के दो ताम्रपत्र मिले है भोपाल से महाकुमार उदयवर्मन का वि स 1256 का ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है यहाँ से महाकुमार लक्ष्मीवर्मन का स्तम्भलेख भी मिला है

बारहवीं सदी ई के सप्तम् दशक में जयवर्मन के पुत्र विन्ध्यवर्मन ने चालुक्य नरेश मूलराज द्वितीय को पराजित कर मालवा पर फिर से अधिकार कर लिया परन्तु यह शान्ति से राज्य नहीं कर सका क्योंकि होयसल तथा यादव नरेश मालवा पर लगातार आक्रमण करते रहे होयसलों का दमन करने के लिए विन्ध्यवर्मन ने चोलों के साथ मिलकर उनके राज्य पर आक्रमण किया परन्तु होयसल नरेश बल्लाल द्वितीय ने उसे पराजित कर दिया 1193 ई में विन्ध्यवर्मन की मृत्यु हो गयी अपनी मृत्यु के पूर्व उसने परमार साम्राज्य को फिर से सुदृढ़ कर दिया था

विन्ध्यवर्मन का उत्तराधिकारी सुभटवर्मन हुआ उसने गुजरात के चालुक्य वंश से खट छीन लिया सुभटवर्मन की मृत्यु 1210 ई के लगभग हो गयी

सुभटवर्मन का उत्तराधिकारी अर्जुनवर्मन प्रथम हुआ उसे जयसिंह के साथ युद्ध करना पड़ा युद्ध में जयसिंह पराजित हुआ और उसने अपनी कन्या का विवाह अर्जुनवर्मन के साथ कर दिया इसी घटना को आधार बनाकर अर्जुनवर्मन के राजगुरु मदन द्वारा 'पारिजातमंजरी नामक नाटिका' की रचना की गई इस नाटिका के प्रथम दो अध्याय धार के भोजशाला में शिलालेख पर उत्कीर्ण प्राप्त हुए हैं अर्जुनवर्मन को यादव नरेश सिंहण के साथ युद्ध करना पड़ा इस युद्ध में वह पराजित हुआ तथा उसका सामन्त सिन्धुराज मारा गया अर्जुनवर्मन के राज्यकाल का वि स 1267 का एक ताम्रपत्र पिपलियानगर (उज्जैन) तथा दो ताम्रपत्र जो वि स 1270 तथा 1272 के हैं भोपाल से प्राप्त हुए है

अर्जुनवर्मन का उत्तराधिकारी देवपाल था जो 1215 ई तथा 1218 ई के बीच गद्दी पर बैठा उज्जैन उदयपुर, आगरला, कर्णावद, मान्धाता तथा हरसौदा से प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ये क्षेत्र उसके राज्य के अन्तर्गत थे देवपाल के राज्यकाल में मालवा पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ 1233 ई में इल्तुतमिश ने विदिशा जीत लिया तथा उज्जैन को लूटा, परन्तु उसकी यह विजय अस्थायी सिद्ध हुई 1243 ई के पूर्व देवपाल का उत्तराधिकारी जैतुगिदेव गद्दी पर बैठा

जैतुगिदेव के राजत्वकाल में मालवा पर कई आक्रमण हुए यादव नरेश कृष्ण ने मालवा पर आक्रमण किया 1250 ई के लगभग बलबन ने मालवा पर चढ़ाई की और लगभग इसी समय गुजरात का शासक वाघेल वीसलदेव ने धार पर आक्रमण कर उसे लूटा

1256 ई के पूर्व जैतुगिदेव का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई जयवर्मन द्वितीय गद्दी पर बैठा उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख गोदरपुरा, मांडी तथा राहतगढ से प्राप्त हुए है जयवर्मन द्वितीय के पश्चात् धार और परमार नरेशों का पता चलता है परन्तु उनके आपसी सम्बन्ध अज्ञात है लिपि के आधार पर ज्ञात होता है कि जयवर्मन के पश्चात जयसिंह द्वितीय ने राज्य किया उसके धार अभि लेख उदयपुर बलीपुर तथा पठारी से प्राप्त हुए है उसके राज्यकाल में रणथम्भौर के चाहमान नरेश जैत्रसिंह ने मालवा पर आक्रमण किया इस आक्रमण से रक्षार्थ जयसिंह ने मण्डल दुर्ग (आधुनिक माण्डवगढ) में शरण ली

जयसिंह की मृत्यु के पश्चात् गद्दी के लिए अर्जुनवर्मन द्वितीय तथा उसके मन्त्री में संघर्ष हुआ जिसके परिणाम स्वरूप दोनों ने मालवा के विभिन्न क्षेत्रों पर राज्य किया इस समय मालवा पर चाहमान यादव तथा वघेल नरेशों का आक्रमण हुआ परमार वंश का अगला शासक भोज

द्वितीय था जो 1228 ई के कुछ समय पश्चात् गद्दी पर बैठा उसके राज्यकाल में चाहमान नरेश तथा मुसलमानो का आक्रमण हुआ

इस वश का अन्तिम नरेश महलकदेव था जिसे हम 1305 ई में मालवा पर राज्य करता हुआ देखते है उसके शासनकाल में अलाउद्दीन खलजी ने मालवा पर आक्रमण किया महलकदेव ने मण्डल-दुर्ग में शरण ली वहाँ वह अलाउद्दीन के सेनापति आइन-उल-मुल्क द्वारा पराजित कर मार डाला गया इस प्रकार परमार वश का अन्त हुआ और मालवा पर मुस्लिम शासन की स्थापना हुई

कलचुरि राजवंश

मध्य प्रदेश के प्राचीन इतिहास मे कलचुरि राजवश का महत्वपूर्ण स्थान है अभिलेखों में इस वश के राजाओं ने अपने को चन्द्रवशी माना है तथा कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन की सन्तान बतलाया है अभिलेखों में इनका नाम कटच्चुरि, कलत्सुरि, कलचुति कालचुर्य तथा करचुलि मिलता है इन शब्दों का अर्थ क्या है ? यह जानने के कारण भण्डारकर आदि कुछ विद्वानों ने इन्हें विदेशी जाति का कहना प्रारम्भ कर दिया था परन्तु अधिकाश विद्वान् यह तर्क स्वीकार नहीं करते

माहिष्मति के कलचुरि

कलचुरियों की प्राचीन राजधानी माहिष्मति थी यहाँ ये लोग छठी शताब्दी ईसवी के पूर्वार्द्ध में शक्तिशाली हुए इस वश का सस्थापक कौन था ? इस विषय मे कुछ भी ज्ञात नहीं है इनका सर्वप्रथम शासक जिसका नाम ज्ञात है—कृष्णराज था, जिसने 550 ई से 575 ई तक राज्य किया उसके चाँदी के सिक्के बेसनगर, तेवर तथा पट्टन से प्राप्त हुए हैं

तत्पश्चात् शकरगण (575 ई से 600 ई) तथा बुद्धराज आये बुद्धराज को चालुक्य शासक मगलेश से युद्ध करना पडा जिससे वह पराजित हुआ, परन्तु इसी बीच मगलेश और पुलकशी की आपसी लडाई से बुद्धराज को लाभ हुआ और वह बीच में कुछ समय के लिए फिर शक्तिशाली हो गया अन्त में उसके राज्य का एक बडा भाग पुलकशी द्वारा छीन लिया गया इसके बाद कलचुरि वश की शक्ति क्षीण हो गयी और उसकी राजनैतिक प्रवृत्तियाँ प्राय समाप्त हो गई

त्रिपुरी के कलचुरि

चालुक्या से पराजित होने के पश्चात् बुद्धराज के वशज माहिष्मति छोड कर चेदि देश की ओर भाग आये तथा त्रिपुरी में अपनी राजधानी स्थापित की अभिलेखों के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि इस शाखा का सस्थापक वामराजदेव था जिसने सातवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे कालिजर को जीतकर अपनी राजधानी वहाँ स्थापित की शीघ्र ही उसने बघेलखण्ड को जीत लिया और उत्तर मे गोमती नदी से दक्षिण मे नर्मदा तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया उसने 'परमभट्टारक महाराजाधिराज' तथा 'परमेश्वर' की उपाधि धारण कर ली और उसी के समय से कलचुरि चैद्य कहलाने लगे सम्भवत. उसी के शासनकाल मे कलचुरियों की राजधानी कालिजर से नर्मदा के तट पर स्थित त्रिपुरी में स्थानान्तरित की गयी माहिष्मती की तरह त्रिपुरी मे भी उन्हें नर्मदा का पुण्य तट प्राप्त हुआ

वामराज के पश्चात् दो-तीन पीढियों तक के राजाओं के सम्बन्ध में कोई सूचना ज्ञात नहीं बाद मे शकरगण प्रथम राजा हुआ उसके शासनकाल के केवल दो अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनके आधार पर उसका शासनकाल 8वी शताब्दी ई के मध्यभाग में अनुमानित किया गया है

शंकरगण के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती तत्पश्चात् लक्ष्मणराज प्रथम राजा हुआ कारीतलाई में प्राप्त उसके शासनकाल के कलचुरि सवत् 593 के शिलालेख से ज्ञात होता है कि उसने राष्ट्रकूट राजाओं की अधीनता स्वीकार कर ली थी उसके शासन-काल की और कोई घटना ज्ञात नहीं है उसका शासनकाल 425 ई से 450 ई के मध्य माना जाता है

इस शाखा का अगला शासक कोकल्स प्रथम था लक्ष्मणराज से उसका क्या सम्बन्ध था, यह ज्ञात नहीं है उसके शासनकाल का कोई अभिलेख अभी तक प्राप्त नही हुआ है, परन्तु उसके उत्तराधिकारियों के अभिलेखों से पता चलता है कि वह बहुत ही महत्वाकाक्षी तथा प्रतापी राजा था उसने समकालीन राजवशों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के उद्देश्य से चदेल राष्ट्रकूट तथा बगाल के पाल शासकों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये कोकल्स का शासनकाल 850 ई से 890 ई के मध्य अनुमानित किया जाता है

कोकल्स का उत्तराधिकारी उसका बेटा शकरगण द्वितीय था जिसने प्रसिद्ध धवल मुग्धतुग तथा रणविग्रह के विरुद धारण किये थे सम्भवत उसका शासनकाल 890-910 ई के बीच था

शकरगण द्वितीय के पश्चात् उसका बेटा बालहर्ष सिहासन पर बैठा सम्भवत. उसका राज्य अल्पकालीन (910-915 ई) था तथा वह सत्तानहीन था अत उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई केयूरवर्ष जिसे युवराजदेव प्रथम भी कहा जाता है, 915 ई के लगभग राजा हुआ युवराजदेव के शासनकाल की घटनाओं का उल्लेख उसके उत्तराधिकारियों के अभिलेखो से उसके राजकवि राजशेखर के ग्रन्थों से तथा अन्य समकालीन अभिलेखो से ज्ञात होता है उसे 'उज्जयिनी-भुजग भी कहा गया है जिससे लगता है कि उसने मालवा पर भी आक्रमण किया था सुख्यात कवि और नाटककार कविराज राजशेखर युवराजदेव के आश्रय में रहते थे त्रिपुरी मे रहते हुए उन्होंने 'विद्धशालभाजिका नामक नाटक तथा काव्य

मीमासा नामक अलकार-ग्रन्थ लिखे युवराजदेव का शासन-काल 915-945 ई के बीच माना गया है

युवराजदेव प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र लक्ष्मणदेव द्वितीय गद्दी पर बैठा वह भी अपने पिता के समान महाप्रतापी राजा था उसका शासनकाल 945 से 970 ई के बीच माना जाता है

लक्ष्मणराज के पश्चात् उसका पुत्र शकरगण तृतीय गद्दी पर बैठा उसके राज्यकाल की घटनाओं के सम्बन्ध में विशेष सूचना नही मिलती उसे कन्नौज के प्रतिहार तथा महोबा के चन्देल नरेशो से युद्ध करना पडा सम्भवत चन्देलों से हुए युद्ध में वह मारा गया कलचुरि नरेश बहुधा शिवोपासक होते थे, परन्तु शकरगण तृतीय विष्णुभक्त था उसका शासन 970 से 980 ई के बीच रखा गया है

शकरगण के उपरान्त उसका छोटा भाई युवराजदेव द्वितीय गद्दी पर बैठा उसके राज्यकाल का एक अभिलेख बिलहरी से प्राप्त हुआ है उसके शासनकाल में त्रिपुरी को बुरे दिन देखने पडे परमार नरेश वाक्पति मुज ने त्रिपुरी पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया, परन्तु दक्षिण भारत से चालुक्य नरेश तैलप के मालवा पर आक्रमण होने के कारण मुज को कलचुरियों से सन्धि कर अपनी राजधानी को लौटना पडा उसका शासनकाल 980 से 990 ई के बीच रखा गया है

युवराजदेव द्वितीय के पश्चात् उसका पुत्र कोकल्स द्वितीय गद्दी पर बैठा उसके राज्यकाल का एक अभिलेख गुर्गी से प्राप्त हुआ है उसने कलचुरि राज्य को पुन दृढ बनाने का प्रयत्न किया उसका शासनकाल 990 से 1015 ई के बीच रखा जाता है

कोकल्स द्वितीय के उपरान्त 1015 ई. के लगभग उसका पुत्र गागेयदेव राज सिहासन पर बैठा वह बडा प्रतापी और महत्वाकाक्षी था उसके राज्यकाल के दो अभिलेख मुकुन्दपुर तथा पिआवन से प्राप्त हुए है अपने राज्य के अल्पकाल में ही उसने कलचुरि वश की कीर्ति को पुन उज्ज्वल कर उत्तर भारत के राजाओ में सम्मान का स्थान प्राप्त कर लिया उसके द्वारा प्रचलित सोने तथा चाँदी के सिक्के इसुरपुर, तेवर, बरेठा, बरेला, माडु सागर, सोनसारी तथा त्रिपुरी से प्राप्त हुए है

गागेयदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र कर्ण हुआ पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त साम्राज्य का उसने विस्तार किया और बगाल पर विजय प्राप्त की उसके राज्यकाल के सात अभिलेख रीवा सिमरा बनारस पैकोरे, गोहरवा तथा सारनाथ मे प्राप्त हुए हैं रीवा से प्राप्त कलचुरि सवत् 800 के शिलालेख से ज्ञात होता है कि शासन के प्रथम सात वर्षों के भीतर ही उसने पल्लव, चोल और कुन्तल देशो को जीत लिया था इसके बाद कर्ण ने गुर्जर देश पर आक्रमण कर वहाँ के राजा भीम को पराजित किया बाद में उससे सन्धि कर उसकी सहायता से मालवा के परमार शासको के राज्य पर आक्रमण किया

मालवा का समकालीन परमार शासक भोज था जिसने उसके पिता गागेयदेव को पराजित किया था इस पराजय का बदला लेने के लिए कर्ण ने मालवा पर आक्रमण करने की ठानी आक्रमण दो तरफा हो सके इसलिए उसने गुर्जर शासक भीम से सन्धि कर ली मेरुतुग ने अपने 'प्रबधचिन्तामणि' मे लिखा है कि सन्धि की शर्त यह थी कि मालवा विजय के पश्चात वह प्रदेश कर्ण तथा भीम के बीच बराबर-बराबर बाँटा जायेगा, किन्तु युद्ध से विजय प्राप्त करने के पश्चात् जब कर्ण ने परमारो की राजधानी धार पर अपना अधिकार कर लिया तो वह अपने वचन से मुकर गया इससे भीम नाराज हो गया और उसने चेदि देश पर आक्रमण कर दिया कर्ण ने भीम को तरह-तरह के उपहार तथा लूट मे प्राप्त हुए धन और स्वर्ण मण्डपिका आदि देकर सतुष्ट किया

इस प्रकार ईसवी सन् 1052 के लगभग कर्ण का ऐश्वर्य अपने शिखर पर पहुँच चुका था वह चारों ओर के प्रदेश जीत चुका था और तत्कालीन प्रमुख राजवशों को या तो हराकर या उनसे सन्धि कर अपने साथ कर चुका था इस प्रकार उसने चक्रवर्ती का पद प्राप्त कर लिया था इसकी घोषणा करने के लिए उसने ई सन् 1052 में अपना दूसरा राज्याभिषेक कराया

कर्ण की लगातार सैनिक उपलब्धियों के कारण उसे 'हिंदू नेपोलियन' कहा जाता है, किन्तु यह भी सत्य है कि नेपोलियन की तरह उसे भी अपने राजत्वकाल के अतिम समय में विजयलक्ष्मी की अस्थिरता का परिचय मिला था कर्ण अपने जीते हुए प्रदेशो पर अधिक समय तक अधिकार नही रख सका एक-एक करके वे कर्ण के हाथ से निकलते गये सबसे पहले मालवा उसके हाथ से निकल गया मालवा के परमार राजा जयसिह ने अपने शत्रु चालुक्यों से मित्रता कर ली तथा चालुक्य शासक सोमेश्वर (प्रथम) आहवमल्ल की सहायता से मालवा पर आक्रमण कर अपना राज सिहासन वापस ले लिया उसी प्रकार चदेल लोग भी स्वतत्र हो गये कर्ण को पराजित कर स्वतत्र होने का श्रेय चदेल शासक कीर्तिवर्मन को है कर्ण पर प्राप्त इस महान विजय के उपलक्ष्य मे कृष्ण मिश्र द्वारा रचित 'प्रबोधचन्द्रोदय' नामक नाटक खेला गया था इस नाटक मे बताया गया है कि कीर्तिवर्मन की यह महान विजय उसके वीर सेनापति गोपाल के पराक्रम के कारण हुई थी

कर्ण ने अपनी प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करने का प्रयत्न किया तथा इस उद्देश्य से अपने राज्यकाल के अतिम दिनों मे मालवा पर आक्रमण किया आक्रमण के पूर्व उसने चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर द्वितीय से सन्धि कर ली दक्षिण भारत का गग नरेश उदयादित्य भी अपने सामन्त की एडेयग के साथ कर्ण से आ मिला इन तीनो राजाओं की सयुक्त सेना ने मालवा पर आक्रमण किया मालवा में सर्वत्र हाहाकार मच गया तथा शत्रुओ का सामना करते हुए परमार शासक जयसिह युद्ध क्षेत्र मे मारा गया इस समय

मालवा देश की क्या दुर्गति हुई इसका कुछ विवरण परमारो की उदयपुर-प्रशस्ति तथा उनके अन्य उत्कीर्ण लेखों मे मिलता है यह घटना 1070 ई के लगभग हुई थी, परन्तु मालवा की यह विजय भी कर्ण के लिए अस्थायी सिद्ध हुई. 1073 ई के लगभग परमार उदयादित्य ने कर्ण को फिर से पराजित कर दिया तथा मालवा पर परमारो का शासन स्थापित किया उदयपुर प्रशस्ति मे कहा गया है कि उदयादित्य ने डाहलाधीश अर्थात् कर्ण का सहार किया था इस प्रकार उत्तर भारत में अपना एकछत्र राज्य स्थापित करने के कर्ण के सारे प्रयत्न असफल रहे इससे कर्ण को बडी निराशा हुई और उसने राज्य त्याग कर अपने स्थान पर अपने पुत्र को यशःकर्ण का स्वय राज्याभिषेक किया इस प्रकार कर्ण का राज्यकाल 1041 ई से 1073 ई तक रहा

यशःकर्ण के समय में कलचुरि राज्य के बहुत से प्रदेश निकल गये थे और कलचुरि साम्राज्य बघेलखण्ड तक सीमित होकर रह गया था उसके राज्यकाल के दो अभिलेख खैरहा तथा जबलपुर मे प्राप्त हुए है

यशःकर्ण के बाद उसका पुत्र गयाकर्ण 1123 ई के लगभग राजसिहासन पर बैठा उसके राज्यकाल के दो अभिलेख तेवर तथा बहुरिबद मे मिले हैं ऐसा लगता है कि चदेल नरेश मदनवर्मन के दबाव के कारण गयाकर्ण को बघेलखण्ड का प्रदेश छोड देना पडा था, इतना ही नहीं, छत्तीसगढ के कलचुरि नरेश, जो अब तक त्रिपुरी मुख्य शाखा के अधीन राज्य करते थे, गयाकर्ण के शासनकाल मे स्वतत्र हो गये इससे नाराज होकर गयाकर्ण ने तत्कालीन राजा रत्नदेव को पराजित करने के लिए बडी भारी सेना भेजी, परन्तु इसमें उल्टे गयाकर्ण की ही पराजय हुई

गयाकर्ण के दो पुत्र थे, नरसिह और जयसिह जो क्रम स गद्दी पर बैठे नरसिह के समय की राजनैतिक घटनाओं का विवरण नही मिलता उसके राज्यकाल तीन अभिलेख अल्हाघाट, भेडाघाट तथा लालपहाड से प्राप्त हुए हैं उसका राज्यकाल सम्भवत 1153 ई से 1163 ई तक रहा होगा

नरसिह के बाद उसका छोटा भाई जयसिह त्रिपुरी का राजा हुआ उसके शासनकाल के पाँच अभिलेख करणबेल तेवर जबलपुर तथा रीवा से प्राप्त हुए हैं

चदेलो के अभिलेखो से पता चलता है कि चदेल नरेश परमर्दिदेव ने भी जयसिह को त्रस्त कर रखा था जयसिह की दो रानियाँ थी–केल्हणदेवी और गोसलदेवी गोसलदेवी ने गोसलपुर नामक नगर बसाया जो कि गाँव के रूप में आज भी विद्यमान है जयसिह का शासनकाल 1163 ई से 1188 ई तक रहा होगा

जयसिह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र विजयसिह था उसके राज्यकाल के अभिलेख करणबेल तेवर, भेडाघाट, कुम्मी तथा रीवा से प्राप्त हुए है उसके शासनकाल में उसके एक सामन्त कोरववशी सलक्षण ने कर्करेडी मे विद्रोह घोषित कर दिया, परन्तु उसके मन्त्री मलयसिह ने विद्रोह को कुचल दिया उसका उल्लेख रीवा से प्राप्त मलयसिह के 1153 ई के अभिलेख मे मिलता है 1210 ई के लगभग चदेल नरेश त्रैलोक्यवर्मन ने कलचुरियो के राज्य पर आक्रमण कर रीवा के आसपास का प्रदेश जीत लिया सम्भवत यादववशी सिघण ने भी विजयसिह को पराजित किया था इस प्रकार विजयसिह के समय कलचुरि राज्य की स्थिति डाँवाडोल हो रही थी, क्योकि सागर और दमोह वाला प्रदेश और उसी प्रकार बघेलखण्ड का प्रदेश चदेलों के हाथ चला गया था ऐसा लगता है कि विजयसिह का राज्य केवल जबलपुर जिले तक ही सीमित था और वह भी कलचुरियों के हाथों से निकल गया विजयसिह त्रिपुरी के कलचुरि राजवश का अतिम राजा था उसका शासनकाल कब समाप्त हुआ यह ज्ञात नहीं उसके उत्तराधिकारी महाराजकुमार अजयसिह का उल्लेख उत्कीर्ण लेखो से मिलता है, किन्तु उसे राज्य करने का अवसर मिला या नहीं यह अज्ञात है. दमोह जिले के बटियागढ से प्राप्त 1328 ई के शिलालेख के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि चौदहवीं शताब्दी ई के आरम्भ मे यह प्रदेश मुसलमानों के अधिकार मे पूर्णत चला गया था

रत्नपुर के कलचुरि

नवीं शताब्दी ईसवी के अत मे त्रिपुरी के कलचुरियों ने दक्षिण कोसल में अपनी शाखा स्थापित करने का प्रयत्न किया अभिलेखो से यह ज्ञात होता है कि कोकल्ल प्रथम के पुत्र शकरगण द्वितीय अर्थात् मुग्धतुग-प्रसिद्धधवल ने कोसल नरेश से पालि प्रदेश (बिलासपुर जिले के पालि नामक स्थान के आस-पास का क्षेत्र) जीत लिया था इस समय यहाँ बाणवशी विक्रमादित्य प्रथम राज्य कर रहा था इससे अथवा इसके उत्तराधिकारी से शकरगण ने यह प्रदेश जीता होगा शकरगण ने इस प्रदेश पर अपने छोटे भाई की नियुक्ति की उसका नाम अज्ञात है परन्तु अभिलेख यह उल्लेख करते हैं कि उसकी राजधानी तुम्माण (बिलासपुर जिले का आधुनिक तुमाण) थी यहाँ कलचुरियों ने दो-तीन पीढियाँ बिताई होगी तदुपरान्त वे स्वर्णपुर (आधुनिक सोनपुर) के सोमवशी राजा द्वारा पराजित कर दिये गये कोकल्स द्वितीय के शासनकाल मे कलिगराज नामक कलचुरि राजपुत्र ने अपने बाहुबल से दक्षिण कोसल को जीतकर तुम्माण नगर में जहाँ उसके पूर्वजों ने राज्य किया था, अपनी राजधानी स्थापित की यह घटना 1000 ई के लगभग हुई होगी

कलिगराज का उत्तराधिकारी कमलराज 1020 ई के लगभग तुम्माण के राजसिहासन पर बैठा उसके शासन काल मे त्रिपुरी के गागेयदेव को उडीसा (ओडिशा) पर आक्रमण करने के लिए दक्षिण कोसल होकर जाना पडा

कमलराज का उत्तराधिकारी रत्नराज प्रथम 1045 ई के लगभग सिहासन पर बैठा उसने कोमोमण्डल के अधिपति वज्जूक अथवा वज्रुमर्मन की कन्या नोनल्ला से

विवाह किया इस विवाह से छत्तीसगढ पर उसका प्रभाव दृढ हो गया

रत्नदेव का पुत्र पृथ्वीदेव प्रथम 1065 ई के लगभग रत्नपुर के राजसिंहासन पर बैठा उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख–अमोदा, रायपुर तथा लाफा से प्राप्त हुए हैं पृथ्वीदेव के ताम्रपत्रो में उसे 'महामण्डलेश्वर' तथा 'समधिगताशेष पचमहाशब्द' कहा गया है, जिससे स्पष्ट है कि वह त्रिपुरी की मुख्य शाखा के सामन्त के रूप मे कोसल में राज्य करता था.

पृथ्वीदेव प्रथम का उत्तराधिकारी जाजल्लदेव प्रथम 1090 ई के लगभग सिंहासन पर बैठा उसके राज्यकाल के अभिलेख पालि तथा रतनपुर से प्राप्त हुए है जाजल्लदेव के समय में रत्नपुर का राज्य काफी समृद्ध हो चुका था, जैसाकि उसके द्वारा प्रचलित किये गये सोने के सिक्को से अनुमान लगाया जाता है उसने अपने नाम पर जाजल्लपुर (आधुनिक जांजगीर, छत्तीसगढ) नामक नगर बसाया तथा उसमें मदिर, मठ, सरोवर, आम्रवन आदि को बनवाया उसी प्रकार पालि के शिवमदिर का भी उसने जीर्णोद्धार करवाया उत्कीर्ण लेखों में जाजल्लदेव की रानी लाच्छल्लदेवी, गुरु रुद्रशिव, सन्धिविग्रहिक विग्रहराज तथा मत्री पुरुषोत्तम के नाम मिलते हैं

जाजल्लदेव प्रथम के बाद उसका पुत्र रत्नदेव द्वितीय ई सन् 1120 के लगभग रत्नपुर का राजा हुआ उसके राज्यकाल के पाँच अभिलेख–अकलतरा, खरोद पारगाँव, शिवरीनारायण तथा सरखों से प्राप्त हुए हैं उसने त्रिपुरी की मुख्य शाखा की अधीनता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया अत. त्रिपुरी के राजा गयाकर्ण ने उसके विरुद्ध एक विशाल सेना भेजी इस युद्ध में त्रिपुरी की सेना पराजित हुई

रत्नदेव द्वितीय का पुत्र पृथ्वीदेव द्वितीय 1135 ई के लगभग सिंहासन पर बैठा उसके शासनकाल के जो चौदह अभिलेख प्राप्त हुए हैं, उनसे ज्ञात होता है कि उसके जगपाल नामक सेनापति ने सरहरागढ (जो आधुनिक सारगगढ) मचका सिहवा (आधुनिक सिहावा) के किले जीते तथा भ्रमरवद (बस्तर का भाग), कान्तार, कुसुमभोग, काडाडोंगर और काकरय (काकेर) के प्रदेशो पर आक्रमण कर तथा जीतकर पृथ्वीदेव के प्रभुत्व का विस्तार किया तत्पश्चात पृथ्वीदेव ने चित्रकूट (बस्तर जिला) पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया इससे गगवशी राजा अनन्तवर्मा कोड़गग इतना डर गया कि उसे समुद्र को पार कर भाग जाना ही अपनी जान बचाने का एकमात्र उपाय दिखा

पृथ्वीदेव द्वितीय के बाद जाजल्लदेव द्वितीय 1165 ई के लगभग राजा हुआ उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख–अमोदा मल्लार तथा शिवरीनारायण से प्राप्त हुए है उसका राज्य अल्पकालीन और समस्याओं से पूर्ण था उसके शासनकाल में त्रिपुरी के कलचुरि राजा जयसिंदेव ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया क्योंकि वह जाजल्लदेव को अपने अधीन करना चाहता था जाजल्लदेव द्वितीय के बाद उसका उत्तराधिकारी रत्नदेव तृतीय सिंहासन पर बैठा

रत्नदेव तृतीय के राज्यकाल मे भी कुछ कारणों से देश में अव्यवस्था बनी रही इस सकटकाल मे उसने गगाधर नामक विद्वान् ब्राह्मण को अपना मत्री बनाया उसने शीघ्र ही शत्रुओ को पराजित कर राज्य में सुव्यवस्था स्थापित की रत्नदेव तृतीय के बाद उसका पुत्र प्रतापमल्ल 1198 ई मे सिंहासन पर बैठा इसके दो ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं, जो क्रमश कलचुरि सवत् 995 और 969 में दिये गये थे इन लेखो से तथा उसके द्वारा चलाये गये ताँबे के सिक्कों से उसके समय की विशेष जानकारी प्राप्त नही होती प्रतापमल्ल के बाद कलचुरि इतिहास में लगभग तीन सौ वर्षों तक कोई जानकारी नही मिलती 15वीं शताब्दी के अंत मे बाहरेन्द्र नामक राजा के राज्य करने की सूचना मिलती है इस बीच के इतिहास के सम्बन्ध में हेमाद्री के 'व्रतखण्ड' मे किसी जाजल्ल नामक नरेश का नामोल्लेख आया है सम्भवत वह प्रतापमल्ल का उत्तराधिकारी था

बाहरेद्र तथा उसके पूर्वजों के सम्बन्ध में कोसगई तथा रतनपुर से प्राप्त बाहरेंद्र के तथा रायपुर और खलारी से प्राप्त ब्रह्मदेव के शिलालेखों से सूचना मिलती है इन शिलालेखों का अध्ययन कर जो वशवृक्ष तैयार किया जा सकता है, उससे रत्नपुर और रायपुर के कलचुरि शाखाओं का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है इस वशवृक्ष से ज्ञात होता है कि 14वीं शताब्दी ई के अतिम भाग में रतनपुर की कलचुरि शाखा का दो भागों मे विभाजन हो गया मुख्य शाखा रत्नपुर में राज्य करती रही तथा गौण शाखा ने रायपुर में राज्य स्थापित किया

बाहरेद्र के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध मे कोई भी सूचना प्राप्त नहीं है स्थानीय किवदतियों के अनुसार 'बाहर-सहाय (अर्थात् बाहर) के बारह उत्तराधिकारी थे इस भू-भाग को नागपुर के भोसलों के सरदार भास्करापन्त द्वारा 1740 ई में जीत लिया गया और इस प्रकार रत्नपुर के कलचुरि वश की समाप्ति हुई

रायपुर के कलचुरि

जैसाकि हम ऊपर देख चुके हैं, रायपुर की कलचुरि शाखा की स्थापना चौदहवीं शताब्दी ईसवी के अतिम चरण मे हुई इस शाखा में हुए राजा ब्रह्मदेव के दो शिलालेख अभी तक प्राप्त हुए है, जिनमे से एक रायपुर से प्राप्त विक्रम सवत् 1458 (1402 ईसवी) का है और दूसरा खलारी से प्राप्त विक्रम सवत् 1470 (1415 ईसवी) का खलारी अभिलेख से विदित होता है कि ब्रह्मदेव के पूर्वज रामचद ने फणि (नाग) वश के राजा भोगिगदेव को पराजित किया था यह नाग राजा कवर्धा के नागवश का था अथवा बस्तर का यह कहना कठिन है उपर्युक्त लेख से यह भी विदित होता है कि ब्रह्मदेव की राजधानी खल्वाटिका (आधुनिक खलारी, रायपुर जिला) में थी

ब्रह्मदेव के बाद राजाओं के उत्कीर्ण लेख नहीं मिलते हैं केवल अंतिम राजा अमरसिंहदेव का एक ताम्रपत्र आरंग में मिला है, जिसमें नदू ठाकुर को दी गयी छूट का वर्णन है यह ताम्रपत्र वि स 1792 में दिया गया था इसके कुछ ही वर्ष बाद नागपुर के मराठों के हाथ अमरसिंह का पतन हुआ

इस प्रकार मध्य प्रदेश के इतिहास में कलचुरि राजवंश का अंत हुआ

त्रिकलिंगाधिपति सोमवंशी नरेश

श्रीपुर से राज्य करते हुए प्राचीन सोमवंशी नरेशों का इतिहास (ये नरेश अपने को पाण्डव वंशी भी कहते थे) हम ऊपर देख चुके हैं दक्षिण कोसल पर ई सन् की 10वीं शताब्दी में एक और सोमवंशी नरेश राज्य करते हुए पाए जाते हैं इस वंश के नरेश सोमवंशी के होते हुए भी अपने को पाण्डव वंश का नहीं बताते इनकी राजधानी भी आधुनिक मध्य प्रदेश की सीमा के अंतर्गत न होकर उड़ीसा में थी वहीं से अपना साम्राज्य-विस्तार कर दक्षिण कोसल के एक बड़े भू-भाग पर उन्होंने अधिकार कर रखा था ये नरेश अपने को 'त्रिकलिंगाधिपति' (अर्थात् कोसल, कलिंग और उत्कल के स्वामी) की उपाधि से विभूषित किये हुए थे ताम्रपत्रों की राजमुद्राओं में भी इन नरेशों ने पाण्डव वंशियों के विपरीत तथा शरभपुरियों और कलचुरियों के समान गजलक्ष्मी की प्रतिमा का उपयोग किया इस सोमवंशी नरेशों का पाण्डुकुल के सोमवंशियों से क्या सम्बन्ध था, इस सम्बन्ध में अभी तक कोई भी तथ्य ज्ञात नहीं है

इस सोमवंश का संस्थापक शिवगुप्त था, जिसका शासनकाल दसवीं सदी ई के पूर्वार्द्ध में रखा गया है यद्यपि उसका कोई अभिलेख अब तक प्राप्त नहीं हुआ है तथापि उसके उत्तराधिकारी महाभवगुप्त के लेख में उसे 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि से विभूषित बताया गया है उसके शासनकाल में सम्भवत त्रिपुरी के कलचुरि नरेश मुग्धतुंग ने दक्षिण कोसल पर आक्रमण कर पालि (आधुनिक बिलासपुर जिले में स्थित) को छीन लिया

शिवगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जनमेजय प्रथम महाभवगुप्त सिंहासन पर बैठा अपनी राजधानी सुवर्णपुर (उड़ीसा) से उसके अनेक ताम्रपत्र लेख प्रचलित किये जनमेजय महाभवगुप्त (प्रथम) का उत्तराधिकारी उसका पुत्र ययाति प्रथम महाशिवगुप्त हुआ, जिसका शासनकाल ई सन् 970 से 1000 के बीच माना जाता है अपने शासनकाल में उसने भी अनेक दानपत्र प्रचलित किये

ययाति महाशिवगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र भीमरथ महाभवगुप्त द्वितीय था, जिसका शासनकाल ई सन् 1000 से 1015 के बीच माना जाता है उसका सामन्त माठरवंशी राणक पुंज था, जिसकी राजधानी सम्भवत. वामण्डापाटि थी. पुंज का एक ताम्रपत्र लेख रायपुर संग्रहालय में संरक्षित है

भीमरथ का उत्तराधिकारी उसका पुत्र धर्मरथ था, जिसका शासनकाल ई सन् 1015 से 1020 तक माना जाता है वह राजमल्ल तथा महाशिवगुप्त द्वितीय भी कहलाता था. उसका राज्यकाल अल्पकाल का था और वह निसंतान मरा

धर्मरथ का उत्तराधिकारी उसका भाई नहुष था, जो महाभवगुप्त तृतीय भी कहलाता था उसका शासन कठिनाइयों से पूर्ण था शत्रुओं के आक्रमण के कारण उसके राज्य के कुछ भागों पर शत्रुओं का अधिकार हो गया था ऐसी परिस्थिति मे ययाती चण्डीहर महाशिवगुप्त तृतीय राजा बना

ययाति चण्डीहर प्रतापी राजा था उसने राज्य शासन को सँभाल कर कोसल तथा उत्कल प्रदेशों को शत्रुओं से मुक्त कर दिया. सम्भवत कलचुरियो द्वारा उसके अधिकृत दक्षिण कोसल के कुछ भाग को छीन लिया गया था, जिसे उसने वापस ले लिया

चण्डीहर के बाद उसका पुत्र उद्योत केसरी महाभवगुप्त चतुर्थ 1055 ई में राजा हुआ वह इस वंश का अंतिम महान् सम्राट् था उसका राज्यकाल 25 वर्ष का था सम्भवत उसका युद्ध कलचुरियो के साथ हुआ कलचुरियों ने इस समय तक रत्नपुर में अपनी शाखा स्थापित कर ली थी कलचुरियों की इस शाखा द्वारा दक्षिण कोसल का वह भाग सदा के लिए छीन लिया गया जो अभी तक सोमवंशियो के राज्य का एक भाग था

चक्रकोट के छिंदकनाग

बस्तर जिले (छत्तीसगढ) से प्राप्त कुछ अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ग्यारहवीं सदी ई के प्रारम्भ में बस्तर में नागवंशी राजाओं ने अपने राज्य की स्थापना की उस समय बस्तर क्षेत्र को चक्रकोट कहा जाता था अत यह राजा चक्रकोट के राजा कहलाते थे चक्रकोट के नागवंशी नरेश अपने को कश्यप गोत्रीय और छिंदक कुल के मानते थे तथा उन्होंने भोगावती पुरवरेश्वर की उपाधि धारण की थी

छिंदको के प्रथम राजा नृपतिभूषण का उल्लेख एर्राकोट से प्राप्त शक संवत् 945 (1023 ई) के खण्डित शिलालेख में मिलता है उसकी उपलब्धियों के सम्बन्ध मे और कोई उल्लेख नहीं मिलता छिंदक नागो का दूसरा राजा धारावर्ष जगदेकभूषण था, जिसके शासनकाल का शक संवत् 983 (1060 ई) का एक शिलालेख बारसूर मे प्राप्त हुआ है

छिंदकनागों का तीसरा राजा मधुरांतकदेव हुआ यद्यपि वह छिंदककुल का और नागवंशी ही था, किन्तु जगदेकभूषण से उसका क्या सम्बन्ध था यह ज्ञात नही है मधुरांतकदेव के राजपुर से प्राप्त शक संवत् 987 (1065 ई) के ताम्रपत्र

से ज्ञात होता है कि उसने भ्रमरकोट्य मडल मे स्थित राजपुर लामक ग्राम दान में दिया मधुरातकदेव अधिक समय तक राज्य नहीं कर सका, क्योकि उसका वध धारावर्ष जगदेकभूषण के पुत्र सोमेश्वर प्रथम के द्वारा कर दिया गया इस प्रकार सोमेश्वर प्रथम ने अपने पैतृक राज्य को प्राप्त किया

सोमेश्वर प्रथम के शासनकाल के कई अभिलेख प्राप्त हुए हैं, जिनमे सर्वप्रथम कुरुसपाल से प्राप्त शक सवत् 991 (1069 ई) का है तथा अतिम वहीं से प्राप्त शक सवत् 1019 (1097 ई) का है अत स्पष्ट है कि उसका राज्यकाल लगभग तीस वर्ष का था सोमेश्वर प्रथम का सबसे महत्वपूर्ण लेख कुरुसपाल से प्राप्त एक खण्डित शिलालेख है, जिसमे उसकी उपलब्धियो का वर्णन है

सुनारपाल से प्राप्त एक तिथि रहित शिलालेख मे जयसिहदेव का वर्णन मिलता है इस जयसिहदेव का जगदेकभूषण नरसिह से क्या सम्बन्ध रहा होगा यह अज्ञात है इसके पश्चात् टैमरा से प्राप्त शक सवत् 1246 से सती प्रस्तर लेख में एक अन्य राजा हरिशचन्द्र का नाम मिलता है जो चक्रकोट में राज्य करता था यद्यपि अभिलेख मे हरिशचन्द्र के वश का नामोल्लेख नहीं किया गया है, फिर भी अनुमान किया जाता है कि वह नागवशी राजा था

कवर्धा का नागवंश

कवर्धा के नागवश की स्थापना लगभग 9वीं सदी ई के प्रारम्भ मे हुई थी इस फणि (नाग) वश का विवरण कवर्धा से लगभग 16 किलोमीटर दूर चौरा नामक ग्राम के निकट जगल मे स्थित मडुवा महल नामक मदिर के निकट पडे एक शिलालेख में मिलता है यह शिलालेख फणि (नाग) वशी राजा रामचद्र द्वारा शिवमदिर निर्माण के उपलक्ष मे विक्रम सवत् 1406 (1349 ई) मे उत्कीर्ण किया गया था अभिलेख मे इस नागवश की उत्पत्ति से लेकर रामचद्र तक हुए सभी राजाओं की वशावली दी है

इस अभिलेख में दी गयी वशावली के अनुसार इस वश का पहला राजा अहिराज था उसके बाद क्रमश राजल्ल धरणीधर महिमदेव, सर्ववदन (शक्तिचन्द्र) गोपालदव नलदेव, और भुवनपाल हुए भुवनपाल के बाद उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र कीर्तिपाल हुआ, परन्तु उसके कोई सन्तान न होने के कारण उसका छोटा भाई जयत्रपाल राजा हुआ जयत्रपाल के उत्तराधिकारी थे क्रमश –महिपाल, विषमपाल, जन्हु जनपाल (अथवा विजनपाल अथवा जुवपाल) यशोराज कन्हडदेव (अथवा वल्लभदेव) और लक्ष्मवर्मा लक्ष्मवर्मा का उत्तराधिकारी उसका ज्यष्ठ पुत्र खड्गदेव हुआ और उसकी परम्परा मे क्रमश भुवनैकमल्ल, अर्जुन, भीम और भोज हुए, किन्तु भाज के बाद लक्ष्मीवर्मा के दूसरे पुत्र तथा खड्गदेव के लघु भ्राता चन्दन का प्रपौत्र लक्ष्मण राजा हुआ लक्ष्मण का पुत्र रामचन्द था जिसने इस प्रशस्ति की रचना की वह 1349 ई में राज्य करता था

कवर्धा के नागवशी राजा रत्नपुर के कलचुरि वश का प्रभुत्व स्वीकार करते थे इस वश के राजाओं में सर्ववदन के पुत्र गोपालदेव का उल्लेख कवर्धा से 12 किलोमीटर दूर स्थित बोरमदेव के मन्दिर मे प्राप्त कलचुरि सवत् 840 के अभिलेखों में आया है इसी प्रकार जणपाल के पुत्र यशोराज का कल्चुरि सवत् 934 का एक शिलालेख चौरा से लगभग 30 किलोमीटर दूर साहसपुर से प्राप्त हुआ है

कांकेर का सोमवंश

बस्तर जिले में स्थित काकेर से प्राप्त कुछ अभिलेखो से यहाँ राज्य करते हुए सोमवशी राजाओं का पता चलता है जो रत्नपुर के कलचुरि राजाओं का प्रभुत्व मानते थे यहाँ से प्राप्त भानुदेव के शासनकालीन शक् सवत् 1242 (1320 ई) के अभिलेख में भानुदेव के पूर्वजो की वशावली दी है तदनुसार इस सोमवश का सर्वप्रथम राजा सिहराज तत्पश्चात् उसका पुत्र व्याघ्रराज, व्याघ्रराज का पुत्र बोपदेव, बोपदेव का पुत्र कृष्ण कृष्ण का पुत्र जैतराज तथा जैतराज का पुत्र सोमचन्द्र जो भानुदेव का पिता था, उल्लेखनीय है

तहनकापर से इसी वश के पम्पराजदेव नामक राज के कलचुरि सवत् 965 तथा 966 मे उत्कीर्ण दो और ताम्रपत्र-लेख प्राप्त हुए हैं कलचुरि सवत् 966 के ताम्रपत्र में पम्पराजदेव के पिता सोमरा तथा सोमराज के पिता बोपदेव का नामोल्लेख है इस अभिलेख से विदित होता है कि बोपदेव के समय कांकेर के सोमवशी राज्य की दो शाखाए हो गयी थी जिसमे से एक में पम्पराज हुआ और दूसरी शाखा मे चार-पाँच पीढियाँ बाद भानुदेव हुआ इसके बाद के राजाओं के बारे में कोई भी सूचना नहीं मिलती

देवगिरि का यादव वंश

ग्यारहवी-बारहवी शताब्दी ई के मध्य देवगिरि (औरगाबाद जिले में स्थित आधुनिक दौलताबाद) के यादव शासको ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर विदर्भ के अधिकाश भाग पर आधिपत्य स्थापित कर लिया इस वश के प्रथम तीन शासक–भिल्लम, जैतुगि तथा सिघण ने मालवा पर आक्रमण कर समकालीन परमार शासक को पराजित किया बालाघाट जिले से प्राप्त एक अभिलेख के अध्ययन से कुछ विद्वानो का विश्वास है कि सिघण का साम्राज्य यहाँ तक फैला हुआ था यादव वश के चतुर्थ शासक कृष्ण तथा पचम शासक महादेव के समय मे भी मालवा पर आक्रमण किया गया रामचन्द के राजत्वकाल में यादव-साम्राज्य का काफी विस्तार हुआ बालाघाट जिले मे स्थित लाजी से प्राप्त उसके एक अभिलेख 3 से ज्ञात होता है कि उसके राज्य की सीमा मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले तक विस्तृत हो गयी थी रामचन्द्र इस वश का अन्तिम स्वतन्त्र शासक था अपने राज्यकाल के अन्तिम भाग मे उसे दिल्ली के शासक अलाउद्दीन खलजी की अधीनता स्वीकार करनी पडी थी

मन्दसौर का गुहिल राजवंश

मन्दसौर जिले के जीरण नामक स्थान के पचदेवरा मन्दिर तथा छत्री (छतरी) पर उत्कीर्ण छ अभिलेख से यहाँ पर 10वी सदी ई में राज्य करते हुए एक गुहिल वश का पता चलता है इस छ अभिलेखों में एक वि स 1053 का है तथा शेष वि स 1065 के हैं इस अभिलेख मे विग्रहपाल, वच्छराज, वैरिसिह, लक्ष्मण आदि के नाम आये है चाहमान वश के श्री अशोक्य का भी उल्लेख है गुप्त वश के वसत की पुत्री सर्वदेवी द्वारा स्तम्भ-निर्माण का भी उल्लेख है इस गुहिल वश का पूर्व तथा परवर्ती इतिहास क्या है तथा मेवाड के गुहिल वश से उनका क्या सम्बन्ध था इस सम्बन्ध में इतिहास मौन है

कच्छपघात् राजवंश

दसवीं सदी ई के मध्य से 12वीं सदी ई के पूर्वार्द्ध तक तथा उसके आसपास के क्षेत्र पर कच्छपघात् राजवश का राज्य था अभिलख से इस वश की तीन शाखाओं का पता चलता है जो क्रमश ग्वालियर दुबगुण्ड तथा नरवर में राज्य कर रहे थ इनका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

ग्वालियर शाखा (प्राचीन गोपाद्री)

ग्वालियर (प्राचीन गोपादी) क कच्छपघात् शाखा का सर्वप्रथम नरेश लक्ष्मण था उसके राज्य की सीमा क्या थी यह हमें ज्ञात नही दसवी सदी के उत्तरार्द्ध में ग्वालियर पर चन्देल नरेश धग का राज्य था धग इस समय कन्नौज के प्रतिहार नरश विनायकपाल का सामन्त मात्र था 977 ई के लगभग कच्छपघात् लक्ष्मण के वृद्ध महाराजाधिराज वज्रदामन ने गाधीनगर (कन्नौज) के नरेश को पराजित कर ग्वालियर पर अपना राज्य स्थापित कर लिया इस समय कन्नौज का प्रतिहार नरेश विजय था वज्रदामन का उत्तराधिकारी मगलराज था मगलराज के पश्चात् कीर्तिराज राजा हुआ कीर्तिराज ने मालवा नरश के आक्रमण का सामना कर अपने राज्य की रक्षा की यह मालव नरेश सम्भवत परमार शासक भोज प्रथम रहा होगा 1021 ई में ग्वालियर पर गजनी के महमूद का आक्रमण हुआ जिसमे ग्वालियर नरेश ने आत्मसमर्पण कर दिया यह नरेश सम्भवत कीर्तिराज ही था कीर्तिराज के उत्तराधिकारी थे क्रमश मूलदव, देवपाल तथा पद्मपाल सम्भवत पद्मपाल का कोई पुत्र नहीं था अत उसका चचेरा भाई सूर्यपाल का पुत्र महीपाल गद्दी पर बैठा महीपाल के उत्तराधिकारी थे क्रमश –भुवनपाल तथा मधुसूदन मधुसूदन के पश्चात् इस वश के इतिहास का कुछ भी पता नहीं 1196 ई में ग्वालियर को मुसलमानो द्वारा जीत लिया गया

कच्छपघात वश के पूरे इतिहास का पता केवल तीन अभिलखों से चलता है, जिनमें इसके नरेशो की वशावली दी हुई है तथा उनकी उपलब्धियों का वर्णन है पहला अभिलेख वज्रदामन के राजत्व काल का वि स 1034 का है जो ग्वालियर से प्राप्त एक जैन प्रतिमा पर उत्कीर्ण है दूसरा अभिलेख महिपाल के शासनकाल का विक्रम सवत् 1150 का है, जो ग्वालियर के सास-बहू मन्दिर में दो प्रस्तरों पर उत्कीर्ण है ग्वालियर से प्राप्त तीसरा खण्डित अभिलेख वि स 1161 का है जिसमे महीपाल के उत्तराधिकारी भवनपाल तथा मधुसूदन का उल्लेख है

दुबकुण्ड शाखा

कच्छपघात् राजवश की एक शाखा ग्वालियर से 76 मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित दुबकुण्ड (प्राचीन चडोभ) में राज्य करती थी. इस वश के अन्तिम नरेश विक्रमसिह का वि स 1145 का एक अभिलेख दुबकुण्ड के एक विशाल जैन मन्दिर के खण्डहरों मे पडे एक शिलालेख पर उत्कीर्ण मिला है इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस वश का सर्वप्रथम नरेश अर्जुन था जिसके पिता का नाम युवराज था अर्जुन चन्देल नरेश विद्याधर के सामन्त के रूप में यहाँ राज्य करता था उसने कन्नौज के नरेश प्रतिहार राज्यपाल को मारा था अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु था, जो परमार नरेश भोज का समकालीन था अभिमन्यु का पुत्र विजयपाल था तथा विजयपाल का पुत्र विक्रमसिह था

नरवर शाखा

कच्छपघात् राजवश की एक तीसरी शाखा नरवर (प्राचीन नलपुर) मे राज्य करती थी इस वश के अन्तिम नरेश वीरसिह का एक ताम्रपत्र जो वि स 1177 में प्रचलित किया गया था, नरवर से प्राप्त हुआ है इसमे दिये गये वर्णन के अनुसार इस वश का सर्वप्रथम शासक गगनसिंह था गगनसिह का उत्तराधिकारी शरदसिह हुआ शरदसिह का उत्तराधिकारी वीरसिह था, जिसने उपर्युक्त ताम्रपत्र प्रचलित किया

नरवर का यज्वपाल राजवंश

तेरहवीं सदी ई के उत्तरार्ध में नरवर (प्राचीन नलपुर) में यज्वपाल राजवश का उदय हुआ इस वश के प्रारम्भिक राजाओं ने रणथम्भौर के चाहमानों के सामन्तों के रूप में राज्य प्रारम्भ किया बाद मे वे स्वतन्त्र होकर नलपुर में अपनी राजधानी स्थापित कर राज्य करने लगे

इस वश का प्रथम राजा चाहड था वह सम्भवत चौहानवशी पृथ्वीराज तृतीय का वशज था, परन्तु पृथ्वीराज से उसका क्या सम्बन्ध था, यह ज्ञात नहीं चाहड के नामयुक्त वि स 1300 का एक अभिलेख विदिशा जिले मे उदयपुर में स्थित उदयेश्वर मदिर की पूर्वी महराब पर उत्कीर्ण मिला है उसका उल्लेख करते हुए एक दूसरा अभिलेख जो वि स 1304 का है गुना जिले मे भक्तर में स्थित एक सती-स्तम्भ पर उत्कीर्ण मिला है उसने सिक्के भी प्रचलित किये, जो 1237 ई से 1254 ई के बीच हैं इन अभिलेखों तथा सिक्कों से उसके राज्यकाल की विशेष घटनाओं का ज्ञान नहीं होता उसके पोते आसल्लदेव के एक अभिलेख के वर्णन से अवश्य ही ज्ञात होता है कि उसने परमारों को पराजित किया था

चाहड़ की मृत्यु सम्भवत 1254 ई में हुई उसी वर्ष से सम्बन्धित सिक्के उसके पोते आसल्लदेव द्वारा प्रचलित किये गये इससे विद्वानों द्वारा अनुमान लगाया गया है कि आसल्लदेव के गद्दी पर बैठने के पूर्व ही उसके पिता नृवर्मन का देहान्त हो गया था सम्भवत वह किसी युद्ध में मारा गया था

आसल्लदेव के राज्यकाल के चार अभिलेख–नरवर, बडौदी भीमपुर तथा बूदी-राई से प्राप्त हुए हैं आसल्लदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र गोपालदेव था, जिसका राज्यकाल 1279 ई से 1290 ई के बीच माना जाता है उसके राज्यकाल के तेरह अभिलेख नरवर, बगला, बलारपुर, पचरई तथा बढोत्तर से प्राप्त हुए जो वि स 1338 तथा 1345 के बीच के हैं इन अभिलेखो से उसके राज्यकाल में बुन्देलखण्ड के चन्देल नरेश वीरवर्मन द्वारा नरवर पर किये गये आक्रमण का पता चलता है

इस वश का अन्तिम नरेश गोपालदेव का पुत्र गणपति हुआ वह 1920 ई के लगभग गद्दी पर बैठा उसके राज्यकाल के ग्यारह अभिलेख तिलोरी नरवर पहाडो, बलारपुर, भेसरवास, मुखवासा तथा मुखवासा से प्राप्त हुए हैं उसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी चन्देलो को पराजित कर कीर्तिदुर्ग पर अधिकार करना इसका उल्लेख नरवर से प्राप्त उसके वि स 1355 के अभिलेख मे आया है सम्भवत इस युद्ध मे उसके सामन्त अधिगदेव ने भी उसकी सहायता की हो

कीर्तिदुर्ग तथा नरवर पर गणापति का शासन कब तक स्थायी रहा यह कहना कठिन है हमे ज्ञात है कि 1294 ई में मुस्लिम शासक अलाउद्दीन ने दक्कन की ओर प्रस्थान किया मार्ग में सम्भवत उसने गणपति को पराजित कर उसके राज्य को छीन लिया गणपति तथा उसके उत्तराधिकारियो का क्या हुआ इस सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नही

तोमर राजवंश

चौदहवीं सदी ई के उत्तरार्ध मे भारत पर तैमूर के आक्रमण तथा उसके परिणामस्वरूप मुस्लिम सत्ता के डावाडोल होने की परिस्थिति का लाभ उठाकर ग्वालियर में तोमर वश की स्थापना हुई ग्वालियर पर इस वश का प्रभुत्व सोलहवीं सदी ई के पूर्वार्ध तक रहा

तोमर वश का सस्थापक वीरसिंहदेव था वीरसिंहदेव के उत्तराधिकारी क्रमश उद्धरणदेव तथा विक्रमदेव हुए विक्रमदेव के राज्यकाल में 1402 ई मे नासिरुद्दीन महम्मद तुगलक के सेनापति मल्लु इकबाल खाँ ने ग्वालियर पर आक्रमण कर किले को जीतना चाहा, परन्तु प्रयत्न असफल रहा अगले वर्ष उसने फिर से आक्रमण किया तथा विक्रमदेव को धोपलुर के निकट पराजित किया 1404-05 ई मे इकबाल खाँ को विक्रमदेव के नेतृत्व मे राजपूतो की सेना का सामना करना पडा, जिसमे राजपूतों की पराजय हुई 1416 ई मे खिज्र खाँ ने विक्रमदेव से कर वसूल करने के लिए अपने वजीर मालिक ताज-उल-मुल्क को भेजा

विक्रमदेव का उत्तराधिकारी डुगरेन्द्रसिंह 1424 ई में गद्दी पर बैठा अपने राज्यकाल के प्रारम्भ से ही उसे मुसलमानों से लोहा लेना पडा उसके राज्यकाल के प्रथम वर्ष में मालवा के शासक हुशगशाह ने ग्वालियर किले की घेराबन्दी की हुशगशाह से पीछा छुडाने के लिए डुगरेन्द्रसिंह को जौनपुर के शासक मुबारक शाह की सहायता लेनी पडी और उसे 'कर' भी देना पडा, परन्तु उसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बराबर बनाये रखा दिल्ली के सुल्तान ने उससे कर वसूल करने के उद्देश्य से उसके विरुद्ध 1427, 1428, 1429 तथा 1432 ई मे सेना भेजी, परन्तु इन सभी प्रयत्नों को उसने विफल कर दिया

1438 ई मे डुगरेन्द्रसिंह ने नरवर के गढ को घेर लिया जो कुछ समय मालवा के सुलतान के अधीन हो गया था यद्यपि इस प्रयास में डुगरेन्द्रसिंह असफल रहा परन्तु भविष्य मे नरवर तोमरों के अधीन अवश्य हो गया

1455 ई के लगभग डुगरेन्द्रसिंह का उत्तराधिकारी कीर्तिसिंह गद्दी पर बैठा अपने 25 वर्ष के राज्यकाल के दौरान इन्हे मुस्लिमों में अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए कभी जौनपुर और कभी दिल्ली के मुस्लिम शासक को मित्र बनाना पडा

कीर्तिसिंह का उत्तराधिकारी कल्याणमल था उसके राज्यकाल की कोई घटना उल्लेखनीय नही है कल्याणमल का उत्तराधिकारी उसका पुत्र मानसिंह था जो इस वश का सबसे प्रतापी राजा था 1486 ई से 1517 ई तक के उसके राज्यकाल मे राजनीतिक तथा सास्कृतिक दोनो क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियाँ हुई

अपने राज्यकाल मे मानसिंह को दिल्ली को लोदी शासक बहलोल लोदी सिकन्दर लोदी तथा इब्राहीम लोदी से टक्कर लेनी पडी 1491 ई में जब बहलोल लोदी ग्वालियर की सीमा के निकट से गुजरा तो मानसिंह ने उसे 80 लाख टको का उपहार भेजा अगले वर्ष बहलोल लोदी का उत्तराधिकारी सिकन्दर लोदी जब ग्वालियर आया तो उसने मानसिंह को खिल्लत प्रदान किया 1500 ई के लगभग मानसिंह ने निहालसिंह नामक प्रतिनिधि को सिकन्दर लोदी के दरबार में भेजा उसके अनुचित व्यवहार के कारण मानसिंह तथा सिकन्दर लोदी के आपसी सम्बन्ध बिगड गये तथा इसके पश्चात् सिकन्दर लोदी ने कई बार ग्वालियर पर आक्रमण किया ग्वालियर पर सिकन्दर लोदी का पहला आक्रमण 1501 ई में हुआ जब मानसिंह ने उसे धन देकर तथा अपने पुत्र विक्रमादित्य को भेजकर उससे सन्धि कर ली

1505 ई मे सिकन्दर लोदी ने ग्वालियर पर फिर से आक्रमण किया इस बार मानसिंह ने अच्छी तरह उसके दाँत खट्टे किए उसकी रसद काट दी गयी और वह बडी

दुर्व्यवस्था के साथ भाग गया 1517 ई तक मानसिह को शान्ति से शासन करने का अवसर प्राप्त हुआ 1517 ई में सिकन्दर लोदी ने पूर्ण सकल्प के साथ ग्वालियर पर आक्रमण करने की तैयारी की इसी बीच उसकी मृत्यु हो गयी सिकन्दर लोदी का उत्तराधिकारी इब्राहीम लोदी ने राज्य सँभालते ही ग्वालियर के किले पर आक्रमण किया तथा उसे घेर लिया किला जब घिरा हुआ था, उसी समय मानसिह की आकस्मिक मृत्यु हो गयी मानसिह के पुत्र विक्रमादित्य ने किले को बचाने का भरसक प्रयत्न किया, परन्तु वह असफल रहा और उसने आत्मसमर्पण कर दिया

इस प्रकार ग्वालियर का किला इब्राहीम लोदी द्वारा जीत लिया गया और तोमर शासक अपनी स्वतत्रता को खोकर लोदियो के अधीन हो गये

मानसिह जितना बडा योद्धा और राजनीतिज्ञ था, उतना ही बडा कला का पोषक था उसने सिचाई के लिए अनेक झीले बनवाईं उसके द्वारा रचित 'मानकौतूहल' सगीत का प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है मानसिह द्वारा निर्मित मानमन्दिर तथा गूजरी-महल हिन्दू स्थापत्य कला के अप्रतिम उदाहरण हैं

मध्य प्रदेश में पुरातत्व उत्खनन

मध्य प्रदेश के इतिहास की महत्ता को देखते हुए मध्य प्रदेश की सीमा के अन्तर्गत स्थित अनेक स्थलों पर उत्खनन का कार्य करवाया गया यह कार्य विभिन्न वर्षों में केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग तथा मध्य प्रदेश शासन के पुरातत्व विभाग के अतिरिक्त कुछ विश्वविद्यालयों द्वारा सम्पन्न हुआ विभिन्न स्थलों पर किये गये पुरातत्व उत्खनन का वर्णन इस प्रकार है–

आदमगढ़ (1960-61)

होशगाबाद नगर की बाहरी सीमा पर नर्मदा नदी के दक्षिण तट पर स्थित आदमगढ की विश्वविख्यात चित्रित शैलकृत गुफाएँ हैं इनकी महत्ता को देखते हुए भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा यहाँ श्री आर वी जोशी तथा श्री एम डी खरे के निर्देशन में 1960-61 मे उत्खनन करवाया गया

कुल मिलाकर यहाँ अठारह खदाने (ए डी जी 1 से ए डी जी 18 तक) लगायी गयीं, जिनमे कुछ गुफाओं के अन्दर लगायी गईं तथा कुछ बाहर इस उत्खनन में सबसे प्राचीन औजार, पूर्व-पाषाणयुगीन हस्त-कुठार, विदारणी, अडिल चक्रिक उपकरण खुरचनी, शल्क तथा कोड प्राप्त हुए खदान क्रमाक ए डी जी -1 में कालानुक्रमिक तीन स्तर पाये गये खदान क्रमाक ए डी जी -10 तथा ए डी जी -12 में भी यही स्तर तथा मिलते-जुलते औजार प्राप्त हुए सभी खदानो मे सर्वोपरि दो स्तरों में काँच के टुकडे, काँच की चूडियो के टुकडे तथा केल्सेडोनी के टुकडों के अतिरिक्त और कोई औजार प्राप्त नही हुए काली मिट्टी के ऊपर भाग में कुछ मृद्भाण्डों के टुकडे तथा हड्डियो के टुकड भी मिले

आवरा (1960-61)

मदसौर जिले मे चन्दवासा नगर के 6 मील पश्चिम की ओर स्थित आवरा (प्राचीन 'अपरा') ग्राम स्थित है इस गाँव तथा गाँव से आधे मील की दूरी पर स्थित चम्बल नदी के बीच के भाग मे टीलों की एक शृखला विद्यमान थी जो अब चम्बल बाँध बनने के कारण जल में समा चुकी है इन टीलों में प्राचीन 'अपरा' नगर के खण्डहर थे, अत डूबने से पहले इनका सीमित उत्खनन मध्य प्रदेश के पुरातत्व विभाग द्वारा 1960-61 मे डॉ एच. वी त्रिवेदी के निर्देशन में करवाया गया इस उत्खनन से मालवा के प्राचीन इतिहास पर (विशेष रूप से ताम्रपाषाण युग से गुप्त काल तक) महत्वपूर्ण प्रकाश पडा है

उत्खनन मे प्राप्त सामग्री के आधार पर यहाँ पर बसी सभ्यता को निम्नलिखित छ कालो में विभाजित किया गया है–

प्रथम काल–पाषाण युग

द्वितीय काल–ताम्रपाषाण युग (1500 ई पू. से 600 ई पू तक)

तृतीय काल–500 ई पू से 100 ई पू तक

चतुर्थ काल–100 ई पू से 300 ई तक

पचम काल–300 ईसवी से 500 ईसवी तक

षष्ठम काल–उत्तर-मध्ययुग (मुस्लिम मराठा काल)

उपर्युक्त विभिन्न कालों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्न-लिखित हैं–

प्रथम काल (पाषाण युग)

चम्बल घाटी की खोज में आवरा के निकटवर्ती क्षेत्र से पाषाणयुगीन औजार प्राप्त हुए हैं ये औजार इस स्थल पर बसी सर्वप्रथम सभ्यता के सूचक हैं

द्वितीय काल (ताम्रपाषाण युग) 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक

इस उत्खनन के सीमित होने के कारण इस काल से सम्बन्धित लोगों के रहन-सहन, खान-पान आदि के विषय में स्पष्ट प्रकाश नहीं पड सका कुछ मकानो की नीव तथा फर्श के अवशेष मिले है यह ज्ञात नहीं हो सका कि इस काल के निवासी आर्य थे अथवा अनार्य उनकी खाद्य सामग्री क्या थी, यह कहना भी कठिन है उत्खनन मे कुछ मछलियों की हड्डियाँ अवश्य ही प्राप्त हुई हैं विभिन्न प्रकार के लघु पाषाण औजार प्राप्त होने से ज्ञात होता है कि ये लोग इस प्रकार के औजार घरेलू उपयोग में लाते थे ताँबे का उपयोग भी इन्हे ज्ञात था उत्खनन मे ताँबे की एक कुल्हाडी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुई है घरेलू उपयोग मे इस काल के निवासी चित्रित लाल पर

काले लाल और काले, सफेद रग से रगे, अनगढ लाल, काले तथा भूरे और उत्कर्णित भाडो का उपयोग करते थे इन विभिन्न प्रकार के मृद्भाण्डो के अनेक ठीकरे उत्खनन मे प्राप्त हुए है इनके अतिरिक्त बहुत थोडे से अन्य महत्वपूर्ण प्रकार के ठीकरे भी प्राप्त हुए है यह सभ्यता महेश्वर-नावडा टोली नागदा आदि के ताम्रपाषाणयुगीन सभ्यता के समकालीन थी

तृतीय काल (500 ई.पू. से 100 ई.पू. तक)

ताम्रपाषाणयुगीन निवासियो की अपेक्षा इस युग के लोगो के जीवन के विभिन्न पहलुओ पर अधिक प्रकाश पडा है

इस युग से सम्बन्धित स्तर से जले हुए मकानो के अवशेष प्राप्त हुए है, जिससे ज्ञात होता है कि यहाँ के निवासी कच्चे मकानो मे रहते थे, जिनकी दीवारे बाँस लकडी मिट्टी आदि से बनती थीं तथा छतो पर लोहे पर खीलो के सहारे रखे गये टाइल्स का उपयोग होता था इस युग के निवासी लोहे का उपयोग अच्छी तरह जानते थे उत्खनन मे प्राप्त होने की सामग्रियो मे बाणाग्र शूलाग्र खीले हँसिया छेनी टाँगने योग्य दीप, कुल्हाडी आदि प्राप्त हुए हैं ताँबे की बनी अनेक वस्तुएँ भी मिली है जिनमे चूडियाँ छल्ले, छड आदि उल्लेखनीय है

पत्थर की बनी वस्तुओ मे तीन चक्कियाँ प्रमुख है स्टिटाइट पत्थर के बने दो गोलाकार मजूषा के ढक्कन भी महत्वपूर्ण है मूल्यवान पत्थरो के बने विभिन्न आकार तथा प्रकार के मनके भी इस स्तर से प्राप्त हुए है

शख की बनी चूडियाँ हड्डी की वस्तुएँ तथा हाथी-दाँत की कृतियाँ भी महत्वपूर्ण है हाथीदाँत की वस्तुओ मे मातृदेवी की आकृति कटारनुमा वस्तु तथा एक मुद्राक महत्वपूर्ण है हाथीदाँत के बने इस मुद्राक पर मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि मे 'जिधवस' खुदा है

मिट्टी की बनी वस्तुओ मे बच्चों के खिलौने मनुष्य तथा पशु आकृतियो, मनके तथा मुद्राएँ महत्वपूर्ण है एक मिट्टी के मुद्राक पर (अ) पराय शब्द खुदा है, जिससे पता लगता है कि इस स्थान का प्राचीन नाम 'अपरा' था मिट्टी के बने विभिन्न आकार-प्रकार के जो भाण्ड इस काल मे उपयोग मे लाये जाते थे वे थे--काले ओपदार उत्तरी भाण्ड काले और लाल भाण्ड अनगढ लाल तथा सादे काले भाण्ड

इस युग की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इस काल की उन्नत जल-निकास-व्यवस्था थी जल की निकासी पकायी गयी मिट्टी के बने पाइपो से होती थी इसके अतिरिक्त वलय कूप शोषक गर्त शोषक कूप आदि के बने अवशेष भी प्राप्त हुए है इस काल के स्तर से आहत तथा ढले हुए सिक्के भी प्राप्त हुए है

चतुर्थ काल (100 ई.पू. से 300 ईसवी तक)

इस युग के निवासी पकी ईंटों के बने मकानो मे रहते थे उत्खनन में प्राप्त मकानो के अवशेषों से अवश्य ही मकानों के विभिन्न आकारों में स्पष्ट चित्र सामने नहीं आ सका लोहे तथा ताँबे का उपयोग इस काल मे बहुत होता था, जैसा कि प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है शख तथा हाथीदाँत की चूडियाँ तथा अन्य आभूषण बनाना इस काल का एक मुख्य उद्योग प्रतीत होता है पकी मिट्टी की बनी चूडियाँ तथा कान के आभूषण प्रचुर मात्रा मे मिले है इस युग के सम्बन्धित स्तर से जो मिट्टी की गेंद, छिद्रयुक्त ढक्कन, मनुष्य तथा पशुओ की आकृतियाँ प्राप्त हुई है, वे शैली के दृष्टिकोण से तृतीय काल की वस्तुओं से उन्नत है मिट्टी के बने एक बैल का खण्डित पिछला भाग भी प्राप्त हुआ है जिस पर दूसरी-तीसरी शताब्दी के ब्राह्मी अक्षरो में सवय लेख उत्कीर्ण है सजावट के लिए काम मे आने वाली एक गोलाकार मिट्टी के टुकडे के एक ओर कमल पर खडी एक देवी का चित्र है तथा दूसरी ओर कमल अकित किया गया है दो मिट्टी की बनी मुद्राक भी इस काल के स्तर से मिली है

एक गोलाकार मुद्राक पर दूसरी शताब्दी ईसवी की ब्राह्मी लिपि में चार अक्षरो का लेख 'गोसमस' खुदा हुआ है एक अन्य तिकोनाकर मुद्राक के एक ओर 'समरसतस' तथा दूसरी ओर यसोमितस' लेख खुदे हैं ये लेख लगभग चौथी शताब्दी ईसवी की लिपि मे है इस काल से सम्बन्धित मृद्भाण्ड है--लाल ओपदार भाण्ड, सादे लाल भाण्ड अनगढ लाल तथा काले भाण्ड जल-निकासी व्यवस्था मे भी इस काल के निवासी उतने ही उन्नत थे, जितने कि पिछले काल के उत्खनन मे प्राप्त सिक्कों में पचमार्क ढले उज्जैन चिह्न युक्त तथा क्षत्रप सिक्के प्रमुख है रोमन सभ्यता से सम्पर्क इस काल की एक प्रमुख विशेषता है, जैसा कि उत्खनन मे प्राप्त एक मिट्टी के बने बैल के पिछले भाग पर बने रोमन सिक्के के छाप से प्रतीत होता है

पंचम काल (300 ईसवी से 500 ईसवी तक)

आवरा के सीमित उत्खनन मे इस काल से सम्बन्धित अवशेष केवल एक टीले (ए व्ही आर में टीला क्रमाक 3) मे उपलब्ध हुए है उत्तर-क्षत्रप काल से सम्बन्धित इन अवशेषों में भवनो के कुछ अवशेषों के अतिरिक्त मिट्टी की बनी टोटियाँ, मृद्भाण्डो के ठीकरे, मनके मनुष्याकृतियाँ खिलौने आदि प्राप्त हुए है इस काल से सम्बन्धित मृद्भाण्ड है अनगढे लाल रग के भाण्ड जिन पर सफेद पृष्ठभूमि पर काले रग की चित्रकारी की है गहरे धूसर वर्ण के भाण्ड, लाल रग मोटे भाण्ड तथा चमकीले भाण्ड

षष्ठ काल (उत्तर-मध्ययुग-मुस्लिम-मराठा काल)

लगभग पाँचवी-छठी शताब्दी ईसवी के पश्चात् यह स्थान उजड गया ऐसा प्रतीत होता है परन्तु सतह से

प्राप्त मुस्लिम-मराठाकालीन सिक्के तथा अन्य अवशेषो से ऐसा ज्ञात होता है कि उत्तर-मध्य युग मे यह स्थान फिर से आबाद हो गया

इन्द्रगढ़ (1958-59)

मन्दसौर जिले में स्थित इन्द्रगढ़ नामक स्थान से एक शिलालेख प्राप्त हुआ, जिसके अनुसार राष्ट्रकूट नरेश के शासन मे इस स्थान पर एक शिव-मन्दिर का निर्माण कराया गया था, जिसके कुछ अवशेष प्राप्त हुए इस मन्दिर का पूर्णरूप ज्ञात करने के लिए 1958-59 में इस मन्दिर के अवशेषों का उत्खनन करवाया गया

इन्द्रगढ मे यह उत्खनन तीन स्थलों पर करवाया गया पहला स्थल देवालय के क्षेत्र में था इस स्थल पर देवालय के जो अवशेष मिले, उनमे चौकोर, त्रिकोण तथा अन्य आकृतियों की सादी और कोरी प्रस्तर शिलाएँ, स्तम्भ, देहली, दासा, तोरण, आदि के भाग तथा विभिन्न देव प्रतिमाएँ और उनके खण्ड प्रमुख थे प्रमुख प्रतिमाएँ नन्दी, भैरव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी और वाराही की मिलीं कुछ प्रतिमाए ऐसे स्थल पर मिलीं जिनसे वहाँ उस मन्दिर के उप-मन्दिर के अस्तित्व का पता चलता है इनके अतिरिक्त उत्खनन मे छोटी-छोटी वस्तुए भी मिलीं, जैसे—काँच और मिट्टी की मणि, ताँबे के पुराने सिक्के, जला हुआ धान्य, काँच और हाथीदाँत की चूडियाँ इत्यादि इन सबमे लोहास्त्रों की सख्या अधिक पायी गयी, जिनमे कटारों और नुकीले अग्रभागो की विपुलता दिखी जो यहाँ किसी समय हुए युद्ध के द्योतक हैं बारहवी सदी ई के एक शिलालेख के खण्ड भी मिले, जिनके आधार पर मदिर के उस समय तक अस्तित्व का अनुमान किया जा सकता है अत यह मन्दिर 8वीं से 12वी सदी ई तक विद्यमान था, ऐसा अनुमान लगाया गया है

उपर्युक्त स्थल के अतिरिक्त एक दूसरे स्थल पर भी उत्खनन करवाया गया, जो पहले स्थल से लगभग दो फर्लांग पूर्व मे था इसमें यहाँ की प्राचीन बस्ती के अवशेष जिसमें ईंट और पत्थरो की पुरानी दीवारों के भाग, चूडियो के टुकडे, मनके अन्य आभूषण, तोलने के बाँट तथा लोहस्त्र आदि प्राप्त हुए

एक अस्थिपजर भी मिला, जिससे यहाँ पर हुए युद्ध का अनुमान लगाया जा सकता है एक तीसरे स्थल पर भी उत्खनन करवाया गया, जो मन्दिर के दक्षिण-पूर्व की ओर था इसमें दो मजिले जले हुए मकान के अवशेष, घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुए तथा तीन अस्थिपजर मिले, जिनमें से दो में फँसे लोहे के तीर के फलक मिले इससे यहाँ पर हुए युद्ध की सत्यता और भी प्रमाणित होती है यह आक्रमण सम्भवत मुस्लिम काल में हुआ होगा

उज्जैन (1938-39, 1955-58, 1964-65)

प्राचीन भारत के सास्कृतिक केन्द्रों में उज्जयिनी को जितना महत्व मिला, उतना इस देश के बहुत कम नगरो को मिल सका क्षिप्रा नदी के तट पर बसी इस नगरी का स्थान धर्म, साहित्य, विज्ञान, कला और व्यवसाय के क्षेत्र मे प्रमुख रहा हिन्दू, बौद्ध तथा जैन तीनों साहित्यों में इस नगरी का गुणगान किया गया है उज्जयिनी के प्राचीन वैभव के सम्बन्ध मे जितने साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध हैं उतनी ही महत्वपूर्ण पुरातत्व की सामग्री भी उपलब्ध है अत इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस नगरी ने पुरातत्वविदों का ध्यान कई बार अपनी ओर आकर्षित किया तथा आज भी कर रही है

उज्जयिनी की प्राचीन महत्ता को देखते हुए यहाँ कई बार पुरातत्व उत्खनन किये गये यहाँ पर सर्वप्रथम उत्खनन ग्वालियर राज्य के पुरातत्व विभाग द्वारा श्री गो ब गर्दे के निर्देशन में 1938-39 ई मे करवाया गया इस उत्खनन में कई टीलों को खुदवाया गया जिसमें से महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए इनका सक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

आधुनिक नगर के उत्तर की ओर क्षिप्रा नदी के तट पर बसे 30 से 50 फुट ऊँचे कई टीले हैं जो लगभग एक वर्ग मील के क्षेत्र में फैले हुए हैं ये 'गढ़' कहलाते हैं 1938-39 मे यहाँ परीक्षण-उत्खनन किया गया जिसमें मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए अवशेषों में मिट्टी के बने वलय-कूप, वृद्धाकार भाण्ड, मृद्मुद्राएँ, मिट्टी के खिलौने, आहत सिक्के आदि प्राप्त हुए

दूसरा उत्खनन आधुनिक नगर की उत्तर-पूर्व दिशा मे तीन मील की दूरी पर स्थित 'वैश्या टेकरी' नामक टीले का किया गया इस टीले के उत्खनन में एक विशाल स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए, जिसका निर्माण सम्भवत 'वैश्य पुत्री सेट्ठिधीता द्वारा अशोक के शासनकाल में करवाया गया था यह विशाल स्तूप मानो एक वृहदाकार पहाडी ही है जिसका व्यास 350 फुट तथा ऊँचाई 100 फुट है श्यामल मरुम को कूट-कूटकर इस वृत्ताकार स्तूप का निर्माण किया गया था

उत्खनन काल मे भीतर से इसे पोला पाया गया सम्भवत भीतर से यह लकडी के लट्ठो से बनायी हुई अर्धवृत्ताकार मेहराब पर आधारित था स्तूप को बाहर से ईंटो की जुडाई से आवेष्टित कर दिया गया था वृहदाकार इन ईंटो के माप अधिकतम 22II इच × 18II इच × 3III इच तथा 22II इच × 15II × 3III इच थे जिससे इनका मौर्यकालीन होना ही प्रतीत होता है ये ईंटे अच्छी तरह पकी हुई नहीं थीं, जिसके फलस्वरूप इनके नष्ट हो जाने के कारण स्तूप का कुछ भाग खुल गया था उत्खनन मे स्तूप के ऊपर चाँदी की एक आहत मुद्रा तथा ढाली हुई एक अवन्ति मुद्रा प्राप्त हुई थी

वैश्या-टेकरी के लगभग 100 गज दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित एक और टीला था जिसे 'पल्लेवाली टेकरी' अथवा 'ककर-टेकरी' के नाम से पुकारा जाता था इस

टीले का भी उत्खनन किया गया, जिसमें एक अन्य स्तूप के अवशेष मिले, जिसकी बनावट 'वैश्या टेकरी' के स्तूप से मिलती-जुलती थी

वैश्या टेकरी के पूर्व की ओर लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'कुम्हार टेकरी' नामक एक अन्य टीला था यह टीला 220 फीट लम्बा, 110 फीट चौड़ा तथा 15 फुट ऊँचा था इस टीले से अधिक संख्या में मृद्भाण्ड प्राप्त होने के कारण इसे कुम्हार टेकरी के नाम से पुकारा जाता था 1938-39 में इसका भी उत्खनन करवाया गया जिससे यह ज्ञात हुआ कि यह एक श्मशान भूमि थी यहाँ उत्खनन से प्राप्त मुद्राओं से यह स्पष्ट हो गया कि यह टीला ई पू दूसरी शताब्दी के पूर्व का था

उत्खनन काल में टीले की ऊपरी सतह से केवल 2 3 फुट की गहराई से ककाल प्राप्त हुए जिनकी संख्या कुल 42 थी इनमें से 18 ककालों की जाँच निरीक्षण तथा अध्ययन के लिए भारतीय मानव शारीरीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा कलकत्ता ले जाया गया उनके अभिवेदन के अनुसार इन ककालों से सम्बन्धित लोगों को इण्डो आर्यन जाति का माना जा सकता है

कुम्हार टेकरी के पूर्वोक्त भागों की खुदाई में प्रमुख पुरातत्वीय अवशेषों में विभिन्न आकार के मृद्भाण्ड तथा शंख मणि खिलौने आदि प्राप्त हुए उपर्युक्त मानव ककालों के साथ सीपों के तथा अन्य प्रकार के मणि काफी मात्रा में मिले

इस टेकरी पर तथा उसकी ऊपरी सतहों में उज्जैन के हाथी और वैल्यक्ष चिह्नांकित ताँबे के ढले हुए सिक्के प्राप्त हुए हैं जिसके आधार पर यह कहा गया है कि यह ई पू दूसरी या उसके पूर्व के समय की है सम्भवतः यह श्मशान समीप के विहार के भिक्षु तथा भिक्षुणियों से ही सम्बन्धित था उज्जैन का महत्वपूर्ण उत्खनन भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा 1955 में श्री एन आर बनर्जी के निर्देशन में प्रारम्भ करवाया गया यह उत्खनन 1958 तक चलता रहा इन तीनों वर्ष उत्खनन का स्थल था क्षिप्रा तट पर स्थित गढकालिका टीला टीले के उत्खनन में कुल चार कालों से सम्बन्धित पुरातत्व की सामग्री प्रकाश में आयी जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है

प्रथम काल (750 ई.पू. से 500 ई.पू. तक)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से काले और लाल लाल रंग से पुते हुए तथा अनगढे मृद्भाण्डों के ठीकरे प्राप्त हुए लोहे का प्रयोग प्रारम्भ से ही दिखने में आता है मकान मिट्टी के बने पाये गये इस काल के उत्तरार्ध से सम्बन्धित एक चौकोर परकोटे के अवशेष भी मिले जो क्षिप्रा तट को छोड नगर को तीनों ओर से घेरे हुए था यह परकोटा आधार पर 75 मी चौड़ा था तथा इसकी ऊँचाई 13 मी थी इसके चारों ओर 24 मी चौड़ी खाई थी जो प्रतिरक्षा का कार्य सुदृढ करती थी इस परकोटे में कई द्वार लगाये गये तथा उन्हें सुरक्षित गया नगर में प्रवेश का प्रमुख द्वार नगर पश्चिम की ओर था जहाँ कई लड़कों के अवशेष प्राप्त हुए हैं

द्वितीय काल (500 ई.पू. से 200 ई.पू. तक)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्रथम काल में प्राप्त मृद्भाण्डों के अतिरिक्त काले आबदार उत्तरी भाण्डों के ठीकरे प्राप्त हुए काले आबदार उत्तरी भाण्डों की संख्या अत्यधिक होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि ये स्थानीय स्तर पर ही तैयार किये जाते थे अधिक संख्या में लड़कों के बने बाणाग्र भी इस स्तर से प्राप्त हुए हैं अन्य वस्तुओं में सिक्के, उत्कीर्ण मुद्रा लाल के बने बाणाग्र तथा सुलाय और मिट्टी तांबे तथा मूल्यवान पत्थरों के बने विभिन्न प्रकार के आभूषण महत्वपूर्ण हैं यह निर्माणपरक काल प्रतीत होता है जिसमें पक्की तथा कच्ची ईंटों के अनेक भवन आदि बनाये गये जिनके अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं पक्की ईंटों का बना 10 मी × 8 मी के एक तालाब के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं पक्की ईंटों से बने एक नहर के अवशेष भी 56 मी की दूरी तक प्राप्त हुए हैं पत्थरों के मनके बाणाग्र आदि बनाने के एक कारखाने के अवशेष भी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुए हैं

तृतीय काल (200 ई.पू. से 1300 ईसवी तक—शुंग काल से परमार काल तक)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के तथा मिट्टी की प्रतिमाएँ अधिक मात्रा में प्राप्त हुई हैं कुषाण काल से सम्बन्धित मिट्टी की बनी स्त्री प्रतिमा उल्लेखनीय है मूल्यवान पत्थरों के मनके बनाये जाना इस काल का एक प्रमुख उद्योग प्रतीत होता है यहाँ उल्लेखनीय है कि पेरिप्लस ऑफ दी एरिथ्रीयन सी नामक पुस्तक में उज्जैन के मूल्यवान पत्थरों के बने हुए वस्तुओं के एक प्रमुख व्यापार केन्द्र के रूप में होने का उल्लेख आया है

इस काल से सम्बन्धित स्तर से कच्चे मकानों के अवशेष मिले हैं इनके अतिरिक्त पक्के कुएँ शावकभाण्ड तथा नालियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं सार्वजनिक प्रयोग में लाये गये एक चूल्हे के अवशेष भी मिले हैं

चतुर्थ काल (14वीं शताब्दी ईसवी—परमार काल के अन्त में मुस्लिम काल के प्रारम्भ तक)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से 14वीं शताब्दी ईसवी के सिक्के चमकीले मृद्भाण्डों के ठीकरे तथा अन्य ठीकरे ईंट तथा पत्थर के बने भवनों के अवशेष आदि प्राप्त हुए हैं लगता है इस काल के निवासी केवल थोड़े समय के लिए यहाँ रहे तथा इसके बाद इसे छोड़कर चले गये

केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा 1964 65 में उज्जैन में फिर से एक लघु उत्खनन करवाया गया श्री के एन श्रीवास्तव के निर्देशन में किये गये इस उत्खनन का

प्रमुख उद्देश्य था–कार्बन-14 की विधि के द्वारा तिथि निर्धारण करने के लिए उज्जैन के विभिन्न कालो से सम्बन्धित स्तरों से सामग्री एकत्रित करना इस उत्खनन में द्वितीय काल से सम्बन्धित स्तर से एक चूने का बना पात्र प्राप्त हुआ, जिसका आकार 50 × 50 × 40 सेमी तथा जिसमें नलिकाएँ लगी थीं यह पात्र खण्डित अवस्था मे प्राप्त हुआ, अत. इसका उपयोग समझ में न आ सका

मध्य प्रदेश शासन के पुरातत्व विभाग को चौबीस-खम्भा द्वार के निकट एक लघु उत्खनन कर लगभग 11वीं शताब्दी मे बने एक मन्दिर के अवशेषों को निकालना पडा स्थानीय नगरपालिका द्वारा बनाये जा रहे एक सडक के निर्माण काल मे इस मन्दिर के अवशेष दिखने में आये प्राप्त अवशेषो से ज्ञात हुआ कि लगभग 15वीं शताब्दी ईसवी में इस मन्दिर के भग्नावशेषो को इसी स्थल पर बने एक मस्जिद मे उपयोग में लाया गया कुछ समय पश्चात् यह मस्जिद भी त्यागे जाने के कारण खण्डहरो में परिवर्तित हो गयी

एरण

सागर जिले में सागर नगर से 47 मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित एरण (प्राचीन ऐरिकिण) नामक स्थान पर सागर विश्वविद्यालय की ओर से प्रो कृष्णदत्त वाजपेयी के निर्देशन मे 1960-61 मे उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया गया यह कार्य पाँच वर्षों (1960-65) तक चलता रहा जिससे यहाँ के इतिहास पर नया प्रकाश पडा है

आधुनिक एरण ग्राम बीना (प्राचीन वेण्वा) नदी के दक्षिण तट पर उसके द्वारा तीनो ओर से घेरे हुए एक प्राचीन टीले पर बसा हुआ है प्राचीन ऐरिकिण नगर लगभग 1 मील × 1/4 मील के क्षेत्रफल पर बसा हुआ था नदी के क्षरण के कारण इस नगर के भग्नावशेष अब केवल कुछ टीलों के रूप मे ही रह गये हैं जिनमे सबसे बडा टीला 40 फुट ऊँचा है इन टीलों के उत्खनन द्वारा स्तरण प्रमाण तथा उपलब्ध सामग्रियो के आधार पर यहाँ पर बसे सभ्यता को निम्नलिखित चार कालों में विभाजित किया गया है–

प्रथम काल–(ताम्रपाषाण युग) 2000 ई पू से 700 ई पू तक

द्वितीय-(अ) काल–(पूर्व ऐतिहासिक) 700 ई पू से 200 ई पू तक

द्वितीय-(ब) काल–200 ई पू से 100 ई तक

तृतीय काल–प्रथम शताब्दी ईसवी से छठी शताब्दी ईसवी तक

चतुर्थ काल–मध्यकालीन से 1800 ईसवी तक

प्रथम काल

उत्खनित सामग्री के आधार पर इस काल को ताम्रपाषाण युग माना गया है अवशेषो मे लघुपाषाण औजार, 'काले और लाल' तथा चित्रित 'लाल-पर-काले मृद्भाण्ड, मिट्टी की मूर्तियाँ तथा विभिन्न पत्थरों एव मिट्टी की गुरियाँ प्राप्त हुई हैं कुछ भूरे रग के मृदपात्र भी मिले जो मोटे तथा पतले दोनों प्रकार के हैं मिट्टी की मूर्तियों में जानवरो की प्रतिमाएँ अधिक हैं ताँबे की आदिम कुल्हाडियों के टुकड़े, गोलाकार सोने का टुकड़ा, मिट्टी तथा शख की चूड़ियो के टुकडे भी प्राप्त हुए हैं समकालीन एक गोल चूल्हा भी मिला है, जिसके किनारे उठे हुए हैं तथा जिसकी फर्श पक्की है उत्खनन में नगर की प्राचीन रक्षा-दीवार मिली है, जो कडी मिट्टी की बनी है इसकी चौडाई 154 फुट तथा ऊँचाई 21 फुट है इसके दक्षिण में खाई बनायी गयी थी जो रक्षा कार्य को और मजबूत बनाती थी

द्वितीय-(अ) काल

इस काल मे ताँबे के स्थान पर लोहे का प्रयोग होने लगा था, जिसके कई टुकडे उत्खनन में प्राप्त हुए है ताम्रपाषाणयुगीन 'काले और लाल' भाण्ड इस काल में भी मिलते हैं, परन्तु बनावट के आकार-प्रकार में पूर्वकाल की अपेक्षा ये भिन्न हैं 'लाल-पर-काले' भाण्डों से मिलते-जुलते कुछ टुकडे इस युग के स्तर मे भी मिलते हैं परन्तु ताम्रपाषाणयुगीन विशेष प्रकार के भाण्डों का उपयोग इस युग में बन्द हो चुका था इस युग के उत्तरार्ध काल के स्तर से 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' के कुछ ठीकरे मिलते हैं इसी स्तर से कुछ आहत तथा कबीले सिक्के और सीसे का एक अर्धवृत्ताकार टुकडा (तौल 2·97 किलोग्राम) मिला है, जिस पर मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में एव पाली भाषा में 'रज्ञो ईदगुतस' लिखा है इस राजा का नाम अभी तक अज्ञात था इस काल के अवशेषो में कोई भी निर्मित भवन के अवशेष प्राप्त नहीं हुए, यद्यपि ईंट तथा पत्थरों के टुकडे अवश्य ही मिले है अन्य उल्लेखनीय वस्तुओ में मिट्टी की मूर्तियाँ तथा गुरियाँ, शख तथा चमकीले पत्थरो के आभूषण, बाँट आदि हैं

द्वितीय-(ब) काल

इस काल मे 'काले और लाल' मृद्भाण्डो का प्रयोग प्राय बन्द हो गया अधिकतर मृद्भाण्ड सादे लाल है तथा कुछ पर काले रग की चित्रकारी है इस काल से सम्बन्धित स्तर से 3268 आहत सिक्कों की एक निधि प्राप्त हुई जो लगभग दूसरी-पहली शताब्दी ई पू की है इनमें से अधिकतर सिक्के ताँबे के है तथा कुछ पर चाँदी की परत चढी है अन्य उल्लेखनीय वस्तुओं मे मिट्टी की बनी जानवर तथा मनुष्याकृतियाँ, लोहे के टुकडे, गुरियाँ, शख तथा चमकीले पत्थरों के आभूषण आदि है

तृतीय काल

इस काल मे पूर्वोक्त दोनो समयो जैसे मृद्भाण्ड नहीं मिलते उनके स्थान पर लाल पॉलिश युक्त मृद्भाण्ड मिले है जिनमें कुछ पर काले रग से खडी रेखाएँ चित्रित है

पक्की ईंटो का प्रयोग इस काल मे अधिक हुआ ईंटों के मकान छोटे आकार के है तथा उनकी निर्माण कला बहुत साधारण है इस काल की प्राप्त अन्य वस्तुओं में चाँदी और ताँबे के सिक्के, मिट्टी शख तथा पत्थरों के मनके, शख की चूड़ियाँ लोहे तथा हड्डियो की वस्तुए, मिट्टी की बनी पशु तथा मनुष्य मूर्तियाँ तथा कुछ पत्थर के अवशेष है सिक्को मे क्षत्रप, नाग, गुप्त सम्राट् रामगुप्त तथा हिन्द सासानी सिक्के उपलब्ध हुए है हूण शासक तोरमाण की भी मुद्राएँ मिली है पश्चिमी शक क्षत्रप राजा की मुद्रा बनाने के लिए प्रयुक्त पक्की मिट्टी के साँचे का एक टुकड़ा भी मिला है इस पर सिक्के के आमने-सामने वाले दोनों भाग डाले जाते थे इस काल की प्राप्त एक अन्य मिट्टी की मुद्रा के ऊपरी भाग में गजलक्ष्मी का चित्र बना है तथा निम्न भाग में ब्राह्मी लिपि में 'ऐरिकिणे गोमिक विष (या) धिकर (णस्यु) उत्कीर्ण है एक ताँबे के टुकडे पर कीर्तिमुख अकित है एक अन्य मिट्टी की मुद्रा पर गुप्त लिपि में 'महादण्डनायक सिहनन्दि' उत्कीर्ण है

चतुर्थ काल

एरण के उत्खनन में उत्तर-मध्यकाल की कुछ वस्तुए भी मिली है, जिनका समय 16वी से 18वीं शताब्दी तक ठहरता है सम्भवत इसी काल मे पत्थर की एक नगर दीवार का निर्माण हुआ जिसके अवशेष आज भी देखे जा सकते है

कसरावद (1936-39)

पश्चिम निमाड जिले में कसरावद नगर के दक्षिण में तीन मील की दूरी पर तथा महेश्वर से 6 मील दूर नर्मदा के तट पर स्थित इतवर्डी नामक टीला है 1936 में नर्मदा वैली रिसर्च बोर्ड के सचिव श्री व्ही आर करन्दिकर द्वारा इस टीले का उत्खनन प्रारम्भ करवाया गया उनके आकस्मिक निधन के कारण इस उत्खनन को इदौर सग्रहालय के क्यूरेटर श्री व्ही एन सिह द्वारा जारी रख अगले दो वर्षों में पूरा किया गया उत्खनन में प्राप्त सामग्री को इन्दौर सग्रहालय मे ले जाया गया जहाँ वे आज भी सुरक्षित है

उत्खनन में प्राप्त सामग्री के आधार पर यहाँ के अवशेषो को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है

1. बौद्ध स्तूप तथा निवास गृह
2. मृद्भाण्ड तथा मिट्टी की बनी अन्य वस्तुएँ
3. धातु की बनी वस्तुएँ
4. सिक्के
5. पत्थर की बनी वस्तुएँ
6. शिलालेख
7. विविध वस्तुएँ

इनका सक्षिप्त वर्णन निम्नानुसार है–

(1) **बौद्ध स्तूप तथा निवास गृह**–यहाँ के उत्खनन मे कुल मिलाकर ग्यारह स्तूपो के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनमें से एक स्तूप टीले के केन्द्र में तथा अन्य दस टीले के पूर्वी भाग मे स्थित पाये गये एक को छोड सभी स्तूप वृहदाकार पकी ईंटों के बनाये गये थे बनावट मे ये साधारण स्तूपो के समान ही पाये गये है

मुख्य स्तूप के उत्तर-पूर्व की ओर स्थित एक कुण्ड के आकार की बनावट मिली यह किस काम मे लाया जाता होगा, यह ज्ञात नही

उत्खनन मे टीले के पश्चिम खण्ड मे कुछ भवनों की नीवे प्राप्त हुई हैं मुख्य स्तूप के उत्तर की ओर 75 फुट लम्बे 20 फुट चौडे आकार के एक बडे कमरे के अवशेष प्राप्त हुए है सडको तथा नालियो की व्यवस्था पर भी कुछ प्रकाश पडा है टीले के अन्य भागो मे भी भवनो के कुछ अवशेष मिले है ये सभी वृहदाकार ईंटो के बने थे मकानों की छत पर लगाये गये टाइलो के भी अवशेष प्राप्त हुए है

(2) **मृद्भाण्ड तथा मिट्टी की बनी अन्य वस्तुएँ**–यहाँ के उत्खनन मे विभिन्न आकार तथा प्रकार के मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है इनमे से कुछ चमकीले, लाल काले तथा पीले है कुछ ठीकरो पर ब्राह्मी लिपि मे लेख उत्कीर्ण हैं ठीकरे इतने अधिक खण्डित है कि किन्हीं भी दो टुकडों को जोडकर किसी लेख को पूरा कर पढ सकना असम्भव है अक्षरो की बनावट तीसरी-दूसरी शताब्दी ई पू के बेसनगर अभिलेख तथा भारहुत स्तूप के अभिलेखों से मिलती जुलती है लेखो की भाषा प्राकृत है तथा अधिकतर व्यक्तियो के नाम उत्कीर्ण है कुछ ठीकरो पर स्वास्तिक फूल, पत्ते मछली, मुर्गे, ज्यामितिक आकार आदि बने है

मिट्टी की बनी अन्य वस्तुओ मे दो वृहदाकार भाण्ड 39 गोलाकार वस्तुएँ तिकोनी ईंटें गोलाकार छिद्रयुक्त वस्तुए, मनके आदि प्राप्त हुए है यहाँ उल्लेखनीय है कि उत्खनन में मिट्टी की बनी मनुष्य तथा पशु आकृतियों तथा खिलौनों का जो समकालीन युग के प्राय सभी उत्खननों मे प्राप्त हुई है, सम्पूर्ण अभाव है

(3) **धातु की बनी वस्तुएँ**-उत्खनन मे प्राप्त धातु की बनी वस्तुओ मे स्वर्ण का एक छोटा आभूषण, चाँदी के 29 आहत तथा ताँबे के 26 अन्य सिक्के, ताँबे की बनी एक छोटी मजूषा लोहे की कीलें आदि महत्वपूर्ण है

(4) **सिक्के**–जैसाकि ऊपर कहा गया है इस उत्खनन मे चाँदी के 29 तथा ताँबे के 126 सिक्के प्राप्त हुए है जिनका विभाजन निम्नलिखित प्रकार किया गया है

(क) आहत सिक्के 29 चाँदी के चौकोर

(ख) आहत सिक्के 10 ताँबे के चौकोर

(ग) ढले हुए सिक्के, 16 ताँबे के

(घ) उज्जयिनी चिह्नाकित सिक्के, 100 ताँबे के

इन सिक्को के अतिरिक्त एक ताँबे का चौकोर टुकडा तथा कोडियाँ भी मिली है

(5) **पत्थर की बनी वस्तुएँ**–पत्थर की बनी वस्तुओं मे नरम पत्थर की बनी मजुषा, तीन गेंदनुमा वस्तुएं तथा अन्य विविध वस्तुएँ महत्वपूर्ण है

(6) **शिलालेख**–स्तूप क्रमाक 2 के निकट एक गोलाकार शिलालेख प्राप्त हुआ आठ पंक्तियों का यह शिलालेख दूसरी शताब्दी ई पू. की लिपि में लिखा गया था, परन्तु अब यह लेख केवल कुछ अक्षरों को छोडकर पूर्ण रूप से मिट चुका है

(7) **विविध वस्तुएँ**–विविध वस्तुओं मे दो मृद्भाण्डो मे सरक्षित हड्डियाँ, दो हाथीदाँत के टुकडे, चार काँच के मनके तथा लगभग 1 दर्जन शंख महत्वपूर्ण है

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि कसरावद के उत्खनन में प्राप्त वस्तुएँ केवल दूसरी शताब्दी ई पू से सम्बन्धित हैं इसके बाद की कोई भी वस्तु उत्खनन में प्राप्त नहीं हुई ऐसा लगता है कि दूसरी शताब्दी ई.पू के बाद यह स्थान उजाड़ हो गया तथा सम्भवत. यहाँ के निवासी बौद्ध भिक्षु निकटस्थ बाघ गुफा में चले गये

कायथा (1965-66 से 1967-68)

उज्जैन से 15 मील पूर्व की ओर छोटी काली सिन्ध नदी पर स्थित कायथा (प्राचीन कापिथ्य) नामक ग्राम है जो वराहमिहिर की जन्मभूमि होने के नाते विख्यात है 1965-66 मे विक्रम विश्वविद्यालय के पुरातत्व एव सग्रहालय विभाग की ओर से श्री वि. श्री वाकणकर के निर्देशन में यहाँ उत्खनन का कार्य प्रारम्भ करवाया गया जो तीन वर्षों तक चला तीसरे वर्ष डेकन कॉलेज रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, के द्वारा भी इस उत्खनन मे योगदान दिया गया कायथा के उत्खनन ने इस क्षेत्र की ताम्र-पाषाणयुगीन सभ्यता के इतिहास में एक नया मोड दिया है, जिससे मालवा के प्राचीन इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पडा है

कायथा उत्खनन मे प्राप्त सामग्री के आधार पर यहाँ पर विभिन्न काल में स्थित सभ्यताओं को निम्नलिखित दस काल-खण्डों में विभाजित किया गया है

प्रथम काल–2200 ई पू से 2000 ई पू
द्वितीय काल–1900 ई पू से 1600 ई.पू
तृतीय काल–1750 ई पू से 1300 ई पू
चतुर्थ काल–छठी शताब्दी ई पू से दूसरी शताब्दी ई पू
पंचम् काल–शुग-कुषाण युग
षष्ठम् काल–गुप्त तथा गुप्तोत्तर युग
सप्तम् काल–परमार युग
अष्टम् युग–मुस्लिम युग
नवम् युग–मराठा युग
दशम् काल–आधुनिक युग

प्रथम काल (2200 ई.पू. से 2000 ई.पू.)

श्री वी श्री वाकणकर ने इस सभ्यता को 'कायथा सभ्यता' के नाम से पुकारा है इसका कारण यह है कि इस काल के अवशेष अपनी एक विशिष्टता रखते हैं तथा अभी तक मनोटी को छोड़कर अन्य किसी भी उत्खनन में ऐसे अवशेष नहीं मिले हैं सबसे महत्वपूर्ण दो उपलब्धियाँ है एक तो मिट्टी के विविध भाण्ड तथा दूसरे ताम्र या कास्य के अनेक उपकरण उत्खनन मे प्राप्त मृद्भाण्डों की विशेषता यह है कि बनावट तथा आकार मे कुछ अशों तक ये हडप्पीय भाण्डों से साम्य रखते है, परन्तु यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्डो पर उपलब्ध अलकरण, चित्रण तथा लेपन हडप्पीय भाण्डों से भिन्न हैं चित्रण अधिकतर ज्यामितिक आकार के हैं लेपों मे गहरा लालिया-काला, लाल, गहरा बैंगनी तथा हल्का लाल रग काम मे लाया गया है, जबकि चित्रण के लिये लाल, सफेद, गहरा लाल व काला रग काम में लाया गया है कुछ मृद्भाण्डो पर पकाने के पूर्व एव पश्चात् विशिष्ट चिह्न अकित किये जाते थे जिनका साम्य अवश्य ही हड़प्पीय लिपि से है

उत्खनन मे अनेक ताम्र उपकरण प्राप्त हुए है जिनमे 29 ककण, 1 छेनी तथा 2 कुल्हाडियाँ हैं कुल्हाड़ियाँ अन्य स्थानो से प्राप्त कुल्हाडियो से भिन्न है तथा ढली हुई हैं ये आकार में सुन्दर वजन में भारी तथा बिन्दु-चिह्नाकित है प्राचीन ताम्रोपकरण मे मालवा में यह सबसे बडा सग्रह होगा इनके अतिरिक्त अकीक की दो मालाए तथा 70 हजार के लगभग स्टीएटाइट की मणियाँ भाण्ड में रखी पायी हैं मालाएँ मोहनजोदडो के समान हैं, जिनमे अकीक स्फटिक तथा स्टिएटाइट काम मे लायी गयी है इनके अतिरिक्त इस काल से सम्बन्धित स्तर से स्फटिक व चकमक पत्थर के लघुपाषाण औजार भी प्राप्त हुए हैं यहाँ के निवासियों की विकसित सभ्यता को देखकर ऐसा लगता है कि ये लोग किसी अन्य क्षेत्र से पर्याप्त विकसित सभ्यता को लेकर यहाँ आये थे रेडियो-कार्बन की विधि से इस सभ्यता का काल 2200 ई पू से 2000 ई पू तक आँका गया है

द्वितीय काल (1900 ई.पू. से 1600 ई.पू.)

प्रथम काल के अन्त से दूसरे काल के प्रारम्भ के बीच लगभग 100 वर्ष का अन्तर प्रतीत होता है इस अन्तर काल के सम्बन्ध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त सामग्री प्रथम काल की सामग्री से भिन्न है तथा ये राजस्थान मे पाये गये 'आहाड' सभ्यता से साम्य रखते हैं इस काल के भाण्ड पर सफेद अथवा गुलाबी रग से चित्रकारी की गयी है ऐसे भाण्ड लोथल के उत्खनन में हडप्पीय भाण्डों के साथ, मनोटी के उत्खनन में 'मनोटी-भाण्डो' के साथ व उनसे स्वतन्त्र, आवरा के उत्खनन में स्वतन्त्र तथा नागदा महेश्वर नावडाटोली एव एरण के उत्खननो मे 'मालवा-भाण्डों' के साथ उपलब्ध हुए

है यहाँ उनका अस्तित्व 'कायथा-भाण्डों' के पश्चात् तथा मालवा भाण्डो' के पूर्व पाया गया है अन्य सामग्री में लघुपाषाण औजार, ताँबा व मिट्टी के बने पशु तथा मनुष्याकृतियाँ हैं इस स्तर से एक हड़प्पीय मुहर के प्राप्त होने की भी सूचना मिली है रेडियो-कार्बन की तिथि से इस सभ्यता का काल 1900 ई पू. से 1600 ई पू के बीच स्वीकार किया गया है

तृतीय काल (1750 ई.पू. से 1300 ई.पू.)

इस युग मे भौतिक सभ्यता के उपकरण अधिक उन्नत हुए मिट्टी की बनी हुई विविध मानवाकृतियाँ तथा पशु आकृतियाँ इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुई हैं यहाँ के निवासी मिट्टी से बनाये गये घरों में रहते थे, जिनके जले हुए अवशेष उत्खनन मे प्राप्त हुए हैं इन तथ्यों से स्पष्ट है कि तत्कालीन युग के लोग सभ्यता की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती लोगो की अपेक्षा अधिक उन्नत हो गये थे

इस काल के लोग जो भाण्ड प्रयोग में लाते थे, उन्हें मालवा भाण्ड' कहते हैं इसी प्रकार इस काल की सभ्यता को 'मालवा-ताम्रपाषाण-सभ्यता' कहा जाता है भाण्डों में हल्के लाल रग के पात्रो पर गहरे काले रग से ज्यामितिक चित्र मिले हैं इनके अतिरिक्त हिरन, कुत्ते, बैल आदि के रेखात्मक चित्र भी मिले हैं इस काल में पर्याप्त मात्रा में गेहूँ होता था उत्खनन मे प्राप्त जले हुए चावल के अवशेष से ज्ञात होता है कि चावल का ज्ञान भी इन लोगो को था मासाहार भी प्रचलित था ये लोग मातृदेवी की उपासना के साथ अग्निपूजा भी करते थे ताम्र प्रयोग के साथ ये लोग लघुपाषाण औजार भी काम मे लाते थे. यह सभ्यता प्रादेशिक परिवर्तन के साथ सम्पूर्ण मालवा, चेदि, विदर्भ व महाराष्ट्र में फैली हुई थी रेडियो-कार्बन की विधि से इस सभ्यता का काल 1750 ई पू से 1300 ई पू के बीच स्वीकार किया गया है

चतुर्थ काल (छठी शताब्दी ई.पू. से दूसरी शताब्दी ई.पू)

तृतीय काल के अन्त से चतुर्थ काल के प्रारम्भ के बीच लगभग 6-7 सौ वर्षों का मध्यान्तर प्रतीत होता है, जिसके सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं इस काल के निवासी लोहे का उपयोग करते थे तथा घरेलू उपयोग में चित्रित भूरे पात्र तथा 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' प्रयोग करते थे उत्खनन में प्राप्त सामग्री मे लोहे के उपकरण, ताँबे के आभूषण, हाथीदाँत की बनी मातृदेवी की प्रतिमाएँ, विभिन्न प्रकार के पत्थरों के बने मनके, मिट्टी के मनुष्य तथा पशु आकृतियाँ आदि प्रमुख है इस काल मे मातृदेवी की उपासना होती रही

पंचम् काल (शुंग-कुषाण युग)

यह काल शुग कुषाण युग से सम्बन्धित है इस काल के स्तर से शुगकालीन मिट्टी की विशिष्ट मनुष्याकृतियाँ प्राप्त हुई हैं इसके अतिरिक्त ढले हुए सिक्के भी मिले हैं जिनके एक ओर स्वास्तिक तथा दूसरी ओर चक्र अथवा मनुष्याकृति बनी है

षष्ठ काल (गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से पकी ईंटो के बने मकानों के अवशेष, चूल्हे आदि प्राप्त हुए है इसके अतिरिक्त गुप्त शैली में एक बुद्ध की प्रतिमा भी मिली है एक चक्की भी इस स्तर से प्राप्त हुई है

सप्तम् से दशम् काल (परमार, मुस्लिम, मराठा तथा आधुनिक काल)

इस स्थान पर परमार मुस्लिम, मराठा से आधुनिक काल तक बस्ती रही है, ऐसा प्रतीत होता है सभी कालों से सम्बन्धित कुछ न कुछ अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं परन्तु ये सामग्रियाँ इतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं कि कुछ नवीन ऐतिहासिक तथ्य प्रकाश में आ सके

ग्यारसपुर (1933)

ग्वालियर राज्य के पुरातत्व विभाग द्वारा हिडोला-तोरण के निकट मई 1933 मे उत्खनन करवाया गया उत्खनन का मुख्य उद्देश्य था उस मूल मन्दिर के आकार तथा प्रकार के बारे मे मत निश्चित करना जिसका यह तोरण एक अग था उत्खनन में मूल मन्दिर के आधार पर पता लग गया, जिससे यह ज्ञात हुआ कि पूर्व से पश्चिम की ओर इसकी लम्बाई 150 फुट तथा उत्तर से दक्षिण की ओर चौडाई 85 फुट थी मन्दिर मे एक गर्भगृह दो छज्जों से युक्त एक बडा कमरा तथा एक आँगन था जिसमें प्रवेश के लिए दो द्वार थे द्वारों को तोरणों से सुसज्जित किया गया तथा जो तोरण आज विद्यमान है, वह इन दोनों द्वारों में से दक्षिण की ओर बने प्रवेश द्वार पर लगा था गर्भगृह का शिखर आम्लशिलों से सुशोभित था तथा उसका मुख पूर्व की ओर था चार स्तम्भ जो आज विद्यमान हैं, वे बडे कमरे के केन्द्र भाग में लगे हुए थे मूल मन्दिर लगभग 8 फुट ऊँचे चबूतरे पर बना था यह वैष्णव मन्दिर था उत्खनन मे जो पुरावशेष प्राप्त हुए, उनमें खण्डित प्रतिमाएँ तथा अलकरण, दो लघु लेख तथा 10वीं शताब्दी ईसवी का एक बडा लेख मिला, जिसमे शिवगण, चामुण्डराज तथा महेन्द्रपाल का उल्लेख है उत्खनन मे केवल एक ताँबे का सिक्का मिला जो मालवा के शासक गयासुद्दीन तुगलक का था

नागदा (1955-56)

उज्जैन जिले के नागदा नामक स्थान पर चम्बल नदी के तट पर कई प्राचीन टीले स्थित हैं इनमें से एक टीले का उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा श्री एन आर बनर्जी के निर्देशन मे 1955-56 में करवाया गया

उत्खनन का मुख्य उद्देश्य था–मध्य भारतीय ताम्रपाषाण-युगीन सभ्यता के स्तरीय प्रमाण प्राप्त करना नब्बे फुट ऊँचे इस टीले के उत्खनन मे जो पुरावशेष प्राप्त हुए उन्हें तीन काल खण्डो मे विभाजित किया गया, जिनका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

प्रथम काल

इस काल से सम्बन्धित 22 फुट ऊँचे स्तर से कच्ची तथा पक्की ईंटों के बने भवन तथा दीवारो के अवशेष प्राप्त हुए इनमें एक दीवार दुर्ग की प्राचीर रही होगी, ऐसा प्रतीत होता है उत्खनन में जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए, उनमे लाल तथा मखनिया रग के भाण्ड थे, जिनके बाहरी भाग पर काले रग से विभिन्न प्रकार की चित्रकारी की गयी थी इनके अतिरिक्त कुछ धूसर तथा सादे भाण्डो के ठीकरे भी प्राप्त हुए. मृद्भाण्डों के अतिरिक्त कैल्सेडोनी, क्वार्ट्ज, कार्नेलियन आदि पत्थरो के बने विभिन्न प्रकार के लघुपाषाणस्त्र पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुए. इस काल के लोग ताँबे का उपयोग सीमित मात्रा मे करते थे मिट्टी के बने मनके, खिलौने तथा घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुए भी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुईं

द्वितीय काल

प्रथम काल से सम्बन्धित ही यह दूसरा काल था, परन्तु इस काल से सम्बन्धित स्तर से काले तथा मखनिया रग के भाण्ड के स्थान पर 'काले और लाल' भाण्डो के ठीकरे प्राप्त हुए इस काल में रचनात्मक काम प्रथम काल के समान ही चलता रहा तथा पक्की और कच्ची ईंटो के मकान आदि बनते रहे

तृतीय काल

इस काल मे भी पक्की तथा कच्ची ईंटों के भवन आदि बनते रहे इस काल से सम्बन्धित स्तर से जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए, उनमे काले ओपदार उत्तरी भाण्ड विभिन्न प्रकार के लाल भाण्ड तथा कणिकात्मक भाण्ड के ठीकरे प्रमुख है इसके अतिरिक्त घरेलू उपयोग की विभिन्न वस्तुए, वृहदाकार भाण्ड तथा साधारण उपयोग के भाण्ड प्राप्त हुए घरेलू उपयोग की वस्तुओं मे मिट्टी के बने मनके, खिलौने तथा चके, हाथीदाँत के बने लटकन तथा पिन हड्डी की बनी वस्तुएँ, ताँबे के बने आभूषण तथा लोहे की वस्तुएँ मिली इस काल से सम्बन्धित स्तर के ऊपरी भाग से प्राप्त एक ठीकरे पर उत्कीर्ण लगभग दूसरी शताब्दी ई पू के एक लेख से ज्ञात होता है कि यहाँ पर बसी इस सभ्यता का अन्त इस काल के पश्चात् हो गया

पवाया (1924-25, 1933-34, 1939-40, 1940-41)

ग्वालियर से दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग 40 मील की दूरी पर पद्म-पवाया अथवा पवाया नामक ग्राम है जो सिन्धु तथा पार्वती नदी के सगम पर बसा हुआ है आज के विद्वान् विशद चर्चा के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि यहीं प्राचीन पद्मावती नगरी का स्थल है, जो नाग शासको की तीन राजधानियों मे से एक थी. महाकवि भवभूति ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'मालती माधव' में इस नगरी की भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशा का सजीव एव विशद वर्णन किया है

पद्मावती प्रथम शताब्दी ईसवी से 11वीं शताब्दी ईसवी तक अत्यन्त समृद्ध नगरी थी, जिसके कुछ अवशेष आज भी प्राप्त हुए हैं इन अवशेषों में महत्वपूर्ण हैं–यक्ष मणिभद्र की प्रतिमा जिस पर शिवनन्दी के शासनकाल का लेख उत्कीर्ण है खण्डित ताड-स्तम्भ शीर्ष, गुप्तकालीन विष्णु मन्दिर के अवशेष प्रस्तर की विष्णु-प्रतिमा, मन्दिर के तोरण का अत्यन्त सुन्दर दृश्यों सहित प्रस्तर खण्ड, पीठ-से-पीठ लगाये दोनो और पुरुषाकृति का स्तम्भ-शीर्ष जो सम्भवत सूर्य-स्तम्भ था तथा अनेक मृण्मूर्तियाँ ये सभी अवशेष अब ग्वालियर सग्रहालय में सरक्षित हैं

पार्वती नदी के दोनों ओर ऊँचे टीले हैं, जिनमें पद्मावती नगरी के भग्नावशेष स्थित हैं इनमे से एक टीले का उत्खनन कार्य ग्वालियर राज्य के पुरातत्व विभाग द्वारा श्री मो-ब-गर्दे के निर्देशन में 1924-25, 1933-34, 1939-40 तथा 1940-41 के वर्षों में सम्पन्न किया गया यह टीला पार्वती नदी के उत्तर की ओर आधुनिक ग्राम से लगभग 1 मील की दूरी पर स्थित था उत्खनन किये गये टीले का आकार 200 × 200 × 30 फुट का था, जिसके चारों ओर प्रस्तर, प्राचीन मृद्भाण्डों के खण्ड आदि बिखरे हुए थे इन्हीं अवशेषों मे ताड़-स्तम्भ शीर्ष प्राप्त हुआ था टीले के उत्खनन मे एक मन्दिर के केवल आधार के अवशेष प्राप्त हुए यह आधार तीन विशाल चबूतरो के रूप मे था, जो एक के ऊपर एक निर्मित किये गये थे इनकी पूरी ऊँचाई 32 फुट के लगभग थी ईंटें आकार में 18 इच लम्बी 9 इच चौडी, 3 इच ऊँची थी ऐसा लगता है कि ईंटो पर मूलत चूने का पलस्तर किया गया था जिसके कुछ अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं इस मन्दिर का ऊपरी भाग कैसा बना होगा इसकी कल्पना करना कठिन है परन्तु इसी मन्दिर के पास लगभग 12 फुट लम्बा तोरण प्रस्तर प्राप्त हुआ है इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन चबूतरों के ऊपर कोई अत्यन्त मनोरम निर्माण था, जिसमें सम्भवत ईंट, लकडी आदि से गर्भगृह प्रदक्षिण-पथ आदि बने थे इस प्रकार के मन्दिर का उदाहरण केवल रामनगर (प्राचीन अहिच्छत्रा) के ईंटों के बने मन्दिर में ही मिल सकता है इस मन्दिर के पास एक विष्णु प्रतिमा मिली है जिससे यह परिणाम निकाला गया है कि वह विष्णु मदिर ही था इस मन्दिर के पास अधिक सख्या मे मृण्मूर्तियाँ मिली हैं सम्भवत इनका उपयोग मन्दिर की दीवारो को सजाने मे किया जाता होगा पास ही एक स्तम्भ-शीर्ष मिला है जिसमे दोनो ओर सूर्य की आकृति बनी हुई है यह स्तम्भ शीघ्र सम्भवत इसी मन्दिर के प्रागण में स्थित होगा

पसेवा (1957-58)

मन्दसौर जिले में स्थित इस स्थान पर मध्य प्रदेश शासन की ओर से स्व. डॉ मो ग दीक्षित के निर्देशन में 1957-58 में एक लघु उत्खनन करवाया गया उत्खनन में ईंटो की बनी कई दीवारों के अवशेष प्राप्त हुए विभिन्न आकार के अनेक मात्रा मे मृद्भाण्ड भी प्राप्त हुए इसके अतिरिक्त मिट्टी की बनी विभिन्न वस्तुएँ तथा शीशे के मनके मिले

पिपरिया (1968-69)

सतना जिले में पिपरिया नामक स्थान पर हाल ही में एक गुप्तकालीन मन्दिर के अवशेष खोज निकाले गये इस मन्दिर के आकार-प्रकार का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग द्वारा प्रो कृष्णदत्त वाजपेयी के निर्देशन में 1968-69 मे यहाँ उत्खनन करवाया गया उत्खनन से ज्ञात हुआ कि यहाँ एक विष्णु मन्दिर का निर्माण 5वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे किया गया था यह मन्दिर भूमरा मे स्थित उत्तरार्द्ध में किया गया था यह मन्दिर भूमरा मे स्थित गुप्त मन्दिर की शैली का था द्वार के खण्डित चौखट तथा मण्डप के स्तम्भों के खण्डित भागो पर उत्कृष्ट चित्रकारी देखी गयी कुछ प्रतिमाओं के खण्डित अवशेष भी प्राप्त हुए

बिलावली (1962-63)

देवास जिले मे देवास से तीन किमी उत्तर-पूर्व की ओर कालीसिन्ध नदी के दक्षिण तट पर स्थित एक टीले का लघु-उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा श्री वी के मिश्र के निर्देशन मे 1962-63 में करवाया गया उत्खनन मे निम्नलिखित काल से सम्बन्धित सामग्री प्रकाश में आयी है इन कालो की प्रमुख विशेषताएँ है–

प्रथम काल–इस काल के स्तर से मृद्भाण्डों मे काले और लाल तथा लाल रग से पोते गये भाण्ड प्राप्त हुए

द्वितीय काल–इस काल के स्तर से आहत सिक्के तथा मौर्यकालीन ओपदार पत्थर मिले

तृतीय काल–इस काल के स्तर से प्रथम शताब्दी इसवी के लगभग के मृद्भाण्ड तथा अन्य सामग्री प्राप्त हुई

चतुर्थ काल–चतुर्थ काल के स्तर पूर्व मध्यकालीन सामग्री प्राप्त हुई

बेसनगर (1910, 1913-14, 1914-15, 1963-66)

मध्य प्रदेश के प्राचीन नगरो मे विदिशा का नाम उल्लेखनीय है प्राचीन बौद्ध जैन तथा ब्राह्मण ग्रन्थों मे इसके अनेक उल्लेख आये है यहाँ से पुरातत्व की सामग्री भी प्रचुर मात्रा मे प्राप्त हुई है इस नगर की प्राचीन महत्ता को देखते हुए यहाँ कई बार पुरातत्वीय उत्खनन किये गये

बेसनगर का सर्वप्रथम उत्खनन श्री एच एच लेक के नेतृत्व में 1910 ई मे किया गया उत्खनन का स्थल खामबाबा का निकटवर्ती भाग था जहाँ के टीलो को खुदवाया गया यह उत्खनन अवैज्ञानिक ढग से किया गया अत इससे कोई विशेष उपलब्धि नही हो सकी इस उत्खनन का वर्णन जर्नल ऑफ दी बाम्बे एशियाटिक सोसायटी के भाग 23 पे 115-46 मे प्रकाशित किया गया

अगले तीन वर्षों तक यहाँ कोई और उत्खनन नही किया गया वैज्ञानिक ढग का सर्वप्रथम उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा 1913-14 मे श्री डी आर भण्डारकर के निर्देशन मे करवाया गया यह कार्य 1914-15 मे पूरा हुआ 1913-14 के उत्खनन का मुख्य उद्देश्य हेलियोडोर स्तम्भ मे उल्लिखित वासुदेव के मन्दिर के भग्नावशेषो को खोज निकालना था अत हेलियोदोर स्तम्भ के निकट खदानें ली गयी उत्खनन मे एक चबूतरे के अवशेष प्राप्त हुए इस चबूतरे पर वासुदेव का मन्दिर तथा हेलियोदोर स्तम्भ स्थापित किये गये थे चबूतरे के दक्षिण की ओर निकट ही एक भवन की नीव मिली यह भवन सम्भवत वासुदेव के मन्दिर की देखरेख करने वाले पुजारी आदि के लिए बनाया गया होगा मकान तथा मन्दिर को घेरे हुए एक अनोखे प्रकार की प्रस्तर वेदिका थी ऐसी वेदिका भारत के अन्य किसी भी स्थान से प्राप्त नही हुई 66 फुट लम्बी एक अन्य दीवार के अवशेष भी इस वर्ष के उत्खनन मे मिले हेलियोदोर के निकटवर्ती क्षेत्र के अतिरिक्त गणेशपुरा मे भी खदान लगायी गयी परन्तु वहाँ कोई उल्लेखनीय भवन के अवशेष प्राप्त नही हुए

1914-15 के उत्खनन मे मौर्य अथवा पूर्व मौर्य काल की नहर के अवशेष प्राप्त हुए जो सम्भवत बेस नदी से जोडी गयी थी बेसनगर से उदयगिरि जाने वाले मार्ग पर स्थित एक अन्य टीले का उत्खनन भी इस वर्ष किया गया उत्खनन मे कुछ कुण्ड तथा बडे कमरों के अवशेष मिले कमरों से अथवा निकट से 26 उत्कीर्ण मृद मुद्राकन प्राप्त हुए मौर्यकालीन एक बौद्ध स्तूप के अवशेष भी प्राप्त हुए

इन दोनो वर्षों के उत्खननों मे महत्वपूर्ण पुरावशेष थे–मिट्टी के बने मनुष्य तथा पशु पक्षी की आकृतियाँ और खिलौने शख तथा हाथीदाँत की बनी चूडियाँ, लोहे ताँबे तथा काँसे की बनी घरेलू उपयोग की वस्तुएँ तथा आभूषण मौर्य युग तथा गुप्तकालीन मृद्भाण्डो के ठीकरे पत्थर की बनी मजूषा तथा मनके और लोहे के बने अस्त्र इनके अतिरिक्त महत्वपूर्ण सिक्के भी मिले 1913-14 के उत्खनन मे हेलियोदोर स्तम्भ के निकट उत्खनन मे 68 सिक्के मिले जिनमे 49 आहत, 5 क्षत्रप 5 नाग 1 सात वाहन 1 अस्पष्ट तथा 7 कलचुरि थे गणेशपुरा के निकट टीले के उत्खनन से 32 आहत सिक्के मिले 1914-15 के उत्खनन मे 66 सिक्के मिले जिनमे 56 आहत तथा शेष क्षत्रप नाग और विविध सिक्के थे बेसनगर से उदयगिरि जाने वाले मार्ग पर स्थित टीले के उत्खनन से प्राप्त 26 मृदमुद्राकना मे से 2 शासको के 3 अधिकारियों के तथा अन्य व्यक्तिगत थे

बेसनगर का फिर से उत्खनन 1963 मे केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा प्रारम्भ करवाया गया श्री एम डी खरे के निर्देशन में यह कार्य 1966 तक चलता रहा

प्रथम वर्ष (1963-64) में उत्खनन के लिए तीन स्थानों पर खदाने ली गयी प्रथम खदान (बी एस एन -1) बेतवा तथा बेस नदियो के संगम पर ली गयी दूसरी खदान (बी एस एन -2) विदिशा से अशोकनगर जाने वाले मार्ग के किनारे ली गयी इसी प्रकार तीसरी खदान (बी एस एन -3) हेलियोदोर स्तम्भ के क्षेत्र में ली गयी अगले वर्ष चौथी खदान (बी एस एन -4) भी ली गयी वहाँ ताम्रपाषाणयुगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए

उत्खनन मे बेतवा तथा बेस नदियो के सगम वाला क्षेत्र सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ यहाँ छ युगों की सभ्यता प्रकाश में आई, जिनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

प्रथम काल (ताम्रपाषाण युग)

1963-64 के उत्खनन मे बी एस एन -1 के खदान में इस काल से सम्बन्धित स्तर से 'काले और लाल', काले तथा कुछ सादे मृद्भाण्ड प्राप्त हुए इनके अतिरिक्त जानवरों की हड्डियाँ तथा लोहे की वस्तुएँ भी मिलीं 1964-65 के उत्खनन में बी एस एन –1 तथा बी एस एन – 4 के खदानो के उत्खननों से यह बात प्रमाणित हो गयी है कि विदिशा का प्रथम काल ताम्रपाषाणयुगीन सभ्यता का था उत्खनन मे इस काल से सम्बन्धित 'लाल पर काले' 'लाल और काले' तथा कुछ भूरे मृद्भाण्डो के ठीकरो के अतिरिक्त लघु पाषाणस्त्र, मिट्टी के मनके आदि प्राप्त हुए

द्वितीय काल

इस काल के स्तर से काले ओपदार उत्तरी भाण्ड का मिलना प्रारम्भ हो जाता है प्रथम काल से सम्बन्धित 'लाल और काले' 'लाल पर काले' तथा लाल मृद्भाण्डो के ठीकरे भी मिलते हैं, परन्तु उनकी सख्या बहुत कम है इनके अतिरिक्त ताँबे तथा लोहे की विभिन्न वस्तुएँ, मिट्टी के मनके, हड्डी की बनी वस्तुएँ, पकी मिट्टी के बने दान-सर, पत्थर के सिलबट्टे तथा पंचमार्क सिक्के प्राप्त हुए हैं इस काल का अन्त किसी सघर्ष के पश्चात् हुआ प्रतीत होता है, जैसाकि जले हुए अवशेषो के प्रमाण के लगातार मिलने से ज्ञात होता है

एक मजबूत नगर-रक्षा दीवार और उसके भीतर निर्मित एक दूसरी दीवार के अवशेष भी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुए हैं कुछ वलयकूप के अवशेष भी मिले हैं

तृतीय काल (शुंग-सातवाहन युग)

इस काल के स्तर से प्राप्त मृद्भाण्डो में सादे लाल, लाल और काले, तथा केओलिन के भाण्ड प्रमुख हैं अन्य प्राप्त वस्तुओं में सगमरमर की वस्तुएँ, शख की चूडियाँ, मिट्टी तथा पत्थर के मनके पत्थर के सिलबट्टे, ओपयुक्त हड्डी के उपकरण तथा आहत सिक्के है एक पत्थर की मुहर भी प्राप्त हुई है जिस पर प्रथम शताब्दी ई पू की ब्राह्मी लिपि में निकुम्भ नागस्य लेख अकित है सम्भवत इस प्रकार की मुद्रा निकुम्भ नामक देवता के मन्दिर के प्रसाद के रूप में प्रयोग में लायी जाती होगी

चतुर्थ काल (नाग-कुषाण युग)

इस काल के स्तर से प्राप्त वस्तुओं में लाल मृद्भाण्ड जिनमे कुछ काले रग से चित्रित है मिट्टी के बने मनके कान के आभूषण, खेलने की मुहरें, दान-स्तर आदि प्रमुख हैं उत्खनन मे ताँबे के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं जिनमें अनेक सिक्के नाग शासकों के हैं इन सिक्कों पर एक ओर शिव का वाहन नन्दी दिखलाया गया है तथा दूसरी ओर नाग शासक का नाम महाराज उपाधि के साथ दिया हुआ है

पंचम् काल (गुप्त युग)

इस काल में मृद्भाण्डो की पुरानी परम्परा चलती रही यद्यपि उसमे कमी आ गयी इस युग मे प्रचलित नये प्रकार के मृद्भाण्डों पर उत्कर्णित तथा ठप्पे लगे अलकरण मिलने लगे जो काफी सख्या मे प्राप्त हुए हैं इनके अतिरिक्त मिट्टी की बनी मानव तथा पशु प्रतिमाएँ, बर्तनो को अलकृत करने वाले मिट्टी के ठप्पे तथा मिट्टी और शख की बनी चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं ईंट का एक गोल चबूतरा भी मिला जो सम्भवत धार्मिक कार्यों के लिए उपयोग मे लाया जाता था इस काल के पश्चात् कुछ शताब्दियो तक यह स्थान उजडा रहा

षष्ठ काल (पूर्व-मध्य युग)

इस काल की वस्तुएँ पूर्व-मध्ययुगीन हैं उत्खनन मे कुछ दीवारों के अवशेष मिले हैं जो लगभग आधे दर्जन हड्डियों से पूर्ण घेरे हुए है इनके अतिरिक्त एक ताँबे का सिक्का, एक खण्डित प्रतिमा, मिट्टी के मनके, गोलाकार तौल तथा चित्रित धूसर और सादे लाल मृद्भाण्डो के ठीकरे प्राप्त हुए हैं

बी एस एन –2 की खदान विदिशा-अशोक नगर सड़क पर सडक की दाहिनी ओर खोदी गयी इस खदान मे प्रथम काल से पचम काल तक सम्बन्धित स्तरो से प्राप्त वस्तुएँ बी एस एन –1 के उन्हीं कालो के स्तरों से प्राप्त सामग्री से आकार तथा प्रकार में मिलती-जुलती है यहाँ गुप्तोत्तर काल की कोई सामग्री प्राप्त नहीं हुई

बी एस एन –3 की खदान हेलियोदोर स्तम्भ के निकट ली गयी इसमें तीनों वर्ष उत्खनन किया गया जिससे यहाँ पर स्थित प्राचीन विष्णु मन्दिर तथा गरुड-शीर्ष स्तम्भ पर अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश पडा है तीन वर्ष के उत्खनन से इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया कि इस मन्दिर का मूलत निर्माण मौर्ययुग में किया गया होगा मन्दिर का निचला भाग दीर्घवृत्ताकार मिला है इस प्रकार का स्थापत्य पाश्चि

भारतीय स्थापत्य के इतिहास में अनूठा है इस मन्दिर का पुनर्निर्माण युग युग में हुआ तथा इसके चारो ओर प्रदक्षिण-पथ बनाया गया प्रारम्भिक मन्दिर के ऊपरी भाग में लकडी की शहतीरो का उपयोग किया गया था शुंगकाल मे इस मन्दिर की ख्याति सुनकर तक्षशिला के यवनराज अन्त-लिकित के राजदूत हेलियोदोर ने मन्दिर के सामने प्रसिद्ध गरुड-ध्वज का निर्माण कराया मन्दिर क्षेत्र मे आठ गोलाकार गर्त मिले हैं जिनमें सम्भवत दोनों किनारो के स्तम्भों पर उसी प्रकार के गरुड-शीर्ष लगे थे जिस प्रकार का शीर्ष हेलियोदोर के स्तम्भ पर था कुछ स्तम्भों पर उत्कीर्ण लेख भी होंगे. इस स्थल के उत्खनन मे मिट्टी के विविध भाण्ड तथा आहत सिक्के भी प्राप्त हुए हैं

मन्दिर के उपयोग के बन्द होने के समय से 19वी शताब्दी तक यह क्षेत्र उजडा रहा तत्पश्चात् आज तक यह क्षेत्र फिर से आबाद रहा है

मन्दसौर (1922-23)

केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा 1922-23 मे मन्दसौर (प्राचीन दशपुर) के निकट सौधनी गाँव मे स्थित यशोधर्मन के स्तम्भ के निकट परीक्षण उत्खनन करवाया गया उत्खनन का उद्देश्य स्थानीय स्मारको का सरक्षण तथा और भी पुरावशेष प्राप्त करना था भूमि पर पडे यशोधर्मनकालीन स्तम्भों के निकट किये उत्खनन से ज्ञात हुआ कि स्तम्भ आज भी अपने मूल स्थान पर ही पडे हैं स्तम्भों की नींव भूमि की आधुनिक सतह से केवल डेढ फीट नीचे ही मिल गयी. स्तम्भ के सिह-शीर्ष के निकट उत्खनन में एक द्विमुखी पुरुष का सिर प्राप्त हुआ जो सम्भवत. स्तम्भ के ऊपर लगा हुआ था

यशोधर्मनकालीन स्तम्भ के नींव के लगभग 75 फुट पश्चिम की ओर स्थित एक टीले का उत्खनन भी किया गया उत्खनन मे ईंटों के बने एक वृहदाकार भवन के अवशेष मिले निकट ही एक वृहदाकार शिवलिंग की प्राप्ति से अन्दाज लगाया गया कि वह एक शिव मन्दिर रहा होगा मनुष्याकार के द्वारपालो की दो प्रतिमाएँ जो निकट ही प्राप्त हुई सम्भवत इस मन्दिर के द्वार पर लगी होंगी सम्भवत. यह शिव मन्दिर भी यशोधर्मन द्वारा ही बनाया गया होगा

सौधनी के निकट खिलचीपुर ग्राम में एक तोरण स्तम्भ प्राप्त हुआ जो भूमि में आधा गडा हुआ था इस लेख की कला से यह 5वीं-6वीं सदी ईसवी का प्रतीत हुआ अत इस स्थल पर भी उत्खनन किया गया भूमि की आधुनिक सतह से 12 फुट नीचे तक उत्खनन करने के पश्चात् पूरे तोरण को तथा उसके मूलस्थान को देखा जा सका यह तोरण एक मन्दिर के द्वार पर लगाया गया था इस मन्दिर के अवशेष भी उत्खनन में प्राप्त हुए यह तोरण मूल तोरण का केवल एक ओर का स्तम्भ था दूसरे स्तम्भ को सम्भवत मुस्लिम काल में यहाँ से हटा लिया गया था तथा मन्दसौर के दुर्ग के निर्माण मे उपयोग मे लाया गया था तोरण पर उत्कीर्ण शैव धर्म सम्बन्धित पौराणिक चित्रणों से अनुमान लगाया गया कि जिस मन्दिर के सम्मुख यह लगाया गया था, वह शैव मन्दिर रहा होगा

मन्दसौर के मुस्लिमकालीन किले के दक्षिण-पूर्व की ओर एक गुप्तकालीन विशालकाय शिव की प्रतिमा भूमि में आधी गढी प्राप्त हुई इस प्रतिमा के चारो ओर 16 फुट गहरे उत्खनन से पता चला कि यह एक गुप्तकालीन मन्दिर मे स्थित थी मुस्लिम काल में गिर जाने के पश्चात् सम्भवत इसे फिर एक दीवार के सहारे खडा करने का प्रयत्न किया गया

इन सभी उत्खननो में मूल मन्दिरों की नीवो के केवल कुछ ही अवशेष प्राप्त हो सके उत्खननों में प्राप्त पुरावशेषों की सख्या भी कम थी

मनोटी (1959-60)

मन्दसौर जिले मे स्थित इस ग्राम मे मध्य प्रदेश के पुरातत्व विभाग द्वारा डॉ एच ह्वी त्रिवेदी के निर्देशन मे तथा श्री वी श्रीवाकणकर की सहायता से 1959-60 में उत्खनन करवाया गया

कुल मिलाकर यहाँ तीन खदानें लगायी गयी जिनमे एक लम्बी तथा दो छोटी थीं दो खदानो मे सात कालों से सम्बन्धित अवशेष प्राप्त हुए इस स्थान पर विभिन्न काल में बसी सभ्यताओं द्वारा जो मृद्भाण्ड उपयोग में लाये गये उन्हें निम्नलिखित समूहों में बाँटा जा सकता है–

(1) काले और लाल मृद्भाण्ड जिनमें भीतरी भाग चित्रित हों, ये आहाड तथा नागदा मृद्भाण्डो से मिलते-जुलते हैं

(2) लाल भाण्ड जिन पर काले रग से चित्रकारी की गयी है इनमें टोंटीदार भाण्ड महेश्वर से प्राप्त भाण्डो के समान है

(3) उक्त प्रकार के पतले भाण्ड, जिनमें आकार लोथल परवर्ती काल के स्तरों से प्राप्त भाण्डो से मिलते-जुलते हैं

(4) अनगढे काले भाण्ड

उत्खनन से यह ज्ञात हुआ कि यहाँ पर बसी प्रारम्भिक सभ्यता बाढ आने के कारण उजड गयी तत्पश्चात् यहाँ के निवासियों ने बाढ से रक्षार्थ कच्ची ईंटो की एक मोटी दीवार बनवायी इसके बाद यहाँ के निवासी एक बार और बाढग्रस्त हुए और यह स्थान छोडकर चले गये तत्पश्चात् यहाँ पर एक नयी सभ्यता की बस्ती स्थापित हुई उक्त घटनाएँ आद्यैतिहासिक काल तक हुई तत्पश्चात् ऐतिहासिक काल से लेकर मध्ययुग तक के सम्बन्धित स्तर मिले है

महादेव पिपरिया (1962-63, 1964-65)

नर्मदा नदी के तट पर स्थित विभिन्न स्थानो से पूर्व-पाषाणकालीन मध्य-पाषाणकालीन तथा उत्तर पाषाणकालीन

औजार प्राप्त हुए है अत पाषाणकालीन सस्कृति का अध्ययन करने के लिए नर्मदा का तट अत्यन्त महत्वपूर्ण है इस दृष्टिकोण से नर्मदा के तट के स्तर-अनुक्रम का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक समझा गया अत· 1962-63 तथा 1964-65 के वर्षों में श्री जी एस सुपेकर के निर्देशन मे नरसिहपुर जिले मे महादेव पिपरिया नामक स्थान पर नर्मदा के बायें तट पर स्थित एक पाषाणयुगीन स्थल का उत्खनन करवाया गया उत्खनन में नर्मदा के बाये तट के स्तर-अनुक्रम का जो चित्र प्रस्तुत हुआ वह निम्नलिखित प्रकार था–

ऊपर से नीचे की ओर जाते हुए निम्नलिखित स्तर–

(1) हल्के-पीले भूरे रग की मिट्टी का स्तर (15 मी)

(2) रेत तथा मिट्टी का स्तर जिसमे मध्य-पाषाण कालीन औजार मिले (5 मी)

(3) मिले-जुले अस्पष्ट स्तर

(4) लाल-भूरे रग की मिट्टी का स्तर (3 मी)

(5) सगुटिक बजरी का स्तर जिसमें एक शल्क प्राप्त हुआ (25 मी)

(6) पीली-भूरी कडी ककड युक्त मिट्टी का स्तर (1·5 मी)

(7) पीली-भूरी रेतीली मिट्टी का स्तर (1·5 मी)

(8) सगुटिक गोलाश्म का स्तर जिसे 1·50 मी तक खोदा गया तथा यह और भी गहरा पाया गया इसमें मध्य तथा उत्तर पाषाणयुगीन औजार प्राप्त हुए

महेश्वर-नावडाटोली (1952-53, 1957-59)

मध्य प्रदेश के पश्चिम निमाड जिले मे इन्दौर से लगभग 50 मील दक्षिण नर्मदा के उत्तरी तट पर महेश्वर नामक स्थान है इतिहासकार यहीं प्राचीन माहिष्मती नगरी की स्थिति मानते हैं जो बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अवन्ति जनपद की राजधानी थी माहिष्मती की प्राचीन महत्ता का उल्लेख महाभारत और अन्य पुराणों मे तथा कालिदास, दण्डी, राजशेखर आदि के ग्रन्थो मे आया है महेश्वर के ठीक सामने नर्मदा के दूसरे तट पर नावडाटोली नामक स्थान है जहाँ ताम्रपाषाणयुगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है इन दोनो स्थलो का उत्खनन डेक्कन कॉलेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना के सचालक डॉ हसमुख धीरजलाल साकलिया के निर्देशन में पहले 1952-53 में तथा बाद मे 1957-59 में करवाया गया इस उत्खनन से महेश्वर तथा नावडाटोली से प्राप्त अवशेषो के आधार पर इन स्थानों पर बसी सभ्यता का निम्नलिखित सात कालो मे विभाजित किया गया है

प्रथम काल–पूर्व-पाषाण युग
द्वितीय काल मध्य पाषाण युग
तृतीय (अ) काल -ताम्रपाषाण युग
तृतीय (आ) काल वही
तृतीय (इ) काल–वही
तृतीय (ई) काल -वही
चतुर्थ काल–400 ई पू से 100 ई पू तक
पंचम् काल–100 ई पू से 100 ईसवी तक
षष्टम् काल–100 ई से 500 ई तक
सप्तम् काल–उत्तर-मध्य युग (मुस्लिम-मराठा काल)

उपर्युक्त विभिन्न कालों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

प्रथम काल–सहस्त्रधारा, महेश्वर तथा मण्डलेश्वर की खोज में 400 से अधिक पूर्व-पाषाणयुगीन औजार प्राप्त हुए. महेश्वर-नावडाटोली के निकट प्राप्त ये औजार इन स्थलों पर बसी सर्वप्रथम सभ्यता के सूचक हैं

द्वितीय काल–उपर्युक्त स्थानों की खोज मे मध्य-पाषाणयुगीन औजार भी प्राप्त हुए मध्यपाषाणयुगीन कुछ औजार महेश्वर की पाँचवी खदान में भी निम्नतम स्तर से मिले ये औजार इन स्थलों पर बसे मध्यपाषाणयुगीन सभ्यता के सूचक हैं

तृतीय काल–तृतीय (अ) काल से सम्बन्धित लोग झोपडीनुमा मिट्टी के घरो मे रहते थे जो चौकोर गोल अथवा आयताकार होते थे उनकी छतें सपाट होती थी दीवारें तथा छते घास मिली हुई मिट्टी की बनती थी छत को रोकने के लिए बाँसों का प्रयोग होता था दीवारों की सफेद मिट्टी को चूने से पोत दिया जाता था फर्श क बनाने में चूना और पीली या काली मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता था घरों के चूल्हो पर भी चूने का पलस्तर होता था लोग गेहूँ, चना, मटर, मसूर और मूँग की खेती करते थे तथा भैंस, भेड बकरी, सूअर आदि जानवरो का पालन करते थे वे पत्थर के बने फलक तथा ताँबे और काँसे के विविध औजारों का उपयोग करते थे

यात्रा के लिए ये लोग गाड़ियों का उपयोग करते थे घरेलू उपयोग के लिए ये लोग चाक पर बने हुए सुन्दर मिट्टी के बने बर्तनों का उपयोग करते थे ये काले और लाल' लाल और काले मृद्भाण्ड कहलाते हैं इनके अतिरिक्त सफेद रगे हुए बर्तन जिन पर काले रग से आकर्षक चित्रकारी भी है, प्राप्त हुए हैं महाराष्ट्र तथा कर्नाटक से प्राप्त भाण्डो के सदृश यहाँ कुछ भूरे मृद्भाण्ड भी मिले हैं

तृतीय (आ) काल के स्तर से कुछ जले हुए दमाणो के अतिरिक्त चावल की खेती करने के सर्वप्रथम प्रमाण मिले हैं मृद्भाण्डो के उपयोग मे प्रमुख परिवर्तन यह है कि इस स्तर मे 'लाल और काले मृद्भाण्ड पूर्ण रूप से अनुपस्थित है इनके अतिरिक्त छोटे आकार के साधारण पानपात्रों का अधिक मात्रा मे मिलना उल्लेखनीय है

तृतीय (इ) काल से सम्बन्धित स्तर से जलने के प्रमाण की अधिकता है तथा इसी के साथ कतिपय विदेशियो के आगमन के प्रमाण उपस्थित है ये विदेशी

सम्भवत पश्चिम से आये थे पश्चिम देशों से मिलते-जुलते नये मृद्भाण्डो का इस स्तर से पाया जाना इस बात की ओर सकेत करता है नये मृद्भाण्डों में एक उच्च कोटि के लाल रग के मृद्भाण्ड हैं जिन पर काले रग से चित्रकारी की है ये जोरवे-वेयर' कहलाते हैं इनके साथ टोंटीदार बर्तनो का भी प्रचलन प्रारम्भ हुआ

तृतीय (ई) काल से सम्बन्धित स्तर से टोंटीदार प्याले तथा उत्कृष्ट चमकीले लाल मृद्भाण्ड प्राप्त हुए ये मृद्-भाण्ड आकार तथा प्रकार में समकालीन ईरान के मृद्-भाण्डो से मिलते-जुलते हैं, अत इनका आगमन उसी ओर से यहाँ आये हुए विदेशियों (सम्भवत आर्यों) की ओर सकेत करता है

उत्खनन मे प्राप्त ताम्रपाषाणयुगीन विभिन्न स्तरो से प्राप्त कुछ स्तरों का कार्बन तिथि निर्धारण के लिए अमरीका के पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय तथा बम्बई के टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फण्डामेन्टल रिसर्च की प्रयोग-शालाओं में भेजा गया प्राप्त तिथियों से महेश्वर-नावडाटोली में इस काल का प्रारम्भ लगभग ई पू 17वीं शताब्दी में तथा अन्त लगभग ई पू 15वीं शताब्दी में निर्धारित किया गया है

चतुर्थ काल—महेश्वर-नावडाटोली मे आद्य इतिहास का युग लगभग ई पू 14वी शताब्दी मे अन्त हो गया उत्खनन के साक्ष्य से ऐसा लगता है कि आगामी लगभग 1000 वर्षों तक यह स्थल उजाड रहा लगभग ई पू 400 में इस स्थान पर फिर से नयी आबादी बसी इस काल के निवासी काले और लाल तथा काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' का उपयोग करते थे ये लोग लोहे के उपकरण तथा आहत और ढले सिक्कों का उपयोग करने वाले थे कच्चे मकानों के स्थान पर ये लोग पक्की ईंटो के बने मकानों में रहते थे इस काल से सम्बन्धित स्तर से मिट्टी की बनी मूर्तियाँ, खिलौने आभूषण विभिन्न प्रकार के पत्थरों से बने मनके आदि प्राप्त हुए है नावडाटोली से प्राप्त तीसरी शताब्दी ई पू में एक स्तूप के अवशेष भी इसी काल से सम्बन्धित है स्तूप मे प्रयोग मे लाये गये कुछ ईंटों पर तीसरी शताब्दी ई पू के ब्राह्मी अक्षर उत्कीर्ण है इस स्तूप का विनाश बाढ आ जाने के कारण हुआ प्रतीत होता है

पंचम् काल—इस काल से सम्बन्धित स्तर केवल महेश्वर मे लगायी गयी खदानो मे मिले है इस काल मे काले और लाल' मृद्भाण्डो का उपयोग बहुत कम हो गया तथा इनके स्थान पर सफेद और लाल रग के मृद्भाण्डो का उपयोग बढ गया काँच की वस्तुओ का उपयोग भी इस काल में बहुत बढ गया, प्रतीत होता है लोग पकी ईंटो के बने मकानो मे रहते थे

षष्टम् काल—प्राचीन इतिहास से सम्बन्धित यहाँ का यह अन्तिम काल था इसके अवशेष महेश्वर के टीले क्रमाक 1 तथा 2 के उत्खनन मे मिले हैं चमकीले लाल मृद्भाण्डो का उपयोग इस काल की विशेषता है 'काले और लाल' मृद्भाण्डों के उपयोग मे कमी तथा अनगढ लाल और काले मृद्भाण्डों के उपयोग में वृद्धि इस काल में स्पष्टत दिखायी पड़ती है उत्खनन में इस काल से सम्बन्धित आवास गृहों के कुछ भग्नावशेष भी प्राप्त हुए हैं

सप्तम् काल—यह काल उत्तर-मध्ययुग से सम्बन्धित है जब यह क्षेत्र मुस्लिम तथा मराठों के अधिकार में था इसके पूर्व के पूर्व-मध्ययुगीन तथा पूर्व-मुस्लिमयुगीन अवशेषों के कोई भी प्रमाण महेश्वर-नावडाटोली के उत्खनन में प्राप्त नहीं हुए

मोड़ी (1958-59)

मन्दसौर जिले में मोडी नामक स्थान पर स्थित एक चित्रित शैलकृत निवास मे 1958-59 में उत्खनन करवाया गया उत्खनन मे आठ स्तर प्रकाश मे आये, जिनमे से विभिन्न प्रकार के पाषाणयुगीन औजार प्राप्त हुए हैं इन औजारों में प्रमुख थे—कैल्सेडोनी के बने शल्क तथा फलक, तिकोने तथा अर्ध-चन्द्राकार औजार तथा अन्य औजार साथ ही मृद्भाण्डो के भी चार ठीकरे प्राप्त हुए

त्रिपुरी (1952-53, 1965-70)

जबलपुर जिले मे नगर से लगभग 9 मील पश्चिम की ओर शहपुर जाने वाले मार्ग पर तेवर गाँव से लगे हुए प्राचीन त्रिपुरी नगरी के भग्नावशेष विद्यमान है ये अवशेष अनेक टीलो तथा स्मारकों के रूप मे नर्मदा तट पर कई वर्ग मील के घेरे मे फैले हुए हैं त्रिपुरी के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए यहाँ उत्खनन करवाये गये

त्रिपुरी का सर्वप्रथम उत्खनन 1952-53 में सागर विश्वविद्यालय द्वारा स्व डॉ मो ग दीक्षित के निर्देशन में किया गया हथियागढ टीले पर किये गये इस उत्खनन से ज्ञात हुआ कि इस स्थान पर सर्वप्रथम बस्ती लगभग 1000 ई पू मे थी जहाँ के निवासी लघुपाषाणस्त्र तथा चित्रित मृद्भाण्डों का उपयोग करते थे इसके पश्चात् यहाँ लगभग तीसरी शताब्दी ई पू में मौर्यकालीन बस्ती थी जब त्रिपुरी के नगर-राज्य का स्वतत्र अस्तित्व था इस नगर-राज्य में त्रिपुरी के नामाकित सिक्के चलते थे यहाँ के निवासी मिट्टी के बने मकानों मे रहते तथा घरेलू उपयोग में एक विशेष प्रकार के मृद्भाण्डो का उपयोग करते थे जिसे काले ओपदार उत्तरी भाण्ड के नाम से जाना जाता है यह बस्ती काफी समय तक रही इस काल में आहत सिक्को का भी उपयोग होता था प्रथम शताब्दी ई पू मे यह स्थान सातवाहन शासकों के आधिपत्य में आ गया उत्खनन मे सातवाहन सिक्कों की प्राप्ति से इस बात का पुष्टिकरण हो गया है इस काल में त्रिपुरी मे बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ उत्खनन मे समकालीन दो बौद्ध विहार प्राप्त हुए हैं त्रिरत्न चिह्नाकित मृद्भाण्ड तथा अन्य सामग्री से भी यहाँ बौद्ध धर्म-प्रचार का पता चलता है चौथी शताब्दी ईसवी मे यहाँ विदेशियों (सम्भवत हूणों) का आक्रमण हुआ जिन्होंने त्रिपुरी तथा निकटवर्ती क्षेत्र को ध्वस किया इसके

बाद का इतिहास अस्पष्ट है 9वीं शताब्दी में यह कलचुरि शासको की राजधानी थी तथा उनका काल त्रिपुरी इतिहास में स्वर्णिम अध्याय था

त्रिपुरी का नर्मदा तट पर बसी हुई प्राचीन माहिष्मती नगरी से क्या सम्बन्ध था तथा क्या प्राचीन त्रिपुरी के नाश मे माहिष्मती का कोई हाथ था, इस समस्या का समाधान करने के लिए 1965-66 में त्रिपुरी मे फिर से उत्खनन प्रारम्भ किया गया इस उत्खनन मे डेक्कन कॉलेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, एम एस यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा तथा सागर विश्वविद्यालय ने भाग लिया तथा उत्खनन का कार्य डॉ हसमुख धीरजलाल साकलिया के नेतृत्व में किया गया

उस वर्ष के उत्खनन से ऐसा कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हो सका जिसके आधार पर प्राचीन माहिष्मति तथा त्रिपुरी का कोई सम्बन्ध जोड़ा जा सकता

1966 से 1971 तक यह कार्य सागर विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति तथा पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष प्रो कृष्णदत्त बाजपेयी द्वारा कराया गया अभी तक प्राप्त उत्खनित सामग्री के आधार पर त्रिपुरी के इतिहास को निम्नलिखित कालो में रखा गया है–

प्रथम काल–(ताम्रपाषाणयुगीन) लगभग 1000 ई पू से 500 ई पू तक

द्वितीय काल–(ऐतिहासिक) 500 ई पू से 300 ई पू तक

तृतीय काल–300 ई पू से 100 ई पू तक

चतुर्थ काल–100 ई पू से 200 ई पू तक

पंचम् काल–200 ई पू से 300 ई पू तक

विभिन्न कालो की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

प्रथम काल–1952 के त्रिपुरी उत्खनन मे ताम्रपाषाण-युगीन जो मृद्भाण्डो के टुकड़े मिले थे, उसी प्रकार के टुकडे 1966 के उत्खनन मे भी प्राप्त हुए इन चित्रित 'लाल पर काले मृद्भाण्डों के साथ विभिन्न प्रकार के लघुपाषाण औजार भी प्राप्त हुए हैं एक गड्ढे में पक्की मिट्टी का अर्द्धवृत्ताकार मृद्पात्र भी मिला है जिस पर लाल पालिश है तथा उसके सिर पर धागा डालने के लिए छिद्र बना है साथ ही धूसर रग के ठीकरे भी प्राप्त हुए है

द्वितीय काल–द्वितीय काल के निवासी बाणगगा तथा एक लघु सोत के सगम पर स्थित टीले पर रहते थे यह टीला काफी लम्बा है, परन्तु चौडा अधिक नहीं है और तीन भागों में विभाजित है सम्भवत इसी कारण इसका नाम त्रिपुरी पड़ा यहाँ के लोग मिट्टी के मकानों मे रहते थे जिनके फर्श चूने से पुते रहते थे ये निवासी कई प्रकार के पके हुए मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे, जैसे–

(क) कटोरे, थाली आदि बर्तन जिनके बाहरी भाग काले अथवा लाल होते थे तथा अन्दर के भाग काले होते थे

(ख) थाली, कटोरे, लोटे आदि जो लाल रग के होते थे

(ग) छोटे लोटे, थाली, पानी रखने के बर्तन जिनके बाहरी भाग पर सफेद रग की परत होती थी

(घ) थाली, कटोरे आदि जो 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' के नाम से जाने जाते हैं इनका प्रयोग बहुत कम होता था

इन बर्तनों के अतिरिक्त इस काल के निवासी लोहा ताँबा, काँसा, हाथीदाँत तथा अर्ध-कीमती पत्थरों की बनी हुई वस्तुओ का प्रयोग करते थे

तृतीय काल–इस काल में यहाँ के निवासियो के जीवन मे स्पष्ट उन्नति दिखायी पडती है वे अब मिट्टी के कच्चे मकानों मे रहने की बजाय पक्की ईंटो के बने हुए मकानों में रहने लगे इन मकानो मे स्वच्छता का बहुत ध्यान रखा जाता था गन्दे पानी को निकालने के लिए वलयकूप, शोषक-गर्त आदि का उपयोग तथा कचरा फेंकने के लिए बडे चहबच्चों के उपयोग के प्रमाण मिले हैं मकान की छतों पर खपरैलें लगायी जाती थीं जिन्हे लकड़ी की शहतीरों के ऊपर कीलों से फँसा दिया जाता था मकानो मे अनाज जमा करने के लिए बड़े-बडे मटके रहते थे द्वितीय काल मे उपयोग में लाये जाने वाले मृद्भाण्डों के विविध प्रकार मिलने के अतिरिक्त इस काल में सुन्दर लाल रग के रगे हुए थाली, कटोरे आदि भी प्राप्त हुए हैं इनके अतिरिक्त चित्रित मुहरें, विभिन्न प्रकार के पत्थर की बनी छोटी वस्तुएँ, मनकों के हार तथा हड्डी की बनी वस्तुओं का उपयोग होता था त्रिपुरी नगर राज्य के सिक्के भी इसी काल के स्तर से प्राप्त हुए हैं

चतुर्थ काल–इस काल में सभ्यता का विकास बराबर चलता रहा. अब कच्चे मकानो के स्थान पर पक्की बडी ईंटों के मकान बनाये जाने लगे इन मकानों मे वलयकूप का उपयोग भी अधिक होने लगा इस काल के स्तरों से त्रिपुरी नगर-राज्य के सिक्कों के स्थान पर सातवाहन तथा क्षत्रपों के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं इनमें से कई सिक्के दुर्लभ कोटि के है

इस काल में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला म भी एक नया प्रयोग प्रारम्भ हुआ अब मिट्टी के बर्तनों को ठप्पो की सहायता से अलकृत किया जाने लगा ठप्पो द्वारा बनाये गये चित्रों मे स्वास्तिक, त्रिरत्न तथा पूर्णघट उल्लेखनीय है

मुलायम पत्थर से विभिन्न प्रकार के बर्तन, आभूषण सिगारदान आदि बनाने की कला का भी इसी काल मे प्रादुर्भाव हुआ चीनी-मिट्टी के बर्तन भी इस काल के स्तरों से प्राप्त हुए हैं पॉलिश किये हुए लाल रग के बर्तनों के

कटोरे, थालियाँ और टोटीदार गुलाबदानियों का प्रयाग इस काल मे विशेष उल्लेखनीय है

पंचम् काल--इस काल मे लोहे के भालों, बाण फलकों आदि का निर्माण बडी संख्या में होने लगा इस प्रकार के प्राचीन औजारो की अपेक्षा अब ये मजबूत बनने लगे जोड़ के स्थान पर जोड को मजबूत करने के लिए अब लोहे की चूडियाँ बनायी जाने लगीं उत्खनन म एक विशेष उल्लेखनीय भाले का फलक मिला है जिसकी मुठ के ऊपर पीतल की दाँतेदार चूड़ियाँ लगी हैं इसे देखने से ज्ञात होता है कि इस काल में विभिन्न प्रकार के अस्त्र बनाने की कला में अब पर्याप्त विकास हो चुका था

इस युग से सम्बन्धित एक खदान स प्राप्त भवन क अवशेष उल्लेखनीय है प्रो कृष्णदत्त बाजपेयी के अनुसार प्रतीत होता है कि इस जगह धातु के उपकरण बनान का एक छोटा उद्योग गृह था इस भवन का प्लेटफार्म धनुषाकार मिला. ईंटो का फर्श जिस पर गोल खम्भे लग थे इस धनुषाकार प्लेटफार्म क समीप ही आग जलान का एक भट्ठा प्राप्त हुआ यहाँ पाये गये मिट्टी क अभिलिखित ठप्पो के आधार पर इस मकान की निर्माण-तिथि दूसरी-तीसरी सदी ईसवी कही जा सकती है तेरहवीं खदान मे लकडी के खम्भ, जले हुए टुकड सहित दूसरी-तीसरी शताब्दी की मट्टी मिली इसी खदान में पक्की ईंटों की बनी हुई नाली सहित ईंटों के पक्के भवन के खण्डहर मिले इसकी तिथि प्रथम शती ईसवी है "

आगे प्रो बाजपेयी कहते है--"खुदाई म गणश, महिषासुरमर्दिनी और अन्य देवों की प्रतिमाएँ मिली पक्की ईंटों की मानवाकृतियों तथा पशु और पक्षियों की आकृतियाँ अच्छी सख्या मे प्राप्त हुईं इस वर्ष प्राप्त महत्वपूर्ण मुद्राओं म उल्लेखनीय त्रिपुरी जनपद की ताँबे की एक गोल मुद्रा है जिस पर अशोककालीन ब्राह्मी लिपि में त्रिपुरी का नाम लिखा है आहत तथा साँचे में ढले सिक्क सातवाहन शासका क ताँबे और सीसे क सिक्क हिन्द-सासनी और कलचुरि शासकों क सिक्के भी मिले है बाधि नामक राजवश के शासकों के पकी मिट्टी के सात ठप्पे प्राप्त हुए, जिनमें से एक पर श्री बाधि' राजा का नाम लिखा है त्रिपुरी में किय गय पहल उत्खननो मे इस वश क तीन शासका--शिवबाधि वसुबाधि तथा चन्द्रबाधि के नाम ज्ञात हुए थ

इस वर्ष उत्खनन में प्राप्त मिट्टी की एक मुद्रा पर महासन का नाम अकित है 350 ईसवी क पश्चात् लगभग त्रिपुरी क्षेत्र पर इस राजा का शासन रहा होगा स्वास्तिक नन्दिपद हल और शख क चिह्नों स अकित सफद पत्थर की मौर्यकालीन मुद्रा भी उल्लेखनीय है चिकने पत्थर पर बन एक छल्ले पर मातृदवी और दो नागिनो को पकडे हुए गरुड की आकृतियाँ है यह इस वर्ष की उपलब्धियो म एक दुर्लभ वस्तु है इन वस्तुओं क अतिरिक्त अनक आभूषणों के साँच अर्ध कीमती प्रस्तरों और पकी मिट्टी क मनक और धातु के उपकरण बडी सख्या मे प्राप्त हुए "

मध्य प्रदेश के प्रमुख संग्रहालय

देश की हृदयस्थली के रूप में जाने जाने वाला मध्य प्रदेश सास्कृतिक दृष्टिकोण से पुरातात्विक सम्पदा के लिए भारत का सबसे समृद्धिशाली और अग्रणी क्षेत्र है पुरातत्व विभाग की स्थापना के समय विभाग को प्रदेश की विपुल पुरातात्विक धरोहर के सरक्षण के लिए मात्र 6 सग्रहालय मिले थे लेकिन विभाग द्वारा पुरातात्विक वैभव के सरक्षण एव सवर्धन के लिये यथेष्ट प्रयास करके उसे पर्याप्त समृद्ध बनाया गया है विभाग के पुरातत्वीय सग्रहालयो मे, पुरातत्वीय महत्व की कलाकृतियों का सग्रहण, सग्रहालय विज्ञान सिद्धातों के अनुरूप उनका प्रदर्शन पुरातत्वीय सामग्री का रासायनिक अनुरक्षण, महत्वपूर्ण प्रतिमाओ की प्रतिकृतियो का निर्माण, निजी सग्रह की कलाकृतियों का पजीकरण, स्मारकों का अधिग्रहण, प्रदेश के सभी जिलो को अनुदान राशि देकर जिले में पुरातात्विक गतिविधियों का उन्नयन, प्रोत्साहन एव सास्कृतिक विरासत की सुरक्षा हेतु जनमानस का निर्माण, प्रदर्शनी व सगोष्ठियों के द्वारा सास्कृतिक विरासत का मूल्याकन आदिवासी लोक सस्कृति और परम्पराओं का सरक्षण एव उनके मौलिक रूप का सधारण आदि कार्यवाहियाँ विभाग द्वारा की जा रही है विभाग द्वारा कई पुस्तको का प्रकाशन भी किया गया है, विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'पुरातन' में देश-विदश के प्रसिद्ध विद्वानों और शोधकर्ताओ के शोधपरक लेख प्रकाशित किये जात हैं मध्य प्रदेश में सबसे अधिक सख्या मे पुरातत्वीय सग्रहालय स्थापित किये गये हैं इन सग्रहालयों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया गया है--

(1) राजकीय सग्रहालय,
(2) जिला सग्रहालय
(3) स्थानीय सग्रहालय
(4) निजी सग्रहालय
(5) विश्वविद्यालयों के सग्रहालय
(6) पुरातत्वीय सघों द्वारा स्थापित सग्रहालय
(7) स्थानीय निकायों द्वारा सचालित सग्रहालय

मध्य प्रदेश म मौर्यकालीन विशालकाय यक्ष प्रतिमाए जितनी इस प्रदश मे मिली हैं उतनी कहीं नही इनमे विशाल यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ विदिशा के सग्रहालय मे है प्रदश क विभिन्न अचलों में प्रतिहार चदेल कच्छपघात कल्चुरी एव परमार राजाओ क समय बने मूर्तिकला के एतिहासिक अवशषो को सुरक्षित रखने के निरतर प्रयास किए जा रहे हैं इसके अन्तर्गत भोपाल के अलावा इदौर, ग्वालियर, जबलपुर, छतरपुर में राज्य स्तरीय सग्रहालय हैं जबकि शिवपुरी धार और विदिशा में जिला स्तरीय तथा आशापुरी मानुपुरा मदसौर महेश्वर गधर्वपुरी दमोह और पन्ना मे स्थानीय सग्रहालय है

सागर जबलपुर उज्जैन और खैरागढ विश्वविद्यालयो के अपन सग्रहालय है भोपाल विश्वविद्यालय से सबद्ध

बिरला स्कूल ऑफ इडोलाजी में हिन्दुस्तान चैरिटी ट्रस्ट का पुरातत्व सग्रहालय बहुत महत्वपूर्ण है इसमे बहुमूल्य तथा भव्य प्राचीन मूर्तियाँ आदि सगृहीत हैं मडला और टीकमगढ के कुण्डेश्वर में जिला पुरातत्व सघ तथा पिछोर-राजगढ और पन्ना मे नगरपालिका द्वारा सचालित संग्रहालय हैं

निजी और स्थानीय संस्थाओं द्वारा सचालित सग्रहालयो मे शहडोल का राजा मृगेद्रसिह संग्रहालय, रीवा मे गोविदगढ पैलेस सग्रहालय, इदौर में डॉक्टर नागू, श्री उमराव सिह बघेल तथा श्री श्याम सुख के निजी सग्रह, विदिशा के जैन कॉलेज मे रामकमल मडवैया सग्रहालय, जबलपुर मे महेश चद्र चौबे एव डॉक्टर सतलाल कटारे का सग्रह, सीतापुर मे महाराजा का सग्रहालय, भोपाल मे हिदुस्तान चैरिटी ट्रस्ट का सग्रहालय, ग्वालियर में सिंधिया सग्रहालय, खजुराहो में जैन संग्रहालय, उज्जैन में भारतीय कला भवन सग्रहालय आदि प्रसिद्ध हैं सांची ओर खजुराहो में केन्द्रीय पुरातत्व सग्रहालय है राज्य भर में सैकडो निजी पुरावशेषों को पजीकृत किया गया है

केन्द्रीय शासन द्वारा संचालित संग्रहालय

पुरातत्व संग्रहालय, सांची (रायसेन)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इसका सचालन किया जाता हैं सांची के स्तूपों के कारण इस सग्रहालय का नाम देश-विदेश मे फैला हुआ है इस सग्रहालय में ब्राह्मण तथा बौद्ध सस्कृति का समन्वय देखने को मिलता है

पुरातत्व संग्रहालय खजुराहो (छतरपुर)

छतरपुर जिले मे स्थित खजुराहो में देश-विदेश के पर्यटक आते है लगभग सभी पूर्ण एवं खण्डित प्रतिमाए जो इस सग्रहालय में सरक्षित हैं, चंदेलकाल से सम्बन्धित 10-12वीं सदी की है. इस सग्रहालय की प्रमुख पाषाण प्रतिमाओं मे अग्नि तथा स्वाहा, अर्द्ध-नारीश्वर, आदिनाथ, उमा महश्वर, कार्तिकेय, कृष्ण तथा देवकी, कौमारी, गणपति, नटराज, नदी, बलराम, माँ और शिशु, योद्धा, गजलक्ष्मी एव मिथुन प्रतिमाए उल्लेखनीय हैं

राज्य शासन के अधीन संग्रहालय

केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय (ग्वालियर)

ग्वालियर किले में गुजरी महल में मध्य प्रदेश पुरातत्व विभाग द्वारा सचालित इस सग्रहालय में बहुमूल्य कृतियाँ सगृहीत है

इस सग्रहालय में उत्खनन तथा खोज से प्राप्त सामग्री, पावाया उज्जैन, आवरा, इद्रगढ तथा महेश्वर से सगृहीत है जिसमें प्राचीन मृद्भाण्डो के टुकड़े, उत्कीर्ण मुहरें, मृण मूर्तियाँ, मनके, अवशेष, मजूषा आदि शामिल है अभिलेखों में क्षेत्रीय इतिहास से जुडे हुए महत्वपूर्ण लेख, गौतमपुत्र, नरवर्मन, कुमारगुप्त, मिहिरभोज उदयादित्य परमार, अभयपाल परिहार आदि द्वारा सस्कृत मे लिखे गए लेख तथा पाषाण प्रतिमाओ में गरुड़ स्तम्भ शीर्ष, बौद्ध स्तूप की वेदिका, यक्षमणि भद्र, कुबेर, जैन तीर्थंकर इद्राणी, कल्कि अवतार, ब्रह्मा, नागराज, यम, स्कध, माता और शिशु, विश्व प्रसिद्ध शालभजिका जो भोपाल सग्रहालय में स्थानातरित की गई है, विद्यमान हैं यहाँ पर करीब 680 पाषाण प्रतिमाए हैं इनके अतिरिक्त यहाँ पर धातु प्रतिमाओ का अच्छा सग्रह है. सिक्के इस सग्रहालय की मुख्य विशेषता है मित्र देशों में भारत महोत्सवों में प्रदर्शनार्थ कई पाषाण मूर्तियाँ यहाँ से भेजी जाती हैं

केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय, इंदौर

सन् 1931 में स्थापित इस सग्रहालय मे ईसा से 5 हजार वर्ष पूर्व के हस्त कुठार, लीवर, स्क्रेपर, भाला, हसिया आदि उपकरण सुरक्षित हैं हिंगलाजगढ तथा मदसौर से प्राप्त लगभग 500 पाषाण प्रतिमाए, 10वीं-11वीं सदी से लेकर 17वीं-18वीं सदी तक की धातु प्रतिमाएं मुद्राएं, आहत मुद्राए, रियासती मुद्राए तथा 13वीं सदी के मध्य के अभिलेख आदि सुरक्षित हैं बेटमा, देपालपुर, पिपल्दा तथा हरीसिह के दानपत्र जो क्रमश. 1076, 1079 और 1827 में जारी किए गए, भी यहाँ रखे हैं कुछ समय पूर्व लाई गई बोधिसत्व पद्मपाणि की प्रतिमा इस सग्रहालय की अपनी विशेषता है इस सग्रहालय मे 2500 से अधिक सिक्कों का अच्छा सग्रह है

शासकीय संग्रहालय, धुबेला (नौगॉव)

वर्ष 1955 में स्थापित धुबेला का सग्रहालय छतरपुर से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है इस संग्रहालय में क्षेत्रीय इतिहास से सम्बन्धित कृतियाँ प्रदर्शित की गई हैं सग्रहालय में प्रमुख अभिलेख–स्कदगुप्त, महाराजा लक्ष्मण, भारतबल (पाडुवश) कर्ण, मलयसिह आदि के हैं पाषाण प्रतिमाए भी सग्रहालय की शोभा हैं इस सग्रहालय मे करीब 2200 सिक्कों का संग्रह है जो मुस्लिम और आधुनिककाल से सम्बन्धित है

शासकीय संग्रहालय, भोपाल (स्थापना 1887) (एडवर्ड म्यूजियम), मध्य प्रदेश शासन द्वारा अधिगृहीत 1964

यह सग्रहालय बाणगगा मार्ग पर मध्य प्रदेश कला परिषद् के सामने स्थित है इसमें पाषाण प्रतिमाओ का अच्छा सग्रह है सबसे अच्छी प्रतिमाए जो कला में अपूर्व स्थान रखती है महिषासुर मर्दिनी, अलक्ष्मी, कृष्ण-जन्म, हरिहर पितामह, वृद्ध (गांधार शैली) अपराजिता एव पचमुखी गणेश आदि की है प्रागैतिहासिक गैलरी भी यहाँ तैयार है

शासकीय जिला पुरातत्व संग्रहालय, विदिशा स्थापना 1940 (मध्य प्रदेश शासन द्वारा अधिगृहीत 1962)

विदिशा का पुरातत्व सग्रहालय वर्तमान मे काफी समृद्ध सग्रहालय है यहाँ जैन तीर्थंकर की प्रतिमा काफी रुचिकर है गुप्त वश के रामगुप्त का अभिलेख भी यहाँ है यहाँ करीब 133 प्रतिमाओ का काफी अच्छा सग्रह है सिक्को के अच्छे सग्रह के साथ मोहनजोदडो के अवशेष भी है

जिला संग्रहालय, शिवपुरी

स्थापना 1930, मध्य प्रदेश शासन द्वारा अधिगृहीत 1962

शिवपुरी सग्रहालय जैन पाषाण प्रतिमाओ के कारण प्रसिद्ध है इस सग्रहालय मे करीब 580 प्रतिमाए है इन प्रतिमाओं के अलावा आवरा उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्डो के कुछ ठीकरे भी सगृहीत है हनुमान प्रतिमा का मस्तक नृत्य, पचमुखी (शिव प्रतिमा) जो वर्तमान मे भोपाल सग्रहालय मे रखी है, आदि मूर्तियाँ शोभनीय है इसके अतिरिक्त राज्य में अन्य सग्रहालय निम्नानुसार है-

शासकीय सग्रहालय क्रमश भानपुरा, गधर्वपुरी (देवास), आशापुरी (रायसेन) तथा जबलपुर में स्थित है जबलपुर के भवरताल स्थित रानी दुर्गावती सग्रहालय मे पाषाण प्रतिमाओं का बढिया सग्रह है कतिपय महत्वपूर्ण ताम्रपत्र भी वहाँ सुरक्षित हैं पुरातत्व सघ अथवा समिति द्वारा सचालित सग्रहालय भी अन्य जिलों मे हैं इनमे रामवन (सतना) सग्रहालय विशेष उल्लेखनीय है राज्य में स्थापित 10 सग्रहालयो के अतिरिक्त शासन द्वारा रीवा, मडला, शहडोल तथा राजगढ आदि में नए सग्रहालय स्थापित किए गए है बिखरी हुई पूरी सम्पदा को एकत्र कर जिला सग्रहालय बनाने की योजना जारी है राज्य मे पहचान किए गए स्मारको में से अधिकाश शासकीय सरक्षण मे लिए जा चुके हैं बहुमूल्य कलाकृतियों की प्लास्टर प्रतिकृतियो के लिए मॉडलिग प्रकोष्ठ भोपाल मे स्थापित है

विभागीय दायित्व

राज्य में स्थापित पुरातत्वीय सग्रहालयो मे पुरातत्व महत्व की कलाकृतियों को सगृहीत कर वैज्ञानिक ढग से उनका सरक्षण और प्रदर्शन किया जाता है

पुरातत्वीय खोज एव अन्य उपलब्धियो को आम लोगो तक पहुँचाने के लिए विभाग द्वारा पुस्तको का प्रकाशन किया जाता है 'पुरातन' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी इसी विभाग द्वारा किया जाता है

उत्खनन तथा सर्वेक्षण

उत्खनन एव सर्वेक्षण कार्य के लिए प्रावधानित राशि अधीनस्थ अधिकारियो को राज्य के पुरातत्वीय सर्वेक्षण हेतु आवटित की जाती है जिससे राज्य के कोने कोने में बिखरी पुरासपदा की सूची तैयार की जा सके नदी घाटी योजनाओ मे डूब में आने वाले क्षेत्रों का पुरातत्वीय सर्वेक्षण किया गया तथा प्राप्त कलाकृतियो और स्मारको को सरक्षित करने की कार्यवाही जारी है इस कार्य मे केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का सहयोग लिया गया है जो उन्हे निकटस्थ ऊँचे स्थानो पर पुन स्थापित कर रहा है

कंजरवेशन सेल स्मारको को भविष्य की टूट फूट से बचाने के लिए स्मारको की आवश्यकतानुसार वास्तु कलात्मक एव रासायनिक अनुरक्षण की कार्यवाही की जाती है इदौर स्थित लालबाग पैलेस जो एक महत्वपूर्ण स्मारक है शासन द्वारा क्रय कर विभाग को दिया गया है जिसके सुधार की कार्यवाही जारी है लालबाग पैलेस के मुख्य द्वार, दीवारे, लोहे का गेट, लोहे के पुरावशेष आदि का रासायनिक अनुरक्षण किया गया है

फोटोग्राफिक सेल स्मारको तथा सग्रहालयो मे एकत्रित पुरासपदा के छायाचित्र तैयार करने के लिए फोटो सैल कार्यरत् है शैव कलाकृतियो, खजुराहो, उदयेश्वर तथा लालबाग पैलेस इदौर मदसौर उज्जैन के शिव मदिरो एव कलाकृतियो का छायाकन किया गया है

माडलिंग इस विभाग द्वारा राज्य की महत्वपूर्ण कला कृतियो की प्लास्टर प्रतिकृतियाँ तैयार कराकर विक्रय की जाती है पाय स्खलित वसना, गौरी कामदा नृत्य गणेश, शालभजिका आदि की प्रतिकृतियाँ तैयार की गई है

पुरावशेषों का पंजीकरण केन्द्र शासन द्वारा शत प्रतिशत सहायता पर यह योजना क्रियान्वित की जा रही है इस योजना के अन्तर्गत 5 पजीयन अधिकारी कार्यरत् है जो निजी सग्राहको के पास उपलब्ध कलाकृतियो के रजिस्ट्रेशन का कार्य करते है

पुरातात्विक कलाकृतियों की प्रदर्शनी

विभाग द्वारा राज्य मे समय समय पर आयोजित मेलो तथा उत्सवो के समय विभागीय गतिविधियो की जानकारी आम लोगों तक पहुँचाने के उद्देश्य से प्रदर्शनी के स्टॉल लगाए जाते है विदेशों मे सम्पन्न भारत महोत्सवो में भी मध्य प्रदेश की प्राचीन धरोहर को भेजा गया है अधिकाश मूर्तियाँ ग्वालियर दुर्ग स्थित सग्रहालय से भेजी गई

मध्य प्रदेश के संग्रहालय – एक नजर में

राजकीय संग्रहालय

(1) राजकीय सग्रहालय, भोपाल (स्थापना 1909 मे) प्रदर्शित सामग्री-ताम्रयुगीन उत्खनन सामग्री, प्रतिमाए, पेंटिग, प्रागैतिहासिककालीन सामग्री, प्रागैतिहासिक गुफा का मॉडल

(2) केन्द्रीय सग्रहालय गुजरी महल, ग्वालियर (स्थापना 1922) प्रदर्शित सामग्री-पाषाण प्रतिमाए, धातु प्रतिमाए, अभिलेख सील सिक्के, पेंटिग, उत्खनन सामग्री, अष्टधातु प्रतिमाए एव धातुई तोपे

(3) केन्द्रीय पुरातत्वीय सग्रहालय, इन्दौर (स्थापना 1923) प्रदर्शित सामग्री प्रतिमाए, सिक्के ताम्रपत्र

अभिलेख, उत्खनन सामग्री, प्रागैतिहासिक काल की सामग्री एव धातुई तोपें

(4) रानी दुर्गावती सग्रहालय, जबलपुर (स्थापना 1975-76) प्रदर्शित सामग्री–प्रतिमाए, सिक्के, अभिलेख ताम्रपत्र

(5) राजकीय सग्रहालय धुबेला छतरपुर (स्थापना 1956) प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, उत्खनन सामग्री अष्टधातु प्रतिमाए, अस्त्र-शस्त्र प्राचीन वस्त्र एव धातुई तोपें

(6) तुलसी सग्रहालय, रामवन, सतना (स्थापना 1978) प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, धातु प्रतिमाए, ताम्रपत्र सिक्के, प्राचीन टिकटें, ऑटोग्राफ पाडुलिपियाँ, उत्खनन सामग्री एव हस्तलिखित ग्रथ

जिला संग्रहालय

(1) जिला सग्रहालय शिवपुरी–प्रदर्शित सामग्री–जैन तीर्थंकर प्रतिमाए, सिक्के, उत्खनन सामग्री एव पेटिग

(2) जिला सग्रहालय, धार–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, धातुई तोपें, सिक्के, आभूषण एव ताम्रपत्र

(3) जिला संग्रहालय, मण्डला–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, फॉसिल्स, आभूषण एव उत्खनन सामग्री

(4) जिला सग्रहालय, विदिशा–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, सिक्के तोपें एव उत्खनन सामग्री

(5) जिला सग्रहालय, शहडोल–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(6) जिला सग्रहालय राजगढ–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(7) जिला सग्रहालय, देवास–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(8) जिला सग्रहालय, मदसौर–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(9) जिला सग्रहालय, होशगाबाद–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

स्थानीय संग्रहालय

(1) पुरातत्व सग्रहालय भानपुरा, मदसौर–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(2) पुरातत्व सग्रहालय आशापुरी, रायसेन–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(3) पुरातत्व सग्रहालय महेश्वर खरगोन–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(4) पुरातत्व सग्रहालय गधर्वपुरी, देवास–प्रदर्शित सामग्री –पाषाण प्रतिमाए

(5) पुरातत्व सग्रहालय, दमोह–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

निजी संग्रहालय

(1) राजा मृगेन्द्रसिह सग्रहालय शहडोल सगृहीत सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(2) डॉ आर एन नागू निजी सग्रह सगृहीत सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(3) श्री पद्मसिह निजी सग्रह इन्दौर

(4) श्री उमरावसिह बावेल्स निजी सग्रह इन्दौर

(5) श्री राजमल मडवैया, निजी सग्रह जबलपुर

(6) श्री महेश चौबे निजी सग्रह जबलपुर

(7) महाराजा सीतामऊ, निजी सग्रह सीतामऊ मन्दसौर

(8) बिडला सग्रहालय, भोपाल–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, सिक्के, प्रागैतिहासिक सामग्री राक शेल्टर प्रतिकृति एव पाडुलिपियाँ

(9) पैलेस सग्रहालय गोविन्दसिह रीवा–प्रदर्शित सामग्री–प्रतिमाए

(10) जैन कॉलेज सग्रह, विदिशा

(11) जैन सग्रहालय, जैसिहपुरा, उज्जैन

(12) महाराजा छतरपुर सग्रहालय खजुराहो छतरपुर

(13) सिधिया सग्रहालय ग्वालियर-ग्वालियर

(14) जैन सग्रहालय पपौरा-टीकमगढ

विश्वविद्यालयों द्वारा स्थापित संग्रहालय

(1) सागर विश्वविद्यालय, सागर–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए प्राचीन सिक्के एव उत्खनन सामग्री

(2) जबलपुर विश्वविद्यालय जबलपुर–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, उत्खनन सामग्री एव सिक्के

(3) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए, फॉसिल्स उत्खनन सामग्री एव सिक्के

जिला पुरातत्व संघों द्वारा संचालित संग्रहालय

(1) जिला पुरातत्व सघ सग्रहालय कुण्डेश्वर टीकमगढ–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(2) जिला पुरातत्व सघ सग्रहालय गुना–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(3) जिला पुरातत्व सघ सग्रहालय मुरैना–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

(4) जिला पुरातत्व सघ सग्रहालय बैतूल–प्रदर्शित सामग्री–पाषाण प्रतिमाए

30

मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम

यद्यपि प्लासी के युद्ध (1757) में अंग्रेजो की निर्णायक विजय के साथ उनका साम्राज्य भारत भूमि पर स्थापित हो गया था, तथापि 190 साल के राज्य काल में फिरंगी हुकूमत कभी चैन की श्वास नहीं ले सकी राजा-रजवाड़ों की फूट, थोथे अहंकार, आपसी रंजिश और मातृभूमि के गद्दारों के कारण दो शताब्दियों तक कायम रही ब्रिटिश सत्ता के दौर में कभी यहाँ तो कभी वहाँ स्वतंत्रता की चिन्गारी की चार प्रमुख धाराएं थीं और मध्य प्रदेश की चारों धाराओं में महत्वपूर्ण तथा सक्रिय भागीदारी रही उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यत्र-तत्र अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाया गया यद्यपि ऐसे विद्रोह स्थानीय सीमित शक्ति के कारण सफल तो नहीं हो सके, लेकिन स्वातंत्र्य की भावना को पनपाने व फैलाने में उनकी अहम् भूमिका रही और यदि यह कहा जाए कि 1857 के प्रथम व्यापक स्वातंत्र्य समर की चेतना को उन्हीं छोटे-छोटे विद्रोहों से प्राणवायु मिली तो अतिशयोक्ति न होगी स्वतंत्रता संग्राम की दूसरी धारा है तिलक और गांधी के नेतृत्व में उपजी जन-चेतना, राष्ट्रीय पुनर्जागरण जिसका निर्णायक प्रभाव 1942 में देखने को मिला, जब नेतृत्व विहीन हालात में स्वतंत्रता के अंतिम और निर्णायक संग्राम को कार्यकर्ताओं ने स्व-प्रेरणा से संचालित कर दिखाया तीसरी महत्वपूर्ण धारा है क्रांतिकारियों के संघर्ष की जिसने एक तरफ जहाँ ब्रिटिश राज को थर्राया, वहीं दूसरी ओर अपने बलिदानों से जनमत को जाग्रत किया, संचेष्ट किया चौथी धारा है आजाद हिन्द फौज के संघर्ष की जिसके सेनापति नेताजी सुभाषचंद्र बोस थे इन सभी धाराओं का सम्मिलित प्रभाव था जिसने फिरंगी हुकूमत की चूलें हिला दी और उन्हें भारत की स्वतंत्रता के जन्मसिद्ध अधिकार के सामने समर्पण करने के लिए विवश कर दिया

स्वातंत्र्य समर के प्रथम शहीद कुंवर चैनसिंह

1818 में कैप्टन स्टीवर्ड और भोपाल के नवाब नजरउद्दौला नजर खान के बीच रायसेन में एक समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत अंग्रेजों ने सीहोर में अपनी छावनी कायम की यहाँ मैडाक को पोलिटिकल एजेण्ट नियुक्त किया जिसके नियंत्रण में 1000 संख्या वाली फौज रखी गई इस फौज को भोपाल राज्य के खजाने से वेतन दिया जाता था भोपाल के साथ-साथ नरसिंहगढ़, खिलचीपुर और राजगढ की रियासतों सम्बन्धी राजनीतिक अधिकारी भी मैडाक को सौंप दिए गए नवाब भोपाल तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी अंग्रेजों का ताबेदार बना रहा लेकिन अंग्रेजों की कुटिलता के कारण सीहोर छावनी की स्थापना के छ वर्ष बाद ही उन्हें विद्रोह का सामना करना पड़ा नरसिंहगढ़ रियासत के दीवान आनंदराम बख्शी को अंग्रेजों ने मिला लिया था जो नरसिंहगढ़ राजपरिवार की गुप्त जानकारियाँ मैडाक को देता था नरसिंहगढ के राजकुमार कुंवर चैनसिंह को इस विश्वासघात की जानकारी मिलते ही उन्होंने गद्दार आनंदराम को मौत के घाट उतार दिया एक और मंत्री रूपराम बोहरा ने इन्दौर के होल्कर राज्य द्वारा अंग्रेजो के विरुद्ध मध्य भारत के सभी रजवाडो को संघर्ष के लिए एकजुट करने हेतु बैठक बुलाने तथा उसमें कुंवर चैनसिंह के भाग लेने की जानकारी मैडाक को पहुँचाई थी उसे भी गद्दारी करने के लिए कुंवर चैनसिंह ने दण्ड स्वरूप मौत के घाट उतार दिया अंग्रेज यह कैसे बर्दाश्त करते रूपराम के भाई ने चैनसिंह द्वारा अपने भाई को मार डालने की शिकायत कलकत्ता स्थित गवर्नर जनरल और सीहोर में मैडाक के पास दर्ज कराई इस पर गवर्नर जनरल ने मैडाक से जवाब-तलब किया

मैडाक ने चैनसिंह को अपने सामने उपस्थित होने का संदेश भेजा चैनसिंह के न आने पर उसने सीहोर से अलग हटकर बैरसिया में अपना शिविर लगाकर दोबारा चैनसिंह को वहाँ आने का संदेश भेजा बैरसिया में चैनसिंह अपने दल-बल सहित आए और मैडाक से मुलाकात की मैडाक ने चैनसिंह के सामने शर्तें रखी एक यह हमेशा के लिए नरसिंहगढ़ राज्य अंग्रेजों के अधीन कार्य करे और दो, नरसिंहगढ़ क्षेत्र में होने वाली अफीम की खरीद सिर्फ अंग्रेज ही करें मैडाक ने यह भी कहा कि यदि ये शर्तें नहीं मानी गईं तो चैनसिंह के खिलाफ दोनों मंत्रियों की हत्या का मुकदमा चलेगा चैनसिंह के मुखर विरोध और शर्तें न मानने

पर मैडाक ने उन्हे 24 जून, 1824 को सीहोर आने को कहा

चैनसिह ने अग्रेजों की अवहेलना करने का निश्चय कर लिया था उन्होने अपमानजनक शर्तें मानने के बजाय सघर्ष को वरीयता दी और नरसिहगढ से अपने विश्वस्त साथियों को लेकर निर्धारित तिथि को सीहोर आ पहुँचे सीहोर में वही हुआ, जिसका चैनसिह को पूर्वाभास था वर्तमान कलेक्टर निवास जो तब पोलीटिकल एजेण्ट का निवास था, में चैनसिह और मैडाक की मुलाकात हुई मैडाक ने चैनसिह की तलवार दे देने पर दूसरी तलवार भी माँगी तो चैनसिह ने, जो अब तक उन्हें निहत्था कर बदी बनाने अथवा मार डालने की साजिश भाप चुके थे, दूसरी तलवार मैडाक को यह कहकर नहीं दी कि राजपूत की कमर शस्त्र से खाली नही रहती इसी बात पर तकरार बढ गई और मैडाक द्वारा अपनी फौज को चैनसिह को बदी बनाने का आदेश देते ही चैनसिह ने मैडाक पर हमला बोल दिया पोलिटिकल एजेट मार-काट के मचते ही जान बचाकर भागा चैनसिह ने बाहर आकर अपना घोडा उसके पीछे लगा दिया सीहोर के वर्तमान तहसील चौराहे पर चैनसिह के साथियों और अग्रेजों के बीच भीषण लडाई हुई एक ओर चैनसिह और उनके मुट्ठीभर वीर साथी थे तो दूसरी और एक बडी और सुसज्जित अग्रेजी फौज कुछ घण्टो की लडाई मे ही चैनसिह के अधिकाश साथी खेल गए चैनसिह और उनके दो अगरक्षकों हिम्मत खाँ और बहादुर खाँ ने अग्रेजी फौज को फिर भी नहीं छोडा वे बहादुरी से लडते रहे अतत. सीहोर के वर्तमान दशहरा बाग वाले मैदान मे चैनसिह और उनके दोनो साथियों ने भी बहादुरी से लडते-लडते वीरगति प्राप्त की कहा जाता है कि इस सघर्ष में चैनसिह के साथ ही उनका पालतू श्वान शेरू भी अग्रेजों के हाथो काल का ग्रास बना था.

सीहोर के दशहरा बाग मैदान में कुदर चैनसिह के स्मारक के रूप में निर्मित छतरी के पास ही उनके साथियों हिम्मत खाँ और बहादुर खाँ तथा शेरू की कब्रे 1824 के इस सग्राम की याद ताजा कर देती हैं कालान्तर में चैनसिह सीहोर नगर और आसपास के गाँवो के पूज्य बने आज भी चैनसिह की छतरी और सीहोर जिले के कई गाँवों मे उनकी स्मृति स्वरूप बने चौरो पर मन्नतें माँगकर ग्रामवासी अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं आज भी हरबोलो द्वारा चैनसिह की गौरवगाथा गाँव-गाँव गाई जाती है, जैसे "चैनसिह राजा की करू, क्या बढाई, फिरगियों को भुला दी रे लडाई"

बुन्देला विद्रोह

मध्य प्रदेश की धरती पर विद्रोह की दूसरी ज्वाला 1842 मे धधकी जब बुन्देलखण्ड मे नर्मदा-सागर अचल के बुदला राजपूत, गौंड तथा लोधी राजाओं-जमींदारो ने अग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का झण्डा उठाया इनमे मदनपुर के दिल्लनशाह, हीरापुर के राजा हिरदेशाह, जैतपुर के राजा परिछित, चिरगाँव के जागीरराव बसत सिह, झीझन के दीवान देसपत बुदेला, क्राति के नायक थे लेकिन चरखारी के राजा के असहयोग और अग्रेज परस्ती के कारण बुदेला विद्रोह सफल नहीं हो सका

1857 का महान विप्लव

भारत में अग्रेजों की सत्ता कायम होने के एक शताब्दी बाद 1857 मे, फिरगियो की कुटिल साम्राज्यवादी साजिशो का बखूबी अहसास होते ही, उनके खिलाफ देशव्यापी स्वतत्रता सग्राम छिड़ गया मेरठ, कानपुर, दिल्ली, की क्राति की घटनाओ की सूचनाएँ सर्वत्र पहुँच रही थीं और स्वतत्रता के दीवानो के लिए प्रेरणा तथा उत्साह का वातावरण रच रही थीं और बलिदान की भावनाओ से दृढ संकल्पित शूरवीर सशस्त्र क्राति की राह पर चल पड़े थे मेरठ में शनिवार 9 मई, 1857 को तीसरी घुडसवार सेना के सिपाहियों ने नए कारतूस काम में लाने से मना कर दिया तुरन्त ही उन पर सैनिक न्यायालय मे विचार किया गया और उन्हें दस वर्ष के कारावास का दण्ड दे दिया गया सैनिकों की दबी हुई क्रोधाग्नि रविवार 10 मई को अग्नि शिखाओं के रूप मे प्रज्जवलित हो गई, जबकि मेरठ में नियुक्त तीन भारतीय रेजीमेटो ने अपने अफसरो को गोली से उडा दिया, कारागृह को तोड़ दिया अपने साथियों को मुक्त कर दिया और दिल्ली के मार्ग पर कूच कर दिया मार्ग मे अन्य व्यक्ति, सिपाही सेवामुक्त सैनिक और नागरिक भी उनके साथ हो लिए वे शाही महल की ओर गए और वहाँ वृद्ध बहादुरशाह को भारत का सम्राट घोषित कर दिया दिल्ली की सैनिक टुकडियों ने मेरठ के सिपाहियों के मार्ग का अनुसरण किया, अपने अफसरों को मार डाला और दिल्ली मे स्थित विदेशियों का कत्लेआम करने में सम्मिलित हो गए उन्होंने किला, खजाना और शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया विद्रोह की प्रारम्भिक स्थिति मे विप्लवकारियो को विशेष सफलता मिली विद्रोह के चौबीस घण्टों के भीतर दिल्ली पूर्णत उनके अधिकार में हो गई और बादशाह बहादुरशाह ने प्रत्येक भारतवासी को विदेशी दासता से भारत को स्वतत्र करने के आदोलन में भाग लेने के लिए फरमान जारी कर दिया

दिल्ली और मेरठ की घटनाओं का समाचार एक सप्ताह के पश्चात् ही सागर और जबलपुर पहुँच गया था परन्तु यूरोपियनों और सिपाहियो में बहुत अधिक व्यग्रता के होते हुए भी इस मास के अत तक इन क्षेत्रो मे कुछ नही हुआ जून मास के प्रारम्भ होते ही घटनाएँ तेजी से घटित होने लगी इसी बीच सतलज से गगा तक का समस्त प्रदेश स्वातत्र्य चेतना से प्रज्वलित हो उठा था पहले लखनऊ में, फिर नाना साहेब के स्थान कानपुर मे और

झाँसी में सभी जगह घटनाक्रम एक-सा था सैनिक टुकडियाँ यूरोपियन अफसरो के विरुद्ध भडक उठीं जिन्हें या तो मौत के घाट उतार दिया गया या उनके सुरक्षा स्थान में ही उन्हें बंदी बना दिया गया

मध्य प्रदेश के नर्मदा-सागर अंचल मे पहले से ही स्वतन्त्रता की प्रचण्ड ज्वाला प्रज्वलित हो रही थी 1842 के बुन्देल विद्रोह के परिणामस्वरूप इन जिलों के प्रशासन मे एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया था सागर-नर्मदा के क्षेत्र उत्तर-पश्चिमी प्रान्त के साथ मिला दिए गए थे जिनका प्रशासन आगरा के लेफ्टिनेंट गवर्नर तथा सदर रेवेन्यू बोर्ड द्वारा किया जाता था इन क्षेत्रों के लिए मेजर असींकिन को कमिश्नर नियुक्त करके जबलपुर में रखा गया

झाँसी के विद्रोह का समाचार सागर मे 8 जून को पहुंचा और उसके साथ ही यह खबर भी पहुँची कि बानपुर के राजा ने ललितपुर मे एक बडी सेना इकट्ठी कर ली है साथ ही सूचना भी मिली कि शाहगढ का राजा जिसका क्षेत्र दमोह और सागर जिलो के उत्तर तथा पश्चिम मे था अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेडने के आशय से सेना इकट्ठी कर रहा है कुछ दिनों के भीतर यह दिखाई देने लगा कि नर्मदा के उत्तर का समस्त क्षेत्र युद्धोद्यत हो गया है बानपुर के राजा ने ललितपुर पर अधिकार कर लिया और सभी यूरोपियनो को बंदी बना लिया ललितपुर की सहायता के लिए मेजर गौसेन के अधीन जो सेना भेजी गई वह बालबेहट के आगे न बढ सकी क्योकि उत्तर की सभी घाटियाँ राजा की सेना की बडी-बडी टुकडियो के अधिकार में थी राजा के सैनिकों और मेजर गौसेन की सेना के सिपाहियों के बीच सदेशों का आदान-प्रदान हुआ और 25 जून को मेजर के सिपाहियो ने खुली अवज्ञा प्रारम्भ कर दी इस बीच बानपुर के राजा द्वारा बंदी बनाये गये अंग्रेज अफसरों और महिलाओ को सागर जाने की अनुमति दे दी गई परन्तु मार्ग में उन्हे शाहगढ के राजा द्वारा पकडकर बंदी बना लिया गया बंदियों को 3 मास रखने के पश्चात् उन्हें सागर जाने दिया गया जहाँ वे अत्यन्त क्षीण दशा मे पहुँच सके यहाँ उल्लेखनीय है कि इन स्थानो मे से किसी पर भी अंग्रेजो की अविवेकपूर्ण हत्या नही की गई

इस बीच सागर मे भी स्थिति कुछ सहज नही थी सागर के सेनानायक ब्रिगेडियर को भय था कि किसी भी समय उपद्रव प्रारम्भ हो सकता है और उसने नगर के पुराने किले की किलाबंदी तथा उसकी सुरक्षा करने का निश्चय किया उसने अनुभव किया कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि यह किला विद्रोहियो के हाथ मे न पडे क्योंकि उसमे शस्त्रागार तथा रसद के विशाल संग्रह होने के अतिरिक्त वही एकमात्र स्थल था जहाँ यूरोपियन तथा ईसाई निवासियो को सशस्त्र आक्रमण होने की दशा मे सुरक्षा मिल सके आशंकित क्रांति का प्रारम्भ 1 जुलाई के सबेरे हुआ जब सागर मे स्थित अनियमित घुडसवार सेना ने विद्रोह कर दिया साथ ही 42 की पैदल सेना के सूबेदार शेख रमजान ने क्रांति का झण्डा ऊँचा किया और नगाडों की चोट पर उसका साथ देने के लिए सबको आमन्त्रित किया अन्य अनेक सैनिक टुकडियो ने क्रांति का साथ दिया. वे सदर बाजार और नगर की छावनी में अफसरों के घरो को लूटते हुए घुसने लगे उन्होने न तो घरों में आग लगाई और न ही किसी विदेशी को जान से मारा अगले ही दिन विद्रोहियो मे से कुछ ने दमोह की ओर कूँच कर दिया तथा शेष सागर में रह गये उन्होने मालथौन में तैनात सेना को सहायता पहुँचाई तथा शेख रमजान को अपना सेनापति घोषित किया सेना का वह भाग जो दमोह की ओर गया था 4 जुलाई को पहुँच गया और उसने देखा कि वहाँ के सभी अफसर उस एक महिला के साथ जो उनके साथ थी, नरसिहपुर भाग गये थे दिखता यह है कि दमोह के डिप्टी कमिश्नर का पहले यह विचार था कि समस्त कोष को किले मे रख दिया जाए और किले में आत्मरक्षा के लिए रहा जाए, परन्तु अन्तिम क्षणो मे उन भारतीय सैनिको की विश्वसनीयता के प्रति संदेह हो गया जिन पर उस किले की रक्षा का भार था वे उसी सैनिक दल के थे जिसने सागर में विद्रोह कर दिया था अत सभी अफसर उस महिला के साथ रात को चुपचाप अपनी पीठ पर लदे कपडो के अतिरिक्त अन्य कोई सामान लिये बिना दमोह से चल दिये इस दशा में उन्होने नरसिहपुर तक 70 मील की यात्रा की और वहाँ सुरक्षित पहुँच गये यद्यपि वे भूख और वर्षा से अत्यन्त फटे हाल हो गये थे परन्तु दमोह के किले में रहने के सम्बन्ध मे उनका भय आधारहीन सिद्ध हुआ क्योकि उन सैनिको ने, जो दमोह किले की रक्षा कर रहे थे सागर से दमोह पहुँचने वाले विद्रोहियो का साथ नही दिया इसके विपरीत उन्होंने खजाने की रक्षा की और उसे हाथ से नही जाने दिया परिणाम यह हुआ कि विद्रोही सिपाही किसी प्रकार की हिंसा किये बिना नगर को छोडकर चले गये

यह स्पष्ट है कि अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा अंग्रेजों से विद्रोह करने वाले सिपाहियो के विरुद्ध लगाया गया विवेकहीन निर्दयता का आरोप सभी स्थानों पर सही नही है जो जिस सरलता तथा द्रुत गति से नर्मदा सागर क्षेत्र के एक के बाद एक नगर पर स्थानीय ठाकुरों और राजाओ अथवा विद्रोही सेना का अधिकारी होता गया वह अत्यन्त हीन परिस्थिति का द्योतक है यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि सन् 1842 मे अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने वाले बुन्देला राजपूत, गौड और लोधियो के पुराने सत्ताधारी वर्ग तथा अंग्रेज अफसरो के विरुद्ध उठ खडे होने वाले देशी सिपाहियो के बीच बहुत निकट सम्बन्ध तथा पारस्परिक विश्वास विद्यमान था परिणाम यह हुआ कि सागर मे विद्रोह प्रारम्भ होने के 2 मास के भीतर यह समस्त क्षेत्र स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिको के हाथ मे आ गया

ग्वालियर तथा इन्दौर में विद्रोह

ग्वालियर मे विद्रोह के पश्चात् झाँसी मे 6 जून, 1857 को विद्रोह भड़क उठा झाँसी म हुए विद्रोह का समाचार जैसे ग्वालियर पहुँचा वहाँ भी 14 जून को मुरार छावनी स्थित ग्वालियर कण्टीजेंट ने विद्रोह का झण्डा फहरा दिया दोपहर लगभग 1·30 बजे छावनी के बीचोंबीच एक बगला जला दिया गया पास के मैस हाउस तथा मैस बैटरी बगले भी जलकर राख हो गये तुरन्त ही सम्भावित खतर को देख पोलिटिकल एजेन्ट मैकफरसन ने केन्टामेन्ट तथा शस्त्रागार का प्रभार महाराजा जीवाजीराव सिंधिया को देने का निश्चय कर ग्वालियर कण्टीजन्ट को ग्वालियर से बाहर विभिन्न जिलो मे रवानगी के आदेश दिय, परन्तु सेना ने उन्हे मानने से इनकार कर दिया अग्रेज अधिकारी सेना पर और अधिक दबाव नही डाल सके उसी दिन मध्यरात्रि को कोलाहल के साथ सैनिक बैरकों से बाहर निकल आय मुरार छावनी के बगलों मे आग लगा दी गई तथा 7 अधिकारी, 6 सार्जेन्ट और 6 बच्चे मार दिय गये कोई भी अग्रेज बच नहीं पावे तथा रातभर अग्रेजों की खोज होती रही महाराजा के बगले मे एक भी अग्रेज को नही रहन दिया तथा सभी अग्रेज महिलाओं को एकत्रित कर कैद कर दिया गया इसी बीच अधेरे का लाभ उठाकर पोलिटिकल एजेन्ट मेजर मैकफरसन कतिपय अन्य अधिकारियो एव अग्रेज स्त्री बच्चो सहित भागकर महाराजा के फूलबाग महल मे पहुँचे वहाँ से महाराजा के अगरक्षको ने उन्हे आगरा की ओर चम्बल नदी तक पहुँचाया जहाँ अग्रेजों के मित्र ठाकुर बलदेवसिह तथा धौलपुर के राजा ने उन्हें सुरक्षित आगरा तक पहुँचा दिया शिवपुरी में विद्रोह का समाचार पहुँचा दिया वहाँ रात्रि में विद्रोह की आशका से सभी अग्रेज शिवपुरी छोडकर भाग निकले उस रात्रि शिवपुरी म भी विद्रोह हो गया तथा लूटपाट करक शिवपुरी के सैनिक भी ग्वालियर मे कण्टीजेन्ट से आ मिले ग्वालियर तथा शिवपुरी में हुए विद्रोह का लाभ उठाकर नरवर के पूर्व राजा मानसिह ने भी खाया राज्य प्राप्त करने के लिये सिंधिया क खिलाफ विद्रोह कर दिया उसके पास 400 सिपाही, 6 तोपें तथा 12 हाथी थे जिनकी सहायता से उसने गुना-शिवपुरी मार्ग पर डाक तथा आवागमन छिन्न-भिन्न कर दिया तथा जुलाई से सितम्बर के बीच लूटपाट करता रहा तत्पश्चात् स्टुवर्ट की सेना ने उसे भागने पर मजबूर कर दिया तब शिवपुरी से 10 मील दूर पाडोन के जगलो में उसने अपना मुख्यालय बनाया

इस दौरान 1 जुलाई को इन्दौर मे भी विद्रोह हो गया इन्दौर रेसीडेन्सी पर कब्जा करने के पश्चात् विद्रोही सेना बम्बई-आगरा मार्ग पर विद्राह फैलाती 26 जुलाई को गुना पहुँची वहाँ का केन्टोनमेन्ट लूट लिया गया राघौगढ के राजा अजीतसिह ने इनकी सहायता की अवसर का लाभ उठाकर बानपुर के विद्रोही राजा मर्दनसिह ने चन्देरी पर कब्जा कर लिया गुना से इन्दौर की विद्रोही सेना सआदत खाँ के नतृत्व में 21 जुलाई को ग्वालियर पहुँची सआदत खाँ न विद्राही सेना को आगरा चलने का आग्रह किया परन्तु सेना महाराजा सिन्धिया की बाट जोहती रही इस पर सआदत खाँ ने साथियों सहित महाराजा के फूलबाग महल म मिलन का बहुत प्रयास किया पर वे मुलाकात टालते गये इस प्रकार लगभग एक माह और निकल गया इस बीच ग्वालियर और इन्दौर की विद्रोही सेना में भावी कार्यक्रमों को लकर विद्रोह हो गये इससे रुष्ट होकर इन्दौर की विद्राही सेना आगरा मार्ग पर धौलपुर की ओर 5 सितम्बर, 1857 को रवाना हो गई

ग्वालियर की विद्रोही सेना की डाँवाडोल स्थिति सितम्बर 1857 तक बनी रही उसी माह तात्या टोपे ने छदम वश में इस सेना की राष्ट्रीय व धार्मिक भावना को कुरेदा तथा समझा-बुझाकर उसे कालपी की ओर मोड दिया 5 हजार सिपाहियों एव एक तोपखाने सहित यह सेना 9 नवम्बर, 1857 को कालपी पहुँचकर तथा तात्या टोपे की कमान में सम्मिलित हो गई इसी बीच महु-इन्दौर क्षेत्र में अग्रेजों न अपनी स्थिति पूर्ववत् सुदृढ कर ली इन्दौर से लेकर ग्वालियर क्षेत्र के बीच तथा मालवा के पूर्व हिस्सों में विद्राह समाप्त करने के लिए सेन्ट्रल इण्डिया की सम्पूर्ण सेना की कमान सर ह्यूरोज को 18 दिसम्बर, 1857 को सौंपी गई खोये स्थलो पर पुन कब्जा करते हुए ह्यूरोज तथा स्टुवर्ट की मिली-जुली सेनाए 31 मार्च, 1858 को झाँसी पहुँचीं झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई की ओर से उनको जबर्दस्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ा 4 अप्रैल, 1858 को भीषण युद्ध के पश्चात् हार अवश्यम्भावी देखकर रानी लक्ष्मीबाई अपने पिता मोरोपत, पुत्र और अपने कुछ चुने हुए साथियों के साथ कालपी की ओर रात्रि मे निकल गई घोडे पर 24 घण्टे में 102 मील का सफर कर वह कालपी पहुँचीं, किन्तु बीच मे पिता मोरोपत रास्ता भटक गये वे थके मादे अर्धमूर्च्छित स्थिति में दतिया राज्य में पहुँच गये दतिया दरबार के कामगार बलदेव मोदी ने उन्हें अग्रेजों को सौंप दिया मोरोपत झाँसी वापस लाये गये जहाँ जोहन बाग में उन्हें फाँसी पर चढा दिया गया अग्रेजो द्वारा पीछा करने पर कालपी में रानी लक्ष्मीबाई, राव साहब तथा तात्या टोपे ने मिलकर सम्पूर्ण शक्ति से पुन ह्यूरोज का जबा मुकाबला किया पर वहाँ भी जब हार निश्चित जान पडी तो पूर्व योजना अनुसार शेष सेना सहित ग्वालियर की ओर कूच कर गये

ग्वालियर कन्टिजेन्ट तो विद्रोही होने से उनके साथ पूर्व से ही थी रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे ने महाराजा सिन्धिया की सेना को तोडने के लिये फकीर के छदम वेश में अनेक व्यक्तियों को पहले से ही ग्वालियर भेज दिया इन व्यक्तियो ने धर्म और राष्ट्रीय भावना (सिन्धिया की सेना में) उभार कर उसे अधिकाशत विद्रोहियों के पक्ष में कर दिया कालपी स राव साहब तात्या टोपे रानी लक्ष्मीबाई बादा तथा बरेली के नवाब सेना सहित 31 मई

को मुरार केन्टोनमेन्ट पहुँचे और उस पर आसानी से कब्जा कर लिया समाचार सुनकर महाराजा सिन्धिया आश्चर्यचकित रह गये उन्हे बताया गया कि विद्रोहियो के पास 7000 पैदल सेना, 4000 अश्वारोही सेना तथा 12 तोपें है तद्नुसार सिन्धिया ने युद्ध करने का फैसला किया 31 मई, 1857 की रात्रि को 6000 पैदल, 1500 अश्वारोही, 600 अंगरक्षक तथा 8 तोपों के साथ मुरार की ओर युद्ध हेतु सिन्धिया की सेना रवाना हुई 1 जून की प्रात विद्रोही सेना और लक्ष्मीबाई ने अपने अश्वारोही दल के साथ पूरे वेग से सिन्धिया की सेना पर आक्रमण कर दिया नाममात्र के लिये सिन्धिया की सेना के लिये युद्ध किया और तोप चलाई पर जब उन्हें ज्ञात हुआ कि रानी लक्ष्मीबाई विरोधी सेना का नेतृत्व कर रही हैं तो सिन्धिया ने स्वत एक तोप सँभाली, परन्तु तब अगरक्षकों को छोडकर बिना किसी प्रतिरोध के उनकी सेना रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे की सेना से जा मिली आगे लड़ाई व्यर्थ समझ महाराजा सिन्धिया फूलबाग महल वापस आये तथा अपने थोडे साथियो और अगरक्षको के साथ ग्वालियर से कूच कर गये दीवान दिनकर राव भी उनके पीछे आगरा की ओर भाग खडे हुए जिन सैनिको को महल की देखरेख के लिए छोडा गया था महाराजा के जाते ही उन्होने स्वय ही महल लूट लिया राव साहब ने महारानी बैजा बाई के पास राज्य की बागडोर सँभालने का प्रस्ताव भेजा जो उन्होंने स्वीकार नही किया तथा अन्य रानियाँ महारानी बैजा बाई के नेतृत्व मे नरवर कूच कर गईं

विजेताओं ने बडी धूमधाम से 2 जून को ग्वालियर में प्रवेश किया पुलिस थाने से तात्या टोपे ने मुनादि करवा दी कि राजा को किसी प्रकार का कष्ट नही होने दिया जाए तथा लूट का सामान थाने पर जमा करवाया जाए, ताकि उसके मालिको को वापस किया जा सके राव साहब ने ग्वालियर राज्य के खजान्ची अमरचन्द बालिया को बुलाया तथा सैनिकों को 5 माह का वेतन देने का आदेश दिया उत्सव महोत्सव के बीच रानी लक्ष्मीबाई के समझाने पर भी जिस शक्ति से प्रतिरोध का सामना करने की तैयारी राव साहब द्वारा की जानी थी उस ओर ध्यान नही दिया गया इसके विपरीत ग्वालियर का पतन जिस आसानी से हो गया अग्रज उससे आश्चर्यचकित तथा अधिक चौकन्ने थे वे इस पराभाव की गम्भीरता को तथा खोई प्रतिष्ठा तथा स्थिति को पुन काबू में करने के महत्व को समझते थे इसके अतिरिक्त बरसात भी शीघ्र प्रारम्भ होने वाली थी जिससे यह क्षेत्र दलदलमय हो जाता और सेना का सचालन असम्भव हो जाता सर ह्यूरोज ने फुर्ती से काम लिया उसने ग्वालियर पर चारो ओर से आक्रमण की योजना बनाई 16 जून को ह्यूरोज ने मुरार छावनी पर पूरी शक्ति से आक्रमण किया विद्रोही सेना ने दो रेजीमेन्ट 1 हजार अश्वारोही तथा 8 तोपों के साथ उनका सामना किया परन्तु शीघ्र ही उन्हे पीछे ग्वालियर की ओर हटना पडा इस प्रकार मुरार छावनी पर अग्रेजो का कब्जा हो गया तथा भारी मात्रा में गोले बारूद शस्त्र आदि भी उन्हे मिले 17 जून को ब्रिगेडियर स्मिथ कोटा की सराय की ओर बढ़ा वहाँ राव साहब तथा तात्या टोपे की सेना अग्रेज सैनिको से मोर्चा ले रही थी वह तुरन्त राव साहब की सहायतार्थ कोटा की सराय पहुँची तथा स्मिथ पर इतना भीषण आक्रमण किया कि उसे पीछे हटना पडा इस लडाई मे अनेक अग्रेज सैनिक रानी की सेना द्वारा हताहत हुए दूसरे दिन स्मिथ ने पूरी तैयारी से फिर आक्रमण किया रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी दो सहायक सहेलियों के साथ पुरुषो की वेशभूषा मे आकर सेना की कमान सम्भाली युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ जिसमें रानी को सगीन गोली एव तलवार से सघातिक घाव लगे तथा उनकी सहेली सुन्दर की गोली लगने से मृत्यु हो गई यद्यपि आक्रमणकर्ताओं को भी रानी के द्वारा तलवार से मौत के घाट उतार दिया गया किन्तु घाव से वे मूर्छित हो गईं साथियों द्वारा उन्हे पास ही बाबा गगादास के बगीचे मे ले जाया गया, जहाँ वे वीरगति को प्राप्त हुईं शीघ्र ही उनका तथा सहेली सुन्दर का वाह सस्कार कर दिया गया

झाँसी की रानी की मृत्यु के साथ युद्ध पाय समाप्त हो गया अग्रेजो ने किले पर धावा बोल दिया और उस पर कब्जा कर लिया किन्तु इसके पहले किले के मुख्ती पर सिपाहियो ने निराशोन्मत होकर मुकाबला किया और प्राण दे दिये 19 जून के अपराह्न में राव साहब तात्या टोपे के साथ मोती झील के रास्ते से भाग निकले

सिन्धिया ने 20 जून को मेजर मेकफरसन तथा सर ह्यूरोज एव अग्रेजी सेना सहित आगरा से ग्वालियर वापस आकर पुन राज्य का शासन सम्भाल लिया विद्रोह के उपरात जिन लोगों को कठोर दण्ड दिया गया उनमें से एक था सिन्धिया का खजाँची अमरचद बालिया जिसने विद्रोहियों को खजाना सौंप दिया था बालिया को सर्राफा बाजार मे नीम के पेड से टाँग कर फाँसी दे दी गई और एक कठोर चेतावनी के रूप मे उसका शरीर कई दिनो तक वही लटकाए रखा गया इसके पश्चात् ग्वालियर के किले मे अग्रेज सिपाही तैनात किए जिनके कब्जे में किला तथा मुरार छावनी सन् 1886 तक बनी रही सिन्धिया को इसका गहरा सताप रहा

राव साहेब तथा तात्या टोपे ने ग्वालियर से निकलकर अग्रेजों से एक और मोर्चा खेडा अलीपुर मे लिया किन्तु वे बुरी तरह पराजित हुए लडाई का बहुत साजो सामान उनके हाथ से निकल गया इसके बाद तात्या टोपे ने अग्रेजो के साथ लगभग एक वर्ष तक जो गुरिल्ला युद्ध प्रणाली अपनाई वह विश्व इतिहास मे अद्वितीय है अनेक स्थानो पर राजपूताने और मध्य प्रदेश मे मोर्चा लेते हुए 7 अक्टूबर 1858 को होशगाबाद के पास से उन्होने नर्मदा पार की पूर्व भोसले राज्य में उन्हे सहायता की आशा थी नर्मदा के दक्षिण से छिंदवाडा बैतूल तक वे पहुँचे वहाँ अग्रेजी सेना के प्रबल प्रतिरोध के कारण खण्डवा की ओर

होते हुए उन्होंने नवम्बर में पुन नर्मदा पार कर ली. अपेक्षित सहयोग के लिए बडोदा की ओर भी गए, परन्तु अग्रेजो के दबाव के कारण कही टिक नहीं सके उनका अतिम युद्ध अग्रेजो से 21 जनवरी, 1859 को सीकर (राजस्थान) मे हुआ जिसमें वे बुरी तरह पराजित हुए यहाँ से राव साहेब ने भी उनका साथ छोड दिया. तात्या टोपे अपने थोड़े से बचे साथियो के साथ नरवर के निकट पाडोन के जगलों मे पहुँचे सिन्धिया द्वारा निष्कासित नरवर के पूर्व राजा मानसिह ने तात्या टोपे को जगलों मे आश्रय दिया

तात्याँ टोपे से विश्वासघात

दोनों अप्रैल 1859 तक साथ रहे इस बीच तात्या टोपे को किसी भी प्रकार गिरफ्तार करने मे सफल न होने पर शिवपुरी में मेजर मीडे द्वारा कुटिल योजना बनाई गई. मानसिह को माफी तथा जागीर देने का आश्वासन मानसिह के दीवान के मार्फत भेजा गया, जिसे मानसिह ने स्वीकार कर लिया 4 अप्रैल, 1859 को मानसिह ने तात्या टोपे से जगल में मुलाकात की तथा 7 अप्रैल की रात्रि को पुन मिलने का कार्यक्रम बनाया निश्चित समय पर मानसिह अग्रेजों के साथ रात्रि में नियत स्थान पर पहुँचा तथा अर्द्ध रात्रि में जब तात्याँ टोपे गहरी नींद में थे, उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया

शिवपुरी मे 15 अप्रैल को कोर्ट मार्शल द्वारा तात्या टोपे की सुनवाई का नाटक किया गया. कोर्ट मार्शल मे सभी सदस्य अग्रेज थे उनके निर्णयानुसार तात्याँ टोपे को फाँसी की सजा सुनाई गई 18 अप्रैल, 1859 की शाम को एक बडे जनसमुदाय के समीप शिवपुरी में तात्याँ टोपे को पेड पर लटकाकर फाँसी दे दी गई जैसे ही सेना फॉसी स्थल से वापस हुई अनेक व्यक्ति तात्याँ टोपे के पैर छूकर रोते बिलखते घर वापस लौटे तात्याँ टोपे को पकडवाने के इनाम के रूप में विश्वासघाती मानसिह को उसका खोया राज्य तो नहीं मिला, मात्र 1000 रुपए वार्षिक नकद भत्ता स्वीकृत किया गया

जबलपुर में विद्रोह

उधर जबलपुर में यद्यपि बेचैनी अधिक थी परन्तु हो कुछ नहीं रहा था वहाँ उस एकमात्र घटना के पश्चात् जो 15 जून, 1857 को घटित हुई थी यूरोपियन अफसर और सिपाही भयत्रस्त रहने लगे थे 15 तारीख को जब एक एडजूटेंट अपनी रेजीमेंट के गार्ड का निरीक्षण कर रहा था एक सिपाही ने, जो सम्भवत झाँसी से आने वाले समाचारो को सुनकर असतुलित और उत्तेजित हो गया था, उसने एडजूटेंट पर अपनी बदूक से आक्रमण कर दिया इस आक्रमण में उसे खरोंच मात्र ही आई सिपाही पर शीघ्र ही काबू पा लिया गया उसे गार्ड रूम मे बद कर लिया गया बाद मे चिकित्सकों द्वारा जाँच करने पर यह सिपाही पागल ज्ञात हुआ और बनारस के पागलखाने मे भेज दिया गया परन्तु बनारस में उस सिपाही का मस्तिष्क ठीक घोषित कर उसे फॉसी दे दी गई तथापि इस घटना ने जबलपुर के यूरोपियनो मे अत्यधिक भय की स्थिति उत्पन कर दी अफवाहें फैल रही थीं कि कुछ ठाकुर और सरदार विद्रोह करने वाले हैं और अग्रेजों के विरुद्ध सिपाहियों से मिल जाने वाले हैं, उन्हें आशका यह भी थी कि वे विद्रोही सेनाए जो सागर से दमोह पहुँच गई थीं, जबलपुर की ओर धावा बोलेंगी निश्चय यह किया गया कि नगर के सब यूरोपियन तथा ईसाई औरतों और बच्चो तथा अफसरों को कमिश्नर के निवास स्थान पर एकत्र कर लिया जाए जिसे नाकाबदी करके सुरक्षा योग्य बनाया जा सकता था मेजर अर्सकिन ने लिखा है कि इस रात किस प्रकार पैंतालीस व्यक्ति, जिनमे दस महिलाएं तथा पद्रह बच्चे थे उसके हॉल में भोजन करने के लिए बैठे और उस समय सार्जेंटों तथा नागरिको ने बारी-बारी से घर के चारो ओर पहरा दिया वह लिखता है कि "निस्सदेह वह रात्रि जबलपुर के यूरोपियनों के लिए कम खतरे की न थी, क्योंकि जब हम भोजन के लिए बैठे, उस समय सिपाहियों की एक छोटी-सी दृढ निश्चय टुकडी हम सबको हॉल के बडे दरवाजे से गोली से उडा सकती थी " परतु वह आशकित गोली कभी दागी न गई, तथा सारी रात और अगले दिन उन्होने आड खडी करने के लिए बोरियों और बक्सो में रेत भरने में अपने-आपको व्यस्त रखा, जबकि महिलाए बारूद की थैलियाँ भरने में लगी रहीं इस व्यस्त कार्यक्रम का केवल एक ही परिणाम हुआ कि भोजन करते समय परिश्रम के कारण उन्हे खुलकर भूख लगने लगी

दमोह जिले मे परिस्थिति बिलकुल भिन्न थी यह जिला तथा सागर दोनो ही पूर्णत विद्रोही सेनाओं के अधिकार मे थे दमोह के सब लोधी सरदार शाहगढ के विद्रोहियों से मिल गए थे वे अपनी बनाई हुई बदूकों से भी लैस थे इन जिलो के पुलिस के सिपाही या तो विद्रोह में सम्मिलित हो गए थे या फिर भाग गए थे सैकडो मालगुजार विद्रोहियो की धन-जन और भोजन से सहायता कर रहे थे अनेक सप्ताह तक सागर या दमोह में डाक नही आई थी अनेक दिनो तक यातायात ठप्प रहा इस प्रकार सन् 1857 क अगस्त माह मे नर्मदा के उत्तर के लगभग सभी स्थान, जबलपुर और मण्डला को छोडकर स्वातत्र्य युद्ध की सेना के आधिपत्य में पहुँच गए थे

परन्तु शीघ्र ही जबलपुर मे घटनाए द्रुतगति से घटित होने लगीं वे तैयारियाँ जो कमिश्नर तथा यूरोपियन अफसरों ने अपनी सुरक्षा के लिए की थीं व्यर्थ नहीं थीं अगस्त के पूरे महीने उस जिले के ठाकुर और मालगुजार विद्रोह के लिए तैयार थे और केवल सेना की ओर से कार्यवाही किए जाने की बाट देख रहे थे सितम्बर मास के प्रारम्भ में इस बात के लक्षण दिखने लगे कि सिपाहियों के

कुछ सुविधा कुछ करने की योजना बना रहे थे यूरोपियन गोलदाजों सहित एक मोबाइल यूनिट के आगमन का जबलपुर की कुछ सैनिक टुकडियों द्वारा विरोध किया गया असतुष्ट सिपाहियो को प्राचीन राजवश के प्रतिनिधि राजा शकर शाह के रूप मे उत्साहवर्द्धक नेता भी मिल गया वह गढा मण्डला के प्रख्यात गौड राजवश का था, जिनकी पूर्वज वीरागना रानी दुर्गावती ने अपने राज्य की स्वतन्त्रता के लिए 16वी शताब्दी में मुगलों से युद्ध करके सुकीर्ति का अर्जन किया था

इस समय राजा शकरशाह पेशनर था उसके पास तीन गाँव जागीर के थे जबलपुर की रेजीमेंट के अनेक सिपाही उसके घर पर मिलने जाते थे और सागर दमोह तथा अन्य स्थानो पर होने वाली घटनाओ के सम्बन्ध मे विचार विनिमय करते थे कानपुर लखनऊ और दिल्ली मे होने वाली भयकर घटनाओ के समाचार भी उन तक पहुँचे थे और उनसे वे बहुत अधिक उत्तेजित थे वे विदेशी शासको के विरुद्ध क्रोध से भरे हुए थे और देश के अन्य भागो मे होने वाले विद्रोह के समर्थन मे छावनी पर आक्रमण करने की सोच रहे थे उनकी योजना यह ज्ञात होती थी कि अन्य ठाकुरो और जमींदारो तथा सेना के सिपाहियो की सहायता से पर्याप्त सैन्यबल एकत्रित कर लिया जाए और मुहर्रम के पहले दिन छावनी पर आक्रमण कर दिया जाए, परन्तु निश्चित दिन के पहले ही इस अभिसधि की सूचना डिप्टी कमिश्नर कप्तान क्लार्क को मिल गई अपने सहायक, बीस सवार तथा चालीस पुलिस के सिपाही लेकर 14 सितम्बर को राजा के घर पर आक्रमण कर दिया तथा राजा और उसके पुत्र रघुनाथशाह तथा उस घर मे मिले कुछ अन्य व्यक्तियो को बदी बना लिया इस घटना से 52वी रेजीमेंट क्रोधित हो गई जिसके अनेक सिपाही राजा के घर आते रहते थे और उस योजना में सम्मिलित थे इस कार्यवाही के दूसरे दिन सिपाहियो ने बदियो को छुडाने का प्रयत्न किया रात को सेना-निवास मे बदूक दगने की आवाज आई और पास एक मकान में आग लगा दी गई कमिश्नर ने मोबाइल सेना की एक टुकडी को बुलाया और उसे तैयार रहने की आज्ञा दी बदियो को छुडाने के किसी अन्य प्रयास को असम्भव कर देने के लिए उसने दूसरे दिन राजा और उनके पुत्र पर अभियोग चलाने का नाटक किया न्याय आयोग को जिसके सदस्य डिप्टी कमिश्नर तथा दो अंग्रेज अधिकारी थे इन दो राजकुमारो को राजद्रोह का अपराधी घोषित करने मे कोई बाधा नही आई अगले दिन सबेरे इन दोनो बदियो को उस मौलिक ढग से मृत्युदण्ड दिया गया जो इस महान विप्लव के समय बहुत प्रचलित हो गया था उन्हे तोप के मुँह से बाँधकर उडा दिया गया

शकरशाह भारत मे अंग्रेजी राज की समाप्ति की हृदय से कामना करते थे और इसके लिए भगवान से प्रार्थना करते थे उनको बदी बनाने के पश्चात जब डिप्टी कमिश्नर ने उनके घर की तलाशी ली तो उनके कागजो में कमिश्नर को वह आज्ञापत्र मिला जिसमें राज सरकारो को राजभक्त रहने के लिए कहा गया था

बाद मे, यह स्पष्ट करते हुए कि मृत्युदण्ड देने का यह ढग क्यो अपनाया गया था जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर ने लिखा था कि 'मृत्युदण्ड देने का यह ढग फाँसी देने की अपेक्षा नीचे लिखे कारणो से अपनाया गया था 52वी सेना मे कुछ उत्तेजना थी और सम्भावना यह थी कि बचाने का प्रयत्न किया जाता फाँसी का तख्ता जमाने मे कुछ समय लग सकता था और यह भी आवश्यक होता कि निवास स्थान से कुछ दूर पर सेना का एक बड़ा भाग उपस्थित रखा जाता अतएव राजा कार्यान्वित करने के लिए यही सरल तथा सुरक्षित मार्ग समझा गया

शकरशाह के कागजो की प्राप्ति का विवरण देते हुए जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर ने सागर डिवीजन के कमिश्नर मेजर असकिन को 14 सितम्बर 1858 को लिखा था कि "शकरशाह और रघुनाथशाह के घरों की तलाशी लेने पर बहुत से विद्रोही प्रवृत्ति के कागज की प्रतिलिपि इस पत्र के साथ सलग्न है यह एक प्रार्थना है जिसमे उसने देवी से प्रार्थना की है कि सब यूरोपियन नष्ट हो जाएं हमारा शासन उखड जाए और उसका पुन स्थापन हो जाए यह एक रेशमी थैली मे मिला था जिसे वह उस पलग पर रखता था जिस पर से वह उस समय उठा था जब मै उसके घर मे घुसा यह रघुनाथशाह के हाथ का लिखा ज्ञात होता है इस कागज की पीठ पर उसकी बनाई हुई एक प्रार्थना लिखी हुई थी जिसमे देवी से याचना की गई थी कि वह यूरोपियनों का नाश कर दे वह प्रार्थना इस प्रकार थी—

मुद मुख मडित हो चुगली की बजाई खाई।
खुद डोर पुरुन को शत्रु सघरका घर अगरेज रेज कर देई मात।
गढी बचे नहि बैरि बाल बच्चे सधरका सकल की रमा कर।
दास प्रतिपाल कर दीन जी सुन आगमाल हालका खण्डहे जी।
मलैछन को झील माही करी अब मइान का तत्काल धीरमात कालिका।

कमिश्नर मि असकिन ने इस कविता का अंग्रेजी अनुवाद भी किया था राजा शकरशाह की निर्मम हत्या ने जनता तथा उसके अनुयायी सैनिको को स्तब्ध कर दिया मृत्युदण्ड की रात को समस्त 52वी रेजीमेंट उठ खडी हुई और अपने हथियार तथा गोला बारूद लेकर चल पडी वह नगर के बाहर एक सडकदार मार्ग से पहाडपार की ओर गई जहाँ इसी रेजीमेंट का एक दस्ता नियुक्त था इस रेजीमेंट का एक अन्य दस्ता रूपीमनाला मे भी था 52वी रेजीमेंट के विद्रोह का समाचार इन दोनो स्थानो पर पहुँच गया और वहाँ की सैनिक टुकडियो को खजाना शान्तीपूर्वक

से ओतप्रोत था. उस समय भी जब उन्होने अपने अंग्रेज अफसरो की अवज्ञा की, वे हिसा अथवा सामूहिक हत्या के कृत्यों से विरक्त रहे, परन्तु बहुत दृढता तथा शाति से उन अफसरो से चले जाने के लिए कह दिया स्लीमनाबाद के दस्ते के साथ दो अफसर, लेफ्टिनेंट बार्टन तथा कार्बन थे जब उनके अधीनस्थ टुकडियों ने शासन के विरुद्ध विद्रोह करने का निश्चय कर लिया तो उन्होने इन अफसरों से अलग होने पर खेद प्रकट किया तथा उनके साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया कुछ लोगों ने अपने अफसरो से हाथ मिलाये वेतन बाँटने वाले हवलदार ने इन अफसरों में से एक का अवशिष्ट वेतन उसे दे दिया और वे शीघ्रता से नागौद की ओर कूच कर गए वे दोनों अफसर सुरक्षित रूप से जबलपुर पहुँच गए और सिपाहियो ने एक गाडी करके उन अफसरों का सामान उनके पीछे जबलपुर भेज दिया बार-बार पता चलता है कि विद्रोह के नेताओ ने उन अंग्रेजों के प्रति जो उनके कब्जे मे आ गए, बहुत सहिष्णुता का व्यवहार किया और बदियों की हत्या के उदाहरण अत्यत अल्प थे यह बात ठीक है कि कैद मे रहने के समय उन्हे अभावों का सामना करना पडा, परन्तु कभी उन्हें मारे जाने का भय नहीं रहा स्थानीय नेताओं द्वारा अंग्रेज कैदियों के प्रति किया गया यह अनोखा व्यवहार उनकी गरिमा को बढाने वाला है और उसकी तुलना अंग्रेजों के हाथों मे पड जाने वाले विद्रोहियो के दुर्भाग्य से करने पर इसका स्पष्ट अतर सामने आता है

जबलपुर जिले के विद्रोह—आदोलन के एक उल्लेखनीय नेता विजयराघवगढ के युवक और वीर ठाकुर सरजू प्रसाद थे यह महान् परिवार अपनी वशज परम्परा जयपुर के राजवश से मानता था विजयराघवगढ कभी मैहर राज्य का अश था सन् 1826 मे मैहर के ठाकुर दुर्जन सिह की मृत्यु पर वह राज्य उनके दो पुत्रों में विभाजित कर दिया गया था विष्णु सिह को मैहर मिला तथा प्रयाग दास सिह को विजयराघवगढ का अधिपति स्वीकार कर लिया था लगभग उन्नीस वर्ष तक उसने राज्य के प्रबध को अत्यत सफलतापूर्वक चलाया और अनेक उपयोगी सुधार किए जबलपुर जिले के सन् 1869 के भू-व्यवस्था प्रतिवेदन के अनुसार उनके राज्य को उनके समय में कुशल तथा उदार प्रशासनयुक्त समृद्धिशाली राज्य माना जाता था प्रयाग दास सिह का देहात सन् 1845 मे हो गया और उनका उत्तराधिकारी सरजू प्रसाद सिह हुआ जो उस समय केवल पाँच वर्ष का बालक था इस कारण शासन ने अल्पवयस्क राजा की देखरेख का भार अपने ऊपर ले लिया और राज्य को कोर्ट ऑफ वार्डस् के अन्तर्गत ले लिया जब देश मे महान विद्रोह का सूत्रपात हुआ उस समय सरजू प्रसाद लगभग सत्रह वर्ष का नवयुवक था और उसके राज्य का प्रबन्ध जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर द्वारा किया जा रहा था

सन् 1857 के अक्टूबर मास के अत मे जब राजा शकरशाह के मृत्युदण्ड के परिणामस्वरूप जबलपुर मे होने वाली घटनाएं जनमानस को उद्विग्न कर रही थी नवयुवक ठाकुर सरजू प्रसाद ने, जो अभी भी शासन के अधीन ही था, विद्रोह कर दिया तहसीलदार को मार डाला गया डाक के घोडे पकड लिए और सशस्त्र व्यक्तियों के समूहों ने जबलपुर की महत्वपूर्ण सड़कों पर कब्जा कर लिया जिसके परिणामस्वरूप उस मार्ग से न तो डाक जा सकती थी और न यात्री ही गुजर सकते थे इस प्रतिरोध मार्ग के युवक नेता ने साहस और वीरता के कृत्यों द्वारा ख्याति अर्जित की कमिश्नर अर्सकिन ने नवम्बर में प्रतिवेदन दिया कि "विजयराघवगढ के विद्रोही दक्षिण मिर्जापुर मार्ग पर न केवल शक्तिशाली रहे और उत्तर-पश्चिम तथा कलकत्ता और बम्बई के बीच यातायात को उन्होंने पूर्णत अवरुद्ध कर दिया कोई भी व्यक्ति उधर से गुजर नहीं सकता था और जो भी यह प्रयास करते थे उनकी तलाशी लेकर उन्हें लूट लिया जाता था, कुछ को मार डाला जाता था और कुछ को घायल कर दिया जाता था" अगले वर्ष (1858) जब रीवा सेना को मैहर बुलाया गया तब अंग्रेज अपने सैनिक विजयराघवगढ के विरुद्ध ले जाकर उसे जीत सके ठाकुर सरजू प्रसाद किसी प्रकार निकल भागा और फकीर के वेश मे इधर-उधर घूमता रहा. सन् 1864 में अंग्रेज उसे पकडने में सफल हो गए और उसे जबलपुर ले गए जहाँ वह लम्बे समय तक कैद रहा फिर उस पर विद्रोह करने का अभियोग चलाया गया जिनमें प्रमुख था तहसीलदार मीर साबित अली की हत्या मे भागीदार होना उन्होंने सब आरोपो को सिद्ध पाया और उसे आजीवन देश निकाले तथा समस्त सम्पत्ति को राजसात करने का दण्ड दिया गया इस दडाज्ञा को ग्रहण करने के स्थान पर सरजू प्रसाद ने आत्महत्या कर ली और इस प्रकार स्वतत्रता सग्राम के बलिदानियो में शुमार हो गया विजयराघवगढ क्षेत्र को जब्त कर लिया गया और उसे जबलपुर जिले में की मुडवारा तहसील का एक भाग बना दिया गया

फाजिल मोहम्मद खॉ की शहादत

भोपाल राज्य की गद्दी अम्बापानी के जागीरदार खिजर मोहम्मद खाँ के वंशज फाजिल मोहम्मद खाँ और आदिल मोहम्मद खाँ ने जुलाई 1857 के प्रारम्भ मे विद्रोह का झण्डा बुलद कर दिया उन्होंने इतनी शक्ति एकत्र कर ली कि नवाब सिकन्दर बेगम और अंग्रेजो को उन पर काबू पाने के लिए एडी चोटी का जोर एक करना पडा दोनों भाइयों ने न केवल भोपाल रियासत मे विद्रोह की आग फैलाई, वरन् विदिशा सागर और होशगाबाद तक विद्रोह की पताका फहरा दी

आदिल मोहम्मद खाँ ने पद्रह रियासतों के राजाओ को अंग्रेजों के विरुद्ध जेहाद छेडने का आह्वान किया था और उन्हें एक पत्र भेजते हुए आमत्रित किया था कि "आइए हम धर्म की सेवा करे और शैतान काफिरों को नेस्तनाबूद कर दें" जिन पद्रह राजाओ और नवाब को पत्र भेजे गए

थे उनमें रीवा, नागौद, दतिया छतरपुर, चरखारी, नागपुर, झाँसी बिजावर आदि के राजा और भोपाल के नवाब शामिल थे भोपाल की नवाब सिकदर बेगम को जो पत्र लिखा गया था उसमें आदिल मोहम्मद खाँ ने लिखा था कि उसकी गतिविधियो को रोकना सर्वशक्तिमान खुदा और उसके पैगम्बर के हुक्म के विपरीत है उसने नवाब को आश्वासन दिया कि उसकी मशा भोपाल में शाति भग करना नहीं वरन् काफिरों (अर्थात् अग्रेजों) को 'सम्पूर्ण हिन्दुस्तान' से बाहर खदेडना है, परन्तु नवाब सिकन्दर बेगम किसी भी कीमत पर अगेजो का साथ नही छोडना चाहती थीं

अगस्त 1857 मे दोनो भाइयों ने गढी अम्बापानी पर हमला किया और पठारी रियासत पर आक्रमण की योजना बनाई फाजिल मोहम्मद और आदिल मोहम्मद 28 सितम्बर 1857 को अपने तीन सौ सहयोगियों के साथ चदपुर गाँव पहुँचे उनका इरादा पठारी के नवाब हैदर मोहम्मद खाँ पर हमला करने का था पठारी पर हमले में दोनो ओर से 6 सैनिक मारे गए और नवाब के सैनिक घबरा कर भाग गए फाजिल मोहम्मद ने भगोडों का पीछा किया और पठारी की गढी पर कब्जा कर लिया

वास्तव में जुलाई 1857 से नवम्बर 1857 तक भोपाल रियासत तथा विदिशा, सागर और होशगाबाद के अनेक हिस्सों मे विद्रोहियो का अत्यधिक दबदबा था दोनो भाई गाँव-गाँव मे आजादी की अलख जगा रहे थे वे आसपास के क्षत्रों को लूट रहे थे और उनकी शक्ति में प्रतिदिन इजाफा हो रहा था सब ओर भोपाल रियासत मे अराजकता फैली हुई थी और बेगम बडे सकट में थी नवाब ने अपने चुने हुए सिपहसालारों को एक बडी सख्या में सैनिको के साथ गैरतगज भेजा ताकि विद्रोहियो के विरुद्ध मोर्चा खोला जा सके नवाब बेगम ने दूसरा मोर्चा बेगमगज में खोला और तीसरा मोर्चा बम्होरी में खोला गया तीनों मोर्चों पर घुडसवार और पैदल सैनिक पर्याप्त सख्या में रखे गये साथ ही तोपों का भी प्रबन्ध किया गया यह तीना स्थान इस प्रकार स्थित हैं कि गढ़ी अम्बापानी का पूरा घेराव हो जाता है घिरे हुए लोगों का बच निकलना सम्भव नहीं रह जाता 7 अक्टूबर 1857 को बम्होरी के निकट राजगढी में राज्य की सेना और फाजिल मोहम्मद तथा आदिल मोहम्मद के नेतृत्व में करीब 500 विद्रोही सैनिकों के बीच मुठभेड हुई इस मुठभेड मे विद्रोहियों को भारी क्षति उठानी पडी 37 विद्रोही सैनिक मारे गए, जिनमे फाजिल मोहम्मद का जमादार भीकमसिह भी शामिल था इनके सिवाय विद्रोहियो के दो हाथी, एक घोडी, 40 हथियार और अन्य साजो सामान पर रियासती फौज ने कब्जा कर लिया जीत सुनिश्चित करने के लिए नवाब सिकन्दर जहाँ बेगम ने भोपाल के कमाडर मुरव्वत मोहम्मद खाँ को सीहोर बुलाकर फाजिल मोहम्मद खाँ के विरुद्ध सुदरत रियासती सेना की सहायता के लिए भेजा

21 अक्टूबर को गढी अम्बापानी मे घिरे हुए विद्रोहियो को सदेश भेजा गया कि वे आत्मसमर्पण कर दें परन्तु विद्रोही तो युद्ध के दृढ प्रतिज्ञ थे परिणामस्वरूप गढी के सामने चार तोपे चढा दी गईं 16 दिनों तक गढी अम्बापानी के घेराव और लगातार हमलो के बावजूद उस पर रियासती फौज कब्जा नहीं कर सकी अत गढी के नीचे स्थित तालाब का बाँध तोडकर पानी बहा दिया गया और तालाब के खाली स्थान में तोपें चढाई गईं और गढ़ी पर गोले छोडे गए तब कहीं गढी को सौंपने के लिए विद्रोही तैयार हुए 11 नवम्बर, 1857 को सैनिक, महिलाए तथा बच्चे गढी के बाहर आए और गढी की चाबियाँ रियासती फौज को सौंप दी गईं आम लोगों को रिहा कर दिया गया परन्तु विद्रोहियों को जेल भेज दिया गया

गढी अम्बापानी से रियासती फौज के घेरे से बच निकलने के बाद फाजिल मोहम्मद और आदिल मोहम्मद खाँ सागर जिले के अन्तर्गत राहतगढ पहुँच गए और इस किले पर कब्जा कर लिया 6 जनवरी, 1858 को महू से चलकर 24 जनवरी को जनरल ह्यूरोज राहतगढ आ पहुँचा और तत्काल विद्रोहियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू कर दी विद्रोहियों ने कदम कदम पर भोपाल और अग्रेजी फौजों से लोहा लिया जब अग्रेज किले की बाहरी दीवार पर गोले बरसाने में व्यस्त थे, पीछे से बानपुर के राजा मर्दन सिह ने जबरदस्त हमला किया राजा बडी बहादुरी के साथ अपने झडे फहराते हुए और उनकी फौज देशभक्तिपूर्ण गीत गाते हुए आई थी, परन्तु दुर्भाग्य से उन्हें सफलता नहीं मिली बानपुर से आने वाली मदद का बहुत भरोसा किया था, परन्तु उनकी असफलता से वे निराशा के सागर में डूब गए इसी निराशा के वशीभूत विद्रोही सैनिकों ने 28 जनवरी की रात में अत्यत दुर्गम स्थान से किले से पलायन कर दिया 29 जनवरी, 1858 की सुबह विद्रोहियों का पीछा कर अग्रेजी और भोपाली सेना करीब सौ विद्रोहियों को गिरफ्तार करने में सफल हो गई विद्रोहियों का नेता फाजिल मोहम्मद खाँ झाडियो में छुप गया था भोपाल की घुडसवार सेना ने उसे देख लिया और उसे गिरफ्तार कर लिया अग्रेजो ने विद्रोहियो के विरुद्ध क्रूरता और विद्वेष की भावना से व्यवहार किया और हेमल्टन के सुझाव पर उसे राहतगढ किले के मुख्य द्वार पर तत्काल फाँसी पर लटका दिया गया उसके साथ ही विद्रोहियों का एक और नेता कामदार खाँ भी फाँसी पर लटका दिया गया फाजिल मोहम्मद खाँ के छोटे भाई और विद्रोहियो का भोपाल रियासत में दूसरा सबसे बडा नेता आदिल मोहम्मद खाँ राहतगढ से अग्रेजो के चगुल से बच निकला वह 1 अप्रैल, 1858 को जाकर तात्याँ टोपे से मिल गया और उसने झाँसी मे रानी लक्ष्मीबाई की सहायता का प्रयास किया इस प्रकार अग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा

अक्टूबर 1857 मे विद्रोह का विस्तार होशगाबाद मडला तथा नर्मदा के कुछ दक्षिण तक हो गया 52वी

रेजीमेट के विद्रोहियों ने दमोह पर अधिकार कर लिया वहाँ के सार्वजनिक भवनो को जला दिया परन्तु डिप्टी कमिश्नर के घर को सम्भवत इसलिए नष्ट नहीं किया गया क्योकि वह एक स्थानीय निवासी की सम्पत्ति था दमोह से वे गढ़ाकोटा मे शाहगढ के विद्रोहियो के सम्पर्क मे आए. नर्मदा के दक्षिण मे बरगी की तहसील पर कब्जा कर लिया गया और सिवनी के कुछ ठाकुरों मे अशाति के चिह्न दिखाई देने लगे अतएव डिप्टी कमिश्नर ने यह उचित समझा कि उन्हे बुलाकर दृढता से समझाया जाए. उसने एक सैन्य टुकडी पहुँचा दी, ताकि आवश्यकता पडने पर उसका उपयोग बरगी के विद्रोहियो के विरुद्ध किया जा सके

नवम्बर 1857 मे मडला जिला अंग्रेजो के हाथो से लगभग निकल चुका था स्वय मडला नगर मे स्थानीय सरदारों तथा उनके अनुयायियो की विशाल सेना मार्गों पर घूम रही थी अपना गोलाबारूद समाप्त होने तथा जबलपुर लौट जाने का मार्ग अवरुद्ध देखकर डिप्टी कमिश्नर ने सिवनी जाने का निश्चय किया उसने घूमा में बहादुर सिह तथा देवीसिह के अधीन काम करने वाले विद्रोहियों के विरुद्ध कार्यवाही को सगठित किया

वीरांगना रानी अवंतीबाई

मडला जिले के स्वतत्रता आदोलन के वीर सेनानियो में रामगढ की रानी भी थी यद्यपि वह झाँसी की महारानी से कम प्रख्यात है तथापि उन्होंने अपनी मातृभूमि के प्रति जिस प्रेम तथा शौर्य का प्रदर्शन किया था, उसके कारण उन्हें हमारे देश की महानतम वीरागनाओं में स्थान मिलना चाहिए रामगढ मडला जिले की पहाडियो में स्थित एक छोटा-सा नगर है जहाँ गढा मडला के राजाओ के अधीन एक राजपूत सामत कुछ सौ गाँवो की अपनी छोटी-सी जागीर पर शासन करता था रामगढ़ के राजाओं में अतिम था लक्ष्मण सिह, जिसका सन् 1850 मे देहान्त हो गया और उसका एकमात्र पुत्र विक्रमजीत सिह उसका उत्तराधिकारी हुआ विक्रमजीत सिह का मस्तिष्क स्वस्थ नहीं था और उसे शासन करने के अयोग्य समझा गया अतएव अग्रेज सरकार ने शासन प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया और वहाँ एक तहसीलदार नियुक्त कर दिया तथा राजा और परिवार के भरण-पोषण के लिए वार्षिक वृत्ति बाँध दी यह व्यवहार अत्यत धाँधलीपूर्ण था, क्योंकि रानी (राजा लक्ष्मण सिह की पत्नी) रामगढ में एक अत्यत योग्य तथा विज्ञ महिला थी जो यदि अपने पति के नाम पर नही तो अपने पुत्र के नाम पर राज्य का प्रबन्ध कर सकती थी उसका सारा विरोध व्यर्थ गया, क्योंकि उस समय राज्य हड़पने की फिरंगी नीति चरम सीमा पर थी, परन्तु रानी सरलता से घुटने टेकने वाली नहीं थी जब उसने अपने विरोध प्रदर्शन को व्यर्थ जाते देखा तो अपने मन की करने का निश्चय किया रामगढ़ से अग्रेजो द्वारा नियुक्त तहसीलदार को निकाल भगाया और अपने राज्य का शासनसूत्र अपने हाथ मे ले लिया इसके कुछ समय पश्चात् ही उसने गढा मडला के उस राजवश के अतिम प्रतिनिधि राजा शकरशाह को जबलपुर मे दिए गए निर्दय मृत्युदण्ड का समाचार सुना, जिसके कारण कभी उसका रामगढ राज्य अस्तित्व में आया था उसके प्रति जो अन्याय किया गया था, वह गढा मडला के राजाओं के इस वश के साथ किये गये आचरण की तुलना में उसे कम कठोर ज्ञात हुआ उसने तुरन्त ही जिले के ठाकुरों और मालगुजारों से सम्पर्क स्थापित किया. इस प्रकार के अन्याय को सहन करने के स्थान पर शस्त्र ग्रहण करके अग्रेजो का विरोध क्यो न किया जाए. रानी सैनिक वस्त्र धारण कर हाथ में तलवार लेकर वह स्वय अपने सैनिकों का रणक्षेत्र में नेतृत्व करती थी. घड़ोस के अनेक जमींदारों ने उसे सहायता देने का वचन दिया

1 अप्रैल, 1858 को मडला की सेनाए रामगढ की ओर बढी इस सेना के नायक लेफ्टिनेट वार्टन ने दो ओर से आक्रमण किया. रानी और उसकी सेनाए जमी न रह सकी और उन्हें किला खाली करना पड़ा वे पास के जगल मे चले गए और वहाँ से रानी अग्रेजों के शिविर पर निरतर आक्रमण करती रहीं, परन्तु इनमें से एक आक्रमण घातक सिद्ध हुआ उसने देखा कि वह घिर गई है और उसका पकड़ा जाना निश्चित है वीरागनाओ की गौरवशाली परम्परा के अनुरूप उसने बंदी होने की अपेक्षा मृत्यु को श्रेष्ठतर समझा और क्षणमात्र मे अपने घोड़े से उतर कर अपने परिचायक के हाथ से तलवार छीनकर उसने अपनी छाती में घोंप ली जब वहाँ अग्रेज पहुँचे तब वह मरणासन्न थी सिविल सर्जन ने उसे जीवित रखने का प्रयास किया किन्तु उसकी आत्मा आजाद हो चुकी थी विजेताओ के हाथ केवल उसका निर्जीव शरीर आया अपनी प्रसिद्ध पूर्वज रानी दुर्गावती के समान उसे रणक्षेत्र में अतिम क्षण तक अपनी स्वतत्रता की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त हुई

मडला जिले के प्रतिरोधको में रामगढ का पतन सबसे अत मे हुआ था वर्ष के प्रारम्भ मे मडला का डिप्टी कमिश्नर, जो सिवनी चला गया था वहाँ के अपने साथी को सिवनी के विद्रोह के दमन मे सहायता पहुँचाकर इस जिले मे और अधिक सेना लेकर लौट आया था दोनो नेता, बहादुर सिह और देवी सिह पकड लिए गए थे तथा उन्हें फाँसी दे दी गई थी सन् 1857 के अत तक सिवनी और बरगी के आसपास का नर्मदा के दक्षिण का विद्रोह दबा दिया गया था इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा मडला पुन ले लिया गया सोहागपुर भी पुन ले लिया गया और उसकी रक्षा करने वाले विद्रोही रीवा भाग गए

नरसिंहपुर

सन् 1857 के अत तक नरसिंहपुर की घटनाएँ भी विद्रोहियों के बहुत अनुकूल रहीं नरसिंहपुर जिले पर तीन

ओर से आक्रमण हुआ उत्तर में पठान बदूकचियों तथा अन्य अनुयायियों के साथ भोपाल का नवाब अली खाँ अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और उसने तेंदुखेडा तथा बितथारी पर आक्रमण कर दिया 1842 के विद्रोह का प्रसिद्ध नेता मेहरबान सिंह नरसिंहपुर से केवल पद्रह मील की दूरी पर स्थित हीरापुर की ओर बढा पश्चिम मे जिले के दक्षिण-पश्चिम भाग को उन सेनाओं ने दबाया जो जबलपुर के बरगी परगने मे इकट्ठी हो गई थी डिप्टी कमिश्नर कप्तान टेर्नन जिन्हे कुछ माह पूर्व गेहूँ की रोटियाँ बाँटे जाने की सूचना मिल चुकी थी जिस घटना को उसने उपेक्षा से देखा था, अब उन विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध दुरूह पा रहा था जो उन मामूली दिखने वाली वस्तुओं में से फूट पड़ी थीं उसने हीरापुर मे स्थित मेहरबान सिंह की सेना पर आक्रमण कर दिया और उसे हरा दिया इसी समय उसके सहायक कप्तान वुली ने सोनार नदी पार कर ली और वहाँ पर एकत्रित सेनाओं को पराजित करने मे सफल हुआ ये दोनों अफसर नरसिंहपुर जिले के नर्मदा के उत्तर के क्षेत्र मे बढते गये और सन् 1857 के नवम्बर मास के अन्त तक उन्होने इस क्षेत्र के समस्त विद्रोह का ध्वस्त कर दिया

मदनपुर का ढिल्लनशाह, बानपुर का मर्दन सिंह

तात्यों टोप के भय से मुक्ति पाकर अंग्रेजो ने सागर नर्मदा क्षेत्र मे दमन का सिलसिला शुरू किया सर ह्यूरोज राजगढ का किला जीतने के बाद 3 फरवरी, 1858 को सागर आया और इसके बाद सागर और दमोह के बीच स्थित गढ़ाकोटा पर अधिकार कर लिया इसके पहले ही ह्यूरोज ने झाँसी जाने के लिए सागर जिले को छोडा, तब तक केवल मालथान का छोडकर जिस पर बानपुर के राजा का अधिकार था अधिकाश पुलिस चौकियों पर पुन कब्जा किया जा चुका था यह भी एक माह बाद हाथ से निकल गया जबकि सागर तथा जनरल ह्यूरोज की सेनाओं ने गढी पर आक्रमण किया और भीषण नरसंहार करते हुए मदनपुर की गढी को ले लिया रानी की मृत्यु के पश्चात् रामगढ के पतन के साथ मंडला का विद्रोह समाप्त होने लगा था अकेला सुहागपुर कुछ समय तक डटा रहा जबकि जून 1858 मे मंडला की सेना ने एक रायपुर की ओर दूसरी सीवा, की दो टुकडियों की सहायता से उस पर अधिकार कर लिया 16 मई का प्रतिरोध के प्रमुख नेताओं में से एक नरसिंहपुर जिले के मदनपुर का ढिल्लन शाह (जो सन 1842 के आन्दोलन का भी नेता रह चुका था) उस समय पकड लिया गया जब वह अपने खोये हुए मदनपुर को पुन प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था ढिल्लनशाह पर अभियोग चलाया गया और उसे फाँसी दे दी गई नरसिंहपुर के आन्दोलन को इससे धक्का पहुँचा और इसके बाद वहाँ का विद्रोह दब गया गवर्नर जनरल द्वारा क्षमादान की घोषणा इन क्षेत्रों मे मई 1858 मे प्रसारित की गई और विद्रोह करने वाले अनेक व्यक्तियों ने जो अस्थिर थे अथवा साहस खो बैठे थे इस अवसर का लाभ उठाकर आत्मसमर्पण कर दिया निमखेडा के हिम्मत सिंह तथा नरसिंहपुर मे मेहरबान सिंह जैसे कुछ अन्य अधिक दृढ प्रतिज्ञा विद्रोही वीर भागते ही रहे, परन्तु वे अधिकाशत पहाडियों व जगलों मे ही सीमित हो गये 10 अगस्त, 1858 तक सागर नर्मदा क्षेत्र का कमिश्नर इस स्थिति मे था कि वह यह प्रतिवेदन भेज सका कि "अब मैं आत्मविश्वास तथा प्रसन्नता के साथ कह सकता हूँ कि मेरे 8 जिलो के खण्ड मे शान्ति स्थापित हो चुकी है यद्यपि अभी भी कुछ नेता भागे हुए हैं, परन्तु उनके अनुयायी बहुत थोडे है और वे भी यह आशा की जाती है कि शीघ्र पकड लिये जाएगे "

होशंगाबाद

होशगाबाद मे क्राति का सूत्रपात सन् 1857 के अक्टूबर माह के प्रारम्भ मे हुआ, जब ठाकुर दौलतसिंह के नेतृत्व में एक विशाल जनसमूह ने नेमावर तहसील मे विद्रोह का झण्डा ऊँचा किया और वह सतपुरा में दृढता से जम गया यद्यपि अंग्रेजी सेनाएँ उन्हे कुछ समय के लिए किले से बाहर निकालने में सफल हो गयी थीं तथापि वे पुन उस पर अधिकार प्राप्त कर सके अगले वर्ष के जनवरी माह के अत मे ही होशगाबाद जिले को विद्रोहियों से मुक्त किया जा सका

यह उल्लेखनीय है कि सागर नर्मदा क्षेत्रो के प्रतिरोध के केन्द्र ठीक वही स्थान थे जो सन् 1842 के प्रारम्भिक विद्रोह में अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खडे हुए थे स्वय सागर और दमोह, नरसिंहपुर, चावरफाटा तेंदुखेडा एव हिरापुर यह सब वे प्रसिद्ध स्थान थे जहाँ के ठाकुरो और मालगुजारो ने 15 वर्ष पूर्व परतन्त्रता और अधीनता की स्थिति स्वीकार करने से इनकार कर दिया था जब वे पुन स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रयास मे विद्रोहियों की अगली पक्ति में आ खडे हुए थे पिछले विद्रोह के मदनपुर के ढिल्लनशाह जैसे नेताओं का इस बार भी क्राति में महत्वपूर्ण स्थान रहा, परन्तु जहाँ तक सगठन का सम्बन्ध है उन्हें बहुत कुछ सीखाना था इसमे सदेह नहीं की वे असाधारण साहस और दृढता वाले सैनिक थे, परन्तु उन्होंने अंग्रेजो की सुसगठित सेना के विरुद्ध असगठित आक्रमण कर अपने आपको नष्ट कर लिया

मालवा में विद्रोह

पहली जुलाई 1857 को सुबह ही इन्दौर रेसीडेंसी मे विद्रोह भडक उठा कर्नल ड्यूरेण्ड ने इदौर रेसीडेंसी के बहुमूल्य खजाने को हटाकर वहाँ से महू-दुर्ग मे भेजने के आदेश दिए थे परन्तु इदौर की सैन्य टुकडियो ने उसे हटाने से इनकार कर दिया जान डिकिन्सन के अनुसार खजाने में उस समय सिक्कों के रूप मे एक लाख तीस हजार पौंड तथा शासकीय पत्रों के रूप मे दो लाख चालीस हजार पौंड सुरक्षित रखे हुए थे कर्नल ड्यूरेण्ड उस दिन

प्रातः अपनी मेज के पास बैठा कुछ लिख रहा था कि उसे असाधारण शोरगुल सुनाई पडा जैसे ही वह रेसीडेंसी की सीढ़ियो के पास आया, होल्कर की तीन तोपें दागी गईं और भोपाल सैन्य दल की लाइनों में गोलियों की बौछार की गई रेसीडेंसी पर आक्रमण प्रात 8·40 पर होल्कर सेना द्वारा किया गया इस विद्रोह के महत्वपूर्ण नेता सआदत खान, वश गोपाल, अर्राराव सिह, भागीरथ, नवाब वारिस मुहम्मद खान, मौलवी अब्दुल समद तथा अन्य व्यक्ति थे आठ घुडसवारों के साथ सआदत खान इदौर की ओर से अपने घोडे पर चिल्लाया हुआ आ रहा था—"तैयार हो जाओ, आगे बढो, साहिबों को मार डालो, यह महाराज का आदेश है " दरबार की टुकडियों ने तुरत इसका उत्तर दिया और तोपचियों ने अपनी तीन तोपें निशाने पर साधीं उन्होने भोपाल के सैन्य दल पर गोले बरसाए पैदल सेना और नागरिकों ने मिलकर 29 व्यक्तियों की हत्या कर दी, जिसम यूरोपियन तथा आग्ल भारतीय पुरुष, महिलाए एव बच्चे थे कर्नल ट्रेवर्स ने रेसीडेंसी को बचाने का प्रयास किया, किन्तु केवल पाँच व्यक्तियों ने उसका साथ दिया और वे होल्कर क तोपचियों के बीच घुस गए. उन्होंने तोपचियों को भगा दिया, सआदत खाँ को घायल कर दिया और कुछ क्षणों के लिए तोपों पर अधिकार कर लिया, किन्तु शीघ्र ही होल्कर की पैदल सेना आ गई और उसने तोपों पर पुन कब्जा कर लिया वे तोपों को रेसीडेंसी के सामने ले गए और पुन गोलाबारी प्रारम्भ कर दी ट्रेवर्स ने तोपखाने पर कब्जा करने का पुन प्रयास किया परन्तु सफल न हो सका, उसके सैनिकों ने उसका साथ नहीं दिया ट्रेवर्स को पैदल सेना की ओर से भी निराशा ही हाथ लगी भोपाल सैन्य दल महिदपुर कन्टिजेन्ट तथा भील सैनिकों ने लडने से इनकार कर दिया रेसीडेंसी की रक्षा करने के लिए अब केवल 14 भारतीय तोपची, 8 अधिकारी, 2 डॉक्टर 2 सार्जेन्ट तथा 5 यूरोपियन नागरिक थे महू स्थित यूरोपीय तोपखाना टुकडी भी नहीं पहुँची अत निराश होकर ड्यूरेण्ड ने तुरन्त ही रेसीडेंसी को छोडने का निश्चय किया महिलाओं तथा बच्चों को रेसीडेंसी के पिछले दरवाजे से निकाला गया और उन्हें वैगनों तथा तोपगाडियों में बिठाया गया इस पलायन में तोपों के साथ रिसाले के कुछ व्यक्तियों और पैदल सेना के कुछ सैनिकों ने उनका अनुगमन किया

ड्यूरेण्ड के रेसीडेंसी से चले जाने के बाद विद्रोहियों ने रेसीडेंसी खजाने को लूट लिया और रेसीडेंसी पर आधिपत्य स्थापित कर लिया विद्रोही नगर से बलपूर्वक गाडियाँ ले गए और रेसीडेन्सी के लगभग 9 लाख रुपए, अनेक हाथी और गाडियाँ लेकर 4 जुलाई, 1857 की सुबह 3 बजे इदौर से ग्वालियर तथा आगरा के लिए रवाना हुए

महू मिलिट्री स्टेशन में विद्रोह

विद्रोह का दूसरा महत्वपूर्ण केन्द्र महू का मिलिट्री स्टेशन था ज्यो ही मेरठ दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर विद्रोह के समाचार महू में प्राप्त हुए, केप्टन हगरफोर्ड ने महू की सुरक्षा के लिए आवश्यक प्रबध कर लिए थे बैरकों के सामने तोपखाना लगाया गया और सैनिकों तथा घुडसवारों को सूचना मिलते ही आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार रखा गया कर्नल प्लाट ने यूरोपीय परिवार के बगलों के सामने 23वीं भारतीय पैदल सेना के रक्षक तैनात कर दिए पहली जुलाई की सुबह इदौर की ओर से तोप के धमाके सुने गए अत कर्नल प्लाट इदौर से होल्कर की टुकडियो द्वारा किए जाने वाले सम्भावित आक्रमण से छावनी की रक्षा के लिए प्रबध करता रहा उस शाम यूरोपीय महिलाओ तथा बच्चों को किले के सुरक्षित आगन में चले जाने का आदेश दिया गया

पहली जुलाई की रात 10·15 बजे भारतीय टुकड़ियों के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया 23वीं भारतीय पैदल सेना के अनेक अधिकारी ग्रेनिडियर कम्पनी की लाइनों के सामने बैठे हुए बातें कर रहे थे कि उसी समय बायीं ओर की रिसाला लाइनों से पहले एक गोली और उसके बाद अनेक गोलियों के चलने की आवाज सुनाई दी लाइनो की ओर से उन पर बरसाई जा रही गोलियों से परेड मैदान गूज रहा था, अत अधिकारियों ने भागकर किले में शरण ली कर्नल प्लाट तथा उसका एडजूटेन्ट कैप्टन फेगन के साथ-साथ ही घोडे पर सवार होकर 23वीं भारतीय पैदल सेना की लाइनों में गए प्लाट सैनिको ने उन दोनों को गोली मार दी उसी समय फर्स्ट लाइट केवेलरी के मेजर हेरिस को उसके ही सैनिकों द्वारा मार डाला गया इस प्रकार तीन अग्रेज अधिकारी महू के विद्रोही सैनिकों द्वारा मार डाले गए

इस बीच कैप्टन हगरफोर्ड अपनी तोपों के साथ परेड मैदान में पहुँच गया उसने अपनी दोनों तोपों से लाइनो पर गोलीबारी करने का आदेश दिया और वहाँ रहने वालो को वहाँ से भागने के लिए विवश कर दिया सभी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति छोडकर छावनी से बाहर भागे इसके पश्चात् विद्रोही रात भर महू नगर में लूटपाट मचाते रहे और उन्होंने रेजीमेंट के भोजनालय तथा अनेक अधिकारियो के बगलो में आग लगा दी प्रात काल वे शासकीय खजाना लूटने के विचार से इन्दौर रेसिडेन्सी के विद्रोहियों में शामिल होने के लिये रिसाले के साथ इदौर की ओर अग्रसर हुए उसके पश्चात् वे इदौर के विद्रोहियो के साथ मिलकर ग्वालियर आगरा तथा दिल्ली की ओर बढे महू में विद्रोहियों का नेता मुराद अली खान था

राजा बख्तावर सिंह

अग्रेजो के खिलाफ विद्रोह की चिंगारी प्रज्वलित होने पर अमझेरा का राजा बख्तावर सिह मालवा का पहला शासक था, जिसने कम्पनी के शासन का अत करने का बीडा उठाया 2 जुलाई, 1857 को अमझेरा का वकील विमनराव व्यास भोपाल एजेंसी से दोपहर को 4 बजे रवाना हो गया उसने एजेंसी के पोलिटिकल एजेंट कैप्टन हचिन्सन

से कोई इजाजत नही ली 3 जुलाई, 1857 को प्रात काल अमझेरा का दीवान गुलाब राय एक सशस्त्र टुकडी के साथ भोपाल आ पहुँचा दीवान का अनुगमन सदला के ठाकुर ने अपनी दो तोपो के साथ किया दोनों टुकडियों ने मिलकर एजेंसी के कर्मचारियो को बधक बना लिया और समस्त शासकीय रिकॉर्ड निकाल लिया कुछ रिकॉर्ड फाड दिए गए और कुछ को जला दिया गया ब्रिटिश ध्वज भी फाडकर एजेंसी की इमारत से हटा दिया गया कैप्टन हचिन्सन और उसके साथियो का भोपाल से लगभग 17 मील की दूरी तक एक घुडसवार टुकडी द्वारा पीछा किया गया इसका नेतृत्व अमझेरा के एक नायक मोहनलाल द्वारा किया गया था लौटने पर घुडसवारों ने भोपाल के पोस्ट ऑफिस, दवाखाने तथा एजेंसी भवन को लूटा और सारा सामान हाथी एव बैलगाडियों पर लादकर अमझेरा ले गए

11 जुलाई को कैप्टन हचिन्सन होल्कर की सेना के कमाडर बख्शी खुमानसिह के साथ भोपाल लौट आया कैप्टन हगरफोर्ड के सुझाव पर स्पष्टीकरण माँगा और भोपाल से लूटा गया सारा साजो सामान लौटाने का आग्रह किया राजा ने यह कहकर टाल दिया कि उसके आदेशों को अनदेखा कर दीवान गुलाबराय, चीफ सेक्रेटरी बशीर उल्लाह खान तथा वकील चिमनराव व्यास ने लूटपाट मचाई और एजेन्सी की सम्पत्ति को नष्ट किया, परन्तु बख्शी खुमानसिह के दबाव के कारण राजा को इन्हे पोलिटिकल एजेन्ट के सुपुर्द करने को बाध्य होना पडा

घर का किला अपने अधिकार मे लेने के पश्चात् कर्नल ड्यूरेण्ड ने कैप्टन हचिन्सन के नेतृत्व मे सेना की एक टुकडी भेजी जिसका काम अमझेरा के विद्रोहियो का दमन करना तथा लालगढ के किले पर अधिकार स्थापित करना था लालगढ का किला अमझेरा से 7 मील दक्षिण पश्चिम में स्थित था तथा अमझेरा से वहाँ तक पहुँचने का मार्ग अत्यधिक दुर्गम था बडी कठिनाई से ब्रिटिश सेना वहाँ तक पहुँच सकी उनके पहुँचने के पूर्व ही अमझेरा के विद्राही सैनिक घने जगलो की ओर प्रस्थान कर चुके थे किले में केवल 20 व्यक्ति शेष रह गए थे जिन्होंने आत्म समर्पण कर दिया ब्रिटिश सेना ने किले को काफी हद तक ध्वस्त कर दिया परन्तु उन्हे कोई खजाना न मिल सका

अन्त में राजा बख्तावर सिह को अपने ही सहयोगियो के विश्वासघात के कारण 11 नवम्बर 1857 को लालगढ किले के पास के जगल में गिरफ्तार कर लिया गया उन्हे हैदराबाद कटिनजेट घुडसवार सेना की टुकडी के सरक्षण में महू लाया गया तथाकथित मुकदमा चलाने के बाद राजा बख्तावर सिह को इदौर में 10 फरवरी 1858 को फाँसी द दी गई इस प्रकार राजा ने अंग्रेजो के विरुद्ध लडते लडते अपने प्राणो को न्यौछावर कर दिया उनके सह योगियो दीवान गुलाबराय ठाकुर भवानी सिह, मोहनलाल कामदार वकील चिमनराव को पूर्व मे ही दण्डित किया जा चुका था

आगरा अंग्रेजो का एक मिलिट्री स्टेशन था जहाँ ग्वालियर कटिनजेंट की 5वी पैदल टुकडी तैनात थी वहाँ के सैनिको को ज्यो ही इन्दौर के विद्रोहियों के सदेश वाहकों से समाचार मिला, उन्होंने 4 जुलाई 1857 को प्रात काल ही विद्रोह का झडा खडा कर दिया उन्होंने वहाँ के एडजूटेंट तथा दो अन्य यूरोपियन अधिकारियों को गोली से मार डाला विद्रोह की खबर पाकर कमाडिंग ऑफिसर कैप्टन कार्लर तथा दूसरे यूरोपियन होशगाबाद की ओर भाग खडे हुए विद्रोही सैनिकों ने अब आगरा के मिलिट्री स्टेशन पर अपना पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया

सीहोर, भोपाल राज्य की ब्रिटिश सैनिक छावनी थी जहाँ पोलिटिकल एजेंट का निवास था तथा उसका मुख्यालय भोपाल में था कर्नल ड्यूरेण्ड को सलाह दी कि वह सीहोर से तुरन्त प्रस्थान कर देवें क्योकि वहाँ के सैनिक विद्रोह करने को उद्यत है और अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा में है अत ड्यूरेण्ड अपने साथियों के साथ सीहोर से रवाना हो गया 9 जुलाई, 1857 को पोलिटिकल एजेन्ट मेजर रिचर्ड्स तथा 20 यूरोपियन सीहोर छोडकर चले गये इसके तुरन्त बाद विद्रोही सैनिको ने छावनी पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया उन्होने बगलों, पोस्ट ऑफिस और गिरजाघर को लूटा तथा जुलाई से नवम्बर 1857 तक सीहोर और आसपास के इलाके पर वर्चस्व बनाए रखा

विद्रोही शुजात खान

मेजर रिचर्डस् ने सीहोर छोडते समय छावनी का प्रशासन नवाब सिकन्दर बेगम के अधिकारियों के सुपुर्द कर दिया था परन्तु व्यावहारिक रूप से उनका कोई वर्चस्व न रहा सीहोर के सैनिक सिकन्दर बेगम की आज्ञाओं की निरन्तर अवहेलना करते रहे एक बार सिकन्दर बेगम ने सीहोर के सैनिको को आज्ञा दी कि वे विद्रोही सेनानायक शुजात खान के विरुद्ध आगे बढे शुजात खान ने बेरछा के प्रमुख अंग्रेज अधिकारी को मार डाला था तथा वहाँ के खजाने को लूट लिया था परन्तु सीहोर के सैनिको ने इस आज्ञा को मानने से इनकार कर दिया 6 अगस्त 1857 को सीहोर घुडसवार टुकडी के रिसालदार ने विद्रोह का झडा खडा कर दिया और कम्पनी की तोपो पर अधिकार जमा लिया तदनतर सीहोर के विद्रोही सैनिक अन्य विद्रोही सैनिको के साथ मिलकर कानपुर की ओर चल दिए जहाँ उन्होने नाना साहब के नेतृत्व मे अंग्रेजो के साथ बहादुरी-पूर्वक लडाई लडी सेन्ट्रल इडिया मे विद्रोह का दमन करते हुए सर ह्यूरोज तथा सर रॉबर्ट हेमिल्टन सेन्ट्रल फील्ड फोर्स के साथ गहू से 6 जनवरी 1858 को रवाना होकर 8 जनवरी को सीहोर जा पहुँचे वहाँ उन्होने भोपाल कटिनजेट के विद्रोही सैनिको पर सैनिक अदालत मे मुकदमा चलाकर दडित किया इस सक्षिप्त मुकदमे मे उन्हें बचाव का कोई अवसर नहीं दिया गया दडित किए गए सैनिको की सख्या इस प्रकार थी 154 को फाँसी 516 को नौकरी से बरखास्तगी सख्या 18 को आजीवन निर्वासन

महिदपुर का विद्रोह

महिदपुर मालवा का एक महत्वपूर्ण ब्रिटिश सैनिक केन्द्र था. इदौर रेसीडेसी मे विद्रोह की खबर ने वहाँ के सैनिको को बहुत उत्तेजित कर दिया था अत महिदपुर कटिनजेट के कमांडर मेजर टिमनिस ने अपने अधीनस्थ यूरोपियन अधिकारियों के साथ नीमच की ओर प्रस्थान कर दिया परन्तु कैप्टन शावर्स ने, जो उस समय मेवाड़ का कार्यवाहक पोलिटिकल एजेट था, मेजर टिमनिस को सलाह दी कि वह महिदपुर छावनी लौट आवे, क्योंकि वह एक महत्वपूर्ण सैनिक केन्द्र था मेजर टिमनिस महिदपुर लौट आया और सम्भावित खतरे का मुकाबला करने की दृष्टि से आवश्यक तैयारियाँ प्रारम्भ कर दीं

इसी अवधि में शाहजादा फीरोजशाह सितम्बर 1857 के प्रारम्भ में महिदपुर आया और उसने महिदपुर के एक पूर्व सूबेदार के पुत्र मिर्जा को विद्रोहियों का नेता घोषित कर दिया

मेजर टिमनिस ने स्थिति का आकलन किया और पाया कि आलोट और आगरा में कुछ विलायती विद्रोह करने पर आमदा हैं इसके अतिरिक्त उन्हेल (महिदपुर से 10 मील दूर) मे मेवाती और बिलायती की एक बडी सेना महिदपुर के लिए निरतर खतरा बनी हुई थी विद्रोही नेता ऐरासिह सैनिको को छावनी पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था उज्जैन में सिन्धिया का सूबेदार बाबा आपटिया भी गुप्त रूप से विद्रोहियों को विभिन्न सूचनाए भेज रहा था, परन्तु मेजर टिमनिस ने ऐसे खतरे के समय महिदपुर छोडना उचित न समझा

अतत 8 नवम्बर, 1857 को प्रात काल 7.30 पर विलायतियों, मेवातियों और महिदपुर के नागरिकों ने छावनी पर आक्रमण कर दिया आक्रमणकारियों की सख्या लगभग 2 हजार थी और वे उन्हेल, उज्जैन तथा खाचरोद की ओर से आए थे जब कम्पनी के सैनिक विभिन्न दिशाओं से किए जाने वाले आक्रमण में फँसे हुए थे तब महिदपुर के नागरिकों ने छावनी के अनेक बगलों में आग लगा दी लगभग 8 घटे तक युद्ध चलता रहा जिसमें विद्रोही सैनिकों ने कम्पनी की सभी तोपों को अपने अधिकार में कर लिया अत में मेजर टिमनिस निराश होकर लेफ्टिनेट डायसार्ट तथा 35 घुडसवार के साथ बडनगर की ओर भागने को बाध्य हुआ शेष सैनिक महिदपुर के विद्रोही सैनिकों से जा मिले और निरन्तर सघर्ष करते रहे महिदपुर में विद्रोहियों की इस अभूतपूर्व सफलता का प्रभाव दश के अनेक भागो में उत्साहवर्धक सिद्ध हुआ एक उल्लेखनीय बात यह है कि महिदपुर कटिनजेट का एक कमाडर शेख रहमतउल्ला विद्रोही सैनिको को लगातार सलाह देता रहता था जो इदौर और महू के सैनिकों के निरन्तर सम्पर्क में बना रहा

सरदारपुर की छावनी

सरदारपुर की छावनी में भी विद्रोह की भावनाए प्रज्वलित हो रही थीं, परन्तु वे धार और अझमेरा के विद्रोही सैनिको के सहयोग के बिना सशस्त्र विद्रोह हेतु तैयार न थे 10 अक्टूबर, 1857 को ऐसा अवसर उपस्थित हो गया और उन्होंने खुला विद्रोह कर दिया प्रात काल 6 बजे विलायतियों ने भोपाल स्थित बगलों को जलाना तथा छावनी को लूटना प्रारम्भ कर दिया भील सेना के सूबेदार ने खतरे का बिगुल बजाया, परन्तु 130 से अधिक सैनिक एकत्रित न हो सके सूबेदार ने उन्हे 4 टुकडियो में बाँटकर लाइनों के रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया लगभग 8 बजे विलायती लाइनों की ओर बढने लगे 50 भील सिपाहियों की एक टुकड़ी ने उनका सामना करते हुए गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया कुछ समय के लिए विलायती विद्रोही गन्ने के खेतों की ओर भाग गए, परन्तु शीघ्र ही उन्होंने भोपावर की एक तोप की सहायता से लाइनों पर आक्रमण कर दिया उसी समय विद्रोहियों का एक समूह राजगढ कस्बे से बाहर आ निकला और माही नदी के किनारे-किनारे चलकर सरदारपुर की छावनी पर आक्रमण कर दिया भील सैनिकों का मुकाबला करने मे अपने आप को असमर्थ पाने लगे अन्तत वे छावनी के उत्तर की ओर पहाडी के ढलानो से उतरकर भाग खडे हुए

भील सिपाहियो के भाग जाने पर राजगढ और भोपावर के विद्रोही सैनिकों का छावनी पर पूर्ण अधिकार हो गया उन्होंने छावनी को लूटना प्रारम्भ कर दिया लूट का जितना अधिक सामान वे ले जा सकते थे, ले गये और शेष को उन्होने या तो नष्ट कर दिया या जला डाला

मानपुर में बगावत

मानपुर, इन्दौर से 24 मील दूर डेप्यूटी भील एजेंसी का मुख्यालय था 1 जुलाई को प्रात इन्दौर से तोपों की आवाज मानपुर मे स्पष्ट सुनाई दे रही थी अत मानपुर के डेप्यूटी भील एजेन्ट लेफ्टिनेण्ट गार्डन कमिग ने अपने आदमियों को इन्दौर और महू की ओर होने वाली घटनाओ की जानकारी लेने भेजा विद्रोह की जानकारी मिलने पर उसने तुरन्त अपने सैनिकों को अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित कर किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रखा लगभग मध्यरात्रि को कुछ वफादार व्यक्तियो ने उसे सूचना दी कि मानपुर मे विद्रोह की सम्भावना है अत वे सुरक्षित स्थान पर चले जावे तब वे मानपुर के घने जगल में शीतलामाता की गुफाओं मे उनके साथ चल दिए ताकि विद्रोहियो से उनकी रक्षा हो सके इन गुफाओ मे अपने साथियो के साथ उन्होने कुछ दिन व्यतीत किये परन्तु आसपास के विद्रोह की जानकारी भी प्राप्त करते रहे लेफ्टिनेंट कमिग के गुफाओ मे पहुँचने के बाद भोपाल कन्टिजेंस के सिपाहियो ने कम्पनी के खजानो को लूट लिया और वहाँ से रवाना हो गये क्षेत्र के भीलो ने लूटपाट

मचाना प्रारम्भ कर दिया और अंग्रेजों के लिए कठिन परिस्थितियाँ पैदा कर दी भीलों के एक नेता भीमा नाइक ने होल्कर तथा बडवानी के राज्यों में बडी लूटपाट मचाई और खानदेश तक अपना आतंक फैला दिया बडवानी के राजा ने भीलों के आतंक का मुकाबला करने में अपने आप को असमर्थ पाया

धार में विद्रोह

धार के अल्पवयस्क शासक आनंदराव पवार (तृतीय) के राज्यकाल में कई विलायतियों और मकरानियों को धार राज्य की सेवा में लिया गया था इनका प्रभाव धीरे-धीरे बढने लगा और उन्होंने 31 अगस्त, 1857 को धार के किले पर आधिपत्य स्थापित कर लिया किले का खजाना, तोपें तथा अनाजों के गोदाम उनके नियन्त्रण मे आ गये राज्य का दीवान रामचन्द्र बापू इन परिस्थितियों को देखकर भयभीत हो उठा तथा उसने कर्नल ड्यूरेण्ड से सहायता की प्रार्थना की ड्यूरेण्ड ने दीवान को सलाह दी की वह इन विद्रोहियों को किले से बाहर खदेडने मे अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करे, परन्तु दीवान अपनी असमर्थता के प्रति पूर्ण सतर्क था और उन्हें किले से बाहर निकालने का प्रयास नहीं किया इन विदेशी सैनिकों की शक्ति मे निरन्तर वृद्धि होती रही, क्योंकि कई स्थानीय व्यक्ति उनके समूह में शामिल हो गये जुलाई 1857 तक इनका धार राज्य में पूर्ण वर्चस्व बना रहा अक्टूबर तक इनकी सख्या 800 से बढकर 1500 तक पहुँच गई इन्होंने आसपास के प्रदेश में लूटमार मचा दी

20 अक्टूबर, 1857 को अंग्रेज सैन्य दल महू की छावनी से रवाना होकर गुजरी के मार्ग से धार पहुँचा सैनिकों ने 24 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक धार के किले द्वार पर घेरा डाले रखा और 31 अक्टूबर की रात्रि को किले पर आधिपत्य स्थापित कर लिया, परन्तु किले के सैनिक जिनकी सख्या लगभग 700 थी एक गुप्त मार्ग से किले को ध्वस्त करने का आदेश दे दिया तथा धार राज्य को अपने अधिकार में ले लिया 3 नवम्बर को कैप्टन हचिन्सन को धार राज्य का अधिकार सौंप दिया

इतिहास के घटनाक्रम मे 1857 का महान् विप्लव सामन्तवादी वर्ग द्वारा विदेशी शासन को उखाड फेकने और देश की स्वतत्रता बहाल करने के अन्तिम प्रयास की सीमा रेखा है भू स्वामी और रजवाडे वर्ग की ओर से राष्ट्र के सम्मान तथा गौरव को स्थापित करने का यह एक साहस पूर्ण प्रयास था यद्यपि इसका नेतृत्व और निर्देशन स्वत्वाहरित वर्गों द्वारा किया गया था तथापि यह राष्ट्रीय स्वतत्रता प्राप्ति का संघर्ष था यह संघर्ष सफल नहीं हो सका इसका कारण वे तत्व थे जो स्वय इस संघर्ष की प्रकृति में ही निहित थे जनता और जननेताओं को इसके लिये कुछ समय लगा जब वे इस सफलता द्वारा सिखाये गये पाठ से लाभ उठा सके

राष्ट्रीय पुनर्जागरण और स्वतंत्रता संग्राम (द्वितीय चरण)

नरसिंहगढ के राजकुमार कुँवर चैनसिंह ने अंग्रेजो की कुटिलता और साम्राज्य लिप्सा के विरुद्ध 1824 मे तलवार उठाकर सशस्त्र क्रांति की जो चिंगारी सुलगाई थी और जो 1857 मे दावानल बनकर धधक उठी थी यद्यपि वह अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो सकी थी लेकिन उसने राष्ट्रीय पुनर्जागरण तथा स्वातन्त्र्य चेतना की ऐसी ठोस नींव रखी थी, जो शनै-शनै पुष्ट होते हुए अन्तत 1942 की ऐतिहासिक जनक्रान्ति मे परिणित हो गई और इसी समूची पृष्ठभूमि का सुपरिणाम 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्रता के सूर्योदय के रूप में प्रतिफलित हुआ प्रथम स्वातन्त्र्य महासमर के रणबाकुरों के शौर्य की घर घर कही सुनी जा रही कहानियो ने त्याग और बलिदान की महान् पर्यावरण की सरचना की इनमें सर्वाधिक प्रेरणास्पद शौर्यगाथा रही झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की "खूब लडी मर्दानी वाली वह तो झाँसी वाली रानी थी" 1857 की क्रांति की विफलता और अंग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा दमन की बर्बर कार्यवाहियों ने भारतीयों का मनोबल जरूर तोडा था, लेकिन यह एक अल्पकालिक प्रतिक्रिया थी स्वतत्रता की सहज स्वाभाविक चाह को फिरगी तोड नही पाए विद्रोह के शोलो पर समय की भस्मी अवश्य पड गई थी, लेकिन शोले बुझे नहीं थे भीतर ही भीतर सुलग रहे थे स्वतत्रता संग्राम के समानान्तर चले अनाम लोग चेतना आदोलन से जनमानस प्रेरणा ले रहा था और समग्र सामाजिक जागृति का नया परिवेश गढा जा रहा था राजा राममोहन राय और महर्षि दयानन्द सरस्वती के समाज सुधार अभियानो को राष्ट्रीय पुनर्जागरण की पृष्ठभूमि तैयार करने का बडा श्रेय जाता है राजा राममोहन राय ने जहाँ अमानुषिक कुरीतियों के विरुद्ध लोक मानस को झकझोरा वही दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड और अन्धविश्वास के दलदल में धँसे मरणासन्न समाज को नवजीवन प्रदान किया फिर राष्ट्रमच पर लोकमान्य बालगगाधर तिलक का अवतरण हुआ, जिन्होने "स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" का महामन्त्र देकर भारतीय जन की सुषुप्त चेतना को उद्यत कर संघर्ष का मार्ग दिखाया प्रस्ताव व प्रार्थना के तौर तरीको मे तिलकजी को यकीन नही था और वे मानते थे कि स्वतन्त्रता माँगने से नहीं मिलती है यह तो मनुष्य मात्र का नैसर्गिक अधिकार है जिसे अर्जित करने के लिए सर्वस्व दाव पर लगाकर संघर्ष करने का एकमेव मार्ग है तब लाल बाल पाल की त्रिमूर्ति लाला लाजपत राय बाल गगाधर तिलक एव विपिनचन्द्र पाल राष्ट्रीय पुनर्जागरण की अगवाही कर रही थी तिलक युग की समाप्ति के साथ गाधी युग का प्रादुर्भाव होता है जिन्होने भारतीय लोक मानस को पढा समझा और सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलकर अपने साथ अभिन्न रूप से एकीकार किया लोकमान्य तिलक ने जनसचार और सम्प्रेषण का अद्भुत

सामूहिक उपक्रम गणेशोत्सव मनाने के रूप में 1893 मे प्रारम्भ किया जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण का एक अच्छा आयाम सिद्ध हुआ. महाराष्ट्र में तो यह सम्वेत मच बना ही मध्य प्रदेश और अन्यत्र ही गणेशोत्सव के रूप मे सास्कृतिक पर्व की परम्परा बनी जो सामूहिक चेतना की पाठशाला भी रही गाधीजी ने नमक जैसी साधारण-सी, लेकिन घर-घर के लिए अपरिहार्य वस्तु को सत्याग्रह का विषय बनाकर समूचे भारत को उद्वेलित कर दिया था इस शताब्दी मे मानवता का ऐसा कोई दूसरा महानायक नही जन्मा स्वतत्रता की पृष्ठभूमि की सरचना में भारतमाता की और भी महान् सपूतो का यशस्वी अवदान रहा भोपाल के मौलाना बरकत उल्ला निर्वासन मे भारत की प्रथम अन्तरिम सरकार के प्रधानमत्री बने. (1 दिसम्बर, 1915) जिसने विदेशो मे भारत की सफलता का प्रबल पक्ष रखा अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, रासबिहारी बोस, लाला हरदयाल, भगतसिह, सुखदेव, राजगुरु, रामप्रसाद बिस्मिल, राजा महेन्द्र प्रतापसिह, वीर सावरकर, अशफाक उल्ला आदि के तपोनिष्ठ कृतित्व ने बलिदान के पथ पर अनेक क्रांतिकारियों को चलने की प्रेरणा दी फिरगियों का दिल दहलाया और समाज को जाग्रत किया किसानो और मजदूरों के हित मे कई आदोलन चलाए गए सशस्त्र सघर्ष की अतिम महागाथा नेताजी सुभाषचद्र बोस ने लिखी, जिन्होंने आजाद हिन्द फौज का सगठन कर अग्रेजी हुकूमत के खिलाफ युद्ध छेडा नेताजी का उद्घोष था "तुम मुझे खून दो, मै तुम्हें आजादी दूँगा" मत भिन्नता के बाद भी नेताजी के मन मे महात्मा गाधी के प्रति गहरी श्रद्धा थी और सबसे पहले उन्होने ही गाधीजी को राष्ट्रपिता कह कर सम्बोधित किया था दरअसल, भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक महासागर का स्वरूप लिए हुए था, जिसमे विभिन्न धाराओ के रूप में कई महानद और नदियॉ समाहित थी और सभी का सम्मिलित परिणाम है हमारी आजादी और उसके महानायक होने का गौरव मिला महामानव राष्ट्रपिता गाधी को

मध्य प्रदेश, देश के हृदय प्रदेश मे स्वतत्रता सग्राम की ये सभी धाराए सघर्षशील रहीं यहाँ के वनवासियों ने आजादी के महायज्ञ मे अपनी आहुति दी यहाँ की रियासतो की जनता ने और कई खुद्दार राजपरिवारो ने पराधीनता की बेडियो को काटने के लिए सर्वस्व दाँव पर लगाया यहाँ के रजवाड़ो ने प्रजा को दोहरी गुलामी का जुआ उतार फेंकने के लिए जूझना पडा यहॉ के किसानो ने लडाई लडी असहयोग आदोलन, झण्डा सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आदोलन, नमक सत्याग्रह जगल सत्याग्रह और 1942 की जन क्राति में मध्य प्रदेश की सक्रिय भागीदारी रही चन्द्रशेखर आजाद की क्रातिकारी गतिविधियों का केन्द अगर ओरछा था, तो मगनलाला बागडी की हिन्दुस्तानी लाल सेना ने इसी धरती पर सशस्त्र सग्राम छेडा था लोकमान्य तिलक, राष्ट्रपिता महात्मा गाधी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस राष्ट्र नायक जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, देशरत्न डॉ राजेन्द्र प्रसाद, डॉ असारी, मौलाना आजाद आदि महापुरुषो ने मध्य प्रदेश के स्वातंत्र्य समर को प्रेरित किया वहीं कर्मयोगी तपस्वी सुन्दरलाल ने सेनानियो का मार्गदर्शन किया प रविशकर शुक्ल, प सुदरलाल शर्मा, द्वारका प्रसाद मिश्र ठाकुर निरजन सिह, सेठ गोविन्ददास, हरिविष्णु कामथ ठाकुर प्यारेलाल, ई राघवेन्द्र राव महत लक्ष्मी नारायणदास सुभद्रा कुमारी चौहान, वामनराव लाखो घनश्याम सिह गुप्त, भाई अब्दुल गनी, विष्णुदत्त शुक्ल, ब्यौहार राजेन्द्र सिह, बालमुकुन्द त्रिपाठी, ठाकुर लक्ष्मण सिह चौहान काशीप्रसाद पाडे, चौ शकरलाल दुबे नारायण राव मेघावाले, कप्तान अवधेश प्रताप सिह, लाल यादवेन्द्रसिह राजभानु सिह तिवारी, लालराम वाजपेयी चतुर्भुज पाठक बृजलाल बियाणी, श्यामनारायण कश्मीरी, गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, लीलाधर जोशी, श्यामलाल पाडवीय, जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द्र, यशवत सिह कुशवाह, कृष्णकात व्यास मिश्रीलाल गगवाल, कन्हैयालाल वैद्य, मास्टर लाल सिह बैजनाथ महोदय, कन्हैयालाल खादीवाला दुर्गाशकर मेहता और अन्य अनेक अग्रणी स्वतत्रता सग्राम सेनानियो ने मध्य प्रदेश में यत्र-तत्र-सर्वत्र आजादी की अलख जगाई सग्राम का सचालन किया और नेतृत्व किया

स्वतत्रता की बलि वेदी पर अनेक वीरो ने अपने प्राणों की आहुति दी-हँसते-हँसते, गर्व से सीना ताने और राष्ट्रीय पताका की आन-बान-शान को गिरने नहीं दिया, झुकने नही दिया मिटने नही दिया स्वतत्रता सग्राम के ऐसे स्वर्णिम अध्याय के कुछ उजले पृष्ठ इस प्रकार हैं–

1930–दुरिया जंगल सत्याग्रह

1930 में जब गाधीजी ने दाडी मार्च कर नमक सत्याग्रह किया था, तब सिवनी के काग्रेस कार्यकर्ताओं ने दुर्गाशकर मेहता के नेतृत्व में जगल सत्याग्रह चलाया सिवनी से 9-10 मील दूर सरकारी जगल "चदन बगीचों मे घास काटकर यह सत्याग्रह किया जा रहा था" इसी सिलसिले मे 9 अक्टूबर, 1930 को सिवनी जिले के गाम दुरिया, जोकि सिवनी से 28 मील दूर स्थित है, में सत्याग्रह की तारीख निश्चित हुई कुछ स्वयसेवक घास काटकर सत्याग्रह करने गए पुलिस दरोगा सदरउद्दीन और रेजर मेहता ने सत्याग्राहियों तथा उनकी हौसला अफजाई करने आए जनसमुदाय के साथ बहुत अभद व्यवहार किया जिससे जनता उत्तेजित हो उठी सिवनी के डिप्टी कमिश्नर सीमन के इस हुक्म पर कि "टीच देम ए लेसन" पुलिस ने गोली चला दी घटनास्थल पर ही तीन महिलाए–गुड्डो बाई, रैना बाई, बेमा बाई और एक पुरुष विरजू गोंड शहीद हो गए चारो शहीद आदिवासी थे इस शहादत से मध्य प्रदेश के गिरिजन समुदाय मे भी स्वतत्रता की ज्योति प्रज्वलित होने का पुष्ट प्रमाण मिलता है इन शहीदो के शव भी अतिम सस्कार के लिए परिवार वालो को नहीं दिए गए, यह था फिरगियों के खौफ का सबूत

1930–घोडा-डोंगरी का जंगल सत्याग्रह

आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिला स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख केन्द्र रहा है और यहाँ के वनवासियो ने पराधीनता के खिलाफ जान की बाजी लगाकर जेहाद किया है 1930 के जगल सत्याग्रह के समय बैतूल के आदिवासी समुदाय ने विद्रोह की मशाल थाम ली थी शाहपुर के समीप बजारी ढाल का गजन सिह कोरकू विद्रोही आदिवासियो का नेता था जब पुलिस गजन सिह को गिरफ्तार करने बजारी ढाल पहुँची तो आदिवासियो ने प्रबल प्रतिरोध खडा कर दिया वनवासी समुदाय पर पुलिस ने गोलियाँ बरसाई जिसमे कोमा गोड घटनास्थल पर ही शहीद हो गया गजन सिह पुलिस का घेरा तोडकर निकल गया उधर अम्बाडा में पुलिस की गिरफ्त से आदिवासियो को मुक्त कराने के लिए एकजुट भीड पर पुलिस के बर्बर बल प्रयोग मे रामू तथा मकडू गोंड शहीद हो गये

1931–चरण पादुका नरसंहार

(म. प्र. का जलियाँ वाला बाग काण्ड)

14 जनवरी, 1931 को मकर सक्राति के दिन छतरपुर रियासत में उर्मिल नदी के किनारे चरण पादुका मे स्वतन्त्रता सेनानियो की सभा चल रही थी काफी सख्या मे लोग इकट्ठे हुए थे नौगाव स्थित अग्रेज पोलिटिकल एजेट फिशर के हुक्म पर बिना किसी चेतावनी के भीड पर अधा-धुध गोलियाँ चला दी गई मध्य प्रदेश का जलियाँ-वाला बाग कहे जाने वाले इस लोमहर्षक काड मे छ स्वतत्रता सेनानी–सेठ सुन्दरलाल, धरमदास खिरवा हलके कुर्मी रामलाल कुर्मी और रघुराज सिह आदि शहीद हो गए 29 जख्मी हुए यह गोलीकाड मालवा की भील पलटन से कराया गया था

1931–पंजाब मेल हत्याकांड

23-24 जुलाई, 1931 की दरम्यानी रात्रि दिल्ली से बम्बई की ओर जा रही पजाब मेल खण्डवा रेलवे स्टेशन पर रुकती है प्रथम श्रेणी के डिब्बे मे अग्रेज फौजी अफसर लेफ्टिनेट हैक्सट मेजर शीहन और उसका शिकारी कुत्ता सवार थे देश की आजादी के दीवाने दमोह के बुदेल वीर यशवत सिह भुसावल के रेल कर्मचारी देवनारायण तिवारी और उनके मित्र दलपत राव चाकू और कृपाण लेकर उसी डिब्बे मे सवार हो गए देवनारायण ने पहले तो भौंक रहे कुत्ते को मार डाला और इसके पहले कि लेफ्टिनेट हैक्सट अपनी पिस्तौल से देवनारायण को निशाना बना पाता यशवत सिह ने कटार से उस पर हमला बोल दिया और तब तक उस पर वार करता रहा तब तक कि हैक्सट धराशायी नही हो गया मेजर शीहन की नीद इस हगामे मे खुल गई और उसने यशवत पर वार करने की कोशिश की इसी बीच देवनारायण ने मेजर शीहन पर चाकू चला दिया तभी यशवत ने टार्च जला कर दलपत राव को ट्रेन रोकने के लिए जजीर खीचने का इशारा किया बीच जगल मे गाडी रुकी और तीनो क्रातिवीर घने जगल में विलीन हो गए लेफ्टिनेट हैक्सट ने दम तोड दिया, लेकिन मेजर शीहन बच गया फिरगी फौजी अफसरों पर हमले की इस घटना ने फिरगियो को दहला दिया बडी हलचल मची अगले दिन ही आश्रयदाता के विश्वासघात तिवारी और दलपतराव भी पकड लिए गए 10 अगस्त, 1931 को खण्डवा की अदालत मे तीनो क्रातिवीरो के खिलाफ मामला पेश किया गया और 31 सितम्बर, 1931 को यशवत और देवनारायण तिवारी को सजा-ए-मौत तथा दलपत राव को कालेपानी की सजा सुनाई गई 11 दिसम्बर, 1931 की रात्रि 1 बजे क्रातिवीर यशवत सिह (22) और क्रातिवीर देवनारायण (20) को जबलपुर जेल मे फाँसी के फदे पर लटका दिया गया लगता है उनकी पार्थिव देह से भी ब्रिटिश हुकूमत भयाक्रात थी तभी तो रात्रि मे ही गुपचुप उनका अतिम सस्कार कर दिया गया यहाँ तक कि उनकी भस्मि भी परिवार वालो को नही सौपी गई

1938–सोहावल का संहार

विरसिहपुर के पास स्थित सोहावल रियासत की जुल्म-ज्यादतियो के खिलाफ 1938 मे तीव्र जनाक्रोश भडक उठा पगार खुर्द ग्राम के लाल बुद्धि प्रताप सिह ने विद्रोह का नेतृत्व किया 19 जुलाई 1938 को हिनौता मे आयोजित सुराजियो की सभा मे भाग लेने के लिए जाते हुए निहत्थे लोगो पर गाजन गाँव मे रियासत के सिपाहियों ने गोलियाँ चला दी इस गोलीबारी मे लाल बुद्धि प्रताप सिह रामाश्रय गौतम और पडित मधीर राम शहीद हो गए लाल साहब को तो मरणासन्न अवस्था मे भी भालों से बुरी तरह क्षत-विक्षत किया गया

1939–रामाधीन गोंड की शहादत

31 जनवरी 1939 को डोंगरगढ के पास बदराटोला गाँव मे रामाधीन गोंड ने वन सत्याग्रह का आयोजन किया रियासत की पुलिस ने इसे चुनौती माना और सत्याग्रहियो पर गोली चला दी गोलीबारी में सत्याग्रहियो के नेता रामाधीन गोंड का बलिदान हो गया

1941–श्रमिकों की शहादत

इन्दौर मे 28 अप्रैल 1941 को स्वातन्त्र्य भावना से ओत प्रोत और श्रमिक आन्दोलन से उद्वेलित श्रमिको के एक जुलूस ने कोतवाली मे बद अपने साथियो को बलपूर्वक छुडा लिया कृष्णपुरा थाने से यह जुलूस रानीपुरा पुलिस कोतवाली पर पहुँचा तो वहाँ पुलिस उन पर गोलियाँ बरसाने के लिए मुस्तैद खडी थी पुलिस के खूनी मसूबो ने चार आन्दोलनकारियो को मौत की नीद सुला दिया ये शहीद श्रमिक थे दुर्गा कोरी रामनारायण गूजर रमुआ काकोरी और सुखराम अरसे तक श्रमिक क्षेत्र मे 28 अप्रैल का दिन शहीद दिवस के रूप मे मनाया जाता रहा

1941–किसानों की शहादत

17 जुलाई, 1941 को झाबुआ की पुलिस ने विदवई के समीप उन तीन आदिवासियों को अधाधुध गोलियाँ चला कर मौत के घाट उतार दिया, जो अपना कपास बेचने के लिए बामनिया ले जा रहे थे क्योकि झाबुआ राज्य नहीं चाहता था कि रियासत का कपास बाहर की मडी में जावे

1942–महादेव तेली का बलिदान

1942 की 12 अगस्त को बैतूल जिले के प्रभात पट्टन मे बाजार लगा हुआ था, जिसमें आसपास के गाँवों के लोग बडी सख्या में इकट्ठे हुए थे पुलिस वाले भी थे भारत छोड़ो आन्दोलन की उमग मे लोगो ने तय कर लिया कि पुलिस वालों की वर्दी उतार कर उन्हें खादी के वस्त्र धारण कराएगे आजादी के नारे गुजाती हुई भीड ने सचमुच पुलिस वालो की वर्दी उतरवा दी और उन्हे खादी के कपड़े पहनने के लिए विवश कर दिया इसी बीच मुलताई से पुलिस के और जवान आ पहुँचे, जिन्होंने जुलूस पर गोली चला दी महादेव तेली का स्वतत्रता की वेदी पर बलिदान हो गया

1942–रीवा के शेर की इलाहाबाद में शहादत

रीवा राज्य के अन्तर्गत सतना जिले के कृपालपुर ग्राम के लाल पद्मधर सिह बघेल की शहादत 13 अगस्त, 1942 को इलाहाबाद मे हुई विद्यार्थी यूनियन के तत्वावधान में निकले जुलूस पर जब पुलिस ने गोलियाँ बरसाईं तब लाल पद्मधर सिह राष्ट्रीय झण्डा हाथ में लिए सीना तान कर खडे हो गए गोली लगने से वे वीरगति को प्राप्त हुए लेकिन ऐसी शौर्यपूर्ण शहादत अमरत्व का ही दूसरा नाम होती है

1942–शहीद गुलाब सिंह

9 अगस्त, 1942 को काग्रेस नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में जबलपुर की तिलक भूमि तलैया में सभा रखी गई जिसमें एक सप्ताह तक हडताल रखने का फैसला लिया गया ग्यारह अगस्त को फुहारे पर सत्याग्रहियों पर पुलिस ने लाठियाँ बरसाईं इससे आदोलन उग्र हो गया 14 अगस्त को फुहारे से निकलने वाले जुलूस पर पुलिस ने गोली चलाई युवक गुलाब सिह इस हादसे में शहीद हुआ इस शहादत ने "करो या मरो" को चरम सीमा पर पहुँचा दिया

1942–उदयचंद की शहादत

15 अगस्त, 1942 को मण्डला मे एक बडा जुलूस निकाला गया जो जिलाधीश कार्यालय जाने वाला था लेकिन हथियारबद पुलिस ने जुलूस को रोक दिया और तब उसी स्थान पर सभा होने लगी, जिसे मन्नूलाल मोदी और मथुराप्रसाद यादव ने सम्बोधित किया इसके बाद मैट्रिक के छात्र उदयचद जैन ने सभा की बागडोर सँभाली पुलिस ने सभा को तितर-बितर करने के लिए बर्बर लाठी प्रहार किया और हवा में गोलियाँ चलाईं जब पुलिस की बर्बरता पर ऐतराज किया गया तो मजिस्ट्रेट ने गोली चलवा दी नवजवान उदयचद अग्रेजी हुकूमत की बर्बरता के सामने छाती खोल कर खडा हो गया पुलिस की गोली चली और उदयचद जैन का सीना चीर गई वे शहीद हो गए उस समय उनकी आयु मात्र 19 वर्ष 9 माह 6 दिन थी 16 अगस्त, 1942 को बजर नदी के किनारे जब शहीद उदय चंद जैन की पार्थिव देह अग्नि को समर्पित किया गया तब वहाँ अपार जनसमुदाय सजल नेत्रों से उपस्थित था मण्डला के इतिहास मे इतनी विशाल और भावभीनी अतिम यात्रा कोई दूसरी नहीं देखी गई

1942–वीरसा गोंड की शहादत

1942 में बैतूल जिले के घोडाडोंगरी-शाहपुर क्षत्र के आदिवासी सेनानियो का एक बडा समूह 19 अगस्त, 1942 को विष्णु गोंड के नेतृत्व में घोडाडोंगरी रेलवे स्टेशन के पास इकट्ठा हुआ गोंड सरदार विष्णु ने जगल-जगल घूम कर इन आदिवासियो को प्रेरित और एकजुट किया था इस आदिवासी समूह ने रेल की पटरियाँ उखाडी, पुलिस थाने और घोडाडोंगरी रेलवे स्टेशन के पीछे स्थित लकडी के विशाल डिपो को भी आग के हवाले कर दिया पुलिस और वन अधिकारी घटनास्थल पर आए पुलिस ने बिना चेतावनी दिए गोलियो की बौछार कर दी वीरसा गोंड की घटनास्थल पर ही शहादत हो गई और जिर्रा गोंड की मृत्यु बाद मे कारावास मे हुई अग्रेजी हुकूमत ने यहाँ आदिवासियो पर काफी जुल्म ढाए

1942–चीचली की शहादत

8 अगस्त, 1942 को बापू द्वारा दिया गया 'करो या मरो' का सदेश समूचे भारतवर्ष को उद्वेलित कर रहा था गाडरवारा के समीप ग्राम चीचली में 21 अगस्त को एक सभा हुई जिसमें फिरगी हुकूमत के खिलाफ जोशीले भाषण दिए गए पुलिस ने नर्मदा प्रसाद और बाबूलाल को गिरफ्तार कर लिया इससे जनता उत्तेजित हो गई 23 अगस्त को जब भारी भीड चीचली ग्राम में इकट्ठी थी, पुलिस ने बेरहमी से गोलीबारी की जिसमें मशाराम और गौराबाई शहीद हो गए नरसिहपुर जिले मे ही कौंडिया ग्राम मे बम बनाते समय एक बम के फट जाने से स्वातत्र्य सग्राम सेनानी नन्हेलाल की शहादत हुई नरसिहपुर जिले की चौथी शहादत मानेगाँव के ठाकुर रुदप्रताप सिह की हुई रुदप्रताप सिह जिन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान 1940 में गिरफ्तार किया गया था और छ माह तक नागपुर की जेल मे रखा गया था, 9 अगस्त 1943 को फिर गिरफ्तार कर लिए गए और 3 दिन तक नरसिहपुर जेल मे रखने के बाद केन्द्रीय

कारागार जबलपुर भेज दिए गए जेल में वे गम्भीर रूप से बीमार पड़ गए, लेकिन पैरोल पर छूटने से इनकार कर दिया और 29 मार्च, 1945 को जेल में ही वे शहीद हो गये

1942–नाहिया में पिता-पुत्र की शहादत

बैतूल जिले के नाहिया गाँव के स्कूल के रिकॉर्ड मे अगस्त 1942 में नागपचमी के दिन आग लगा दी गई पुलिस अग्निकाड के आरोपियों को पकडने नाहिया पहुँची और गाँव पटेल के यहाँ डेरा डाला वहीं गाँव वालों को बुलवाया एक परिवार के मुखिया और उनके दो बेटे उदय एव सदाराम खेत से आकर खाना खाने बैठे ही थे कि पुलिस के सिपाही उन्हें बुलाने आ पहुँचे उदय ने जवाब दिया कि खाना खाकर हम लोग पटेल की चौपाल पर पहुँचते है बेलगाम हुकूमत के नशे मे चूर सिपाहियो को उदय का जवाब नागवार गुजरा जालिम सिपाहियों ने उदय की बात का जवाब गोलियो से दिया गोली चलने की आवाज से पिता केला किरार भी बाहर निकला और घराशायी उदय से लिपट गया लेकिन सिपाहियों ने उन्हें भी गोलियों से भून डाला अपने ही घर की दहलान मे पिता-पुत्र की ऐसी शहादत से सारा इलाका थर्रा उठा

1942–इन्दौर सर्राफा कांड

1942 की 6 सितम्बर को इन्दौर के सर्राफा मे सत्याग्रह के दौरान पुलिस ने पहले तो लाठी चार्ज किया और जब स्वतत्रता के अभिलाषियों का मनोबल नहीं तोडा जा सका, तब गोलियों की बौछार कर दी मगनलाल ओसवाल को गोली लगी उन्हें अस्पताल ले जाया गया तीन वर्ष से ज्यादा समय तक उन्होंने मौत से सघर्ष किया, लेकिन 23 दिसम्बर 1945 को उनकी पार्थिव देह ही अस्पताल से बाहर निकली

1942–इंदरगिर की शहादत

इटारसी के समीप रेलवे स्टेशन गुर्रा से दो किलोमीटर दूर स्थित रामपुर गाँव के इन्द्रजीत गोसाइ (इदरगिर) को 1942 के आन्दोलन मे नौ महीने की कैद की सजा हुई जेल मे उन्होंने आम कैदियो वाली पोशाक पहनने से इनकार कर दिया जब उनके साथ जबरदस्ती की गई तब उन्होंने अनशन किया अनशन के बाद स्वातत्र्य वीर इदरगिर ने महाप्रयाण किया

रीवा का चावल आन्दोलन

1947 के फरवरी मास में रीवा राज्य मे जबरिया लेवी उगाही के विरुद्ध जनआन्दोलन खड़ा हो गया चावल आन्दोलन के नाम से मशहूर इस सघर्ष में रीवा जिले के बदवार ग्राम मे 28 फरवरी 1947 की सुबह राज्य के कारिन्दों की बर्बरता का विरोध करते हुए त्रिभुवन तिवारी किसानों के हितों के लिए लडते-लडते पुलिस की गोली से शहीद हो गए शिवराजपुर में होली (धुरेडी) के त्यौहार के दिन गोलियाँ चलीं और भैरव प्रसाद उरमालिया का बलिदान हो गया

1947–नारायण दास खरे की शहादत

टीकमगढ जिले की बम्होरी मे रियासती निरकुश शासन से मुक्ति और लोकप्रिय शासन की स्थापना के लिए आन्दोलन हेतु अलख जगा रहे स्वतत्रता सेनानी नारायण दास खरे को 1 दिसम्बर, 1947 को सामती तत्वों ने तब मरवा डाला, जब वे अभियान से वापस घर लौट रहे थे इस शहादत ने ओरछा के राजा को जन प्रतिनिधियो को सत्ता सौंपने पर विवश कर दिया

1849–बोरस के वीरों ने झण्डा नहीं गिरने दिया

भोपाल के विलीनीकरण आदोलन को कुचलने के लिए नवाब भोपाल ने छल-बल का निर्ममतापूर्वक सहारा लिया था 6 जनवरी 1849 को भोपाल, सीहोर और बरेली के आन्दोलनकारियो पर जमकर लाठियाँ बरसाई गईं बरेली के लाठीचार्ज में जुगराज और रामप्रसाद शहीद हो गए इतने पर भी नवाबी हुकूमत की खून की प्यास नहीं बुझी 14 जनवरी, 1849 को उदयपुरा तहसील में नर्मदा नदी के किनारे बोरासघाट पर लोमहर्षक गोलीकाण्ड हुआ जिसमें हाथ में राष्ट्रीय ध्वज थामे चार बहादुर नौजवान–छोटेलाल, धनसिह, मगलसिह और विशाल सिह शहीद हो गए, लेकिन उन्होंने झण्डे को गिरने नहीं दिया रेहटी के कालूराम जेल से रिहा होने के तुरत बाद महाप्रयाण कर गए

जबलपुर से भड़की 'झण्डा आन्दोलन' की चिंगारी

राष्ट्रीय ध्वज किसी राष्ट्र की सम्प्रभुता, अस्मिता और गौरव का प्रतीक होता है भारतीय स्वतत्रता सग्राम के दिनो मे चरखा युक्त तिरगे झण्डे को यह दर्जा प्राप्त रहा है 1923 में इस ध्वज की आन-बान-शान को लेकर एक ऐसा प्रसग उपस्थित हो गया जिसमे न केवल राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्पूर्ण राष्ट्र की श्रद्धा और निष्ठा की मुखर अभिव्यक्ति हुई, बल्कि फिरगी हुकूमत तक को उसे मान्य करने पर विवश होना पडा इतिहास के इस स्वर्णिम अध्याय को झण्डा सत्याग्रह' के नाम से जाना जाता है असहयोग आदोलन की मानसिक तैयारी की पडताल के लिए गठित कांग्रेस की समिति जबलपुर आई हकीम अजमल खाँ उसके नेता थे जबलपुर कांग्रेस कमेटी ने तय किया कि खाँ साहेब को अभिनन्दन पत्र भेंट किया जाएगा और जबलपुर नगरपालिका भवन पर राष्ट्रीय तिरगा ध्वज फहराये जाने का यह पहला ही अवसर था और यह सम्मान गोरे डिप्टी कमिश्नर को ब्रिटिश हुकूमत का अपमान और चुनौती देता हुआ प्रतीत हुआ वह भडक उठा उसने पुलिस को हुक्म दिया कि तिरगे झण्डे को न केवल उतार दिया जाये बल्कि पैरो से कुचला भी जाये

जिसका परिणाम स्वाभाविक रूप से तीव्र जनाक्रोश में ही फूटना था आन्दोलन आरम्भ हो गया, जिसने कुछ ही महीनों में अखिल भारतीय स्वरूप ग्रहण कर लिया. फिरंगी हुकूमत की अपमानजनक कार्यवाही के विरोध मे तपस्वी प सुन्दरलाल, सुभद्रा कुमारी चौहान, नाथूराम मोदी, नरसिंह दास अग्रवाल, लक्ष्मणसिंह चौहान तथा कुछ अन्य स्वयसेवकों ने झण्डे के साथ जुलूस निकाला पुलिस ने जुलूस को आगे बढ़ने से रोक दिया और सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया तपस्वी प सुन्दरलाल पर मुकदमा चला और उन्हे छः माह के कारावास की सजा दी गई नगरपालिका जबलपुर के सभी सदस्यों ने विरोध स्वरूप सामूहिक इस्तीफा दे दिया झण्डा सत्याग्रहियों की पहली टोली की गिरफ्तारी के बाद दूसरे जत्थे ने जिसमे प्रेमचन्द, सीताराम जाधव, छिग्गेलाल स्वर्णकार टोडरलाला थे, टाउन हाल पर झण्डा फहरा दिया बस यहीं से धधकी थी झण्डा आदोलन की ज्वाला

इस राष्ट्रीय अपमान के प्रतिकार स्वरूप काग्रेस ने झण्डा आन्दोलन के सचालन का निश्चय किया और नागपुर को इसका केन्द्र बिन्दु बनाया जमनालाल बजाज को सचालन की जवाबदारी सौंपी गई जालियाँवाला बाग दिवस (13 अप्रैल) से सत्याग्रह आरम्भ करने का निश्चय किया गया प्रान्त भर से स्वयसेवको के जत्थे नागपुर पहुँच कर सत्याग्रह में भागीदारी करने लगे 13 अप्रैल, 1923 को मचेरशा आवारी के नेतृत्व मे झण्डा सत्याग्रहियों का पहला जुलूस निकला पुलिस के दुर्व्यवहार ने इस आदोलन की आग मे घी डालने का ही काम किया एक मई से सत्याग्रह का नियमित सिलसिला शुरू हुआ काग्रेस अध्यक्ष डा असारी ने 18 जून, 1923 को सभी प्रातों मे झण्डा दिवस मनाने की घोषणा की इधर 17 जून को जुलूस का नेतृत्व कर रहे जमनालाल बजाज, लाला भगवान दीन और नीलकठ राव देशमुख को गिरफ्तार कर लिया गया 18 जून को पडित जवाहरलाल नेहरू, पुरुषोत्तम दास टण्डन और प माखनलाल चतुर्वेदी ने जुलूस का नेतृत्व किया इस दिन 275 स्वयसेवको की गिरफ्तारी हुई आचार्य विनोबा भावे और डॉ हार्डीकर ने भी गिरफ्तारी दी जबलपुर के 'कर्मवीर' और 'श्री शारदा' कानपुर की 'प्रभा' और 'प्रताप' सागर के 'प्रकाश' जैसे पत्र-पत्रिकाए झण्डा सत्याग्रह की भावना को जन-जन तक पहुँचा रहे थे महिला कार्यकर्ताओ में भी बडा जोश था सागर की सावित्री बाई हार्डीकर ने तो 'प्रकाश' मे एक खुला पत्र छपवाकर काग्रेस नेतृत्व को चुनौती दी थी कि यदि उन्हें झण्डा सत्याग्रह मे भाग लेने की इजाजत नहीं दी गई तो वे खुद नागपुर चली जाएगी और गिरफ्तारी देगी

इसी बीच सरोजिनी नायडू और मौलाना आजाद का जबलपुर आगमन हुआ नागरिकों की भारी भीड की उपस्थिति में कन्छेदीलाल, वशीलाल काशीप्रसाद ने टाउन हाल पर झण्डा फहरा दिया तीनों स्वयसेवको को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हे तीन-तीन माह की कैद की सजा हुई

झण्डा आदोलन के ही कारण काग्रेस कार्यसमिति की बैठक नौ जुलाई को नागपुर मे रखी गई सरदार वल्लभ भाई पटेल और विट्ठल भाई पटेल को झण्डा सत्याग्रह के सचालन का दायित्व सौंपा गया नागपुर मे गिरफ्तारी का सिलसिला चलता रहा 18 जुलाई को फिर पण्डित नेहरू और टण्डनजी ने सत्याग्रहियों को सम्बोधित किया उन्होंने माखनलालजी को आश्वस्त किया कि "जब भी हमारी जरूरत समझे या आप स्वयं गिरफ्तार हों, हमे खबर करें, हम लोग फिर नागपुर में उपस्थित होंगे "

18 अगस्त को सरदार वल्लभ भाई पटेल और प माखनलाल चतुर्वेदी की गिरफ्तारी की सम्भावना को देखते हुए झण्डा सत्याग्रह के सचालन के लिए बाबू राजेन्द्र प्रसाद को बुला लिया गया वे आ भी गए, किन्तु यह गिरफ्तारी का नहीं, राष्ट्रीय ध्वज की विजय का दिवस सिद्ध हुआ और विजयी जुलूस के नेतृत्व और सचालन को गौरव माखनलालजी को मिला

प माखनलाल चतुर्वेदी की अगुवाई में रतौना (सागर) कसाईखाना आदोलन (1920) की सफलता के बाद झण्डा सत्याग्रह दूसरा प्रबल आदोलन था, जिसमें फिरंगी हुकूमत की शिकस्त हुई

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भावरा ग्राम में 23 जुलाई, 1906 को हुआ बचपन मे ही पिता पडित सीताराम का स्वर्गवास हो गया माता जगरानी ने लालन-पालन किया आजाद 17-18 वर्ष की उम्र मे ही माँ जगरानी से काशी में सस्कृत पढने को कहकर घर से निकले और शामिल हो गये भारत की आजादी के लिए चल रहे स्वतत्रता आदोलन में, पहले वे महात्मा गाधी के नेतृत्व मे अग्रेजी शासन के खिलाफ चल रहे सत्याग्रह में शामिल हुए और उन्हें 15 बेतों की सजा मिली अदालत में उन्होने अपना नाम 'आजाद', पिता का नाम 'स्वाधीन और घर का पता 'जेलखाना बताया तभी से चन्द्रशेखर के नाम के साथ आजाद जुड गया

क्रातिकारी विचारधारा के कारण वे लम्बे समय तक गाधी मार्ग पर नहीं चल सके वे क्रातिकारी श्री गुप्त के सम्पर्क मे आए और तदनन्तर प रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में उन्होंने युग की महान् क्रातिकारी घटना काकोरी काण्ड' में हिस्सा लिया जब पुलिस ने आजाद का पीछा किया तो वे चकमा देकर बच निकले झाँसी में सगठन के कार्य से आजाद 1924 के अत में आये और जिला सगठन कर्ता शचीन्द्रनाथ बख्शी से मिले उन्होंने फिर इस क्षेत्र को ही अपनी क्रातिकारी गतिविधियों के सचालन का केन्द्र बिन्दु बना लिया झाँसी में जब अग्रेज पुलिस को शचीन्द्र-नाथ बख्शी के कार्यकलापों पर शक हुआ और उनके पास आने-जाने वालो पर कडी नजर रखी जाने लगी कुछ नवयुवको की धर पकड भी हुई, तब आजाद ने और

अधिक समय झाँसी मे रहना ठीक नही समझते हुए एक दिन शाम को अपने साथियो को भावी कार्यक्रम समझा कर एक कम्बल और रामायण का गुटका लिया और ओरछा के जगल की राह पकडी

झाँसी और ओरछा के बीच ग्राम ढीमरपुरा के नजदीक सातार नदी के किनारे चन्द्रशेखर आजाद ने अपना डेरा जमाया और बन गये प हरिशकर ब्रह्मचारी उनका ब्रह्मचारी वेष स्वाभाविक था और यहीं रहकर चन्द्रशेखर आजाद उर्फ हरिशकर ब्रह्मचारी ने 1925 से 1927 तक क्रातिकारी गतिविधियों का सचालन किया

प हरिशकर ब्रह्मचारी ढीमरपुरा ग्राम के लोगों को दिन मे रामकथा सुनाते, भोजन का इतजाम करते, वहीं झाँसी की क्रातिकारी गतिविधियों का सचालन करते रहे जल्दी ही उन्होने अपने सरल स्वभाव और व्यवहार से ढीमरपुरा के लोगों से मधुर सम्बन्ध बना लिये वे उनके बच्चो को अक्षर-ज्ञान कराने का काम करने लगे ग्राम ढीमरपुरा के नम्बरदार ठाकुर मलखान सिह तो इतने प्रभावित हुए कि वे हरिशकर ब्रह्मचारी को अपना पाँचवाँ भाई मानने लगे उनकी बदूको से वे अपने दल के साथियो को निशानेबाजी का प्रशिक्षण देने लगे प हरिशकर ब्रह्मचारी को एक दो महीने में ही गाँव वाले और नम्बरदार से इतना मान सम्मान मिलने लगा कि अधिक समय तक कम्बल कमर से बाँधे और आधा कधो पर डाले हुए सातार तटवासी बाबाजी बने रहने की आवश्यकता नहीं रही वे अब सातार तट पर अपने झाँसी के क्रातिकारी साथियों को बुलाकर काकोरी काण्ड के टूटे सूत्रों को फिर से जोडने में लग गये उधर काकोरी की धर पकड से बचे साथी आजाद की तलाश मे थे काकोरी काड के एक और सूत्रधार भाई कुन्दनलाल सातार तट पर आजाद से मिले और फिर सगठन के कार्यक्रमो का सचालन सातार तट से किया जाने लगा

काकोरी काण्ड मे शामिल क्रातिकारियों मे चन्द्रशेखर आजाद ही प्रमुख रूप से बचे थे जो पुलिस की पकड से बाहर थे उल्लेखनीय है कि काकोरी काड मे रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशनसिह और राजेन्द्र लाहिडी को फाँसी पर चढा दिया गया था आजाद के धर्यशील स्वभाव और सगठन क्षमता के कारण सगठन का नेतृत्व इनके हाथो मे रहा दल के साथियों को पुन सगठित करने के लिए अब आजाद को सातार तट से इधर-उधर भी आना जाना पडा पजाब के भगतसिह सुखदव और उत्तर प्रदेश के शिववर्मा, कुन्दनलाल विजय कुमार सिन्हा सुरेन्द्रनाथ पाडे आदि से सम्पर्क स्थापित कर उत्तर प्रदश और पजाब मे आजाद ने दल का पुनर्गठन किया साथियों ने आग्रह किया कि अब आजाद ओरछा (सातार) छोडकर लाहौर दिल्ली, आगरा, कानपुर बनारस आदि शहरों मे बारी-बारी से रहें और सगठन का कार्य करें आजाद सगठन के कार्य से बाहर आने जाने लगे पर उन्होने अपना मुख्यालय 1925 से 1927 तक सातार तट पर बनी कुटिया को ही बनाये रखा सातार तट पर हर रोज झाँसी से सदाशिव राव मलकापुरकर और दूसरे साथी काकोरी काण्ड की अदालती कार्यवाही और दूसरी क्रातिकारी गतिविधियो की जानकारी अखबारो की कतरनो के रूप मे आजाद के पास देते रहते झाँसी मे रहने वाले क्रातिकारी दल के नवयुवको और सहयोगियो को आजाद की सातार तट पर बनी गुप्त कुटिया का पता था ही जो हर पल की खबर से आजाद को अवगत कराते थे इसी बीच ढीमरपुरा मे एक हत्या हो गई पुलिस आई और कुछ डाकुओ के पास जगलो मे छिप जाने के शका पुलिस को हुई पुलिस ने जाच पडताल और पूछताछ की गति बढाई आजाद नम्बरदार के भाई के रूप मे सुरक्षित तो थे ही पर जब नम्बरदार से पूछताछ का सिलसिला शुरू हुआ तो ब्रह्मचारी हरिशकर से भी उनके घर का पता पूछा गया पर आजाद तनिक भी विचलित नही हुए और गम्भीरता से उत्तर दिया "ठौर ठिकाना भला साधुओ का भी होता है इसी सब झझट से विरक्त होकर तो आजन्म ब्रह्मचारी रहने का व्रत लेकर सब छोड दिया है "

पुलिस वाले बिना ठौर-ठिकाना जाने ही चले गये पर अब आजाद ने सातार (ढीमरपुरा) को छोड देना उचित समझा और नम्बरदार बन्धुओ को समझा बुझाकर झाँसी चले आये जहाँ मास्टर रुद्रनारायणजी ने नई बस्ती में एक मुहल्ले मे एक मोटर ड्राइवर श्री रामानद के यहाँ रख दिया रामानद को अपना बडा भाई बनाने मे भी आजाद को अधिक दिन न लगे और वे उन्हीं के साथ एक मोटर कम्पनी मे काम करने लगे लेकिन वे एक जगह टिककर नहीं रहते थे और एक शहर मे भी स्थान बदलते रहते थे इसीलिए पुलिस कभी उनको गिरफ्तार करने के मसूबे को पूरा नहीं कर सकी 1928 मे साइमन कमीशन भारत आया, जिसका विरोध और बहिष्कार किया गया ऐसे ही एक विरोध प्रदर्शन पर फिरगी हुकूमत के बर्बर बल प्रयोग में राष्ट्रीय नेता लाला लाजपत राय का बलिदान हो गया इस घटना के एक माह बाद ही राजगुरु और भगतसिह ने एक पुलिस अफसर को मौत के घाट उतार दिया

8 अप्रैल 1929 को क्रातिकारी दल के निर्णय के अनुसार भगतसिह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की असेम्बली को बम के धमाके से हिला दिया और परचे फेके वे भागे नही इन्कलाब जिन्दाबाद तथा साम्राज्य-वाद का नाश हो के नारे लगाए वे पकडे गये मुकदमे का नाटक चला और 23 मार्च 1931 को हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गये

चन्द्रशेखर आजाद और उनके दल के मन मे यह अरमान पलता ही रह गया कि भगतसिह और बटुकेश्वर दत्त को अग्रेजो के गिरफ्त से छुडा लिया जाए पूरे उत्तर भारत की पुलिस आजाद के पीछे पडी हुई थी दल के कुछ साथी विश्वासघात कर चुके थे जिससे वे चिन्तित

और क्षुब्ध थे आजाद बचते-छिपते इलाहाबाद जा पहुँचे 27 फरवरी, 1931 को वे अल्फ्रेड पार्क में बैठे हुए थे, दिन के दस बज रहे थे कि पुलिस ने उन्हें घेर लिया दोनो ओर से गोलियाँ चलने लगीं. आजाद ने पुलिस के छक्के छुडा दिए और जब उनकी पिस्तौल मे सिर्फ एक गोली बची, तो उसे अपनी कनपटी पर दाग कर भारत माता का यह सिह सपूत अमर शहीद हो गया इलाहाबाद में ही उनका अतिम सस्कार किया गया उनकी चिता की भस्म बडे श्रद्धा भाव से लोगों ने उठाई ऐसे ही श्रद्धा भाव से कभी शहीद खुदीराम बोस की चुटकी भर भस्म उठाई गई थी और उसे ताबीज में भरकर बच्चों को पहनाया गया था, ताकि वे भी वैसे ही बहादुर और देशभक्त बने अमर शहीद का इससे बढ कर सम्मान क्या हो सकता है

बैतूल–आदिवासियों का विद्रोह

मध्य प्रदेश के वनवासी बहुल अचलो मे स्वतत्रता सग्राम की ज्वाला को धधका कर समूचे राष्ट्र को प्रेरित करने का जो अद्‌भुत कार्य किया गया, वह इतिहास का गौरवशाली अध्याय है सघर्ष के ऐसे पावन स्थलों में बैतूल जिले का घोडा-डोगरी अग्रण्य है गोड रानी वीरांगना दुर्गावती पर जब बादशाह अकबर की सेना ने आक्रमण किया था तब भी बैतूल के गोड वीरो ने रानी की सेना में सम्मिलित होकर मुकाबला किया था और स्वतत्रता की रक्षा के लिए बलिदान दिए थे नागपुर के शासक अप्पाजी भोंसले ने 1818 की पराजय के बाद 1820 के आसपास बैतूल जिले में मुलताई के समीप ही अग्रेजों से आखिरी टक्कर ली थी, यद्यपि उनका यह प्रयास सफल नही हो सका था 1857 के प्रथम स्वातत्र्य महासमर में भी वीर तात्यां टोपे ने इसी जिले में अपना कुछ सकटकाल गुजारा था और अगले सघर्ष की तैयारी की थी स्वतत्रता की यह ज्योति बैतूल अचल मे सदैव प्रज्वलित रही, चैतन्य रही, सचेष्ट रही

सन् 1930 के जगल सत्याग्रह के आह्वान के समय तो इस अचल का हर आदिवासी कधे पर कम्बल डाले और हाथ में लाठी लेकर ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देने जगल और पहाडों से निकल पडा था

शाहपुर के निकट बजारीडाल का गजन सिह कोरकू इनका नेता बना आदिवासियो के इकट्ठे होने की खबर मिलते ही पुलिस गंजन सिह को गिरफ्तार करने बजरी ढाल पहुँची आदिवासियों और पुलिस में सघर्ष हो गया निहत्थे आदिवासियो पर पुलिस गोलियाँ बरसाने लगी कोमा गोड घटनास्थल पर ही शहीद हो गया गजन सिह किसी प्रकार पुलिस के घेरे को तोडकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचने में सफल हुआ

जगल सत्याग्रह की आग पूरे जिले मे फैली थी आदिवासियों पर पुलिस तरह-तरह के अत्याचार कर रही थी इसी दौरान जम्बाडा मे गिरफ्तार आदिवासियों को छुडाने के लिये आसपास के आदिवासी इकट्ठे हुए पुलिस से सघर्ष में रामू और मकडू गोड घटनास्थल पर ही शहीद हो गये

सन् 1942 में 9 अगस्त को सारे देश में महात्मा गाधी सहित काग्रेस के सभी प्रमुख नेताओ को अग्रेजों ने गिरफ्तार कर जेलो में बद कर दिया था सारा देश एक प्रकार से नेतृत्वविहीन हो गया देश का जनमानस विक्षुब्ध हो उठा और आक्रोश से भर गया बैतूल जिला भी इससे अछूता नही रहा प्रभात पट्टन के स्वतत्रता सेनानियों ने सकल्प किया कि सारे जिले से अग्रेजी हुकूमत मिटा के रहेंगे गाँव-गाँव मे जुलूस निकाल कर सरकारी कार्यालयों में आग लगाने, तार काटकर सचार व्यवस्था भग करने सरकारी अभिलेख जलाने और सरकारी इमारतो से अग्रेजी झण्डा 'यूनियन जैक' उतारकर उसके स्थान पर तिरगा झण्डा फहराने का कार्यक्रम बनाया योजना थी कि प्रभात पट्टन से आदोलन करते हुए जिला मुख्यालय बैतूल पहुँचकर सेनानी जिला कार्यालय पर अधिकार कर लेंगे उत्तर में घोडाडोगरी शाहपुर क्षेत्र से विष्णु सिह गोंड के नेतृत्व में आदिवासी सेनानी भी जिला मुख्यालय बैतूल में पहुँच जाएगे

9 अगस्त के बाद सारे जिले मे विद्रोह की चिनगारियाँ सुलगने लगी थीं पुलिस का आतक भी बढ गया था घोडाडोगरी तथा आसपास के गाँवो के आदिवासी पुलिस के अत्याचारों से डरकर जगलो मे छुप गये थे गोंड सरदार विष्णु सिह ने जगल-जगल भटककर इन आदिवासियो को इकट्ठा किया 19 अगस्त, 1942 को सैकडों आदिवासी पूर्व योजना के अनुसार विष्णु सिह गोंड के नेतृत्व मे घोडाडोगरी मे स्टेशन के पास इकट्ठे हुए उन्होंने रेल की पटरियाँ उखाडी रानीपुर के थाने मे आग लगा दी घोडाडोगरी का पोस्ट आफिस जला दिया घोडा डोगरी और बैतूल के बीच पडने वाले रेल के डोगदो को क्षति पहुँचा कर रेल यातायात ठप कर दिया एक प्रकार से इन सेनानियों ने घोडाडोंगरी इलाके पर कब्जा कर लिया

रेलवे स्टेशन के पीछे ही लकडी का एक बडा डिपो था, जिसमे पाँच लाख से अधिक बाँसों के गट्ठे रखे थे 22 अगस्त को दोपहर के बाद विद्रोही आदिवासी समूह ने इस डिपो में आग लगा दी आदिवासियों ने लकडियों में कपडा लपेट कर उन्हे तेल मे डुबोया और मशाले बनाई और चारों तरफ से बाँस के इस विशाल डिपो में आग लगा दी सारा डिपो धूँ-धूँ करके जल उठा उसकी लपटे मीलो दूर से दिखाई देने लगी गडबडी का समाचार सुनकर तत्कालीन जिला फॉरेस्ट अधिकारी हीवेटशन, जोकि अग्रेज था, पुलिस के साथ घटनास्थल पर आया उसने बिना किसी सूचना या चेतावनी दिये डिपो जला रहे आदिवासी सेनानियों पर एक घर की आड से गोलियाँ बरसाना शुरू कर दी वीरसा नामक गोंड की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई 'अमर शहीद वीरसा जिन्दाबाद' के नारो के साथ

आदिवासी समुदाय पुलिस से संघर्ष करने लगा इसी आदोलन में गिरफ्तार जिर्रा गोंड कारावास मे शहीद हो गए पुलिस ने सैकडो आदिवासियो को गिरफ्तार कर लिया आदिवासी फिर जगलो मे भागकर छुप गये घोडाडोगरी के इन सेनानियो को पहले बैतूल जिला जेल और बाद मे नागपुर जेल भेज दिया गया

जबलपुर और नागपुर से भारी सख्या में पुलिस तथा सेना आ जाने से यद्यपि इस आदिवासी विद्रोह को दबा दिया गया, किन्तु एक बार पुन इन गोंड और कोरकू आदिवासियो ने सिद्ध कर दिया कि स्वतत्रता की बलिदेवी पर प्राणोत्सर्ग करने की जो परम्परा इनकी पूर्वज महारानी दुर्गावती ने चार शताब्दी पहले स्थापित की थी, वह धूमिल नहीं पडी और आजादी के लिये हँसते-हँसते प्राण न्यौछावर करने में वे किसी से पीछे नही रहे

स्वतंत्रता संग्राम में मध्य प्रदेश के जिलों की प्रमुख घटनाएँ

जबलपुर	झण्डा सत्याग्रह 1923, नमक कानून तोड़ना 1930, कांग्रेस का त्रिपुरी अधिवेशन 1939.
नरसिंहपुर	बुन्देला विद्रोह 1942, महात्मा गांधीजी का आगमन 1933, व्यक्तिगत सत्याग्रह में जिले के 311 व्यक्तियों ने भाग लिया 1940.
बालाघाट	चक्रवर्ती राजगोपालचारी व देवरस गांधी का नगर आगमन 1920, अली बन्धुओं का नगर आगमन 1920, झण्डा-सत्याग्रह 1923, महात्मा गांधी का नगर आगमन 1933.
छिन्दवाडा	महात्मा गांधी का नगर आगमन 1921, झण्डा सत्याग्रह 1923
मण्डला	जिले की प्रथम राजनीतिक कॉन्फ्रेंस 1917, जगल-सत्याग्रह 1930, डिण्डोरी विद्रोह 1931, महात्मा गांधी का नगर आगमन 1933
सिवनी	अनुशीलन समिति के अनेक कार्यकर्ता सिवनी में थे, महात्मा गांधी का नगर आगमन 1921, झण्डा सत्याग्रह 1923, जगल-सत्याग्रह 1930, दुरिया गोली काण्ड 1931, सुभाषचन्द बोस एव शरदचन्द बोस को सिवनी जेल मे लाया गया 1932
सागर	बुन्देला विद्रोह 1842, पैदल सेना का विद्रोह 1857, हितकारिणी सभा का गठन 1872, रतौली सत्याग्रह 1920, लाला लाजपत राय का नगर आगमन 1926, महात्मा गांधी का नगर आगमन 1934
दमोह	42वीं पैदल इन्फ्रेट्री (दमोह) का विद्रोह 1857, शराबबदी 1926, महात्मा गांधी का नगर आगमन 1933, जगल सत्याग्रह 1930.
पन्ना	सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना, करबदी 1930, प्रजामण्डल की स्थापना 1930.
छतरपुर	चरणपादुक गोली काड (बुन्देलखण्ड का जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड), लकडी-आदोलन, प्रजामण्डल की स्थापना 1943.
टीकमगढ	अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद कुछ समय यहीं (ओरछा) में छुपकर रहे 1924, मिलिट्री विद्रोह 1933-34 झण्डा सत्याग्रह 1923, ओरछा सेवा सघ की स्थापना 1938
सीहोर	सीहोर छावनी में विद्रोह 1857, विदेशी कपडो की बलि 1920
बैतूल	तात्याँ टोपे का मुलताई आगमन 1857, आर्य समाज की शाखा खुली 1857, होमरूल की लीग की शाखा का गठन 1916 झण्डा सत्याग्रह 1930.
विदिशा होशगाबाद	प्रस्ताव 1942, शराब दुकानों पर धरने हरदा तहसील लूटने की घटना 1857, तात्याँ टोपे इस क्षेत्र में रहे 1857, होमरूल लीग की स्थापना 1857 झण्डा सत्याग्रह 1923, महात्मा गांधी का इटारसी, हरदा होशगाबाद आगमन 1933
इन्दौर	1857 मे विद्रोह महात्मा गांधी का आगमन 1918-1935 हिन्दी साहित्य (8वाँ) सम्मेलन 1918, प्रजामण्डल की स्थापना 1935 कपडा मिल हडताल 1942
झाबुआ धार	कर वृद्धि का विरोध 1935, तात्याँ टोपे का आगमन 1857, प्रजामण्डल की स्थापना 1941 सत्याग्रह 1946.
खरगोन	मण्डलेश्वर की बगावत 1857, खरगोन लोक सेवक सघ की स्थापना 1939 मण्डलेश्वर स्वतत्रता सग्राम सेनानी बदियों का विद्राह 1929.

खण्डवा	लोकमान्य तिलक का आगमन 1917, विदेशी वस्त्र बहिष्कार 1929, महात्मा गाधी 1933,
उज्जैन	उज्जैन सार्वजनिक सभा का गठन 1917, रेल पटरी उखाड़ी गई 1940
देवास	प्रजामण्डल का गठन
मन्दसौर	नीमच छावनी से 1857 मे प्रदेश का पहला विद्रोह आरम्भ हुआ
शाजापुर	कृषक सम्मेलन
रतलाम	खादी आदोलन विदेशी वस्त्र बहिष्कार, ओकारेश्वर तीर्थयात्रा कर का विरोध, स्त्री सेवा दल का गठन 1931
ग्वालियर	1857 की लडाई में सक्रिय सहयोग, स्वदेशी प्रदर्शनी 1908
मुरैना	सार्वजनिक सभा का अधिवेशन 1940
भिण्ड	ग्वालियर राज्य वार्षिक अधिवेशन 1940
दतिया	चन्द्रशेखर आजाद का आगमन, क्रांतिकारी दल का गठन प्रजामण्डल की स्थापना 1938, जनआदोलन 1946
शिवपुरी	सार्वजनिक सभा की स्थापना 1938
गुना	ग्वालियर राज्य का प्रथम राजनीतिक सम्मेलन गुना मे हुआ, विदेशी वस्त्र दहन 1942, जयप्रकाश नारायण का आगमन 1942
रीवा	बघेलखण्ड राज्य कांग्रेस की स्थापना 1931, जनआदोलन 1934, गोलीकाड 1947
सीधी	चरुरहईबा चावल वसूली काण्ड
शहडोल	1857 के आदोलन मे सक्रिय विदेशी वस्त्र बहिष्कार व मद्य निषेध, तिलक दिवस का आयोजन 1942

छत्तीसगढ़ के जिलो में हुआ घटनाक्रम—

बिलासपुर	1857 के सग्राम में सक्रिय सहयोग, झडा-सत्याग्रह में भाग 1923, महात्मा गाधी का आगमन 1933, विद्यार्थी जुलूस 1942
रायगढ	पट्टाबदी जनआदोलन 1905, सेवा समाज की स्थापना प्रजामण्डल समाज की स्थापना 1938
सरगुजा	कोई उल्लेखनीय घटना नही
रायपुर	1857 के सग्राम के सक्रिय सहयोग होमरूल लीग का गठन 1957, महात्मा गाधी का आगमन 1920-1933, राष्ट्रीय विद्यालय का आरम्भ 1921 महाकौशल राजनीतिक सम्मेलन 1930, बाल समाज व महावीर पुस्तकालय का गठन 1930-38
दुर्ग	होमरूल लीग की दुर्ग शाखा खुली 1915 मिल हडताल 1919, जगल सत्याग्रह 1930, महात्मा गाधी का आगमन 1933, खैरागढ सेवादल का गठन 1938
राजनादगाँव	जनआदोलन 1920 राजनादगाँव स्टेट की स्थापना 1930, हरिजन आदोलन 1934, आजादी की लड़ाई के दौरान राजनादगाँव देश के चुने हुए पाँच प्रमुख आदोलन केन्द्रों में से एक था
बस्तर	आदिवासी सघर्ष 1857, बस्तर स्टेट पीपुल्स काग्रेस का गठन (जगदलबुर) 1945.

ध्यातव्य बिन्दु

- कायथा (जिला उज्जैन) वराहमिहिर की जन्मभूमि है
- वैश्य रेकरी स्तूप, उज्जैन की स्थापना मौर्य सम्राट् अशोक ने करवाई थी
- बाजबहादुर वीणा वादक था
- सिंधिया वश के सस्थापक रानो जी सिंधिया थे
- मध्य प्रदेश मे 1857 की क्रान्ति का विद्रोह नीमच की छावनी से प्रारम्भ हुआ था, जिसे कर्नल सोबर्स ने दबाया था
- तात्याँ टोपे को फाँसी 18 अप्रैल, 1859 मे शिवपुरी के जगल में मेजर मीड ने दी थी
- महात्मा गाधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940) का शुभारम्भ जबलपुर से किया था विनोबा भावे पहले सत्याग्रही बने
- लालगढ किला-झमझेरा जिला धार में स्थित है
- भारत छोडो आन्दोलन (1942) की मध्य प्रदेश मे शुरुआत विदिशा से हुई थी
- माखनलाल चतुर्वेदी ने पुष्प की अभिलाषा नामक कविता बिलासपुर जेल में लिखी थी

31

मध्य प्रदेश में संचार

आज के दौर में जहाँ 'सारा विश्व एक गाव' की कल्पना की जा रही है. जनसंचार का महत्व दिनो-दिन बढता जा रहा है. इस जनसंचार क्रांति में मध्य प्रदेश भी देश का साथ बखूबी निभा रहा है यद्यपि भारत में जनसचार की शुरूआत के काफी समय बाद मध्य प्रदेश मे जनसचार के माध्यम शुरू हुए इसके बावजूद उदार नीति का ये परिणाम हुआ कि सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में केबल टी.वी., टी.वी और रेडियो का जाल बिछ चुका है

जनसचार में दो विधाएँ बहुप्रचारित और बहुप्रचलित हैं. प्रिट मीडिया मे समाचार-पत्र पत्रिकाए और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मे रेडियो और टेलीविजन. पिछले कुछ वर्षो मे जनसंचार के क्षेत्र मे टी.वी सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हुआ है. जनसंचार के माध्यमो के विकास के मामले में मध्य प्रदेश और अन्य राज्य समान स्तर पर कहे जा सकते हैं मध्य प्रदेश सरकार ने जनसचार के माध्यमो का उपयोग जानकारी देने के साथ-साथ सामाजिक उत्थान के लिए भी किया है सामाजिक उत्थान को प्राथमिकता दी जा रही है. ग्रामीण और पिछडा राज्य होने की वजह से इस राज्य में रेडियो की लोकप्रियता अभी भी बरकरार है यद्यपि रेडियो के श्रोताओ की सख्या लगातार घटती जा रही है

मध्य प्रदेश मे समाचार-पत्रो की बाढ़ सी आई हुई है इसके बावजूद मध्य प्रदेश के कुछ समाचार-पत्र आज भी अपना एक विशेष स्थान बनाए हुए हैं नियमित पत्रिकाओ का प्रकाशन यहाँ नगण्य है,

सूचना एवं प्रसारण मत्रालय भारत सरकार के अन्तर्गत कार्यरत कार्यालयो में से निम्न कार्यालय मध्य प्रदेश मे कार्यरत हैं पत्र सूचना कार्यालय, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, गीत एव नाटक प्रभाग, विज्ञान एव दृश्य प्रचार निदेशालय, प्रदर्शनी इकाई तथा प्रकाशन विभाग

उपर्युक्त कार्यालयों के अलावा दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के केन्द्र भी प्रदेश मे हैं ये अब प्रसार भारती के अधीन हैं

टेलीविजन

भारत में टी.वी (टेलीविजन) की शुरूआत सितम्बर 1959 में हुई जब एक प्रायोगिक परियोजना के रूप मे दिल्ली मे टी.वी. सेन्टर खोला गया शुरूआत में इस सेंटर से सप्ताह मे केवल एक बार एक घटे का कार्यक्रम दिल्ली वासियो के लिए प्रसारित किया जाता था आगे चलकर इसका नाम दूरदर्शन रखा गया.

मध्य प्रदेश में रायपुर के जरिए दूरदर्शन का 1975 में प्रवेश हुआ इस केन्द्र से शुरू में प्रयोग के तौर पर प्रसारण किया गया तथा 1977 मे इस केन्द्र का विस्तार किया गया सन् 1982 में एशियाड के दौरान क्रमश इदौर और भोपाल मे कम क्षमता के प्रसारण केन्द्र स्थापित किए गए इदौर, भोपाल, ग्वालियर और जबलपुर मे उच्च क्षमता के प्रसारण केन्द्र स्थापित किए गए है इन केन्द्रो की क्षमता 10 किलोवाट है और यहाँ से 120 किलोमीटर तक प्रसारण किया जा सकता है

प्रदेश की 60 प्रतिशत जनता दूरदरर्शन के क्षेत्र मे आती है, जबकि इस समय देश की 81.5 प्रतिशत जनता दूरदर्शन प्रसारण क्षेत्र मे आ रही है इस समय प्रदेश मे कई और केन्द्रो के विस्तार की योजना प्रस्तावित है इन केन्द्रों का विस्तार हो जाने के बाद प्रदेश की 80 प्रतिशत जनता दूरदर्शन से जुड जाएगी. क्षेत्रीय प्रसारण के लिए भोपाल केन्द्र को सैटेलाइट से जोडा गया है सीधी जिले के सिगरौली नामक स्थान मे एक ट्रासमीटर भी लगाया गया है इन प्रसारण केन्द्रों से मेट्रो चैनल, सैटेलाइट चैनल और मूवी क्लब का प्रसारण भी शुरू हो गया है

उदार नीति के फलस्वरूप प्राइवेट चैनलों ने भी इस क्षेत्र मे प्रवेश प्रारम्भ कर दिया है. प्राइवेट चैनल सैटेलाइट के जरिए सारे देश में प्रसारण करते हैं

रेडियो

भारत मे मुम्बई और कोलकाता के दो निजी स्वामित्व वाले ट्रासमीटरो की सहायता से रेडियो प्रसारण 1927 मे आरम्भ हुआ. 3 जून, 1936 मे सरकार ने इसे अपने हाथ मे लेकर भारतीय प्रसारण सेवा की स्थापना की 1936 मे इसका नाम बदलकर ऑल इण्डिया रेडियो रखा गया 1957 से इसे 'आकाशवाणी' कहा जाता है.

देश मे रडियो के प्रसारण के 28 सालो बाद मध्य प्रदेश मे रेडियो से प्रसारण शुरू हुआ हिन्दी प्रसारण की

शुरूआत मे मध्य प्रदेश के इंदौर से 22 मई, 1955 मे आकाशवाणी से प्रसारण शुरू हुआ. सन् 1975 में क्रमश भोपाल और इदौर से व्यावसायिक प्रसारण शुरू हुआ 1975 के अंत तक प्रदेश मे 19 आकाशवाणी केन्द्र खुल चुके थे. सूचना और प्रसारण मंत्रालय को 1992 में पेश की गई रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश मे क्षेत्रफल के अनुसार 86.2 प्रतिशत और जनसंख्या के अनुसार 93.5 प्रतिशत लोगो तक आकाशवाणी की पहुँच थी. हाल ही में इन्दौर केन्द्र से शुरू किये गये "रेडियो मिर्ची" 98.4 डिग्री एफ.एम ने एक बार फिर श्रोताओं को रेडियो की ओर आकर्षित किया है.

भोपाल मे 10 किलोवाट और 50 किलोवाट के मीडियम वेव और शार्ट वेव ट्रांसमीटर स्थापित किए गए हैं. इस समय भोपाल, छतरपुर, ग्वालियर, इदौर, जबलपुर, रीवा, बैतूल, शिवपुरी, खडवा, शहडोल, बालाघाट, छिंदवाडा, गुना और सागर मे 'आकाशवाणी' केन्द्र स्थापित है.

समाचार -पत्र

भारत मे बंगला गजट सबसे पहला समाचार-पत्र था. मध्य प्रदेश का प्रथम समाचार-पत्र 'अखबार ग्वालियर' वर्ष 1940 के आसपास ग्वालियर से शुरू हुआ था यद्यपि इसकी कोई प्रति उपलब्ध न होने के कारण 'अखबार ग्वालियर' के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न भी लगाया जाता है. मौलाना इमदाद साबरी द्वारा लिखित 'तारीखे सहाफते उर्दू' और प्रकटलाल ओझा की 'हिन्दी समाचार-पत्र सूची' मे 'अखबार ग्वालियर' का अस्तित्व स्वीकार किया गया. इसलिए अखबार ग्वालियर को ही राज्य का पहला समाचार-पत्र माना जाता है

6 मार्च 1849 को इदौर से पडित प्रेमनारायण के संपादन में 'मालवा अखबार' का प्रकाशन शुरू हुआ था. यह अखबार हिन्दी और उर्दू भाषा मे निकलने वाला साप्ताहिक समाचार-पत्र था

सन् 1852 मे इदौर से 'दिल्ली अखबार' निकला यह मध्य प्रदेश का पहला उर्दू भाषा का समाचार-पत्र था. इससे पहले के अखबार द्विभाषी थे. वर्ष 1853 तक ग्वालियर से मुशी लक्ष्मणदास के संपादन मे साप्ताहिक ग्वालियर गजट का प्रकाशन हुआ इसके लिए आलीजाह दरबार प्रेस की स्थापना की गई थी जुलाई 1896 से ग्वालियर गजट हिन्दी उर्दू मे अलग-अलग छपने लगा था

1 नवम्बर, 1860 को इदौर से मराठी साप्ताहिक पूर्ण चन्द्रोदय का प्रकाशन शुरू हुआ इसके संपादक वासुदेव बल्लार मुले थे यह साप्ताहिक 1865 मे प्रकाशित हुआ इस बीच 1863 मे इदौर से ही साप्ताहिक वृत्त लहरी का प्रकाशन किया गया था

भोपाल में नवाब सिकदर जहाँ बेगम के शासन के दौरान सन् 1851 मे पहला उर्दू छापाखाना मतबा सिकिदरी स्थापित हुआ इसके वर्षों बाद सन् 1871 मे असगर हुसैन ने 24 मार्च से इदौर मे साप्ताहिक होल्कर सरकार गजट का प्रकाशन शुरू किया धार रियासत की ओर से वर्ष 1873 में साप्ताहिक वृत्तधारा का प्रकाशन धार से शुरू हुआ था

वर्ष 1873 में एक मार्च को जबलपुर से प्रथम मासिक समाचार-पत्र जबलपुर समाचार के नाम से प्रकाशित हुआ यह द्विभाषी अखबार था जो हिन्दी और अंग्रेजी में छपता था. जबलपुर से प्रकाशित इस अखबार का मुद्रण बनारस के मेडिकल प्रेस हॉल से होता था और इसके संपादक श्री कृष्णराव होशगाबाद में रहते थे

वर्ष 1877 में खण्डवा से रेलवे समाचार का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जो सन् 1882 मे इंदौर से साप्ताहिक रूप मे निकला यह हिन्दी, उर्दू और अग्रेजी मे प्रकाशित होता था. वर्ष 1877 में जबलपुर से मेसोनिक रिकॉर्ड ऑफ वेस्टर्न इडिया नामक मासिक समाचार-पत्र शुरू हुआ था वर्ष 1883 मे जबलपुर से शुभ चितक प्रेस से साप्ताहिक समाचार–पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ इसके सपादक श्री राम गुलाम अवस्थी थे. इसमें साहित्य का अंक पृथक् से काव्य सुधानिधि के नाम से प्रकाशित किया जाता था और इसका संपादन श्री रघुवर प्रसाद द्विवेदी करते थे. शुभ चितक समाचार-पत्र का प्रकाशन दो वर्ष के अन्दर ही बंद हो गया था

वर्ष 1883 मे भोपाल से उर्दू साप्ताहिक सदाकत का मो. अब्दुल करीम ओज ने प्रकाशन आरम्भ किया लेकिन बाद में भोपाल से निर्वाचित होने के बाद श्री ओज ने वर्ष 1894 में होशगाबाद से मौज-ए-नर्मदा नाम से इस अखबार का प्रकाशन किया वर्ष 1884 में नरसिहपुर मासिक सरस्वती विलास निकला. इसके संपादक श्री नन्हेलाल थे. 1885 मे इदौर से मराठी मासिक सत्यबोधिनी का प्रकाशन ब्रह्म समाज की ओर से किया गया था. सन् 1886 में जबलपुर से अग्रेजी साप्ताहिक सेन्ट्रल इडिया न्यूज का प्रकाशन शुरू हुआ था.

वर्ष 1887 में रीवा से साप्ताहिक भारत भ्राता का प्रकाशन शुरू हुआ इसके सस्थापक व संपादक रीवा राज्य के सेनापति लाल बलदेव सिह थे वर्ष 1890 मे भोपाल से मौलवी अमजद अली ने उर्दू साप्ताहिक दबीसल मुल्क निकाला वर्ष 1891 में जबलपुर से हिन्दी पाक्षिक विक्टोरिया सेवक और हिन्दी मासिक प्रजाहितैषी का प्रकाशन शुरू हुआ. वर्ष 1892 मे भोपाल से अर्जुमद मोहम्मद खान ने हिलाल निकाला. इसी वर्ष इदौर से मालवा समाचार निकला वर्ष 1893 मे जबलपुर से उर्दू साप्ताहिक तबलीग निकला वर्ष 1893 मे सागर से नारायण बाल कृष्ण ने विचार वाहन शुरू किया. वर्ष 1894 मे जबलपुर से द जबलपुर टाइम्स का प्रकाशन शुरू हुआ. वर्ष 1895 मे द्विभाषी साप्ताहिक हिन्दी और अंग्रेजी मे न्याय रतन छिंदवाडा से प्रकाशित हुआ इसी वर्ष सागर से विचार वेदात और भोपाल से मुजफ्फरी का प्रकाशन आरम्भ हुआ भोपाल से ही 1897 में मेहरे मुनीर का प्रकाशन शुरू हुआ वर्ष 1899 मे जबलपुर से साप्ताहिक क्रिश्चियन सेवक एव जबलपुर पोस्ट का प्रकाशन हुआ इसी वर्ष भोपाल से मासिक गुलशना निकला और सागर से मासिक प्रभात शुरू हुआ इसके सपादक श्री नरवरे थे

मध्य प्रदेश से प्रकाशित होने वाले दैनिक समाचार पत्र

जबलपुर—नवीन दुनिया, नवभारत, देशबन्धु, लोकसेवा, हिन्दी एक्सप्रेस, नर्मदा ज्योति, दैनिक भास्कर, स्वदेश, स्वतत्रमत आदि

इंदौर—नई दुनिया, दैनिक भास्कर, इंदौर समाचार, स्वदेश नवभारत, महा मध्य प्रदेश, दैनिक जनार्दन, विश्व भ्रमण, अग्निबाण फ्री–प्रेस जर्नल (अग्रेजी), लोक स्वामी चौथा ससार आदि

भोपाल—दैनिक नई दुनिया, नवभारत, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, दैनिक आलोक, देशबंधु, साध्य प्रकाश, स्वदेश तथा अलहमरा, नदीम, आफताब-ए-जदीद (तीनों उर्दू) प्रवेश टाइम्स और न्यूज एक्सप्रेस, नेशनल मेल तथा एम पी क्रानिकल (दोनों अंग्रेजी) आदि.

उज्जैन—प्रजादूत, दैनिक भास्कर, विक्रम दर्शन अवन्तिका व्यापारिक रिपोर्ट ब्रिगेडियर, अग्निबाण, जलती मशाल आदि

ग्वालियर—स्वदेश दैनिक भास्कर नवभारत, दैनिक लोकपथ, नवप्रभात भारत भूमि, ग्वालियर समाचार, जन उत्थान, लश्कर समाचार, दैनिक निरंजन, आचरण, श्रम साधना जवाहर के लाल चम्बल वाणी दैनिक मानव, जनप्रवाह लोक गाथा आदि

सतना—सतना समाचार, नेशनल टुडे न्यूज, देशबधु, स्वदश, भास्कर आदि

कटनी—भारती, दैनिक मध्य प्रदेश, केसरी, महाकौशल, जनमजय

दमोह—कर्तव्य

छतरपुर—कृष्ण क्राति जनहित दर्शन

टीकमगढ—ओरछा टाइम्स.

मदसौर—ध्वज, कीर्तिमान, दशपुर दर्शन, क्षेत्रीय समाचार

बड़वानी—निमाड एक्सप्रेस

मुरैना—युग प्रणता दैनिक मध्यराज, चम्बल वाणी

बालाघाट—विश्व सूर्य, बालाघाट टाइम्स.

शहडोल—शहडोल टाइम्स, समय, दैनिक मध्य प्रदेश

दतिया—अजाम, दतिया टाइम्स

नीमच—नई विधा, अमृत मथन

रतलाम—चतना

बुरहानपुर—वीर सावरी

इनके अलावा भी कई समाचार-पत्र तथा आवधिक प्रदेश के सतना तथा अन्य स्थानों से प्रकाशित हो रहे हैं आवधिकों की सख्या तो इनसे कई गुना अधिक है

जनसम्पर्क विभाग

मध्य प्रदेश शासन के इस विभाग का प्रसार सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के अलावा देश की राजधानी दिल्ली तथा प्रमुख व्यापारिक केन्द्र मुम्बई में भी है मीडिया को लेख समाचार तथा फोटो देने के अलावा पत्रों को विज्ञापन तथा पत्रकारों को अधिमान्यता देने सम्बन्धी सूत्रों का सचालन भी उनके द्वारा होता है पत्रकारों के कल्याण सम्बन्धी पत्रकार कल्याण कोष की स्थापना उनके द्वारा की गई है

मध्य प्रदेश माध्यम

मध्य प्रदेश माध्यम मध्य प्रदेश शासन का सृजनात्मक उपक्रम है जिसकी गतिविधियों का क्षेत्र सचार से जुडा हुआ है, इनके द्वारा रोजगार और निर्माण का प्रकाशन किया जाता है जिसकी प्रसार सख्या लक्षाधिक है शासकीय नीतियों सम्बन्धी प्रचार सामग्री का आकल्पन करने के अतिरिक्त दूरदर्शन के लिए समाचार तथा फिल्में भी इस विभाग द्वारा तैयार की जाती हैं

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय संस्थान

भारतीय भाषाओं, विशेषत हिन्दी मे पत्रकारिता के क्षेत्र मे शिक्षा, प्रशिक्षण और शोध के लिए मध्य प्रदेश शासन द्वारा इसकी स्थापना 16 जनवरी, 1991 को भोपाल मे की गई राष्ट्रीय स्तर का यह सस्थान पत्रकारिता और जनसचार की विधाओं मे शिक्षा दे रहा है पत्रकारिता पाठ्यक्रम मध्य प्रदेश के अन्यान्य विश्वविद्यालयो जैसे इंदौर सागर भोपाल आदि मे भी सचालित हैं

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार-पत्र संग्रहालय

19 जून, 1984 से भोपाल मे स्थापित यह संग्रहालय अब माधवराव सप्रे मार्ग स्थित निजी भवन मे कार्यरत् है इसके शोध ग्रथालय प्रभाग में सुलभ बहुविध सामग्री का उपयोग देश के शोधार्थियों द्वारा पत्रकारिता मे शोध के लिए किया जाता है

पत्रकारों के संगठन

मध्य प्रदेश में प्रमुखत दो पत्रकार सगठन–मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार सघ तथा मध्य प्रदेश आचलिक पत्रकार सघ कार्यरत् हैं पत्रकार भवन भोपाल तथा जबलपुर में है

समाचार एजेंसियाँ

इनमें प्रेस ट्रस्ट ऑफ इडिया (पी टी आई) तथा भाषा और यूनाइटेड न्यूज ऑफ इडिया (यू एन आई) तथा वार्ता के कार्यालय प्रदेश मे हैं देश की इन दोनो प्रमुख समाचार एजेंसियो द्वारा अग्रेजी तथा हिन्दी भाषा मे समाचार ग्राहक समाचार-पत्रो को सशुल्क दिए जाते हैं इनके अतिरिक्त कतिपय न्यूज फीचर एजेन्सियाँ भी प्रदेश मे कार्यरत् है

32

मध्य प्रदेश में महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम

समाज कल्याण कार्यक्रमों मे महिला एवं बाल विकास का प्रमुख स्थान है. राज्य में महिलाओं एवं बालको के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न विभागों में संचालित गति-विधियों मे समता तथा समुचित विकास की दृष्टि से 15 अगस्त, 1986 से राज्य शासन द्वारा महिला एवं बाल विकास संचालनालय का गठन पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अन्तर्गत किया गया तथा महिलाओं एवं बच्चों के विकास से सम्बन्धित विभिन्न विभागों की गतिविधियों को शामिल किया गया. इन कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशाली ढंग से लागू करने के लिए सितम्बर 1988 से पृथक् महिला बाल विकास विभाग बनाया गया है इस विभाग के दायित्व इस प्रकार हैं–

महिलाओं का आर्थिक विकास एवं उन्नयन, सामाजिक विकास, उनमें कानूनी अधिकारो सम्बन्धी जागृति, महिलाओ एवं बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं प्रशिक्षण, एकीकृत बाल विकास सेवाएं, पोषण आहार एवं मध्याह्न भोजन सम्बन्धी कार्यक्रमो की देखभाल तथा कार्य योजना के क्रियान्वयन के लिये अन्तर्विभागीय समन्वय, शासन द्वारा महिलाओं और बच्चों के विकास और कल्याण के लिये जो दायित्व निर्धारित हैं, उनकी पूर्ति की दिशा में इन वर्गों के हितग्राहियो को लाभान्वित करने के लिये विभिन्न योजनाए एवं कार्यक्रम विभाग द्वारा सचालित किये जा रहे हैं

संचालनालय द्वारा संचालित योजनाएं

समेकित बाल विकास सेवा योजना (आईसीडीएस)

1975–76 से प्रदेश मे प्रारम्भ की गई इस योजना का उद्देश्य 6 वर्ष तक के बच्चो को समुचित पूरक पोषण आहार प्रदाय कर स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार लाना, उनके मनोवैज्ञानिक, शारीरिक एव सामाजिक विकास के लिए उचित आधार प्रदान करना कमजोर वर्ग की गर्भवती एव शिशुवती माताओं को ऑगनवाडी के माध्यम से लाभान्वित करना है इसके लिये समन्वित रूप से निम्नलिखित सेवाए आँगनवाडी केन्द्रो में दी जाती है–

1. पूरक पोषण आहार
2. स्वास्थ्य जॉच
3. प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल/परामर्श सेवाएँ
4. टीकाकरण
5. पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा
6. स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा

इस योजना के तहत् भारत शासन के मापदण्डों के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में 1000 की जनसख्या पर तथा आदिवासी क्षेत्रों मं 700 की जनसंख्या पर आँगनवाडे केन्द्र स्थापित किये जाते हैं. साथ ही पहाडी एवं मरुस्थलीय स्थल पर 300 या अधिक जनसख्या पर भी आँगनवाडी केन्द्र खोला जा सकता है. यह भी निर्देश है कि 300 से कम जनसख्या वाले ग्रामों, मजदो को समीपस्थ आँगनवाडी केन्द्र से सम्बद्ध किया जाना चाहिए. राज्य की 12070 आँगनवाडियो में कार्यरत् उप आँगनवाडी कार्यकताओ का मासिक मानदेय ₹1500 से बढाकर ₹ 2250 किया गया

बाल संजीवनी अभियान

प्रदेश मे कुपोषण से बचाव एवं निदान हेतु वर्ष 2001 से वर्ष मे दो बार बाल सजीवनी अभियान चलाया जा रहा है. इस अभियान से प्रदेश में कुपोषण को कम करने में सफलता प्राप्त हुई है. कुल कुपोषण का प्रतिशत वर्ष 2001 में 57·57 से घटकर वर्ष 2007 मे आयोजित 10वे बाल सजीवनी अभियान के बाद यह 47·50 प्रतिशत हो गया है इसी तरह गम्भीर कुपोषण का प्रतिशत 5·50 से घटकर 0·68 प्रतिशत रह गया है प्रत्येक अभियान मे चिह्नांकित गम्भीर कुपोषित बच्चो की चिकित्सा, दवाइयाँ आदि के लिए बाल शक्ति योजना चलाई जा रही है.

प्रोजेक्ट मुस्कान

महिलाओ एव बच्चों में कुपोषण मातृ मृत्यु दर शिशु मृत्यु दर व एनीमिया कम करने के उद्देश्य से प्रदेश के सभी जिलों की 367 परियोजनाओ में प्रोजेक्ट मुस्कान अन्तर्गत विशाल स्वास्थ्य जॉच व उपचार शिविर आयोजित किए जा रहे हैं इन स्वास्थ्य शिविरो मे 0-6 वर्ष के सभी बच्चो किशोरी बालिकाओ, गर्भवती व धात्री माताओ का स्त्री रोग शिशु रोग, दन्त रोग व नेत्र रोग चिकित्सको द्वारा स्वास्थ्य जॉच व हीमोग्लोबिन आदि आवश्यक परीक्षण करवाये जाने की व्यवस्था की गई है

राजीव गांधी किशोरी बालिका सशक्तिकरण योजना 'सबला'

भारत सरकार द्वारा स्वीकृत की गई राजीव गांधी किशोरी बालिका सशक्तिकरण योजना 'सबला' का क्रियान्वयन प्रदेश के 15 जिलों–श्योपुर, राजगढ सीधी नीमच, झाबुआ, टीकमगढ रीवा, भिण्ड, दमोह, इन्दौर सागर, जबलपुर, भोपाल, बैतूल एवं बालाघाट मे प्रायोगिक तौर पर किया जा रहा है. इन जिलो में यह योजना पूर्व मे सचालित किशोरी शक्ति योजना (KSY) एव किशोरी बालिकाओं के लिए पूरक पोषण आहार कार्यक्रम (NPAG) के स्थान पर क्रियान्वित की जा रहा है. आँगनबाडी केन्द्र पर लगभग 25 किशोरी बालिकाओं का किशोरी समूह गठित करके उसमे से एक सखी य दो सहेली का चयन किया जाता है, इन सखी सहेलियो का विभागीय कर्मचारियों एव अशासकीय सस्थाओं के माध्यम से स्वास्थ्य, पोषण, जीवन कौशल एव अर्थ सम्बन्धी विषयों पर प्रशिक्षण एवं 16 से 18 वर्ष की चिह्नित शाला त्यागी किशोरी बालिकाओ को राजगार के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से एम ई एस. कोर्सेस (एम.पी.सी.वेट) के माध्यम से व्यवसायिक प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है।

इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना (आई.जी. एम.एस.वाई.)

वित्तीय वर्ष 2010–11 मे भारत सरकार द्वारा देश के 52 जिलो में प्रायोगिक आधार पर इदिरा गाधी मातृत्व सहयोग योजना (आई.जी.एम एस वाई.) के क्रियान्वयन की स्वीकृति दी गई है. मध्य प्रदेश के 2 जिलो–सागर एव छिन्दवाडा को इस योजना अन्तर्गत चयनित किया गया है.

मध्यप्रदेश भासन, महिला एवं बाल विकास द्वारा 24 सितम्बर 2011 को योजना क्रियान्वयन की स्वीकृति दी गई है. समेकित बाल विकास सेवा योजना की सरचना की सरचना के माध्यम से गाँव मे आँगनबाडी केन्द्र द्वारा योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है.

इस योजना का उद्देश्य गर्भवती और धात्री महिलाओ को उनके बच्चे के जन्म के पूर्व एव पश्चात् मजदूरी मे होने वाली हानि की आशिक क्षतिपूर्ति एवं गर्भवती और धात्री महिलाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति मे सुधार लाना है. इस योजना मे 19 वर्ष या इससे अधिक आयु की गर्भवती एव धात्री महिलाओ को उनके पहले दो जीवित शिशुओं तक पात्रता है. योजना मे निर्धारित शर्तों को पूर्ण करने वाली महिला को उसके बच्चे के 6 माह की आयु पूर्ण होने पर तीन किश्तो मे कुल राशि ₹ 4000 दिए जा रहे है. प्रोत्साहन राशि के रूप मे कार्य पूर्ण होने पर प्रति लाभार्थी के मान से आँगनबाडी कार्यकर्ता को राशि ₹ 200 एव सहायिका को राशि ₹ 100 दिये जाते है.

समेकित बाल संरक्षण योजना ((आई.सी.पी.एस.)

किशोरी न्याय (बालको की देखरेख) अधिनियम, 2000 एवं नियम 2003 के प्रावधानो के अनुसार कठिन परिस्थितियो मे रहने वाले तथा विधि विवादित बच्चो के समग्र कल्याण एव पुनर्वास हेतु समेकित बाल सरक्षण योजना वर्ष 2009 से प्रारम्भ की गयी है. यह योजना बाल अधिकार सरक्षण और सर्वोत्तम बालहित के दिशा–निर्देशक सिद्धान्तो पर आधारित है. इस योजना का क्रियान्वयन शासन द्वारा सामाजिक न्याय विभाग से महिला एव बाल विकास विभाग को दिनाक 27 अक्टूबर, 2010 को सौंपा गया है.

लाड़ली लक्ष्मी योजना

बालिकाओ के जन्म के प्रति सकारात्मक सोच उनकी अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य लिंग अनुपात मे सुधार सम्पूर्ण विकास एव अच्छे भविष्य की आधारशिला रखने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश मे लाडली लक्ष्मी योजना 1 अप्रैल 2007 से लागू की गई है इस योजना के अन्तर्गत बालिका के जन्म से 5 साल तक ₹ 6000 वार्षिक (कुल ₹ 30000) राष्ट्रीय बचत-पत्र क्रय किये जाते है इस योजना के तहत् दिनाक 1 जनवरी, 2006 के बाद जन्मी बालिकाओ को लाभ दिया जा रहा है बालिका के कक्षा 6वी मे प्रवेश पर ₹ 2000 कक्षा 9वीं मे प्रवेश पर ₹ 4000 11वी कक्षा मे प्रवेश पर ₹ 7500 साथ ही 11वी व 12वी की पढाई के दौरान ₹ 200 प्रतिमाह दिये जाने का प्रावधान है बालिका को 21 वर्ष उपरात ₹ 1 लाख से अधिक की राशि प्रदान की जाएगी अब अप्रैल 2008 के बाद जन्मी प्रथम बालिका को इसके माता-पिता के द्वारा विवाहोजन न कराने पर भी उसे इस योजना का लाभ प्राप्त होगा सितम्बर 2014 तक प्रदेश मे 19 लाख बेटियाँ लाडली लक्ष्मी योजना के अन्तर्गत सम्मिलित हो चुकी है

उषा किरण

महिलाओ एव बच्चों को घरेलू हिंसा से बचाने के लिए घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम 2006 के तहत् राज्य सरकार द्वारा उषा किरण योजना लागू की जा रही है यह अधिनियम घरेलू हिंसा के विरुद्ध सरक्षण एव सहायता का अधिकार देता है जिसमे शारीरिक लैंगिक मौखिक और भावनात्मक आर्थिक हिंसा इत्यादि सम्मिलित है इन नियमो के अन्तर्गत पीड़िता को अधिनियम नियमो के प्रावधान के अनुसार सेवाए प्रदान की जाती है इसके तहत् पीड़िता महिलाओ को चिकित्सा एव कानूनी सहायता पुनर्वास परामर्श अल्पकालीन आवास आश्रय उपलब्ध कराया जाता है

मंगल दिवसों का आयोजन

आँगनवाडी केन्द्रों के प्रति जनसामान्य को आकर्षित करने, सामुदायिक सहभागिता बढाने तथ आँगनवाड़ी की सेवाओ को लोकप्रिय बनाने के लिए पूरक पोषण आहार व्यवस्था मे परिवर्तन के साथ-साथ कुछ नवीन गतिविधियों 'मगल दिवस' के रूप मे प्रारम्भ की गई हैं. इन गतिविधियाँ के अन्तर्गत ऑगनवाडी केन्द्रों पर माह के प्रथम, द्वितीय एव तृतीय तथा चतुर्थ मगलवार को क्रमशः निम्नलिखित कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है–

1 गोदभराई कार्यक्रम

2. अन्नप्राशन कार्यक्रम

3 जन्म दिवस कार्यक्रम

4. किशोरी बालिका दिवस

1 **गोदभराई कार्यक्रम**–यह कार्यक्रम माह के प्रथम मगलवार को आयोजित किया जाता है इस कार्यक्रम मे गाँव की गर्भवती महिलाओ को आँगनवाडी केन्द्र मे आमत्रित कर आयरन फोलिक एसिड की गोलियॉ, मातृ एव शिशु रक्षा कार्ड तथा बी. पी एल परिवार की महिलाओं को प्रसव पूर्व आर्थिक सहायता राशि ₹ 600 भी दी जाती है. गर्भवती महिला को मागलिक सामग्री, जैसे–श्रीफल, सिदूर, चूडी, बिन्दी इत्यादि प्रतीक स्वरूप दी जाती है साथ ही उन्हें गर्भावस्था मे उचित आहार और देखभाल से सम्बन्धित जानकारी दी जाती है

2. **अन्नप्राशन कार्यक्रम**–अन्नप्राशन कार्यक्रम मे ऑगनवाडी कार्यकर्ता माह के द्वितीय मगलवार को गाँव की सभी गर्भवती / धात्री माताओ को ऑगनवाडी केन्द्र पर आमत्रित करती हैं तथा 6 माह पूर्ण करने वाले बच्चो को प्रथम बार ऊपरी आहार देती है इस अवसर पर पात्र बच्चे को कटोरी चम्मच प्रतीक स्वरूप दी जाती है इस आयोजन मे बच्चों की माँ को ऊपरी आहार की शुरूआत के महत्व पर परिवार के अन्य सदस्यों के साथ परामर्श भी दिया जाता है

3 **जन्म दिवस कार्यक्रम**–ये कार्यक्रम माह के तीसरे मगलवार को आयोजित किया जाता है इस कार्यक्रम मे, माह विशेष में पडने वाले सभी बच्चों का ऑगनवाडी स्तर पर सामूहिक जन्मदिन मनाया जाता है ऑगनवाडी कार्यकर्ता सभी बच्चो का वजन लेकर रजिस्टर मे दर्ज करती हैं आयोजन के दौरान बच्चो को गिफ्ट के रूप मे पेन्सिल रबर पानी की बोतल इत्यादि प्रतीक स्वरूप दी जाती है

4 **किशोरी बालिका दिवस**–प्रत्येक माह के चौथे मगलवार को किशोरी बालिका दिवस मनाया जाता है इस दिन ऑगनवाडी केन्द्र पर दर्ज किशोरी बालिकाओ को किशोरी शक्ति योजना के तहत् सतुलित आहार प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल तथा आर्थिक गतिविधियो से सम्बन्धित प्रशिक्षण दिया जाता है. इस अवसर पर उपस्थित पात्र किशोरी बालिकाओ के लिए विभिन्न प्रकार की सामान्य ज्ञान एवं खेल प्रतियोगिताएं भी आयोजित किए जाने का प्रावधान है कार्यक्रम के दौरान किशोरी बालिकाओं की स्वास्थ्य जाँच की जाती है एव आवश्यकतानुसार उपचार कर निःशुल्क दवा उपलब्ध कराई जाती है

राष्ट्रीय किशोरी शक्ति योजना

राष्ट्रीय किशोरी बालिका योजना मध्य प्रदेश में 1992 मे लागू की गई थी इस योजना मे ऐसी किशोरी बालिकाए जो अविवाहित हैं, गरीबी रेखा के नीचे परिवारो से हैं और जिन्होने स्कूल की पढाई बीच में ही छोड दी है. को चुनकर 6 माह के लिये आँगनवाडी केन्द्रो से जोडकर जीवनोपयोगी जानकारी व प्रशिक्षण दिया जाता है. इस योजना का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं में आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और गौरव की भावना को बढाना है 11 से 15 वर्ष की बालिकाओ, जिनके परिवार की आय ₹ 6400 वार्षिक से कम है चयन कर ऑगनवाड़ी केन्द्र से सलग्न कर मातृत्व के लिये तैयार करने के लिये प्रशिक्षण, कुपोषण की स्थिति मे दोगुना राशन, एनीमिया (रक्ताल्पता) होने पर आयरन फोलिक एसिड तथा पेट के कीडो के लिये दवा दिये जाने का प्रावधान है जिससे पोषक तत्वो को शरीर पूरी तरह ग्रहण कर सके

योजना के दूसरे भाग में 15 से 18 वर्ष आयु समूह की सभी बालिकाओ / किशोरियो को चाहे उनके परिवार की आय कुछ भी हो, चयनित किया जाता है. उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु रोजगारमूलक प्रशिक्षण दिया जाता है प्रदेश के सभी 367 बाल विकास परियोजनाओ मे इस याजना को सचालित किया जा रहा है

विभागीय शासकीय संस्थाएं, अनुदान योजनाएं एवं महिला स्वास्थ्य की योजनाएं

नारी निकेतन

विधवा परित्यक्ता निराश्रित कुँआरी माताओ समाज से प्रताडित महिलाओ को आश्रय देने के लिए प्रदेश के उज्जैन जबलपुर सतना, ग्वालियर जिलो मे नारी निकेतन स्थापित हैं इनमें महिलाओं और 7 वर्ष तक के बच्चो को निःशुल्क आवास शिक्षा, भोजन वस्त्र तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उनके पुनर्वास की व्यवस्था की जाती है गृहो के सचालन के लिये शासकीय अमला पदस्थ होता है प्रति केन्द्र 50 (पचास) महिलाओ की क्षमता है.

महिला उद्धारगृह, इन्दौर

इम्मोरल ट्रेफिक (प्रिवेन्शन) एक्ट के अतगत पकडी गई महिलाए न्यायालय के आदेश से यहाँ रखी जाती हैं जहाँ

उनके नैतिक सुधार के साथ साथ उनके आवास, शिक्षा व प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सके यह केन्द्र इदौर मे संचालित है उद्धारगृह में 50 महिलाओ के रहने की क्षमता है.

अल्पकालीन आवास गृह

इम्मोरल ट्रेफिक (प्रिवेन्शन) एक्ट के अतर्गत पुलिस द्वारा पकड़ी गई महिलाओं को इन केन्द्रों मे आवास, शिक्षा तथा प्रशिक्षण की सुविधा दी जाती है. ये केन्द्र रीवा तथा जबलपुर मे हैं इसमें 50 महिलाओ के निवास की व्यवस्था है.

राजकीय बालिका अनुरक्षण गृह, ग्वालियर

इस गृह में कुष्ठ रोगियों के 13–18 वर्ष की आयु की स्वस्थ बालिकाओं तथा अनाथ व निराश्रित बालिकाओं को आवास, शिक्षा, प्रशिक्षण की सुविधा दी जाती है ताकि उनका पुनर्वास हो सके

महिला वसति गृह

मध्य प्रदेश की मूल निवासी अपने गृह नगर से बाहर नौकरी करने वाली महिलाओ को आवासीय सुविधा देने के लिए इदौर एव जबलपुर मे कामकाजी महिला वसति गृह सचालित हैं प्रत्येक वसति गृह की क्षमता 100 महिलाओ की है

राजकीय बाल संरक्षण आश्रम, इंदौर

इस केन्द्र मे 13 वर्ष से कम आयु के अनाथ व निराश्रित बच्चो को आवास, शिक्षा, भोजन, वस्त्र तथा प्रशिक्षण की सुविधा दी जाती है अंत वासियो की क्षमता 50 बच्चो की है

शासकीय बाल सरक्षण गृह

यह प्रदेश के 3 जिलो उज्जैन, सीधी, सिवनी मे स्थापित है इन केन्दो मे कुष्ठ रोगियो के 13 वर्ष से कम आयु के स्वस्थ बच्चों को आवास, शिक्षा, भोजन, वस्त्र तथा प्रशिक्षण की सुविधा दी जाती है प्रत्येक केन्द्र मे 30 बालक/बालिका के रहने की व्यवस्था है

राजकीय अनुरक्षण गृह, भोपाल

इस केन्द्र मे अनाथालय तथा शासकीय बाल सरक्षण गृहो से स्थानातरित 13 से 18 वर्ष के किशोर रखे जाते हैं इन्हें शिक्षा आवास की सुविधा देकर पुनर्वास हेतु सहयोग दिया जाता है

शासकीय झूलाघर

निम्न मध्यम आय वर्ग की कामकाजी महिलाओं के 6 माह से 6 वर्ष तक के बच्चो की देखभाल के लिए 8 शासकीय झूलाघर सचालित है ये सतना इटारसी, उज्जैन सागर जबलपुर ग्वालियर खण्डवा एव भोपाल मे हैं

बालवाड़ी सहसंस्कार केन्द्र

वर्तमान मे प्रदेश मे 6 शासकीय बालवाडी सहसस्कार केन्द्र सचालित हैं. ये सस्थाए मण्डला, बालाघाट, बुरहानपुर (खण्डवा), ग्वालियर, सनगंवा (रीवा) एवं भोपाल मे हैं एक केन्द्र में 10 से 40 बच्चे रहते हैं 3 से 6 वर्ष के बच्चो को अनौपचारिक शिक्षा व पोषण आहार देना इन केन्द्रों का उद्देश्य है

मातृ कुटरी

इस योजना का उद्देश्य अनाथ व निराश्रित बच्चो तथा ऐसी ही महिलाओ को एक साथ परिवार के रूप मे गठित करके पारिवारिक वातावरण मे बच्चों के पालन, पोषण व शिक्षा की सुविधा मुहैया करना है. माँ व बच्चो का निःशुल्क परिपालन, पोषण, शिक्षण, प्रतिरक्षण, स्वास्थ्य की देखभाल की जाती है वयस्क होने तक बच्चे सस्था में रहते हैं

सिलाई-कढ़ाई केन्द्र

गरीब बेसहारा, निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार की महिलाओ को सिलाई-कढाई का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने हेतु 19 शासकीय सिलाई-कढाई प्रशिक्षण केन्द्र सचालित हैं ये केन्द्र बैतूल, धार, खरगोन, मुरैना, रतलाम, भोपाल, सीहोर, मण्डला, होशगाबाद, छिन्दवाडा, दतिया, शहडोल, सीधी, सतना, रीवा (दो), पन्ना छतरपुर एव टीकमगढ में सचालित हैं इन केन्द्रों में 5 वी उत्तीर्ण महिला प्रवेश ले सकती हैं एक वर्ष मे एक बार परीक्षा लेकर प्रमाण-पत्र जिला कार्यक्रम अधिकारी/जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी द्वारा दिये जाते हैं

जवाहर बाल भवन

राजधानी के बच्चो के मनोरजन के साथ-साथ उनकी नैसर्गिक प्रतिभा के विकास के लिए उन्मुक्त वातावरण उपलब्ध कराने के लिए भोपाल मे जवाहर बाल भवन की स्थापना वर्ष 1987 मे की गई थी

यहाँ चित्रकला मूर्तिकला, ऐरोमॉडलिंग कम्प्यूटर, नाटक, सगीत, नृत्य, सिलाई कढाई, खेलकूद हस्तकला पेपर आर्ट विज्ञान सम्बन्धी गतिविधियों का सचालन किया जाता है

महिला जागृति शिविर

महिला बाल विकास एव अन्य विभागो द्वारा सचालित योजनाओं कानूनो एव विकास के विभिन्न पहलुओ की जानकारी के लिये ग्राम स्तर, विकासखण्ड स्तर तथा जिला स्तर पर महिलाओ के जागृति शिविर आयोजित किये जाते हैं जिसके लिए आवंटन जिलो को उपलब्ध कराया जाता है वर्ष 1999-2000 मे लक्ष्य 504 के विरुद्ध 511 महिला

जागृति शिविर आयोजित किये गये, जिसमे 158221 से अधिक महिलाए लाभान्वित हुई हैं

स्वैच्छिक संस्थाओं के लिये अनुदान योजनाएं

जिला योजना समिति को अधिकारों का प्रत्यायोजन

शासन की विकेन्द्रीकरण की नीति के तारतम्य में वर्ष अप्रैल, 1999 से अशासकीय संस्थाओं को अनुदान, मान्यता के सम्बन्ध मे नई व्यवस्था लागू की गई इसके तहत् मान्यता एवं अशासकीय संस्थाओ के अनुदान निरन्तरता के अधिकार जिला योजना समिति को सौंपे गए हैं

अनाथालय को अनुदान

प्रदेश मे स्वैच्छिक संस्थाओ द्वारा शासकीय अनुदान से 10 अनाथालय संचालित हैं जिनमे अनाथ बच्चों का पालन, पोषण व शिक्षा की व्यवस्था की जाती है इस योजना के अन्तर्गत ₹ 200 प्रति बालक प्रतिमाह व्यय सीमा के अन्तर्गत 75 प्रतिशत के मान से अनुदान राशि स्वीकृत की जाती है, जिससे अनाथ बालको की पालन-पोषण की व्यवस्था होती है

वेश्यावृत्ति उन्मूलन हेतु जाबाली योजना

मध्य प्रदेश की कुछ जातियों में देश्यावृत्ति को व्यवसाय के रूप में मान्यता प्राप्त है इस समस्या को गम्भीरता से लेते हुए राज्य शासन द्वारा वर्ष 1992-93 से जाबाली योजना लागू की गई है इस योजना के तहत् बेडिया बाछडा एव सांसी जाति के उत्थान हेतु कार्य किए जा रहे हैं जैसे–गैर-सरकारी संगठनों (एन जी ओ) द्वारा स्वैच्छिक संस्थाओं के माध्यम से बच्चों के लिए 14 आश्रमशाला एव महिलाओ के लिए आर्थिक उपार्जन कार्यक्रम स्वास्थ्य जाँच उपचार तथा जनचेतना और प्रचार-प्रसार की गतिविधियाँ सम्मिलित है इस योजना मे बालक बालिकाओ के लिए शिष्यवृत्ति क्रमश ₹ 500-525 प्रति बालक/बालिका निर्धारित की गई है इस योजनान्तर्गत एक यूनिट आश्रमशाला मे 50 बालक/बालिकाओ की क्षमता निहित है जिससे 700 हितग्राही लाभान्वित हो रहे है

मध्य प्रदेश राज्य समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड को अनुदान

राज्य शासन द्वारा मध्य प्रदेश राज्य समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड को स्थापना व्यय तथा कल्याण परि योजनाओं हेतु अनुदान स्वीकृत किया जाता है राज्य समाज कल्याण बोर्ड के संविधान के नियम के अनुसार बोर्ड के कार्यालय की स्थापना पर होने वाल व्यय का 50 प्रतिशत तथा समाज कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष की सुविधा हेतु व्यय का 100 प्रतिशत एव कल्याण/विस्तार परियोजना के लिए 33 प्रतिशत राज्य शासन द्वारा अशदान दिया जाता है

निराश्रित बाल गृह

इस योजना के अन्तर्गत निराश्रित बच्चो के पालन पोषण तथा शिक्षा की व्यवस्था करने वाली स्वैच्छिक संस्थाओ को अनुदान दिया जाता है प्रति बालक प्रति माह ₹ 250 की व्यय सीमा निर्धारित है जिसका 90 प्रतिशत अनुदान शासन से स्वीकृत होता है

जवाहर बाल विकास केन्द्रों को अनुदान

नेहरू शताब्दी वर्ष मे राज्य शासन द्वारा अनुसूचित जनजाति के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए जोबट जिला झाबुआ में बाल विकास केन्द्रो का प्रारम्भ स्वैच्छिक संस्था के माध्यम से किया गया था इस हेतु बाल निकेतन सघ, इदौर को इन केन्द्र के संचालन के लिए अनुदान स्वीकृत किया जाता है उक्त योजना मे बच्चो को शिक्षा व्यावसायिक प्रशिक्षण एव स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी दी जाती है

सामान्य गतिविधियों के लिए अनुदान

महिला एव बच्चो के कल्याण की सामान्य गतिविधियों से सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, बालवाडी, पुस्तकालयों के संचालन आदि के लिए आवर्ती मद में 33 3 प्रतिशत तक अनावर्ती मद में कुल व्यय का 50 प्रतिशत सहायक अनुदान स्वीकृत किया जाता है

विपत्तिग्रस्त महिलाओं को पुनर्वास प्रशिक्षण

इस योजना के अन्तर्गत विपत्तिग्रस्त एव बेसहारा महिलाओ और उन पर आश्रित बच्चों को आवासीय सुविधा प्रदान कर अथवा गैर आवासीय रूप से उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वैच्छिक संस्थाओ को सहायक अनुदान स्वीकृत किया जाता है महिलाओं को सिलाई कढाई, बुनाई टायपिंग कम्प्यूटर्स प्रिंटिंग आदि व्यावसायिक प्रशिक्षण दिये जाते हैं प्रशिक्षण पर प्रति महिला ₹ 2000 से ₹ 3000 तक व्यय सीमा निर्धारित है जिसका 90 प्रतिशत भार राज्य शासन द्वारा स्वीकृत किया जाता है

केन्द्र शासन की अनुदान योजनाएं

केन्द्र शासन की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत स्वैच्छिक संस्थाओ के आवेदन-पत्र केन्द्र शासन को स्वीकृति के लिए भेजे जाते हैं प्रमुख योजनाए इस प्रकार है

स्वयंसिद्धा योजना

इस योजना के अन्तर्गत मध्य प्रदेश के 13 जिलों के 36 विकास खण्डों को शामिल किया गया है योजना के महिलाओ के स्वसहायता समूहो का गठन कर उन्हे आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है

अति गरीब गर्भवती महिलाओं को प्रसव पूर्व आर्थिक सहायता योजना

इस योजना के अन्तर्गत अति गरीब गर्भवती महिला को प्रसव के पूर्व आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है

योजना मे प्रथम दो जीवित प्रसवो तक प्रति प्रसव ₹ 500 की आर्थिक सहायता दी जाती है.

जागृति शिविर

महिलाओ को उनके कानूनी अधिकारों तथा उनके हित में चलाई जा रही शासकीय योजनाओं की जानकारी देने, महिलाओ के हितों के लिए बनाए गए कानूनों की जानकारी देने के लिए और महिलाओं में सामाजिक जागृति लाने के लिए राज्य/जिला/विकास खण्ड स्तर पर महिला जागृति शिविर आयोजित किए जाते हैं.

स्वाधार योजना

कठिन परिस्थितियो मे जीवनयापन करने वाली महिलाओ को आश्रय, पोषण, कपड़े और अन्य आवश्यक सुविधाओ को उपलब्ध कराते हुए उनके पुनर्वास के लिए स्वाधार योजना चलाई जा रही है. इस योजना में निराश्रित विधवाए, जेल से छूटी हुई महिला कैदी, प्राकृतिक विपदाओं से निराश्रित हुई महिलाए, हिंसा से पीड़ित महिलाएं तथा मानसिक रूप से विक्षिप्त आदि कठिन परिस्थितियो में जीवनयापन करने वाली महिलाए आश्रय पाती हैं

कामकाजी महिलाओं के लिए महिला वसति गृह

कामकाजी महिलाओ को बडे नगरों और शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत् रहने पर सुरक्षित आवास व्यवस्था उपलब्ध कराने के उद्देश्य से केन्द्र शासन द्वारा महिला वसति गृह के निर्माण के लिये कुल लागत का 75 प्रतिशत के मान से सहायक अनुदान स्वीकृत किया जाता है. मध्य प्रदेश मे अब तक कुल 60 वसति गृह स्वीकृत किये गये हैं

दत्तक ग्रहण हेतु शिशु गृहों की स्थापना

अनाथ शिशुओ की समुचित देखभाल के लिए तथा योग्य दम्पत्तियो को उन्हें दत्तक देने की व्यवस्था करने के लिए स्वैच्छिक संस्थाओ को केन्द्र शासन द्वारा सहायक अनुदान दिया जाता है

राष्ट्रीय बाल कोष से अनुदान

शहरी गदी बस्तियो मे किशोर बालकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए राष्ट्रीय बाल कल्याण कोष से स्वैच्छिक सस्थाओं को सहायक अनुदान स्वीकृत किया जाता है, जिसकी अधिकतम सीमा ₹ 1 लाख तक होती है.

राष्ट्रीय शिशु निधि से अनुदान

कामकाजी अथवा बीमार माताओ के बच्चों की देखभाल के लिए झूलाघर संचालन हेतु राष्ट्रीय शिशु निधि की स्थापना की गई है, जिससे इस हेतु सहायता चाहने वाली सस्थाओ को सहायक अनुदान स्वीकृत किया जाता है.

महिलाओं पर अन्याय और अत्याचार रोकने के लिए प्रचार-प्रसार व शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु सहायता

इस योजना के अन्तर्गत महिलाओ के विरुद्ध हिसा विषय पर शिक्षण सामग्री प्रकाशन, महिलाओ पर हिंसा और अत्याचार रोकने से सम्बन्धित उत्तम फिल्मों, नाटकों, कहानियो, कविताओ व अन्य रचनात्मक प्रयासों पर पारितोषक देने, शिक्षाप्रद सामग्री के अनुवाद, डबिंग आदि करने, सम्मेलन व शिविर आयोजित करने, प्रशिक्षणों के आयोजन तथा विविध कलाओ द्वारा महिला अत्याचार के खिलाफ चेतना जाग्रत करने जैसे कार्यों के लिए केन्द्र शासन द्वारा कुल व्यय पर 90 प्रतिशत अनुदान स्वीकृत किया जाता है.

अल्पकालीन आवास गृह संचालन की योजना

अल्पकालीन आवास गृह मूलतः उन स्त्रियो और युवतियों के लिए है, जो या तो अनैतिक सम्बन्धों से उत्पन्न तनावों अथवा भावनात्मक अशाति से पीडित हैं. इस प्रकार इन गृहो मे वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर की गई महिलाओं, बलात्कार की शिकार अथवा घर से भागी हुई महिलाओं को सरक्षण तथा पुनर्वास के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है प्रदेश मे स्वैच्छिक संस्थाओ के माध्यम से 5 ग्रह सचालित हैं

केन्द्र शासन की इस योजना के अन्तर्गत पजीकृत, आर्थिक रूप से सक्षम, साधन सम्पन्न तथा अनुभवी सस्थाओं को आवर्ती मद में कर्मचारियो के वेतन, भवन किराया, अनावर्ती मद में फर्नीचर, पलंग, बिस्तर तथा उपकरणों आदि के लिए सहायक अनुदान स्वीकृत किया जाता है

तेजस्विनी ग्रामीण महिला सशक्तीकरण योजना

मध्य प्रदेश मे महिलाओं के हितार्थ एक नई तेजस्विनी महिला ग्रामीण सशक्तीकरण योजना को राज्य मत्रिमण्डल ने मजूरी 5 जून, 2006 को प्रदान की थी इन्टरनेशनल फण्ड फॉर एग्रीकल्चर डेवलपमेंट (IFAD) के सहयोग से लागू की जाने वाली ₹ 161·59 करोड की आठ वर्षों की इस परियोजना द्वारा छह जिलों के 2400 गाँवो मे 12000 महिला स्वसहायता समूहों का सुदृढीकरण किया जाएगा इस परियोजना से 1·80 लाख महिलाए लाभान्वित होंगी जिन छह जिलों मे परियोजना लागू की जाएगी उनमें बालाघाट, डिंडोरी मडला पन्ना, छतरपुर व टीकमगढ शामिल हैं

परियोजना का मुख्य उद्देश्य स्वसहायता समूहों का गठन करना, उनका एक शीर्ष सगठन तैयार करना तथा महिलाओ की माइक्रो फाइनेंसिग सेवाओं तक पहुँच बढाने के साथ-साथ महिलाओं के लिए नए एव बेहतर जीविका उपार्जन के अवसर उपलब्ध कराना है तेजस्विनी ग्रामीण महिला सशक्तीकरण परियोजना का क्रियान्वयन महिला एवं बाल विकास विभाग के अन्तर्गत मध्य प्रदेश महिला वित्त एव विकास निगम द्वारा किया जाएगा

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना

यह योजना राज्य मे अप्रैल 2009 से प्रारम्भ की गई है इस योजनान्तर्गत विधवा महिलाएँ, जिनकी आयु 65 वर्ष से अधिक की हो तथा गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करती हों, को ₹ 300 (₹ 200 केन्द्र द्वारा तथा ₹ 100 राज्य द्वारा) प्रतिमाह प्रति हितग्राही के मान से पेंशन प्रदान की जाती है 80 वर्ष से अधिक उम्र पर ₹ 500 प्रतिमाह इस योजना के अन्तर्गत दिया जाएगा

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय नि:शक्त पेंशन योजना

यह योजना राज्य मे अप्रैल 2009 से प्रारम्भ की गई इस योजनान्तर्गत नि शक्त हितग्राही जिनकी आयु 18 वर्ष से 64 वर्ष की हो तथा गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करते हो, को ₹ 200 प्रतिमाह प्रति हितग्राही के मान से पेशन प्रदान की जाती है

गॉव की बेटी योजना

यह योजना वर्ष 2005 से प्रारम्भ की गई है इस योजनान्तर्गत शासन द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार अब गाँव की रहने वाली तथा ग्रामीण क्षेत्र की प्रथम श्रेणी में उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली प्रत्येक छात्रा को उच्च शिक्षा विभाग उसके अध्ययन के लिए ₹ 500 प्रति माह की दर से 10 माह के लिए ₹ 5,000 प्रति वर्ष छात्रवृत्ति दी जाती है इसके साथ इजीनियरिंग तथा चिकित्सा शिक्षा में अध्ययन करने वाली छात्राओ को ₹ 7,500 प्रतिवर्ष का प्रावधान किया गया है इस योजना से बालिकाओ के उच्च अध्ययन का मार्ग प्रशस्त हो रहा है

कन्यादान योजना

मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान ने 5 मार्च, 2012 को कन्यादान योजना की राशि बढाकर ₹ 15,000 प्रति विवाह करने की घोषणा की पहले यह राशि ₹ 10,000 थी

महिला स्वास्थ्य योजनाएं

महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर को और बेहतर बनाने के लिए अग्रलिखित योजनाए सचालित की जा रही हैं-

आयुष्मति योजना

प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1991 में प्रारम्भ की गई योजनांतर्गत ग्रामीण क्षेत्र की भूमिहीन किसी महिला या बालिका के बीमार होने पर जिला चिकित्सालय में भर्ती होन पर इलाज की नि शुल्क सहायता प्रदान की जाती है. जिला चिकित्सालय परिसर में ही विश्रामालय का निर्माण किया जाता है ताकि रोगी के साथ आये परिजनों के लिए ठहरने की व्यवस्था की जा सके. 7 दिवस तक भर्ती रहने पर ₹ 400 व 7 दिवस से अधिक भर्ती रहने पर रोगी पर ₹ 1000 तक की अतिरिक्त दवाइयों व पौष्टिक आहार पर व्यय किया जाता है. शासन द्वारा इसे विकास खण्ड स्तर के चिकित्सालयों तक विस्तारित करने के लिए निर्णय प्रसारित किये गए हैं.

राष्ट्रीय मातृत्व सहायता योजना

भारत सरकार की इस योजना म गरीबी रेखा के नीच जीवनयापन करने वाली शहरी एव ग्रामीण परिवार की महिलाओं को प्रसव पूर्व ₹ 500 की सहायता राशि दी जाती है सहायता राशि दो जीवित जन्म तक देय है भारत शासन द्वारा सीधे जिला पंचायतों को दी जाती है

बालिका समृद्धि योजना

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र म गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वाले परिवार मे 15 अगस्त, 1997 की या पश्चात् जन्मी बालिका को ₹ 500 की सहायता दी जाती है एवं 18 वर्ष की उम्र तक शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति की राशि दी जाएगी.

इंदिरा महिला योजना

भारत सरकार की यह योजना वर्ष 1995 में मध्य प्रदेश के धार एवं ग्वालियर जिले मे आरम्भ की गई योजनान्तर्गत 14 (धार जिले 9 व ग्वालियर जिले के 5) विकास खण्डो मे सभी ब्लाक समितियों का पजीयन हो चुका है कुल 740 इदिरा महिला केन्द्र ऑगनवाडी स्तर पर गठित किये गये हैं तथा 658 महिला समूह गठित किये जाकर कुल 11044 महिलाओं को सदस्य बनाया गया है भारत शासन द्वारा दी गई राशि ₹ 84.00 लाख धार एव ग्वालियर जिलो को दी गई है जो इदिरा महिला केन्द्र को दी जा सकेगी एव पंजीयन पश्चात् आर्थिक कार्यक्रमो के लिये केन्द्रो को दी जा सकेगी एव महिला समूहो को स्वसहायता समूह मे गठित करने की कार्यवाही की जा रही है

जननी एक्सप्रेस योजना

मध्य प्रदेश में सस्थागत प्रसव को बढावा देने तथा प्रसव हेतु 24 घण्टे परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार ने जननी एक्सप्रेस योजना लागू की है

- जननी एक्सप्रेस योजना 43 जिलों के 2-2 ब्लॉको मे
- प्रसव के लिए परिवहन हेतु 24 घण्टे वाहन
- गर्भवती महिलाओ के अलावा दीनदयाल योजना के पात्र तथा बीमार शिशुओं को भी लाभ मिलेगा
- सर्वसुविधायुक्त वाहनो का उपयोग, जिन पर 'जननी एक्सप्रेस लिखा होगा
- वाहन के बाहर चारों ओर जननी एक्सप्रेस का विवरण
- फर्स्ट-एड प्रशिक्षित वाहन चालक के पास मोबाइल फोन भी रहेगा
- बी पी एल परिवार की गर्भवती महिला से कोई किराया नही लिया जाएगा
- कॉल करने के एक घण्टे के भीतर वाहन उपलब्ध होगा
- कमजोर आई एम आर वाले जिलो का चयन

अगस्त 2006 से लागू यह योजना फिलहाल प्रदेश के ग्यारह जिलो के दो-दो विकास खण्डो मे सचालित की जाएगी जननी एक्सप्रेस योजना के लिए चयनित इन जिलो में डिंडोरी मुरैना रायसेन, होशगाबाद दमोह पन्ना, जबलपुर, राजगढ शिवपुरी, रतलाम और विदिशा शामिल किए गए हैं इस योजना के तहत् चयनित क्षेत्रों मे वाहन 24 घण्टे प्रसव सुविधाओं हेतु परिवहन के लिए उपलब्ध रहेगा

बेटी बचाओ अभियान

मध्य प्रदेश सरकार ने बेटी बचाओ अभियान के तहत् गाधी जयन्ती के अवसर पर डिण्डौरी मे महिलाओं को बहुउद्देशीय कार्यक्रमो से जोडने का प्रोजेक्ट **'मोरे डुबुलिया'** का शुभारम्भ हुआ मोरे डुबुलिया के शुभारम्भ के अवसर पर जिले की 37 गर्भवती महिलाओ की गोदभराई के साथ जिले का विभिन्न क्षेत्रों मे नाम रोशन करने वाली 37 बेटियो को प्रमाण-पत्र एव उपहार देकर सम्मानित किया गया

विभाग के अधीन उपक्रम व आयोग

मध्य प्रदेश महिला आर्थिक विकास निगम

मध्य प्रदेश महिला आर्थिक विकास निगम की स्थापना वर्ष 1988 मे मध्य प्रदेश निर्व्यापारिक अधिनियम के अन्तर्गत की गई थी इस निगम को मध्य प्रदेश महिला वित्त एव विकास निगम के नाम से भी जाना जाता है निगम की अधिकृत अश पूँजी ₹ 5 करोड है तथा पेड-अप पूँजी ₹ 3 53 करोड है इसमे भारत सरकार द्वारा दी गई अशपूँजी की राशि ₹ 0 98 करोड तथा मध्य प्रदेश शासन द्वारा ₹ 2 55 करोड प्रदान की गई है निगम की योजनाओ की जानकारी अग्रानुसार है–

1. ग्राम्या योजना

निगम द्वारा सचालित ग्राम्या योजना पूरे प्रदेश में अत्यंत लोकप्रिय है. उक्त योजना के अन्तर्गत प्रदेश की गरीब महिलाओ को छोटे-छोटे व्यवसाय करने के लिये प्रारम्भ मे ₹ 500 का ब्याज मुक्त ऋण दिया जाता है. उक्त ऋण एक वर्ष में वापस करने पर उन्हे ₹ 1500 पुन. दिये जाते हैं

2. स्वसहायता समूह

महिलाओ की आर्थिक दृष्टि सुधारने, उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और उनकी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए निगम ने प्रदेश मे 6000 स्वसहायता समूह गठन करने का लक्ष्य वर्ष 1999–2000 में निर्धारित किया था. स्वसहायता समूहों को नियम एव प्रक्रियाओ के बधन से मुक्त कर लोकतात्रिक ढग से कार्य करने की स्वतंत्रता दी गई है इनके अपने नियम एव प्रक्रियाए हैं. सदस्य महिलाए अपनी आय से बचत कर प्रति माह निश्चित राशि समूह के कोष मे जमा करती हैं शादी-ब्याह, बीमारी अथवा स्वरोजगार के लिए ये महिलाएं समूह की जमा राशि से ही निश्चित ब्याज दर पर ऋण लेती हैं तथा एक निश्चित समयावधि मे मय ब्याज के समूह को वापस करती हैं इस प्रकार अपनी सहायता स्वयं करती है

3. समर्थ योजना

समर्थ योजना के अन्तर्गत प्रदेश की विधवा, तलाकशुदा एवं परित्यक्ता महिलाओ को तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है इसमें महिला को तकनीकी सस्थान मे प्रवेश पाने पर शिक्षा शुल्क एव अन्य व्यय का वहन निगम द्वारा किया जाता है इस वर्ष से निगम द्वारा उक्त श्रेणी की महिलाओ को तकनीकी शिक्षा सस्थान मे प्रवेश दिलाने मे भी सहयोग दिया जायेगा योजना मे अब अपेक्षित/निराश्रित वर्ग की महिलाओ को भी शामिल किया गया है

4 टकण योजना (स्वरोजगार योजना)

टकण योजना के अन्तर्गत प्रदेश की गरीब एव जरूरतमद महिलाओ को रोजगार प्राप्त हो सके. इसके लिये प्रत्येक जिले की 25 महिलाओ को नि शुल्क टकण प्रशिक्षण दिलवाया जाता है टकण प्रशिक्षण का सम्पूर्ण व्यय निगम द्वारा वहन किया जाता है

5. कौशल उन्नयन

वर्ष 1999–2000 में शासन की मशा, जिसमें कम-से-कम व्यय मे अधिक-से-अधिक हितग्राहियों को लाभान्वित करना है, को ध्यान में रखते हुए निगम ने कौशल उन्नयन की योजना प्रारम्भ की है इसमे 20 महिलाओ के एक समूह को एक से पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया जायेगा, ताकि वे अपने परम्परागत कौशल का उन्नयन कर अधिक अर्थोपार्जन कर सके

6. उद्यमिता जागरूकता

वर्ष 1999–2000 मे ही महिलाओ मे उद्यमिता जागरूकता प्रोत्साहित करने की दृष्टि से उद्यमिता जागरूकता शिविर योजना प्रारम्भ की गई. इसमे उद्यमशील महिलाओं को प्रबंधकीय क्षमता, लेखा पुस्तको का सधारण, बैंक एवं वित्तीय सस्थाओं से प्राप्त होने वाली साख की जानकारी तथा विपणन आदि के बारे मे प्रशिक्षित किया जायेगा.

भारत शासन की योजनाएं

1. नोराड योजना

नॉर्वे सरकार से सहायता प्राप्त उक्त योजना के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रदेशों के स्वयसेवी सस्थाओं के माध्यम से महिलाओ के लिये स्वरोजगार उन्मुख प्रशिक्षण सहरोजगार परियोजना सचालन के लिये संस्थाओ को सीधे अनुदान स्वीकृत किये जाते हैं. उपर्युक्त अनुदान के लिये स्वयंसेवी संस्थाओ से प्राप्त प्रस्ताव का परीक्षण निगम द्वारा करके भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग को भेजा जाता है योजना अनुसार उक्त अनुदान संस्था को ₹ 8000 प्रति हितग्राही के मान स्वीकृत किया जाता है

2. स्वशक्ति परियोजना

ग्रामीण महिला विकास एव स्वशक्तिकरण परियोजना स्वशक्ति के नाम से भी जानी जाती है. यह परियोजना विश्व बैंक/आई एफ ए डी की सहायता से क्रियान्वित की जा रही है परियोजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओ के आर्थिक विकास की प्रक्रिया को विकसित एव सुदृढ करने के साथ-साथ उनके जीवन-स्तर मे गुणात्मक सुधार के लिए सामाजिक परिवर्तन का वातावरण तैयार करना है मध्य प्रदेश में 9 जिलो यथा होशंगाबाद, देवास, सीहोर बैतूल, टीकमगढ, छतरपुर, इन्दौर, उज्जैन एवं खण्डवा मे यह योजना क्रियान्वित की जा रही है

इस परियोजनान्तर्गत 72 स्वैच्छिक सस्थाओ के साथ स्वसहायता समूहो के गठन हेतु अनुबन्ध निष्पादित किया गया है

मध्य प्रदेश राज्य महिला आयोग

मध्य प्रदेश राज्य महिला आयोग अधिनियम, 1995 (क्रमाक 20 सन् 1996) की धारा 1 की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए, राज्य शासन द्वारा मध्य प्रदेश राज्य महिला आयोग का गठन 23 मार्च, 1998 को किया

आयोग के कार्य

(अ) आयोग निम्नलिखित समस्त या उनमें से किन्हीं भी कृत्यों का पालन करेगा अर्थात्–

1. महिलाओ के लिए सविधान तथा अन्य विधियों के अधीन उपबधित संरक्षणों से सम्बन्धित समस्त मामलो का अन्वेषण तथा परीक्षण करना
2. राज्य सरकार को वार्षिक रूप से तथा ऐसे अन्य समयो पर, जैसा कि आयोग उचित समझे, ऐसे संरक्षणो के कार्यान्वयन के सम्बन्ध मे रिपोर्ट प्रस्तुत करना.
3. संविधान तथा अन्य विधियो मे महिलाओ के सम्बन्ध मे किए गए उपबधों के उल्लघन के मामलों को समुचित प्राधिकारियो तक ले जाना
4. महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक विकास की योजना तैयार करने सम्बन्धी प्रक्रिया मे भाग लेना तथा सलाह देना.
5. ऐसे मुकदमो को धन देना, जिनमें ऐसे मुद्दे अन्तर्वलित हैं, जो महिलाओ के बडे समूह पर प्रभाव डालते हैं

(ब) निम्नलिखित के सम्बन्ध में गहन अध्ययन करना–

1. राज्य की महिलाओ की आर्थिक, शैक्षणिक तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति, इसमे विशिष्टतया आदिवासी जिलो तथा ऐसे क्षेत्रो पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जो महिलाओ की साक्षरता, मृत्यु दर तथा आर्थिक विकास की दृष्टि से कम विकसित हैं
2. वे परिस्थितियाँ जिनमे महिलाए कारखानों स्थापनाओं, निर्माण स्थलो तथा वैसी ही अन्य स्थितियो मे कार्य करती हैं और उक्त क्षेत्रो मे महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार हेतु विशिष्ट रिपोर्ट के आधार पर राज्य सरकार को सिफारिश करना

(स) राज्य मे या चुने हुए क्षेत्रों मे महिलाओ के विरुद्ध उन समस्त अपराधों की जिनके अन्तर्गत महिलाओ के विवाह तथा दहेज, बलात्कार व्यपहरण अपहरण, छेडछाड़, महिलाओ के अनैतिक व्यापार से सम्बन्धित मामले तथा प्रसव करवाने या नसबदी

करवाने के समय चिकित्सकीय उपेक्षा या गर्भधारण या शिशु जन्म से सम्बन्धित चिकित्सकीय हस्तक्षेप के मामले आते हैं, समय-समय पर जानकारी संकलित करना.

(द) निम्नलिखित से सम्बन्धित शिकायतें प्राप्त करना–

1. महिलाओं पर अत्याचार और महिलाओं के विरुद्ध अपराध.
2. महिलाओं को उनके न्यूनतम मजदूरी, प्राथमिक स्वास्थ्य और प्रसूति प्रसुविधाओ से सम्बन्धित अधिकारो से वचित करना
3. महिलाओं के सम्बन्ध मे, राज्य सरकार के नीतिगत विनिश्चयो का पालन न किया जाना
4. अभित्यक्त और निराश्रित महिलाओं और वैश्यावृत्ति करने के लिए विवश की गई महिलाओ का पुनर्वास.
5. ऐसी महिलाओ पर जो अभिरक्षा में है, अत्याचार और उन्हें समुचित उपचारी उपाय के लिए सम्बद्ध प्राधिकारियों तक ले जाना

(य) निर्धन महिलाओं को विधिक परामर्श देने और ऐसी महिलाओं को विधिक सहायता प्राप्त करने में समर्थ बनाने के लिए राज्य के गैर सरकारी संगठनों को सहायता करना, प्रशिक्षित करना और प्रेरित करना.

(र) किसी जेल, प्रति प्रेषण गृह, महिलाओं की संस्था या अभिरक्षा में रखने के अन्य स्थान का, जहाँ महिलाओं को कैदियों के रूप में या अन्यथा रखा जाता है, निरीक्षण करना या निरीक्षण करवाना और यदि आवश्यक समझा जाए तो उपचारी कार्यवाही के लिए सम्बद्ध प्राधिकारियों तक ले जाना.

(ल) किसी अन्य ऐसे मामले के सम्बन्ध में कृत्यों का पालन करना जोकि राज्य सरकार द्वारा उसे निर्दिष्ट किया जाए.

मध्य प्रदेश की महिला नीति 2008-12

समाज में सदियों से ही महिलाओं का स्थान गौरवशाली रहा है पौराणिक कथाए और इतिहास इस बात की साक्षी है कि महिलाए न केवल पूज्य रही है बल्कि समाज को नेतृत्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण एव अग्रणी भूमिका निभाई है आधुनिकता के नाम पर जब से पुरुष प्रधान समाज की स्थापना हुई, महिला का स्थान गौण हो गया जिसके चलते समाज के ही लोग शोषक बन गए

महिलाओं का सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य उन सामाजिक सास्कृतिक और भौतिक स्थितियों को बदलना है जो महिलाओं को पुरुषों के समस्तर पर आने मे बाधक है राज्य की नीति की बुनियादी अवधारणा के रूप मे सशक्तिकरण का अर्थ राज्य की सोच, पहल और हस्तक्षेप में मूलभूत बदलाव है, जिससे ऐसी परिस्थितियाँ बने कि महिलाए सविधान मे उन्हें दिए गए वैध अधिकारों का उपयोग कर सकें इस नीति की यह प्राथमिकता है कि महिलाओं का सशक्तिकरण उनके व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में होने के साथ ही समाज के विभिन्न स्तरों में उनकी सामूहिक क्षमता का भी सशक्तिकरण हो साथ ही जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने के लिए भेदभाव न करने की सक्रिय नीति हो और स्वास्थ्य, शिक्षा जीवनयापन में एव ससाधन पाने मे गम्भीर जेण्डर असन्तुलन को ठीक करने के लिए महिलाओ के पक्ष मे सहयोगी स्थितियाँ बन सके

इस नीति के माध्यम से यह प्रयास किया जाएगा कि सेवाओं और ससाधनों तक उनकी पहुँच और नियन्त्रण बढे तथा सामाजिक न्याय के लिए काम करने में महिलाओं का नेतृत्व बढे जिससे राज्य की सभी नीतियो और कार्यक्रमो मे एक अनुकूल वातावरण बन सके और महिलाओ के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण इनका स्थायी भाव बन जाए सफलता का पैमाना यह होगा कि नीति और उसका कार्यान्वयन महिलाओं के लिए स्थान बनाने में स्वायत्ता और सम्मान बनाने मे महिलाओं का कितना सशक्तिकरण करते है और महिलाओ के अधिकारों और उनकी क्षमताओ को किस प्रकार पात्रता का रूप देते है अस्तु यह महिला नीति इसी सोच और परिकल्पना का प्रकटीकरण है

महिला नीति के अन्तर्गत नीतिगत प्रावधान

1. महिलाओं के घटते लिग अनुपात में सन्तुलन एव सम्बन्धित विधियों का दृढता से क्रियान्वयन हेतु रणनीति एव बालिका भ्रूण हत्या समाप्त करने के लिए सामाजिक जागरूकता व पुरुष वर्ग मे महिलाओ के प्रति सवेदनशीलता बढाना
2. महिलाओं के प्रति हिसा व अपराध नियन्त्रित करने के तन्त्र की व्यवस्था सुनिश्चित करना, जिससे महिलाए स्वय हिसा व अपराध के विरुद्ध पहल कर सकेंगी
3. शिक्षा के द्वारा महिला एव बालिका का सशक्तिकरण व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गुणवत्ता को बढाना तथा उनके पक्ष मे सकारात्मक वातावरण बनाना
4. महिलाओ के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाए एव आहार पोषण की उपलब्धता
5. जीवनयापन के क्षेत्र में रोजगार व आय बढाने के अवसरो के लिए क्षमताओं को विकसित करना

6. किशोरी बालिकाओ की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आहार के साथ गुणात्मक उपलब्धता तथा श्रम व यौनशोषण पर नियन्त्रण एव जीवन कौशल विकसित करना.
7. महिलाओं की निर्णय प्रक्रिया एवं व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी एव इस हेतु क्षमताओं को विकसित करना.
8. महिलाओं की आवश्यकताओं एव प्राथमिकताओं के अनुसार लोक व्यय मे उनकी सहभागिता सुनिश्चित करते हुए जैण्डर पर आधारित बजट व्यवस्था का निर्धारण व क्रियान्वयन
9. श्रमिक महिलाओं के कल्याण, अधिकार संरक्षण, स्वास्थ्य सुविधाओं एव शोषण रहित वातावरण के साथ उनसे सम्बन्धित विधियों, नीतियों के क्रियान्वयन का मूल्याकन करना.
10. कार्यक्षेत्र में महिलाओं के साथ यौन प्रताडना के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों का प्रभावी क्रियान्वयन
11. ग्रामीण एव शहरी क्षेत्रों में महिला की वन, जल स्वच्छता एव पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों में सक्रिय सहभागिता बढाना.
12. कृषि, पशुपालन, मत्स्योद्योग एव ग्रामोद्योग सम्बन्धित गतिविधियों में क्षमताओं के साथ सक्रिय सहभागिता एव विकास ससाधनों पर नियन्त्रण
13. कठिन परिस्थितियों में रहने वाली महिलाओं को समान अवसर एव आवश्यक सुविधाए प्रदान करना
14. सूचना, सचार तकनीक के माध्यम से महिलाओं की सूचना ससाधनों तक पहुँच एव क्षमताओं का विकास करना
15. महिलाओं से सम्बन्धित नीतिगत प्रावधान, कार्यक्रमों एव योजनाओं की मॉनिटरिंग, मूल्याकन कर उसके आधार पर वार्षिक प्रतिवेदन तैयार किया जाना

33

मध्य प्रदेश : बजट 2017-18

वित्तीय वर्ष 2017-18 के लिए मध्य प्रदेश सरकार का बजट प्रदेश के वित्त मंत्री जयंत मलैया ने 1 मार्च 2017 को विधान सभा में प्रस्तुत किया वित्त मंत्री के रूप में उनके द्वारा प्रस्तुत मध्य प्रदेश का यह लगातार पाँचवाँ बजट था केन्द्र की तर्ज पर मध्य प्रदेश सरकार के बजट में भी सरकारी खर्च का योजना व्यय व गैर-योजना व्यय में वर्गीकरण इस वर्ष से समाप्त कर दिया गया है जिन नई योजनाओं की शुरूआत की घोषणा इस वर्ष बजट में की गई है, उनमें दीनदयाल रसोई योजना व मुख्यमन्त्री मेधावी विद्यार्थी योजना आदि शामिल है प्रदेश की कर सरचना मे कोई बड़ा परिवर्तन इस बजट मे नहीं किया गया है, तथापि प्रदेश के छोटे हवाई अड्डों पर विमानों के ईंधन (ATF) पर वैट की दर को 4 प्रतिशत से घटाकर 1 प्रतिशत किया गया है, जबकि इंदौर व भोपाल हवाई अड्डों पर इसे 4 प्रतिशत से बढाकर 25 प्रतिशत किया गया है इससे इन हवाई अड्डो से विमान यात्राए महँगी हो जाएगी प्रदेश के बजट में राजस्व खाते में आधिक्य की 2004-05 से चल रही स्थिति को इस वर्ष भी बरकरार रखा गया है. 2017-18 के लिए प्रदेश सरकार के ₹ 1,69,954·46 करोड़ के इस बजट में राजस्व खाते में जहाँ ₹ 4596·40 करोड़ का आधिक्य, (जो प्रदेश के सकल राज्य घरेलू उत्पाद का 0·63 प्रतिशत है) दर्शाया गया है, वही राजकोषीय घाटा जीएसडीपी का 3·49 प्रतिशत अनुमानित है.

बजट में 2017-18 के दौरान राज्य सरकार की कुल प्राप्तियाँ ₹ 1,69,502·87 करोड अनुमानित की गई है जो 2016-17 की अनुमानित प्राप्तियो ₹ 1,58,594·48 करोड (बजट अनुमान) की तुलना में 6·88 प्रतिशत अधिक है इसमें ₹ 1,39,115·67 करोड राजस्व प्राप्तियाँ (Revenue Receipts) व शेष ₹ 30,387·20 करोड पूँजीगत प्राप्तियाँ (Capital Receipts) है ₹ 1,39,115 67 करोड की राजस्व प्राप्तियों मे ₹ 1,01,401·53 करोड कर राजस्व है (इसमें ₹ 51,106·32 करोड केन्द्रीय करों में से राज्य का अश है तथा ₹ 50,295·21 करोड राज्य के अपने करों से प्राप्त होंगे, ₹ 11,679·74 करोड राज्य के स्वय के गैर-कर राजस्व (Non-Tax Revenue) के रूप में तथा ₹ 26,034·40 करोड केन्द्रीय अनुदानों से प्राप्त होने का अनुमान बजट मे लगाया गया है

2017-18 के दौरान राज्य सरकार का कुल व्यय ₹ 1,69,954·46 करोड बजट मे अनुमानित है यह पूर्व वर्ष 2016-17 के बजट में अनुमानित व्यय से 7·1 प्रतिशत अधिक है ₹ 1,69,954·46 करोड के कुल व्यय मे ₹ 1,34,519·27 करोड राजस्व व्यय (Revenue Expenditure) व शेष ₹ 35,435·19 करोड पूँजीगत व्यय (Capital Expenditure) होगा प्राप्तियो एवं व्यय के इन अनुमानों के चलते 2017-18 मे राज्य सरकार का राजस्व आधिक्य (Revenue Surplus) ₹ 4596·40 करोड़ व राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) ₹ 25,688·97 करोड़ रहने का अनुमान है. राजकोषीय घाटा राज्य के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) का 3·49 प्रतिशत होगा, जोकि मध्य प्रदेश राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबन्धन अधिनियम के तहत् अनुमन्य है (14वे वित्त आयोग की अनुशंसा के अनुसार मध्य प्रदेश राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबन्धन अधिनियम, 2015 के द्वारा राजकोषीय घाटे की उच्चतम सीमा को जीएसडीपी के 3·0 प्रतिशत से बढ़ाकर 3·50 प्रतिशत कर दिया गया था.).

महत्वपूर्ण बिन्दु एक दृष्टि मे

- मध्य प्रदेश मे 2004-05 से ही लगातार राजस्व आधिक्य (Revenue Surplus) की स्थिति है 2017-18 के बजट मे भी राजस्व खाते मे ₹ 4596·40 करोड का आधिक्य अनुमानित है 2017-18 मे राजकोषीय घाटा ₹ 25688·97 करोड रहने का बजट मे अनुमान है यह सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) का 3·49 प्रतिशत होगा
- इन्दौर और भोपाल हवाई अड्डो मे विमान ईंधन पर वैट की दर 4 प्रतिशत से बढाकर 25 प्रतिशत की गई है इससे इन स्थानो से हवाई यात्रा महँगी हो जाएगी ग्वालियर जबलपुर और खजुराहो हवाई अड्डे पर एटीएफ की वैट दर पहले की तरह ही 4 प्रतिशत रखी गई है जबकि क्षेत्रीय सम्पर्क को बढावा देने के लिए प्रदेश के दूसरे हवाई अड्डो पर एटीएफ पर वैट की दर 4 प्रतिशत से कम करते हुए एक 1 प्रतिशत की गई है इससे प्रदेश के अन्य स्थानों पर हवाई सेवा को बढ़ावा मिल सकेगा
- प्रदेश मे सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत् पेंशन की राशि ₹ 150 से बढाकर ₹ 300 की गई है समाज मे विधवाओं की कमजोर स्थिति देखते हुए शासन ने सेवारत् और पेंशन पाने वालो को छोडकर सभी विधवाओं को पेंशन

देने की घोषणा की है इसके लिए ₹ 1,501 करोड का प्रावधान बजट में किया गया है

- बजट में प्रदेश के कर्मचारियों को जुलाई 2017 से सातवे वेतन आयोग की अनुशसानुसार वेतन देने की घोषणा इस बजट मे की गई है, इन वेतनमानो को जनवरी 2016 से लागू किया गया है
- प्रदेश के चार बडे शहरों में **'दीनदयाल रसोई योजना'** 2017-18 में लागू की जाएगी इस योजना के तहत् शहरी गरीबों को पाँच रुपए मे भोजन की थाली मिलेगी इसके लिए अधोसरचना निर्माण हेतु ₹ 10 करोड का प्रावधान बजट में किया गया है बाद में इस योजना का विस्तार पूरे प्रदेश में किया जाएगा
- प्रदेश मे पशुपालन को बढावा देने के लिए **आचार्य विद्यासागर दुग्ध धारा योजना** प्रारम्भ करने की घोषणा बजट में की गई है
- सम्पत्ति के पजीयन मे दुरुपयोग और धोखाधडी की रोकथाम के लिए ई-पजीयन हेतु आधार नम्बर अनिवार्य करने की घोषणा बजट भाषण में की गई है
- मुख्यमन्त्री तीर्थदर्शन योजना में प्रसिद्ध तीर्थस्थलो में गगासागर, कामाख्या देवी, गिरनार जी पटना साहिब तथा मध्य प्रदेश के तीर्थस्थानों उज्जैन, मैहर श्रीराम राजा मन्दिर, ओरछा चित्रकूट ओंकारेश्वर तथा महेश्वर को भी जोडा जाएगा कैलाश मानसरोवर यात्रा हेतु अनुदान राशि अधिकतम ₹ 30,000 से बढाकर ₹ 50,000 की गई है
- आदिगुरु शकराचार्य के सम्मान में ओंकारेश्वर में वेदान्त पीठ की स्थापना करने की घोषणा वित्त मन्त्री ने अपने बजट भाषण में की है इस हेतु ₹ 10 करोड के बजट का प्रावधान किया गया है
- स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियों के त्याग व बलिदान का स्मरण करने के लिए भोपाल में **वीर भारत न्यास** की स्थापना हेतु ₹ 9 करोड का बजट में प्रावधान किया गया है
- नर्मदा नदी के किनारे पौधारोपण और कृषि वानिकी के लिए कुल ₹ 102 करोड का प्रावधान किया गया है
- मध्य प्रदेश में वर्ष 2011 से कोई भी नवीन मदिरा दुकान नही खोली गई है नर्मदा नदी की पवित्रता बनाए रखने के लिए नर्मदा नदी के 5 किमी की सीमा में आने वाली 66 मदिरा की दुकानें 1 अप्रैल, 2017 से बन्द करने की घोषणा बजट मे की गई है इसी प्रकार राष्ट्रीय राजमार्ग और राज्यमार्ग पर स्थापित 1427 मदिरा दुकानों को मार्ग से 500 मीटर की दूरी पर स्थापित किया जाएगा
- 2017-18 से प्रदेश मे मुख्यमन्त्री **मेधावी विद्यार्थी योजना** शुरू की जाएगी और इसके लिए ₹ 500 करोड का प्रावधान बजट मे रखा गया है इस योजना का लाभ 12वी की परीक्षा मे कम-से-कम 85 प्रतिशत अक लाने वाले छात्र उठा पाएगे
- अक्टूबर 2016 में इदौर में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2016 मे 5 हजार से अधिक बिजनेस डेलीगेट्स ने भाग लिया था (जिनमें 42 देशो के 300 से अधिक विदेशी प्रतिनिधि भी शामिल थे) इस आयोजन के दौरान ₹ 5.52 लाख करोड के 630 निवेश आशय प्रस्ताव प्राप्त हुए थे
- प दीनदयाल उपाध्याय के जन्मशती वर्ष 2017 को **गरीब कल्याण वर्ष** के रूप में मनाया जाएगा
- रक्षाकर्मियो के लिए कार्यरत् कैन्टीनो मे सैन्यकर्मियों को मिलने वाली सुविधाओं का विस्तार सीआईएसएफ सीआरपीएफ आईटीबीएफ असम राइफल्स व बीएसएफ कर्मियों को भी उपलब्ध कराने की घोषणा बजट मे की गई है

34

सामयिकी

- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 11 दिसम्बर, 2016 को अमरकटक से नर्मदा सेवा यात्रा अथवा "नमामि देवि नर्मदे यात्रा" आरम्भ की गई मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान द्वारा नर्मदा के उद्‌गम स्थल अमरकटक से इस यात्रा का आरम्भ किया गया नर्मदा नदी की पूरी परिक्रमा किए जाने के बाद 11 मई, 2017 को इस यात्रा का समापन होगा यात्रा का उद्देश्य नदी के सरक्षण के साथ तटीय क्षेत्रों में पौधारोपण करना एव इसे प्रदूषण मुक्त बनाना है

- केन्द्र सरकार ने मध्य प्रदेश के मदसौर जिले मे मेगा फूड पार्क स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान की मदसौर जिले की दलोदा तहसील में स्थापित किए जाने वाले फूड पार्क पर लगभग ₹ 500 करोड का निवेश किया जाना प्रस्तावित है मध्य प्रदेश की जनता के लिए यह एक अहम उपलब्धि है इससे किसानो की आय दोगुना करने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा भारत सरकार के केन्द्रीय खाद्य प्रसस्करण उद्योग मत्रालय ने देश भर मे मध्य प्रदेश सहित 7 राज्यों मे मेगा फूड पार्क स्थापित किए जाने को स्वीकृति प्रदान की है

- हिन्दुस्तान कोका काला बेवरेजेज लिमिटेड (एचसीसी-बीएल) द्वारा 11 जनवरी 2017 को मध्य प्रदेश के होशगाबाद मे तकनीकी सयत्र का उद्‌घाटन किया गया मध्य प्रदेश के उद्योग मत्री राजेन्द्र शुक्ला द्वारा इस सयत्र की आधारशिला रखी गयी इस सयत्र को होशगाबाद के औद्योगिक केन्द्र विकास निगम (एकेवाईएल) बबाई औद्योगिक क्षेत्र मे स्थापित किया गया

- मध्य प्रदेश सरकार ने प्रदेश को शराबमुक्त बनाने हेतु अभियान का शुभारम्भ किया है प्रदेश को शराबमुक्त बनाने हेतु राज्य सरकार ने नियमावली भी जारी की है राज्य के वित्त मत्री जयत मलैया द्वारा शराबबदी हेतु जारी किए गए नए नियमो के अनुसार शराब विक्रेता और व्यवसायी लगातार खरीदारी करने वाले लोगो के नामो की सूची भी बनाएगें

- सर्वोच्च न्यायालय ने मध्य प्रदेश व्यापम घोटाला केस में 5 साल के एमबीबीएस कोर्स में एनरोल कराने वाले राज्य के 634 छात्रों की दाखिला प्रक्रिया निरस्त कर दी है यह छात्र 2008 से 2012 के मध्य कोर्स में दाखिला ले चुके हैं चीफ जस्टिस जेएस खेहर ने स्टूडेंट्स की ओर दायर की गई सभी पिटीशन्स रद्द कर दी

- मध्य प्रदेश के वित्त मत्री जयत मलैया ने विधान सभा मे वित्त मत्री 2017-18 का बजट प्रस्तुत किया बजट में वर्ष 2017-18 के लिये राजकोषीय घाटे का अनुमान ₹ 25,688·97 करोड किया गया है यह राज्य के सकल घरेलू उत्पाद का 3·5 प्रतिशत अनुमानित है

- भारतीय रेलवे द्वारा मार्च 2017 को मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित हबीबगज रेलवे स्टेशन को पूर्ण रूप से पहले निजी रेलवे स्टेशन के तौर पर विकसित करने का निर्णय लिया भारतीय रेलवे द्वारा रेलवे स्टेशन की देखरेख के समस्त अधिकार प्राइवेट कम्पनी बसल ग्रुप को सौपे गये

- मध्य प्रदेश मे राज्य मत्रिमण्डल ने आवास गारटी विधेयक को मजूरी प्रदान कर दी आवास गारटी विधयेक के तहत् गरीब और आवासहीन व्यक्तियों को मकान बनाने हेतु राज्य सरकार द्वारा भूखण्ड आवटित किए जाएगे

- एशिया का सबसे बडा सोलर पॉवर प्लाट मध्य प्रदेश के रीवा शहर में स्थापित किया जाएगा इसके लिए तीन प्राइवेट कम्पनियों मध्य प्रदेश पॉवर मैनेजमेट कम्पनी लिमिटेड और दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के बीच पॉवर परचेस एग्रीमेंट (पीपीए) पर 17 अप्रैल

2017 को भोपाल मे हस्ताक्षर किए गए कार्यक्रम में केन्द्रीय शहरी विकास मत्री वेंकैया नायडू, नवीन-नवकरणीय ऊर्जा मत्री पीयूष गोयल शामिल हुए

- मध्य प्रदेश के मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान ने मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी को जीवित इकाई घोषित किया नर्मदा नदी को जीवित इकाई घोषित करने का सुझाव केन्द्रीय गृह मत्री राजनाथ सिह ने मण्डला मे नर्मदा सेवा यात्रा के जन-सवाद कार्यक्रम में दिया मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान के अनुसार विधानसभा में इस सम्बन्ध मे विधेयक पारित किया जाएगा प्रदेश मे अब नर्मदा नदी को जीवित इकाई (लाईव एनटिटी) मानते हुए इसको नुकसान पहुँचाने वाले को जीवित इकाई के अनुरूप ही दडित किया जाएगा
- मध्य प्रदेश के मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान ने राज्य मे वित्तीय वर्ष 1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक करने की घोषणा की नया वित्तीय वर्ष अपनाने वाला मध्य प्रदेश देश का पहला राज्य बन जाएगा
- मध्य प्रदेश के मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान ने 22 मई, 2017 को नर्मदा नदी में होने वाले रेत खनन पर पूरी तरह से प्रतिबध लगा दिया है मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि नर्मदा नदी में खनन पर पूरी तरह रोक लगा दी गई है
- मध्य प्रदेश सरकार के राज्य आनदम सस्थान (डिपार्टमेंट ऑफ हैप्पीनेस) एव आईआईटी खडगपुर के रेखी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर द साइस ऑफ हैप्पीनेस ने राज्य में हैप्पीनेस इडेक्स मापने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये इस समझौते पर राज्य के मुख्यमत्री शिवराज सिह चौहान एव आईआईटी खडगपुर के डायरेक्टर प्रोफेसर पीपी चक्रवर्ती की मौजूदगी में हस्ताक्षर किये गये
- नरेन्द्र मोदी की इजराइल यात्रा के बाद इजराइल के काउसिल जनरल डेविड अकाव इन्दौर की यात्रा पर भारत पहुँचे उन्होने मध्य प्रदेश के किसानों को स्मार्ट सिटी में जल प्रबधन, खेती के नए तरीकों और आय बढाने में सहायता करने का आश्वासन दिया